सपादक-मंडल

आशादेवी : मार्जरी साईक्स

देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

जुलाअी १९५९ [अंक : १

नअी तालीम

"नअी तालीम" जुलाअी १९५९ : अनुक्रमणिका

'नअी तालीम' के नियम

१. "नअी तालीम" अंग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक मूल्य चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ नये पैसे है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अिच्छुक सज्जन चार रुपये मनी ऑर्डर से भेजें तो अुत्तम होगा। वी. पी. से मंगाने पर अुन्हें ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२. किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अेक साल से कम अवधि के लिअे ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

—व्यवस्थापक, "नअी तालीम"
सेवाग्राम (वर्धा) बम्बअी राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ८] जुलाअी १९५९ [अंक १

हमारे सारे कार्य को नअी तालीम का रंग देना चाहिये ।

विनोबा

मैंने राजपुरा में अेक सुझाव दिया था कि नअी तालीम के सामने अब जो सवाल पेश हैं अुन सवालों को पूरा न्याय हम तब दे सकेंगे जब हमारे सेवकों की कुल जमात नअी तालीम के बारे में सोचने वाली और काम करनेवाली बनेगी । आज तालीमी संघ ही नअी तालीम के बारे में सब कुछ सोचने की कोशिश करता है। अेक जमाना था तब यह जरूरी था कि अिस प्रकार का अेक स्वतंत्र संघ काम करे । लेकिन अभी अैसी परिस्थिति हुअी है कि तालीमी संघ का व्यापक रूप बनेगा और वह सर्व सेवा संघ में विलीन होगा तो बहुत लाभ होगा । चार साल पहले भी अिस तरह का सुझाव पेश किया गया था । लेकिन अुस वक्त मैंने अिस विषय में कोअी खास आग्रह नहीं किया था । परन्तु अिस बात को पसंद किया था कि अुसकी चर्चा हो । लेकिन अभी आग्रहपूर्वक मैंने यह सुझाव रखा । अिसमें मेरा कोअी व्यक्तिगत आग्रह नहीं है । अेक बाह्य परिस्थिति को देखते हुअे मुझे यह करना जरूरी मालूम होता है । अुसके जो कारण हैं वह मैं यहां रखूंगा ।

काकासाहब ने दो-तीन साल पहले सुझाया था कि नअी तालीम को अेक प्रोग्राम के तौर पर भूदान के साथ सम्मिलित किया जाय । अुस वक्त मेरी अैसी तैयारी नहीं थी कि अेक आम प्रोग्राम के तौर पर मैं अिसे भूदान के साथ चलाअूं । मैं अुतनी शक्ति महसूस नहीं करता था । वैसे दो-तीन बातें अेक साथ रखने से लाभ तो होता है, व्यापक दृष्टि बनती है, अनेक लोगों का सहयोग हासिल हो सकता है । लेकिन पूरी ताकत महसूस न होती हो तो अनेक काम अेक साथ रखने से शक्ति नहीं बनती है । लोगों का चित्त अेकाग्र नहीं होता है । अिसलिअे मैंने अुस वक्त काकासाहब के सुझाव को स्वीकार नहीं कर सका । मैंने भूदान के साथ केवल ग्रामोद्योग को जोड दिया था । लेकिन अनुभव यह रहा कि वह सिर्फ जोड ही दिया गया, अुस पर ज्यादा जोर नहीं दिया गया । फिर अम्बर चरखे की खोज के बाद अुसमें कुछ ताकत लगी, अब वह चीज प्लानिंग कमीशन भी मानती है। और अुस विषय में लोगों में कुछ अनुकूल ग्रह हो रहा है । शांति-सेना के बारे में भी

काकासाहब ने सुझाव दिया था। लेकिन यद्यपि यह पहले ही मुझे अुचित मालूम होता था, फिर भी शक्ति के अभाव में मैं अुसकी तरफ ध्यान नहीं दे सका। मैंने सोचा था कि १९५७ तक दूसरी चीजों की ओर ज्यादा ध्यान न दिया जाय, परन्तु जैसे ५७ की समाप्ति आयी वैसे अिन विचारों की पूर्ति करके समग्र विचार सामने रखा है। जैसे ५७ नजदीक आया और खासकर येलवाल की परिषद में नेताओं ने ग्रामदान को आशीर्वाद तथा नैतिक समर्थन देते हुअे कहा कि ग्रामदान से नैतिक और भौतिक दोनों दृष्टि से अुन्नति होगी, अिसलिये यह कार्यक्रम चलना चाहिये, तब मुझे लगा कि अब हमारे विचार पर मुहर लग गयी। गांधीजी ने जो वस्तु दी थी अुसका अब हम शायद समाज से स्वीकार करवा सकते हैं। हमारा विचार लोकमान्य हुआ। यद्यपि अभी अुसे लोकप्रिय करने का बाकी है। वह तो चलता ही रहेगा। अिसलिअे येलवाल परिषद के बाद मैंने शांति सेना पर जोर दिया।

मैसूर यात्रा में हुसभावी में देश भर के *डी० पी० आअी० मुझ से मिलने आये थे।* अुनके साथ नअी तालीम के बारे में काफी चर्चा हुअी। मैंने देखा कि वहां पर जो आये थे वे नयी तालीम के प्रचार को दिल से चाहते थे। वैसे सरकार न अेक नीति (पालीसी) तैयार की तो अुसका प्रचार करना सरकारी नौकरों का काम है। लेकिन अुन्हें अुस काम के लिअे मानसिक प्रेरणा हो तो दूसरी बात होती है। सचमुच में वे यह चाहते हैं कि अुनके हाथ से कोअी चीज बने। अुन्होंने कअी सवाल पूछे और मैंने अुत्तर भी दिया, तो अुनको संतोष हुआ अैसा मेरे अूपर असर रहा। तब से बीच बीच में मैं नअी तालीम पर जोर देता ही रहा। लेकिन अिन दिनों मुझे अैसा लगा कि लोगों में अुसका व्यापक प्रचार होना जरूरी है। हमारे कुछ काम के लिअे सरकार में अेक प्रकार की अनुकूलता है, लेकिन वह अनुकूलता अिस प्रकार की है कि अुसके लिअे लोकमत तैयार होता हो तो हम वह काम करेंगे अैसा सरकार कहती है। सरकार ने सिन्दरी की फैक्टरी खोली तब नहीं सोचा कि लोकमत तैयार है या नहीं। *क्योंकि अुसका अेक आर्थिक विचार है,* अुसके मुताबिक वह चलते हैं और अुन्हें लोगों से पूछने की जरूरत महसूस नहीं होती है। वह समझते हैं कि लोगों की चुनी हुअी सरकार है अिसलिअे सरकार जो करे वह लोगों को मान्य ही है। परंतु जो गांधीजी के प्रोग्राम हैं वे अर्थशास्त्र में बैठते हैं या नहीं—अैसा वे सोचते हैं। क्योंकि अुसके खिलाफ दुनिया का सारा प्रवाह खड़ा है। अिसलिअे अुसके लिये लोकमत चाहिये। अैसा वह कहते हैं और वह ठीक भी है। अिन दिनों कुछ लोग कहते हैं कि पुरानी तालीम में कोअी बुनियादी (फंडामेन्टल) दोष नहीं है, सिर्फ अुसमें कुछ सुधार होना चाहिये—अिस प्रकार का विचार मंत्री भी पेश करते हैं। अिन सबका सार मैंने यह देखा कि अब हमें लोगों में जाकर अिसके लिअे अनुकूलता पैदा करनी चाहिये। नअी तालीम की अेक राष्ट्रीय पैमाने पर छानबीन हो, अुसके गुण-दोषों की चर्चा हो, लोग अपने-अपने सुझाव पेश करें। जैसे भूदान के बारे में काफी चर्चा हुअी, कुछ विरोध हुआ, कुछ त्रुटियां भी बतायी गयी। अुसी तरह लोकमत तैयार करने के ख्याल से हम प्रचार करें। अुसके बिना हमारी नअी तालीम के प्रयोग सीमित रख

जायेंगे और जो नतीजा हम चाहते हैं वह नहीं आयेगा । अिसलिअे यह होना चाहिये कि लोगों ने अिसे मान्य किया । अिसलिअे मुझे लगा कि आज जो तालीमी संघ बना है वह आम जनता में जाने में समर्थ नहीं होगा । सर्व सेवा संघ ही अिस काम को अुठायेगा तब यह काम हो सकता है । सर्व सेवा संघ की आज जितनी ताकत है अुतनी ५-६ साल पहले नहीं थी । लेकिन भूदान जैसा अेक सामाजिक काम अुसने चलाया जिसमें सब लोगों का सहयोग अुसमें हासिल हुआ । अिसलिअे आज सर्व सेवा संघ नओी तालीम को अुठाता है तो पूरी ताकत लगेगी ।

मेरा यह विचार है कि अभी तक तालीमी संघ ने जो प्रयोग किये वे अेक हद तक पूरे हुअे हैं । अगर हम अुन्हीं प्रयोगों को फिर-फिर से करते हैं, अुसमें कुछ नुक्स हैं तो अुन्हें सुधारते जाते हैं, अुसमें समय देते हैं तो हमारा समय ही जायेगा । नायकमजी हमारी तमिलनाड की यात्रा में साथ रहे थे । अुन्हें भी लगा कि अब नयी तालीम का रूप और भी नया होना चाहिये, बदलना चाहिये । अब ग्राम को ही स्कूल समझकर प्रयोग किये जाय । हमारा पुराना ढाचा करीब २० साल तक चला । अुसका अेक नमूना हमने पेश किया, अुसकी अेक दिशा भी मिली । सरकार के सामने हमने वह चीज रखी है अब अुसे अुठाना है तो वह अुसे अुठा सकती है, अुसमें परिवर्तन या वृद्धि जो भी करनी है,करने का अुसे हक है । यह केवल तालीमी संघ का काम नहीं है । कहने का तात्पर्य यह है कि नओी तालीम का अेक प्रयोग पूरा हुआ । अब अुसे दूसरा रूप देना चाहिये, यह विचार तालीमी संघ ने भी मान्य किया है । और वैसा प्रस्ताव भी कर लिया । तब मुझे लगा कि अुस प्रस्ताव पर अमल करना हो तो सर्व सेवा संघ ही कर सकता है । आज की हालत में तालीमी संघ नहीं कर सकता है, अेक दो जगह नमूना चाहे बता सके, परंतु सारे भारत में अिस काम के लिअे हवा तैयार करनी है तो वह काम पूरी शक्ति से ही होगा । अिसलिअे तालीमी संघ का सर्व सेवा संघ में विलीन होना ठीक है ।

सरकार से कुछ काम करवाना होगा तो सरकार व्यापक काम ही करने वाली है, अेक-दम से सारे भारत पर लागू करने की बात आती है, अुसमें हमें कुछ बातें ढीली करनी पडती हैं । अुसके बिना व्यापक प्रयोग नहीं हो सकते । परंतु ढीला करते समय कुछ बातों का आग्रह भी रखना पडता है । नहीं तो कुछ का कुछ बनेगा । अिसलिअे सरकार के साथ बातचीत करने का काम भी पर्याप्त शक्ति से करना हो तो सर्व सेवा संघ ही कर सकता है । सरकार को यह मालूम हो कि अिनकी कुल जमात अिस बारे में सोचती है । जो कुछ जानकारी हासिल करनी है सर्व सेवा संघ से ही हासिल करनी है । अैसा हो जाये तो सरकार के लिअे और हमारे लिअे भी अच्छा है । नहीं तो कुछ अेका-गीपन आ सकता है और सरकार अपना कुछ आग्रह रखेगी तो प्रेम के साथ अुसका मुकाबला करना होगा, कहीं ढील करनी होगी और कहीं दृढ रखनी होगी ।

अिन दिनों नओी तालीम के दो टुकडे करने की बात चलती है । पहला टुकडा पांच साल का और दूसरा तीन साल का । कहा जाता है कि पहले विभाग को शुरु कर दिया जाय और बाद में दूसरे विभाग को चलाया जाय । यह जरूरी नहीं कि पहला विभाग जितना व्यापक

हो अुतना ही दूसरा भी हो। पहले विभाग को स्वयपूर्ण मानकर ही काम किया जाय। मुझे तो यह खतरनाक मालूम होता है। सभव है यह ठीक भी हो। अब अिस पर समग्र विचार हम सबको करना होगा। और यह योजना ठीक है या बेठीक–अिस पर पूरी तरह सोचकर सरकार के सामने अपना विचार स्पष्ट रखना होगा। अिन दिनो अग्रेजी का सवाल भी अुठा है। अग्रेजी कहा से शुरू की जाये अिसकी चर्चा चलती है। यह सवाल कुल तालीम के सामने पेश है और आगे जाकर कुल तालीम ही नअी तालीम बनने वाली है तो नअी तालीम का फर्ज है कि यह अिस बारे में अपने विचार स्पष्टता से पेश करे। बबअी स्टेट में अग्रेजी की चर्चा बहुत चल रही है। यह तो सब जानते है कि हमारे मन म अग्रेजी के खिलाफ कोअी विरोध (प्रिजुडिस) नही है। परतु सारे देश की बुनियादी तालीम का यह असूल हमने माना है कि बुनियादी तालीम में अग्रेजी का प्रवेश न हो, अुसके बाद हो। सरकार अब अिसका निर्णय करेगी तो अिस बारे में हमारा विचार दृढ होना चाहिये। कअी सवाल अैसे है जिन पर निर्णय नही हो सकता हो तो हम अुसकी चर्चा करके अुसे छोड दें। लेकिन जिन पर सर्व सम्मति से या लगभग सर्व सम्मति से निर्णय हो सकता है वहा वह निर्णय सरकार के सामने पेश करना सर्व सेवा सघ का ही काम होना चाहियें, केवल तालीमी सघ का नही। सर्व सेवा सघ यह काम न करे तो मैं अुसमें खतरा देखता हू। क्योकि सरकार कुछ सोचती है तो अपनी पूरी शक्ति से सोचती है और हम अगर अधूरी शक्ति से सोचते है तो हमारी बात नही चलेगी। हमारे लिअे लोकमत अनुकूल न हो और फिर हमारी बात न चले तब तो ठीक है लेकिन हम अधूरी शक्ति से काम करेंगे तो लोकमत अनुकूल होने पर भी यह सभव है कि हमारी बात न चले। अिसलिअे छोटे सघ को नही बड़े सघ को यह काम करना होगा।

हम खादी ग्रामोद्योग, प्राकृतिक अुपचार आदि काम करते है। वे सब सर्व सेवा सघ से सबधित है। अिन सबको नअी तालीम का अग बनना होगा। हमारे पास लाखो कत्तीने है, देश में हमारे १००-२०० छोटे मोटे आश्रम है जिनके जरिये खादी ग्रामोद्योग आदि काम चलते है। लेकिन अुन कामो में अब नअी तालीम का कोअी खास प्रवेश नही हुआ है। अिसमें मै यह चर्चा नही करना चाहता हू कि किसका क्या दोष है। लेकिन यही बताना चाहता हू कि हमारा समग्र चिंतन नही हुआ और हमारे प्रयोग जिस तरह व्यापक होने चाहिअे थे वैसे नही हुअे। अिसलिअे अब सर्व सेवा सघ को अिस काम को अुठाना चाहिअे और अपने कुल काम को नअी तालीम का रूप देना चाहिअे। तब हमें अनुभव आयेगा कि व्यापक परिमाण में काम कैसे–करना है। सरकार व्यापक काम करती है तो हम भी व्यापक हो सकते है हमारे कुल कामो में हमारा करीब २०,२५ लाख व्यक्तियो से सबध आता होगा। अितने व्यापक पैमाने पर कैसे काम किया जा सकता है, अिसका कुछ नमूना हम पेश करे अिसकी देश को जरूरत है। हमारे सारे कार्य को नअी तालीम का रग देना चाहिअे-अैसा मुझे लगा। रगवाली चीज नअी तालीम होगी। वह पानी में घुल-मिल जाती है तो पानी को अपना रग देगी।

मैं अिन दिनो शाति सेना की बात करता

हू । यह स्पष्ट है कि हम अपने ढंग की तालीम जितनी चला सकेंगे अुतनी शांति सेना ही बनती जायेगी । अेक तरह से यह जरूरी है कि हम सारे देश में फैल जायें, जो तालीम के जरिये ही कर सकते हैं । अगर शांति सेना की जिम्मेवारी नअी तालीम की नही है तो और किसकी है ? शाति सैनिकों को तालीम देनी है तो भी नअी तालीम का ही वह काम होगा । शाति सैनिक का नमूना पेश करना हो तो जहा नअी तालीम का शिक्षक खडा है वही किया जा सकता है, अुस शिक्षक का बच्चो से ही नही अुनके माता-पिताओं से भी सबध रहेगा । अिस तरह वह शिक्षक शांति-सेना का केन्द्र बनेगा । बच्चा को और अुनके पालकों को शाति-सेना के लिअे तैयार करना शिक्षक का ही काम रहेगा । यह सब करने में सर्व सेवा सघ, समर्थ होगा या नही यह मैं नही जानता, लेकिन मैं मानता हू कि वह हो सकता है । देश में शाति-सेना के लिअे व्यापक भावना तैयार करने की जिम्मेवारी सर्व सेवा सघ की है । बापू ने नयी तालीम के लिअे कहा था कि अिस तालीम का अुद्देश्य पहले से लेकर आखिर तक सारे जीवन के बारे में सोचना है, जीवन का अेक ही विभाग लेकर सोचने का नही है । अिसलिअे बडा की तालीम भी अिसमें आ जाती है । अुनको शाति-सेना की दिशा में ले जाने का काम कौन करेगा ? अिसीलिअे मेरे मन में अपेक्षा पैदा हुअी कि शांति सेना का काम नअी तालीम का काम है । और मुझे यह सुनकर खुशी हुअी कि नअी तालीम का काम करने वालों को अिसमें रुचि है । अभी तक शांति सेना के शिक्षण का काम नअी तालीम के जरिये ही हुआ । लेकिन अुसे व्यापक रूप नही आया । अब अुसमें खादी वाले, ग्रामोद्योग वाले आदि सबको शामिल होना चाहिये । अिसीलिअे सारी जमात को अिकठ्ठा होना चाहिये ।

बापू के पीछे हम सबके हाथ से अुनका काम जिस तरह विकसित होना चाहिये था वैसा नही हुआ । अिसके मूल में मै पहुचा तो मेरे ध्यान में आया कि सब विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या आत्म-विद्या है । जो आत्म विद्या है अुसकी तरफ हमने ध्यान नही दिया अिसी कारण अेक सस्था में रहते हुअे भी आपस में मनमुटाव, मत्सर चलते है, अेक दूसरे का मेल नही होता । यह सब जगह चल रहा है । आश्रमो में भी और भूदान यात्रा में भी । अिससे अिन दिनो मेरा मन व्यथित-सा, चिंतित-सा है । अिससे हमारे काम टिकनेवाले नही है, वे अूपर अूपर चलते है । पुस्तको के द्वारा दी जानेवाली तालीम को हम गौण मानते है अिसलिअे अुद्योगों के जरिये तालीम देने की बात हमने चलायी है । परतु गुण विकास की जो बात है, जो बुनियाद है वह नही आयी क्योंकि हमारा चिंतन भी सिकुलर चलता है । सिकुलर का मतलब सब धर्मों के लिअे समान आदर—यह हो तब तो वह ठीक है परतु जिससे धर्म-श्रद्धा ही नहीं बनती अैसा हमारा काम चल रहा है । अुसका परिणाम यह होता है कि तालीम में कुछ अुद्योग आदि शुरू किये जाते हैं लेकिन आत्म तत्त्व के लिअे जो मूलभूत श्रद्धा है, वह पैदा होनी चाहिअे । अिस तरफ ध्यान ही नही दिया जाता है । कही भी हमारा आश्रम बनता है तो अुसमें अेक गोशाला होती है, अेक कताअी विभाग, चर्मालय आदि होते हैं । वैसे हम प्रार्थना भी करते है लेकिन अितनी "रुटीन" प्रार्थना चलती है कि मुझे कअी दफा लगता है

कि क्या भगवान् अैसा जबर्दस्ती करनेवाला शख्स है कि मनुष्य चाहे या न चाहे, अुसे अुसके नाम से चिल्लाते ही रहना है। अिस तरह हमारी प्रार्थना भी अेक यांत्रिक चीज बन गयी है। हमने दुनिया के अितिहास में देखा कि जिस श्रद्धा ने दुनिया को नया मोड दिया, वह श्रद्धा हमारी संस्थाओ में दीखती नहीं है। आश्रम में प्रार्थना का बना बनाया ढांचा चलता है परन्तु बुनियादी चीज जिस निष्ठा से बापू ने शुरू की, अुस निष्ठा का अभाव सर्वत्र दीखता है। प्यारेलालजी कह रहे थे कि बापू ने जिस निष्ठा से सत्याग्रह आश्रम शुरू किया था वह निष्ठा किसी अेक स्थान में होनी चाहिये। मैंने कहा कि अेक से नहीं चलेगा, हमारे सब आश्रमो में वह होनी चाहिअे। कअी कारणो से यह न्यूनता बापू के रहते हुअे भी और अुनकी चलायी हुअी संस्थाओ में भी रही। लेकिन बापू खुद अैसे व्यक्ति थे कि जो चीजें आश्रम में नहीं थी अुनके रहने से अुसकी पूर्ति हो जाती थी–या पूर्ति होती है अैसा भास होता था। अुनके जाने के बाद मुझे लगता है कि वह भास ही था।

शंकराचार्य का विचार समाज में आज भी चलता है। अुसका चिंतन, मनन, अध्ययन चलता है। विद्वानो द्वारा अुस पर लेख लिखे जाते हैं, अुसके खंडन-मंडन में बुद्धि काम करती है। यहां गुरुनानक ने अेक अद्भुत वस्तु चलायी है। यह है स्त्रियो के सत्संग। अिस प्रकार की जो बातें चलाओ गयी वे समाज में बहुत श्रद्धा से चली। यह ठीक है कि अब कालक्रमेण वह कुछ मंद हो गयी। फिर भी वह चीज चलती है। बापू के विचार में जो आध्यात्मिकता है याने जिस आध्यात्मिकता की जरूरत है, वह संतो के विचार में जिस आध्यात्मिकता की जरूरत थी, अुससे ज्यादा है। क्योंकि संतो ने यह भूमिका नहीं ली थी कि हमें अपने विचार से समाज का भी परिवर्तन करना है। वैसे अुनमें भी यह चीज तो थी कि मैं सत्यनिष्ठ हूं तो मेरे अिर्दगिर्द जो लोग हैं अुनपर अुसका असर होना चाहिये। मैं अुनको नहीं ठगूंगा–अितना ही बस नहीं है, वे भी मुझे नहीं ठग सकते हैं अैसा होना चाहिये। मेरे अिर्दगिर्द परिपूर्ण सत्य का वातावरण होना चाहियें। अिस तरह यह चीज अुनमें थी। परन्तु वे अिसे कसते नहीं थे, अन्त समाधान के कारण संतुष्ट रहते थे। परन्तु हम तो सत्याग्रह की बात करते हैं याने समाज परिवर्तन चाहते हैं। अुसके लिअे श्रद्धा की जरूरत है। अलग रहा हुआ तालीमी संघ वह श्रद्धा हासिल नहीं कर सकेगा–अैसी मुझे शंका आयी। वैसे सर्व-सेवा-संघ भी वह कर पायेगा या नहीं–मैं नहीं जानता। परंतु वह कोशिश जरूर करेगा।

अिन दिनो–मुझे प्रेरणा हो रही है कि नअी तालीम का मैं प्रचार करूं। ग्रामदान, शांति-सेना और सर्वोदय-पात्र अैसा मेरा त्रिविध कार्य है। ग्रामदान और शांति-सेना ग्राम स्वराज्य के लिअे है–अैसा मैं समझाता हूं। ग्राम स्वराज्य का पूरा नहीं लेकिन कुछ तो चित्र लोगों के सामने पेश करना होता है। अुसमें नअी तालीम की बात कहनी ही पडती है। ग्रामदान गांव में भी पुरानी तालीम चले तो बडा अधूरा काम चलेगा। अुधर अक्राणीमहल में हमारे कार्यकर्ता काम कर रहे हैं और सरकार ने भी अुस प्रदेश के लिअे कुछ योजना बनायी है। दोनो के सहयोग से कुछ काम चलता है। सरकार चाहती है कि तालीम का काम हम अुठा लें। वहां से प्रो० वग ने मुझे लिखा है कि हमें अुसे

स्वीकार करना जरूरी मालूम पड़ता है । जिससे अब हमारे सामने अेक व्यापक काम करने का सवाल खड़ा होता है। वहां पर करीब ३०० गावों में काम करना होगा । तो हमें नओ तालीम का व्यापक रूप प्रकट करना होगा । यह सब चीज लोगों के सामने रखनी पड़ेगी । अिसलिअे मुझे लगता है कि व्यक्तिगत तौर पर मैं नओ तालीम की ओर ध्यान दूं । वैसे खादी, गोरक्षण आदि सब चीजें मिली जुली हैं लेकिन थोडी देर के लिअे अुन्हें अलग से सोच सकते हैं । लेकिन नओ तालीम को थोड़ा देर के लिअे भी अलग नहीं सोच सकते । अिसीलिअे राजपुरा के बाद मैंने बहुत-से व्याख्यानों में नयी तालीम की बात कही है । लोगों में अुस पर चर्चा भी शुरू हुअी है । मैं बार-बार कहता हूं कि आज वह काम सभव हो या न हो लेकिन सरकार के हाथों से किसी चीज की मुक्ति करनी है तो प्रथम तालीम की करनी है । अभी केरल में जो चल रहा है अुससे अिस बात की अधिक जरूरत महसूस हो रही है । मैं नहीं मानता कि केरल में जो चल रहा है वह दूसरे प्रांतों में जो चल रहा है अुससे कुछ अलग है । दूसरे प्रांतों में भी तालीम पर सरकार का पूरा नियत्रण है, किसी को चू तक नहीं करने दिया जाता है । फर्क अितना ही है कि कम्युनिस्टों में कार्यदक्षता (अेफिसियेन्सी) होती है जो दूसरों में नहीं है । लेकिन कुल प्रांत में अेक ही पाठ्य-पुस्तक चले, यह कितनी भयानक चीज है । अिसलिअे मैं बार-बार कहता हूं कि तालीम सरकार के हाथ में नहीं, जनता के हाथ में होनी चाहिये । अिसलिअे ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र और शांति-सेना के साथ-साथ मैं नयी तालीम का काम भी अुठाना चाहता हूं । शांति सेना के लिअे नयी तालीम जरूरी है, ग्राम-स्वराज्य के लिये नओ तालीम जरूरी है । अिस तरह दुगुना सोचकर अुस पर जोर देना जरूरी है । अिसीलिअे मुझे लगा कि सर्व सेवा सघ की पूरी ताक़त अुसमें लगे ।*

* पठानकोट में ता २० मअी को तालीमी संघ की बैठक में विनोबाजी का भाषण

ग्राम-स्वराज्य कैसा ?

ग्राम-स्वराज्य की मेरी कल्पना यह है कि वह अेक पूरा गणतत्र हो । वह अपनी नितान्त आवश्यकताओं के लिअे अपने पड़ोसियों पर निर्भर न रहे, लेकिन दूसरी अैसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिअे, जिन्हें वह स्वय पूरी न कर सके, दूसरों पर परस्परावलम्बित रहे । अिस प्रकार प्रत्येक गाव को सबसे पहले यह देखना होगा कि वह अपनी जरूरत के अनाज और कपड़े के लिअे कपास स्वय पैदा करे । गांव में पशुओं के लिअे चरागाह हो और बच्चों तथा वयस्क लोगों के लिअे मनोरजन के साधन और खेल कूद के मैदान हों । अिसके बाद अगर जमीन बचे, तो खाद्य वस्तुओं के अलावा अैसी अुपज अुपजायी जा सकती है, जिसे द्रव्य-अुपज कह सकते है, लेकिन गांजा, तम्बाकू या अफीम जैसी चीजें नहीं अुपजायी जायेंगी । गाव में स्वच्छ पानी की व्यवस्था होगी । यह कुओं और तालाबों पर नियत्रण रख कर किया जा सकता है । पूरी बुनियादी शिक्षा अनिवार्य कर दी जायेगी । जहा तक सम्भव होगा, हर अेक काम सहकारिता के आधार पर किया जायगा ।

—गांधीजी

सर्वोदय विचार ब्रह्मविद्या के अभाव में नहीं टिकेगा।

(जम्मू की बैठक में विनोबाजी का वक्तव्य)

अिस वक्त मेरी मानसिक स्थिति जरा कठिन है। मै अन्दर से बहुत बेचैन हू। घर छोडते समय मै जितना बेचैन था अुतना ही अिस वक्त हू। अुस वक्त मै बेचैन अिसलिअे था कि मुझे ब्रह्मविद्या की धुन थी। अुसकी प्राप्ति के लिअे घर छोडना चाहिअे, स्कूल छोडना चाहिअे यह विचार था और १९१६ में सब छोडकर मैं निकला। अब वह चिन्ता मेरे मन मे नही रही है। अुसका समाधान जितना हो सकता था हुआ है। अब मुझे बेचैनी यह है कि हमारा कुल सर्वोदय विचार ब्रह्मविद्या के अभाव में टूट जायगा, नही टिकेगा। सरकारी मदद हमें हर तरह से मिलेगी और जितनी ज्यादा मदद मिलेगी अुतना वह ज्यादा टूटेगा। अिसका मतलब यह नही कि नअी तालीम और दूसरे कामो में भी सरकार की मदद नही मिलनी चाहिअे। मदद तो जरूर मिलनी चाहिअे। बल्कि कुल सरकार ही सर्वोदय की बननी चाहिअे। परन्तु सरकार की मदद हजम करने के लिअे कुछ अपनी चीज मजबूत चाहिअे। नही तो हमें वह मदद जितने प्रमाण म मिलती जायगी अुतने प्रमाण में हम ढीले पडते जायेंगे। रचनात्मक कार्य आदि की जितनी बाते अिन दिनो मै सुनता हू अुनकी कोअी बुनियाद मुझे नही दीखती है।

अिसामसीह ने कहा था Love Thy neighbour as Thyself अपने पडोसियो से अुसी तरह प्यार करो जिस तरह अपन स करते हो। बोलने में तो हम सहज ही यह बात बोल देते है लेकिन यह क्या चीज है, अिस पर सोचते है तो मालूम होता है कि वह चीज हमम नही आ सकती है जब तक हम अपने मूल स्वरूप में गोता नही लगाते है। वैसे कअी कारणो से पडोसी पर प्रेम करना लाभदायी होता है। अिसलिअे वह तो हम करेंगे ही परन्तु अिसामसीह ने जो कहा वह बात बहुत गहरी जाती है। अुस दृष्टि से हम अपना तोल लेते है तो मालूम होता है कि हम अूपर-अूपर से समानता की कुछ बातें कर लेते हैं। तनखाह में समानता करने की कोशिश चलती है और हम कहते है हमारे यहा दुगुना और डेढ गुना का अन्तर है। अिस तरह हम साम्य की बाते कर लेते है। परन्तु वह बिल्कुल नकली साम्य है। अंदर से जबतक यह अनुभूति नही होती है कि हम सब अेक ही चीज है, भिन्न-भिन्न आकार दीख पडते है परन्तु अेक ही वस्तु है अिसका भान जबतक नही होता है तबतक अूपर अूपर से मिला ले तो भी अुससे कुछ नही बनेगा। हम प्रार्थना करते है–अुसम कुछ लाभ है। अुसम हम कुछ सुधार भी करते रहते है। परन्तु भक्ति से हृदय द्रवित होने की जो बात है वह नहीं दीखती है। हम बीमारो की सेवा करते है और दुनिया म दूसरी जो सेवा चलती है अुसके मुकाबले में बहुत अच्छी सेवा करते है। परन्तु अुसमें भी हमारा अेक तन्त्र बना है। तन्त्र के अनुसार हम काम करते हैं। हमारी जो सस्थाअें बनती है वे अितनी शुष्क होती है कि सस्थाओं की कुछ आत्म-तत्त्व हो अैसा भान नही होता है। मनुष्यो में तो होता है लेकिन क्या सस्थाओं में *आत्मा होती है ? नयी तालीम, खादी ग्रामोद्योग* आदि का सारा अूपर का टेक्नीक होता है। फिर नयी तालीम मे किसके साथ क्या जोडना

चाहिये, आदि के बारे में अनुभव बनाये जाते है परन्तु असली बात जो हैं ज्ञान और कर्म बिल्कुल अेक रूप बने, वह नही बनती है।

अिस बात का तात्पर्य यह है कि बापू ने हमारे सामने कुछ अैसी बाते रखी थी जो आध्यात्मिक क्षेत्रों में ही रखी जाती थी, दूसरे क्षेत्र में नही? अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि पांच यमों के साथ और कुछ चीजें जोड कर अुन्होंने अेकादश व्रत हमारे सामने रखे। यह कल्पना नअी नही है, पुरानी ही है। लेकिन समाज सेवा के काम में व्रत जरूरी हैं, यह बात बापू ने ही प्रथम रखी। आध्यात्मिक अुन्नति के लिअे वे बाते जरूरी हैं, अैसा माना जाता था। योगी, साधक आध्यात्मिक विकास करने के लिअे यम-नियमों का पालन करते थे। पतंजलि ने यह बात कही है—बुद्ध, महावीर, पार्श्वनाथ आदि ने अुसपर लिखा हैं। भक्तों ने सारी दुनिया में अुसका विकास किया है। परन्तु ये सारी चीजें समाज सेवा के लिअे जरूरी हैं, अुसके बिना समाज सेवा नही हो सकती है, यह अुसूल बापू के आश्रम में मैंने प्रथम पाया। अुसमें कोअी अैसी चीज नही थी जो मुझे नयी थी। बचपन से ही मैं व्रत पालन की कोशिश करता था लेकिन वहा जो अुद्देश्य रखा गया था वह विशेष बात थी। बापू ने हमारे सामने विश्वहित के अविरोधी भारत की सेवा का अुद्देश्य रखा। अुस ध्येय की सिद्धि के लिअे हम अेकादश व्रत अवश्य मानते हैं, अैसा कहा। यह चीज हमने और कहीं नहीं पायी थी बापू ने अुसके साथ आश्रम का कार्यक्रम, कर्म को विविध शाखायें भी हमारे सामने रखी। जिस तरह देश सेवा का अेक मूल अुद्देश्य जो विश्व-हित से जोडा हुआ था, अुसके लिअे साधकों की जीवन निष्ठा (article of faith) के तौर पर, अेकादश व्रत और अुसके लिअे दिनचर्या, अुसकी पूर्ति के लिये खेती, गोशाला, खादी आदि का पूरा कार्यक्रम बापू ने हमारे सामने रखा। अब हमारा यह होता है कि जितनी स्थूल प्रवृत्तियां हैं अुनमें से जितनी हम अुठा सकते हैं, अुठाते हैं। विश्व हित के साथ हमारा विरोध नही हो, यह चाहते हैं। परन्तु बीच का जो था वह गायब ही जाता है। अिसका मतलब यह नही कि सत्य, अहिंसा आदि मानते नही है। परन्तु वह मूल वस्तु हममें विकसित होती है या नही अिसकी तरफ ध्यान नही देते हैं।

बापू के और दूसरों के भी जीवन में हम देखते हैं कि अुनके सामने कुछ आध्यात्मिक सवाल थे। अुन सवालों की तृप्ति हुअे बगैर वे आगे नहीं बढते थे। अीसामसीह की जिन्दगी सिर्फ ३३ साल की थी और अुनमें से वे तीन ही साल घूमे थे, सिर्फ पैलेस्टाअिन में यानी हिन्दुस्तान के दो-तीन जिलों में घूमे थें। परन्तु आज अुनके विचार का असर दुनिया भर है। अीसाअियों की जो संख्या है अुसके बारे में नहीं है परन्तु अीसामसीह का जो असर है अुसकी मैं बात कर रहा हू। परन्तु पहले ३० साल तक अीसामसीह ने क्या किया था अिसका पता नही है। कहा जाता है कि वे बढअी का काम करते थे। परन्तु अुसमें अुन्होंने क्या साधना की, सिवा अिसके कि अुन्होंने अुपवास किये और सैतान के साथ अुसका मुकाबला हुआ अिससे ज्यादा हमें कुछ भी मालूम नही। अब तो यहां तक कहा जाता है कि वे तिब्बत तक आये थे। बात यह है कि कुछ बुनियादी आध्यात्मिक सवाल थे जिन्हें हल करके ही फिर वे निकले थे। अपनी ही तरह

अपने पडोसियों पर प्यार करो-यह बात बिना अनुभव के नही कही जा सकती है। अुन्होने शत्रु पर प्यार करने की जो जोरदार बात कही है वह बिना अनुभव के नही कही जा सकती है। वैसे ही बुद्ध भगवान् ने यज्ञ में हिंसा न हो यह सवाल किया और वे बिहार, अुत्तर प्रदेश के १२-१४ जिलो में घूमे, यह तो हम जानते हैं। लेकिन जब अुन्होने तपस्या की थी तब क्या किया था, यह किसी को मालूम नही है। वे कितने मंडलों में गये, कितने पंथो में गये, ध्यान के कितने प्रकार अुन्होने आजमाये और अिन सब के परिणाम स्वरूप चित्त को कैसे शांति मिली और निर्णय हुआ कि दुनिया में मैत्री और करुणा ये दो शब्द हैं, अिन सब को हम नही जानते है। आगे की चीज तो जानते हैं, लेकिन पहले क्या हुआ, अिस बात को नही जानते हैं।

वैसे बापू की आत्म-कथा हम पढते है तो कुछ थोडी सी झांकी मिलती है। रायचन्द भाअी के साथ अुनकी जो चर्चा हुअी वह भी हम जानते हैं। लेकिन अुनके मन में आध्यात्मिक शकाअें थी और अुनकी निवृत्ति के बिना वे काम में नही लगे थे और जिसे गुप्त अनुभव Mystic experiencs कहते हैं अुनके बिना बापू सेवा में नही लगे थे। वे Truth is God—सत्य ही भगवान है कहते थे। अिसलिअे लोग समझते थे कि यह वैज्ञानिक बात है। परतु वह सिर्फ वैज्ञानिक बात नही थी। मैंने अुन्हे अिस विषय में छेडा था। जब खान अब्दुल गफ्फार खा की मदद में जाने की बात चल रही थी तब अुन्हे लगा था कि शायद वापस आना नही होगा। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारे साथ बात करना चाहता हू। मै अक्सर अुनके पास नही जाता था। अिसलिअे अुन्हें लगा कि अुसको बुलाये बिना नहीं आयेगा। अुन्होने मुझे बुलाया और करीब १५ दिन मेरी बाते चलती रही। पहले दो-तीन दिनों तक तो वे ही सवाल पूछते गये और मै जवाब देता गया। परतु अेक दिन अुन्हे मैंने अीश्वर के अनुभव के बारे में छेडा—आप Truth is God—सत्य ही भगवान है कहते है, यह ठीक है। परन्तु अुपवास के समय आपने कहा था न कि अंदर से आवाज सुनाई दी, वह क्या बात थी? क्या अिसमें गुप्तता mysticism है। अुन्होंने कहा कि "हां, अुसमें कुछ बात है। वह कोअी साधारण चीज नही है। मुझे स्पष्ट आवाज सुनाई दी।" जैसे कोअी मनुष्य बोलता है वैसे सुनाई दी। मैं पूछता गया कि मुझे क्या करना चाहिये तो अुन्होने कहा—अुपवास करना चाहिये। मैंने कहा कितने दिन अुपवास करने चाहिअे तो अुन्होने कहा "अिक्कीस।" यानी अिसमे कोअी पूछने वाला था और दूसरा जवाब देनेवाला था। यानी बिलकुल कृष्णार्जुन का सवाद था। बापू तो सत्यवादी थे अिसलिअे यह कोअी भ्रम नही हो सकता है। अुन्होंने कहा मुझे साक्षात् अीश्वर ने यह बात कही। फिर मैंने पूछा कि क्या अीश्वर ने यह बात कही। फिर मैंने पूछा कि क्या अीश्वर का रूप हो सकता है? तो वे बोले कि रूप तो नही हो सकता है लेकिन मुझे आवाज सुनायी दी। अिस पर मैंने कहा "रूप अनित्य है तो आवाज भी अनित्य है। अगर आवाज सुनाअी दी तो रूप कैसे नही दिखाअी देगा?" फिर मैंने अुनके सामने कुछ जानकारी रखी। दुनिया भर के गुप्त चीजों mystics के अनुभव रखे और अपने भी अनुभव रखे और कहा कि अीश्वर दर्शन कैसे नही दे सकता है? आपके मन में सवाल जवाब हुअे अुसका अिश्वर के साथ ताल्लुक है न? तो अुन्होंने कहा

हां, अुसके साथ ताल्लुक है। मैंने आवाज सुनी लेकिन मुझे दर्शन नही हुआ। मैंने रूप नही देखा। अुसका शब्द मैंने सुना। लेकिन अुसका रूप है, अिसका मुझे अनुभव नही हुआ, मुझे साक्षात् दर्शन नही हुआ। लेकिन वैसा दर्शन हो सकता है।

यह सारा मैंने अिसलिअे खोला कि हम जीवन की गहराअी में नही जाते है और अूपर के स्तर में काम चलाते है, अिसकी ओर मै ध्यान खीचना चाहता हू। मै बार-बार कहता हू कि गाधीजी ने राजनिति नही चलायी थी। अुन्होने जो कुछ काम किया था वह लोकनीति थी क्योकि वे जनता को खडा करने की कोशिश करते थे। स्वराज्य प्राप्ति के पहले जो काम हुआ वह लोकनीति ही थी, राजनीति नही थी। मै अैसा कहता हू, फिर अुनके कुछ साथी राज-नीति चलाते है। वे पुरानी राजनीति नही चलाते है। अुनमें और दूसरे राजनीतिज्ञो मे कुछ फरक है, लेकिन बहुत फर्क नही है। अिस तरह कुछ साथी राजनीति में गये है और दूसरे चर्मालय, खादी में गये है। ये सारा अितना स्थूल काम है कि जिन मनुष्यों को हम साथ रखते है अुनको लाचारी से साथ रखते है, कर्म प्रधान होकर अुनका सग्रह करते है और फिर कोशिश करते है कि अुनको सिद्धान्तो का स्पर्श हो। लेकिन हम अैसी कोशिश नही करते है कि जिन्हे अैसे विचार मान्य हो वे कर्म-निरपेक्ष होकर अिकट्ठे हो और कर्म की जरूरत मालूम होने पर कर्म शुरु करे। आध्यात्म निष्ठा से ५-६ भाओ अिकट्ठा आयें और फिर कर्म शुरू करे, यह करने के बजाय हम कर्म लेते है और फिर मनुष्य ढूढते है यानी सब काम कर्म प्रधान होता है, अिसीसे में परेशान हूँ। मै सच्चाअी के साथ यह कह सकता हू कि अीश्वर के अस्तित्व का भान नही होता तो मै अिसमें नही पडता। मुझे यह कहना ही पडता है कि अीश्वर का दर्शन होता है, साक्षात्कार होता है, स्पर्श होता है; अन्यथा विकारो का विनाश नही हो सकता है। यह सभव नही कि अुसके दर्शन के बिना *काम चलता रहे। वैसे मै नास्तिकों को भी हजम* कर लेता हू और जहा तक सामाजिक स्थूल कार्य का सबन्ध है नास्तिक भी चल सकता है। परमेश्वर का नास्तिक भी रूप है, यों कह कर मै नास्तिको को हजम कर लेता हू। अिस तरह मै अुसे अपने पेट में समा लेता हू तो मै अूचा चढता हू, मेरी प्रगति होती है। अिस तरह मै तो बहुत अूचा चढूगा लेकिन वह *मुझे हजम नही कर पायेगा। अुसकी प्रगति* कुठित होगी।

मेरे सामने सवाल है कि क्या सत्याग्रह कोअी शक्ति है? अपने सारे काम का सार भूत शब्द अगर कोअी है तो सत्याग्रह है। वैसे वह शब्द मुझे अुतना पसन्द नही है क्योकि अुसमें जो आग्रह शब्द है वह गलत है। फिर यह शब्द चल पडा रहता है अिसलिअे लेता हू। अब मेरे सामने सवाल है कि आणविक अस्त्रो (atomic weapons) के जमाने में सत्याग्रह का रूप क्या होगा? जैसे अुनके पास अेक व्यापक औजार आया है जिससे वे घर बैठे दुनिया के वातावरण को बिगाड सकते है, दुनिया को खत्म कर सकते है वैसे क्या हमारे पास कोअी अैसी शक्ति है कि दुनिया का वातावरण निर्मल कर सके। अैसी शक्ति हाथ मे आनी चाहिये। नही तो आजतक यह चलता था कि सामनेवाला मेरी आख की तरफ

देखेगा मेरी जवान सुनेगा और मेरे दर्शन और शब्दो का अुनपर असर होगा। लेकिन अब तो दर्शन और शब्द की कोअी बात ही नही है। वह तो घर बैठकर बम फेंकेगा। अिस हालत में सत्याग्रह का क्या रूप होगा। क्या अुनके सामने सत्याग्रह नही चलेगा? अुसपर हमें सोचना चाहिये। गाधीजी के जाने के बाद हिन्दुस्तान में सत्याग्रह के जो प्रकार चले अुनमें अेक अुपवास है। लेकिन कही अुपवास शुरु होता है तो मुझ पर भी पहली प्रतिक्रिया यह होती है कि कुछ गलत काम शुरु हुआ है। वैसे केल्प्पन जी जैसे का अुपवास होता है तो अनुकूल प्रतिक्रिया होती है लेकिन अिन दिनों अुपवास का स्वरूप अैसा बना है कि अुसके बारे में सुनते ही प्रथम प्रतिक्रिया यही होती है कि कुछ गलत काम हुआ। अिस तरह सत्याग्रह का अितना अशुद्धीकरण हमने कर डाला है। गाधीजी की भूमिका में जो सत्याग्रह चलता था अुससे हम अुसे नीचे ले गये है। वैसे अुस भूमिका का सत्याग्रह भी अब अिस जमाने में नही चल सकता है परन्तु अुसे अूपर ले जाने के बजाय हमने अुसकी शक्ति को क्षीण किया है। सत्याग्रह याने अडगा लगाने की यानी प्रेशर डालने की बात, चाहे सौम्यतर हो तो भी अेक दबाव की ही बात बन गयी है। विज्ञान के सामने आपका प्रेशर कहा रहेगा?

मैं यह सारा चिंतन करता हू तो मुझे लगता है कि नअी तालीम का अुद्योग के जरिये तालीम देने का हमारा विचार बिल्कुल ही स्थूल है। मैंने पहले भी कहा था कि नअी तालीम का ध्येय है गुण विकास न कि केवल अुद्योग के जरिये पढाना। पुस्तको के जरिये पढाना अेकागी है। लेकिन हमारा मूल अुद्देश्य है गुण विकास और फिर अुसके लिअे आजीविका की दृष्टि से अुद्योग की तालीम, मानसिक विकास के लिअे चिंतन, घ्यान, भक्ति, अुपासना आदि सब आता है। अगर मूल अुद्देश्य आत्म-विकास, गुण विकास न रहा तो नअी तालीम का भी अेक तत्र, अेक टेकनीक बन जायगा जैसे फ्रोबेल, मान्टेसरी आदि का बना है। मुझसे पूछा जाता है कि मान्टेसरी की पद्धति में और आपकी पद्धति में क्या फर्क है? मांटेसरी का अेक खेल सा चलता है। मैं यह नही कहना चाहता हू कि वह निकम्मी चीज है, अुसने भी काफी खोज की है। परन्तु गाधीजी ने हमसे कहा था कि बच्चा मा के पेट मे आता है तबसे लेकर श्मशान तक अेक पूरी चीज नअी तालीम है। अिसलिअे हम नअी तालीम का अेक तत्र बनायंग जैसे सरकार का बनता है तो हम शुष्क बनेंगे। फिर तत्र ही तत्र रहेगा। अुसमे से मत्र खतम होगा।

यह सारा देखकर मेरा जी घबडा जाता है। अिन दिनो कभी-कभी मैं कठोर बोलता हूँ जैसे अवसर नही बोलता था। अिसका कारण यह है कि मैं अपने से असतुष्ट हू। मेरी यात्रा चलती है। अुससे भी मैं असतुष्ट हू। जब से ब्रह्मविद्या मदिर का आरभ हुआ तब से मुझे लगता है कि मेरी यात्रा भी अेक चलता-फिरता ब्रह्मविद्या मदिर होनी चाहिये। परतु नही होता है और लोगो में अितनी अुदारता है कि अुनपर साधुत्व का असर तो होता ही है परतु अुनपर साधुत्व के ढोग का भी असर होता है। साधुत्व का ढोग हो तो भी वे अुतने अुदार होते है कि अुससे भी कुछ-न-कुछ पाते ही हैं। तुलसीदासजी ने कहा जाम्बुवान और हनुमान कुवेशधारी थे परन्तु साधु थे। अिससे अुल्टा

कुछ लोगों का सिर्फ वेश साधु का होता है। हमने कुछ-न-कुछ तपस्या की है, कुछ बापू का नाम भी साथ है। अिसलिअे हमारा कुछ-न-कुछ असर हो ही जाता है लेकिन फिर भी आज हमारे चित्त में बेचैनी है और सत्याग्रह का आगे चिंतन करने में रुकावट पैदा हो रही है। मैंने अपने साथियों से कहा कि हमारी यात्रा का जनता पर जो भी असर होता है लेकिन मैं जब ध्यान करने बैठता हूं तो ध्यान में जो दर्शन होना चाहिये नही होता है, तब मैं व्याकुल हो अुठता हूं। लोग मेरी यात्रा पर जो टीका करते हैं वह बिल्कुल सौम्य है। मैं अपने पर अुससे बहुत ज्यादा टीका करता हूं। जब मैंने देखा कि यहा गांव-गांव में लोगों ने बहुत बडी तादाद में शाति-सेना में नाम दिये, दान भी दिया और लोगों ने हम से यह कहा कि आपकी जो यात्रा चल रही है अिस प्रकार की यात्रा काश्मीर में पहले शंकराचार्य ने की थी। अुसी तरह यहा और भी कअी पैदल यात्री आये होंगे परन्तु अेक सामाजिक मिशन लेकर, आध्यात्मिक क्राति की बात लेकर जन-समाज में जाने वाली अैसी यात्रा पहले शकराचार्य की ही हुअी थी और अुनका स्मरण करके लोग मेरी तुलना अुनके साथ करते हैं तो मुझ पर बडा भार आता है। अुनकी मूर्ति मेरे सामने खडी होती है और लगता है कि वे मेरे बारे में क्या सोचते होंगे। मैं मन में कल्पना करता हू कि अुनकी यात्रा किस तरह चलती होगी। यह ठीक है कि जमाना बदला है और विज्ञान के-जमाने में नये औजारो को लेना ठीक है। बिल्कुल अुनके जैसे पुराने ढंग से यात्रा करना ठीक नही है लेकिन अुनकी यात्रा तो अेक ब्रह्म-विद्या की यात्रा थी। अिसलिये आज मैं मन में अपने लिअे ही असंतुष्ट हूं।

मेरा कहना यह है कि हमारे सब काम अेक बुनियाद पर हैं। जब मैं अुस पर सोचता हूं तो मुझे लगता है कि यह तो अेक कम-से-कम बात है कि तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ अेक बने। जिससे बहुत अधिक होने की जरूरत है लेकिन हम अितना करते हैं तो यह करने के बाद आगे क्या करना है वह सूझेगा। खुशी की बात है कि दोनों अेक हो रहे हैं।

हमें जो ग्रामदानी गाँव मिले हैं अुनमें से कुछ हमें चुनने चाहिये और वहां पर पूर्ण प्रयोग करने चाहिये। अैसे जो प्रयोग करेंगे अुनमें नअी तालीम का स्वरूप क्या होगा, अिस पर हमें सोचना होगा। अक्रानी महल में सरकार की तरफ से अेक योजना चलती है और सरकार के और हमारे कार्यकर्ताओं के बीच सहयोग चलता है। प्रोफेसर बग ने मुझे लिखा है कि सरकार चाहती है कि तालीम का काम हम अुठायें और हमने अुसे मान्य किया है। वैसे वहां की हालत तो बिल्कुल आदिम (प्रिमिटिव) है। वहां के लोग राम और कृष्ण का नाम भी नहीं जानते। **अब यहां पर नअी तालीम के व्यापक प्रमाण का क्या रूप होगा, यह हमें बताना होगा।** हमारे कार्यक्रम का दूसरा अंग होगा शाति-सेना खडी करना। अुसके वास्ते तालीम की जरूरत है। **शांति-सेना का कुल काम नअी तालीम का काम है** यों समझ कर हम अुसे अुठायें तो अेक बहुत बडी जमात हमारे लिअे अनुकूल होगी। तीसरी बात यह है कि हमारे जितने काम चलते हैं अुनमें अिस विचार का प्रवेश कैसे हो, अिस पर हमें सोचना होगा। ये तीन मुख्य बातें हैं। अुसके साथ-साथ राष्ट्रीय पैमाने पर तालीम को क्या रूप देना, अिस पर भी आपको सोचना होगा और कुल

राष्ट्र को अुसके लिअे अनुकूल बनाना होगा। मैंने जो ब्रह्मविद्या की बात कही अुसका कोअी कार्यक्रम नही बन सकता है, परन्तु हम अुस पर सोचें और सोचने पर हमें कुछ न कुछ सूझेगा।

देश मे जो तालीम के जानकार हैं अुनके पास मानस-शास्त्र समाज-शास्त्र, का ज्ञान है। तालीम का सम्बन्ध वे समाज-शास्त्र और आर्थिक ढाचे के साथ जोडते हैं। अिसलिअे हम अपनी परिभाषा को बदले और आज के समाज के लिअे अच्छी तालीम होनी चाहिये, अिसके अुसूल पेश करे। हमने अबतक काफी प्रयोग किये और दिशा बतायी। अिसलिअे अब प्रयोग करने हो तो वे ही करे लेकिन हम तालीम के मूलभूत विचार लोगो के सामने रखते जाय। मैंने यह सोचा है कि खासकर जहा-जहा तालीम के मरकज हो वहा मैं लोगो के सामने तालीम के दर्शन रखूं। आज देश को अिन चीजो की आवश्यकता है और हमें देश को अिस दिशा मे ले जाना होगा। फिर पाठ्य पुस्तक आदि की बाते वे तय करे। लेकिन कुछ बुनियादी बाते हम बतायें। हमने बुनियादी तालीम का अेक ढाचा बनाया है। वह आज जो चलता हैं अुससे कमजोर हैं या अच्छा हैं यह अलग बात है, परन्तु वह अेक ढाचा है। तालीम को हम ढाचे से बाहर निकाले और मूल विचार लोगो के सामने रख दें।

अिस तरह हमने तीन बातें करने का सोचा है, ग्रामदानी गांवो में प्रयोग, शान्ति-सेना और अपनी सब संस्थाओं को नअी तालीम का रूप देना। हम अितना करेंगे तो सरकार को भी आकर्षण होगा। आज हम शाति सेना का कुछ रूप दिखाते हैं, ग्रामदानी गांव में अुत्पादन बढाते हैं, शहरो की तरफ जाने वाली लोगों की बाढ को रोकते हैं, गांव की अच्छाअिया बढाते हैं, बुराअिया रोकते हैं तो अिन सब का असर सरकार पर होगा। आज हमारे जो रचनात्मक काम चल रहे हैं वे ज्यादा दिन तक नही चलने वाले हैं। सरकार की मदद आगे नही मिलनेवाली है। अिसलिअे अुनका रूपान्तर करके हम दूसरा रूप खडा करे तो सरकार पर अुसका असर होगा। आज सरकार को बेकारों को काम देने की जिम्मेवारी अुठानी होगी, नही तो अुन्हे खिलाना होगा। जब सरकार वह जिम्मेदारी अुठाने का तय करेगी तब आपके ग्रामस्वराज्य का अुसे आकर्षण नही तो भी मजबूर होकर अेक अवशिष्ठ (residuary) के तौर पर जनता को काम देने के लिअे वह आपकी कुछ चीजे कबूल करेगी। वैसे जन-सख्या बढ रही है तो आपका दरिद्र सेक्टर कम नही होनेवाला है। अिसलिअे आप खादी के जरिये कुछ करके दिखाते हैं, ग्राम सकल्प और ग्राम-स्वावलम्बन के आधार पर कुछ गाव में चरखे चलाते हे तो वह भी आकर्षण होगा। अुसके साथ-साथ अच्छी तालीम क्या है, अिसकी जानकारी भी हम देते जाय, अेक भावात्मक पहलू (Positive aspect) सामने रखते जाय तो ठीक होगा।

प्रश्नोत्तरी

[शिक्षा में आध्यात्मिक श्रद्धा का आधार कैसा बने ?]

प्रश्न आज की प्रचलित शिक्षा की व्यवस्था में और रचनात्मक कार्यक्रम की शिक्षा व्यवस्था में भी ब्रह्मविद्या आधार नही है, अैसा आपने कहा था-अुसके बारे में अधिक विस्तार से कहिये ।

अुत्तर मैंने अभी अेक ब्रह्मविद्या मदिर की कल्पना कार्यकर्त्ताओ के सामने रखी है और खासकर बहनो ने अुसका कुछ काम भी शुरू कर दिया है । अुसका चिंतन मेरा बरसो से चला है । हमारे जो आश्रम चलते है, अुनके बारे में काकासाहब की और मेरी यह शिकायत हमेशा रही है कि शरीर परिश्रम की महिमा तो हम सब मानते है, मैं तो अुसमें पूरा समय भी देता था, लेकिन शरीर परिश्रम की निष्ठा बनी है अैसा नही कह सकते हैं । मिसाल के तौर पर यह सवाल अुपस्थित हुआ था कि हमारे पास पढे हुअे बच्चे बाहर जाकर क्या काम करेंगे, तो मैंने सहज ही कह दिया कि हमारे बच्चे अुत्तम रसोअी बनाना जानते है, प्रेम से सेवा करना जानते है, तो कही हॉटेल खोलेंगे और प्रेम भाव से सबको खिलायेंगे, तो अुनके लिअे अेक अच्छा कार्यक्रम रहेगा । जब मैंने यह विचार प्रकट किया तो सब को बहुत चोट पहुची सब को लगा कि हमारे आश्रम का लडका और होटल चलायेगा ? हमारे लडके भगी काम भी जानते है तो किसी ने भगियों के साथ रहकर म्युनिसीपालिटी की तरफ से तनख्वाह ली और भगी काम किया तो क्या हर्ज है ? लेकिन बात अैसी है कि हम लोग ये सारे काम करने के लिअे तैयार तो है, लेकिन आश्रम के अदर, दुनिया में जाकर हमारे बच्चे ये काम कर सकते है, अिसे हम सहन नही कर सकते हैं । याने प्रत्यक्ष काम करना तो दूर ही रहा, विचार के तौर पर भी अुसे सहन नही कर सकते है । याने अुसमें हमारी आध्यात्मिक दृष्टि नही है । रामकृष्ण परमहस साधना के तौर पर सुबह होने के पहले कलकत्ते के कुछ पैखाने साफ करके आते थे । मैं सबसे नीचा बनू, मेरा अहकार मिटे, अिस दृष्टि से वे वह काम करते थे । आश्रम में हम लोग रोज पैखाने साफ करते थे, लेकिन अुसमें साधना की दृष्टि नही थी । अुस दृष्टि के अभाव में हमें लगता था कि हमारे विद्यार्थियो को बाहर कुछ काम का मौका मिलना चाहिये ।

अीसा मसीह ने कहा था 'love Thy neighbour as thyself' अगर वे सिर्फ कहते Love thy neighbour तो हम अुसे समझ सकते थे । पडोसी पर प्यार करना चाहिये, अुससे हमें लाभ भी अुठाना चाहिये, वह भी हम पर प्रेम करे, यह सब जानते हैं । परन्तु क्या Love thy neighbour as thyself यह अपने से बनता है ? अगर नही बनता है तो अुस पर गहराअी से सोचे । दूसरो पर अुतना प्यार करना, जितना कि हम अपने पर करते है, क्यो नही बनता है ? अपने पर ज्यादा प्यार क्यो किया जाता है ? यह अिसलिअे कि हमारे शरीर के अदर जो आत्मा पडी है, वही सब दूर फैली है, अुसे हम समझते नही । दुश्मन पर प्यार करो, यह बात हमें विचित्र-सी लगती है । समझना चाहिये कि हम दुश्मन पर प्यार करते है तो दुश्मन के दोस्त बनते हैं । यह अेक रासायनिक प्रक्रिया है । वह जितना

कट्टर दुश्मन था, अुतना पक्का दोस्त बन जाता है। यह अेक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अिन दिनों मेरे मन में यह आता है कि अुन्होंने अुधर आणविक अस्त्र निकाले हैं, वे घर बैठे-बैठे अस्त्र भेजेंगे और दुनिया का नाश करेंगे। अुसका मुकाबिला हमें करना है, तो यह होना चाहिये कि हम भी घर बैठे-बैठे आध्यात्मिक शक्ति के प्रयोग कर सकते हैं, और जैसे वे दुनिया के वातावरण को बिगाड सकते हैं वैसे हम दुनिया के वातावरण को शुद्ध कर सकते हैं। यह जो सारी आध्यात्मिक खोज करनी है, अुसपर हम सोचते नहीं हैं। हमने कार्यक्रम का अेक यान्त्रिक ढाचा बनाया है, और अुसके हम कैदी बनते हैं। अिसलिअे हमने ब्रह्मविद्या मदिर की बहनों से कहा है कि आप पर पुरानी कोअी चीज चलाने की जिम्मेवारी नही है। प्रार्थना चलानी है या नही चलानी है, और चलानी है तो अुसका स्वरूप क्या होगा, अिस पर आप सोचिये। अिस तरह मैंने अुन्हें विचार में बिलकुल मुक्त कर दिया है। अब मुक्त कर देने पर भी वे कुछ पुरानी चीजें चलायें तो दूसरी बात है। मुझे अुन लोगों पर बडी दया आती है जिन्हें प्रार्थना में बिलकुल ही रस मालूम नही होता है, फिर भी हम जबर्दस्ती से, कानूनन अुन्हें प्रार्थना में लाते हैं। भगवान सोचता होगा कि ये लोग मेरे लिअे दूसरों को क्यों तकलीफ देते हैं? होना तो यह चाहिये कि प्रार्थना में मेरे अिर्दगिर्द कितने लोग बैठे हैं, यह मैं क्यों देखू। मैं अपनी आत्मा में लीन हो जावू तो ठीक होगा। परन्तु हम देखते हैं कि प्रार्थना में हाजिरी भी ली जाती है। अुससे जीवन पर कुछ भी असर नही होता है।

गत शताब्दि में अिग्लैण्ड से कुछ मिशनरी यहां आये थे। यहां की सब भाषाओं में बाअिबल का तर्जुमा करना अुनका काम था। अुन लोगों की अेक जमात थी। वे धधे अलग अलग करते थे लेकिन सारी कमाअी अिकट्ठा करते थे, कम्यून बनाकर रहते थे। अितवार को वे भगवान की प्रार्थना करते थे। औसा मसीहने कहा था कि प्रेम की प्रार्थना करने जाओगे, तब तुम्हारे किसी भाअी के लिअे तुम्हारे मन में बुरी भावना नही होनी चाहिये। तब तुम प्रार्थना में बैठने के लिअे लायक बनोगे। अिसलिअे वे लोग शनिवार की शाम को अिकट्ठा बैठते थे, और जिसके मन में जो भी आया वह कह देते थे। अिस तरह पूरी सफाअी करके फिर वे अितवार की प्रार्थना में जाते थे। प्रार्थना के लिअे तैयारी करना याने स्वच्छ मन बनाना है। हम अपने किसी साथी के लिअे मन में कुछ रखें, अुसे बताये नहीं तो अिससे प्रार्थना नही बनेगी। हर शनिवार को अपने मन को धोने की प्रक्रिया मुझे गहरी आध्यात्मिक चीज मालूम होती है। अगले हफ्ते मन में बुराअी आयी तो फिर से शनिवार को धो ले। जब तक मन अूची अवस्था में नही जाता है, तब तक धोने की यह क्रिया सचाअी के साथ किया करे। औसी बाते मुझे आकर्षित करती है। हमारी जमातों में वह होना चाहिये।

हमने सगतिपूर्वक विचार का अेक दालान छोड दिया है। हमारे सारे चितन करने वालों के—शकर, रामानुज, चैतन्य आदि के चिंतन में जो गहराअी थी, अुस गहराअी तक हम पहुचते नहीं हैं। हम कुछ थोडा भजन कर लेते हैं। अुस भजन में जितनी है अुतनी ही हमारी गहराअी होती है, ब्रह्मविद्या को हम परलोक की विद्या के जैसा गौण समझते हैं। अपने

लिअे यह चीज नहीं है, अैसा मानते हैं। अिसमें हम बडी गलती कर रहे हैं। हम अुस बुनियादी चीज को छोडते हैं तो अहिंसा के लिअे आधार ही नहीं रहता। अहिंसा की जो बुनियाद है, अंदरूनी अेकता का भान-अुस बारे में हम चिंतन नहीं करते हैं, अुसकी छानबीन नहीं करते हैं। गीता में कहा है–

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्॥

अिस तरह पूरा चित्र बताया है, अुसका चिंतन, मनन करना चाहिये परन्तु हम नहीं करते हैं। अिसलिअे कर्म से ज्ञान की स्फूर्ति आने के बदले कर्म से हम जड बन जाते हैं और नयी चीज ग्रहण करने की शक्ति हममें नहीं रहती। कल मैंने काका साहब की बापू पर लिखी हुअी अेक किताब पढी। अुसमें रोमांरोला का अेक वाक्य पढा, जिसने मेरा दिल खींच लिया– The less I have, the more I am. मेरे पास जितना कम होता है अुतना ही मैं हूँ। यह जो have चलता है, अुससे am कम पड जाता है। अिस वाक्य से चिंतन के लिअे अेक दालान ही खुल जाता है। किस तरह परिग्रह बढा-बढाकर हमने अपनी महिमा घटा ली है, अुसका भान होता है, अिसलिअे हमारी संस्थाओं में कुछ सत्संग की योजना होनी चाहिये। अभी यंत्रविद्या अितनी व्यापक हुअी है कि हर बात का यंत्रीकरण होता है, अिससे हमें बचना चाहिये। मैं चाहता हूं कि हमारी संस्थाओं में दो बातें हों। (१) दिल की सफाअी की, चित्तशुद्धि की योजना, (२) कर्म से अलग होकर चिंतन करना।

(तालीमी संघ की बैठक (पठानकोट) में)

संस्थाओं में सामुदायिक प्रार्थना का स्थान

प्रश्न : सामुदायिक जीवन में प्रार्थना के दो स्वरूप होते हैं, अेक कर्ममय प्रार्थना-जहां जीवन का हरेक काम अीश्वर की आराधना के रूप में किया जाता है। अीसाअी सन्त ब्रदर लोरेन्स के बारे में यह परम्परा है कि वे समाज के लिअे रसोअी, सफाअी आदि सब काम प्रार्थना के रूप में ही करते थे। प्रार्थना का दूसरा स्वरूप यह होता है कि समाज के सब सदस्य प्रतिदिन अेक नियत समय पर अीश्वर की आराधना के लिअे अेकत्र होते हैं। किसी भी शिक्षण-संस्था में मेरे विचार में प्रार्थना का पहला स्वरूप सहायक होता है। हमारी शिक्षण संस्था में समाज की रसोअी, सफाअी, शरीरश्रम आदि सब प्रवृत्तियों में शिक्षक और विद्यार्थी सब के लिअे नियमित रूपसे भाग लें यह अपेक्षा रहती है। अिसी प्रकार संस्था की सामुदायिक प्रार्थना में भी शरीक होने की अपेक्षा रखना ठीक है कि नहीं? मेरे विचार में सामुदायिक प्रार्थना के पीछे यही भावना है कि समाज की सभी प्रवृत्तियां प्रार्थना के ही प्रकार हैं।

आर्यनायकम्

अुत्तर : संस्था में किसी की भगवान पर श्रद्धा नहीं है तो भी भगवान के भक्तों पर तो श्रद्धा होती है। अिसलिअे भक्तों के साथ बैठने में अुन्हें खुशी ही होनी चाहिअे। मैं अगर नास्तिक हूं और मुझे आपके साथ बैठने में ही अुज्र हो तो मुझे वहां नहीं रहना चाहिअे। समूह में हम अपेक्षा रख सकते हैं कि सब कोअी

प्रार्थना में आयें। लेकिन कोओी नहीं आना चाहता है तो अुसपर सोचना होगा। अिसमें कओी सवाल आते हैं। अेक मनुष्य को आप दूसरी सब तरह से मान्य करते हैं तो क्या केवल प्रार्थना के लिअे जाने दिया जाय? लेकिन संस्था में विद्यार्थी और शिक्षक प्रार्थना में शरीक हों यह अपेक्षा रखना ठीक है।

आग्रह और अधिकार

प्रश्न : सामुदायिक जीवन में अधिकार और आग्रह का क्या स्थान है?

अुत्तर : मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति जितनी बढेगी, अुतना अधिकार का अुपयोग करने की जरूरत नही पडेगी और न अधिकार चलेगा। अधिकार चलाने की जरूरत पडे, तो अुतनी वह खामी मानी जायेगी। परमेश्वर का हम पर अधिकार है, लेकिन अुसने हमें पूरी आजादी दे रखी है। "ओीश्वर नही है" अैसा हम कहते हैं तो वह अुसे भी सहन करता है। अुसने कुछ कानून बनाये हैं और वह शात रहता है। जिस शख्स को ओीश्वर के साथ जितनी अेकरूपता होगी, अुतना वह सिर्फ बात कहकर शात रहेगा। वह शख्स अधिकार नही चलायेगा। सृष्टि में जो चलता है, अुससे लोगो को तालीम मिलती ही है। हम चाहते हैं कि हम कुल समाज में घुलमिल जायें। तो अुस हालत में हमारे अधिकार चलाने से हमारी अच्छाओी और बुराओी दोनों का प्रचार होगा। लेकिन अगर मैं अधिकार नही चलाता हू, अपना जीवन जीता हू, सलाह देता हू तो मेरी अच्छी चीज ही दुनिया में चलेगी। अधिकार चलाने में यही खतरा है कि अुससे मेरी अच्छाओी और बुराओी दोनो चलेगी।

'आग्रह' शब्द के हिन्दुस्तान की कुछ भाषाओं में विलक्षण अर्थ हैं। तेलुगु में 'आग्रह' के मानी है क्रोध, गुस्सा। 'सत्याग्रह' शब्द चल पडा है। अिसलिअे अुन लोगो ने अुसे सहन कर लिया। बचपन में मेरा यह चलता था कि मैं जरा आसपास के लोगो की परीक्षा करता था। पांच-सात साल तक यह चलता रहा। फलाने ने फलानी गलती की, अिस तरह दर्शन भी होता था। वह दर्शन कुछ सही भी होगा और कुछ गलत भी होगा। आखिर मैंने यूं सोचकर वह छोड दिया कि अुससे दुनिया का मामला कुछ नही सुधरेगा। अपना ही बिगड सकता है। फिर मेरा अपना निज का परीक्षण चलता रहा। मैं अपने दोष देखता रहा। काफी साल तक वह चला। फिर मेरे मन में असतोष पैदा हुआ। मुझे लगा कि हम दूसरों के गुण गायें तो अपने भी गुण क्या न गायें? हम गुण ही गायें, अपने भी और दूसरो के भी। क्योकि गुण आत्मा के होते हैं और दोष शरीर के होते हैं। अपना भी स्वरूप आत्मा है और दूसरो का भी स्वरूप आत्मा ही है। तब से मैं गुण ही गाने लगा। मैं कभी कभी अपनी ही मिसाल देकर कहता हू कि आपको सातत्य सीखना है तो मेरी तरफ देखिये। जब से यह चला तो कुछ लोग मुझे अहकारी समझने लगे। भक्तो ने कहा है कि "भगवान के गुण गाओ"। अुसका मतलब यह है कि सृष्टि में जो गुण पडे हैं वे भगवान के गुणो का ही हिस्सा हैं। अिसलिअे वही हम गाया करेंगे। अपने और दूसरो के भी गुण ही गाया करेंगे तो वाणी से गुणवान् ही होगा। जब से मैंने यह शुरू किया तब से मैं प्रसन्न हूं। "मैं बुरा मैं बुरा" कहने से वह बुराओी मिटी नही। समझना चाहिये कि अुस बुराओी का मेरे साथ

कोओी ताल्लुक नही है, मेरी देह के साथ ताल्लुक है, अिसलिअे वह जायेगी। जहा हम गुणगान करते हैं, वहा आग्रह की बात नही रहती है। किसी में दोष है तो वे प्रकृति के कारण हैं। वे जायेंगे। अिसलिअे मैं तो हरअेक का गुण ही गाअूगा। यह चीज आग्रह से बेहतर है।

जॉन दि बेप्टिस्ट बडा आग्रह रखता था। वह कहता था कि आप पापियो के साथ कैसे बैठते हैं। मेरा ख्याल है कि अीसा मसीह के स्वभाव में आग्रह नहीं था। परन्तु जैसे जैसे अुनका समाज के साथ सबध आता गया, और अुन्होंने कुछ प्रचार शुरू किया तब अुनमें थोडा आग्रह आया। मेरा अपना भास है कि अुन्हें सूलीपर चढाया, अुसमें समाज का तो दोष है ही, परन्तु अुनका भी दोष है। woe unto thee वाला जो अध्याय है अुसमे मथि ने सारे woe अेकत्र किये हैं। शायद अुन्होने अलग अलग भी कहा होगा। परन्तु वह मुझ से पढा नही जाता। मराठी में अुसका बडा ही सुदर अनुवाद किया है। 'अरे पाप्यानो तुम्हास हाय हाय।' मेरा खयाल है कि वह ज्यादा हुआ। अुसमें अुनके मन में प्रेम था अिसमें कोअी शक नहीं है। परन्तु साम्य कम है। यही चीज साक्रेटिस, टालस्टाय और तुकाराम में दीखती है। अुनके मन में मातृवत् प्रेम है, परन्तु माता अपने बच्चे के हित के लिअे गुस्सा करती है, अिसलिअे फिर अैसे शब्द मुह से निकल जाते हैं। अुसमें मनुष्य सतुलन खोता है। और जितनी मात्रा में वह सन्तुलन खोता है, अुतनी मात्रा में सत्य कम होता है। सत्य और प्रेम का यह बडा झगडा चलता है। प्रेम बढता है और सत्य घट जाता है। अिसलिअे जरूरी है कि प्रेम ठीक मात्रा में रहे। अिसीलिअे शकराचार्य को बार-बार कहना पडता था कि तुम किसी से द्वेष मत करो और किसी पर प्रेम मत करो। 'प्रेम मत करो' का अंग्रेजी तर्जुमा बडा विचित्र मालूम होगा। याने प्रेम भी अैसी बात होती है जिसमें सत्य की कमी होती है। प्रेम के साथ आग्रह आता है तो सत्य कम होता है।

मेरा मानना है कि विज्ञान के जमाने में सूक्ष्म सत्य की जितनी खोज होगी अुतना आग्रह कम होता जायेगा। वैसे मुझे भी आग्रह बहुत रह गया है, वह जाना चाहिये। और जरूर जायेगा, क्योंकि वह मुझे पसद नही है। जो रहा है, वह पुराना शेष रहा है। परन्तु वह अुचित नही। हमारी यात्रा का ढग ठीक से नही चलता है अैसा मुझे लगा। अिसलिअे मैंने अभी कुछ आग्रह रखा। पहले हमारी यात्रा में गाव-गाव के लोग रसोअी करते थे। लेकिन यहा पर रसोअी करने के लिअे ५-६ रखे गये हैं। वह चीज मुझे पसद नही है। अब सवाल पैदा होता है कि हम ही रसोअी करने जाते हैं तो बहुत समय जायेगा। अगर लोगो के घरो में खाना खायें तो वहा गदगी होती है, जिससे बीमार पडने की सभावना रहती है तो यात्रा पर भी प्रभाव होता है। शकराचार्य, बुद्ध भगवान आदि अैसा ही खा खा कर बीमार पडे थे। अुन्होने नियम रखा था कि भिक्षा में जो मिले अुसे खाना है, और फिर अुसका परिणाम भी भोगा। अब हम घर घर जाकर लोगो को सफाअी, ठीक से रसोअी बनाना आदि सिखाने लगें तो वही प्रोग्राम बन जायेगा अिसीलिअे यहा रसोअिये रखे हैं। लेकिन मुझे यह चुभता है। फिर लगता है कि टोकन के तौर पर हम अुन लोगों को कुछ मदद करे। कभी-कभी लगता है कि अुस तरह असतोष क्यों होना

चाहिये, दुनिया में जो चलता है वह चलने दिया जाय। अिस तरह हम दुविधा में पडे हैं। अिस विषय के अनेक पहलू हैं। गीता में कहा है कि जैसे अग्नि के साथ धुआ होता है, वैसे हर कर्म के साथ कुछ दोष होता ही है। परन्तु अब यह देखना है कि दोष की मात्रा कितनी है। अग्नि ज्यादा है या धुआ।"

बुनियादी चीज है ब्रह्मविद्या।

प्रश्न : अैसा लगता है कि हम सब ज्ञानपापी हैं। हम सब अपनी गलतिया महसूस करते हैं परन्तु सुधार नहीं पाते हैं। यह ज्ञानपाप क्यों होता है?

अुत्तर : यही प्रश्न अर्जुनने भगवान् से पूछा था। मेरा ख्याल है कि अिनमें जो ज्ञान है, वह वास्तव में ज्ञान नहीं है, याने स्पष्ट ज्ञान नहीं है। स्पष्ट ज्ञान हो तो सामने अधकार टिक नहीं सकता है। "शायद कुछ बिगडा है," अैसा हमें लगता है। याने अिसमें "शायद" है, स्पष्ट ज्ञान नहीं है। जब तक हम बुनियादी चीज को नहीं समझते हैं, तबतक स्पष्ट ज्ञान नहीं होते हैं। बुनियादी चीज है ब्रह्म विद्या। समझना चाहिये कि मैं और आप अलग हैं, अिस विचार में जो अलगाव है, वह देह के कारण है, गलत है। अुसी के कारण सकोच और भय पैदा होता है। वह अलगाव ही न रहे और हम सब अेक हैं, अिसका भान हो तो अधकार मिट जाता है। आजकल चवथी बीमा की बात की जाती है, और कहा जाता है कि वह सब को जोडने वाली चीज है। हम कहते हैं कि सब को जोडनेवाली कोओी चीज है, यह माना तो भी हम और आप अलग ही हैं, अैसा कहा जायेगा। अिसलिअे हम अेक ही हैं, अिसको समझना होगा। हमारे मन में कोओी चीज आयी और हम चाहे अुसे प्रकट न करे तो भी वह चीज फैलती है। अभी हमें अितना अेहसास नहीं हुआ है कि जब कभी हमने मन में विचार किया तब वह फैल हो जायेगा। परतु विचार आगे बढेगा तो मन में जो सारा चलता है अुसका भी रेकार्ड करने का यत्र हमारे हाथ आयेगा। विज्ञान की जो प्रगति हो रही है अुस पर से मुझे लगता है कि यह भी सभव होगा। आज आप मेरा शब्द पकड सकते हैं। आपने रेकार्ड कर लिया तो फिर मैं अिन्कार नहीं कर सकता हू कि मैंने फलानी चीज नहीं कही। लेकिन आज मेरे मन में क्या चल रहा है, अिसको पकडने की युक्ति हाथ नहीं आयी है, फिर भी कल हाथ में आयेगी। अिसलिअे चित्त में कोओी भी गलत विचार न आये अैसी किसी मनुष्य की शक्ति हुओी तो वह दुनिया को बचा सकता है। बापू ने जो कहा था कि अेक भी शुद्ध सत्याग्रही हो तो वह सारी दुनिया को बचा सकता है, वह बिलकुल मिस्टिक (गूढ) चीज मालूम होती है, परन्तु वह सही है। हमारे मन में कोओी विचार आये, तो हम अुसे अिस ख्याल से छिपाते है कि हम सोचते हैं कि हम अुसे छिपा सकते हैं लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि मन में विचार लाया तो अुसे छिपा ही नहीं सकते हैं, तब हम अुसे प्रगट करेंगे। आज हमें लगता है कि बोलने से मामला बिगड जायेगा, अिसलिअे हम बोलते नहीं, विचार मन में ही रखते हैं। लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि कोओी गलत विचार मन में आया तो ज्यादा बिगडा, बोलने से शायद थोडा सुधरेगा, तब हम बोलेंगे। और फिर अुसकी भी कोशिश करेंगे कि कोओी गलत विचार मन में ही न आये।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ का संगम

आर्यनायकम्

मार्च १९३८ में हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में हिन्दुस्ताना तालीमी संघ की स्थापना हुअी। प्रस्ताव में यह कहा गया कि "कांग्रेस की राय है कि प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की जगह निम्न बुनियादी अुसूलों के मुताबिक बुनियादी शिक्षा दी जाय :–

१. देश के तमाम लडके-लडकियों को सात साल तक मुफ्त और लाजिमी तालीम मिलनी चाहिये।

२. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये।

३. यह सात साल की तमाम तालीम किसी अुत्पादक हाथ की दस्तकारी के मार्फत दी जाय और जहा तक सम्भव हो, दूसरी तमाम हलचले और काम भी अिसी केन्द्रीय घन्धे के अिर्द-गिर्द चले-धन्धा बच्चे की परिस्थितियों की पूरी तरह ध्यान में रखकर ही चुना जाना चाहिये।

"अिसलिअे काग्रेस की राय है कि शिक्षा के अिस बुनियादी अग का काम चलाने के लिअे अेक अखिल भारत शिक्षा-मण्डल (हिन्दुस्तानी तालीमी सघ) स्थापित किया जाय। वह डा० जाकिर हुसैन और श्री आर्यनायकम् से प्रार्थना करती है और अुन्हे अधिकार देती है कि वे बुनियादी तालीम का ठोस कार्यक्रम तैयार करने के लिअे महात्मा गाधी की सलाह से और अुनकी देखरेख में अेक सघ खडा करें और सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षा के सचालको से अिस कार्यक्रम को स्वीकार करने की सिफारिश करें।

अिस संघ को अपना विधान बनाने, चन्दा अिकट्ठा करने और अिसके अुद्देश्य की पूर्ति के लिअे जिन कामों की जरूरत हो अुन्हे भी करने का अधिकार होगा।"

अप्रैल, ३८ में वर्धा में डा० जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में हिन्दुतानी तालीमी संघ की पहली बैठक हुअी। अिस बैठक में संघ का विधान मंजूर हुआ और सघ के काम के लिअे नीचे लिखे अुद्देश्य निश्चित किये गये।

"अूपर लिखे गये प्रस्ताव के मुताबिक अेक बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम तैयार करना और अेक राष्ट्रव्यापी पैमाने पर अिसे अमल में लाने के लिअे आवश्यक कार्यवाही करना अिस सघ का अुद्देश्य रहेगा।

"अिस अुद्देश्य की पूर्ति के लिये सघ

क. बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा के लिअे अुपयुक्त शिक्षाक्रम तैयार करेगा।

ख. बुनियादी तालीम की संस्थाओं का सचालन और मार्गदर्शन करेगा।

ग. शिक्षकों के प्रशिक्षण केन्द्रों का सचालन, सहायता और मार्गदर्शन करेगा।

घ. आवश्यक साहित्य की रचना और प्रकाशन करेगा।

च. आवश्यक अनुसन्धान कार्य चलायेगा।

छ. प्रचार का सगठन करेगा।

ज. राज्य-सरकारें और गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाअें बुनियादी तालीम का काम

शुरू करें, जिसके लिअे आवश्यक कार्यवाही करेगा।

अूपर लिखे हुअे अुद्देश्यों की पूर्ति के लिअे चन्दा अिकट्टा करना वगैरह आवश्यक काम करेगा।"

अप्रैल १९३८ में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का काम शुरू हुआ और वर्धा में स्वयं गांधीजी के हाथों से नअी तालीम की पहली संस्था का अुद्घाटन हुआ। अिस संस्था का अुद्घाटन करते हुअे गांधीजी ने कहा था।

"यह योजना पूरी तरह से भारतीय योजना है। अिसके आदर्श का जन्म सेगांव (सेवाग्राम) में हुआ है। असली हिन्दुस्तान तो सात लाख गावों में बसा हुआ है, जो सेगांव से भी बहुत हीन दशा में है। मैं चाहता हू कि आप लोग अिन गावों से निरक्षरता को दूर भगा दें, ग्रामनिवासियों के लिअे अन्न और वस्त्र के साधन जुटायें, और सत्य और अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने का सन्देश गावों में पहुंचा दें।

"हर हिटलर तलवार के बल पर अपना अुद्देश्य पूरा कर रहा है; मैं आत्मा के द्वारा पूरा करना चाहता हू। विदेशी विचारो और आदर्शों का आवरण निकाल फेंकिये; अपने आपको ग्रामवासियों के साथ समरस बना दीजिये।

"पाश्चात्य जगत् विनाशक शिक्षा दे रहा है; हमें अहिंसा के जरिये रचनात्मक शिक्षा देनी है; मंगलमय भगवान आपको शक्ति दे जिससे आप वान्छित अुद्देश्य को सफल बना सके।"

१९३८ से १९४४ तक की अवधि को हम नअी तालीम के अितिहास का पहला अध्याय मान सकते हैं। अिस अवधि में दो आजादी की लडाअियां हुअीं। अिनका प्रभाव अवश्य ही नअी तालीम के कार्यक्रम पर रहा। लेकिन अिसका काम चलता रहा। राज्य सरकारों के द्वारा और रचनात्मक कार्यक्रम की संस्थाओं के द्वारा। ७ से १४ साल तक के बच्चों के लिअे राष्ट्रीय शिक्षा का अेक ढांचा बहुत कठिनाअियों के बीच में से तैयार हुआ।

सन् १९४४ में नअी तालीम का अेक नया आदर्श लेकर गान्धीजी जेल से बाहर आये। और जनवरी १९४५ में सेवाग्राम नअी तालीम सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे अुन्होंने कहा:—

"आज तक अगरचे हमारी तालीम तो नयी थी तो भी हम अेक अुपसागर में रहे। खुले समुद्र से अुपसागर सुरक्षित है। अुसकी ओर कुछ रक्षा रहती है। हमारा कार्यक्रम बंधा हुआ है। अब हम अुपसागर को छोडकर भरे समुद्र में फेंके जा रहे हैं। वहां ध्रुवतारे को छोडकर हमारा कोअी रक्षक नही। वह ध्रुवतारा हाथ का ग्रामोद्योग है। अब हमारा क्षेत्र सात से चौदह साल के बालक नही हैं, लेकिन मा के पेट में पैदा होते हैं वहा से लेकर मरते हैं वहां तक हमारा अर्थात नअी तालीम का क्षेत्र है। अिसलिअे हमारा काम बहुत बढ गया है लेकिन काम करनेवाले तो वही रहे।

'अिसकी हम परवाह न करे। हमारा सच्चा साथी सत्यरूपी अीश्वर है। वह हमको कभी धोखा नही देगा। वह सत्य हमारा साथी तभी बन सकता है जब हम किसी की परवाह न करके अुस सत्य पर डटे रहेंगे। अुसमें न आडंबर को जगह है न अहंकार को है न राग क्रोध को। हम सब देहातियों के शिक्षक बनते हैं। यानी देहातियो के सच्चे सेवक बनते हैं। अिसमें अिनाम काम है, तो वह हमारे दिल का

साक्षी, बाहर का कोओी नहीं। सत्य की खोज में हमें साथी मिले तो भी सही न मिले तो भी सही।"

सन् १९४६ में केन्द्र में और राज्यों में राष्ट्रीय सरकारों की स्थापना हुओी। अगस्त १९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों ने यह घोषणा की कि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी तालीम ही राष्ट्रीय सरकार का कार्यक्रम रहेगा। और विभिन्न राज्यों में बुनियादी तालीम की संस्थायें खोली गयी।

अिन वर्षों में सेवाग्राम में गान्धीजी के निर्देशानुसार पूर्व बुनियादी से लेकर अुत्तम बुनियादी तक राष्ट्रीय शिक्षा का सम्पूर्ण कार्यक्रम तैयार किया गया। और राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों के लिअे और रचनात्मक कार्यक्रम की संस्थाओं के लिअे नअी तालीम के कार्यकर्ता तैयार करना हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का विशेष कार्यक्रम रहा।

स्वतंत्रताप्राप्ति के छः महीने के बाद ही गान्धीजी हमारे बीच में से चले गये और विनोबाजी ने सर्वोदय के काम के मार्गदर्शन और नेतृत्व की जिम्मेवारी अपने अूपर अुठा ली। नअी तालीम के प्रयोग की शुरूआत से ही विनोबाजी का मार्गदर्शन नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओं को अुपलब्ध रहा।

सन् १९५१ में सेवाग्राम में जो नअी तालीम सम्मेलन हुआ अुसमें ग्राम विश्वविद्यालय के बारे में सबसे पहिली चर्चा हुओी और अिस चर्चा में विनोबाजी ने भी भाग लिया। अुन्होंने कहा:—

"आज करीब तेरह-चौदह साल हुअे कि अेक बड़ा विचार हमारे देश को मिला। वैसे तो वह नया नहीं है, क्योंकि कोओी भी सत्य-अनुभव नया नहीं होता। वह तो सनातन होता है। अुसके बीज भूतकाल में पड़े रहते हैं, लेकिन जब अुसका कोओी पहलू हमारे जमाने के लिअे आकर्षित होता है, तब हमें आभास होता है कि हमें अेक नया विचार मिल गया। हमारे लिअे वह नया होता है। अुसका नयापन यह है कि अुससे हम चेतना पाते हैं। अब तेरह-चौदह साल का लिबास वह विचार पहन चुका है और अुतने अर्से में अुसकी कुछ कसौटी हुओी है, कुछ अुसकी तपस्या बढ़ी है और वह देश के सामने अेक आवाहन के रूप में खड़ा है। देश को आवाहन कर रहा है कि तेरे लिअे मैं आया हूं, मेरा स्वागत तू कर। मेरे स्पर्श से तुझे चेतना मिलेगी, यों वह बोल रहा है। अितने साल हुअे, कओी तरह के प्रयोग किये गये। प्रयोग तो आगे भी चलेंगे। अुसके विषय में मैं कुछ नहीं कहनेवाला हूं। लेकिन आज वह चीज अेक अैसी हालत में है कि अुसका सत्य, अुसकी असलियत, अुसकी पुष्टि, अुसका अमृतत्व संशय से परे है। यानी जिन्होंने भी अिस पर कुछ सोचा, अुन्होंने अुसको महसूस किया।

लेकिन मैं ताज्जुब में हूं और अिसका मुझे दुख भी है कि अभी तक स्वराज्य प्राप्ति के बाद तीन लबे साल बीत चुके, फिर भी अिन पर हम अमल नहीं कर पा रहे हैं।" -

सेवाग्राम नअी तालीम सम्मेलन के बाद विनोबाजी ने हैद्राबाद के लिअे सेवाग्राम से ही पदयात्रा शुरू की और यही यात्रा आगे जाकर भूदान-यज्ञ मूलक अहिंसक क्रान्ति की यात्रा के रूप में विकसित हुओी।

भूदानयज्ञ आन्दोलन की शुरूआत से नअी तालीम के अितिहास का तीसरा अध्याय शुरू

हुआ, हम अैसा मानते हैं। विनोबाजी ने स्वयं बार बार अपने प्रवचनों में कहा है कि भूदानयज्ञ का काम मूलत: नअी तालीम का ही काम है। सणोसरा में दसवे अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन के अवसर पर अुन्होने जो सन्देश भेजा था अुसमें कहा था :–

"सम्मेलन के लिअे आना मेरे लिअे मुमकिन नही है, यह तो हमारे सब लोग जानते हैं। पर नअी तालीम के सेवको में मै अपनी गिनती करता हूं और मेरा दावा है कि मैं सतत नअी तालीम का काम करता आया हू। आज तो मैं वह विशेष तीव्र रूप में कर रहा हू।।

अिसी सन्देश में अुन्होंने नअी तालीम के आगे के कार्यक्रम के बारे में संकेत किया कि "नअी तालीम के सामने आज बहुत बडी समस्याअें अुपस्थित है। भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का जो विशाल और गहरा कार्य भगवान् ने हम लोगो के जरिये करवाना चाहा है, अुसके कारण हमारे कुछ रचनात्मक कार्य के अर्थात् नअी तालीम के भी, स्वरूप में फर्क पड जाता है। अगर नअी तालीम अपने को अुसके अनुकूल नही बना सकी, तो वह नअी तालीम नही रहेगी, पुरानी हो जावेगी। अिसलिअे नअी तालीम को अब नित्य-नअी तालीम बनना होगा।

पाच-करोड अेकड जमीन की प्राप्ति, अुसका बटवारा और अुसके बाद का रचनात्मक काम, नअी तालीम की मदद के बिना सिद्ध नही हो सकेगा। न अुस कार्य को सिद्ध किये बिना नअी तालीम टिक सकेगी।

भूमि-प्राप्ति के लिअे विचारवान्, विनयशील, कार्यदक्ष, निष्ठावान् सेवको की जरूरत रहेगी। अैसे सेवको का निर्माण कौन करेगा? बटवारे के काम के लिअे विशिष्ट शिक्षण की जरूरत रहेगी। यह शिक्षण कौन देगा? जीवनदानी सेवको को और अुनके परिवारो को समग्र जीवन की शिक्षा कहा से मिलेगी? पूरे-के-पूरे गाव दान में मिल रहे हैं, और मिलेंगे। अुन गावो को सर्वोदय की दीक्षा कौन देगा? सर्वोदय का विचार ठीक ढग से हर देहात और हर घर में पहुचाने की जिम्मेवारी कौन अुठायेगा?

अिन सब प्रश्नों के अुत्तर में नअी-तालीम अनिवार्य रूप में जुडी हुअी है।"

जैसे जैसे अिस भूदान-यज्ञ मूलक अहिंसक क्रान्ति का काम ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य निर्माण और शान्तिसेना के कार्यक्रम में विकसित होता जा रहा है नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ के सामने भी अेक विशाल कार्य क्षेत्र खुल गया। और अेक महान चुनौती खडी हुअी। विनोबाजी के शब्दो में "नअी तालीम का अेक पर्व पूरा हो चुका है। जब से ग्रामदान का आरम्भ हुआ है, तालीम के लिअे नया क्षेत्र खुल गया है।"

खुशी की बात है कि नअी तालीम के विचारशील कार्यकर्ताओ ने अिस चुनौती को स्वीकार किया और अपनी शक्ति के अनुसार अिस क्रान्तिकारी कार्य में लग गये।

सन् १९५७ में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने भी अिस चुनौती को स्वीकार कर नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया :–

"पूज्य विनोबाजी के भूदान कार्य ने अब जो ग्रामदान का रूप पकड लिया है, अुससे अहिंसात्मक समाज-क्रान्ति का काम प्रत्यक्ष रूप से अमल में लाने के दिन आ गये है। अहिंसात्मक क्रान्ति राज्यसत्ता के द्वारा नही, किन्तु शिक्षा के द्वारा हो सकती है। अिसलिअे

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का कर्तव्य होता है कि जिस क्रान्ति में यथासभव सहयोग दे।

"पूर्व बुनियादी, बुनियादी, अुतर बुनियादी तक का अनुभव लेने के बाद और अुसकी आवश्यकता राष्ट्र के सामने सिद्ध करने के बाद अब सघ का कर्तव्य है कि अिस अहिंसक क्रांति में वह श्रद्धा के साथ प्रवेश करे। अिसलिअे हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का भारत भर के सब नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ से अनुरोध है कि भूदान-यज्ञ मूलक अिस अहिंसक सामाजिक क्रान्ति में अिस कार्य का भार जहां-जहां सर्वोदय मण्डलो ने अपने हाथ में लिया है अुसके साथ पूरा-पूरा सहयोग दें।"

अप्रेल १९५९ में राजपुरा (पजाब) में तेरहवे अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन के अवसर पर विनोबाजी ने नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ को यह चेतावनी दी कि नअी तालीम के सामने अब जो सवाल पेश हैं, अुन सवालो को पूरा न्याय हम तब दे सकेंगे जब हमारे सेवको की कुल जमात नअी तालीम के बारे में सोचनेवाली और काम करनेवाली बनेगी।

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने अिस चेतावनी के अेकातिक महत्व को पहिचान लिया और अिस प्रश्न पर विचार करने के लिअे ता २०-५-५९ को पठानकोट में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की अेक विशेष बैठक बुलायी। अिस बैठक में विनोबाजी ने हिन्दुस्तानी तालीमी सघ और सर्व सेवा सघ के सगम की आवश्यकता के बारे में विस्तार से समझाया और नअी तालीम के लिअे राष्ट्र के सामने अेक सप्तविध कार्यक्रम रखा। अिस प्रश्न पर पूर्ण विचार करके सघ ने अेक प्रस्ताव पास किया। (कृपया प्रस्ताव कवर पृष्ठ तीन पर पढें।)

ता. ९,१० और ११ जून को जम्मू में विनोबाजी के पडाव में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की और सर्व सेवा सघ की प्रबन्ध-समिति की अेक सयुक्त बैठक हुअी। अिस बैठक में दोनो सघो के सगम के बारे में प्रस्ताव दोहराया गया और सगम के बाद नअी तालीम के भावी स्वरूप और कार्यक्रम के बार में सदस्यो ने विनोबाजी से मार्गदर्शन प्राप्त किया और आपस मे भी कुछ विचार-विमर्श किया।

जुलाअी १९३७ में पूज्य बापूजी ने सबसे पहिले बुनियादी तालीम की कल्पना राष्ट्र के सामने रखी। पिछले बाअीस वर्षों में अेक कठिन परिस्थिति का सामना करते हुअे अिसका जो कुछ काम हुआ है, वह आज राष्ट्र के सामने है। राज्य सरकारे और राष्ट्र की जनता और अुनके नेता चाहे तो अिसे अुठा ले या चाहे तो स्वतत्र भारत के सामाजिक, आर्थिक, सास्कृतिक और नैतिक लक्ष्यों के अनुकूल सर्व जन मान्य राष्ट्रीय शिक्षा के अेक नये ढाचे का निर्माण करे। ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य, शान्ति-सेना के विकास से नअी तालीम के लिअे अेक नया कार्यक्षेत्र खुल गया है, सत्य और अहिंसा के साधनो से भारत की और विश्व की समस्याओ का सामना करने का अेक महान् अवसर प्राप्त हुआ है। नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ का परम सौभाग्य है कि अिस अवसर पर स्वय विनोबाजी अिस काम का मार्गदर्शन अपने हाथो में ले रहे हैं। जम्मू में अुन्होने कहा –

"मैं बार-बार कहता हू कि तालीम सरकार के हाथ में नही, जनता के हाथ में होनी चाहिये। अिसलिअे ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र और शान्ति सेना के साथ-साथ नअी तालीम का

(शेषांश पृष्ठ २६ पर)

नअी तालीम का नया पर्व

श्री धीरेन्द्र मजूमदार ; अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ ।

सन् १९३७ में अंग्रेजी राज में भी जब कांग्रेस का मन्त्रिमंडल बना तो देश को स्पष्ट झलक मालूम पडी कि अब आजादी दूर नही है। कोअी भी मुल्क जब हजार वर्षों से गुलाम रहता है तो वह न केवल आर्थिक दृष्टि से कंगाल रहता है बल्कि नैतिक तथा आध्यात्मिक कंगालियत पर भी पहुंच जाता है । अैसी परिस्थिति में आजादी प्राप्ति के साथ-साथ देश के सामने सबसे बडा सवाल अपनी कंगालियत दूर करने का होता है ।

गांधीजी के सामने अुस समय यही प्रश्न मुख्य था । अब सवाल यह है कि अिस कंगालियत का निराकरण कैसे हो ? किसी मुल्क के निर्माण के लिअे यह आवश्यक है कि देश की जनता में आत्म-प्रत्यय हो, विकास का मानस हो और अुसके लिअे आवश्यक चरित्र हो तथा नैतिक अेवं आध्यात्मिक पूंजी हो । अिन सामग्रियों की प्राप्ति राजनैतिक तथा आर्थिक संयोजना आवश्यक है । लेकिन योजना-शक्ति के अभाव में सारी संयोजना व्यर्थ होती है । वह शक्ति अूपर बताये हुअे गुणों से ही प्राप्त हो सकती है जिसका विकास न कानून से हो सकता है और न अर्थ-निति से । अुसके लिअे अेक मात्र प्रक्रिया शिक्षण ही हो सकती है । अिसकी सिद्धि में न केवल शिक्षा-पद्धति अनुकूल होनी चाहिअे बल्कि अुसे सार्वजनिक भी बनना चाहिअे ताकि सर्व जन आत्म-चेतना, प्रेरणा. तथा नेतृत्व में समाज का विकास कर सके ।

अुपरोक्त आवश्यकता को सामने रखकर १९३७ में गाधीजी ने पहला काम यह किया कि देश के शिक्षा-शास्त्रियो तथा राज्य-कर्त्ताओं को बुलाकर सालो से सोची हुअी अपनी बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति की रूपरेखा. बतायी । अुन्होंने कहा कि व्यापक रूप से राष्ट्र के हरेक व्यक्ति को शिक्षित किये बिना राष्ट्र-चेतना और राष्ट्रोत्थान असभव है ।

बापूजी की बतायी योजना के प्रति देश का आकर्षण हुआ । काग्रेस संगठन के अन्दर

(पृष्ठ २५ का शेषाश)

काम भी अुठाना चाहिये । शान्ति-सेना के लिअे नअी तालीम जरूरी है, ग्राम-स्वराज्य के लिअे नअी तालीम जरूरी है । अिस तरह अुस पर दुगुना सोचकर जोर देना जरूरी है ।"

मेरी प्रार्थना है कि हम नअी तालीम के कार्यकर्त्ता अिस महान अवसर को पहचानें और श्रद्धा, लगन और सम्पूर्ण आत्म-विसर्जन के साथ अिस आह्वान का जवाब दें ।

पिछले बाअीस वर्षों में जितने मित्रों ने और साथियो ने नअी तालीम के काम में हाथ बटाया है, और अिसकी कठिनाअियों और काम करने के आनन्द में भाग लिया है मैं यहां अपने हृदय से अुन सबका आभार मानता हूं और आशा करता हू कि विनोबाजी के मार्गदर्शन में नअी तालीम के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम के विकास में अुनका पूर्ण सहयोग और सहायता मिलती रहेगी ।

सेवाग्राम ता. २४-६-५६

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ बना और अिस सघ के द्वारा देश बुनियादी शिक्षा के प्रयोग तथा प्रसार के काम में पिछले २२ सालो से लगा रहा।

किसी स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा के कारण अगर अेक पैर आगे बढता है तो दूसरा पैर पूर्व स्थान पर ही रहता है अर्थात् प्रगति चाहे जितनी क्रातिकारी हो अगर अुसे निश्चित दिशा में आगे बढना है तो यह आवश्यक है कि अुसकी रफ्तार को पूर्व स्थिति से समझौता करना होगा। बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा को भी जो आज नयी तालीम के नाम से प्रसिद्ध है, प्रारभ में देश में जो शिक्षा प्रणाली चल रही थी अुसके साथ समझौता करना प्रासगिक ही था और काग्रेस द्वारा नियुक्त जाकिर हुसैन कमिटी ने तथा हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने अिस आवश्यक समझौते को स्वीकार किया। अत. यद्यपि गाधीजी ने राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुसार यह बताया था कि नअी तालीम का क्षेत्र गर्भ से लेकर स्मशान तक है फिर भी सघ ने शुरू में ७ साल से १४ साल तक को बच्चो की अुस प्रकार क्रमानुसार शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की जिस प्रकार देश की चालू शिक्षा प्रणाली बनी हुअी थी और आगे चलकर अुसी सिलसिले में पूर्व बुनियादी, अुत्तर बुनियादी तथा अुत्तम बुनियादी के क्रम का भी विकास हुआ।

पिछले २० साल में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने देश के शिक्षण विचार को आमूल मोड दिया। अुसने सबसे बडा विचार सारे शिक्षा जगत द्वारा यह स्वीकार कराया कि अुत्पादक श्रम शिक्षणप्रक्रिया का अभिन्न अग है। शरीर के लिअे कसरत हर शिक्षण सस्था में मौजूद थी। कही-कही शिक्षण के साथ अुद्योग भी चलता था। लेकिन यह सब स्फुट कार्यक्रम के रूप में था। शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में अिन प्रवृत्तियो को पहले शिक्षा जगत ने स्वीकार नही किया था। यह सही है कि भारतीय सामन्तवादी मान्यता के भग्नावशेष के कारण देश के जन-समाज में श्रम प्रतिष्ठा की सामाजिक मान्यता नही है। अिस कारण अुत्पादक श्रम को शिक्षा के अनिवार्य अग के रूप में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिष्ठित करने में न केवल कठिनाअियां हो रही है बल्कि असफल भी हो रहे हैं। लेकिन पूर्व सस्कार के कारण श्रम के प्रति चाहे जितनी वितृष्णा हो आज शिक्षण में श्रम की आवश्यकता से कोअी भी अिनकार नही कर पाता है। सघ ने देश में न केवल शिक्षण की मान्यता बदली है बल्कि मुल्क के सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षण सस्थाओ को अुत्पादन के माध्यम से शिक्षण प्रणाली के लिअे क्रमवद्ध पद्धति तथा कार्यक्रम भी अुपस्थित किया है जिसे कुछ हेरफेर करके आज देश के करीब-करीब सभी राज्य में चलाने की कोशिश चल रही है।

अिस बीच आचार्य विनोबा भावे द्वारा भूदान-यज्ञ के नाम से नया क्रातिकारी आदोलन शुरू हुआ। आदोलन ने देश के मानस पर जबर्दस्त धक्का दिया। सारा देश आज नअी प्रेरणा तथा नअी आकाक्षा लेकर आगे बढना चाहता है। गाधीजी के कार्यक्रम के प्रति नये सिरे से आस्था निर्माण हो रही है। आदोलन के गर्भ से ग्रामदान की प्रक्रिया निकल कर विश्व में सामुदायिक समाज बनाने का अेक नया मार्ग अुपस्थित किया है। स्पष्ट है कि अिस परिस्थितिने बुनियादी तालीम की नअी बुनि-

याद डालने का अवसर निर्माण किया है । साथ ही साथ देश के विचारक तथा जनता पुरानी शिक्षा-पद्धति की निष्फलता महसूस कर नयी राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति को खोज के लिअे व्याकुल हो रही है ।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के संचालन में तथा विनोबाजी के नेतृत्व में भूदान तथा ग्रामदान आंदोलन में से पक्षहीन लोकनीति तथा स्वावलम्बी अर्थनीति का जो नया विचार निकला है अुससे देशवासी की आशा और भरोसा सर्व सेवा संघ से बढी है । जनता की अब यह अपेक्षा बन रही है कि राष्ट्रीय विकास में सर्व सेवा संघ का मार्गदर्शन हो। अिस कारण आज सर्व सेवा संघ पर बडी जिम्मेदारी आ जाती है ।

मैंने पहले कहा है कि अगर राष्ट्र की चेतना जगानी है तो वह शिक्षण के माध्यम से ही हो सकती है और अुस शिक्षा को राष्ट्र-व्यापी तथा सार्वजनिक बनाना होगा । यह काम राष्ट्र के कुल बालक तथा किशोरी को विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों से अलग रखकर नही हो सकता है । अगर सबको शिक्षित करना है तो हरेक काम को शिक्षा का माध्यम बनाना होगा तथा जीवन की हर अवस्था को शिक्षार्थी के रूप में गुजराना होगा । यह काम नभी हो सकता है जब कि देश की सभी शक्तिया अिसके लिअे केन्द्रित हों ।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने पिछले २० वर्षों के परिश्रम से पुरानी तालीम से नअी तालीम की ओर अेक निश्चित कदम अुठाने के लिअे सुव्यवस्थित तथा निश्चित कार्यक्रम मुल्क के सामने रखा है । अब सघ के सामने नयी परिस्थिति और नये अवसर पर मुल्क की नअी दिशा में दूसरा कदम अुठाने के मार्गदर्शन की जिम्मेवारी आ गयी है । यह काम अितना व्यापक तथा विशाल है कि संघ अकेला अिसे पूरा नही कर सकता है । फिर देश की सभी प्रवृत्तियों में तालीम का रंग लाने के लिअे यह आवश्यक है कि संघ अपने मुल्क में अुन सारी प्रवृत्तियों को आत्मसात् कर सके । यह भी पूरा हो सकता है जब तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ दोनों अेक होकर अपनी सम्मिलित शक्ति से काम करें । अिस अुद्देश्य की पूर्ति के लिअे गत २०,२२ मअी १९५९ को पठानकोट में विनोबाजी के सामने तालीमी संघ ने सर्व सेवा संघ के साथ सगम का प्रस्ताव किया और गत ६,१० जून, १९५६ को जम्मू काश्मीर राज्य के जम्मू नगर में दूसरी बैठक में अिस प्रस्ताव को दोहराया । देश की वर्तमान परिस्थिति और आवश्यकता के सदर्भ में यह सगम अैतिहासिक महत्व रखता है । अब गांधीजी द्वारा परिकल्पित सार्वजनिक तथा राष्ट्रव्यापी शिक्षा का आदोलन ही सर्व सेवा संघ का मुख्य कार्यक्रम होगा जिसका बुनियादी माध्यम राष्ट्र-निर्माण रहेगा । सर्व सेवा सघ अपनी अिस जिम्मेदारी का भलाभांति निर्वाह कर सके अिसलिअे आवश्यक है कि देश के सभी शिक्षाशास्त्री और रचनात्मक कार्यकर्त्ता अेवं संस्था सर्व सेवा संघ के अिस काम में साथ दें तथा अपने अनुभव से समुचित मार्गदर्शन करें ।

नअी तालीम के जीवन के अिस नये पर्व में अुसे विभिन्न शालाओं के छोटे छोटे घेरे से निकल कर समग्र जन-समाज रूपी समुन्दर में कूदना होगा । अगर जन्म से मृत्यु तक समग्र जन समूह को शिक्षा देनी है तो यह संभव नही है कि सबको शिक्षा-शाला के संकीर्ण

घेरे के अदर समाया जा सके। अत. यह आवश्यक है कि सब लोगो को शिक्षा शाला में न बुलाकर शिक्षा को ही सब लोगो के पास ले जाना होगा अर्थात् जो जहा जिस पेशे तथा जिस कार्यक्रम में लगे हुअे है या लग सकते है अुन्ही पेशो तथा कार्यक्रमो को शिक्षा का माध्यम मानकर अिस्तेमाल करना होगा।

भारत कृषि-प्रधान देश होने से वह ग्राम-प्रधान है। अिसलिअे आवश्यक है कि अिस नये पर्व के पहले कदम पर देश के तमाम शिक्षा प्रेमियो को गाव गाव में फैल जाना होगा। वहा जाकर गाव के बच्चो तथा प्रौढो को सगठित करना होगा जिससे गांव की खेती, अुद्योग तथा गाव की विकास-योजना के कार्य-क्रमों में तथा ग्राम समाज की समस्याओ के समाधान में सभी के सयोजित शामिलात से सुव्यवस्थित शिक्षापद्धति निकल सके।

अति प्राचीन काल में जब शिक्षा अल्प सख्यक पुरोहित आदि के लिअे ही थी तो जहा-तहा कृषिकुल, गुरुकुल, मोनेस्ट्री आदि की चहारदीवारी के अदर रहकर छात्र शिक्षा पा सकते थे। जैसे-जैसे जनता का होश बढता गया वैसे-वैसे शिक्षण शालाओं की माग भी बढती गयी यह माग आज गाव गाव में शिक्षण शालाओं का सगठन करा रही है लेकिन प्रगतिशील मानव अितने से सतुष्ट नही रह सकता है। जैसे-जैसे वह आगे बढता है वैसे-वैसे अुसकी आकाक्षा भी आगे बढती है। यह बढती हुअी आकाक्षा मनुष्य को 'बहुजनहिताय, बहु-जनसुखाय च' से सतोष नही दे रही है। यह आज समाज के प्रत्येक कर्मसूची को 'सर्व जनसुखाय च' देखना चाहता है। मानव की अिस आकाक्षा की पूर्ति में शिक्षा की सर्वोच्च जिम्मेवारी है। यही कारण है कि हिन्दुस्तानी तालीमी सघ के सगम के बाद सर्व सेवा सघ के सामने मानव की अिस नयी आकाक्षा को मूर्तिमान करने की जिम्मेदारी आ गयी है। और यही कारण है कि आज सर्व सेवा सघ देश के सभी शिक्षा प्रेमी तथा निर्माण सेवको को अिसके लिअे आह्वान करता है।

वस्तुत यह आकाक्षा केवल भारत की नही, बल्कि विश्व के शिक्षा शास्त्रियो को अिस दिशा में ध्यान देना होगा और अिसके लिअे समुचित पद्धति निकालनी होगी। अुन्हे यह समझना है कि अुनके शास्त्र पर जमाने की चुनौती है। अगर वे अिस चुनौती का अुत्तर देने में असफल रहेंगे तो अितिहास अुन्हे क्षमा नही करेगा।

पुरानी तालीम · नओ तालीम

नओ तालीम माने नये मूल्यो की स्थापना। पुरानी तालीम चोरी को पाप समझती थी। नओ तालीम न सिर्फ चोरी को, बल्कि अधिक सग्रह को भी पाप समझती है।

पुरानी तालीम शारीरिक और मानसिक परिश्रमो के मूल्यों में फरक करती थी। नओ तालीम दोनों का मूल्य समान मानती है। अितना ही नहीं दोनो का समन्वय करती है, दोनों का समन्वय साधती है।

पुरानी तालीम क्षमता की अिज्जत करती थी, नओ तालीम क्षमता को समता की दासी समझती है। पुरानी तालीम लक्ष्मी, शक्ति और सरस्वती को स्वतत्र देवता के रूप मे पूजती थी, नओ तालीम मानवता को पूजती है और अिन तीनो को अुनकी सेवा का साधन समझती है।

—विनोबा

विनोबाजी ने कहा : "सेवाग्राम तो अेक आध्यात्मिक केंद्र बनना चाहिये जिसका हिन्दुस्तान के साथ और सारी दुनिया के साथ सबध रहे। यह शाति-सेना का केंद्र बने तो बहुत अच्छा होगा। यहा पर अेक ही जगह पर ज्यादा प्रवृत्तियां केंद्रित करना ठीक नही है। अुसका परिणाम सभी दृष्टियों से ठीक नही होता है। अेक जगह बहुत बडी जमात अिकट्ठा हो तो शक्ति क्षीण हो जाती है और आसपास के लोगो पर अच्छा परिणाम नहीं होता है। बापू कहते थे कि हर गांव मे अेक कार्यकर्त्ता हो अुसके बजाय अेक ही स्थान मे १०० कार्यकर्त्ता केन्द्रित हो तो अुनकी शक्ति का ठीक अुपयोग नही होता है। असलिअे–

सेवाग्राम–

१. विश्व का अेक आध्यात्मिक केंद्र बने।

२ शाति का स्थान बने, और

३ वहा हमारा जीवन श्रमाधारित हो, और जितना श्रमाधारित नही हो सकता है, अुतना सर्वजनाधारित हो।

संघ के सदस्यो ने मिलकर अिन सुझावो पर विचार किया। सब की राय यह रही कि अिस सबंध मे और गहरी और खुली चर्चा करने की आवश्यकता है। असलिअे सेवाग्राम के भावी विकास के बारे मे जल्दी मे कोओी निर्णय न लिया जाय।

तय हुआ कि अगस्त २९,३० को सेवाग्राम में सर्व सेवा सघ की प्रबन्ध समिति की बैठक बुलायी जाय। अिस बैठक में तालीमी सघ के सदस्यो को और जिन कार्यकर्त्ताओ का सेवाग्राम के काम के साथ विशेष सम्बन्ध रहा है, अुन सब को आमन्त्रित किया जाये। और सेवाग्राम के कार्यकर्त्ताओ के साथ पूरी चर्चा करके सर्व सम्मति से भावी कार्यक्रम की अेक रूपरेखा तैयार की जाय।

दोनो सघो के सगम के प्रश्न के विचार के सिलसिले में सर्वोदय कार्य के आधार के बारे मे भी कुछ चर्चा हुओी। अुपस्थित कार्यकर्त्ताओ की यह राय रही कि अिस कार्य के लिअे कार्यकर्त्ताओं मे परस्पर प्रेम और सम्पूर्ण विश्वास की आवश्यकता है। असलिअे यह जरूरी है कि कार्यकर्त्ता बारबार परस्पर मिले, खुली चर्चा करे और मन को शुद्ध कर।

अिस सिलसिले मे श्री आर्यनायकम् ने ईसाई धर्म के आदियुग का स्मरण करते हुअे कहा कि जैसे रोमन लोग ओीसाअियों के बारे यही कहा करते थे–"देखो अिनका कितना परस्पर के प्रति प्रेम है," सर्वोदय परिवार का भी बाहरी दुनिया पर यही असर होना चाहिये।

यह सुझाया गया कि सर्वोदय कार्यकर्त्ताओ को कोओी निश्चित कार्यक्रम न रखकर सिर्फ परस्पर प्रेम और मैत्री का सम्बन्ध बढाने के लिअे, परस्पर के बारे में दिल को शकामुक्त और शुद्ध करने के लिअे साल में दो-तीन बार मिलने से सहायता मिलेगी।

यह निश्चय हुआ कि सेवाग्राम मे आगामी २९, ३० अगस्त को होनेवाली बैठक को अिस प्रीति सम्मेलन का स्वरूप देने का प्रयत्न किया जाय।

तीसरी बैठक

दिनाक ११-६-५९ को सवेरे ५ बजे दोनों सघो के सदस्य विनोबाजी से मिले और सर्वोदय कार्य के मूलभूत आध्यात्मिक प्रश्नो पर चर्चा विचार हुआ। [प्रश्नोत्तरी का सार नओी तालीम के अिसी अक मे प्रकाशित किया गया है।]

अिसके बाद सिर्फ तालीमी सघ के सदस्यो की अेक औपचारिक बैठक हुओी और सर्व सम्मति से अेक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। [कवर पृष्ठ ३ पर देखिये।]

यह तय हुआ कि प्रस्ताव सर्व सेवा सघ को भेज दिया जाय और अुनकी स्वीकृति के बाद ही अिसे अमल मे लाया जाय। अध्यक्ष को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुओी।

"ता. २० मअी को पठानकोट में हुअी हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की अेक विशेष बैठक में विनोबाजी ने देश की वर्तमान परिस्थिति और सर्वोदय आन्दोलन के विकास के संदर्भ में नअी तालीम के भावी स्वरूप और कार्यक्रम के बारे में अपने विचार सदस्यों के सामने रखे। संघ ने उन विचारों पर मनन किया, और उपस्थित सदस्यों के अभिमत और न आये हुअे सदस्यों की लिखित रायों पर पूरे तौर पर विचार हुआ। संघ अेक मत से निर्णय करता है कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ का संगम हो और अिस सम्मिलित शक्ति के द्वारा विनोबाजी के मार्गदर्शन में नअी तालीम का आगे का कार्यक्रम नीचे लिखे उद्देश्यों को सामने रखकर बने :—

१. नअी तालीम अेक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बने।

२. ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य की भूमिका में नअी तालीम का नया विकास हो।

३. केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा नअी तालीम का जो काम हो रहा है, उसका समुचित मार्गदर्शन।

४. नअी तालीम की शिक्षण-पद्धति और शिक्षण-शास्त्र का वज्ञानिक विकास करना।

५. सर्वोदय-काम करनेवाली संस्थाओं की सब प्रवृत्तियों को नअी तालीम का रंग हो।

६. देश की समग्र जनता को शान्ति की स्थापना के लिअे और शान्ति कायम रखने के लिअे तैयार करना।

७. जीवन में मूलभूत आध्यात्मिक श्रद्धा का विकास करना।

"अिस प्रस्ताव के अनुसार हम हिन्दुस्तानी तालीमी संघ को विसर्जित करते हैं और संगम की कार्यवाही पूरी होने तक अिस प्रस्ताव को अमल करने का अधिकार संघ के अध्यक्ष श्री आर्यनायकम् और मंत्री श्री राधाकृष्ण को दिया जाता है।"

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

	मूल्य रु न पै
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	
१ शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१–००
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनो की रिपोर्ट	
२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट)	१–१०
३ समग्र नअी तालीम	२–७५
४ आठवा न ता सम्मेलन विवरण	१–२५
५ नवा " " "	०–६३
६ दसवा " " "	०–७५
७ ग्यारहवा " " "	१–००
८ बारहवा " " "	१–५०
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	
९ प्रौढ शिक्षा का अुद्देश्य (शाता नारुलकर और माजरी साअिक्स)	०–७५
१० जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर)	१–२५
अलग-अलग विषयों पर पुस्तके	
११ मूल अुद्योग कातना (विनोबा)	०–७५
१२ खेती शिक्षा (भिसे और पटल)	१–००
पाठ्यक्रम की पुस्तकें	
१३ आठ सालो का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१–५०
१४ अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम (संक्षिप्त)	०–२५
१५ पूर्व बुनियादी शिक्षको की ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम	०–६३
अन्य पुस्तके	
१६ भारत की कथा (अभिनय तथा संगीत)	०–५०
१७ नअी तालीम का आयोजन	०–०६
१८ सेवाग्राम—गांधीलोक	०–३१
१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो राअीस)	०–०६
नये प्रकाशन	
२० शिक्षको से (विनोबा)	०–२५
२१ शांति सेना का विकास	०–३१
२२ विद्यार्थियो से (विनोबा)	०–२५
२३ ग्राम स्वराज्य नअी तालीम	१–००

नोट–१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्यक ५० नय पैसे पर प्राय ६ नय पसे के हिसाब स डाक खच लगगा। अिसके अलावा वी पी या रजिस्ट्री से मगान पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

नोट–२ प्रत्यक ऑडर के साथ अक चौथाअी रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक – श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम।
मुद्रक – श्री द्वारका प्रसाद परसाअी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

र्ष : ८] अगस्त १९५९ [अंक : २

नओी तालीम

"नओी तालीम" अगस्त १९५९ : अनुक्रमणिका

'नओी तालीम' के नियम

१ नओी तालीम अंग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक मूल्य ४ रुपये है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अिच्छुक सज्जन चार रुपये मनी आर्डर से भेजें तो अुत्तम होगा। वी. पी. से मंगाने पर ग्राहकों को ६२ नये पैसे अधिक खर्च होता है।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अेक साल से कम अवधि के लिअे ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

—व्यवस्थापक, "नओी तालीम"
सेवाग्राम (वर्धा) बम्बअी राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ८]　　　　अगस्त १९५९　　　　[अंक २

' संगम '

विनोबा

आज मैंने सोचा है कि तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ दोनों ने मिलकर जो प्रस्ताव किया है वही मैं आपके सामने यहा रखू और दो शब्द कहू । जम्मू और काश्मीर में आज नअी घटना हुअी है । अेक नअी चीज बनी है । अपने देश की ताकत बढाने वाली चीज बन गयी है। और वह यह कि दोनो संघ मिल गये हैं । तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ दोनो गाधीजी की सस्थायें थी और अलग-अलग काम करती थी । आपस-आपस में सलाह्-मशविरा करती थी । अलग-अलग काम करने के लिअे वे दोनो अलग नही बनायी गयी थी । परतु दोनो आज अेक हो गयी हैं और मिला जुला अेक सर्व सेवा संघ हो गया है । अिसकी चर्चा कअी दिनो से चल रही थी, लेकिन आखिरी फैसला आज हुआ है । यह बहुत खुशी की बात है और मह खुश-खबरी मैं आप लोगो को बताना चाहता हू ।

आप जानते हैं अब लगभग १२ साल हो रहे हैं, गाधीजी की मृत्यु को । अुसके पहले याने अपनी मृत्यु के पहले गाधीजी ने देश को अेक आदेश दिया था कि कांग्रेस का जो अपना काम था, स्वराज्य प्राप्ति का—वह अब हो चुका है । अिसके आगे काग्रेस को आम समाज की सेवा में लग जाना चाहिये और लोक सेवक संघ बनाना चाहिये । काग्रेस को यह अुनका *आखिरी वसीयतनामा था जो अुन्होंने आखिरी* दिनो में तैयार किया था । अुस पर नेताओ ने बहुत सोचा लेकिन काग्रेस लोक सेवक संघ नही बन सकी । अिसके लिअे गाधीजी की अैसी राय थी कि वह अेक लोक सेवक संघ बनेगा जिसमें काग्रेस पूरी की पूरी शामिल होगी और अुसके साथ साथ अुनकी रचनात्मक काम करनेवाली सस्थायें याने खादी काम करनेवाले लोग, ग्रामोद्योग, नअी-तालीम, स्त्री सेवा, हरिजन सेवा, हिंदू मुसलिम अेकता, शांति सेना की स्थापना, आर्थिक आजादी अिस तरह अुनका जो तालीमी प्रोग्राम-रचनात्मक कार्यक्रम

था, वह करनेवाले सब लोग भी लोक सेवक सघ के साथ मिल जायं और अैसा मिला जुला संघ बने तो सारे भारत पर अुसका अच्छा प्रभाव होगा। अगर कांग्रेस अिस तरह भारत भरमें सबसे बडी सेवा संस्था बनती—लोगो को योग्य दिशा में ले जाने के लिअे, पार्टी के ख्याल से नही, निष्पक्ष भाव से निष्पक्ष वृत्ति से सेवा करने के लिअे, लोगो को ठीक राह दिखाने के लिअे, नीति का विचार लोगों को देने के लिअे, जहां लोगों की गलती हुअी वहां वह लोगो के सामने रखना और जहां सरकार की गलती हुअी वहा भी तटस्थ भाव से वह सारा रखना यह काम करनेवाली अेक नैतिक शक्ति देश के सामने हो सकती थी। जिस काम के लिअे कांग्रेस बनी थी वह काम तो बन चुका था। अिसलिअे स्वराज्य के बाद वैसी अेक सस्था बने अैसा वे चाहते थे। अिससे अेक नैतिक शक्ति अिस देश में खडी होती और कांग्रेस को जो पुण्य हासिल हो चुका था अुसका भी लाभ मिलता और वह ज्यादा बढता यह अुनका ख्याल था। लेकिन वह नही बन सका। अुस समय नेताओं को कुछ अैसी वृत्ति थी कि कांग्रेस देश को बचाने के लिअे अैसी ही कायम रहे। गाधीजी की कल्पना जो थी अुसके अनुसार लोक सेवक सघ नही बना।

अिसलिअे आज हालत यह कि अेक नैतिक आवाज अुठाकर सब लोग अुसके अनुसार काम करते है, अैसी कोअी सस्था या अैसा कोअी व्यक्ति देश के सामने नजर नही आ रहे है और हो यह रहा है कि कांग्रेस के नेता जो अेक जमाने में देश के नेता थे वे आज अेक पार्टी के नेता हो गये हैं। दूसरी पार्टियो के नेता भी देश के नेता नही रहे है। वे भी पार्टी के ही नेता हो गये हैं। और भी नअी-नअी पार्टिया निकल रही है। और अुन पार्टियो के नेता जन-समाज के सामने अेक दूसरे का खडन करते है और निष्क्रिय जनता में किसी प्रकार की क्रियाशीलता नही आ रही है। अेक दूसरे का शब्द तोडने का काम हो रहा है और जिसे हम नैतिक नेतृत्व कह सकते है, अैसी कोअी बडी जमात अपनी ताकत से देश पर असर डाल सके और देश को गलत रास्ते से जाने में परावृत्त करे अैसी कोअी सस्था या जमात नही बनी है। अिससे देश में अेक प्रकार की निष्क्रियता, शून्यता, रिक्तता, खालीपन आ गया है और जनता भ्रात हो गयी है। कहां जाना, कहां नही जाना, यह जनता को नही समझता है। अेक नेता कहता है अिधर चलो, दूसरा नेता कहता है अुधर चलो। अैसी हालत में जनता में शक्ति होनी चाहिये। लेकिन अितनी शक्ति जनता में नही आयी है कि वे ठीक तरह से सोचे अपने फैसले कर सकें। अेक नेता दूसरे को गाली देता है, अुसका खडन करता है, दूसरा नेता पहले को गाली देता है और लोग दोनो की गालिया सुनते है। अिस तरह से चल रहा है। अिसमें से बचानेवाली तारक-शक्ति का अभाव स्पष्ट दीख रहा है। अैसा नही होता अगर गाधीजी की सलाह मानी गयी होती। तो कुछ काम बन सकता था लेकिन गाधीजी के साथियो ने सोचा कि हम अपनी ताकत से दुनिया को नही बचा सकेंगे। अिसलिअे वह नही बना।

आठ साल हुअे हम भूदान, ग्रामदान, शांति-सेना, सर्वोदय-पात्र, खादी ग्रामोद्योग, नअी तालीम अित्यादि सारी बाते बताकर ग्राम-स्वराज्य की कल्पना देश के सामने रख रहे है। यह नया काम शुरू हुआ है और आज यहां

अेक और नअी वात हुअी है। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ और सर्व-सेवा-सघ दोनो अेक हो गये। बहुत दिनो से सोचा जा रहा था कि गाधीजी के बाद अुतनी ताकत चाहे पैदा नही होगी लेकिन कम-से-कम लोगो को अेक नैतिक राह दिखाने के लिअे, सलाह देने के लिअे अेक अैसी सस्था होनी चाहिये। यो सोचकर सर्व-सेवा-सघ बनाया गया था और अुसमें तालीमी सघ को भी दाखिल करने का बहुत दिनो से सोचा जा रहा था। आखिरी फैसला आज हुआ है और यह खुशखबरी मैं आप लोगो को सुना रहा हू।

दस बारह साल में जो अिजाफा, जो वृद्धि अिस काम में हुअी है अुसमें शाति-सेना, भूदान, ग्रामदान का काम हुआ है और जमीन के बारे में सबका समाधान करने का नया तरीका हाथ में आ गया है। यह सब कार्यक्रम यह सस्था करेगी और मुझे कहने में खुशी होती है कि लोगो के लिअे भी कुछ राह मिलेगी। अिस सर्व-सेवा-सघ में अेक बहुत बडी बात यह है कि अिसमें हिन्दुस्तान के नेक प्रेम से काम करने वाले और जनता की सेवा के सिवा दूसरा कोअी ख्याल नही है, अैसे चार-पाच हजार कार्यकर्त्ता अिसमें काम कर रहे हैं। काम करनेवालो की जमात बहुत बडी नही कही जायगी क्योकि हिन्दुस्तान की जनसस्या ४० करोड है और वह बहुत बढती जाती है। अुस हिसाब से पाच हजार सेवको की जमात बहुत बडी नही कही जायगी। फिर भी वह बनी है और यह लोक सेवा के सिवाय दूसरा अुद्देश्य नही रखते हैं। जनता की सेवा निष्काम भाव से कर रहे हैं और अिनकी बहुत बडी बात यह है कि अिनका जो काम चलता है अुसमें फैसले सर्व सम्मति से होते हैं। मेजारिटी-बहुमत की बात अिसमें नही है। आज जैसे अिलेक्शन चलते हैं और दूसरे भी काम अकलियत और अकसरियत से होते हैं, लोक-शाही के नाम से होते है और अिसी के कारण सत्ता के झगडे गाव-गाव में पैठ गये हैं, गाव-गाव को आग लगा रहे हैं। यह सारी बाते तब तक हल नही होगी जब तक हम मिल-जुल कर काम नही करेंगे और फैसले सर्व-सम्मति से नही करेंगे। सर्व सेवा सघ ने तय किया है कि जो भी फैसला हम करेंगे वह सर्व-सम्मति से करेंगे और जहा सर्व सम्मति नही होगी वहां हम बार-बार सोचते रहेंगे और जब तक सर्व सम्मति नही होगी तब तक फैसले नही करेंगे।

अब यह ठीक है कि सर्व सेवा सघ बहुत बडी जमात नही है लेकिन वह बडी बनेगी तो भी फैसले सर्व सम्मति से ही होंगे। विज्ञान के जमाने में तगनजरिया नही चलेगा। छोटी-छोटी पार्टिया जब तक रहेगी और जब तक देश की बागडोर अैसे लोगो के हाथ में रहेगी जिनका नजरिया तग है तब तक देश की तरक्की नही होगी। अिस आणविक युग में छोटे दिल से काम नही चलेगा। अिसलिअे धर्म के मामले में ये राजनीति के झगडे मत लाना। हमें अपनी ताकत बनानी है अिस वास्ते यह जरूरी है कि हमें जो काम करने हैं वे अुसमें सर्व सम्मति से फैसले करे और अेकता कायम रखें। धर्म के काम में यह बहुत जरूरी है। रचनात्मक काम में भी यह होना जरूरी है। अिसलिअे तालीमी सघ ने जो प्रस्ताव किया है वह बहुत महत्व का है। जम्मू और काश्मीर में यह बहुत बडी बात बनी है। गाधीजी के साथ रहनेवाली जमात अेक सर्व सेवा सघ और दूसरी तालीमी सघ

कोओी अलग काम करने के ख्याल से नहीं यही कि तालीम का काम करना है तो खास जानकार लोग होने चाहिये। सब लोग जानकार कैसे होंगे? अिसलिअे वह अलग संघ बना है। बल्कि यह ख्याल ही गलत था। यह कभी नहीं हो सकता है कि अिल्म और अमल, ज्ञान और कर्म दोनों अलग हों। दो कभी अलग नहीं हो सकते हैं। अगर अलग पड़ेंगे तो दोनों जड़ बनेंगे। प्राणहीन, बेजान बनेंगे। ज्ञान के साथ कर्म और कर्म के साथ ज्ञान होना जरूरी है। अिस वास्ते दोनों अेक होने चाहिये। और अुस दृष्टि से यह दोनों अेक हो गये हैं यह बहुत बड़ी बात है।

अपने हिंदुस्तान में तरह-तरह के भेद पड़े हैं। टुकड़े टुकड़े हो गये हैं। जैसे कुछ लोगों की अैसी कल्पना है कि कुछ लोग दिमागी काम कर सकते हैं और कुछ लोग हाथों से काम कर सकते हैं। मैं कहता हूं कि अैसे जो लोग हैं जो हाथों से काम नहीं कर सकते हैं, पांव से नहीं चल सकते हैं लेकिन दिमागी काम कर सकते हैं वे पंगु और लंगड़े हैं। अुनकी आंखें हैं लेकिन चल नहीं सकते हैं। कुछ लोग अैसे होते हैं जो हाथों से काम कर सकते हैं, पांव से चल सकते हैं लेकिन अुनके पास विद्या नहीं है, ज्ञान नहीं है। परिणाम स्वरूप दो टुकड़े हो गये हैं। यह जो दूसरे प्रकार के लोग हैं वे अंधे हैं। लोग कहते हैं कि अंधों का और लंगड़ों का सहयोग होना चाहिये, तब समाज चलेगा। याने लंगड़े के कंधे पर अंधा बैठेगा। लंगड़ा राह दिखायेगा और अंधा चलेगा अिस तरह से अंध-पंगु न्याय के अनुसार काम होगा। लेकिन मैं कहता हूं कि यह असमर्थों का सहयोग हुआ, अिससे काम नहीं होगा। समर्थों का सहयोग होना चाहिये। अिसलिअे जिनके पास ज्ञान नहीं है अुनको ज्ञान शक्ति देनी चाहिये और अवसर अैसे लोग देहात में होते हैं। देहात में कर्म शक्ति है लेकिन ज्ञान शक्ति नहीं है। तो ज्ञान शक्ति देहात में पहुंचानी चाहिये और शहर में विद्या है लेकिन काम करने की ताकत नहीं है, कर्म शक्ति शहर में नहीं है। यह काम करने की ताकत शहर में जब बनेगी और देहात में विद्या पहुंचेगी और जब दोनों समाज अेकरस बनेगा तब काम बनेगा। याने समर्थों का सहयोग वह होगा। आज जो बटवारा हो गया है वह नहीं रहेगा। दोनों को दोनों तरह के काम मिलने चाहिये। जिनके पास कर्म शक्ति है अुनको दिमागी काम भी मिलना चाहिये और जिनके पास दिमागी काम है अुनको हाथ का काम भी मिलना चाहिये। अिस तरह दोनों अेक बनेंगे तब काम होगा। दोनों आज अलग हो गये हैं। अिसलिअे यह झगड़ा पैदा होता है। दोनों अेक होते हैं तो कुछ राह मिलेगी। आज कल अैसी भाषा बोलते हैं कि मिल में अितने हैंड्स हैं याने अितने मजदूर हैं और अुनके अितने हेड्स हैं। हम कहते हैं कि हरेक को हैंड होना चाहिये और हेड होना चाहिये। हरेक के पेट में भूख है अिसलिअे हरेक को हाथों से काम करना चाहिये और हरेक को दिमागी काम भी मिलना चाहिये। तभी समाज बनेगा। यही ध्यान में रखकर सर्व सेवा संघ और तालीमी संघ दोनों अेक हो रहे हैं यह बहुत बड़ी बात है।

"साधना केन्द्र का स्वरूप"

विनोबा

[सर्व सेवा संघ का केन्द्रीय दफ्तर वाराणसी में है। संघ की योजना है कि अुस दफ्तर को नये ढंग से सगठित किया जाय। दफ्तर के साथ-साथ वहा अेक साधना केन्द्र भी चले, यह तय किया गया है। अिसका स्वरूप कैसा हो, अिस सिलसिले में हाल ही में पूज्य विनोबाजी से मार्गदर्शन मागा गया था। अुनसे कहा गया था "आज हम जिस हद तक अपना आत्म विकास कर सकते है अुसी मर्यादा में हमें सोचना पडेगा। अत: वाराणसी के सदर्भ में अपने विचार स्पष्ट कीजिये।" अुन्होंने अेक समग्र दृष्टि का दर्शन कराते हुअे जो विचार और सुझाव रखे वह अिस प्रकार है। —सं०]

आत्म विद्या प्राप्त करें

हम लोग जिस अुद्देश्य को प्राप्त करने के लिअे प्रयत्न कर रहे हैं, वह अुद्देश्य तब तक सफल नही होगा जब तक कि हममें आत्मगुणों का विकास न हो। आध्यात्मिक चेतना और ब्रह्मविद्या की आराधना हमारे जीवन से प्रगट होनी चाहिअे। मै चाहता हू कि काशी में आप लोग जिस साधना केन्द्र की योजना बना रहे है वह केन्द्र अिस दिशा में आगे बढे।

पारिवारिकता का विकास

पहली चीज पारिवारिकता की है। यदि हम अपने में पारिवारिकता की भावना का विकास नही कर सकते तो समाज को अुस ओर बढने का कहने के लिअे हमारे पास नैतिक अधिकार नही रह जायगा। आज हम लोगो मे पारिवारिक भावना की वृद्धि नही हो पाती है। क्योंकि हमारी दृष्टि भाव प्रधान न होकर कर्म प्रधान बनी हुअी है। हमारी सारी रचना में व्यक्ति को, अुसकी भावना को और अुसके साथ जीवन के सबधों को महत्व नही मिल पाता। कुछ काम है, अुनके लिअे हमें आदमी की आवश्यकता होती है, अिसलिअे हम आदमी रख लेते हैं। यह सारी कर्म-प्रधान दृष्टि है। दोनो तरफ विवशता का भाव रहता है। अुस कर्म प्रधान दृष्टि को भाव प्रधान बनाना होगा।

कर्म प्रधान नहीं, भाव प्रधान

"आज जो निश्चित प्रकार का काम करने के लिअे लोग अिकट्ठे हुअे हैं अुनकी दृष्टि को भाव प्रधान बनाने के लिअे दो काम करने चाहिये। अेक तो यह कि काम में सुन्दरता की भावना आये, टाअिप होता है तो सुन्दर हो, हिसाब लिखा जाता है तो सुन्दर लिपि में लिखा जाय अित्यादि सब कामो में सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जाय तो वह कर्म भावना की ओर बढेगा।

कर्म को भावमय बनाने के लिअे दूसरा साधन है स्वच्छता। यदि ध्यान की प्रक्रिया को साधना चाहते हैं तब भी स्वच्छता अनिवार्य है। कोअी भी चीज कही पडी है अैसा नही होना चाहिये। अुसकी वहां रहने की अुपयोगिता है और अगर वह वहा पडी नही बल्कि रखी हुअी है, अैसा भान होना चाहिये। अितनी सजगता का विकास जब कार्यकर्त्ताओ में होगा, तब हमारे आश्रम का वातावरण कर्म प्रधान न होकर सहज रूप से भाव प्रधान बन जायेगा।

जन-सपर्क

"जन-सपर्क साधना भी हमारे कार्यकर्त्ताओ के कार्य का अेक आवश्यक अग माना जाय। यदि हम जन-सपर्क नही साधेंगे, तो जन-आदोलन खडा नही कर सकेंगे। केवल व्यक्तिगत साधना तक ही हमें सीमित नही होना है। अिस विचार को कार्यान्वित करने के लिअे जन-सपर्क अनिवार्य है।

अध्ययन की आदत डाले

भिन्न-भिन्न विचारो का, सब प्रकार के समाज शास्त्रो का और आध्यात्मिक दर्शनो का गहराअी से अध्ययन भी होना चाहिये। आज हम लोगो में अध्ययन की बहुत कमी है। अन्य ग्रथो और शास्त्रो की बात तो कही रही, स्वय अपने विचार का, अर्थात् सर्वोदय-विचार का भी पूरा अध्ययन हमारे कार्यकर्त्ता नही करते। अिस वृत्ति को समाप्त करना बहुत जरूरी है। न केवल अपने विचारो का, बल्कि दुनिया में चलनेवाले सब तरह के विचारो का मननपूर्वक अध्ययन करना बहुत जरूरी है।

जीवन व्रतमय हो

बापू ने सत्य, अहिंसा आदि अेकादश व्रतो का पालन आजादी का आन्दोलन चलाते हुअे गुलाम भारत में प्रत्येक रचनात्मक कार्यकर्त्ता के लिअे जरूरी माना था, और आश्रमो तथा सस्थाओ में अुसका अमल भी किया था। अैसी स्थिति में कम से-कम आज हम लोगो को अपने आश्रमो में तो अिन नियमो का कडाअी से पालन करना चाहिये। यदि जीवन व्रतमय नहीं रहेगा तो विचारो का स्रोत सूख जाने वाला है।

सतुलित आहार-विहार

अिसके अलावा मैं यह चाहूगा कि यहा के सामान्य जीवन में आहार विहार का पूरा सतुलन होना चाहिये। हर हालत में कोअी भी कार्यकर्त्ता बीमार न हो, अैसा प्रयत्न किया जाय। यदि सयोगवश बीमारी का आक्रमण हो जाय, तो प्राकृतिक साधनों से तथा वनौषधियो से ही अुसका अुपचार हो।

मनका समाधान ही मुख्य है

साधना-केन्द्र के लिअे सब से आवश्यक यह है कि वहा के प्रत्येक साधक निरतर अत-निरीक्षण करते रहे। जीवन में सबसे बडी चीज समाधान है, यदि कार्यकर्त्ता को आश्रम में रहते हुअे समाधान प्राप्त नही होता है, तो दूसरे सारे कार्यक्रम भार मात्र बनकर रह जायेंगे। अिस समाधान को प्राप्त करने के लिअे यह आवश्यक है कि वहा रहनेवाले प्रत्येक साधक पूर्ण भक्तिभाव से अेक दूसरे को मदद करें, अेक दूसरे को बल पहुचायें और अेक-दूसरे के आत्म-गुणो के विकास करने के लिअे आगे बढने में सहयोग दें। सब कार्यकर्त्ता अेक दूसरे पर पूर्ण विश्वास करें। छिद्रान्वेषण की भावना को नजदीक भी न फटकने दें, क्योंकि छिद्रान्वेषण से मनुष्य को समाधान प्राप्त नही हो सकता। मैं पहले दूसरो के दोष देखा करता था। अिससे मुझे बहुत बेचैनी हुअी। मेरा आत्मविकास रुकने लगा क्योंकि दूसरो के दोष देखने से अुन दोषो का प्रभाव अपने मन पर होना भी स्वाभाविक है। अिस दोष दर्शन से अपने गुणो पर भी आवरण आ जाता है। फिर मैंने दूसरो का गुण देखना शुरू किया और अपना दोष। कुछ दिन यह सिलसिला चलता रहा, पर अिससे भी मुझे समाधान नही मिला। अपने दोष देखने से भी मन में अेक प्रकार का क्लेश होने लगा तब मैंने यह तय किया कि अब दूसरों के भी

और अपने भी केवल गुण ही देखना चाहिये-दोष नहीं। क्योंकि दोष शरीर के होते हैं जो अनित्य है। यदि ध्यान में आये, तो अुन्हें दूर करने का शुभ संकल्प अवश्य किया जायगा। पर अुनका चिंतन न हो, चिंतन केवल गुणों का ही हो क्योंकि गुण आत्मा के होते हैं। साथ-साथ अपने गुणों का ध्यान करते समय अहंकार भी नहीं आना चाहिये। अुस अहंकार को रोकने के लिअे नम्रता और तप का विकास करना चाहिये। अिस प्रकार मेरी यह सबसे बड़ी प्राप्ति है कि मैं दूसरों के दोष देखता ही नहीं, गुण ही ढूंढता हूं। परिणाम स्वरूप आपस-आपस में आत्मीयता व घनिष्ठता स्थापित होती है और हृदय में समाधान की वृत्ति बनने लगती है। अिसलिअे सबसे पहले प्रत्येक मनुष्य के हृदय को समाधान दिया जाय। यदि समाधान देने में हम सफल हुअे तो सर्वोदय विचार की सफलता निश्चित ही है।

शांत वातावरण

वातावरण में अत्यंत शांति होनी चाहिये। रात्रि का अंधकार हमें शांति देने के लिअे आता है, अिसलिअे हमें अुसका पूरा-पूरा लाभ अुठाना चाहिये। नौ बजते ही सारी रोशनी बंद कर देनी चाहिये और कहीं भी किंचित्मात्र भी शोर न हो, अैसा प्रयत्न करना चाहिये। अिस तरह हम अपने आश्रम में संयम, समाधान और शांति को प्रगट करें।

ज्ञान, कर्म व भक्ति की अेकरूपता

आज तक अैसे प्रयोग बहुत हुअे, वहां ज्ञान की साधना की गयी अथवा कर्म की साधना की गयी, अथवा भक्ति की साधना की गयी। अिसलिअे अब हमें अैसे किसी प्रयोग की आवश्यकता नहीं है, जिसमें अिन तीनों में से किसी अेक को प्राधान्य मिले। अब तो अिन तीनों की संतुलित साधना समाज-परिवर्तन के लिअे तथा आत्मगुणों के विकास के लिअे आवश्यक हो गयी है। अिन तीनों में अेकरूपता होनी चाहिये।

काशी का महत्व

"अुपनिषदों में भी काशी का बहुत वर्णन आता है। यहां बड़े-बड़े ज्ञानी, तपस्वी और संन्यासी रहते थे। साथ ही देश भर के आत्म-ज्ञानी लोग यह चाहते थे कि जीवन में अेक बार काशी की यात्रा अवश्य हो जाय, ताकि वहां पर सतत बहनेवाली ज्ञानधारा का लाभ प्राप्त हो। आज भी अैसा ही है। यद्यपि संन्यास के नाम पर वेष और ढोंग का प्रचलन अधिक मात्रा में हो गया है, फिर भी अैसे काफी संत और मनस्वी हैं, जो सचमुच में सत्य की खोज के लिअे काशी आते हैं। मैं चाहता हूं अैसे सत्यान्वेषी लोगों के लिअे अिस साधना आश्रम में कुछ झोंपडियां बनायी जायं। ये झोंपडियां बहुत ही स्वच्छ और सादगीपूर्ण हों। वहां पर ये सत्यान्वेषी लोग मुक्त मन से आकर रह सकें, अुन पर किसी तरह का नियंत्रण और बंधन न हो, अैसी व्यवस्था की जाय।

साधना केन्द्र पावर हाउस बने

सर्व-सेवा-संघ सारे देश में सर्वोदय में काम करनेवाले तथा रचनात्मक संस्थाओं में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं के लिअे आशा का केन्द्र है। लोगों को अुससे काफी अपेक्षाअें है। यह आश्रम अुन अपेक्षाओं को पूरा करेगा, अैसी आशा की जा सकती है। जब भी क्षेत्र में काम करनेवाले कार्यकर्ता का मन थक जाय, कुछ विचारों की खुराक लेने का मन हो, तब वह अिस आश्रम में आये और अपने मन को और अधिक बलवान बनाकर फिर से क्षेत्र में काम

करने के लिओ चले जाय, ओसा वातावरण बनाना चाहिये। यह ओक प्रकार का रिफ्रेशर कोर्स होगा। मै अिस आश्रम को सर्वोदय विचार का पावर हाउस कहकर सबोधित करना पसद करूगा।

प्रार्थना की दृष्टि

नये ज्ञान के लिओ नित नया तप होना चाहिये। हम पुराने तप के आधार पर नओी शक्ति खडी नही कर सकेंगे। नया तप अर्थात् आत्मीय गुणों का निरतर विकास। बहुत लोग कहते है कि प्रार्थना करने के लिओ कुछ लोग सहमत नही होते। अुनका मानना है कि ओश्वर नही है, तो हम प्रार्थना किसके लिओ करे? ओश्वर है या नही, यह अलग बात है। किन्तु प्रार्थना तो मानवीय श्रद्धा को विकसित करने के लिओ अनिवार्य है। यदि किसी सुनिश्चित ओश्वर पर विश्वास न भी हो तो भी सत्य, प्रेम और करुणामय ओश्वर पर तो प्रत्येक मानव का समानरूप से विश्वास होगा ही। कम-से-कम आश्रम के सब लोग ओक साथ आकर बैठें, ओक-दूसरे का दर्शन करे, ओक-दूसरे से विचार-विनिमय करे, यह कितनी श्रद्धापूर्ण चीज है। प्रार्थना के बहाने से यह सहज सध सकती है।

संचालन और संचालक

आश्रम के छोटे से लेकर बडे तक सब कार्यकर्त्ताओ में ओक जैसी भावना होनी चाहिये। यद्यपि व्यवस्था की दृष्टि से कुछ लोग सचालक भी होंगे, मत्री भी होगे और आचार्य तथा शिक्षक भी होंगे। वह होना अनुचित भी नही है। प्रत्येक धार्मिक तथा सास्कृतिक अनुष्ठान म भी ओसा होता है। गुरु और शिष्य के रूप में प्राचीन काल से जो भारतीय परपरा चली आ रही है, वह अिसका अुदाहरण है। जब यज्ञ होता है, तब ओक पुरोहित होता है, वह मत्र पढता है, तथा समिधा डालने के लिओ आज्ञा देता है। साथ-ही-साथ स्वय भी समिधा डालते जाता है। यह क्या है? अिसलिओ ओसा नही *मानना चाहिये कि सचालक या आचार्य का न* होना ही समानता की कसौटी है।

दफ्तर का अुद्देश्य

सर्व-सेवा-सघ का दफ्तर कर्म, ज्ञान और भक्ति की मूर्ति है। अुसे वही भूमिका अदा करनी है, जो भूमिका श्री कृष्ण ने सारथी के रूप में अर्जुन के साथ की थी। सर्वोदय आन्दोलन के रथ को खीचने के लिओ ही बलवान और कुशल सारथी के रूप में सर्व-सेवा-सघ को काम करना है। अिसलिओ मैं मानता हू कि सघ का दफ्तर ब्रह्मविद्या का केन्द्र होगा।

किशोरलाल भाओी बहुत बीमार और अशक्त रहते थे। किन्तु सर्वोदय का काम करनेवाले देश भर के कार्यकर्त्ता अपने मन की समस्यायें किशोरलाल भाओी के पास लिखते थे और किशोरलाल भाओी अुनका अुचित तथा समाधानकारक मार्गदर्शन भी करते थे। कार्यकर्त्ताओ के साथ अुनका घनिष्ठ तथा स्नेह पूर्ण सबध हो गया था। ठीक ओसा ही सर्व सेवा सघ के जिले जिले में बिखरे हुओ कार्यकर्ताओ के साथ दफ्तर का सबध होना चाहिये। व्यक्तिगत जीवन सबधी हर तरह की समस्याओ का समाधान वहा से मिलना चाहिये। व्यक्तिगत परिचय और व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार से ही अिस तरह का जीवित सबध स्थापित हो सकता है।

(शेषांश पृष्ठ ४१ पर)

शिक्षकों से

विनोबा

देश में अेक बाजू शिक्षक है और दूसरी बाजू लश्कर है, पुलिस है। शिक्षक और लश्कर दोनो आज के समाज के लिये जरूरी माने जाते है। और जिस हालत में हम है दोनो की जरूरत जाहिर है। लेकिन ये दोनो अेक दूसरे के दुश्मन-से है। याने अगर शिक्षक अपना काम अुत्तम करते है और देश भर में पर्याप्त सख्या मे शिक्षक अुपलब्ध है जो तालीम का काम करते है तो लश्कर की जरूरत नही रहनी चाहिये। अिसलिअे मै शिक्षको को शाति सैनिक मान लिया करता हूँ।

तालीम में अपने पर जब्त रखना अेक बहुत बडी चीज है जिसकी हर नागरिक और ग्रामीण को जरूरत है। जहाँ तालीम का अच्छा सिलसिला है, वहाँ नागरिकों में यह सिफत, गुण आना ही चाहिये। तालीम में अेक आवश्यक बात है जिसे सब दुनिया मानेगी कि मनुष्य शिक्षित बनता है तो निर्भय बनता है। अगर तालीम से मनुष्य निर्भय नही बना तो यही कहना होगा कि गलत तालीम दी जा रही है। नागरिको को निडर बनाना तालीम का अेक अुद्देश्य है। तीसरी बात है कि विचार की आजादी और विचार करने की शक्ति जो जिन्दगी के लिअे जरूरी है वह तालीम से प्राप्त होनी चाहिये। अपने पर जब्त रखना (सयम) निर्भयता और विचार की आजादी–ये तीन तालीम की कसौटियां है। जिस किसी देश में ये गुण प्रकट होते है वह देश शिक्षित है। अुस देश में लश्कर की जरूरत नही रहेगी।

अक्सर यह माना जाता है कि लडको को

(पृष्ठ ४० का शेषाश)

अकर्म की साधना

"अिसके अलावा मै चाहता हू कि कार्यालय के कार्यकर्ताओ को कुछ फुरसत का समय अकर्म-साधना के लिअ मिलना चाहिये। हम पूरे २४ घटे का नियत्रित कार्यक्रम बना देते है। कार्यकर्ता को मुक्त मन से काम करने के लिअे या अपनी स्वतत्र रुचि के अनुसार कही जाने, घूमने, खेलने, पढने आदि का समय ही नही मिलता यह ठीक नही है।

आन्दोलन का पूरा चित्र देश के सामने आये

"अिसके अलावा आज देश भर के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में ग्रामदान और ग्राम स्वराज्य का प्रयोग किया जा रहा है। अुस प्रयोग की आद्योपात जानकारी सारे देश को मिले, अिसकी जिम्मेवारी भी सर्व-सेवा-सघ को अविलब अुठानी चाहिये। कार्यालय में अैसे अेक दो व्यक्ति होने चाहिअे, जो विभिन्न क्षेत्रों में जाय, सप्ताह भर का समय दें, वहा की स्थितियो और समस्याओ का अध्ययन करें, फिर जो बात सर्व सेवा सघ के पास पहुचानी हो, वह सघ के पास पहुचायें। जो बात सारे देश के लोगो की जानकारी में लानी हो, अुसका सुन्दर ढग से प्रकाशन करे। अपनी पत्र-पत्रिकाओ में विस्तार से रिपोर्ट लिखें। देश भर में जितना काम चल रहा है, अुस सबका पूरा चित्र सर्व-सेवा-सघ को दे।

जिन्दगी के लिअे कुछ जानकारी दी जाये और कितनी जानकारी हासिल हुअी अुस पर से अुनकी परीक्षा ली जाती है। तालीम की यह कसौटी बिलकुल ही अेकांगी है। अुसमें बहुत हुआ तो तर्क शक्ति की, स्मरण की परीक्षा होती है। जिसे हम आत्मविश्वास कहते हैं अुसकी प्रगति लडकों में कहाँ तक हुअी है, अुसका पता नही लग सकता है।

मेरी निगाह में अिन दिनो तालीम पर जो खर्चा हो रहा है, वह लगभग बेकार है। अगर मुझ से पूछा जाय कि क्या आप आज की तालीम से यह पसद करेंगे कि लडको को कतअी तालीम न मिले, तो मैं "हाँ" कहूँगा। आज जो तालीम दी जा रही है वह दी न जाये और लडको को अैसे ही छोड दिया जावे तो अुसमें देश का नुकसान नही होगा, अैसा मैं मानता हू।

परमेश्वर ने तालीम की जो कुदरती योजना की है वह तो चलेगी ही। बच्चो को माता पिता के जरिये जो तालीम मिलनी है, वह तो मिलेगी ही, और कुदरत के साथ सबध आने से भी तालीम मिलेगी। अिसलिअे आज लडकों को अैसे ही छोड दिया जावे और तालीम पर जो खर्चा किया जा रहा है, वह नही किया जावे तो मैं तो शुक्रिया अदा करूँगा। मैं अिस तालीम से अितना असतुष्ट हूँ। वह आज की बात नही है। जब मैं स्कूल कालेज में पढता था तब भी असन्तुष्ट ही था। बीच में ४०-५० साल गुजर गये लेकिन जो तालीम अुस वक्त चलती थी करीब करीब वही तालीम *आज भी चल रही है। अगर अुसमें और आज* की तालीम मे फरक होगा तो यही होगा कि तालीम कुछ कमजोर होगी, बच्चो का Standard (स्तर) गिरा हुआ होगा। जब मैं कालेज में पढता था तब मैं तालीम के बारे में अितना असंतुष्ट था कि मेरे जीवन का अेक-अेक क्षण जाया जा रहा है अैसा मैं अनुभव करता था। मैं वर्ग में शामिल भी नही होता था। वर्ग में पाच-दस मिनिट बैठकर घूमने निकलता था। अगर मैं अुस वक्त नही घूमता था तो आज भूदान नही चलता। अगर मैं अुस रद्दी तालीम के सारे लेक्चरो में शामिल होता तो आज मैं अपने में जो दिमागी आजादी पाता हूँ वह नही होती। आज घूमने की जो ताकत पैरो में पाता हूँ वह भी नही होती और शायद आज मैं वही करता रहता, पता नही मेरा क्या होता।... आखिर अेक दिन मैं घर और कालेज छोडकर निकला और मेरे पास जो *प्रमाण-पत्र थे अुनको जलाकर निकला।* मुझे अबतक अुसका पश्चात्ताप नही हुआ है। क्योंकि मैंने देखा कि कालेज में जो सारा चलता था वह अितना शुष्क था, यांत्रिक था कि असलियत के साथ अुसका कोअी ताल्लुक ही नही था।

अुस वक्त मेरी Second Language (दूसरी भाषा) फ्रेंच थी। अुसका मुझपर बडा अुपकार हुआ। क्योंकि अुन दिनो कालेज में सस्कृत मे जो निकम्मा शृगारिक साहित्य पढा जाता था अुस सस्कृत से मैं बच गया। और फ्रेंच में हमें बहुत अच्छा साहित्य पढाया गया। स्वामी विवेकानद ने तो कहा था कि अगर आप चाहते है कि दुनिया में आत्मज्ञान फैले तो सस्कृत सिखाओ। सस्कृत पर अुनकी अितनी श्रद्धा थी। और मैं भी अपने अनुभव से कहता हूँ कि सस्कृत में जो जादू है, आत्मा *को बल देने की जो ताकत है, वह शायद ही* दुनिया की किसी दूसरी भाषा मे होगी। सस्कृत में वेद है, अुपनिषद् है, गीता है, ब्रह्मसूत्र

सांख्यसूत्र, योग-सूत्र हैं, रामायण, भारत, भागवत, पुराण अनेक भाष्य आदि असंख्य ग्रंथ पड़े हैं, जिनमें आत्मा का विचार किया गया है, मनुष्य को निर्भय बनाने की शक्ति पड़ी है, और विचार स्वातंत्र्य की तो हद है। दुनिया में दूसरा अैसा कौन-सा समाज है, साहित्य है कि जिस समाज में अीश्वर के अस्तित्व के विषय में संपूर्ण श्रद्धा से लेकर अीश्वर कतअी नहीं है अैसा कहनेवाले लोग अेक ही समाज में शामिल हैं ? और धार्मिक विचार की कोअी पाबंदी नहीं है ? संस्कृत में जो विचार की आजादी है वह मैंने दुनिया की किसी दूसरी भाषा में नहीं देखी। मेरी मातृभाषा मराठी है अिसलिअे वह मैं बोल ही सकता हूँ, लेकिन अुसकी खूबियों का मुझे अुतना ज्ञान नहीं है जितना कि संस्कृत का है। संस्कृत अुतनी जानदार चीज है लेकिन कालेज में संस्कृत की जो किताब पढ़ायी जाती हैं, वह सब गंदा साहित्य होता है। कहा जाता है कि अुसमें literary merit (साहित्यिक श्रेष्ठता) है। आग लगाओ अुस literary merit (साहित्यिक श्रेष्ठता) को। मेरी समझ में नहीं आता कि संस्कृत के प्राणवान साहित्य छोड़कर अुस दरबारी साहित्य के पीछे क्या पड़ते हैं ?

आज अंग्रेजी का जो आक्रमण होता है अुससे बहुत नुकसान हो रहा है। अंग्रेजी बहुत साहित्य संपन्न भाषा है, अुसमें विज्ञान है, वह दुनिया भर में चलती है। अंग्रेजी में बहुत अच्छे लेखक और कवि हुअे हैं, अध्ययन की दृष्टि से अंग्रेजी की योग्यता बहुत बड़ी है। मुझे सन्तोष और अभिमान मालूम होता है कि मानवजाति के अेक विभाग ने अितना विकास किया है। तिस पर मुझे लगता है वह भाषा आज यहाँ पर जिस तरह लादी जा रही है अुससे बहुत नुकसान होगा। लड़के अुसे कबूल नहीं करेंगे। कहा जाता है कि आज शिक्षा का Standard (स्तर) गिर रहा है, अिसलिअे बच्चे को बचपन से ही अंग्रेजी पढ़ायी जानी चाहिये। दुनिया में अैसा कोअी दूसरा देश नहीं है जहाँ अिस तरह मातृभाषा छोड़कर दूसरी भाषा लादी जाती है। कहा जाता है कि अिंग्लैंड के लड़के भी २-३ भाषाअें पढ़ते हैं। लेकिन समझना चाहिये कि वे फ्रेंच जर्मन आदि पढ़ते हैं जो भाषाअें आपस में अितनी करीब हैं कि जैसे कोअी गुजराती लड़का मराठी या हिन्दी पढ़े। यहाँ के लड़कों को अंग्रेजी के जरिये तालीम देने का परिणाम क्या होता है यह देखना हो तो लंदन के लड़कों का हिन्दी के जरिये तालीम देकर देखिये तो पता चलेगा कि अिससे अुनकी बुद्धि पर कितना दबाव पड़ता है। अिससे लड़के बिल्कुल निर्वीर्य बनेंगे। हम चाहते हैं कि हमारे देश में चंद लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें, चन्द लोग अच्छी फ्रेंच, जर्मन, अरबी, चीनी, जापानी, रूसी आदि भाषायें भी सीखें। यह भी मान्य है कि लोग कुछ ज्यादा तादाद में अंग्रेजी सीखें। तिसपर भी आज जिस तरह वह लादी जा रही है, अुसका नतीजा यही होगा कि लड़के अुसे ग्रहण नहीं करेंगे। कहा जाता है कि अंग्रेजी का Standard (स्तर) गिर रहा है, मैं कहना चाहता हूँ कि अगर आप चाहते हैं कि अंग्रेजी का स्तर न गिरे तो अुसके लिअे अेक ही अिलाज है। आपने अंग्रेजों से Quit India (भारत छोड़ो) कहा था अुसके बदले अब Return to India (भारत में वापस आओ) कहिये। आप लाख कोशिश करें तो भी आजाद हिन्दुस्तान का दिमाग परकीय भाषा को कबूल नहीं करेगा। बच्चे अुसे

कबूल नही कर रहे हैं अुसीसे पता चलता है कि अुनका दिमाग आजाद है । अगर वे अंग्रेजी में ज्यादा दिलचस्पी बताते तो मैं हिन्दुस्तान के भविष्य के बारे में मायूस हो जाता। कहा जाता है कि लडके दूसरे विषयो में अच्छी दिलचस्पी दिखाते है लेकिन अुन्हे अंग्रेजी नही आती है। अगर अुनपर अंग्रेजी लादी नही जाती और मातृभाषा के जरिये सब विषयों का ज्ञान दिया जाता तो कितने कम समय में ज्ञान ग्रहण करेंगे यह प्रयोग करने से मालूम होगा ।

हिन्दुस्तान में १५० साल तक अंग्रेजी चली। लेकिन क्या रवीन्द्रनाथ टागोर और अरविन्द को छोडकर और कोअी हिन्दुस्तानी है जिसका साहित्य दुनिया मे चलता है ? क्या अुन १५० सालों में अैसा कोअी अंग्रेजी लेखक हुआ जिसने वहाँ की किसी भाषा में ग्रंथ लिखकर यहा के साहित्य की वृद्धि की ? तो फिर भारतीयो पर यह जिम्मेवारी किसने डाली कि वे अंग्रेजी भाषा में साहित्य लिखकर मिल्टन और टेनिसन का मुकाबला करे ? कुदरत ने तो अुनपर यह जिम्मेवारी नही डाली है। हमने १५० साल तक अितना परिश्रम किया, अंग्रेजी की अुतनी अुपासना की, फिर भी अुस भाषा के साहित्य को हमने बडी देन दी अैसा तो नही कहा जायगा । तो फिर आज के लडको पर अंग्रेजी क्यो लादी जाये ?

हम जब पढते थे तो संस्कृत भी अंग्रेजी के जरिये ही पढायी जाती थी जो अेक अजीब बात थी। अैसी कौन-सी दूसरी भाषा है जिसमें दस हजार साल के पुराने शब्द जैसे के वैसे आज भी अिस्तेमाल किये जाते हैं। लेकिन वेद का पहला मंत्र ही लीजिये । "अग्नि मीळे पुरोहितम् यज्ञस्य देव ऋत्विजम् । होतारम् रत्न धातमम् ।" अिसमें अग्नि, पुरोहित, यज्ञ, देव, रत्न आदि सारे शब्द आज की भाषाओं में जैसे के वैसे चलते हैं । महाभारत, गीता पढते है, तो आश्चर्य होता है कि अुसके सारे शब्द आज चलते हैं। आप अैसी और कोअी भाषा मुझे बताअिये जिसमें पुरानी परपरा के अितने शब्द आज भी चलते हैं। जो भाषा पुरानी होकर भी नयी है अैसी भाषा हिन्दुस्तान में ही है। ग्रीक, लेटिन जैसी पुरानी भाषाअें आज नही चलती है। संस्कृत dead Language जड भाषा नही है, जिन्दा है। हमारी आपकी प्रचलित भाषायें जितनी जिन्दा हैं संस्कृत अुससे ज्यादा जिन्दा है। आप किसी भी भारतीय भाषा के लिअे परिभाषा बनाने बैठें तो आपको संस्कृत के सिवा चारा नही है। कुछ लोग कहते है कि संस्कृत की बनी हुअी परिभाषा कठिन बनती है। लेकिन संस्कृत से कठिन परिभाषा भी बनायी जा सकती है और आसान भी। संस्कृत का तर्जुमा अंग्रेजी में करना मुश्किल हो जाता है। फिर भी हमें अंग्रेजी के जरिये संस्कृत पढायी जाती थी। जिस जमाने में अंग्रेजी पर अुतना सारा जोर दिया जाता था अुस जमाने में भी हमने अंग्रेजी में पहले दर्जे के ज्यादा लेखक नही पैदा किये तो फिर आज के लडको को अंग्रेजी सिखाने का आग्रह क्यो किया जाता है ? अिसलिअे लडको को अंग्रेजी सीखने के बारे में आजादी होनी चाहिये । स्वतंत्र भारत में चन्द लोग अच्छी अंग्रेजी जरूर सीखें लेकिन मामूली अंग्रेजी का आज कुछ भी अुपयोग नही है सिवाय अिसके कि अुसके कारण मातृभाषा का ज्ञान कम होता है ।

आज की तालीम में अेक बहुत बडी खामी यह है कि अुद्योग की तालीम नही दी जाती

है । अिसलिअे यह होता है कि तालीम भी बढती है और बेकारी भी बढती है । यानी तालीम और बेकारी दोनों पर्यायवाची हैं । आज की तालीम पाया हुआ लडका "न घर का न घाट का" रहता है । वह न तो घर का काम कर सकता है न खेत का । आज की तालीम बिलकुल सहूलियत के साथ दी जाती है, जिसमें लडको को कोअी तकलीफ न हो अैसा खयाल रखा जाता है । व्यास ने तो लिखा है–"सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्" । तुम विद्या चाहते हो तो सुख कैसे मिलेगा ? अिस तरह सुख और विद्या का विरोध बताया है । लेकिन आज के विद्यार्थी सहूलियत का जीवन जीते है हाथो से काम करना नही जानते है अुन्हे मुलायम जीवन की आदत पडती है तो फिर वे आगे किस प्रकार का जीवन जीयेंगे ।

अिन दिनो Secular State (धर्मनिरपेक्ष राज्य) के नाम पर विद्यार्थियो को आध्यात्मिक साहित्य नही पढाया जाता है, हमारी भाषायें अंग्रेजी की तुलना में खडी की जायें तो अंग्रेजी में जो विविध प्रकार का साहित्य है, वैसी हमारी भाषाओं में नही है, लेकिन हमारी भाषाओ का सर्वोत्तम साहित्य आध्यात्मिक साहित्य है । अगर कल्याण राज्य के नाम पर कुल का कुल साहित्य Taboo (रुकावट) हो जाये तो विद्यार्थियो में अखलाकी चीज कैसे पैदा होगी ? सिक्खो में करीब-करीब हर लडका 'जपुजी' पढता है । वह सस्कृत, अरबी जैसा कठिन नही है । लेकिन अिन दिनो धर्म निरपेक्ष राज्य के नाम पर 'जपुजी' की तालीम स्कूलो में नही दी जायगी, 'जपुजी' में तो कहा है कि–'आई पथी सगल जमानी', कुल दुनिया मे हमारी ही जमात है । सब के साथ समान भाव रखने की अिससे बेहतर तालीम दूसरी क्या होगी ? लेकिन अिन दिनो स्कूलो में तुलसीदास की रामायण भी रामायण के तौर पर नही पढायी जायगी । केवल साहित्य के अश के तौर पर कुछ टुकडा पढाया जायगा । लेकिन जिससे श्रद्धा बनेगी अैसी कोअी चीज नही पढायी जाती है । रामायण, कुरान, गीता, जपुजी कुछ भी पढाया नही जाता ।

अिस तरह आज की तालीम में आध्यात्मिक चीज नही है ।

आज यह होता है कि कुछ लडके २५ साल तक पढते रहते है, और करोडो लडको को बिलकुल तालीम ही नही मिलती । ८-१० साल की अुमर में ही अुनको काम में लगाया जाता है । याने दोनो तरफ से अन्याय होता है । अुससे दोनो का नुकसान होता है । बडों के लडके २५ साल तक पढते रहते हैं, और अुन्हें बच्चा ही माना जाता है । लेकिन पानिपत में अहमद शाह अब्दाली जैसे कुशल जनरल का अेक साल तक जनकोजी शिंदा ने मुकाबला किया । अुस वक्त जनकोजी की अुम्र १७ साल की थी और वे १८००० सेना के सेनापति थे । अुस तरह १७ साल की अुम्रमें जनकोजी अहमदशाह के खिलाफ अकेला लडता रहा । हमारे यहाँ माना जाता था कि 'प्राप्ते तो षोडशे वर्षे पुत्र मित्रवदाचरेत्' लडका १६ साल का हुआ तो अुसके साथ मित्र के जैसा बर्ताव होना चाहिये । याने अुसके बाद बेटे को अपने पैरोपर खडे होना चाहिये । बाप अपने बेटे को खिलाता है, मित्र को नही । याने सोलह साल के बाद लडका दिमाग में और काम करने में बिलकुल स्वतंत्र होना चाहिये, फिर बाप मित्र के नाते अुसे सिर्फ सलाह दे सकता है ।

आज देश के अुत्तम-से अुत्तम छोटे लडके जो हमारे देश के रतन, जवाहर, माणिक हैं, अुनको पढाने के लिअे कम ज्ञानवाले और कम चरित्रवाले शिक्षक रखे जाते हैं। हेडमास्टर ज्ञान में अूचा माना जाता है अिसलिअे वह अूपर की जमात को पढाता है। पहली जमात में तो शून्य में से पैदा करना होता है, अिसलिअे अुस जमात को पढाने का काम हेडमास्टर को सौपना चाहिये। अूपर की जमातों में दस से बीस या तीस बनाने की बात है, अिसलिअे वहाँ मामूली शिक्षक हो तो काम चल सकता है। आजकल गावो में "अेक शिक्षक वाली शाला" की बात चलती है, वह भी मेरी समझ में नही आती है। अेक ही शिक्षक चार जमातो को पढाता है तो मुझे लगा कि चार मुहवाला ब्रह्मदेव हो तभी चलेगा । अिसे मैं ढोग समझता हू। अिसके बजाय गावो में तालीम न दी जाये तो ठीक होगा। परन्तु स्टेट की तरफ से देहातो के लिअे कुछ हो रहा है यह दिखाने की कोशिश चलती है, नही तो देहातवाले चिल्लायगे। अैसी तालीम न चले तो देश का क्या नुकसान होगा?

निर्भयता, अपने पर जब्त रखना और विचार करने की शक्ति के साथ विचार की आजादी ये तीन चीजें जिसमें हैं अुसका नाम है तालीम। अैसी तालीम जिस देश में चलेगी अुस देश में सेना की जरूरत नही होगी।

मैं काश्मीर आया हूँ तो चाहता हूँ कि यहाँ का कुछ काम बने। मेरा काम कौन करेगा, अिस पर सोचता हूँ तो मेरी नजर शिक्षको पर पडती है। शिक्षको को गावो में जाना पडता है। जहाँ दूसरे नही जाते हैं वहाँ भी जाना पडता है। तो मैं आपसे कहता हूँ कि Make virtue out of necessity- आवश्यकता से सच्चरित्रता का निर्माण करो। आप गाव जाकर अच्छे विचार पहुँचाओगे तो ग्राम नेता बनोगे। मैं आपको मेरी जमात मानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सरकार की तनखाह लें और बाबा का काम करें।

शांति-सेना का काम बुजदिलों का, डरपोक लोगों का नहीं है। जो निर्भय हैं, जो निडर हैं, अुन्हीं का यह काम है। अेक गुजराती भगत ने कहा है-"हरीनो मारग छे शूरानो" हरि के मार्ग में जो बहादुर हैं, शूर हैं वे ही जा सकते हैं। जिनको अपने जिस्म के लिअे बहुत ज्यादा मोह है, जो अपने अंजा पर जब्त नहीं रख सकते, गुस्से को मौके पर रोक नहीं सकते, वे शांतिसेना में नाकामयाब होंगे। संस्कृत में धर्म का अेक वचन है "क्षमा वीरस्य भूषणम्।" क्षमा, सब्र, बरदास्त करना मामूली बात नहीं। अुसके लिअे बहादुरी चाहिये। गुस्से में खून कर दें और मारने की ख्वाहिश रखें, यह बहादुरी नहीं। अिसी तरह जो बुजदिल डरते-डरते भाग जाता है, पीठ दिखाता है, वह भी दिल में ख्वाहिश रखता है कि हमें कोअी बचावे। अिस तरह भागनेवाला बाहर से नहीं, अन्दर से खून करता है। वह अहिंसक नहीं है। अहिंसक तो वह है जो निडर है, जिसे यह जिस्म कपडे के मुआफिक मालूम होता है। अिसे हम मौके पर फेंक सकते हैं, अैसी हिम्मत जो रखता है, वही अहिंसक है।

—विनोबा

समुचित शैक्षणिक वातावरण की आवश्यकता

कालूलाल श्रीमाली

आर्यनायकमजी, और मित्रो,

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने यहा भाषण देने के लिअे मुझे बुलाने की जो कृपा की है अुसके लिअे मैं सघ का आभारी हूँ । कअी तकलीफो और रुकावटो के बावजूद भी पिछले बीस सालो में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ अपने लक्ष्य पर बिलकुल दृढ रहा है और बुनियादी शिक्षा का व्यापक प्रचार करने तथा अुस शिक्षा पद्धति के तात्त्विक पहलुओ का विकास करने के लिअे अुसने लगातार अुद्यम किया है । हममें से चन्द लोग बुनियादी शिक्षा के दृष्टिकोण में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ से मतभेद जरूर रखते आये हैं, लेकिन श्री आशादेवी तथा आर्यनायकमजीने बुनियादी शिक्षा के निमित्त जो अेक निष्ठ श्रद्धा दिखायी है और अखड प्रयत्न किया है अुसकी सराहना हम सब करते हैं ।

हमारे समाज में अेक अैसा वर्ग है जो बुनियादी शिक्षा की तरफ तिरस्कार की निगाह से देखता है । चूकि अुस वर्ग के कुछ लोग विश्व विद्यालय तथा राज्य के शिक्षा विभाग में और सार्वजनिक जीवन में जिम्मेदार स्थान में रहते हैं, अिसलिअे अुनकी राय को हम पूरे तौर से नजरदाज नही कर सकते । अुनमें से कुछ तो बुनियादी शिक्षा की विचारधारा के अैसे कट्टर विरोधी हैं कि आप जो चाहे करे या कहें, वे अपने विचारो को बदलने के लिअे कतअी तैयार नही है । परम्परागत वर्तमान शिक्षा पद्धति के साथ अुनका सबध अितने निकट का है और बुनियादी शिक्षा के खिलाफ अुनका विरोध अितना जबरदस्त है कि अुनके विचारो में परिवर्तन की कोअी गुजाअिश ही नही है । अगर अुनको बुनियादी शिक्षा नागवार मालूम होती हो तो राष्ट्र की आवश्यकताओ की पूर्ति करनेवाली योग्य शिक्षा योजना राष्ट्र के सामने रखने की जिम्मेदारी अुनपर है । मैं आशा करता हूँ कि बुनियादी शिक्षा का अुनका विरोध अुन्हे अिस सीमा तक नही ले जायगा कि वे कहें कि शिक्षा की वह पुरानी पद्धति (जिसकी आलोचना वे जोर-शोर के साथ करते थे) फिलहाल के लिअे काफी अच्छी है । अगर ये लोग रचनात्मक विचारधारा से अिस समस्या का निवारण करने की कोशिश करेंगे तो अत में अिसी निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि बुनियादी शिक्षा सामाजिक, शैक्षणिक तथा मनोवैज्ञानिक मजबूत सिद्धातो पर आधारित है । अिस निष्कर्ष पर पहुचने पर वे जो आखिरी योजना बनायेंगे अुसका ढाचा बुनियादी शिक्षा के ढाचे से अधिक फरक नही रखेगा । किसी भी हालत में बुनियादी शिक्षा को नामजूर करनेवाले तथा अुसी समय राष्ट्र की शिक्षा की पुनर्रचना में दिलचस्पी रखनेवाले शिक्षणतज्ञो का यह फर्ज है कि राष्ट्र के सामने अेक वैकल्पिक योजना प्रस्तुत करे ।

बुनियादी शिक्षा के कुछ पहलू सामान्य जनता की तीव्र आलोचना के पात्र हुअे हैं । अुन पहलुओ की तरफ ध्यान देना बुनियादी शिक्षा के सिद्धात को माननेवाले हम सभी लोगो के लिअे अत्यत जरूरी है ।

जिन बच्चो को पहले कभी शिक्षण की सुविधा प्राप्त नही हुअी है अुनको वह सुविधा

प्रदान करना अिस समय हमारे चिंतन का प्रधान विषय होना चाहिये। अैसी हालत में हमारा प्रयत्न यह होना चाहिये कि शिक्षण के आर्थिक पहलू की खूब परवाह की जाय और सम्बन्धीय सभी फिजूल खर्ची को रोका जाय। कभी जगहों पर जहां बुनियादी शिक्षा का प्रवेश हो गया है वहां अुद्योग शिक्षण के अुत्पादक पहलू की ओर लापरवाही बरती गयी है जिसका सहज नतीजा यह हुआ है कि बुनियादी स्कूल सामान्य शालाओं से भी अधिक खर्चीले बने हैं। अगर हम अुद्योग साधनों को बरबाद होने देते हैं तो अिससे हम केवल बुरी शिक्षा नहीं देते, क्योंकि सब तरह की बरबादी, शैक्षणिक और नैतिक दोनों दृष्टियों से बुरी है बल्कि ये बुनियादी शिक्षा की प्रगति में अैसे समय पर रुकावट डालते हैं जबकि सब तरह के स्रोत, साधन और सामग्रियों का अुपयोग बुनियादी शिक्षा के प्रचार के लिअे किया जाना चाहिये। स्कूलों में अुद्योग शिक्षण का प्रवेश कराकर अुनके अुत्पादन और शैक्षणिक पहलुओं की ओर लापरवाही दिखाने से बुनियादी शिक्षा के प्रति अन्याय करने के अलावा और कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। बुनियादी शिक्षा में अुद्योग साधनों का अुपयोग कभी भी खेल के साधनों की तरह नहीं किया जाता। जो बुनियादी शिक्षा की अुत्पादक प्रवृत्ति के महत्व को पूर्णतया समझते हैं और अुसे गंभीरतया अख्तियार करना चाहते हैं वे ही बुनियादी शिक्षा के प्रति न्याय कर सकते हैं।

योग्य प्रकार से प्रशिक्षित निपुण शिक्षक के हाथ में बुनियादी शिक्षा अपने समवायी ढंग के सहित सबसे अधिक वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति साबित हो सकती है। लेकिन अनुभव तथा कुशलताहीन शिक्षक के हाथ में वही शिक्षा पद्धति यांत्रिक क्रिया मात्र रह जायगी। अितना ही नहीं, वह शिक्षक के सभी संस्कारों और बच्चों की क्रियात्मक शक्तियों को भी नष्ट कर देगी। हम सब अैसे बुनियादी विद्यालयों को जानते हैं जो क्रियात्मक प्रवृत्ति के साथ गुनगुनाते हैं और हम लोग अैसे विद्यालयों से भी परिचित हैं जो बुनियादी शिक्षा के परिहास रूप मात्र बने हुअे हैं। ये जो दूसरी तरह की शालायें हैं अिन्हीं से बुनियादी शिक्षा बदनाम हुअी है। शिक्षकों का योग्य प्रशिक्षण बुनियादी विद्यालय प्रारंभ करने के लिअे सबसे प्रथम आवश्यकता माना जाना चाहिये। साधनहीन और अनुभवहीन शिक्षक के हाथ में बुनियादी शिक्षा मजाक हो रह जाती है। अिसलिअे जब तक पर्याप्त संख्या में योग्य प्रशिक्षित शिक्षक तैयार न हो जाय तब तक बुनियादी शिक्षा का प्रवेश स्कूलों में न हो।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने यह महसूस करना शुरू कर दिया है कि बुनियादी शिक्षा, शिक्षा का अेक निकृष्ट तरीका है। अिस वजह से कअी जगहों पर बुनियादी शिक्षा के प्रति तीव्र घृणा दिन-ब-दिन बढ़ रही है। असल में यह स्थिति अिसलिअे पैदा हुअी है कि जब हमने ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा का प्रवेश कराया है तब हमने शहरी क्षेत्रों की शिक्षा पद्धति अछूती (अभेद्य) रखी है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को अिसके पहले अितना कष्ट सहन करना पड़ा था कि आज अगर ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा में कोअी नया परिवर्तन किया जाता है तो अुसकी तरफ अविश्वास और सन्देह की दृष्टि से वे देखने लगते हैं। जब वे देखते हैं कि सारे परिवर्तन ग्रामीण शिक्षा को लेकर ही किये जाते हैं, शहरी क्षेत्र

की शिक्षा पद्धति में या पाठ्यक्रम में अुसी समय कोअी परिवर्तन नही किया जाता तो अुनका सन्देह, अविश्वास और बढ जाते है। ग्रामीण लोगों के अिस तरह सन्देह करने में कोअी आश्चर्य नहीं है। सरकारे बुनियादी शालायें खोलती है और बुनियादी शिक्षा को प्रोत्साहन देती है, लेकिन अिनके बावजूद भी बुनियादी विद्यालय अप्रमाणित, अमान्य ही रह गये है और अुनसे निकलनेवाले विद्यार्थियो को विश्वविद्यालयो में कोअी प्रवेश नही मिल पाता है। यह स्थिति बुनियादी शिक्षा की प्रगति को पीछे धकेल रही है। सामान्य स्कूलो को जो स्थान और मान्यता हासिल हुअे है वही स्थान और मान्यता बुनियादी विद्यालयो को न देकर बुनियादी शिक्षा की योजना को कार्यान्वित करना बडी भारी भूल है। जब तक बुनियादी शिक्षा को सामान्य शिक्षा से अलग रखा जायगा तब तक बुनियादी विद्यालय निकृष्ट तरह के विद्यालय ही माने जायेंगे।

बुनियादी शिक्षा के समर्थको ने कभी कभी अधूरे मन से काम किया है, जिसकी वजह से बुनियादी शिक्षा को काफी धक्का पहुचा है। हममें से कभी लोग बुनियादी शिक्षा में श्रद्धा रखने का बहाना करते है, लेकिन सचमुच अुस शिक्षा को कार्यान्वित करने का मौका जब आता है तो वे अुसके लिअे कोअी ठोस प्रयत्न या त्याग करने को तैयार नही होते। अिस तरह के अुत्साहहीन ध्येय ने बुनियादी शिक्षा को सबसे अधिक धक्का पहुचाया है। अधूरे मन का समर्थन बुनियादी शिक्षा के विषय में दुविधा ही अुत्पन्न करेगा। अिसलिअे अधूरे मन के समर्थन से सच्चा और अीमानदार विरोध ही अच्छा है।

सरकार सपूर्ण दिल से बुनियादी शिक्षा को सहारा दे तो भी अैसी आशा तो नही की जा सकती कि जिससे कोअी चमत्कार हो जायेगा। शिक्षा की पुनर्रचना का रास्ता काफी लबा और कठिन है। अिस ठोस सफलता को पाने के लिअे शिक्षा का काम करनेवाली सभी सस्थाओ का कठिन, सुसघटित और साहसिक प्रयत्न अत्यत जरूरी है। अेक जनतात्रिक समाज में जहा कि लोगो को किसी भी तरह की पद्धति की शिक्षा को अपनाने की आजादी है वहा सरकार लोगो की अिच्छा के खिलाफ किसी भी शिक्षा-प्रणाली को अुनपर थोप नही सकती। अिन चन्द सालो में हमने देखा है कि कुछ सरकारी शालाओ में अग्रेजी का स्तर किस तरह गिरा है। अुसके परिणाम स्वरूप आज अग्रेजी माध्यम से शिक्षा देनेवाले खानगी और स्वतत्र विद्यालयो की माग सबसे अधिक है। अिस अुदाहरण से स्पष्ट है कि शिक्षा की नीति रूपित करनेवाली सस्थाओ में सरकार मात्र अेक सस्थान है। शिक्षा के सभी सस्थान, माता-पिता, अध्यापक तथा अन्य सामाजिक सस्थायें जब तक अेक सामान्य अुद्देश्य के लिअे सघटित नही होती तबतक शिक्षा की पुनर्रचना का काम आगे बढ नही सकता। अेकाधिकारी समाज में सरकार के आदेश से शैक्षणिक सुधार किये जा सकते है। लेकिन जनतात्रिक समाज में किसी भी परिवर्तन को कार्यरूप में परिणत करने के पहले जनता को अुसकी अुपयोगिता समझाकर जनता से स्वीकृति लेनी पडती है। सही प्रमाणो से, सबूतो से हमें दिखाना पडेगा कि बुनियादी शिक्षा पद्धति परपरागत शिक्षा पद्धति से अच्छी है और बुनियादी विद्यालयो से निकलने वाले विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियो की बनिस्बत जीवन के लिअे अधिक समर्थ है।

बुनियादी शिक्षा की समग्र प्रगति के लिअे अधिक वाछनीय बात यह है कि सारे देश के लिअे अेक अैसी कनिष्ठतम योजना तैयार की जाय जो शहर तथा गाव के लोगो के लिअे मान्य हो और अुसे लभ्य साधनों और स्रोतों के द्वारा कार्यान्वित करना सभव भी हो। हम चाहे संपूर्ण आदर्शयुक्त योजना तैयार करे, अगर अुसको कार्यान्वित करने के लिअे शिक्षक तैयार न हों और माता-पिता अुस तरफ अुदासीन रहे तो सरकार की अत्यधिक दिलचस्पी और अुमंग के बावजूद भी वह योजना सफल नही हो सकेगी। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के लोगो से अनुकूल समर्थन पाया जा सके–अिस तरह की अुदार, मर्यादित और सरल योजना बनाना आज की सबसे बडी आवश्यकता है। बुनियादी शिक्षा के कुछ पहलू हैं जैसे सफाअी, सहकारी काम, सामाजिक मनोरजन, सास्कृतिक कार्यक्रमो में स्कूल का सहयोग, सामान्य दस्तकारी तथा अुसी तरह के अन्य कार्यक्रम-जिनका महत्व सब जगह महसूस किया जाता है। हमें अेक राष्ट्रीय आन्दोलन चलाते जाना चाहिये ताकि चाहे खानगी हो, चाहे सार्वजनिक, चाहे शहरी हो, चाहे ग्रामीण, हर अेक शाला में हम अिस क्रम को कार्यान्वित कर सके। माह मअी की शुरूआत में सभी राज्यो के शिक्षा-निर्देशको के अेक सम्मेलन में हम सब अिस तरह का अेक कार्यक्रम तैयार करने तथा अुसको कार्यान्वित करने की सभावनाओ पर गहराअी से विचार करने के लिअे मिल रहे है। जब हम अपनी स्थिति को और ठोस बना लेगे तब हम अधिक विश्वास के साथ सर्वांगपूर्ण बुनियादी शिक्षा के प्रति आगे बढ सकते है। यह तरीका जो मैं सुझा रहा हूँ कोअी चमत्कारी परिणाम तो नही दिखा सकता; लेकिन अिससे अितना फायदा तो जरूर होगा कि आज कअी शिक्षातज्ञ जो अपने को दुविधा और निराशा की स्थिति में पाते हैं, अिस हालत से बाहर आने में अुन्हे कठिनाअी नही होगी। जब यह काम आगे बढता जाता है तब हमें चाहिये कि बुनियादी शिक्षा में सर्वांगीण प्रयोग करनेवाली मार्गदर्शक आदर्श-सस्थाओं को पूरी स्वाधीनता और बढावा दें।

हममें से चन्द लोग अत्यधिक अुमग में बुनियादी शिक्षा की पद्धति, शास्त्र पर अितना जोर देने का अितना प्रयत्न करते है कि जिससे सभव है कि हम बुनियादी शिक्षा के सच्चे अुद्देश्य को ही भूल जायें। अिस खतरे से हमको बचना चाहिये। बुनियादी शिक्षा हमारे बदलते समाज की आवश्यकताओ की पूर्ति करने का अिरादा रखती है। अतअेव निश्चित पाठ्यक्रम के रूखे ढाचे के रूप में अुसको ढाला न जाय। जिस जनसमूह का सामाजिक तथा आर्थिक ढाचा विज्ञान और यत्र-शास्त्र की टक्कर में द्रुतगति से बदल रहा हो, अुसकी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिअे अेक शक्तिशाली और असरदार शिक्षा पद्धति की जरूरत है। औद्योगीकरण की बढती के साथ-साथ परपरागत दस्तकारियो में परिवर्तन अवश्यभावी है। बुनियादी शिक्षा, जो अपने को प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से सबधित रखने का दावा करती है भौतिक और सामाजिक परिस्थितियो में होनेवाले परिवर्तनो के लिअे अगम्य नही होनी चाहिये। असल में वाछित परिवर्तनो को परिणत करने का जरिया बनना बुनियादी शिक्षा के खास कामो में अेक है। अिससे हम समाज के बाह्य रूप को भी समझ सकेंगे। अत यह

(शेषांश पृष्ठ ५५ पर)

बुनियादी तालीम की पद्धति

मार्जरी साअिक्स

"जीवन के लिये शिक्षा" यह शब्दावली रूढ सी हो गयी है। यह हर किसी के मुह से सुनने को मिलती है। नअी तालीम की परिभाषा भी तो यही है न? "जीवन के लिये, जीवन द्वारा, जीवन भर की शिक्षा।" यह विचार सच जरूर है, लेकिन अिसे व्यवहार में लाने के लिअे हमें क्या-क्या कार्य करने हें, अिस बात पर बार-बार चिन्तन मनन किये बगैर केवल शब्दावली को रटते रहने में बडा खतरा है।

आखिर जीवन है क्या? जड से जीवन को कैसे अलग करके पहचानते हैं। जीव में बदलने, विकसित होने और परिस्थिति का मुकाबला करने की अेक शक्ति है। जीवन क्रियाशील है। जीवो का, खास कर मनुष्य का जीवन सृजनात्मक है, सृजनशील है। सिरजनहार होने के नाते मनुष्य कअी नये साधनो (औजारो) को भी तैयार कर लेता है और अुनको अपने काम में लाता है। क्रिया-शीलता और सृजनशीलता—ये दो मनुष्य जीवन की मौलिक पहचान कही जा सकती हे। "जीवन के लिये शिक्षा"—अिसके कअी माने हो सकते हें, लेकिन अुसका पहला मतलब तो यही है कि बच्चो में की 'करने-बनाने' की सहज वृत्ति का विकास करना।

बच्चो को जाननेवाला तथा अपने बचपन की याद रखनेवाला कोअी भी अिस अथाह और अदम्य वृत्ति को पहचान सकता है। बच्चे महसूस करते हें कि भौतिक चीजो पर अुनकी शक्ति चल सकती है और वे चीजो को तोडते हे, नअी चीजें बना भी लेते हे। अपने खेल में आस पास के बडो के कार्यो की नकल करते हें, और आनद के साथ जीवन के गभीर कामो में भी हिस्सा लेते हें। 'कुछ भी नही कर सकता' अिससे बढकर दुखद अवस्था जागृत व स्वस्थ बच्चो के लिये नही हो सकती। मनुष्य के अिस मूलभूत गुण विशेष के आधार पर ही नअी तालीम का यह सिद्धान्त प्रतिष्ठित है कि शिक्षा का माध्यम अुत्पादक काम होना चाहिये।

शिक्षा पद्धतियो का यही मूल है। मूल या बुनियाद के बारे में साफ और शुद्ध भान के अभाव से 'समवाय' के बारे में काफी गलत फहमिया खडी होती हैं। पुराने स्कूल कालेजो में पढे व प्रशिक्षित शिक्षक बच्चो की शिक्षा को मापते समय यही सोचते हे कि अमुक सालो में अमुक विषयो की कौन-कौन सी और कितनी जानकारी दी जाये। समवाय के बारे में अुनका खयाल अितना ही है कि शाला में बच्चो की दिलचस्पी कायम रखने के हेतु चुने हुअे कार्यो के साथ अिन विषयो की थोडी-थोडी जानकारी जोडी जाय। अुनका मानसिक चित्र अिस प्रकार माना जा सकता है। अेक तरफ तो अुत्पादक व सामाजिक कार्यों और प्रक्रियाओ की अेक सूची है, और दूसरी तरफ अेक अटल पाठ्यक्रम है—याने दी जानेवाली जानकारियो की सूची। समवाय तो यही माना जाता है कि अिन दोनो सूचिया में मिलापी सकल की खोज करना और अिस के आधार पर अपने पढाने की योजना तैयार करना।

अगर खुले शब्दो में कहे तो यह समवाय कृत्रिम व अधमरी चीज होगी, अितना ही नही बल्कि वह शिक्षा को ही अेक गलत बुनियाद पर प्रतिष्ठित करना होगा। आजकल सब कोअी

अिस बात को सिद्धान्त के तौर पर मानने को तैयार होते है कि केवल निश्चित विषयो की निश्चित जानकारी देना मात्र नही, पर शिक्षा तो बच्चों की सहज वृत्तियों और गुप्त शक्तियों को जाग देना और विकसित करना है। मैं फिर से कहना चाहती हूँ कि लोग अुसूल में अिस चीज को मानते हैं पर व्यवहार में जाने अन-जाने दूसरे ही रास्ते पर चलते हैं। समवाय के बारे में अधिकांश शकाअें और कठिनाअियां अिसी गलत धारणा से निकलती है कि शिक्षा के माने जानकारी देना ही है।

अिसलिये जहां तक सभव हो, हम सब से पहले अपने मन से अिन पुराने विचारों को निकाल दें, फिर नये सिरे से तीन साधारण महत्वपूर्ण सिद्धान्तो के आधार पर अिस पर विचार करें। अिन तीन तत्वो से ही सारी-की-सारी बात समाप्त हो जाती है अैसा नही है। अेक ही व्याख्यान में सब बातो को लेकर चर्चा करना भी अशक्य है। फिर भी अगर अीमानदारी के साथ अिन तत्वो को स्कूल के दैनिक कार्यों में समावेश किया जाय तो शिक्षा को सहज और सुन्दर बनाने में काफी सफलता मिलेगी। सादे सरल शब्दो में अिन को व्यक्त करना आसान है, पर रोज-ब-रोज अमल में लाना दुष्कर है।

स्कूल में अुद्योग की योजना बनाते समय सब से पहले अिस पर विचार कर लेना जरूरी है कि हम क्या कर सकते हैं और हम क्या बना सकते हैं? शिक्षक और छात्र दोनों का ध्यान अिस पर केन्द्रित होना चाहिये। अिसके विपरीत हम अकसर अैसा ही विचार करते हैं कि अमुक चीज बनाने से हम फलानी जानकारी दे सकते हैं। बात सच है कि हर क्रिया से कुछ न कुछ सीखा या सिखाया जा सकता है। पर दिलचस्पी व अुपयोगिता का विचार किये बगैर विषयज्ञान की सिद्धि के लिये कोअी भी कार्य लेना गलत होगा। पूज्य विनोबाजी अक्सर यह अुदाहरण पेश करते हैं। बीमार माता की सेवा शुश्रूषा से यह निश्चित है कि मुझे बीमार की सेवा कार्य में कुशलता व ज्ञान हासिल होगा। लेकिन अिस ज्ञान विस्तार के हेतु मैं माता की सेवा नही करता। पर माता की सेवा करना स्वय अेक अुत्तम व जरूरी कार्य है, जो मुझे करना है। शिक्षा का अर्थ अितना ही नही कि बाहरी जानकारी बढायी जाय। सच्ची शिक्षा तो अिसी में है कि अिस मातृसेवा कार्य से मेरे व्यक्तित्व का विकास हुआ। नियत कार्य न समझकर केवल अपनी कल्पित भलाअी के लिये मैं शुश्रूषा कार्य करू तो मुझमें विकास के बदले विकृति ही हो कर रहेगी। बात सच है कि करने से हम सीखते हैं, परन्तु जब अिस विश्वास से करे कि वह कार्य सभी दृष्टियो से भला है, तभी वह उचित होगा।

साराश, हम पहले विचार कर ले कि शिक्षक व छात्र दोनो मिलकर क्या बनाना चाहते हैं। मान लीजिये कि शाला का बगीचा है, तो दोनो बैठकर सोचेंगे, योजना बनायेंगे कि बगीचे में क्या-क्या बोना है, कैसी अुसकी रक्षा करनी है आदि। हम कितना कार्य सिद्ध करना चाहते हैं अुसका अन्दाज सतत सामने रहे और रोज व हफ्तेवार प्रगति की समीक्षा भी हो। अगर वस्त्रविद्या हो तो निश्चित कर लेना जरूरी है अमुक अवधि में कितना कपडा निवार आदि बनाना है (केवल सूत ही नही)। कागज, गत्ते का काम है तो स्पष्ट योजना हो

कि कितनी कापियां बनानी हैं अुनके माप आदि भी निश्चत हो और कापियां अपने अुपयोग के लिये हो, तहेदिल वखुली बहस से शिक्षक व छात्र अेक निश्चित योजना बना ले जैसे अपनी-अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिअे कौन-कौन-सी चीज कितनी और कितने समय में बनायी जाय। बच्चों की अुमर के अनुपात से अवधि बदलेगी। बहुत ही छोटे बच्चों के सामने अेक हफ्ते या महीनें का समय और अुस अवधि का कार्य ही पर्याप्त होगा। बडे बच्चों और सबसे बडे वर्ग में तो साल भर की भी योजना हो सकती है। अवधि को निर्धारित करने में और अेक बात है। कापियां बनाना, कपडा बनाना आदि कम समय में अेकाग्रता से हो सकनेवाले कार्य हैं। कपास बोना आदि खेती कार्य में अवधि हमारे अधीन नही है। वह तो प्रकृति के आधार पर ही होगा। पुनरुक्ति दोष होते हुअे भी यह दोहराना पडता है कि सब मिल कर योजना बनायें, सबका चित्त अुस कार्य में लगा रहे और अुसकी अुपयोगिता सब महसूस करे, केवल जानकारी–रूपी अल्प लाभ की ओर विशेष ध्यान न दें। अेक साधारण गलती जो शिक्षकों से अकसर हुआ करती है यह है कि बच्चों को क्या करना है, क्या-क्या सीखना है अिन बातों का निर्णय करनेवाले अपने को ही अेक सर्वाधिकारी मानते हैं। बच्चों को तो चाहिये वह सहज स्फूर्ति से अपनी अिच्छानुसार अैसे कामों में अुत्साह से लगें जो अुन्होंने खुद चुना है और अुसके लिये वे अपने को जिम्मेदार समझें।

कृत्रिम तरीकों से अुद्योग और विषय ज्ञान के बीच समवाय स्थापित करने के बेकार प्रयत्न को छोडकर शिक्षक लोग गांधीजी की चेतावनी पर ध्यान दें। गांधीजी ने शुरू में ही कहा था कि अुत्पादक कार्यों द्वारा शिक्षा देने पर मानसिक और आध्यात्मिक विकास पूरा-पूरा तभी सम्भव है जबकि काम करने वाले हर प्रक्रिया के "क्यों और कैसे" को पूरा पूरा समझें। यह शर्त सरल दीखते हुअे भी बडी गंभीर और व्यापक है। अिस पर सहज और सफल समवाय खडा है। आखिर शिक्षा भी यही है न? जो कार्य हाथ में लिया गया है, अुसे कुशलता से पूरा करने योग्य ज्ञान शास्त्रीय ढंग से हासिल करना। समवाय को अेक पूर्व निश्चित ढांचे में ढालने का प्रयत्न फिजूल होगा। क्योंकि परिस्थिति व व्यक्ति भेद के कारण वह बदलता रहेगा। कार्य के प्रति अभिरुचि पैदा करनेवाला यह शास्त्रीय ज्ञान स्वाभाविक बन जाता है, जिन्दगी की शिक्षा बन जाता है। जीवित शिक्षा होने के नाते वह व्यक्तित्व को विकसित करने में बडी मददगार साबित होगी।

यहां तक पहिले सिद्धान्त को–यानें जो कुछ करना या सीखना है, अुसके बारे में पहिले शिक्षक व छात्र योजना बनावे, अुसकी चर्चा की। अब दूसरे सिद्धान्त पर आयें। "क्यों और कैसे" ये दोनों सवाल हैं। दूसरा सिद्धान्त यह है कि शिक्षा में सवालों का क्या स्थान है? अभीतक यही माना जाता है कि प्रश्न करने का अधिकार केवल शिक्षक का है। शिक्षक बोलता है, समझाता है, अभ्यास कराता है और आखिर छात्रों से मौखिक या लिखित प्रश्नों का जवाब चाहता है। नई तालीम में यह पद्धति बिलकुल दूसरे ढंग से चलेगी। शिक्षक नहीं, बच्चे सवाल करेंगे। सचमुच सफल नअी तालीम शाला की कसौटी भी यही है कि वहां के बच्चे अपने कार्यों के बारे में सहज लेकिन बेधडक प्रश्न करे। करने व बनाने की वृत्ति की तरह प्रश्न करना भी

बच्चों के प्रकृति गुणों का अंग है। पूर्व बुनियादी अवस्था में (स्कूल-अुमर के पहले) बच्चों में बडी जिज्ञासा होती है। आसपास की दुनिया के बारे में सब कुछ जान लेने की असीम अिच्छा व अुत्साह होता है। बच्चा बडों-बूढोंपर प्रश्नों की वर्षा करता रहता है। आजकल के स्कूलों के प्रति सबसे बडी शिकायत यही है कि वहा का वातावरण बच्चों के मन को मन्द कर देता है। प्रश्न करने की सहज वृत्ति को दबाते-दबाते बच्चो की जिज्ञासा हो मारी जाती है। सच्चा नओी तालीम स्कूल तो अिसके विपरीत बच्चो की सवाल वृति को पोषण देगा, जिज्ञासा को खूब बढायेगा जिसके फलस्वरूप बडे होने पर अुनमें आसपास की प्रकृति और अुद्योगों के हर पहलू पर सच्ची दिलचस्पी पैदा हो।

कओी शिक्षक तो प्रश्नो की अिस वृष्टि के कारण घबडा जाते है कि कही अुनके सीमित व अल्प ज्ञान की पोल न खुल जाय। वे बच्चो के सवाल के सामने "मुझे मालूम नही" कहने में शर्माते है। यह शर्म तथा डर दोनों निराधार है। क्या कोओी अिन्सान यह कह सकता है कि अिस विस्तृत विश्व की सब बातो को वह जानता है? मनुष्य का ज्ञान अिस ब्रह्माण्ड के सामने बहुत ही कम है। बच्चा अुस आदमी की कदर जरूर करेगा जो सच सच कह दे कि मुझे मालूम नही और आगे अितना जोडे कि मै अिसका जवाब खोज कर दूगा। कभी कभी तो बच्चो का सहज पूछा प्रश्न जीवन के गभीर व गहरे रहस्यो को स्पर्श करता है। "मा, आत्मा क्या होता है?" "दादा, अिश्वर को किसने बनाया है।" ये सवाल अेक पाच वर्षीय बालक के मुह से निकले। अगर अिन प्रश्नो का ओमानदारी के साथ, सरल रीति से भक्ति भाव से अुत्तर दें तो हम बच्चे की बडी सेवा करते है। क्योंकि अुसकी जिज्ञासा को बढाने के साथ साथ मनुष्य की ज्ञानमर्यादा का भी भान कराते है। बुद्धि की जागृति के साथ अुसकी नम्रता भी जोडी जानी चाहिये। लेकिन शुरू में तो अिसी पर जोर देना है कि बच्चों में प्रश्न करने की सहज वृति पैदा हो। जब सवाल अुनके अपने होगे याने स्कूल के जीवन में से अुन्हें खुद सहज सूझे हो, तब दिया हुआ समाधान अुन्हे पटेगा और अुस पर से जीवन शिक्षा की अिमारत खडी हो सकती है।

तीसरा सरल नियम, कोओी अेक तरीका नही, बल्कि उससे ज्यादा व्यापक है। अक्सर हम कहा करते है कि हमें बच्चों में जीव के तथा श्रम के प्रति प्रेम अुत्पन्न करना है। यह दुष्कर कार्य है। आसान नही है। केवल क्रियाओ की अुत्तम योजना या जागृत प्रशिक्षण से यह सिद्ध होनेवाला नहीं है अिसके लिअे खास चीज की जरूरत है। कारीगर कुशल होने से ही यह सिद्ध नही होगा कि वह अुद्योग का सच्चे प्रेमी भी है। अिसलिअे तीसरी बात यह बताना चाहती हू कि शिक्षक को अैसा कुशल कारीगर होना चाहिये जो स्वेच्छा से आत्म तृप्ति के लिअे अपने अुद्योगो में लगा रहेगा, चाहे वहा छात्र हो या न हो। यह सिद्धान्त अब तक कही देखने में नही आता। बहुत-से स्कूलो में कओी तरह के अुद्योग चलते है जरूर, लेकिन विरले ही शिक्षक भी प्रत्यक्ष काम में लगे दिखाओी देते है। वे तो व्यवस्थापक के रूप में बच्चों के काम का निरीक्षण करते हुअे खडे या बैठे रहते है। खेती में काम करके शिक्षक के कपडो में पवित्र धूली नही लगती। छात्र बुनाओी करते रहेगे। शिक्षक बैठा देखता रहेगा।

अेकाध स्थान में जहा शिक्षक काम करता दीखा भी, वहा काम को वह अपना नही मानता। वह मानता है कि काम तो छात्रों का है। हमें तो अैसे शिक्षक चाहिअे, जिनको अपना खेत, बगीचा और अुद्योगशाला स्वत: प्यारे हो वे अुन्हे अपना पूजास्थल समझते हो। कार्य अुनका जीवन है, स्थान जीवन केन्द्र है। आनन्द मूर्ति के लिअे स्वत श्रम करनेवाले भाअी-बहनें चाहिअे। जिन्हे अिस बात की परवाह नही हो कि छात्र मौजूद है या नहीं, वे अपने कार्य में तल्लीन रहेगे। अैसे ही लोग छात्रों में श्रम-निष्ठा पैदा कर सकेंगे। अैसे ही लोग अपनी श्रम-निष्ठा के कारण मन को सतत जागृत रखकर नअे-नअे शोध कार्य कर सकेगे। पहले दो नियमो को भी अैसे श्रमनिष्ठ शिक्षक सफल बना व चला सकेगे। शिक्षा कोअी यान्त्रिक चीज नही है। वह ज्योति से ज्योति को स्फुरित करनेवाली चीज है। विश्वकवि *रवीन्द्रनाथ ने सच कहा है कि ज्योति से ज्योति* जगाने की सामर्थ्य अुन्ही लोगो में होगी जो अपना दीपक ठीक ठीक जलाये रखते हैं। अुद्योग द्वारा शिक्षा देने के लिये अैसे ही शिक्षक चाहियें जिनके हृदय में श्रम-निष्ठा जगमगाती है।

(पृष्ठ ५० का शेषांश)

स्पष्ट है कि अिस तरह की शिक्षा पद्धति कभी स्थिर या अटल नही रहेगी। जब बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रीय आदर्श से युक्त होकर सामाजिक परिवर्तन के जरिये के रूप में देखी जायगी तभी वह हमारे बदलते समाज की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकेगी। कर सकेगी। मैं तो यही कहने का साहस करूगा कि हम अिस लक्ष्य तक तभी पहुच सकेगे जब हम अेक अैसे समुचित शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करेगे जिसमें अेक दूसरे की समालोचना करने के बदले हम सहकारी भावना से अेक साथ काम करेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि सम्मेलन अिन विषयो पर विचार करेगा। मुझे बहुत खुशी होगी अगर हम बुनियादी शिक्षा के कनिष्ठतम कार्यक्रम पर किसी सर्वसम्मत सामान्य निष्कर्ष पर पहुच सके। अिससे हम सभी शालाओ का बुनियादी शिक्षा के ढाचे में अनुस्थापन कर सकेंगे। साथ-साथ केंद्रीय तथा राज्य सरकारें और जनता भी अिस महान राष्ट्र की शिक्षा पद्धति को सुधारने के लिअे सम्मिलित प्रयत्न

अत में आपने भाषण देने के लिअे मुझे बुलाने की जो कृपा की अुसके लिअे फिर से आभार प्रकट करता हूँ।*

---

*१३ वे अ भा न ता सम्मेलन राजपुरा, पजाब के मुख्य अतिथि के रूप में आये श्री. कालूलाल श्रीमाली, शिक्षा मत्री, केन्द्रीय सरकार, नअी दिल्ली, के अंग्रेजी भाषण का हिन्दी अनुवाद।

अेक निवेदन

(दूसरा मध्य-प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन)

राष्ट्र के व्यक्ति और समाज को नये जीवन की ओर ले जाने की जितनी शक्ति सही ढग की शिक्षा में है, अुतनी और किसी अेक चीज में नही है। स्वराज्य के दस साल पहले ही पूज्य गाधीजी ने देश के सामने नअी तालीम अथवा वुनियादी शिक्षा का विचार रखा था और चाहा था कि देशवासी अिस विचार को समझकर अपनायें और अिसके अनुसार सारे देश के बालको, बालिकाओ, और प्रौढो की शिक्षा का प्रबंध करे। गांधीजी ने बताया था कि नअी शिक्षा किसी अुत्पादक अुद्योग द्वारा ही दी जाय, और वह अुद्योग मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति करनेवाला हो, शिक्षा में स्वावलंबन का विचार मुख्य रहे। शिक्षा शुरू से आखिर तक मातृभाषा द्वारा ही दी जाय। शिक्षा के साथ समाज और प्रकृति का मेल बैठाया जाय। शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर अपनी अैसी रुचि, वृत्ति सस्कार और स्वभाव बनावे कि जिससे देश में अहिंसक समाज की रचना के लिअे आवश्यक अनुकूलता पैदा हो। अुन्होने शिक्षा को जीवन के साथ जोडने की बात कही और कहा कि समाज को बालक-बालिकाओ की शिक्षा-दीक्षा का सारा भार स्वय अुठाना चाहिये। जन्म के पूर्व से लेकर जीवन के अन्त तक का सारा समय शिक्षा का ही समय माना जाना चाहिये। और राष्ट्र के ६ से १४ बरस तक के बालको के लिअे अनिवार्य और नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये। सन् १९३७ से गाधोजी के ये विचार देश के सामने है। देश के कअी भागो में अिन विचारो के अनुसार नअी तालीम का काम हुआ है, और हो रहा है, किन्तु अुससे वे सब परिणाम अभी तक नही निकले, जिनकी अपेक्षा गाधीजी ने रखी थी। जहा सही दिशा में लगातार निष्ठापूर्वक काम हुआ है, वहा काम ने ही यह सिद्ध कर दिया है कि नअी तालीम के विषय में गांधीजी का जो सपना था वह अपनी जगह ठीक था, और वैसे परिणाम लाना असभव नही है। आज देश के सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में जिस तरह की विषमता और धाधली मौजूद है, और लोकजीवन में जिस तरह नीति का विचार शिथिल होता जा रहा है, वह देशवासियो के लिअे अेक कठिन समस्या ही नही, कडी चेतावनी और चुनौती भी बन गया है।

अिस सम्मेलन की नम्र किन्तु दृढ सम्मति है कि आज के सारे सन्दर्भ को घ्यान में रखते हुअे और आम लोगो के जीवन का विचार करते हुअे अब समय आ गया है कि जब समूचे मध्यप्रदेश की जनता का घ्यान शिक्षा की अिस ज्वलत समस्या की ओर खीचा जाय और सारे प्रात में नअी तालीम का प्रबल वातावरण बनाने की दिशा में गभीरता से सोचकर ठोस कदम अुठाया जाय।

सम्मेलन की राय है कि—

१. प्रान्त के सभी शहरो और गावो म प्राथमिक शिक्षा का सारा काम नअी तालीम की दृष्टि से चलाया जाय।

२. ६ से १४ साल के बालक बालिकाओ को नअी तालीम की रीति से शिक्षा देने की समुचित व्यवस्था की जाय और आठ वर्ष के

अिस शिक्षा काल को प्राथमिक शिक्षा की अेक अखड अिकाअी माना जाय।

३. आठ साल की अिस बुनियादी शिक्षा के काल में बालको पर मातृभाषा, राष्ट्रभाषा अथवा पडोसी प्रान्त की किसी अेक भाषा के अलावा अग्रेजी जैसी किसी विदेशी भाषा को अेक विषय के रूप में सीखने का बोझ हरगिज न लादा जाय। राज्य की शिक्षा सस्थाओ में छठी से आठवी तक की पढाअी में अग्रेजी को अेक अनिवार्य विषय के रूप में पढाने की जो व्यवस्था हाल ही में की गयी है, अुसे यह सम्मेलन अनुचित, अनावश्यक और हानिकारक समझता है, और सुझाता है कि नअी तालीम की शालाओ में अग्रेजी की पढाअी आठवी तक अनिवार्य न की जाय।

४ जहा भी नअी तालीम का काम चले वहा जात-पात, अूच-नीच और अमीर-गरीब के भेदो से अूपर अुठा जाय। सारा जीवन और कार्य आपसी सहयोग तथा स्वावलबन पूर्वक चलाने की दृष्टि रखी जाय और सामाजिक तथा आर्थिक विषमता से मुक्त रहकर जीने और काम करने की दृष्टि का विकास करने की कोशिश की जाय।

५ सर्वोदय विचार में और अहिंसक समाज रचना में विश्वास रखनेवाले प्रान्त के सभी भाअी बहनो से सम्मेलन यह विनती करता है कि वे नअी तालीम के मूल विचार को गहराअी से समझने के लिअे स्वय सचेष्ट हो और अैसी कोशिश करे कि जिससे हमारे प्रात के सारे बाल समाज को जीवन शिक्षा के रूप में नअी तालीम से शिक्षित होने का लाभ मिल सके।

६ सम्मेलन मध्यप्रदेश शासन से भी निवेदन करता है कि वह प्रान्त की जाग्रत तथा विचार शील जनता की भावना को ध्यान में रखकर पाठशालाओ में छठी से आठवी तक अग्रेजी को अनिवार्य करने के प्रश्न पर फिर से विचार करे, और बालकों पर आठवी तक अग्रेजी की पढाअी लादने का विचार छोड दे।

(पृष्ठ ६० का बाकी)

"गुजरात प्रातिक काग्रेस कमिटी ने अिस विषय में अभी तक प्रगतिशील विचार अपनाया है। अत यह कार्यकारिणी समिति अुसका अभिनदन करती है और आशा करती है कि बावजूद सरकारी घोषणा के वह अपने निर्णय पर अब भी कायम रहेगी और वह जो शिक्षण सस्थायें चलाती है अुनमें भी अपनी अिसी नीति को अपनाये रखेगी।

"यह समिति गुजरात की शहर व देहातो की जनता से अनुरोध करती है कि अग्रेजी की पढाअी को दाखिल करने की बात को गौण न माने बल्कि भारत व प्रान्तीय सरकारो से जोरदार माग करने का आदोलन शुरू करे कि सरकारे प्रातीय या राष्ट्रीय भाषा में ही अपना सारा कारोबार चलावे और अग्रेजी को अलग कर देवे।

"सर्वोदय के प्रवर्तक आचार्य श्री विनोबा भावे के अग्रेजी भाषा के सबन्ध में जो विचार हैं अुनको जानने के बाद अिसके बारे में तिल मात्र भी शका नही रहनी चाहिये।"

राजस्थान-शांति-सेना शिविर

जयपुर जिले की फुलेरा तहसील में ग्रामदानी गाँव आजिदान-का-वास में राजस्थान का प्रथम शांति-सेना शिविर शांति सेना के विकास, शिक्षण, संगठन, अर्थ-व्यवस्था आदि पहलुओ पर विचार करने के लिअे अ० भा० शांति सेना समिति की संयोजिका श्री मार्जेरी साअिक्स के कुलपतित्व मे १५ से १८ जून तक आयोजित किया गया।

अिस शिविर म हर जिले से दो-दो प्रतिनिधि आमंत्रित किये गये थे। शिविर म ३९ शांतिसैनिको ने भाग लिया।

यह शिविर बस-मार्ग व रेल से दूर ग्रामदानी गाव के अेकान्त व शात वातावरण मे लगाया गया। आजिदान का वास जहा यह शिविर आयोजित हुआ, काल्ख पचायत क्षेत्र के अतर्गत है, जहा श्री रामसहाय पुरोहित के प्रयत्नो व श्री गोकुलभाओी भट्ट की प्रेरणा से १८ म से १३ गावो का ग्रामदान हो चुका है।

अिस शिविर की व्यवस्था स्वावलबी ढग से हुअी। भोजन व्यवस्था स्थानीय तौर पर ग्रामीण भाअियो के घर पर हुअी। शिविर का सचालन प्रातीय शांति-सैनिक सयोजक श्री बद्रीप्रसाद स्वामी के निर्देशन में चला। शिविरार्थियो ने अिस क्षेत्र के ग्रामदानी गावो के विद्यालय के लिअे प्रति दिन दो घटा श्रमदान करके अेक कुअें की खुदाअी का कार्य प्रारभ किया।

शिविर म शांतिसेना सबधी विभिन्न मुद्दों पर जो चर्चा हुअी अुसका सार अिस प्रकार है।

शांति सेना का सगठन और स्वरूप

१ शांति-सेना के सचालन व व्यवस्था हेतु अखिल भारत व प्रातीय स्तर पर शांति-सेना समितिया हो जिनका गठन सर्व सेवा सघ तथा प्रातीय सगठन अपनी अुपसमिति के रूप मे करे। जिला स्तर पर जिला सर्वोदय मडल अपने जिले के लिअे अेक शांति सेना सगठक नियुक्त करे। प्रातीय व अखिल भारतीय समितियो मे क्रमश जिला सगठक व प्रातीय समिति के सयोजक को सदस्य के रूप मे लिया जाय। नैतिक दृष्टि से किसी प्रभावशाली व्यक्ति को प्रातीय सेना नायक के रूप म बाबा (सेनापति) नियुक्त करे।

२ शांति-सेना के विचार के विकास के लिअे अतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति परिषद (पीस कौंसिल) का सगठन खडा किया जाय।

अुद्देश्य व कार्यक्रम

अुद्देश्य :—शांति-सेना का अुद्देश्य अहिंसक समाज रचना तथा अशांति के तात्कालिक कारणों का अहिंसक ढग से निराकरण है। शांति-सेना आज की पुलिस के लिअे अहिंसक विकल्प व हिंसा सेना से मुक्ति का मार्ग है।

१ कार्यक्रम :—सर्वोदय-समाज रचना के हेतु सैनिक का प्रत्यक्ष सेवा कार्य द्वारा क्षेत्रीय समाज से जीवित सपर्क होना चाहिये।

२ अशांति के तात्कालिक कारण का अध्ययन, सबधित पक्षो व व्यक्तियो से चर्चा अुनकी सामूहिक गोष्ठियो का तथा हुममे होनेवाले निर्णयो व वस्तु-स्थिति से आम जनता को परिचित रखने के लिअे प्रचार प्रकाशन।

३ आदोलनो म विरोध के दोषपूर्ण तरीको मे शोधन हेतु सुझाव प्रस्तुत करके अिसके अनुसार आचरण करने के लिअ सबधित पक्षो को प्रेरित करना तथा आचरण न करने पर सहयोग व सत्याग्रह जैसे सीधे कदम अुठाना।

४ विभिन्न नगरो व ग्रामो मे शांति-परिषद बनाना।

५ हिंसा की तैयारी के विरुद्ध प्रत्यक्ष अहिंसक कदम अुठाकर जन-साधारण के मानस को हिंसक प्रवृत्तियो के अहिंसक प्रतिरोध के लिअे तैयार करना।

६ जहा कही भी पक्षो मे मतभेद हो वहा समस्या पर शांति सैनिक को व्यक्तिश अपना निर्णय नहीं देना चाहिये। सगठन व अधिकृत व्यक्ति समस्या के गहन अध्ययन के बाद परिस्थिति के अनुसार अपनी राय प्रकट कर सकते हैं। शांति सेना का प्रथम कार्य अशांति को रोकना है, परंतु अशांति के मूल कारण

को दूर करने का भी शांत परिस्थिति में प्रयास किया जा सकता है।

प्रशिक्षण

शांति सैनिकों का प्रशिक्षण तीन दृष्टियों से आयोजित किया जाना चाहिये।

१ शांति सैनिक की आत्म-साधना, २ विधायक कार्यों व जन संपर्क के द्वारा जनता में शांति का वातावरण तैयार करना। ३ अशांति व हिंसा, फूट पड़ने पर असका शमन करने के लिअे आत्मोत्सर्ग की तैयारी के साथ प्रयत्न करना।

१ शांति सैनिकों को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि निष्ठाओं पर आचरण करने की प्रेरणा मिले, जिसके लिअे समय-समय पर विनोबा या अन्य विशिष्ट सज्जनों के संपर्क में रहने का अुसे मौका मिलना चाहिये, जिस दृष्टि से सान्निध्य शिविर आयोजित किये जा सकते हैं।

२ अिसके अलावा प्रशिक्षण की दृष्टि से आवश्यकतानुसार ७ से १० दिन तक के शिविर स्थानीय, क्षेत्रीय व प्रांतीय आधार पर भी लगाये जायें। साल भर में अेक बार प्रांतीय स्तर पर सब सैनिकों की रैली हो।

३ प्रशिक्षण शिविरों में भिन्न भिन्न विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, जन संपर्क व सेवा के जरिये प्रत्यक्ष कार्य द्वारा शिक्षा, अशांति के निराकरण के लिअे अब तक विश्व में जो अहिंसक प्रयोग किये गये हैं, अुनका अब तक जो विकास हुआ है अुसके अध्ययन, सर्वोदय साहित्य व तत्संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन, विशेष प्रयोग-क्षेत्रों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के लिअे अध्ययन मंडल भेजे जाने, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षण के लिअे व्यक्तिगत व सामूहिक साधना का शिक्षण आदि की व्यवस्था।

अर्थ व्यवस्था

१. कार्यकर्ता का आर्थिक आधार केवल सर्वोदय पात्र न हो।

२ जिला व प्रांतीय स्तर पर सर्वोदय-पात्र, सूताजलि, सूत्रदान, सम्पत्तिदान श्रमदान, साधनदान आदि का संग्रह कर अेक दूसरे की सहायता की व्यवस्था की जाय।

३. रचनात्मक व सर्वोदय कार्यकर्ताओं में पारिवारिक भावना के विकास के लिअे तथा सामूहिक अर्थव्यवस्था के लिअे जिला व प्रांतीय स्तर पर पूल (संग्रह) हो जिसमें कार्यकर्त्तागण अपनी कुल या आंशिक आय सम्मिलित करें तथा सम्पत्तिदान, सूताजलि, सर्वोदय पात्र आदि का भी हिस्सा अुसमें संग्रहित किया जाय। पूल के लिअे विशेष अनुदान प्राप्त करने का भी सुझाव आया।

४ अधिक समय देनेवाले सैनिक अधिक से अधिक प्राप्त किये जायें, ताकि वे अर्थव्यवस्था की चिंता से मुक्त हो कर काम कर सकें। सैनिकों को अर्थव्यवस्था का आश्वासन नहीं दिया जाना चाहिये। प्रांतीय समितियों व जिला संगठकों की राय से जिन सैनिकों के लिअे अर्थ व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की जाय अुनकी व्यवस्था की जानी चाहिये।

५ शांति-सेना शिविरों में भोजन व्यवस्था स्थानीय, मार्ग व्यय निजी तथा विशेष निमंत्रितों के लिअे जिला या प्रांतीय स्तर पर खर्च की व्यवस्था की जानी चाहिये।

विकास का कार्यक्रम

१ पहिले अधिक से अधिक शांति सहायक सैनिक प्राप्त किये जायें। तब अुनमें से बहुतों को आसानी से शांति सैनिक बनाया जा सकेगा। शांतिसैनिकों की प्राप्ति के लिअे जिला संगठक नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में सघन प्रयास करें।

२ शांति सैनिकों के गुण विकास के लिअे शिक्षण शिविर, तुलनात्मक अध्ययन, पुस्तकालय जिसमें अिस संबंध का अंतर्राष्ट्रीय साहित्य भी हो, की व्यवस्था की जाय। शांति सैनिक बुलेटिन भी निकाला जा सकता है।

३ शांति-सेना समितियां तुलनात्मक अध्ययन करके अशांति शमन का टेकनिक (शास्त्र) तैयार करें।

४ नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में शांति प्रिय सज्जनों की स्थानीय शांति परिषद बनें।

बुनियादी तालीम में अंग्रेजी का प्रवेश

गुजरात नअी तालीमी संघ की कार्यकारिणी की अेक बैठक ता. १०-७-५९ को सघ के सदर श्री दिलखुश दिवान की अध्यक्षता में हुअी। अुसमें बबअी सरकार के अंग्रेजी शिक्षण को पांचवे वर्ग से प्रवेश करने के बारे में निम्नलिखित ठहराव पास किया गया:–

"बंबअी सरकार के मंत्री मंडल ने अग्रेजी का शिक्षण *गुजराती पाचवें वर्ग से करने का* जो निर्णय किया है अुससे गुजरात नअी तालीम संघ की कार्यकारिणी को अत्यंत दुःख व निराशा हुअी है।

"बबअी सरकार अभी तक अिस विषय में अैसा निवेदन करती आयी है कि लोकमत को ध्यान में रखकर ही हम अिस विषय पर निर्णय लेगें, लेकिन सचमुच में अुन्होने मानों अग्रेजी की तरफदारी करनेवाली सारी कमजोरियो को अिकट्ठा करने का प्रयत्न किया है।

"मंत्री मंडल के निर्णय के संबन्ध में मुख्यतः अैसा कहा गया है कि अेकीकरण समिति की सूचना के अनुसार ही यह किया *जा रहा है। लेकिन अुस समिति ने तो अैसी* भी सूचना की है कि राज्य-कार्य व नौकरी की योग्यता में से अग्रेजी तुरत से तुरत दूर की जाय ताकि अग्रेजी भाषा की पढाअी की जरूरत ही न रहे। अिस तरफ मत्री मंडल ने ध्यान ही नहीं दिया है। अंग्रेजी को पाचवें वर्ग से दाखिल करके मानों बच्चो पर दया करनी *होगी अैसी वृत्ति से यह किया है। यह अत्यत* दुःखद घटना है। गुजरात नअी तालीमी सघ यह मानता है कि अग्रेजी को हटा देने की (योजना) सूचना का अमल पहले होना चाहिये था। नअी तालीम समिति को विश्वास है कि अगर अिसका अमल किया होता तो सब को थोडे अरसे में ही ज्ञात हो जाता कि अंग्रेजी भाषा शिक्षण को प्रवेश देने की कोअी जरूरत ही नही है।

"गुजरात नअी तालीमी संघ की कार्यकारिणी की यह राय है कि प्राथमिक आठ वर्ग तक अंग्रेजी का शिक्षण दाखिल नही होना चाहिये। अुस काल में सिर्फ बुनियादी विषयों पर ही ध्यान दिया जाय। अिस विषय में राष्ट्र व्यापी आदोलन करने का समय आ पहुंचा है। बम्बअी सरकार ने जो दुःखद निर्णय लेकर कदम पीछे हटाया है वह सारे देश की अप्रगतिशील नीति का ही परिणाम है। अतः अखिल भारत सर्व सेवा संघ जो राष्ट्र में सर्वोदय की मुख्य सस्था है, अुसे अिस प्रश्न को हाथ में लेना चाहिये और देश भर में अिसके लिअे लोकमत पैदा करने का कार्यक्रम बनाना चाहिये।

"सर्व सेवा सघ जिसने अब राष्ट्र की नअी तालीम की जवाबदारी अपने अूपर ली है वह अिस सबन्ध में सरकार का व लोगो का स्पष्ट *मार्ग दर्शन तुरत से तुरत करे अैसी विनति है।*

"गुजरात नअी तालीम सघ की यह कार्यकारिणी समिति गुजरात की सब प्राथमिक शिक्षण समितियों को आह्वान करती है कि सरकारी निवेदन में देहाती बच्चों को भी अग्रेजी शिक्षण की सुविधा कर दी जावेगी अैसा जो प्रकट किया गया है अुससे कोअी भी भ्रम *में न पडे। अुलटे अुनको खुद जो अुत्तमोत्तम* शिक्षण लगता हो वही बच्चों को प्रदान करे और विशेषतः पाचवें वर्ग से अग्रेजी का शिक्षण दाखिल करने के मोह में तो नही पडें।

(शेषांश पृष्ठ ५७ पर)

स्वर्गीय श्री आदित्य भाओी

आर्यनायकम्

श्री. आदित्य भाओी कंबोडिया के अेक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में जन्मे थे। माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद वहाँ की सरकार ने अुनको अुच्च शिक्षा के लिअे विदेश भेजा। अुन्होंने बिजली की अिंजिनियरिंग का विषय लेकर ग्लोब्लुस विश्वविद्यालय में प्रवेश पाया। वे बहुत अच्छे विद्यार्थी थे—गणित में पक्के, चार साल में अुन्होंने अपना अध्ययन पूरा किया। अपने अध्ययन काल में वे फ्रांस के कवि और लेखक लान्सा-देल-वास्तो के संपर्क में आये और अुनसे प्रभावित हुअे। देल-वास्तो महात्मा गांधी के शिष्य हैं। हम भारत में अुन्हें शांतिदास के नाम से जानते हैं। वे १९३७ में भारत आये थे। अुन्होंने तीन महीने गांधीजी के साथ बिताये। वे दक्षिणी फ्रांस में अेक आश्रम शुरु करने का सोच रहे थे। अिस अुद्देश्य से अुन्होंने भारत आकर गांधीजी के जीवन दर्शन तथा अहिंसा की व्यवहारिक पद्धतियों का अध्ययन किया। फ्रांस वापिस जाने के बाद अुन्होंने अिस दर्शन और आदर्शों के आधार पर अपना आश्रम शुरू किया। गांधीजी के साथ वे सतत सपर्क रखते थे और अपनी सब समस्यायें अुनको बताते थे।

आदित्य भाओी विश्वविद्यालय में अपना अध्ययन प्रशस्त रूप से खतम करने के बाद देल-वास्तो के आश्रम में शामिल हुअे, क्योंकि वे अहिंसा के सिद्धान्तों को मानते थे और कंबोडिया के पिछडे हुअे गांवों में गरीब किसानों की सेवा के लिअे अपने आपको तैयार करने का अुन्होंने संकल्प किया था। आश्रम जीवन की सादगी, कर्मियों में भेदभाव का अभाव, शरीरश्रम की प्रतिष्ठा, खेती व अन्य कामों में अुद्योगशीलता आदि बातों से वे बहुत आकृष्ट हुअे। देल-वास्ता के आश्रम में कुछ साल काम करने के बाद वे अुनके साथ भारत आये और १९५४ में सेवाग्राम पहुँचे। यहाँ रहते समय अुन्होंने नअी तालीम के काम में बहुत अभिरुचि ली और अिस शिक्षा पद्धति का गहरा अध्ययन किया। अपने देश के गांवों की अुन्नति और विकास के लिअे अुन्होंने अिस प्रणाली को अत्यंत अुपयुक्त माना। अुसी समय विनोबाजी के भूदान आन्दोलन से भी वे आकृष्ट हुअे। अुनके गुरु देल-वास्तो विनोबा के साथ तीन माह बिताने, अुनकी पदयात्रा में शामिल होने, और अिस "आरोहण" का प्रत्यक्ष अनुभव लेने के अुद्देश्य से ही भारत आये थे। अिन अनुभवों के आधार पर वे "गांधीजी से विनोबा" नाम की पुस्तक लिखना चाहते थे। अंग्रेजी व फ्रेंच भाषाओं में अब वह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

आदित्य भाओी अत्यंत श्रद्धालु और निष्ठावान बौद्धधर्मी थे। भारत आने में अुनका अेक अुद्देश्य बोधगया और अन्य बौद्धतीर्थ स्थानों का दर्शन करना था। आदित्य भाओी का जिक्र करते हुअे शान्तिदास अपनी किताब "गांधी से विनोबा" में लिखते हैं—

"मेरे मित्र आदित्य के लिअे तीर्थस्थानों का आकर्षण रोका नहीं जा सकता था। अिसलिअे हम लोगोंने दूसरे पदयात्रियों से अलग होकर अिस बडे मन्दिर का दर्शन करने का निश्चय किया।

"हम लोगों ने अपने झोले नीचे रखे ही थे कि अितने में आदित्य के कंठ से विस्मय का

अेक अुद्‌गार निकला। पेडो की जडें जो अेक दूसरी से अुलझी हुअी पडी थी अुनके बीच में अुन्हे अेक काले पत्थर की मूर्ति दिखायी दी। वह बैठे हुअे बुद्ध भगवान् की अेक सुन्दर मूर्ति थी और काफी पुरानी मालूम पडती थी। आदित्य ने अुसको तुरत पहचान लिया।

"आदित्य ने अेक पुराने मिट्टी के घडे में, जो किसी जमाने में मन्दिर में जल चढाने के लिअे बनाया गया होगा, कुछ जगली-फूल सजा दिये"

वे तीन माह देल-वास्तो के साथ रहे। विनोबाजी का और अुनके काम का आदित्य भाअी के अूपर गहरा असर पडा। तीन माह भारत में बिताने के बाद देल-वास्तो फ्रान्स लौट गये। आदित्य भाअी ने हिन्दुस्तानी तालीमी सघ में रहकर नअी तालीम के सिद्धान्तो व पद्धति का अध्ययन करने का निश्चय किया। अिसलिअे कि वे कबोडिया की ग्रामीण जनता की सेवा के लिअे अपने आपको अधिक तैयार करे। वे अिस बात का दुख करते थे कि अुन्होने अितना समय अिलेक्ट्रिकल अिजिनियरिंग के अध्ययन में बिताया जिसकी जानकारी अुनके किसी काम की नही थी। हम लोगो में से कअी अुनके अिस विचार से सहमत नही थ और अुन्हे समझाने का प्रयत्न करते थे। अुन्होने जल्दी ही गाधीजी के ग्राम पुनर्रचना के विचारो को पूरी तरह से अपनाया और अुसमें मग्न हो गये। नअी तालीम परिवार की सब सामाजिक प्रवृत्तियो में वे पूरा-पूरा भाग लेते थे। खास तौरपर अुन्होने वैज्ञानिक तरीके से कम्पोस्ट बनाने का काम अपने अूपर ले लिया। क्योकि वे मानते थे कि खेती का अुत्पादन बढाने के लिअे कपोस्ट खाद ही अुत्तम साधन है। वह अपने काम के हर अेक छोटे-मोटे पहलू को व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप से करते थे। अिसलिअे अुनके साथ काम करना हमारे विद्यार्थियो के लिअे मूल्यवान प्रशिक्षण सिद्ध हुआ।

अिसके बाद अुन्होने चप्पल बनाने का काम शुरू किया। अुन्होने अेक छोटी-सी झोंपडी में आवश्यक पर अत्यत सरल औजार सजा दिये, जो किसी भी गाव में आसानी से मिल सकते है। अुन्होने अैसे चप्पल के नमूने बनाये जो पहननेवालो के लिअे आरामदेह हो और टिकाअू भी हो। अेक दफे जब वह चप्पल बना रहे थे और साथ साथ विद्यार्थियो को सिखा भी रहे थे स्वर्गीय श्री. बी. जी खेर, बबअी के भूतपूर्व मुख्य मत्री, अुनकी कर्मशाला देखने के लिअे गये। आदित्य भाअी की नम्रता, गाभीर्य, कर्म-कुशलता और सिखाने का प्रावीण्य देखकर अुन्होने कहा कि नअी तालीम के अेक आदर्श शिक्षक को अुन्होने कही देखा हो तो वह आदित्यभाअी है। सचमुच आदित्य भाअी को काम करते हुअे देखना अेक प्रेरणादायी अनुभव था। हम लोगो में कअियो को आदित्य भाअी के बनाये हुअ चप्पल पहनने का सौभाग्य मिला है। अुन्हे ज्यादा-से-ज्यादा आराम देह बनाने के लिअे जो परिश्रम अुन्होने किया था हम कृतज्ञतापूर्वक अुसका स्मरण करते है।

कुमारी मेहर फर्डुन्जी-जो लदन अर्थ शास्त्र विद्यालय की स्नातिका है—आशादेवी से लदन में मिली थी। अुनके सामने ग्रामसेवा का आदर्श था। अिसके प्रशिक्षण के लिअे वह तालीमी सघ आयी। अुनको आदित्यभाअी में अेक आदर्श शिक्षक मिल गया और अुनके

मार्गदर्शन में वह चप्पल बनाने का काम सीखने लगी। कुछ समय के बाद वह भूदान में मिली जमीन पर लोगों को बसाने के काम में लग गयी और अुत्तर प्रदेश में अेक बस्ती बसाकर वहाँ कअी परिवारों को बसाने का काम करने लगी। अुनके लिअे नये घर बनाने की जरूरत थी। मेहर ने आदित्य भाओी से प्रार्थना की कि वे वहा आकर कुछ नमूने के घर बनाने में सहायता करे। आदित्य भाओी ने खुशी के साथ यह आमत्रण स्वीकार किया। अपने काम के आनद में वह अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हो गये। वहा की जलवायु और कठिन परिश्रम के बीच कोअी अवकाश नही लेने के कारण वे बीमार पड गये और क्षयरोग से बाधित हुअे। प्राकृतिक चिकित्सा में अुनका अविचल विश्वास था। मित्रो के आग्रह और अनुरोध के बावजूद वे आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार अिलाज कराने से अिनकार करते रहे। भीमावरम के प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में वे अपने रोग का अुपचार करवाने लगे। रोग का आक्रमण बढता गया तो भी वे अपने विश्वास में अटल रहे और अपनी निष्ठा के लिअे आखिर अुन्होंने वीरता के साथ अपने प्राणो की भी बलि दी।

अुनके जीवन से अितनी आशायें थी, वह गरीबो की सेवा में समर्पित था, लेकिन नवयुवावस्था में ही हमसे वह छीन लिया गया। नअी तालीम परिवार में हम लोगो के लिअे जिनको अुनके घनिष्ठ सपर्क का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, यह अेक अत्यत प्रियमित्र और साथी का वियोग है, जिसका दुःख कभी भूला नही जा सकता।

अपने देश लौटकर अपने लोगो की सेवा करने की जो तीव्र अभिलाषा अुनमें थी वह अतृप्त ही रह गयी। अुन्होंने भारत को अपनाया और यहा की जनता की सेवा में अपना जीवन दिया। हम अुनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं और अुनकी आत्मा की शाति के लिअे प्रार्थना करते हैं।

(पृष्ठ ६४ का शेषाश)

फिर सबको विचार स्वतत्रता है। अिसके नाम पर भी सब अपना लाभ अुठाते हैं। अिस कारण से आज हम सफलता प्राप्त करने में समर्थ नही होते है।

मेरे मन में जो विचार आया अुसे प्रश्न के रूप में ही समझिये। आप से अिस पर प्रकाश मिलेगा अैसी आशा है। सबको प्रणाम।

जापान ६-७-५९

सेवा में
मुक्तेश्वर

जापान यात्री का अेक पत्र

आदरणीय बाबाजी और माताजी,

प्रणाम;

आशा है औश्वर की कृपा से आप सब आनद पूर्वक होंगे। अिस बार मुझे चिट्ठी लिखने में बहुत देरी हो गयी है, कृपया क्षमा करेंगे।

मअी और जून महीना खेती का सबसे महत्वपूर्ण महीना है। यहा अनेक नये-नये प्रत्यक्ष ज्ञान मिले। करीब १।। महीने सुबह ७ बजे से लेकर शाम ७ बजे तक किसानो के साथ सपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। सुबह से शाम तक खेती में काम करना, भोजन करना और किसानो के साथ अपनी टूटी-फूटी जापानी भाषा में बात करना होता रहता था। अुसमें से मुझे अनुभव हुआ कि हर देश में किसानो की आर्थिक स्थिति दूसरों की अपेक्षा अुतनी अच्छी नही, और अुन लोगों के अधिक मेहनत करने पर भी। अिस कारण से आज जापान में किसानो का जीवन नये युवक और युवतिया अपनाना पसद नही करते। हमारे देश में भी वही समस्या अुद्योग के विकसित होने पर आनेवाली है। आज भी वही स्थिति है—शिक्षित युवक और युवतिया ग्राम छोडकर शहर की ओर आते हैं। अिसका कारण क्या है? यह चीज केवल सोचने से नही होगा, वरन् अुस वास्ते कोअी अुपयुक्त अुपाय भी ढूढना होगा।

दूसरी चीज है जो भूदान यज्ञ मे पढी कि राजपुरा में जो नअी तालीम सम्मेलन हुआ, अुसके वाद नअी तालीम, नया कदम ले रही है। साथ ही पू० बाबाजी का भाषण भी ध्यानपूर्वक पढा कि आज नअी तालीम में शिक्षण लेने के लिअे किस प्रकार के लोगो के बच्चे आते है तथा लोग अिसे अेक निकम्मी शिक्षा मानते हैं। अेक प्रकार से यह चीज सही मालूम होती है। पू० बाबाजी ने यह भी बताया कि नअी तालीम के शिक्षक भी अपने बच्चो को नअी तालीम में पढाते नही। अिसका अर्थ यह है कि हमारी तालीम में कोअी जरूर कमी है, हमें अिसकी खोज करनी होगी। हम सदा कहते आये हैं कि हाथ-दिमाग, ज्ञान-कर्म, अहिंसा शक्ति और विज्ञान शक्ति आत्म शक्ति और भौतिक शक्ति का समन्वय शिक्षा के जरियें करेंगे। परन्तु यह अभी तक हो नही पाया। मैं तो यह अनुभव कर रहा हू कि हृदय हमारा शुद्ध और साफ न होने के कारण ही हम सदा द्वन्द्व में है। शुद्ध ज्ञान के सिवा शुद्ध सेवा हो नहीं सकती। ठीक अुसी प्रकार शुद्ध हृदय के बिना शुद्ध कार्य भी होना असम्भव-सा प्रतीत होता है। विनोबाजी ने कहा है कि सब सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं को मिलकर नअी तालीम को भी अपने कधो पर अुठाना चाहिये और काम में लग जाना चाहिये। यह बात सही और साफ है। परन्तु हम जो सदा सह-अस्तित्व, सहभोजन, आदि की बात करते आय हैं, वास्तव में हमारे में अिसकी निष्ठा की बहुत कमी दिखायी देती है। हमारे देश में और अेक कमी है। वह यह है कि हम अेक दूसरे की गलती देखते हैं, परन्तु दूसरो में क्या भलाअी है यह देखना हमने सीखा नहीं। साम्यवादियों से हमें यह सीखना है कि जिसको वह आदर्श मानेंगे अवश्य जीवन में अुसका अमल करते हैं और स्वभाव में अुतारने की भी आखिर दम तक कोशिश करते हैं। हमारे सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं में अिस निष्ठा की कमी है।

(शेषाश पृष्ठ ६३ पर)

खादी का नया कार्यक्रम

[पूसा रोड में आयोजित खादी ग्रामोद्योग समिति, खादी कमीशन, स्टेट खादी बोर्ड, तथा खादी ग्रामोद्योग का काम करनेवाली विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की जो संयुक्त सभा हुओ थी अुसमें खादी ग्रामोद्योग के काम को नअी दिशा में ले जाने के लिअे निम्नलिखित निवेदन तैयार किया गया था।]

चरखा संघ के नव संस्करण के रूप में गांधीजी ने देश को समाज व अर्थ-व्यवस्था की जो कल्पना दी थी, अुसको साकार करने के लिअे चालीसगांव में कुछ निर्णय लिये गये थे। अुन निर्णयों को कार्यान्वित करने का व्यावहारिक कार्यक्रम भी बनाया गया और अुसका अेक स्वरूप खादी-ग्रामोद्योग समिति की सेवाग्राम बैठक में निश्चित हुआ, जो प्रतिवेदन के तौर पर जाहिर भी किया जा चुका है। आज देश मे विभिन्न खादी-संस्थायें अुसके अनुसार ग्राम अिकाअी के संदर्भ में अपने कार्य को मोड़ देने की कोशिश कर रही है। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ की ओर से पूसा क्षेत्र मे जो सघन कार्यक्रम शुरू किया गया है, वह अिस दिशा में अेक अभिनव अनुकरणीय प्रयास है। अिस प्रकार के प्रयास कुछ और जगहों पर भी चल रहे हैं।

चरखा संघ के नव-संस्करण के समय ही खादी का काम करनेवालों के सामने गांधीजी ने ग्राम-रचना का अेक समग्र चित्र रखा था। अुससे स्पष्ट था और आज जो प्रयोग किया जा रहा है, अुस पर से भी यह सिद्ध हो रहा है कि नव-समाज-रचना के लिअे रचनात्मक कार्यक्रम की संयोजना गांव के सारे जीवन को सामने रख कर ही होनी चाहिये। केवल बेकारी-निवारण की दृष्टि से रचनात्मक कार्यक्रम चलाया जायगा, तो अेक सीमा से आगे नहीं बढ़ा जा सकेगा और आधारभूत समस्याओं का कुछ स्थायी हल भी नहीं होगा। अिसलिअे वैचारिक और व्यावहारिक, दोनों दृष्टियों से खादी आदि रचनात्मक कार्यक्रम का चित्र गांवों के व्यापक स्वरूप को लेकर ही खड़ा किया जाना नितान्त आवश्यक है।

गांवों की मूलभूत समस्या अन्न की है। अिसलिअे विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था की संयोजना में खादी और ग्रामोद्योग के साथ खेती तथा गोपालन का कार्यक्रम भी जोड़ना चाहिये, बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि कृषि-गोपालन को आधारभूत मान कर ही खादी और दूसरे अुद्योगों का समग्र ग्राम-जीवन की दृष्टि से आयोजन होना चाहिये।

भूखों और नंगों की समस्या समाज की समस्या है और वह सामाजिक न्याय से गहरी संबंधित है। सामाजिक न्याय में हर व्यक्ति को संतुलित भोजन, आवास, शिक्षा, चिकित्सा और विश्राम का अवसर सुलभ होना शामिल है। हर गांव में खादी-अुद्योग व विचार के प्रवेश के साथ गांववालों का सामूहिक अभिक्रम जागृत होकर यह स्थिति बननी चाहिये कि सबको रोजगार मिले, अुपर्युक्त प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी हों और सामाजिक न्याय की स्थापना हो। भूदान-ग्रामदान आन्दोलन से अहिंसक समाज-रचना का लक्ष्य अधिक स्पष्ट हुआ है और अतः अुससे कार्य का मार्ग भी अधिक साफ हो गया है। अिस प्रकार भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति के लक्ष्य की ओर बढ़ना अिस समग्र कार्यक्रम की निश्चित दिशा हो जाती है। कार्यकर्त्ता, गांव के निवासों तथा चारों ओर के समाज को अिसी आधार पर तैयार करना होगा।

सघन क्षेत्र का अभिनव प्रयास

आज का युग योजना का है। सर्वोदय की दृष्टि से हमारा संयोजन-कार्य हो, अिसकी अेक रूपरेखा हमने खड़ी की है। अूपर के मूलभूत विचार को सामने रखते हुअे "सर्वोदय-संयोजन" में समाज-रचना के जिस व्यावहारिक चित्र की कल्पना की गयी है, अुसको कार्यान्वित करने के लिअे सघन क्षेत्र चुन कर हमारा प्रयास होना चाहिये। यह अपेक्षा है कि सारे देश में रचनात्मक संस्थायें अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार सघन क्षेत्र ले और अुसमें अिस कार्यक्रम को आगे बढ़ायें।

(शेषांश कवर पृष्ठ ४ पर)

सर्व सेवा संघ का नया विधान

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र वाराणसी से प्राप्त सूचना के अनुसार ज्ञात हुआ है कि संघ के पुराने विधान में काफी संशोधन परिवर्द्धन के बाद वह नये रूप में ता० २८ जून, ५९ को संघ की पूनारोड बैठक में स्वीकृत हो गया है।

अिस नये विधान की विशेषता यह है कि यह गांधीजी की कल्पना के लोकसेवक संघ की ओर बढ़नेवाला है। आज की संस्थाओं की दोषपूर्ण चुनाव प्रणाली निर्णय के तरीके जड़ बनानेवाली सत्ताबद्धता की गलत परंपराओं से अिसे बचाने का प्रयत्न किया गया है। लोकसेवकों के जिला प्रतिनिधि संघ के सदस्य होंगे। लोकसेवक दलीय राजनीति या सत्ता की राजनीति से पृथक रहेंगे। संघ के सदस्य लोक सभा, धारा सभा, नगरपालिका आदि के चुनावों में नहीं खड़े होंगे। अैसे संगठनों में किसी चुनावपात्र पद भी नहीं स्वीकार करेंगे।

भूदान-ग्रामदान आंदोलन में लगे कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त खादी ग्रामोद्योग, कृषि, गोपालन, नअी तालीम, हरिजन सेवा आदि रचनात्मक कार्यों में लगे कार्यकर्ताओं को भी विधान की व्यापक जानकारी हो अिस दृष्टि से तहसील अथवा सब डिवीजन आदि छोटे से छोटे स्तर तक के क्षेत्र व शहर में सर्वोदय विचारकों के दौरे का आयोजन हो रहा है ताकि लोकसेवक निष्ठापत्र के अनुसार मर्यादा व जिम्मेदारी मंजूर करनेवाले व्यक्ति लोकसेवक बनने से वंचित न रह जाय।

नवगठित संघ की पहली बैठक २४,२५ सितम्बर ५९ को गांधीजी के आश्रम सेवाग्राम में होगी।

सर्वोदय प्रचार समिति
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी।

कवर पृष्ठ ३ का शेषांश

अिस प्रकार सघन क्षेत्रों में काम शुरू करने पर कुछ समस्यायें सामने आ सकती हैं जिनको हल करना होगा।

अुदाहरणत देखना होगा कि गांव में जितनी मनुष्य शक्ति है, अुस मनुष्य शक्ति का पूरा पूरा अुपयोग किस प्रकार किया जाय और अुसमें भी ज्यादा अुत्पादन की मात्रा बढ़ानी हो तो अन्य शक्तियों का अुपयोग करना किस परिमाण में आवश्यक होगा। अिन सबका अध्ययन विचारपूर्वक होना चाहिये।

अिसी प्रकार आज कृषि, खादी ग्रामोद्योगों में जो औजार या साधन इस्तेमाल किये जाते हैं अुनमें काफी सुधार करने की संभावना है। आज की अपेक्षा कम श्रम शक्ति से भी ज्यादा अुत्पादन हो, अुत्पादन क्षमता पूरी पूरी बढ़े काम के साथ-साथ आनन्द और ज्ञान का समावेश हो अिस संबंधी काफी प्रयोग की गुंजाअिश है। अिन कुछ सघन क्षेत्र में नयी दृष्टि से कार्य आरंभ हो अुनमें से चुनकर कुछ में अिस प्रकार के प्रयोग पांच-दस साल की योजना के आधार पर चलाये जाने चाहिये।

अुपरोक्त सारे काम योग्य कार्यकर्ताओं की शक्ति पर ही निर्भर करते हैं। अिसलिअे कार्यकर्ता प्रशिक्षण का काम खादी ग्रामोद्योग समिति को अुठाना चाहिये। अभी जितने हमारे शिक्षण विद्यालय चल रहे हैं अुनमें कृषि गोपालन के शिक्षण का भी समावेश होना चाहिये। स्पष्ट है कि अिन सघन क्षेत्रों का सारा काम नअी तालीम के आधार पर चलाने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिये।

प्रकाशक – श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम।
मुद्रक – श्री द्वारका प्रसाद परसाओ, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

नई तालीम

संपादक-मंडल
आशादेवी : मार्जरी साईक्स
देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ८] सितम्बर १९५९ [अंक : ३

नयी तालीम

"नयी तालीम" सितम्बर १९५९ : अनुक्रमणिका

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ८] सितम्बर १९५९ [अंक ३

आश्रम शिक्षा

मैं कहता हूँ कि शिक्षा के लिअे अभी भी हमें वनों की आवश्यकता है, और साथ साथ गुरुगृह भी चाहिये। वन हमारा सजीव वास स्थान है और गुरु हमारा सहृदय शिक्षक। अिसी वन में, अिसी गुरुगृह में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुअे शिक्षा पूरी करनी होगी। समय के कारण हमारी परिस्थिति कितनी भी बदली हो, अिस शिक्षा नियम की अुपयोगिता किंचित् मात्र भी कम नहीं हुअी, क्योंकि यह नियम मानव चरित्र के नित्य-सत्य के अूपर प्रतिष्ठित है।

अिसलिअे अगर आदर्श विद्यालय की स्थापना करनी हो तो, बस्ती से दूर, निर्जन, मुक्त आकाश और अुदार प्रान्त के पेड पत्तो के बीच में ही अुसकी व्यवस्था करनी होगी। वहाँ अध्यापक गण अध्यापन और अध्ययन में लगे रहेंगे और छात्र अुस ज्ञान चर्चा के यज्ञ क्षेत्र में ही बढते रहेंगे।

अगर सभव हो तो अिस विद्यालय के पास कुछ खेती की जमीन रहना भी आवश्यक है। अिस जमीन से विद्यालय को आवश्यक आहार मिलेगा और विद्यार्थी खेती के काम में मदद करेंगे। दूध के लिअे गायें रहेंगी और छात्र गोपालन के काम में योग देंगे। पाठ आदि के अलावा फुरसत के समय में वे बागवानी का काम करेंगे। बगीचे में गोडाअी, सिंचाअी करेंगे और बँडा आदि बनायेंगे। अिस तरह छात्र प्रकृति के साथ केवल भाव का नहीं, कर्म का सबध भी स्थापित करेंगे।

अनुकूल मौसम में पेड़ो की छाया के तले छात्रो के वर्ग होगें। अुनकी शिक्षा का काफी भाग तो अिन तरुश्रेणियो में शिक्षको के साथ टहलते टहलते ही पूरा हो जायगा। सध्या का अवकाश वे नक्षत्रपरिचय में, सगीत अभ्यास में, पुराणकथा, अितिहास की कहानिया सुनने में लगायेंगे।

अपराध करने से छात्र हमारी प्राचीन प्रथा के अनुसार प्रायश्चित्त पालन करेंगे। दड स्वीकार करना ही अपना कर्तव्य है और स्वीकार न करने से ग्लानि जाती नहीं, यह शिक्षा बाल्यकाल से ही होनी चाहिये। दूसरे के सामने अपने आप को दयनीय कर लेन की हीनता मनुष्य के लिअे अुचित नहीं है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अिस दुनिया में मानव समाज अनेक विभागों में रहता है। अिस देश में भी प्राचीन काल से रहता है। जीवन के कुछ विचारों का विकास हमारे यहां हुआ है तो कुछ विचारों का विकास दुनिया के दूसरे देशों में हुआ है। अिस तरह हर स्थान के अपने-अपने कुछ खास विचार हैं, और मानव समाज में अेक-अेक समाज से विचारदान हुआ है। अिन दिनों पश्चिम में आधुनिक विज्ञान का विस्तार हुआ। हमारे यहा पहले विज्ञान था। लेकिन बीच के जमाने में हम कुछ ढीले पड गये और यहां विज्ञान का विकास नही हुआ। यह हमारी बडी भारी कमी थी जिसके कारण हमें बहुत सहन करना पडा। हिन्दुस्तान पर बाहर से हमले हुअे और हम हारे, अुसका अेक कारण यह है कि हम विज्ञान में पिछडे हुअे थे। आज हिन्दुस्तान में जो गरीबी है, अुसके भी कअी कारण है, लेकिन अेक कारण यह भी है कि हम विज्ञान में पिछडे हुअे है। अब हमें पश्चिम से विज्ञान लेना है। लेकिन कुछ बातें अैसी है जो यहा काफी विकसित हुअी हैं। तालीम का विचार भारत के लिअे किसी प्रकार से नया विचार नही है, बल्कि अितिहास सशोधक खोज करके यही फैसला देंगे कि जिन देशों में तालीम के बारे में बहुत विचार हुआ है, अुनमें हिन्दुस्तान है। तालीम का विचार हिन्दुस्तान का अपना विचार है; अुसमें भी हमें पश्चिम से कुछ तो सीखना ही है। अुन्होने मानस शास्त्र में कुछ खोज की है जो हमें लेनी है।

जो चीजें भारत की अपनी हैं, अुनमें अेक चीज यह है कि हमने अपने सारे जीवन में तालीम ओतप्रोत कर दी है। तालीम की अेक सर्वश्रेष्ठ योजना हमारे पास है जिसकी बराबरी की कोअी योजना हम दुनिया में नही पाते हैं। वर्णाश्रम व्यवस्था की बात अक्सर की जाती है। लेकिन लोग समझते नहीं कि वर्ण अलग चीज है और आश्रम अलग। जहां वर्ण व्यवस्था हो वहा आश्रम व्यवस्था भी हो वह लाजिमी नही है। वर्ण व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था है; और आश्रम व्यवस्था तालीम की व्यवस्था है। व्यक्ति और समाज के लिअे अिस प्रकार की तालीम की व्यवस्था भारत की अपनी योजना है जो दूसरी तालीम करनेवालों में नही पायी जाती है। लेकिन हम अपनी बहुत मूल्यवान चीजें खो बैठे हैं जिनमें वह भी अेक है। संस्कृत भाषा हमारी बहुत बडी भारी कमायी थी, जिसे हम खो बैठे हैं, लेकिन अुसका फिर से पुनरुज्जीवन होगा अिसमें मुझे शक नही है। अुसके लिअे यह जरूरी नही कि स्कूलों में संस्कृत भाषा लाजिमी की जाय। संस्कृत लाजिमी न हो लेकिन लोग लाजिमी तौर पर संस्कृत सीखें। याने लोगों को संस्कृत सीखने की अिच्छा ही हो। भारत की भिन्न-भिन्न प्रान्तीय भाषाओं का विकास होगा और अुन्हें अेकत्र आने की, आपस में विचार विमर्श करने की जरूरत महसूस होगी। तब संस्कृत के बिना नही चलेगा। अिसके अलावा भारत के आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन के लिअे संस्कृत ही सीखनी होगी। आज विदेशों में संस्कृत का जितना अध्ययन चलता है, अुतना दूसरे किसी भारतीय भाषा का नही चलता। हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के नाते अुसका भी कुछ अध्ययन चलता है। लेकिन संस्कृत

का अैच्छिक तौर पर परन्तु बहुत गहराअी से, साथ-साथ प्रेम पूर्वक अध्ययन चलता है और वह अैसा चलता है कि अुस अध्ययन से भी हमें प्रकाश मिलता है। हमने अपनी मूर्खता के कारण संस्कृत खो डाली। लेकिन संस्कृत हमारे अन्तर में पड़ी है अिसलिअे वह फिरसे आयेगी। अिसलिअे मुझे अुसकी चिन्ता नहीं है। संस्कृत आयेगी तो क्या संस्कृति को लाये बिना आयेगी? संस्कृत के साथ-साथ हमारी संस्कृति के मुख्य-मुख्य विचार आयेंगे। अुसमें आश्रम व्यवस्था की हिन्दुस्तान को मुख्य जरूरत है, अैसा मेरा मानना है। अिसकी दुनिया को भी सख्त जरूरत है।

अिन दिनों प्रश्नों के निर्णय जल्दी करने पड़ते हैं। पहले जैसा धीरज से सोचना आज सम्भव नहीं है। विज्ञान के कारण रफ्तार बढ गयी है। आज के अेक दिन का मूल्य पुराने अेक महीने के बराबर है। अिस हालत में फैसले जल्दी करने पड़ते हैं और सवाल भी व्यापक पेश आते हैं। गोवा के जैसा छोटा सा प्रश्न पुराने जमाने में अैसे ही हल हो जाता था। लेकिन आज वह अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है। पुराने जमाने में अेक देश में बड़ी-बड़ी लड़ाअियां होती थीं, तो दूसरे देशों को अुनका पता भी नहीं रहता था। लेकिन आज हालत बदली है। दुनिया चेतनाशील बनी है। अेक कोने से भी सारी दुनिया में विचार जल्दी पहुंच जाते हैं, जागतिक चेतना बनी है, अिसलिअे छोटा सवाल भी व्यापक रूप लेता है। व्यापक प्रश्न और अुनका जल्दी अुत्तर देने की जिम्मेवारी के कारण अब स्थितप्रज्ञ की जरूरत है। दूसरे किसी जमाने में जितनी थी, अुससे अधिक जरूरत आज है। आध्यात्मिक विकास के लिअे तो अुसकी जरूरत थी ही, लेकिन आज की अिहलोक की यात्रा अच्छी चलाने के लिअे ग्राम से लेकर दुनिया तक अच्छा नेतृत्व चाहिये। अुसके मानी यह नहीं कि लोग सोचनेवाले न हों, चन्द लोग ही सोचनेवाले हों। बल्कि लोगों का चिन्तन का स्तर अूंचा हो और नेताओं का और अूंचा हो। अिसीलिअे यह जरूरी है कि देश को और दुनिया को स्थितप्रज्ञ नेता हासिल हों। स्थितप्रज्ञ का नेतृत्व नहीं रहा, अस्थिर बुद्धि का नेतृत्व रहा तो दुनिया के लिअे खतरा है। आज विज्ञान बल मनुष्य के हाथ में है, समर्थ औजार आये हैं। अिसलिअे अुन्हें अिस्तेमाल करनेवाला सावधान पुरुष चाहिये। अिसलिअे प्रज्ञा स्थिर करने की आज बहुत जरूरत है। *मैं मानता हूं कि प्रज्ञा स्थिर करने की सुन्दर* योजना आश्रम-व्यवस्था है। मन, बुद्धि के दोष अस्थिरता अेकागीपन आदि को मिटाने के लिअे आश्रम योजना बड़ी कारगर साबित हुअी थी, अुसे फिर से लाना होगा।

आज हमने अेक बड़ी चीज खो दी है। मनुष्य के खानगी जीवन में कभी आपत्ति आती है, किसी की सलाह लेने का मौका आता है, तो अुसे माता पिता की, भाअियों की, मित्रों की सलाह तो मिलती है, लेकिन गुरु की सलाह नहीं मिलती है। अेक शिक्षक से अुसकी जिन्दगी भर में हजार विद्यार्थी तालीम पाकर जाते होंगे, लेकिन अक्सर अैसा कभी देखा नहीं गया कि अपने जीवन में कोअी मुसीबत आने पर किसी विद्यार्थी ने शिक्षक की सलाह ली हो, याने हमने अेक बहुत बड़े सलाहकार को खोया है। माता-पिता मित्र आदि की सलाह कीमती है, परन्तु वे सारे प्रेम करनेवाले हैं। परन्तु प्रेम करनेवाला भी हो, ज्ञानी भी हो, और

तटस्त भी हो, अैसा तो शिक्षक ही हो सकते है। माता-पिता, मित्र, भाअी ये सारे प्रेमी होते हैं, परन्तु अुनके और हमारे बीच अिसलिअे तटस्थता नही है, कि आसक्ति पडी हुअी होती है। अिसके अलावा अुनके ज्ञान में यह शक्ति नही है जो शिक्षक के ज्ञान में है। शिक्षक याने तीन गुणो का समुच्चय होना चाहिये–प्रेम, ज्ञान और तटस्थता। हम किसी नेता की सलाह ले तो वह तटस्थ और ज्ञानी भी हो सकता है, हम अुसके लिअे आदर की भावना रख सकते हैं, लेकिन अुसने हम पर क्या प्रेम किया है? अिसलिअे अुसकी सलाह में तटस्थता हो, ज्ञान हो, तो भी प्रेम नही होगा। कहा जाता है कि किसी अेक कठिन प्रसग में मीरा ने तुलसीदासजी की सलाह ली थी। वह तुलसीदास था या और कोअी था यह तो अितिहास सशोधक देखेंगे (बहुत करके वह रैदास होगा)। कहने का तात्पर्य यह है कि माता-पिता मित्र आदि सब की सलाह जहा काम नही देती है, वहा अेक सत की सलाह अुसके काम में आयी। अिसलिअे अैसे तटस्थ पुरुष की जिसके पास ज्ञान हो, और जिसका हम पर प्यार हो, सलाह मिले तो वह बहुत बडी बात हो जाती है। यह चीज आज है नही। आज का अच्छा शिक्षक याने अच्छा नौकर। हमने अपने बगीचे के लिअे अेक माली रखा तो अपने व्यक्तिगत जीवन में धर्म सकट अुपस्थित होने पर हम अुस माली की सलाह नही लेंगे। वह अच्छा है तो अच्छा नौकर है, खराब है तो खराब नौकर है। वैसे ही आज शिक्षक को गुरु की हैसियत नही है। विद्यार्थी व्यक्तिगत जीवन में अुनसे कोअी सलाह नही लेते हैं।

भारत की यह विशेषता है, "गुरुमुखी नादम्, गुरुमुखी वेदम्"–नाद और वेद स्वयं अपना जो भी महत्व रखते हों, परन्तु गुरुमुख से आते हैं तो अुनका बहुत महत्व होता है। ध्यान से जो तालीम मिलती है, अुसे नाद कहा जाता है और शास्त्रो के ज्ञान को वेद कहा जाता है। आज यह चीज कहा है? मेरा मानना है कि शिक्षको को आज की हालत में यह सोचना चाहिअे कि अुन्हे क्या करना है। अुन्होने हाजरी ली और फलाना विद्यार्थी नही आया तो अुसके नाम के सामने बीमार लिख दिया। क्या अिससे ज्यादा कुछ करना अपना कर्तव्य है? जो विद्यार्थी नही आया अुसके घर प्रेम से जाना चाहिये। अुसे कुछ मदद की जरूरत हो तो मदद देनी चाहिये। जरूरत न हो तो प्रेम तो देना चाहिये। क्या शिक्षक अैसी कोअी जिम्मेदारी महसूस करता है? आज तो अुस तरह सोचता ही नही। विद्यार्थी चार दिन नही आया तो बीमार लिख दिया और पाचवे दिन आया तो वर्ग में बैठेगा। माने वे विद्यार्थियो को नही पढाते हैं, अेक जमात को पुस्तक पढाते है। मुझे पजाब सरकार का अेक सर्कुलर याद आ रहा है, जिसमें कहा गया था कि विद्यार्थियो को शिक्षको के सपर्क से बचना चाहिये। शिक्षको को विद्यार्थियो से ज्यादा व्यक्तिगत सपर्क में नही आना चाहिये। अवैयक्तिक रहना चाहिअे। व्याकरण भूगोल आदि पढाना चाहिये याने जो वैयक्तिक है, अुसे वे अवैयक्तिक बनाना चाहते थे और अिधर भक्तो की तृष्णा है कि अिस अवैयक्तिक को वैयक्तिक बनाया जावे। अुन्होने जिधर देखो अुधर मूर्तिया खडी की है। अुनकी पूजा चलती है। व्यक्तित्व की अितनी भूख है और अुधर साक्षात् ब्रह्ममूर्ति हमारे सामने है, तो हम अुसके सम्पर्क से बचना चाहते है। पुराने जमाने में अिस तरह

बचना सम्भव था। क्योंकि हम जब पढते थे तो हमारी मातृभाषा मराठी थी और शिक्षक की भी मराठी थी। लेकिन क्या मजाल थी कि हम मराठी में बोले। हम अंग्रेजी में ही बोलते थे जो हमारे लिये कुछ मुश्किल ही थी। अुसी तरह शिक्षक और विद्यार्थियो का सम्पर्क टालने का अेक साधन यह था कि बातचीत अंग्रेजी में ही हो। लेकिन अब मातृभाषा में पढायी चलती है, अिसलिअे वह असम्भव है। जहा शिक्षको के सम्पर्क से विद्यार्थियो को बचाने की जरूरत पडती हो, वह कैसी शिक्षा पद्धति है? मैं मानता हू कि शिक्षको को अुसके खिलाफ बगावत करनी चाहिये। लेकिन अिन दिनो शिक्षक यही माग करते है कि हमारी तनख्वाह बढावे। याने जो माग भगी या मजदूर पेश करते हैं, वही माग ये भी पेश करते हैं। मैं तो चाहता हू कि भगी भी अैसी माग पेश न करे बल्कि यही कहे कि हमारा घन्धा ही मिट जाना चाहिये। आज शिक्षक शिकायत नही करता है कि अुसका विद्यार्थियो से ज्यादा सम्बन्ध क्या नही रखने दिया जाता? अिस तरह वे भी नौकर बने हैं।

अेक बात हमारे विचार में आनी चाहिये कि शिक्षक का आश्रम कौन-सा है। आज तो यह होता है कि बीस बाओीस साल का लडका बी० अे० पास होता है और शिक्षक बनता है। अिसमें तीन दोष हैं (१) अुसका गृहस्थाश्रम चलता है। बाल-बच्चे पैदा होते हैं अिसलिअे अुसे अुनकी चिन्ता करनी पडती है और अुसके लायक शायद अुसको तनख्वाह भी नही मिलती। अिस तरह अुसके घर की अपनी चिन्ता ही अुसका बहुत सारा समय मागती है। तो वह विद्यार्थियो की चिन्ता क्या करेगा? (२) वह बिलकुल जवान, अनुभवहीन रहता है। अुसने दुनिया में कोअी भी पराक्रम का काम-पुरुषार्थ नही किया है। वह व्यापार कुछ भी नही किया हुआ होता है, लेकिन फिर भी व्यापार-शास्त्र का प्रोफेसर बनता है। अुसे व्यापार के लिअे दो हजार रुपये दिये जायें तो वह अुसके तीन हजार नही बनायेगा बल्कि दो हजार ही को खो देगा। लेकिन फिर भी व्यापार पर व्याख्यान देता है। वह राजनीति नही जानता है, कभी कुछ राजनीति किया हुआ भी नही होता है, और बडे-बडे नेताओ की निंदा करता है। अेक दफा अेक अखबार के सपादक ने नेपोलियन की निन्दा करते हुअे लिखा कि अुसकी फलानी लडाओी में फलानी कमिया थी। दुबारा जब नेपोलियन को दूसरी लडाओी करनी थी तो अुसने अुस सपादक को बुलाकर अुसकी सलाह मागी। सपादक बेचारा घबडा गया। कुछ बाते भी नही कर सका। तो नेपोलियन ने कहा—"अगर तुम लडाओी के बारे में कुछ नही जानते हो तो अैसी टीका मत करो।" अुस तरह शिक्षक भी हमें हैदरअली और शिवाजी की तुलना पढाता है और तुलना में बच्चो को पास या फेल करता है। (३) शिक्षक जवान होता है। वह अपने विकारो पर काबू नही पाया होता है। अैसे त्रिदोषग्रस्त मनुष्य को शिक्षक बनायेंगे तो तालीम कैसे चलेगी?

अिसलिअे समझना चाहिये कि शिक्षक का आश्रम गृहस्थाश्रम नही बल्कि वानप्रस्थाश्रम है। शिक्षक-विद्यार्थी का पूरा भाव बने। विद्यार्थिया को महसूस हो कि वह शिक्षक हमारे लिअे ही जीता है, हमारे लिअे ही खाता है, पीता है और सोता है। जो कुछ करता है

हमारे लिअे ही करता है। हमारे जीवन के साथ ओतप्रोत है। अुसको कुछ अनुभव भी हासिल हुआ हो, अुसने जीवन में कुछ पराक्रम किया हो, अुसके विकारो का शमन हुआ हो तो फिर वह विद्यार्थियो को अिंद्रिय निग्रह की तालीम दे सकता है। लेकिन आजकल सरकार की तरफ से कहा जाता है कि हमने पंचवर्षीय योजना में शिक्षित-बेकारी निवारण की अेक योजना बनायी है, अितने शिक्षकों को काम दिये हैं। अिस तरह बेकारीनिवारण के लिअे स्कूल खोले जाते हैं। और बेकारीनिवारण के लिअे जवानो को शिक्षक बनाया जाता है।

आज के स्कूल याने बेकारी निर्माण के कारखाने ही हैं। अिस तरह बेकारी निर्माण के कारखाने के व्यवस्थापक को बेकारी निवारण के लिअे रखा गया।

खैर, आप सब तो शिक्षक बन चुके हैं, अिसलिअे मैं आपको क्या सलाह दूं? आप नौकरी करना चाहते हैं और शिक्षक की प्रतिष्ठा रखना चाहते हैं तो आपको अिंद्रिय निग्रह का अभ्यास करना चाहिये। जो परिपक्व हैं अुन्हे तो करना ही चाहिये लेकिन चाहे आप जवान हैं तो भी आपको त्वरित यह करना चाहिये। विषयवासनाग्रस्त मनुष्य शिक्षक की हैसियत से काम नही कर सकता। जवानी में विषयवासना के वश होने की जितनी शक्ति होती है अुतनी ही विषय वासना को वश करने की शक्ति भी होती है। आदर्शवाद के कारण विषय वासना से मुक्त हुअे जवान जितने मिलेंगे अुतने शायद वानप्रस्थ भी नही मिलेंगे। अुचित ध्येय सामने हो, ब्रह्मनिष्ठा हो तो जवान मस्ती के साथ विषय-वासना से मुक्त हो सकते हैं। जैसे परिपक्व मनुष्य विवेकयुक्त अकुश रखता है, और धीरे-धीरे वासना से मुक्त हो सकता है वैसे ही जवान मस्ती से मुक्त हो सकता है। यह मस्ती बूढो में नही आती है। आज के समाज में विषय-वासना की निवृत्ति के लिअे सामाजिक मान्यता है। अेक जमाना था जब जनसख्या कम थी और जमीन ज्यादा थी तब सतानवृद्धि के लिअे सामाजिक प्रेरणा थी। लेकिन आज जबकि जनसंख्या ज्यादा और जमीन कम है तब सतान की सामाजिक वासना कम होती है, चाहे व्यक्तिगत वासना भले ही हो। अिसलिअे आज जवानो के सामने कोओी ध्येयवाद रहा तो अुनको वासना निवृत्ति के लिअे सामाजिक अुत्तेजन है, लेकिन परिस्थिति का अुत्तेजन नही है। आजकल जो सिनेमा चलते हैं अुनके कारण वातावरण बिगड जाता है, और सरकार भी कहती है कि "हम अुसे रोक नही सकते हैं। रोकना शायद सविधान के खिलाफ होगा"। सविधान अैसी कौन-सी बला है कि अुसे हम बदल नहीं सकते? लेकिन सरकार हिम्मत नही करती है।

स्वामी विवेकानद ने कहा था कि सस्कृत भाषा पढाओ तो आध्यत्मिक प्रचार हो जायेगा। लेकिन अिन दिनो कालेज में सम्कृत भी पढायी जाती है तो अुसमें सारा श्रृगारिक साहित्य पढाया जाता है। यानी जब सस्कृत दरबारी भाषा बनी थी अुस वक्त कवियों ने जो लिखा अुसी को पढाया जाता है। अुपनिषद्, गीता, योगसूत्र, आदि कुछ भी नही पढाया जाता है। कालेज में मेरी द्वितीय भाषा फ्रेंच थी। अिसलिअे मैं तो परमेश्वर का अुपकार मानता हूँ कि वह गदा साहित्य मुझे पढना नही पडा। अिस तरह आज अिंद्रिय निग्रह के लिअे बिलकुल प्रतिकूल परिस्थिति

बनायी गयी है। लेकिन आज अुसके लिअे हिन्दुस्तान में सामाजिक अुत्तेजन है। अिसका लाभ लेकर जवानों को अुत्साह मालूम होना चाहिये कि हमें सर्वोदय का काम करना है। गाधीजी का ब्रह्मचर्य सेवाचर्य था। अुन्होंने जब 'अबुलेन्स कोअर' निकाला था तब अुसका बहुत चिंतन करते थे। अुस वक्त अुन्हें लगा कि अब मैं परिवार की चिंता में पड़ू तो यह सेवा नहीं कर सकूगा। अुस तरह का ध्येयवाद आज जवानों के सामने अुपस्थित है। अुन्हें बहुत बडा काम करना है। दो हजार साल के बाद भारत को अेक अैसा मौका मिला है कि हम दुनिया को रूप दे सकते हैं। भारत की सस्कृति अब पनपनेवाली है। आज ध्येयवाद के लिअे जितना मौका है अुतना पिछले दो हजार सालों में नहीं था। अिसलिअे जो जवान शिक्षक बने हैं वे सयम से रहेंगे तो अुनके काम की प्रतिष्ठा बढेगी। अुन्हें अदर से भी बल महसूस होगा। अगर वे विषय-वासना के ग्रस्त रहेंगे तो अुनके लिअे सामान्य काम भी असभव होगा फिर शिक्षण का काम वे कैसे कर सकेंगे?

पजाब के शिक्षक बहुत काम कर सकते हैं। पजाब को आज तक बहुत सहन करना पडा है। फिर भी यहां के लोग अुसे भूल गये और आज भी यहा भजन गाया जाता है "ना कोअी वैरी, नाही बिगाना" यहा का समाज दस हजार साल का अनुभवी है। पजाब के अतस्तल में जवानों में भी बहुत निष्ठा है। यह गुरुओं की कमायी है। अुसका अुपयोग हमारे सामाजिक कार्यकर्ता कर सके तो यहा पर बहुत बडा काम हो सकेगा। यहा के लोग मार सहने के और हिम्मत न हारने के आदी हैं। आप शिक्षक अुस शक्ति को महसूस करेंगे तो आपसे बहुत बडा काम होगा। आप गाव-गाव जाते हैं तो गाववालों से कहना कि आज के पथ, धर्म, पक्ष आदि के झगडों में मत पड़ना। आप विद्यार्थियों के सामने वेद, अुपनिषद्-गीता, गुरुवाणी आदि रखिये। तो फिर पजाब को आज के झगडों से बचाने में और पजाब को ताकत बनाने में आप समर्थ होंगे। मुझे अुम्मीद है कि भगवान आपको यह प्रेरणा देगा।

मनुष्य दूसरों के दोष को देखता है तो अुसको लगता है कि अुससे कअी गुना अधिक दोष दूसरे में हैं। अपने दोषों को वह कअी गुना कम समझता है, दूसरे के गुण देखता है तो अुसे लगता है कि अुससे कअी गुना कम गुण दूसरे में है। अपने को वह कअी गुना अधिक समझता है। यह स्वाभाविक है। अिसमें खास मनुष्य का दोष नहीं है। लेकिन, अिसके बावजूद विश्वास होना चाहिये। परस्पर विश्वास के बिना जीवन निरर्थक है।

दूसरों के दोषों को मनुष्य ज्यादा मान लेता है और अपने गुणों को अधिक, क्योंकि अुसने अपने गुणों के लिअे काफी तपस्या की है, जिसका भान अुसे होता है। दूसरों के गुणों के लिअे अितना परिचय अुसे नहीं है। अिसलिअे स्वभावत दोष ज्यादा और गुण कम देखता है। मनुष्य को अगर दूसरे का गुण थोडा ही दीखता हो, तो भी वह ज्यादा है, अैसा समझ लेना चाहिये। जैसे हम "स्केल" (पैमाने) में अेक अिंच में चार मील समझते हैं, वैसे ही दूसरे के गुण अपने से दस गुना अधिक हैं, अैसा समझ लेना चाहिये। अपने दोषों को दस गुना अधिक बढाकर देखना चाहिये। अिस तरह देखते जायें तो ठीक "स्केल" होगा और सम्यक् दर्शन होगा।

—विनोबा

धर्मशुचिता और वैज्ञानिक शुचिता

(काका कालेलकर)

शरीर की स्वच्छता, कपडो की स्वच्छता, खाने-पीने के बर्तनों की स्वच्छता, शरीर के साथ जिनका प्रत्यक्ष सपर्क आता है असे बिस्तरे, आसन आदि घर की चीजो की स्वच्छता, रास्तो की, जलाशयो की, शौचकूप (टट्टी या पाखाने) को, बाजारों की स्वच्छता, असे-असे सब स्थानो की स्वच्छता ही मानवो सस्कृति की बुनियाद है। स्वच्छता से आरोग्य सभाला जाता है, रोग टलते हैं, मन प्रसन्न होता है और सामाजिक जीवन सफल और खुश रहता है।

असी बाहरी स्वच्छता के साथ अदरूनी स्वच्छता भी अुतनी ही आवश्यक है। वाणी की, भाषा की स्वच्छता बाहरी भी है और आतरिक भी है। विचारो की स्वच्छता, सामाजिक व्यवहारो की स्वच्छता, आर्थिक लेन-देन की स्वच्छता, वचन-पालन की स्वच्छता और कौटुम्बिक तथा सामाजिक सबधो की स्वच्छता ये सब बाते सस्कृति के ही प्रधान अश हैं।

मनुष्य अपनी श्रद्धा, अपना विश्वास और अपनी निष्ठा—अिन बातो में स्वच्छ रहे अुनमें गडबडी या भ्रष्टाचार न रहे—यह भी सस्कृति का आवश्यक माग है।

प्राचीन काल से सब-के-सब समाज व्यवस्थापको ने, स्मृतिकारो ने और धर्माचार्यो ने शुचिता पर भार दिया है। अन्तर्बाह्य शुचिता को आध्यात्म का ही अेक आवश्यक अग कहा है।

मनु भगवान ने यहा तक कहा है कि गुरु के पास आते ही शिष्य को अुपनयन की दीक्षा देकर अुसे प्रथम शुचिता के पाठ पढाने चाहिअे।

अुपनीय गुरुः शिष्यान् शिक्षयेत् शौचम् आदित ।

सब से पहला पाठ स्वच्छता का ही होना चाहिये। छोटे बच्चे समझ सकें असे पाठो से प्रारभ करना चाहिअे। फिर आगे बढते-बढते सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शुचिता के पाठ दिये जा सकते हैं।

मनुष्य-मनुष्य के बीच जो व्यवहार चलता है अुसमें पैसों का सबध सब से अधिक आता है। अिसलिअे स्मृतिकार कहते हैं—पैसो के व्यवहार के बारे में जो स्वच्छ है वही स्वच्छ या शुचि गिना जाय। माटी और जल से जो स्वच्छता होती है, वह गौण स्वच्छता है।

यो अर्थशुचि स हि शुचि
न मृद्जलाभ्याम् शुचि शुचि ।

सूक्ष्म स्वच्छता के बारे में स्मृतिकार कहते हैं—जो आदमी जैसा है, अुससे भिन्न रूप से जब वह लोगो को अपना परिचय देता है वह सब से ठग है। जिसने अपनी चोरी की अुसने सब चीजो की चोरी की।

स सर्वस्तेनकृत् नर

मनुष्य की वक्रता स्मृतिकार यहा तक पहचानते थे कि अुन्होने लिख रखा है—

अगर मनुष्य के हाथो कुछ पाप हुआ और अुसके लिअे प्रायश्चित्त करना जरूरी हुआ तो मनुष्य स्त्री-पुरुषो को या नौकर-चाकरो को यह नही बताता कि मैं पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ। वह सब के मन पर असी ही छाप रहने देगा कि वह अपनी अुन्नति के लिअे तपस्या कर रहा है।

न धर्मस्यापदेशेन पापं कृत्वा व्रतं चरेत् ।
व्रतेन पापं प्रच्छाद्य कुर्वन् स्त्रीशूद्रदम्भनम् ।।

पाप करके असके प्रायश्चित्त के लिअे धर्माचरण करते हुअे मूल पाप को छिपाकर अपने व्रत के द्वारा स्वय कुछ धर्माचरण कर रहा है अैसा दिखाना और स्त्री, शूद्र आदि भोले जनो पर प्रभाव डालना यह दम्भ ही है । अैसा नही करना चाहिये ।

ये सब अस्वच्छता के ही प्रकार हैं ।

बाह्य स्वच्छता हो या आतरिक स्वच्छता हो, व्यक्तिगत स्वच्छता हो या सामाजिक स्वच्छता हो, असका अपना अेक विज्ञान होना ही चाहिये । पुराने लोगोंने अपनी जानकारी के अनुसार नियम बनाये । और अज्ञान लोग अैसे नियमो का रहस्य समझते नही अिसलिअे अुन्होने नियम-पालन के लिअे अुनके साथ-साथ पाप पुण्य की भावना जोड दी । अस्वच्छता से मनुष्य का और समाज का पतन होता है, अिसलिअे वह पातक है । यह बात तो स्पष्ट और वैज्ञानिक है । लेकिन यह कहना कि जो ब्राह्मण दिन में तीन दफा नही नहाता अुसे गोहत्या का पाप लगेगा या अैसा ही कुछ दूसरा पाप लगेगा, लोगो में भ्रम या वहम पैदा करना है ।

सब धर्मोंने स्वच्छता को धार्मिकता का रूप दिया यह तो अच्छा ही है । किन्तु केवल धार्मिक रिवाज के तौर पर अगर स्वच्छता का प्रचार हो जाय तो अुसमें लोकशिक्षण का मौका ही हम खोते हैं । विज्ञान की बुनियाद पर जब धर्म की बुनियाद खडी होती है तब वह मजबूत होती है । अज्ञान, भ्रम या वहम की बुनियाद पर धर्म को खडा किया तो वह धर्म न रहकर कभी-कभी अधर्म भी हो जाता है ।

खान-पानके, स्नान-सूतक के जो नियम हिन्दू, बौद्ध या जैन शास्त्रो में पाये जाते है, अुनका पालन अगर धर्म की आज्ञा के रूप में ही किया जाय तो कुछ हद तक लोगो में निष्ठा आ जायेगी, पालन अच्छी तरह से होगा । लेकिन विज्ञान तो बढती चीज है । स्वच्छता का अेक नियम आज जरूरी होगा, कल विज्ञान का अनुभव बढने पर पुराना नियम अधर्म होगा । और अुसकी जगह नया नियम बनाना पडेगा । स्वच्छता के नियम जितने स्मृतियो में पाये जाते हैं असेसे बढकर नियम आजकल के अच्छे-अच्छे वैज्ञानिक ढग के अस्पतालो में पाये जाते हैं ।

छुआ-छूत के नियम किसी समय की स्थूल स्वच्छता के खयाल पर ही आधारित थे । अगर स्वच्छता नही सभाली जाती तो दूर रखना या रहना यही अेक नियम व्यवहार में लाया जा सकता है । रजस्वला स्त्री को कही तीन दिन, कही दस दिन दूर रखा जाता है । आजकल के स्वच्छता के नये-नये अिलाज, अुपकरण और रिवाज के अनुसार पुराने सारे नियम हम जरूर बदल सकते हैं और रजस्वला स्त्री को जरूरी शारीरिक और मानसिक आराम भी पहुँचा सकते हैं ।

जनन अशौच और मरण अशौच दोनो के बारे में यही बात है । पुराने नियम आज अवैज्ञानिक हैं । अिस वास्ते अुन्हें छोड ही देना चाहिये और अुनकी जगह नये वैज्ञानिक नियम चालू करने चाहिये ।

यह कहना कि हमारे ऋषि-मुनि और धर्म-संस्थापक तमाम त्रिकालज्ञ थे, सर्वज्ञ थे और हम सब बुद्धू ही-बुद्धू हैं, अिसलिअे बिना सोचे समझे शास्त्र के वचन को चिपककर रहना

चाहिये, बौद्धिक आलस्य है, जडता है और धर्म के बारे में अजागृति है। अबुद्धि और अजागृति, प्रमाणबद्ध शिथिलता अधार्मिक चीजें हैं, अितना तो लोगो को समझना और समझाना ही चाहिये। हरेक वस्तु को गूढ बना देना अबुद्धि का ही लक्षण है। हम सुनते हैं कि ब्राह्मण, पुरोहित, जैन साधु और शास्त्री लोग शास्त्र के पुराने वचनों का सकुचित अर्थ करके विज्ञान का द्रोह करते हैं स्वच्छता के वैज्ञानिक आदर्श को ठुकराते हैं और धर्म के नाम अधर्म का ही प्रचार करते हैं।

शहद का सेवन हिंसामूलक होने से पुराने शास्त्रों ने अुसे निषिद्ध बनाया। आज पश्चिम के विज्ञान ने, शहद की मक्खी का पालन गोपालन के जितना ही अहिंसक, आरोग्यवर्धक और निष्पाप बनाया है। अैसी हालत में अहिंसक मधु के सेवन के लिअे शास्त्रों की सम्मति होनी चाहिये। हिंसा-अहिंसा के बारे में पुराने नियमों का पालन करने के लिअे अेक काल्पनिक विज्ञान तैयार करना और अुसके सहारे पुरानी रूढि का समर्थन करना धर्माचार्यों का काम नहीं है। वह तो अधरूढि के आचार्यों का ही काम है। अिनके लिअे समाज में रूढ्याचार्य जैसे शब्द प्रचलित करने चाहिये। अबुद्धि और जडता कभी धर्म हो नहीं सकती।

विज्ञान और अध्यात्म-ज्ञान दोनों प्रयोगमूलक, अनुभवमूलक हैं। यही अुनकी प्रतिष्ठा है। अुन्हें छोडकर शास्त्रवचन या रूढि का समर्थन करते रहना अध समाज का अनुयायित्व करना है। अिससे किसी को धर्मलाभ हो नहीं सकता।

ब्रह्मचर्य व्रत के पालन के लिअे छात्रों को जीवन की कठिनाअियों का अभ्यास करना होगा, विलास और धन के अभिमान का त्याग करना होगा।

दूसरी बात है निष्ठा के सबध मे। अुनके हर काम मे, अुठने बैठने, लिखने पढने, स्नान तथा आहारादि मे, सब प्रकार की सफाअी तथा शुचिता के जितने नियम हैं, सबका अेकान्त दृढता के साथ पालन करना चाहिये। घर मे या बाहर कहीं भी अपने बिस्तर, कपडे या शरीर मे किसी प्रकार की मलिनता को आश्रय नहीं देना चाहिये।

तीसरी बात है भक्ति। शिक्षकों के प्रति छात्रों की निर्विकार भक्ति होनी चाहिये। अगर वे अन्याय भी करें तो भी अुन्हें नम्रतापूर्वक विद्रोह के बिना सहन करना चाहिये। किसी हालत में अुनकी निंदा या टीका मे कोअी भी विद्यार्थी हिस्सा न ले।

विलासिता का त्याग, आत्म-सयम नियम निष्ठा, गुरुजनों के प्रति भक्ति, अिन सब विषयों में हमारे देश का जो आदर्श है, अुसकी ओर अनुकूल अवसर पाकर विद्यार्थियों का ध्यान खींचना चाहिये।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

संयुक्त राष्ट्र का अेक शान्ति शिविर

आशादेवी

आज विश्व में सबसे बड़ी समस्या विश्व-शान्ति की है। संसार भर में सभी चिन्ताशील व्यक्ति सोच रहे हैं कि किस प्रकार वर्तमान जगत में छोटी और बड़ी लड़ाअियों को रोका जाय और मानव समाज में भाअीचारा और शान्ति की स्थापना हो। संयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर छोटी और बड़ी बहुत सी संस्थायें अिस दिशा में काम कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र में शांतिवादियों का अेक छोटा-सा समाज है जो अपने को "पीस-मेकर" या शान्ति के रचयिता कहता है। क्योंकि यह समाज मानता है कि रचनात्मक कार्यक्रम से ही शान्ति की स्थापना हो सकती है। अिस समाज के ध्येय और जीवन के मूल भूत सिद्धान्त सर्वोदय समाज के लक्ष्य और नियमों से बहुत मिलते-जुलते हैं लेकिन पश्चिमी दुनिया में विशेष करके संयुक्त राष्ट्र में शान्तिवादियों के सामने जो समस्यायें और चुनौतियां है वे भारत में सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं की समस्याओं से अधिक विकट और जटिल हैं।

सबसे पहली समस्या है आवश्यक सामरिक शिक्षा की। पश्चिमी दुनिया के करीब करीब सभी देशों में १८ साल के अूपर के नवयुवकों के लिअे सामरिक तालीम आवश्यक और अनिवार्य है। बहुत प्रचेष्टाओं के बाद अिंग्लैंड के कानून में अितनी गुंजाअिश रखी गयी है कि शान्तिवादी युवक सामरिक शिक्षा के बदले अुस अवधि में कुछ सेवा का कार्य कर सकते हैं। लेकिन यूरोप के दूसरे राष्ट्रों में या संयुक्त राष्ट्र में अिस प्रकार का विकल्प नहीं रखा गया है। कुछ शान्तिवादियों की राय यह है कि अिस प्रकार सामरिक शिक्षा के बदले दूसरा काम करने से अवश्य सामरिक शिक्षा के कानून का अप्रत्यक्ष पालन ही होता है और अिससे राष्ट्र की सामरिक प्रचेष्टाओं को सहायता मिलती है। अिसलिअे शान्तिवादी का कर्तव्य होता है कि वे अिस कानून का भंग करके अिस अन्यायी कानून का विरोध करें। "पीस मेकर" समाज के सदस्य भी अिस कानून का सविनय भंग करके जेल जाना ही पसंद करते हैं।

यूरोप और अमेरिका के शान्तिवादियों के सामने दूसरी समस्या है कर के बारे में। "पीस मेकर" यह मानते हैं कि सरकार को कर देने से युद्ध के खर्च में सहायता होती है। अिसलिअे या तो वे अैसी आजीविका चुन लेते हैं जिसकी कमाअी या वेतन कर के लिअे निर्धारित मर्यादा से नीचे होता है या कर देने को अस्वीकार करते हैं और जरूरत हुअी तो अिसके लिअे जेल भी जाते हैं।

अिस सिलसिले में सन् १९५९ के लिअे अुन्होंने अेक वक्तव्य तैयार किया है। अुसपर अभी तक अस्सी व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किये हैं। वक्तव्य अिस प्रकार है। "युद्ध करना फेडरल सरकार की प्रमुख प्रवृत्ति बन गया है अिसका तथ्य सबसे अधिक सरकार के बजट से विदित होता है। भयानक कर का भार अमेरिका की जनता पर सैन्य-खर्च के कारण और भी भयानक बना है; क्योंकि वह कर के बतौर दिये हर डॉलर का चार-पंचम अंश खा जाता है। अति शक्तिशाली बम और लंबी पहुंचवाली मिसाअिल शस्त्रों के अूपर बढ़ता हुआ व्यय अिस बात की संभावना को बढ़ाता जा रहा है कि मानव खतम हो जायेगा। हम अिसके विरुद्ध अपना

मत प्रकाश करते हैं और चाहते हैं कि अिन यत्रों को रोकने के लिअे हम जीवन संघर्ष करें। व्यक्तियों की हैसियत से हम हेनरी डेविड थोरो के अिस बयान से संपूर्ण सहमत हैं कि 'मुझे जो करना है वह यह है कि जिस बुराअी की मैं निंदा करता हूँ अुसमें मैं स्वयं न पड़ जाअूँ।'

हममें से कुछ ने कर देने से बिलकुल अिनकार कर दिया, और कुछ ने कर के अेक हिस्से को देने से अिनकार कर दिया। कुछ ने जानबूझकर अपनी आमदनी को अितना कम रखा है कि कर देना ही न पड़े। कुछ ने कर देने के लिअे जो फार्म भरने पड़ते हैं, अुन्हें न भरकर असहयोग किया है।"

अस्सी हस्ताक्षर.

वे लोग यह भी मानते हैं कि शांतिवादी समाज का आर्थिक जीवन बांटकर खाने के सिद्धांत के आधार पर संगठित होना चाहिये। अिस समाज के सदस्यों ने अेक शांति-कोष का संगठन किया है, जिसमें हरेक सदस्य अपनी शक्ति के अनुसार जमा करता है और दूसरे सदस्य आवश्यकता के अनुसार लेते हैं।

"पीस मेकर" की अिस निधिकी असली बुनियाद अुन व्यक्तियों के बीच की आपसी श्रद्धा और विश्वास है जो निधि को देते हैं और जो अुससे मदद लेते हैं। ये आपसी श्रद्धा और विश्वास किस प्रकार काम करते हैं, अिसका पहला अुदाहरण यह है कि यह निधि किसी बारीक हिसाब-किताब, रसीद, मासिक अहवाल अित्यादि झंझटों के बिना ही चलती है। जिनके पास है, वे देते हैं; जिनको आवश्यकता है, वे बिना किसी दान-दया भाव के लेते हैं। योजना बड़ी अच्छी तरह चल रही है। अक्सर आय खर्च के बिलकुल बराबर-सी ही रहती है। अिसके लिअे बड़ी निधि और सदस्यता के बारे में कुछ नहीं करना पड़ता।

"यह हमेशा ही समझा गया है कि पैसे की मदद ही आपसी मदद का अेकमात्र या बुनियादी तरीका नहीं है। मदद के दूसरे तरीके भी अिसमें शामिल हैं,–जैसे आवास, बच्चों की देखभाल, घरेलू काम में मदद, बीमारों की सेवा, सलाह मशविरा और शायद अुनसे भी अधिक महत्वपूर्ण है नैतिक सद्भाव और सहायता।"

संयुक्त राष्ट्र के शान्तिवादियों के सामने और अेक विशेष समस्या है। वर्ण-भेद की समस्या। अमेरीका के नीग्रो जाति के प्रतिकूल आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिबन्ध है। अुसके विरुद्ध शान्तिमय संग्राम चलाना संयुक्त राष्ट्र के हरेक शान्तिवादी तथा सफेद अमेरिकन और नीग्रो अमेरिकन दोनों के बीच में मैत्री का संबंध स्थापित करना अपना धर्म समझते हैं, जैसे बापूजी हरिजन सेवा को अहिंसात्मक कार्यक्रम का अेक अंग समझते थे।

'पीस मेकर' समाज प्रतिवर्ष गर्मी की छुट्टियों में अहिंसा के सिद्धान्त और प्रत्यक्ष प्रयोग के बारे में अध्ययन के लिअे शान्ति शिबिरों का आयोजन करता है। आगामी अगस्त महीने में होनेवाले शिबिर की योजना की रूप-रेखा नीचे दी जाती है। मेरा विश्वास है कि अिससे हमारे शान्ति सेना शिबिरों के संगठन और व्यवस्था में प्रेरणा मिल सकेगी।

शान्ति-शिबिर

विषय······अहिंसा की तालीम

अवधि······तीन सप्ताह

समस्यायें····वर्तमान राज्य सत्ता का स्वरूप क्या है?

क्या हम राज्य सरकारों को निरस्त्रीकरण के लिअे समझा सकते हैं ?

मानव के भ्रातृत्व में विश्वास और वर्तमान समाज की अर्थ-व्यवस्था में जो परस्पर विरोध है अुसे सुलझाने के लिअे हम क्या कर सकते हैं?

आणविक अस्त्रों के सैनिक अड्डों के प्रवेश में रुकावट डालना क्या अहिंसक कार्यक्रम-है ?

कला क्या विलास है ?

वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में शहरों का क्या स्थान है ?

कार्यक्रम:–

शिविर में भाग लेनेवाले भाअी और बहन अहिंसा के बारे में मनन और खोज करेंगे ताकि वे अिसका अर्थ और वर्तमान जगत और अपने व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा को कैसे अमल में ला सके अिसे स्पष्ट रूप से समझें। शिविर के प्रारंभ में अुन ६ महापुरुषों का अध्ययन किया जायेगा जिन्होंने अपने जीवन में अहिंसा का प्रयोग और आचरण किया है—अिसामसीह, टालस्टाय, ग्यारिसन, थोरो, गांधी, और विनोबा ।

अिन महापुरुषों की वाणियों का हम प्रायः स्मरण करते तो हैं, लेकिन अक्सर अिनके जीवन और कर्म को विच्छिन्न करके। अिस शिविर के अध्ययन का अुद्देश्य यह रहेगा कि हम अुनके समस्याओं को सुलझाने के तरीकों के अध्ययन के द्वारा, अुन्हें सत्य के साधक मानव के रूप में समझ सकें ।

अहिंसा के सिद्धान्त को कुछ समझने के बाद हम वर्तमान शहरों की समस्याओं को सुलझाने में अहिंसा का अमली प्रयोग कैसे हो सकता है, हम अिसके बारे में सोचेंगे और खोज करना प्रारम्भ करेंगे; जैसे कि शहरों में आवास की समस्या, गरीब वस्तियों की समस्या नीग्रो जातियों की स्वतन्त्र वस्तियों की समस्या ।

कला का मूल्य और अहिंसा के साथ अुसके संबंध के बारे में भी हम विचार करेंगे ।

आज जितने प्रकार के युद्ध विरोधी आन्दोलन चल रहे हैं अुनका हम परीक्षण करेंगे और राज्य-कर न देकर और आवश्यक सामरिक शिक्षा में भाग न लेकर सरकार की सामरिक प्रवृत्तियों में असहयोग के प्रश्न पर भी विचार करेंगे ।

संयुक्त राष्ट्र में वर्तमान अर्थ-व्यवस्था युद्ध की तैयारी के आयोजन पर आधारित है और अिसमें नीग्रो जाति के प्रति अन्याय और अविचार किया जाता है । अिन दोनों प्रकार के अन्यायों से मुक्त अहिंसक अर्थ-व्यवस्था में किस प्रकार संगठित की जा सके और अिस कार्यक्रम में विधायक शरीरश्रम का क्या स्थान हो अिस प्रश्न पर हम दो दिन मनन और अनुसन्धान करेंगे ।

शिविर के तीसरे सप्ताह में युद्ध विरोधी और नीग्रो जाति के बहिष्कार विरोधी कुछ प्रत्यक्ष कार्यक्रम रखा जायेगा। शिविर के भाअी बहन प्रत्यक्ष कार्यक्रम में विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग कर सकेंगे । और अनुभवी कार्यकर्त्ताओं के साथ अिन पद्धतियों की अुपयोगिता के बारे में विचार कर सकेंगे । पहले दो सप्ताह में हुअी चर्चा का विचार करके कार्यक्रम किया जायेगा ।

अुपस्थिति :–

यह वांछनीय है कि शिविरार्थी भाअी बहन पूरे तीन सप्ताह शिविर में रहें । लेकिन

(शेषांश पृष्ठ ७८ पर)

शिक्षा की कुछ समस्यायें

विनोबा

१५ अगस्त के दिन हिन्दुस्तान को आजादी मिली। अुस दिन अेक तकरीर में मैंने वर्धा में कहा था कि जैसे नया राज आता है तो पुराना झंडा नही चल सकता है, नया झंडा ही नये राज के साथ होता है, वैसे ही जहाँ नया राज आता है वहाँ पुरानी तालीम अेक दिन भी नही चलनी चाहिये। अगर नये राज में भी पुरानी तालीम चलेगी तो समझना चाहिये कि अभी पुराना राज चल रहा है।

यह चीज गांधीजी के मन में बरसो से थी। और दक्षिण आफ्रिका में अुन्होने तालीम के कुछ प्रयोग किये थे। यहाँ भी किये थे, अुनके अुन प्रयोगों में हम सब शामिल थे। मेरा तो यह जिन्दगी का विषय रहा है। मैंने अिसपर बरसो से सोचा है और काफी काम किया है। मैं जब कॉलेज में था तब मुझे अुस तालीम में कोअी समाधान नही था, तसल्ली नही थी। नतीजा यह हुआ कि मुझे अेक दिन छोडना ही पडा। मैं वहाँ था लेकिन भागना ही चाहता था। अुसमें मुझे कोअी चीज ही नही दीखती थी।

अुसके बाद मैं गांधीजी के पास पहुँचा। नअी तालीम का काम मैं अुन्ही दिनो से करता आया हूँ। वहाँ नअी तालीम के बच्चे काफी अच्छा काम करते थे। मुझे काफी अच्छा तजुरबा हुआ। हिन्दुस्तान को स्वराज्य हासिल हुआ, अिसके दस साल पहले से ही नअी तालीम का मनसूबा गांधीजी ने तैयार किया था। वैसा का वैसा ही हम वह कबूल करें अैसा तो मैं कभी नही कहूँगा। हमें अपने दिमाग से सोचना चाहिये। बुजुर्गों की सलाह लेकर आज के साधन क्या हैं, अुनके साथ ताल्लुक रखते हुअे जो चीज हमें अच्छी लगती है वही करें। लेकिन अुन्होंने जरा दूर नजर रख के नअी तालीम का अेक नया विचार लोगो के सामने रखा था।

स्वराज्य प्राप्ति के दस साल के बाद यह बात सरकार के ध्यान में आयी कि पुरानी तालीम देश को फायदा नही पहुचायगी। स्वराज्य को मजबूत करने के लिअे, देश की ताकत बढाने के लिअे पुरानी तालीम काम नही आयेगी। अिसलिअे नअी तालीम को, चाहे बदले हुअे रूप में, कबूल करना ही

(पृष्ठ ७७ का शेषांश)

यह आवश्यक नही है; क्योकि पहले सप्ताह में हम अहिंसा के मूलभूत विचारों को समझने का प्रयत्न करेंगे। दूसरे सप्ताह में हमारी वास्तविक समस्याओं में अहिंसा का प्रयोग कैसे किया जा सकेगा अिस पर चर्चा होगी और तीसरे सप्ताह में प्रत्यक्ष कार्यक्रम रहेगा।

जिनके लिअे तीन सप्ताह समय देना सभव नही वे जितना दिन हो सके शिविर में भाग ले सकते हैं। लेकिन तीसरे सप्ताह के प्रत्यक्ष कार्यक्रम में वे ही भाग ले सकते हैं जिन्होंने पहले दो सप्ताहों के अध्ययन में भाग लिया है।

होगा। यह बात दस साल के बाद सरकार के ध्यान में आयी। और अुन्होंने तय किया है कि नअी तालीम चलानी है। पर वह चीज चलती नही है। हमारी सरकार ने कअी अच्छे काम किये हैं, अुसके लिअे मैं सरकार को धन्य-वाद देता हूँ और तारीफ भी करता हू। दूसरे भी लोग तारीफ करते हैं। लेकिन तालीम और जमीन के बारे में किसी प्रकार की कोअी तरक्की सरकार ने नही की है। ये दो विभाग अैसे ही रह गये है कि अिनमें सरकार कुछ भी नही कर पायी है। अिसके बारे में सरकार कुछ आगे नही बढ पायी है। देश में कअी पुराने लोग हैं जिन्हे पुरानी तालीम मिली है। अुसको वे अिज्जत महसूस करते हैं, और कहते हैं कि हम अुसके 'प्रोडक्ट' हैं, अुसी में से बने हैं। वे यहा तक कहते हैं कि गाधीजी, लोकमान्य, तिलक जैसे बडे-बडे लोग भी पुरानी तालीम से ही निकले हैं। अुस तालीम में कुछ खराबिया हैं, परन्तु थोडी हैं। अुनको सुधारा जा सकता है। अिसलिअे अब बडे-बडे बुजुर्ग भी हिम्मत के साथ सामने आकर बोलने लगे हैं कि पुरानी तालीम में ज्यादा फरक नही करना है। लेकिन मैं यह कहना चाहता हू कि हिन्दुस्तान का तालीम का ढाचा अितना दकियानुस है कि अुस पर विज्ञान का कोअी असर ही नही है और आज का समाज बदला है, अुस माहौल (वातावरण) का भी कोअी असर नही है। तालीम यानें प्लानिंग का अेक विभाग हो जाता है। पढे-लिखे लोगों में जो बेकारी है, अुसे हटाने के लिअे क्या क्या करना है, यह पेश करते हैं। नये स्कूल खुलेंगे तो अितने शिक्षित लोगो को नौकरी मिलेगी। यानी तालीम की ओर भी नौकरी देने के खयाल से देखते हैं, और अच्छा समझते हैं। पढे-लिखे बेकारों को नौकरी तो मिलती है लेकिन वे जिस फैक्टरी को चलाते हैं वह बेकारों की तादाद बढानेवाली है, यह सोचने की बात है।

यहाँ बख्शीजी की सरकार ने अेक बख्शीश दी है कि अिस राज्य में यूनिवर्सिटी तक की तालीम मुफ्त मिलेगी। अब अिसमें सोचने की बात है। अिसका मानी यह है कि बडे लोगो के बच्चों को सिखायेंगे। मत्री के, पूजीवादियो के, धनी लोगों के बच्चो को सिखायेंगे। याने अुनको और अेक मदद मिलेगी, अुनको फीस नही देनी पडेगी। लेकिन फीस माफ होने पर भी गरीबो के बच्चे बहुत अूपर तक सीखेंगे यह नहीं मान सकते हैं। याने यही हुआ कि बडो को अेक और अिनाम मिला। लेकिन अितना ही अिसका मानी होता है तो यह अेक खैरियत है। सब बच्चे अगर बेकार तालीम हासिल करेंगे तो देश को अेक खतरा ही होता। देश की यह खुशकिस्मती है कि मुफ्त तालीम में सब लडके अूपर तक नही पढेंगे। आज गाव गाव के लोग स्कूल चाहते हैं। अुनकी माग पर सरकार अुनको अेक मकान बना देती है। स्कूल की माग क्यो होती है? अिसलिअे नही कि अिल्म की प्यास है। बल्कि अिसलिअे कि वे चाहते हैं कि जो मेहनत-मशक्कत अुनको करनी पडी, जिस हुजरी में वे रहते हैं, अुससे कम-से-कम अुनके बच्चे बच जायें। लेकिन अैसी तालीम जितनी बढेगी, अुतना अन्न अुत्पादन घटेगा। अन्न अुत्पादन के साथ अिस तालीम का विरोध है। लडके जो सीखेंगे अुसमें हाथो से काम करने का माद्दा कितना है? हमारे अेक दोस्त कहते हैं कि अिस तालीम में तीन अुगलियो का अुपयोग होता है। वे लडके

नौकरी मागेंगे । वे जिन्दगी में क्या हासिल करेंगे ? नौकरी भी कितने लडको को मिलनेवाली है ?

अब हिन्दुस्तान में सरकारी नौकर ५५ लाख है । याने ५५ लाख परिवार को सरकार वेतन देती है । साढे सात करोड कुनबो की, परिवारो की सेवा के लिअे ५५ लाख सेवको का अिन्तजाम सरकार करती है । याने १३ परिवार की सेवा के लिअे अेक परिवार सरकार रख रही है । मतलब अितना मध्यम वर्ग सरकार खडा कर रही है । यह वर्ग अुत्पादन का काम कतअी नही करेगा । यह ठीक है कि बेकारो को कुछ काम मिलेगा । लेकिन देश को अुसका फायदा नही होगा । हमारे देश में चली आयी बात है कि जो हाथो से काम करेगा, अुसकी अिज्जत कम होगी । शिक्षक, प्रोफेसर, डाक्टर, वकील ये सब लोग हाथो से काम नही करेंगे । अुपज नही बढायेंगे । लेकिन अुनकी अिज्जत ज्यादा होगी, वे जिस्मानी मजदूरी से नफरत करेंगे । भगत, बाबा, फकीर, साधु, संत, महात्मा वगैरह भी कभी हाथो से काम नही करेंगे । अुत्पादन के काम में कतअी भाग नही लेंगे । यह पहले से चला आया है । अंग्रेजी सीखे हुअे लोग तो कभी भी अुत्पादन का काम नही करेंगे । याने अेक हायर मिडिल क्लास खडा हुआ जो कायम के लिअे समाज को पीसता रहेगा, और कशमकश जारी रहेगी ।

अिसलिअे तालीम मुफ्त देने से कुछ नही चलेगा । आप क्या तालीम देंगे अिसपर सारा निर्भर रहेगा । मैंने यहा का हायस्कूल देखा । अेक टॉअिम टेबल तय रहता है । हफ्ते में वह चलता है । अेक ही पेटर्न (नमूना) अूपर से सारा लिख कर आयेगा । जब जबर (अ आ अि) का भी फरक नही कर सकते है, कुल तालीम सात दिन में देनी है । सात दिन में ४८ पीरियड होते है । अुसमें १५ पीरियड्स अंग्रेजी, १२ पीरियेड् गणित ९ पीरियड्स अितिहास और भूगोल । ये तीन अनिवार्य विषय है । १२ पीरियड्स के तीन अैसे अैसे विषय है–(१) हिन्दी, अुर्दू में से कोअी अेक (२) संस्कृत, अरबी, फारसी (३) विज्ञान और ड्राअिंग– अिनमें से लेने की बात है । अब अिस जमाने में कौन बेवकूफ होगा जो विज्ञान नही लेगा ? अिसलिअे विद्यार्थी विज्ञान तो लेंगे ही । और ड्राअिंग भी कोअी क्यो नही लेगा ? अितनी अच्छी कुदरत यहा है तो ड्राइंग के लिअ अनुकूल ही है । अिसलिअे ड्राअिंग और विज्ञान लिया तो साफ हो गया । संस्कृत और हिंदी नही ली तो भी चलेगा । आगे आप अैसे लडके की जमात तैयार करेंगे जो अुर्दू और हिन्दी में बात ही नही कर सकेंग । काश्मीरी की तो बात ही नही । मा काश्मीरी में बोलेगी, बाप अुर्दू बोलेगा अुस्ताद अंग्रेजी में बोलेगा । माताअे तो काश्मीरी के सिवाय कतई दूसरी भाषा नही बोलेगी । यह माताओ का फैसला है । वह हमेशा राजाजी की पार्टी की होगी । अगर राजाजी कोशिश करे तो बहुत सारी बहनें अुनकी पार्टी में जा सकती है । याने ५०% वोट तो अुन्हे हासिल होगा ही । मैं कहना यह चाहता हू कि यह अपनी चीज नही छोडती है । यह गुण भी है, अिसमें ताकत है । कभी कभी बुरी चीजो को भी नही छोडती है । अिसलिअे अुसमें और दोष भी आता है । लेकिन हमारे बच्चो का क्या हाल होगा ? १५ पीरियड्स अंग्रेजी क्यो पढानी चाहिये । कहते है कि बच्चो का Standard of English, अंग्रेजी का स्तर

गिरेगा तो कैसे चलेगा? आज वह गिरना लाजिमी है। आजाद देश पर आप अंग्रेजी लादना चाहे तो कौन लडका अुसको पकडेगा?

मैंने कहा अंग्रेजी मजबूत करनी है तो Quit India (भारत छोडो) के बदले Return to India (वापस भारत आओ) कहना होगा। अंग्रेजी के लिअे हफ्ते के १५ पीरियड देने पर भी आप कहते हैं कि अंग्रेजी अच्छी नही रही है। तो अुसका मानी यह है कि अगर आप अंग्रेजी को अितना वक्त न देते तो हिन्दी अुर्दू अच्छी कर सकते थे, वह न होगी। याने अंग्रेजी पढाने की अितनी Negative value– नकारात्मक मूल्य है।

मैं अंग्रेजी के खिलाफ नही हूँ। अिसी यात्रा के दरमियान मैंने जर्मन और जापानी सिखी है। परदेशी भाषाओ की मैं कदर करता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि लडके जापानी चीनी, रूसी जर्मन, फ्रेंच, फारसी अरबी अिस तरह अपने अडोस पडोस के देश की जबानें सीखें। जिनमें साहित्य है, विज्ञान है वे जबानें चन्द लोग सीखें, अुसमें माहीर हो लेकिन थोडा-थोडा सबको देंगे। दो दो तोला हर अेक को मिले अिसके बजाय चद लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें तो ठीक। नही तो सी, अे, टी–कैट, डी ओ. जी–डॉग करने से क्या फायदा?

जब हम हाअिस्कूल में पढते थे तब वर्ग में प्रवेश करते समय, May I Come in Sir, (क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ) अिस तरह अंग्रेजी में पूछना पडता था। मेरी और अुस्ताद की मादरी जबान अेक ही थी। तिसपर भी अंग्रेजी में पूछना पडता था कि क्या मैं अन्दर आअू? हिन्दी में पूछना परहेज था। कोअी सवाल पूछना हो तो भी अंग्रेजी में ही पूछना पडता था। अगर अंग्रेजी में बोल न सका तो सवाल भी मन में ही रह जाता था। अंग्रेजी पर अितना जोर देने पर भी हिन्दुस्तान में अच्छी अंग्रेजी जाननेवाले २% लोग होंगे। बाकी लोग अंग्रेजी नही जानते हैं। अितनी मेहनत करने के बाद और अितनी अहमियत देने के बाद भी यह स्थिति है–और लडके सी, अे, टी–केट, और डी, ओ जी, डॉग कहते रहे। अिससे क्या फायदा? अिसके बजाय चन्द लोग सीखें, बहुत बढिया सीखें। लेकिन आम लोगो पर–बच्चोंपर अंग्रेजी लादी जाय तो अेक ही लफ्ज सूझता है मुझे–यह जुल्म है। खुशी की बात है कि लडके अिसे कबूल नही करते है। अंग्रेजी लादी जा रही है और विज्ञान को भी अैच्छिक रखा है। अब यह ठीक है कि लडके अितने बेवकूफ नही होते हैं कि विज्ञान न ले। मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारे यहा के तालीम के नजरियों में फरक करना चाहिये। तालीम में बच्चो को कुछ न-कुछ मुफीद काम सीखना चाहिये। आज अैसी तालीम नही देते है जिससे कि देश की दौलत बढे। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है जिसकी वजह से लडके मादरी जबान भी ठीक से नही जानते, तीसरा नुक्स यह है कि अिस तालीम में अखलाखी चीज नही है। कहा जाता है कि बायबल, कुरान शरीफ, गीता, जपुजी–ये सब नही सिखा सकते है, याने जिन चीजो ने हजारो बरसो से लोगो के दिल और दिमाग पर असर डाला है, और जिनसे लोगो की फितरत (स्वभाव) बनती है वह सब स्कूलो में नही सिखा सकते हैं। कहा जाता है कि स्कूलो में सेक्यूलर (धर्म निरपेक्ष) ज्ञान ही दिया जा सकता। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नही आयी कि यह धर्मनिरपेक्षता क्या है?

धर्मनिरपेक्षता-वाद का मानी क्या है ? जिससे बच्चों के दिमाग में श्रद्धा पैदा हो, परमात्मा, अल्लाह की तरफ अुनका रुझान हो, अुनके मन में अल्लाह के लिअे डर हो, प्यार हो-यह जरूरी है कि गैर-जरूरी है । अिस पर आप सोचिये । अगर गैर-जरूरी साबित होता हो तो फिर अुसकी तालीम मत दीजिये । मगर जरूरी साबित होता हो तो अुसकी तालीम कौन देगा ? अिन दिनों सरकार ने ठेका ही लिया है कि कुल काम हम करेंगे । तो फिर अिसे भी वे ही अुठायें । कुछ लोग कहते हैं कि मजहबवाली जो अच्छी-अच्छी किताबें हैं अुनकी कोअी जरूरत नहीं है । अब आप जरा सोचिये कि यह तो हर भाषाके अच्छे से अच्छे साहित्य की किताब है । हिन्दी में तुलसी रामायण से बढकर कौन किताब होगी जो साहित्य की दृष्टि से बेहतर होगी ? सस्कृत में अुपनिषद्, रामायण, महाभारत, तमिल में कुरल, कबरामायण, वहा के भक्तों के भजन अिन सबसे बढकर कौन चीज है जो साहित्य के ख्याल से सीखने लायक है ? हिन्दुस्तान का कुल का कुल साहित्य धर्म के साथ जुडा है । फिर चाहे वह हिन्दी का हो, पजाबी का हो, बगाली का हो, तमिल का हो । चैतन्य, कबीर, मीरा, नानक, तुलसी अिन सबको टालकर आप बच्चों को कौन सी चीजें सिखानेवाले हैं ? ये सारी चीजें धर्मनिरपेक्षता-वाद में नहीं आती-यू कहकर आप नहीं पढायेंगे तो क्या पढायेंगे ? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमें कोअी चीज पैदा करने की अिल्म नहीं, जिसमें मादरी जबान का ज्ञान नहीं—अितनी सारी कमियां जिस तालीम में पडी हैं अुस तालीम से क्या फायदा होनेवाला है ? अैसी तालीम पाने से तो बिलकुल तालीम न पाना बेहतर है । मैं आपको चुनौती देता हूँ। आप हमें क्या डराते हैं ? क्या आप समझते हैं कि आप नहीं सिखायेंगे तो बच्चे नहीं सीखेंगे? मुसलमान लोग जिसकी सबसे ज्यादा कदर करते हैं, अिज्जत करते हैं, वह मुहम्मद पैगबर Unlettered prophet था—पढना लिखना नहीं जानता था । लेकिन हमनें पढने लिखने को अितनी अहमियत दी है, तिसपर भी जो नहीं पढे हैं, जिनको नहीं पढाया है वे निकम्मे नहीं रह गये हैं, नहीं रहेंगे । मुफ्त शिक्षण और अनिवार्य शिक्षण का मनसूबा परमात्मा ने तैयार किया है । और वह हर बच्चे को दे रहा है । हर बच्चे को मा की गोद में जन्म दिया है, और मा अुसे मादरी जबान सिखाती है बचपन से । यह है फ्री अेजुकेशन (मुफ्त शिक्षण) और हर अेक के पेट में भूख तो होती ही है । अिसलिअे काम करना पडता है । यह ज्ञान, अिल्म होगा । यह है कम्पल्सरी अेजुकेशन (अनिवार्य शिक्षण) । अिस तरह फ्री और कम्पल्सरी अेजुकेशन परमात्मा दे रहा है । आप हट जायगे तो अिसमें कोअी फर्क नहीं पडनेवाला है । अिस तालीम में मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, अितमीनान नहीं है । तालीम का ठेका आपने क्यों ले रखा है ? सरकार में क्या कुवत है तालीम देने की ?

केरल की सरकार ने अेजुकेशन बिल बनाया तो अुसके खिलाफ वहा के औसाअी खडे हुअे । फिर वह बिल राष्ट्रपति के पास भेजा गया । राष्ट्रपति ने अुसे सुप्रीम कोर्ट के पास भेजा । अिस तरह फूटबॉल का खेल चलता रहा । अिधर से लात मारकर अुधर और अुधर से लात मारकर अिधर भेजा गया । आखिर सुप्रीम कोर्ट अुसे लात मारके आगे नहीं भेज सकता था । तो अुसने कुछ सुधार पेश किये जो बिलकुल मामूली थे, अुस बिल का ज्यादा

रूप बदलनेवाले नहीं थे । केरल की कम्यूनिस्ट पार्टी ने वे सुधार मान लिये और अुसके मुताबिक सुधारा बिल लाया जो वहाँ की असेंबली ने पास किया । अुसके खिलाफ वहाँ के लोग खडे हुअे । मेरी अुनके साथ हमदर्दी है जो अुस बिल के खिलाफ हैं, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि तालीम सरकार के हाथ में न रहे । लेकिन आज तालीम सरकार के हाथ में है और वह सरकार का कार्य माना जाता है । अुस हालत में केरल की हुकूमत ने जो किया वह ठीक ही था । कम्यूनिस्ट जरा ज्यादा कार्यदक्ष होते हैं । अिसलिअे अुन्होंने वहाँ ठीक ढग से कस लिया । लेकिन आप भी दूसरे सूबों में अुसी तरह कसते हैं । अभी मैं पजाब से आया हूँ । मैंने वहाँ देखा कि वहाँ की सरकार ने स्कूल की फी माफ की है तो अुसका नतीजा यह हुआ है कि वहाँ जो अच्छी चीज, खानगी शालायें चलती थी—जो फीस के आधार पर चलती थी—बन्द हो रही हैं। अिस सब के मानी यह है कि आप सरकार के हाथ में तालीम रखना चाहते हैं, ठीक कसना चाहते हैं, तालीम का पेटर्न भी बनाना चाहते हैं ।

आप जो तय करेंगे वही कुल लडको को पढना होगा । हमने कअी दफा कहा है कि आज के शिक्षण विभाग के अधिकारी के हाथ में जो अधिकार है, वह बडे-बडे आलीमो के, विद्वानो के हाथ में भी नही थी । हिन्दुस्तान में या दुनिया में अैसा कोअी आलिम नहीं निकला जो हर अेक के लिअे लाजमी कर सका कि अुसकी किताब पढनी चाहिये । लेकिन शिक्षण विभाग का अधिकारी लाजमी कर सकता है कि स्टेट के हर बच्चे को फलानी किताब ही पढनी होगी । जो किताब वह तय करेगा, अुसी का अध्ययन, चिंतन, मनन, रटन हर लडके को करना होगा । दिमाग की आजादी के लिअे अिससे अधिक खतरनाक बात क्या हो सकती है ? तालीम सरकार के हाथ में रही तो फिर कम्यूनिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चो को कम्यूनिजम पढाया जाता है । केरल की कम्यूनिस्ट हुकूमत के खिलाफ यही शिकायत थी कि अुसने अपनी ही किताबें सब स्कूलो के लिअे लाजिमी की थी । अिस शिकायत के मूल में यही चीज पडी है कि तालीम को अेक ढाचे में ढालने की कोशिश हो रही है । अगर फासिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चो को फासिसम की तालीम् दी जाती है । हिटलर यही कहता था । वहा के कुल बच्चो का दिमाग अेक ही ढग के बनाना चाहता था । वैसे बना भी रहा था । अगर जनसघ की सरकार हो तो अुसका तत्वज्ञान बच्चो को सिखाया जायगा । और कल्याण राज्य हो तो पचवर्षीय योजना के गाने सिखाये जायगे । अिस तरह बच्चो के दिमाग को अेक ढाचे में ढालने की जो बात है, वह लोकशाही के खिलाफ है । शिस्त के नाम पर यह सब होता है । लोगों को बिलकुल मशीन बनाया जाता है । पिछली लडाअी में दुनिया में अेक तमाशा देखा । जब हुकुम हुआ तब जर्मनी की ५० लाख फौज ने हमला किया । लोगो को अपना कोअी अभिक्रम नही था । वे सिर्फ हुकुमबरदार थे । चार साल के बाद जब जर्मनी ने देखा कि अमेरिका की ताकत बढ रही है, तो जर्मन सैनिकों को शरण जाने का हुकुम दिया और अेक-अेक दिन १०-१० लाख की फौज ने हथियार नीचे रख दिये । हुकुम था "आपको सवाल पूछने का हक नही, आपको सिर्फ हुकुम के मुताबिक करना है और मरना है ।"

सर्वोदय विचार की यही माग है कि तालीम सरकार के हाथ में नही रहनी चाहिये ।

अपनी सरकार को चाहिये कि वह देश के विद्वानो को आजादी दे और लोगो को अुत्तेजन दे कि लोग जिस किस्म की तालीम चाहे दे सकें। अभी बवअी राज्य में अेक तमाशा चल रहा है। वहां की हुकूमत ने पहले तय किया था कि स्कूल की आठ जमात के बाद अंग्रेजी शुरू की जाय। चार-पाच साल तक वह रहा। अब फिर से पाचवी जमात के बाद अंग्रेजी पढाने की बात चली है। आप कौन होते हैं बच्चो की जिन्दगी के साथ, दिमाग के साथ खिलवाड करनेवाले? आप को क्या हक है? मा-बाप अपने बच्चो को जो भी सिखाना चाहे सिखायें, लेकिन आप कैद रखते हैं कि सरकार की नौकरी अुसी को मिलेगी जो डिग्री पाया हुआ है। अिसकी मानी यह है कि आप में अिल्म की कद्र नही है। आपमें अपनी मशीनरी की कद्र है। क्या मैं अपने लडके को तालीम देनें के लिअे नाकाम हूँ? क्या डिग्री पाया हुआ प्रोफेसर ही तालीम दे सकता है? मैंने सरकार के सामने सुझाव रखा है कि आप अपने विभागो की परीक्षा लें। जो भी वह परीक्षा देना चाहता है, वह परीक्षा देगा और पास हुआ तो नौकरी मिलेगी। अुस परीक्षा के लिअे डिग्री की कोअी कैद नही होनी चाहिये। अिससे परीक्षा देनेवालो की बहुत बडी तादाद होगी। मैं कहता हूँ कि अिसमें आपका क्या नुकसान है? अगर ५ लाख लोग परीक्षा दें और आप ने पाच रुपया फीस रखा तो २५ लाख रुपये मिलेंगे। क्या २५ लाख रुपये में पाच लाख लोगो का अिम्तहान नहीं हो सकता? फिजूल आक्षेप आप अुठाते हैं। असली बात तो यह है कि वे अपने हाथ से तालीम नही जाने देना चाहते हैं, अुसे कसकर रखना चाहते हैं। दो साल पहले प नेहरू हमसे मिले थे। तो मैंने अुनके सामने यही बात रखी थी कि आप विभागीय परीक्षा ले तो खानगी स्कूल को अुत्तेजन मिलेगा। फिर लोग अपने अपने स्कूल चलायगे। अुन्होंने कहा कि अिसे पसद करता हूँ। फिर अुन्होने अिसके लिअे अेक कमेटी बनायी। दो साल के बाद अभी मेरे पास अुस कमिटी की रिपोर्ट आयी है जो कचडे की टोकरी में डालनें लायक है। अुस कमेटी ने जो सिफारिश की है अुसमें कुछ है ही नही। अुसमें कहा है कि दूसरे और तीसरे दर्जे की नौकरियो के लिअे डिग्री चाहिये। तीसरे दर्जे की नौकरियो के लिअे कही डिग्री की जरूरत नही रहेगी तो कही रहेगी। अभी मत्रिमडल ने फैसला दिया है कि डिग्री की जरूरत है। दो साल के बाद यह फैसला होता है तो मैं यह बात क्या छिपाके रखू? और कब तक सरकार पर टीका न करे? कुछ लोग कहते हैं कि आप सरकार पर टीका क्यो करते हैं? लोकशाही में लोगो के सामने अपनी बात रखने की आजादी हरअेक को होनी चाहिये।

सर्वोदय के बुनियादी अुसूल अिस प्रकार है – १ तालीम लोगो के हाथ में होनी चाहिये– सरकार के हाथ में नही। २ तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिये। ३ अुसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखायी जायें, लेकिन तादीन जायें। ४ तालीम मे अखलाकी, रूहानी चीज जरूर होनी चाहिये। ५ तालीम में कोअी-न-कोअी दस्तकारी जरूर होनी चाहिये। अिन पाच अुसूलो को हम कभी नही छोड सकते हैं। आप अिस पर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुयी है अिसलिअे आप सोचेंगे तो तालीम में फरक जरूर हो सकता है।

—

शिक्षा का सामाजीकरण

धीरेन्द्र मजूमदार

अेक जमाना था जब मनुष्य की सामाजिक मान्यता क्षमतावाद की थी। अुनका नारा था सरवाअिवल ऑफ दि फिटेस्ट, अर्थात् जो क्षमतावान् होगा वही जीयेगा। क्षमतावाद का सीधा अर्थ है जिसकी लाठी अुसकी भैंस। अेक क्षमतावान् व्यक्ति देश का दखल करता था या अपने देश में ही राज करता था और फिर अुसकी परंपरा चलती थी। स्वभावतः हर क्षेत्र में अैसा ही था। समाजव्यवस्था के लिअे राजा, कल्याणकार्य के लिअे पुरोहित और व्यापार के लिअे सेठ।

जमाना बदला। लोगो की आकांक्षा बढी। आत्मप्रत्यय बढा, ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि बढी तो लोग विशिष्ट व्यक्तियों के दायरे से निकलकर संस्थावाद के बडे दायरे पर पहुच गये। फिर जिसकी लाठी अुसकी भैंसवाला नारा बदलकर बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय का नारा लगा और अुसके अनुसार समाज की व्यवस्था तथा अुसके संचालन के लिअे बहुमत से राज्यसस्थायें बनी। जनकल्याण के कार्य के लिअे व्यापक सस्थायें बनी। शिक्षण के लिअे गुरुकुलों के स्थान पर व्यापक पाठशालायें बनी और व्यापार के लिअे बडी-बडी कपनिया बनी।

मानवविकास की प्रगति के साथ-साथ आकाक्षाओं में भी प्रगति होती है। तो आज के अति प्रगतिशील ज्ञान-विज्ञान के युग में मनुष्य की आकाक्षा बहुजन हिताय पर रुक नही सकती है। आज वह सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय की स्थिति की प्राप्ति की ओर दौड रही है। अुसी आकांक्षा में से सर्वोदय का विचार निकला।

अुपरोक्त अैतिहासिक सिलसिले में शिक्षा शास्त्री तथा तालीम के सेवकों को नवयुग के अिस नयी आकांक्षा के सन्दर्भ में तालीम की दिशा क्या हो, सोचना होगा। जब आकांक्षा अत्यंत मर्यादित थी तो गुरुकुलों की चहारदीवारी के अन्दर परिवार और समाज से निकालकर बालकों को पन्द्रह सोलह साल अलग रखकर शिक्षण व्यवस्था संभव थी। लेकिन जब शिक्षा की व्यापक मांग हुअी तो यह सभव नही था कि अितने बालकों को गुरुकुल पद्धति में रखकर शिक्षण की व्यवस्था की जाय। अिस परिस्थिति के सन्दर्भ में शिक्षा शास्त्रियों ने सोचा और आज की सार्वजनिक पाठशालायें अुसी परिस्थिति की अुपज मात्र हैं। अभी तक वही व्यवस्था और सिलसिला दुनियां में चल रहा है। लेकिन सर्वोदय की आकांक्षा रखनेवाला मानव क्या अितने से ही सतुष्ट रहेगा? अगर सबका अुदय वांछनीय है तो हर अेक को संपूर्ण तालीम आवश्यक है। अितना कहने से काम नही चलेगा कि प्राथमिक शिक्षा सबको हो और अुच्च शिक्षा कुछ चुने हुअे लोगों को ही हो। अैसी हालत में अब शिक्षा सार्वजनिक पाठशालाओं के घेरे के अन्दर मर्यादित न रह सकती है। अुसे सर्वजन में फैलना होगा-जिसके लिअे सारे समाज को ही शिक्षालय बनाना होगा।

आज के विकसित न्याय बुद्धि के युग में मनुष्य स्वभावतः समान अवसर का नारा लगाता है—लेकिन वह भूल जाता है कि जब तक शिक्षा में समान अवसर का निर्माण नही किया जायगा तब तक सामाजिक समान अवसर की बात अेक प्रहसन-मात्र रह जायगा। लेकिन समान अवसर के नाम पर अगर सबको स्कूल नामधारी स्थान विशेष में भर्ती करना

पडे तो जिस भैंस की पीठपर आज बच्चा वैठता है अुसकी क्या दशा होगी ? अत यह स्पष्ट है कि सबको स्कूल के घेरे में ले जाकर बैठाया नही जा सकेगा। तो अगर खेत के मेंड या आड पर-के बालक को या भैंस चराने वालो को ज्ञानमन्दिर में प्रवेश नही कराया जा सकेगा तो ज्ञान को ही अपने मन्दिर की दीवारे तोडकर बाहर निकलना होगा और खेत के आड मेड या भैंस की पीठ पर पहुँचना होगा। अर्थात् अुन्हे पूरे समाज में फैलना होगा। यानी शिक्षा का सपूर्ण सामाजीकरण की माग आज की मानव आकाक्षा जनित परिस्थिति की ओर से अत्यत तीव्रता के साथ आ रही है। अब प्रश्न यह है कि अिस माग की पूर्ति हो कैसे ? अुसका स्वरूप क्या हो ? और अिस माग के अनुसार शिक्षणकला की दिशा किधर हो ?

गाधीजी ने आज से अिक्कीस साल पहले देश के सामने बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षण की योजना रखी थी। राष्ट्रीय शब्द में ही राष्ट्र के सब की शिक्षा का मतलब निकलता है। जिस पद्धति में शिक्षा का अवसर केवल अेक वर्ग के लिअे मिलता हो, अुसे राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति नही कहा जा सकता। चूकि अुन्हे शिक्षा को राष्ट्रीय बनाना था अुन्होने शिक्षा का माध्यम अुद्योग, समाज और प्रकृति रखा। तथा अुसकी कसौटी स्वावलबन है, अैसा कहा। देश न अिसका प्रयोग बुनियादी शाला खोलकर किया और वह कुछ आग बढा। यह सही है कि चाहे अुद्योग द्वारा ही शिक्षा क्यो न हो, शिक्षा शाला के अहाते में हर अेक को शामिल नही किया जा सकता है। लेकिन अेक विचार के आधार पर शिक्षण कला तथा शिक्षण शैली की खोज की आवश्यकता थी। यह खोज देश ने बुनियादी शाला रूपी प्रयोग शालाओ में आवश्यक परिस्थिति निर्माण कर किया। शाला में थोडी जमीन ली गयी, कुछ अुद्योग चलाया गया और कृत्रिम तरीके से ही सही, कुछ सामाजिक वातावरण बनाया गया। अिस प्रकार की प्रयोग शालाओ में शिक्षण शैली की खोज चली। और आज नीचे से अूपर तक विभिन्न दर्जों के लिअे सुव्यवस्थित अभ्यासक्रम बन गया।

शिक्षा के समाजीकरण का मतलब है कि हरअेक *गाव को शिक्षण शाला बना देना।* अर्थात् गाव की खेती, गाव का अुद्योग, गाव के घर द्वार, तथा सडक निर्माण, गाव के मेंड-वाड तालाव या बाघ बनाना, अित्यादि सभी कार्यों को शिक्षण का माध्यम बनाकर गांव की पूरी आवादी की तालीम की व्यवस्था करना। अिस अतिविकसित वैज्ञानिक युग में अलग अलग अपनी खेती-बाडी, तथा अुद्योग चलाकर विज्ञान का लाभ अुठाकर अपने अस्तित्व की सुरक्षा नही कर सकेगा। अिस युग में अगर जनता को जिन्दा रहना है तो अुसे गाव भर के साधनो को सामुदायिक बनाकर, सयोजित कार्यक्रम बनाना होगा। अैसी परिस्थिति में विभिन्न अुम्र तथा विभिन्न सामाजिक विकास वाले बच्चे तथा प्रौढो को विभिन्न टोलियो में बाटकर काम में लगाना समाज के लिअे सहज हो जायगा। फिर समवाय आदि शिक्षण कला का जो आविष्कार अब तक शालाओ में किया गया है अुसे गाव के सयोजित कार्यक्रम के सदर्भ में भी लागू किया जा सकेगा। परिस्थिति के परिवर्तन के कारण जो हेर फेर करना होगा अुसे शिक्षा शास्त्री धीरे धीरे कर लेगा।

आवश्यकता अिस बात की है कि देश के शिक्षाप्रेमी तथा नअी तालीम के शिक्षक अुसी

(शेषांश पृष्ठ ८८ पर)

स्वावलंबी जलकुटीर

(मनु पंडित)

प्राचीन काल से हमारे देश में जलागार, पियाऊ, कुआं अित्यादि बनाने का बहुत बडा महत्व है। क्योंकि वास्तव में पानी ही हमारा जीवन है। जहां अैसा अितजाम नही बन जाता वहां अुदारचरित लोग अपनी ओर से किसी को रखकर पानी पिलाने की योजना बनाते हैं।

धूपकाल में मनुष्य जब चलकर आता है तब अुसे कितनी और कैसी मधुर प्यास लगती है यह सब जानते हैं। अगर अुसी वक्त हमें कोअी ठंढा पानी पिला दे तो हम अिसका अेहसान नही भूलते।

मढी का कन्या आश्रम बिलकुल सडक के किनारे पर स्थित है। यह मार्ग स्टेशन तक जाता है। अिसलिअे पैदल चलनेवाले यात्रियों की लगातार कतार दिखायी पडती है। धूपकाल में अिनमें से बहुत-से लोग आश्रम के कुअें पर आकर पानी पी लेते हैं। अिनमें अुन लोगों का समय तो जाता ही है, साथ-साथ कभी-कभी बाल्टी न हो तो निराश होकर वापिस जाना पडता था। यह स्थिति देखकर हमने सोचा कि हम ही पानी पिलाने का अितजाम क्यों न करें? और हमारी शाला की बच्चियों के द्वारा अिसकी योचना क्यों न तैयार करें?

शिक्षक मंडली ने बैठकर विचार पक्का कर लिया। अब विद्यार्थी मंडल में यह सुझाव रखा गया। सब ने अेक मत से अिसका जवाब दिया—"बहुत ही अच्छा।"

चौथी श्रेणी की विद्यार्थिनियों ने कुटीर बांधने की जिम्मेदारी अुठायी। चारों ओर से खूंटे, बांस, रस्सी, पाले और अिसके सब साधन अिकट्ठे करके अिन लोगों ने १०'×१०' की अेक सुन्दर कुटिया तैयार कर दी। छप्पर में घास बिछायी।

अब आयी पांचवी श्रेणी की बारी। अिन लोगों ने भीतर की रचना संभाली। लिपाअी की, पानी रखने के चबूतरे और ओटे बना दिये। पानी के मटके रखने के लिअे लंबे पाट का अंतजाम किया।

सातवी श्रेणी के विद्यार्थियोंने कहा :— "अब हम अिस कुटीर को सजा देंगे।

विविध रंग अिकट्ठे कर के अुन लोगों ने शोभा शृंगार किया। अल्पना रंगोली, फूल वेल की किनारी आदि। अिसके साथ-साथ कुछ सूत्र भी लिखें जो अिस प्रकार थे :—

आअिये, पधारिये, ठंढा पानी पीजिये, पहले अपना हाथ-मुह धोअिये। कृपया पानी कम गिराअिये। जल पात्र से ही पानी पीजिये। थूकना मना है। अित्यादि।

बस, जल कुटीर तैयार हो गया।

बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिअे, अिस स्वावलंबी जलकुटीर का अुद्घाटन आचार्य श्री जुगतराम दवे ने किया। अिस प्रसंग पर आपने अैसी मंगल और सामाजिक प्रवृत्ति शाला में दाखिल करने पर सबको धन्यवाद दिया।

हमारा जलकुटीर बिलकुल स्वावलंबी था। मटके भरे जाते थे। पानी सबको स्वयं लेने का था। मटके में पानी खतम न हो जाय अिसके लिअे दो-दो घंटे पर देखने की, और बारी बारी से पानी भरने की टोलियां बनायी थीं।

जलकुटीर के सामने नीम के दो बडे पेड़ हैं। अिसके अिर्दगिर्द सुन्दर चौका तैयार किया

गया था जिससे सब लोग अपना सामान रखकर आराम से बैठ सकें।

हमारी यह प्रवृत्ति जनवरी से लेकर जून के अंत तक चली।

अिस बात को लिखने में हमें बडी खुशी होती है कि पानी खतम होने की फरियाद अेक दफा भी नही आयी। विद्यार्थिनियो ने अितने दिल से काम किया। अेक खास बात और है कि हमारी कुटिया रात-दिन खुली रहती थी, कोअी चौकीदार नही था। लोक मार्ग होने पर भी कोअी चीज गुम न हुअी न किसी ने चोरी की। यह कितने बडे सन्तोष की बात है।

अक्सर हम देखते है कि कअी लोगो को पानी पीने से पहले हाथ मुह धोने की आदत नही होती है। वे अिसकी आवश्यकता ही महसूस नही करते हैं। कैसा भी अपना हाथ हो, सीधे मटके में डुबोते हैं। यहां अुन्हे स्वयम् धोना ही पडता था। अेक खास जगह रखी गयी थी जिससे अुनको खयाल आ ही जाता था। हमारी प्रवृत्ति परम लोक-अुपकारी तो थी ही और शालासमाज को भी अिससे काफी फायदा हुआ।

हमारे जलकुटीर ने कअी लोगों के आशीर्वाद प्राप्त किये। हमारे अिर्दगिर्द के लोगों ने जो हमारी अिस योजना से प्रसन्न हुअे, बिना मांगे ही हमारी मदद की।

हमारे देश में जो शालायें हैं अिनमें से बहुत सी शालायें, गांव की अेक ओर और दो-चार देहातो को जोडनेवाले रास्ते पर होती हैं। अगर हमारी सब शालायें पानी पिलाने का अितजाम कर दें तो लोग स्वय आने लगेंगे। हमारा बगीचा देखकर अुनको खुशी होगी। हमारी शाला के सूत्रो और सुविचारो को पढकर सोचने लगेंगे और हमारी कला अगर अूचे दर्जे की होगी तो अपने घर ले जाकर अनुकरण करेंगे। सचमुच ही वे हमारी सफाअी से आकर्षित होंगे।

(पृष्ठ ८६ का शेषाश)

तरह अिस कामपर भी लग जायें जिस तरह ३७-३८ में गाधीजी के आवाहन पर देश के शिक्षित वर्ग के बहुत-से प्रतिभावान् व्यक्ति बुनियादी शाला की स्थापना के काम में लग गये थे। अुन दिनों में लोगो को बिलकुल अनिश्चित समुद्रयात्रा करनी पडी थी। आज यात्रापथ अुतना अनिश्चित नही है। नअी तालीम की शिक्षण कला तथा शैली का काफी विकास हो चुका है। यह सही है कि अिसमें काफी और विकास की गुजाअिश है। फिर भी प्रारभ के लिअे अेक बनी बनाअी शिक्षा-शैली मौजूद है। आवश्यकता सिर्फ अिस बात की है कि शालाओ की कृत्रिम परिस्थिति से निकलकर गाव की स्वाभाविक परिस्थिति में काम किया जाय। अैसी स्वाभाविक परिस्थिति में समवाय ज्ञान का स्रोत अधिक तीव्र होगा। क्योंकि गांव का बच्चा जब गाव की खेती, तथा गाव के अुद्योग में काम करेगा तो अुस काम का सहज समवाय अुसके जीवन के साथ बने रहने कारण अुसमें जिज्ञासा की पूर्ति अधिक बलवती होगी। शिक्षण-मनोविज्ञान का हर अेक विद्यार्थी जानता है कि जिज्ञासा ही ज्ञान को बुनियादी चश्मा है।

नअी तालीम के सेवक आज की अिस आवश्यकता पर गंभीर विचार करेंगे और अिस दिशा में निश्चित कदम रखेंगे, अैसी आशा है।

अध्ययन मडलियो के निष्कर्ष

शिक्षा और शांति

मार्जरी साजिवत

अिस अध्ययन मडली की दो बैठके हुअी। २६ अप्रैल दुपहर को २ ३० बजे से ५ बजे तक तथा २७ अप्रैल सबेरे ९ बजे से ११ बजे तक। दोनो बैठको में करीब १५० लोग पूरे समय अुपस्थित रहे। थोडे समय के लिअे बडी सख्या में लोग अुपस्थित थे। लेकिन सामान्यतया, बैठक की चर्चा और निष्कर्ष में मडली के स्थायी सदस्यो ने ही भाग लिया जो बैठक में पूरे समय अुपस्थित रहे।

शिक्षा और शान्ति का जो आन्तरिक सबध है, अुस पूरे विशाल क्षेत्र को अपनी चर्चा में समाविष्ट करने का प्रयत्न मडली ने नही किया। जिस हद तक मडली काम कर सकती है अुस सीमा को स्पष्ट करते हुअे अुसन अपना काम प्रारभ किया। मडली ने अुस वक्तव्य से अपनी चर्चा शुरू की जो यूनेस्को के आधार के अेक भाग का निर्माण करता है। वह वक्तव्य है "कलह की जडें मनुष्य के मन में है।" अध्ययन मडली अिस बात से सहमत हुअी कि यह शिक्षा का ही काम है कि कलह की अिन जडो को नष्ट कर दिया जाय और मनुष्य के व्यक्तित्व की शक्यताओं का अिस तरह विकास किया जाय कि जिससे शांति की नीव मजबूत हो। अिस नीव पर मानवता को खडा करना होगा। राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का अेक अैसा नमूना भी निर्मित करना है, जहाँ मनुष्य शान्ति और करुणा की अपनी अिच्छा प्रकट कर सके और अपनी अुस अिच्छा को फलीभूत भी बना सके। शिक्षक को अिस सामाजिक व्यवस्था का विद्यार्थी बनना चाहिये। मानवीय सगठन की विभिन्न विधियो की तरफ अुसकी वृत्ति सावधान, सहानुभूतिपूर्ण तथा रचनात्मक आलोचनायुक्त होनी चाहिये। लेकिन अुसका पहला विशिष्ट काम यह होगा कि वह तरह तरह के व्यक्तित्व की वृद्धि को बढावा दे जिससे कि अनावश्यक और नाश-कारक सघर्ष के बिना सामाजिक पद्धतियाँ अपने काम कर पावे।

जहाँ तक सभव हो, कम अुम्र के बच्चे तथा युवक शाति की मूलभूत शर्तो को सही समझ के साथ बढ सकें, अिसका निश्चय करना शिक्षक का दूसरा काम है। अध्ययन मडली अिस बात से सहमत हुअी कि शाति की अिन मूलभूत शर्तो को साराश में विनोबा के शब्दो में अिस तरह कहा जा सकता है। "अपनी अिच्छाओ की सीमा निर्धारित करो और अपने विचारो को विश्वव्यापक बनाओ।" सिर्फ बच्चो की शिक्षा में नही, बल्कि सारे समाज की शिक्षा में, अिन सिद्धातो को व्यावहारिक रूप में अमल में लाने का काम पूरे विस्तार के साथ होना चाहिये। यह बात बिल-कुल स्पष्ट है कि जब तक बच्चे के विशाल सामाजिक वातावरण में अिस सिद्धात को मान्यता नही मिलती तबतक केवल विद्यालय का शिक्षण अिन सिद्धातो के मूल्य की सिफारिश करने में कार्यसाधक नही होगा।

१ सबसे पहले, मडली ने अिस मुख्य मूल-भूत चुनौती पर विचार किया जो हरअेक शाति के शिक्षक के सामने पेश आती है, जैसे.

मानव जाति स्वभावत और असाध्यरूप में आक्रमणकारी है। यह सिद्धान्त हमें अिस निष्कर्ष पर ले जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध सहित सभी तरह के झगडे मानवीय सामाजिक जीवन का अेक स्थायी और अनिवार्य पहलू है।

दैनिक जीवन के सामान्य अनुभव से तथा मन किस तरह काम करता है, अिसके अतिगभीर और वास्तविक अध्ययन से अुपरोक्त निराशावादी सिद्धान्त का खडन हो जाता है। लोग जब अपनी ख्वाहिश की चीजें नही पाते है तो अिच्छा की यह पराजय क्रोध को जगाता है। जब वे सोचते है कि जो चीजें अुनके लिअे महत्वपूर्ण है अुनसे वे वचित किये जा सकते है, तब अुन्हे भय और अरक्षा का अनुभव होता है। क्रोध, भय और अरक्षा-भाव किसी खास परिस्थिति के कारण अुत्पन्न होते है, आक्रमणकारी बरताव अिन्ही का परिणाम है। यह बरताव किसी विश्वव्यापक जन्मजात स्वभाव का प्रकटन कतअी नही है। क्रोध और भय मनुष्य को किस तरह आक्रमणशीलता की तरफ ले जाते है, अिसके अुदाहरण बच्चो की हर शाला में और खेलते हुअे बच्चो के झुड में देखे जा सकते है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा हर प्रकार के मानवीय सगठन में भी ये भाव अुमड अुठते है।

अगर शिक्षा को अिस लायक बनाना है कि वह मानव की आक्रमणशीलता को घटावे तो शिक्षक को यह समझना चाहिये कि आक्रमणशीलता कैसे पैदा होती है। और अुसको अिसके कारणो का विश्लेषण भी करना चाहिये। हर अेक शिक्षक को अपने आपको अिस तरह अभ्यसित करना है कि वह जान सके कि मेरा मन किस तरह काम करता है? अपने अन्दर के क्रोध, भय और आक्रमणशील भावना को समझने तथा अुसे अपने नियत्रण में रखने का अभ्यास भी अुसे करना चाहिये। अुसे अपने आत्मानुभव और आत्मनियत्रण को बढाने का अुद्देश्य अपने सामने रखना चाहिये, साथ-साथ अुसे मानवीय स्वाभाविक बरताव का व्यावहारिक, सामाजिक तथा अैतिहासिक अध्ययन करना भी जरूरी है। विभिन्न अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियो के पैदा होने पर, प्रशिक्षणार्थियो में वास्तव में पाये जानेवाले बरतावो के पदार्थ विषयक विश्लेषण के आधार पर ही शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में मनोविज्ञान का अध्ययन होना चाहिये।

२ शाति की शिक्षा के सामने जो दूसरी बुनियादी चुनौती है, वह सक्षेप में अेक मशहूर कहावत के रूप में अिस तरह कहा जाता है, "अगर तुम शाति चाहते हो तो युद्ध के लिअे सन्नद्ध रहो'। अिस कहावत के अन्दर यह सिद्धान्त निहित है कि बदला लेने का भय और बलात्कार की धमकी लोगो को बुरे काम करने से रोकने के लिअे परिणामकारी साधन है। मानवीय बरताव का सामान्य दिशादर्शन करने में यह सिद्धान्त सार्थक प्रतीत नही होता है। धमकियां बुरे काम करने से लोगो को रोक भी सकती है और न भी रोक सकती है और भय जैसे सहिष्णुता में परिणत होता है वैसे ही आक्रमणकारिता में भी परिणत हो सकता है। कहावत में जो "शाति" की धारणा प्रतिबिंबित हुअी है वह सपूर्णतया नकारात्मक है। समानता, अिन्साफ, वास्तविक निश्चित सहृदयता-अिनमें से कोअी भी चीज किसी पर जबरदस्ती से थोपी नही जा सकती है।

अगर हम शांति चाहते हैं तो हमें शान्ति के लिअे तैयार रहना चाहिये। क्रम-क्रम से आन्तरिक आत्मानुशासन का अभ्यास करते हुअे, जो अहिंसा को अपने जीवन में अुतारने में हमें सहायता पहुँचायेगा—हमें शांति के लिअे तैयार रहना चाहिये। "शांति के लिअे कोअी रास्ता नही है, शांति ही रास्ता है।" सघर्ष के शान्त और अहिंसात्मक तरीके में अिन्साफ और आजादी का रास्ता निहित है। बच्चो के माता पिता और शिक्षको को चाहिये कि वे सबसे पहले बच्चो के दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास और आचरण करने में अुनकी मदद और मार्गदर्शन किया करे। अिसके अुपरान्त अिन्साफ के सस्थापन में, आत्म सरक्षण में और सपूर्ण समाज के सरक्षण में बच्चा को अुनका मार्गदर्शन मिलना चाहिये। शाला का प्रशिक्षण हमें स्थानीय शान्ति सेना काम की सक्रिय मदद की तरफ ले जाना चाहिये। अिस प्रशिक्षण का यह भी काम है कि अिससे अन्तर्राष्ट्रीय झगडो के निवारण में भी अहिंसात्मक तरीके लागू किये जा सके।

३. शिक्षण सस्थाओं में सैनिक शिक्षा

सैनिक शक्ति की कार्यसाधकता में विश्वास के परिणाम स्वरुप स्कूल और कालेजा में सैनिक शिक्षण देने को पूर्ण स्वीकृति मिली है। हम नीचे दिये तीन विचारो पर सारे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

(अ) स्काअुट आदि स्वयप्रेरित—असामरिक युवक आन्दोलनों के जरिये अिस प्रशिक्षण के रचनात्मक, वास्तविक और अुपयोगी पहलू का शिक्षण दिया जा सकता है और दिया जा रहा है। बडे परिमाण में अेन° सी सी तथा अुस तरह के अन्य सामरिक शिक्षणो के देने की वजह से युवको के स्वयप्रेरित आन्दोलनो को देश में बडा भारी धक्का लगा है। सच्चे प्रजातन्त्र को चाहिये कि वह स्वयप्रेरित आन्दोलनो को बढावा दे।

(आ) सामरिक ढग की "शिस्त" युवको को आज्ञा का पालन करने के आदी बनाती है। अपने लिअे सोचने की अुनकी विचार शक्ति को जगाने में वह कुछ भी सहायक नही होती। यह अेक मानी हुअी बात है कि आजादी, प्रजातन्त्र तथा शान्ति के लिअे विचारस्वातन्त्र्य अेक अनिवार्य शर्त है। सामरिक शिस्त निश्चित ही स्वतन्त्र विचार सामर्थ्य को बरबाद कर देगी और अुससे प्रजातन्त्र का चारित्र्य भी कमजोर बनेगा।

(अि) सैनिक प्रशिक्षण युवको के मन को हिंसा को मामूली बात समझने के लिअे मजबूर करता है और अुन्हे लोगो को मारने की भावना का आदी बनाता है। यह परिपाटी चूकि अत्यत सूक्ष्म और अगोचर है अिसलिअे बहुत खतरनाक भी है। पैंतीस साल के पहले, सयुक्त राष्ट्र अमेरिका में अेक स्थायी सेना भी नही थी। शान्ति प्रिय लोगो के बीच अिस अेक ही पीढी में सैनिकतावाद की यह असाधारण बढती, युवकों को सैनिक प्रशिक्षण देने से सीधा सीधा सबधित है। अगर हिन्दुस्तान भी अिसी पथ का अनुगामी बनेगा तो यह बडी ही शोकजनक बात होगी।

४ सहकारिता में प्रशिक्षण

सहकारिता की अुमग तथा दूसरो की आवश्यकता तथा अिच्छा पर विचार करना शांति का आधार है। सामुदायिक जीवन का आदर्श नअी तालीम द्वारा ही नही, बल्कि शिक्षा—चिन्तको द्वारा भी समग्र रूप में स्वीकृत हुआ है। सामाजिक कार्मों की व्यवस्था

के लिअे सारे कार्यक्रम अपने तरीके और परिणाम में अहिंसात्मक ही होने चाहिये। कअी स्कूल और कालेजो में हम देखते है कि 'स्वशासन' के कार्यक्रमो के औपचारिक सविधान पर जोर दिया जाता है, अिसके अनुसार दलीय आधार पर व्यर्थ स्थान मान के ख्याल से चुनाव लडे जाते है। ये चीजें सामुदायिक जीवन का सार नही है वल्कि अुसके निरर्थक अश है। अिसके बदले अपने दैनिक काम को स्वय सभालने की ताकत जड से ही निर्मित करने का प्रयास क्रम-क्रम से होना चाहिये। शाला के सामुदायिक जीवन के और सेवा के वास्तविक और आवश्यक हिस्सो को चलाने की व्यवस्था को जानी चाहिये। अिन व्यवस्थाओ को समाज के शत प्रतिशत सदस्यो की सम्मति मिलनी चाहिये। बहुमत के आधार पर किसी व्यवस्था का निर्णय करना ठीक नही होगा। पारस्परिक सहकार के तौर पर काम को करा लेने की बात पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये, सेवा और स्थान मान के तौर से नही। अध्यापको का कर्तव्य है कि अिन सिद्धान्तो को व्यवहार में ले आने का तरीका वे अख्तियार करे और पूर्व-बुनियादी से लेकर अूपर के स्तर तक के सभी बच्चो के लिअे अुसे अुपयोगी बनावे।

५. निर्भयता

शान्ति का रास्ता निर्भयता का रास्ता है। छोटे बच्चे पराक्रम, धीरज और मानवीय अुत्साह से आकर्पित होते है। साहसिकता की तारीफ करने की अुनकी स्वाभाविक वृत्ति को युद्ध के साहसी वीरो की तरफ ही नही वल्कि शान्ति के वीरो की तरफ भी सतेज ले जाना चाहिये। अिससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि अुन्हे पराक्रम के लिअे बढ़ावा देना चाहिये—जैसे शिबिर के लिअे जाना, किसी ग्राम की पूरी जिम्मेदारी सभालना, रात को अकेले बाहर जाना आदि। अुनको चाहिये कि नैतिक धैर्य को भी सीखें। मित्र और पडोसियों का सामान्य मत खिलाफ होने पर भी जो चीज सही है अुसके समर्थन में अकेला निश्चल खडे रहने की ताकत अुनमें होनी चाहिये। ये दोनो तरह के धैर्य किसी भी शक्ति शाली की अहिंसा शक्ति के आवश्यक आधार है। वे विश्वास पर आधारित है। आखिर, बच्चे भी तो अपने बडो की जिन्दगी और मिसालो से ही अुन नैतिक और आध्यत्मिक मूल्यो को सीख सकते है जो धीरज के आधारभूत होते है।

६. करुणा

शान्ति के कार्यकर्ता को स्थिरता और पूरी विशालता के साथ अपने अन्दर कारुण्य का विकास करना चाहिये। अिसका प्रशिक्षण बचपन से स्कूल और घर में शुरू होना चाहिये। अपने पडोस के हर अेक सामाजिक दल के अन्य बच्चो के साथ समानता के वातावरण में सभी बच्चो का मिलना शक्य होना चाहिये। हो सकता है कि कुछ घरो से अिसका विरोध हो, लेकिन अगर शिक्षक कोशिश करे तो अच्छा सहयोग भी मिल सकता है। हिन्दुस्तान व दुनिया की दूसरी जातियो के लोगो के बारे में, दूसरी जबान के बारे में तथा दूसरे धर्म के बारे में अुचित शिक्षण देने का भी अिसमें प्रमुख स्थान है। लेकिन अैसे शिक्षणो से फायदा तभी है जबकि वह शिक्षण दैनिक जीवन के सही सबध के साथ दिया जाय। बच्चो के विकास और अुम्र के योग्य सेवा के कार्यक्रम बनाने से भी बच्चो में करुणा की भावना का विकास करने में सहायता मिलेगी। युवक और प्रौढो को भी

(शेपाश पृष्ठ ९४ पर)

आगे के काम का पहला कदम

ता २५ से २८ ८-५९ तक सेवाग्राम में सर्व सेवा सघ की प्रवन्ध समिति की और हि ता. सघ की जो सयुक्त बैठक हुओी, अुसमें नओी तालीम के आगे के काम के बारे में प्रारभिक तौर पर ये निर्णय किये गये –

तालीमी सघ का सर्व सेवा सघ में सगम हो जाने के बाद सर्व सेवा सघ का यह कर्तव्य हो जाता है कि अपने सारे कार्यक्रम को नओी तालीम की दृष्टि से सोचे। आज जो समाज के वर्तमान मूल्यों को वदल कर नये मूल्यों की स्थापना करने का कार्यक्रम हमने लिया है वह तभी सफल हो सकता है जब कि सारे समाज का विचार बदले, व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आये और फिर वे व्यक्ति समाज के परिवर्तन में जुटें। यह सारा काम ही नओी तालीम का है। अिसलिअे सर्व सेवा सघ का आगे का सारा कार्यक्रम नओी तालीम का ही हो जाता है।

सगम का जो प्रस्ताव हमने पास किया और अुसमें जो अुद्देश्य स्वीकार किये, चालीसगाव में हमने अिस सबध में जो कुछ निर्णय, निश्चय लिये अुसके सदर्भ में हम फिलहाल आगे का कार्यक्रम निम्न प्रकार रखें–

१ अेक नओी तालीम परिसवाद का आयोजन आगामी नववर मास में किया जाय। वह सवाद चार दिन का हो। श्री राधाकृष्णन् अुस परिसवाद का आयोजन कर। अुस परिसवाद में नओी तालीम के सभी पहलुओ पर विशदरूप से चर्चा हो।

२ देश के प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों का अेक परिषद् विनोवाजी की सुविधा के अनुसार अुनके पास बुलायी जाय।

३ प्रादेशिक स्तर पर भी अिसी प्रकार की परिषद् और गोष्ठी का आयोजन हो जिससे नओी तालीम की दृष्टि साफ हो और शिक्षा में दिलचस्पी रखने वालो के साथ सपर्क स्थापित हो सके।

४ विशेष रूप से शहरों में अभिभावकों का मडल स्थापित हो। अुस मडल के द्वारा अुनमें नओी तालीम के विचार को स्पष्ट किया जाय। विशेष रूप से यह दृष्टि रखी जाय कि शिक्षण की जिम्मेदारी राज्य से अधिक अुन लोगों की है और शिक्षण का काम घर और समाज के अच्छे वातावरण बनाने से ही अच्छा होगा।

५ अगले सर्वोदय सम्मेलन के समय ही–सुविधा के अनुसार सम्मेलन के पहले या वाद में–नओी तालीम का सम्मेलन भी बुलाया जाय।

६ नओी तालीम पत्रिका चालू रहे।

७ श्री मार्जरी बहन से अनुरोध किया जाय कि अग्रेजी भूदान के सपादन के काम में पूरी मदद करे।

८ आज सारे देश में अैसे विचार के लोग हैं जो अपने बच्चों को नओी तालीम ही देना चाहते है। सर्व सेवा सघ की यह जिम्मेदारी हो जाती है कि अुसकी व्यवस्था करे। अत हर प्रदेश में सघ को नओी तालीम के केन्द्रो का आयोजन करने का प्रयत्न करना चाहिये।

९ चुने हुअे ग्रामदानी गाव और ग्राम निर्माण क्षेत्र में समग्र नओी तालीम का काम शुरू किया जाय और अुसके लिअे कार्यकर्ता जुटाये जाय।

अुपरोक्त कार्यक्रम के सयोजन का काम सर्व सेवा सघ को सीधे ही करना होगा,

लेकिन सारे देश में रचनात्मक कार्यकर्ता और चनात्मक सस्थायें फैली है । सर्व सेवा सघ की खादी ग्रामोद्योग समिति ने भी पूसा रोड की बैठक में जो अभिप्राय जाहिर किया था, अुस के अनुसार खादी ग्रामोद्योग सस्थाओ को भी नओी तालीम की ओर मोडना है । निम्न कार्यक्रम अुस अुद्देश्य को पूरा करने के लिअे और नओी तालीम की दृष्टि लाने के लिअे लेना चाहिये ।

१ हर रचनात्मक कार्यकर्ता अेक घटा शरीर श्रम करे और अेक घटा किसी न किसी को पढाये।

२ रचनात्मक सस्थाओ में कही भी भगी न रहे और सब कार्यकर्ता स्वय सफाओी का काम करे ।

३ हरेक सस्था में श्रमिक वर्ग है। काम के घटों में ही अेक घटा अुनके शिक्षण के लिअे रखा जाय ।

४ सस्थाओ में जहा बडी परिवार अेक जगह रहते है वहा बच्चो के लिअे नओी तालीम पद्धति की बालवाडी का आयोजन सस्था की ओर से किया जाय ।

५ सस्थाओ में जहाँ कार्यकर्ता परिवार अेक साथ या आश्रम पद्धति से रहते है, वहाँ अभिभावक मडल कायम किये जाय और अुनके जरिये अभिभावकगण मिलकर अपने तथा बच्चो के विकास के लिये, नओी तालीम की दृष्टि से सोचें ।

६ सस्थाओ में स्वाध्याय का आयोजन हो । दैनिक समाचार भी सुनायें जायें ।

प्रबध समिति आशा करती है कि अितना कार्यक्रम शुरु किया जायगा तो अुससे सहज शक्ति बढेगी और आगे भी नित्य नओी तालीम का रास्ता प्रशस्त होगा ।

(पृष्ठ ९२ का शेषाश)

सेवा के मौके मिलने चाहिये जिससे अुनमें सही अुत्साह और आत्मानुशासन अुमड अुठे । साक्रमिक रोग, दुर्घटनाअें और प्राकृतिक विपत्तिया आन पर, युवक व प्रौढो को सेवा के मौके दिये जा सकते है । मडलो ने सर्वोदय पात्र के कार्यक्रम का अिस तरह की सेवावृत्ति के दृष्टातचित्र के रूप में खास जिक्र किया । अुसकी मान्यता है कि अुपरोक्त प्रकार की सेवाओ में किशोरो को प्रोत्साहन देन और अुन्हें अुनमें नियुक्त करन से प्रौढ जीवन में पूरे शाति सेना के काम में लग जान की तरफ अुनकी वृति बढेगी ।

"नअी तालीम" के नियम

१ "नअी तालीम" अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक चन्दा चार रुपये है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी पी. से मगाने पर ६२ न पैं ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२ किसी भी माह से पत्रिका के ग्राहक बन सकते है। अेक साल से कम अवधि का चन्दा स्वीकार नही किया जाता।

३ पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहको को भेज दी जाती है। माह की १५ तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरत हमें लिखे।

४ तीन माह से कम अवधि के लिअे अपना पता बदलवाना हो तो ग्राहक अपने डाकखाने से ही अिसका अितजाम करा ले तो बेहतर होगा।

५ चन्दा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गाव का नाम, डाकखाने का नाम, तहसील, जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरो में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पता पर पत्रिका नियमित पहुँचने मे विशेष कठिनाअी होती है।

६ जिन ग्राहको को चन्दा रकम की रसीद की आवश्यकता है, वे कृपया चदा भेजते समय ही हमें सूचित करे।

७ "नअी तालीम" सबधी सारा पत्र-व्यवहार, प्रबधक, "नअी तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहको के पत्र या शिकायत पर अुचित कार्रवाअी करने में विशेष विलब की सभावना होती है।

८ पत्र-व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक सख्या का अुल्लेख कर सके तो विशेष कृपा होगी।

प्रबधक,
"नअी तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बबअी राज्य.

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

	मूल्य रु. न. पै.
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	
१. शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१–००
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनों की रिपोर्ट	
२. बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ. जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट)	१–५०
३. समग्र नअी तालीम	२–७५
४. आठवा न. ता. सम्मेलन विवरण	१–२५
५. नवा " " "	०–६३
६. दसवां " " "	०–७५
७ ग्यारहवा " " "	१–००
८. बारहवा " " "	१–५०
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	
९ प्रौढ़ शिक्षा का अुद्देश्य (शाता नारुलकर और मार्जरी साअिक्स)	०–७५
१०. जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर)	१–२५
अलग-अलग विषयों पर पुस्तके	
११. मूल अुद्योग : कातना (विनोबा)	०–७५
१२. खेती शिक्षा (भिसे और पटेल)	१–००
पाठ्यक्रम की पुस्तके	
१३. आठ सालो का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१–५०
१४. अुत्तर-बुनियादी शिक्षाक्रम (संक्षिप्त)	०–२५
१५. पूर्व-बुनियादी शिक्षको की ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम	०–६३
अन्य पुस्तकें	
१६. भारत की कथा (अभिनय तथा संगीत)	०–५०
१७. नअी तालीम का आयोजन	०–०६
१८. सेवाग्राम—गाधीलोक	०–३१
१९. सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो राअीस)	०–०६
नये प्रकाशन	
२०. शिक्षकों से (विनोबा)	०–२५
२१. शांति-सेना का विकास	०–३१
२२. विद्यार्थियो से (विनोबा)	०–२५
२३. ग्राम स्वराज्य नअी तालीम	१–००

नोट–१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये पैसे पर प्राय. ६ नये पैसे के हिसाब से डाक खर्च लगेगा। अिसके अलावा वी. पी. या रजिस्ट्री से मगाने पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

नोट–२. प्रत्येक ऑर्डर के साथ अेक चौथाअी रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक:– श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम।

मुद्रक:– श्री. द्वारका प्रसाद परसाअी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

संपादक
देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ८] अक्तूबर १९५९ [अंक : ४

"नअी तालीम" अक्तूबर १९५९ : अनुक्रमणिका

"नअी तालीम" के नियम

१ 'नअी तालीम' अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक चन्दा चार रुपये है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी पी से मंगाने पर ६२ न पै ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२ पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दी जाती है। माह की १५ तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरंत हमें लिखें।

३ चंदा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गांव का नाम, डाकखाने का नाम, तहसील, जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पतों पर पत्रिका नियमित पहुँचने में विशेष कठिनाअी होती है।

४ 'नअी तालीम' संबंधी सारा पत्र व्यवहार, प्रबंधक, "नअी तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहकों के पत्र या शिकायत पर अुचित कार्रवाअी करने में विशेष विलंब की संभावना होती है।

५ पत्र-व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक संख्या का अुल्लेख कर सके तो विशेष कृपा होगी।

प्रबंधक,
"नअी तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बंबअी राज्य

नई तालीम

वर्ष ८] अक्तूबर १९५९ [अंक ४

बापू

महीन भर में दस साल पूरे हो जायगे गाधीजी के जीवन का अत हुअे। वे पक्की अुमर के थे, लेकिन अुनमें जीवन शक्ति भरपूर थी और काम करने की शक्ति अपार थी। अचानक अेक हत्यारे के हाथो अुनका अन्त हुआ। भारत को धक्का पहुँचा और दुनिया दुखी हुअी, और हम लोगों के लिअे, जिनका अुनसे ज्यादा निकट सबध था, अुस धक्के और अुस दुख को सहना कठिन हो गया। फिर भी, शायद यही अक अुचित अत था अैसे शानदार जीवन का, और अुन्होने जैसे जीकर वैसे ही मरकर भी अुसी काम को पूरा किया, जिसमें अपने आपको लगा रखा था। अुम्र के साथ-साथ शरीर और मन से अुनका धीरे धीरे ढलना हममें से किसी को अच्छा न लगता। और अिस तरह, आशा और सफलता के दमकते हुअे सितारे की भाति, जिस राष्ट्र को अुन्होन आधी सदी तक गढा और सिखाया था, अुसके पिता के रूप में वे जिय और मरे।

अुन लोगो के लिअे, जिन्हें कि अुनके बहुत-से कामों में कुछ में अुनके साथ रहने का सौभाग्य रहा है, वे सदा नौजवानो की सी शक्ति के प्रतीक बने रहगे। हम अुनकी याद अेक बूढे आदमी के रूप में नहीं करेंगे, बल्कि अेक अैसे व्यक्ति के रूप में करग जो वसत की सजीवनी लेकर नये भारत के जन्म का प्रीतीनीध बना। अुस नअी पीढी के लिअे, जिसका अुनमें निजी लगाव नही हो पाया, वे अेक परपरा बन गये हैं, और अुनके नाम और काम के साथ न जाने कितनी कहानिया जुड गयी हैं। जीते समय वे बडे थे, मरने पर और भी बडे हो गये हैं।

मुझे खुशी है कि भारत सरकार अुनके लेखो और भाषणो का पूरा सग्रह प्रकाशित कर रही है। अैसे सग्रह में महत्व की और बिना महत्व की या आकस्मिक चीजा का मिल-जुल जाना अनिवार्य है। फिर भी, कभी-कभी आकस्मिक शब्द ही

आदमी के विचारों पर ज्यादा रोशनी डालते हैं, बनिस्वत बहुत सोचे-विचारे लेख या कथन के। अुनके लिअे जिन्दगी अेक समूची चीज थी—बहुत से रंगों के अेक झीने बुने हुअे वस्त्र की भांति। किसी बच्चे से दो शब्द बोल लेना, किसी पीडित को हलके से सहला देना अुनके लिअे अुतनी ही बडी बात थी, जितनी कि ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने का कोअी प्रस्ताव।

श्रद्धा की पूरी भावना से हम अिस काम को अुठायें, ताकि आगे आनेवाली पीढियों को कुछ झांकी मिले हमारे अिस प्यारे नेता की, जिसने अपने प्रकाश से हमारी पीढी को आलोकित किया, और जिसने हमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता ही नहीं दिलायी, बल्कि हमें अेक अैसी दृष्टि भी दी, जिससे हम अुन गहरे गुणों को पहचानें, जो आदमी को बडा बनाते हैं। आनेवाले युगों के लोग अचरज करेंगे कि किसी जमाने में अेक अैसे महापुरुष ने हमारी भारत भूमि पर पग नापे थे और अपने प्रेम और सेवा से हमारी जनता को ही नहीं, बल्कि सारी मनुष्य जाति को तर किया था।

मैं यह दारजीलिंग में लिख रहा हूं, और विशाल कांचनजंघा हमारे सामने अूंचा खडा हुआ है। आज सबेरे मैंने गौरीशंकर—अेवरेस्ट—की झलक देखी थी। मुझे अैसा लगा कि गौरीशंकर और कांचनजंघा की प्रशांत शक्ति और नित्यता कुछ अंशों में गांधीजी में भी विद्यमान थी।

दिसंबर २७, १९५७ (संपूर्ण गांधी वाङ्मय से) —जवाहरलाल नेहरू

जो प्रकाश स्वतंत्रता प्राप्ति में हम लोगों का नेतृत्व करता रहा, वह अैक्य प्राप्ति नहीं करा सका, परन्तु वह प्रकाश बुझा नहीं है। वह *अभी प्रज्वलित है और जब तक विजयी न हो जायगा, जलता ही* रहेगा। मेरा विश्वास है कि अिस देश का भविष्य अत्यंत महान है, तथा यहां अैक्य अवश्य स्थापित होगा। जिस शक्ति ने संघर्ष काल में हम लोगों का नेतृत्व करके लोगों को स्वतंत्रता प्राप्त करायी वही शक्ति हमें अुस लक्ष्य तक भी ले जायगी जिसके लिअे महात्माजी अन्त तक सचेष्ट रहे और जिसके कारण अुन्हें दुर्घटना का शिकार होना पडा। जिस प्रकार हमने स्वतंत्रता प्राप्त की, अुसी प्रकार हमें अैक्य प्राप्ति में भी सफलता मिलेगी, भारत स्वतंत्र और संघटित रहेगा। देश में पूर्ण अैक्य होगा तथा राष्ट्र अत्यंत शक्तिशाली होगा।

—अरविन्द

शिक्षकों के बीच

विनोबा

जब अिन्सान का दिमाग ठंडा और दिल गरम रहता है, तब वह तरक्की करता है। दोनों ठंडे हो तो सारा मामला ही ठंडा हो जायेगा। कुछ भी बाकी नहीं रहेगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों के दिल और दिमाग दोनों ठंडे होते हैं, और नअी पीढ़ी के दोनों गर्म होते हैं। और दोनों के बीच का फ़ासला बहुत बढ जाता है। लेकिन पुरानी पीढ़ी का ठंढा दिमाग और नअी पीढ़ी का गरम दिल ये दोनों अिकट्ठे हो जायें तो समाज की तरक्की की रफ्तार बहुत बढेगी। और दोनों के बीच का फ़ासला कुछ कम हो जायेगा। होश भी हो और जोश भी हो। होश तब होता है जब दिमाग ठंढा रहता है। और जोश तब होता है जब दिल गरम होता है। सवाल यही है कि यह हमें कैसे सधे? पुरानी पीढ़ी को यह हर्गिज नहीं सधेगा। कोशिश करने पर भी वे अपने दिल को गर्म नहीं कर सकेंगे। अुनका दिमाग भी ठंढा होता है और आखिर में जिस्म भी ठंढा पड जाता है। आखिर बूढे को गर्म कैसा रखा जाये यही मसला रहता है। अिसी तरह नअी पीढ़ी को अपना दिमाग ठंढा रखना मुश्किल मालूम होता है। यह अुस्तादों का काम है कि पुरानी पीढ़ी का दिमाग नअी पीढ़ी का दिल दोनों को जोड दें; दुनिया को और समाज को अुस्तादों की यही गरज है। अुस्ताद न रहे तो पुरानी और नअी पीढ़ी को जोडने वाला कोअी नहीं रहेगा। अुस्तादों पर यह जिम्मेवारी है कि पुरानी पीढ़ी के तजुरबे नयी पीढ़ी के पास पहुंचा दें और नयी पीढ़ी का जोश कायम रखें।

हमारी हालत यह है कि हम पहले से आज तक विद्यार्थी भी रहे और लगभग शुरु से आज तक अुस्ताद भी रहे हैं। दोनों रिश्ते हम में अिकट्ठे हुअे हैं। हम हर रोज कुछ-न-कुछ सीखते ही रहते हैं। कअी जबानें, कअी विद्याअें, कअी शास्त्र हमने सीखे हैं और सीखते रहते हैं। जैसे सीखते रहते हैं वैसे ही सिखाते, समझाते भी रहते हैं, समाज को रोज नअी नअी चीजें देते रहते हैं। अगर समाज को कोअी नअी चीज नहीं दी तो हमें महसूस होता है कि क्यों जीअें। आज के दिन के लिअे अपने पास नया विचार होना चाहिये, यह मेरा तजुरबा है। मैं अुस्तादों को यह समझाना चाहता हूँ कि मेरे तजुरबे का फ़ायदा अुठावें। अुस्तादों को आसमान में खूब घूमना चाहिये। कोअी अुस्ताद कहे कि मैं रोज दस मील घूमता हूँ तो मेरी तरक्की होगी तो मैं कहूंगा वह अच्छा अुस्ताद है। विद्यार्थी को पढाने के लिअे अुस्ताद को भी कुछ पढना चाहिये। लेकिन पढने से भी ज्यादा सोचना चाहिये। जितने पढ़ें अुससे दस गुना सोचना चाहिये। सोचने के लिअे सब से ज्यादा मदद अगर किसी से मिलती है तो आसमान से। कुरान शरीफ में और अुपनिषदों में आया है कि दुनिया की सबसे बडी जीनत शोभा जो है वह आसमान में देखने को मिलती है। कुरान-शरीफ में सात आसमानों का जिक्र है। जो पहला आसमान है वह बहुत दूर है। शायद ही अैसा कोअी शख्स होगा जिसका दिमाग वहाँ पहुँचेगा। लेकिन जो नजदीकवाला आसमान है अुसका भला और मदद हमें मिलती है। आसमान से खूब नये-नये विचार मिलते हैं।

यह हमारा तजुरबा है। अिसीलिअे हमें कभी गुस्सा नही आता है। कभी लगे कि क्या किया जाये तो हम झट घूमने चले जाते हैं। किसी की जिंदगी में कोअी दु:ख हो, किसी से बनती न हो, किसी वजह से दिल में सुकून शाति न हो तो घूमने निकल पडो और जरा खलकत में जाकर देखो। खुले आसमान से दिल प्रसन्न हो जाता है, नये-नये विचार सूझते हैं और दिल में भरे हुअे सारे गलत खयाल वहा से भाग जाते हैं। आसमान के साथ ताल्लुक अेक बहुत बडी बात है। अिसलिअे आप रोज समाज से जरा दूर घूमने जाअिये। आठ-दस मील घूमना तो मामूली बात होनी चाहिये।

जिस तरह तस्वीर खीचने वाला तस्वीर खीचने के लिअे नजदीक जाता है लेकिन जरा दूर जाकर देखता है, तब अुसे पता चलता है कि तस्वीर में क्या खूबिया और खामिया है, कहाँ फर्क करना जरूरा है। वह दूर जाकर नही देखेगा, तो तस्वीर अच्छी नही बनेगी। अुसी तरह अुस्तादो को समाज की सेवा करनी है, लेकिन चितन के लिअे जरा दूर जाना चाहिये। अुस्तादो का काम है कि विद्यार्थी की सेवा करे। बुजुर्गों के तजुरबे अुनके पास पहुँचायें। लेकिन विद्यार्थी अुन पुरखो से बँध न जाये, यह भी देखना होता है। नही तो हमारे पुरखाओ ने जो कहा, अुससे हम अेक कदम भी आगे जाने के लिअे तैयार नही, अैसी हालत होगी। किसी के दिमाग पर किताबो का बोझा पडा तो अुससे बदतर बोझा कोअी नही हो सकता है। अल्ला बचाये अुन्हे। हम अपने साथियो से चर्चा कर रहे थे कि अभी तो हम अपने सामान का बोझा कधे पर अुठाते हैं लेकिन सिर पर क्यो न अुठायें। तो किसी ने कहा कि सिरपर बोझ अुठाने से दिमाग पर बोझा पडता है। मैंने कहा कि सामान का बोझ सिरपर अुठाये तो दिमाग अुतना नही दबेगा जितना किताबो के बोझ से दबेगा। फलानी किताब अच्छी है तो पढो लेकिन अुसका बोझ क्यो अुठाते हो? पुराने लोगो ने जो तजुरबे किये, वे ही अगर तुम्हे और हमें करने होते तो भगवान् हमें यह जन्म क्यो देता? अगर कोअी नयी चीज करने की बाकी नही होती तो वह हमें जन्म ही नही देता। लेकिन अुसने हमें जन्म दिया है और आगे भी बच्चे जन्म लेने वाले हैं तो हमें नयी चीज खोजनी चाहिये। पुराने तजुरबो का फायदा जरूर अुठाना चाहिये। नही तो युक्लीडने जो खोजें की व सब हमी को फिर से करनी पडेंगी। यह तो हद दर्जे की जहालत, मूर्खता होगी। अिसलिअे वह नही करनी है। लेकिन पुराने लोगो से हम अेक कदम भी आगे न बढें, यह गलत है।

अेक मुसलमान भाअी बडी श्रद्धा से कुरानशरीफ पढते थे, अुसके मानी जानते नही थे, अब जानने की जरूरत भी महसूस नही करते थे। अुनके गुरू ने अुन्हे मत्र दिया था कि कुरान पढो तो फिर और कुछ पढने की जरूरत नही है। जो पढते हो अुसके मानी भी जानने की जरूरत नही है। कुरान बस है। अुसके अिफ्तेराह [आरभ] में 'बिस्मिल्ला हि रहमानि र्रहीम' आता है और आखिर में 'अन्नास—' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स', लो बस हो गया। अिससे ज्यादा जानने की कोअी जरूरत नही है। अेक मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढाने वाला भी यही कहता है। कुरान के सुरे जुमा में गधे की

मिसाल दी है, जिसपर किताबें लादी हुअी हैं। जो किताबों का बोझ अुठाता है लेकिन अुसपर अमल नहीं करता है, अुसको गधे की मिसाल लागू होनी है। अिन्सान को किताबों की मदद जरूर होती है लेकिन अुस मदद की भी अेक हद होती है। हम अुस हद से ज्यादा अुसमें फँस गये तो खतम हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पडता है कि 'किताबें डाल पानी में।' यह जो विचारों की गुलामी है अुससे बढकर कोअी गुलामी नहीं हो सकती है। अिसलिये हमें अपना दिल और दिमाग बिलकुल आजाद रखना चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुरबों का फायदा न अुठायें।

यह सब करना अुस्तादों का काम है। अिसके लिअे अुन्हें जरा दूर जाकर देखना चाहिये। अुसी के लिअे आसमान में घूमना चाहिये। अपना जो कुछ काम चलता है, अुसे भूलकर ताजा दिमाग लेकर घूमने जाअिये। अपना घर, बच्चे, स्कूल, अिम्तहान अेवं पाठ्य पुस्तके आदि सब भूल जाअिये। अेकदफा अपने सारे लेबल छोडकर घूमने निकलिअे। मैं किसी का भाअी, किसी का बाप, किसी का अुस्ताद, किसी का किरायेदार यह सब छोडो और सिर्फ 'मैं हूँ' अितना ही याद रखो। 'फलां हूँ'–यह सब 'फलानेपन' पटक दीजिये। 'मैं हूँ' अितना लेकर आसमान में घूमिये। और दुनियाँ में क्या हुआ है, यह सब दूर रखो। अिन्सान के पाव में यह अेक जंजीर-बेडी है, जो कसकर बाधी हुअी है जो अुसे अिधर अुधर जाने नहीं देती है। सोचने नहीं देती है, कुछ भी करने नहीं देती है। अिसलिअे अिन सब से जरा दूर जाअिये, घर ससार से, सियासत से और अिस जिस्म से भी अलग होकर देखो तब पता चलेगा कि "मैं कौन हूँ।" मेरा रूप क्या है, जबतक हमने नहीं पहचाना कि मैं कौन हू, तब तक हम विद्यार्थी भी नहीं बन सकते हैं, तो अुस्ताद क्या बनें? अिसलिअे आप अुसपर गौर कीजिये कि मैं कौन हूं। फलाने का बोझ सिर पर रहे तो काज नहीं होगा। जब तक तुम खुद को नहीं पहचानते हो तबतक क्या सिखाते हो। मैं कौन हू यह सोचो और 'मैं' पर जितने पर्दे आगये हो, अुन सब को हटा दो। तब पता चलेगा कि मैं कौन हूँ। दुनिया के झमेलो से, जिम्मेवारी से जरा अलग होकर अपने को पहले आसमान में ले जाने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, वहां तो सिर फूट जायेगा। बल्कि मैं कहता हूँ कि अपने को नजदीकवाले आसमान में ले जाओ।

आप कहेंगे कि यह विनोबा हम पर क्यों नाहक जिम्मेवारी डाल रहा है। हमारे लिअे तो सब अूपर से लिख कर आता है कि क्या पढाना, कितना पढाना। हफ्ते में पंद्रह घंटे अंग्रेजी, बारह घंटे गणित, नौ घंटे अितिहास भूगोल, यह सारा तय होकर आता है और आखिर अुसी के मुताबिक विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है। शिक्षण मंत्री से बात करते हुअे मैंने कहा था कि आपको किसने बताया कि विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है। परीक्षा तो अुस्तादो की लेनी होती है, विद्यार्थियों की नहीं। विद्यार्थी फेल नहीं होता है, अुस्ताद फेल होता है। अेक विद्यार्थी बारह साल की अुम्र में आपके पास आया, अुसने सालभर आपके पास पढा और तेरह साल का बना तो वह तो पास ही है। अगर वह ग्यारह साल का हुआ होता तब तो फेल होता। लेकिन वह बढ गया,

(शेषांश पृष्ठ १०५ पर)

शिक्षा में आमूल क्रांति

धीरेन्द्र मजूमदार

सर्व सेवा संघ ने चालीसगांव में यह प्रस्ताव किया था कि ३० जनवरी १९५९ से सर्व सेवा सघ के सारे काम केन्द्रीय सस्था या केन्द्रीय निधि के आधार पर नही हो, जितने भी काम हो, गाव के प्रत्यक्ष निर्माण काम के अलावा, सब सर्व जन आधारित हो। जनता की अपनी शक्ति से सर्व सेवा सघ का काम खडा हो। ३० जनवरी के बाद सर्व सेवा सघ किसी केंद्रीय निधि या साधन से अपना काम नही चलाये, १९५८ के अगस्त माह में यह प्रस्ताव हुआ। खादीग्राम में हमने प्रयोग किया। नअी तालीम का काम सस्था में बाधकर चले और सरकार अुसको पोषण दे, यह काम नही हो सकता था। हमें अनुभव हुआ कि केन्द्रीय सस्था बनाकर शिक्षा का काम करे और जनता से अुसको पोषण मिले, यह भी सभव नही था। यह मे आज के सदर्भ में कह रहा हू। अिसी देश में नालन्दा जैसा विश्व-विद्यालय भी रहा है जहा १० हजार विद्यार्थी रहकर खाना-कपडा वही से प्राप्त कर शिक्षण पाते थे और १० हजार रिसर्च करने वाले भी थे जिन सब लोगो का पोषण जनआधारित ही होता था। लेकिन आज सदर्भ बदल गया है। आज के सदर्भ में यह सभव नही है कि अेक बडी सस्था को अुसके आसपास की जनता के आधार पर चला सकें। हम चाहते थे कि हमारे सारे कार्यकर्ता नअी तालीम के काम को लेकर अुस सारे जिले में जिसमें खादीग्राम है या आसपास के जिलो में फैलकर काम करे। ध्वजा भाअी ने पूसा में जनता के अभिक्रम से काम किया है और वहा की जनता अपने पुरुषार्थ से अपना सारा काम चला रही है। अगर ये लोग वहा बैठें तो वहा का काम गहराअी में जा सकेगा। हम चाहते थे कि कोअी केंद्रीय सस्था न रहे। अिसी सिलसिले में लोगो के साथ शिक्षा की भी चर्चा की। गाव में जो अच्छे लोग हैं वे यह शिकायत करते हैं कि आज की शिक्षा से अुन्हे समाधान नही है, लेकिन अुसी शिक्षा में हम लोग अपने बच्चो को भेजते हैं। हमने कहा था कि गांव के सदर्भ में ही शिक्षा चले, वह ठीक तो है, लेकिन चलने लगे तो कोअी अपने बच्चो को नही भेजेंगे। लेकिन वर्तमान प्रणाली से जो असतोष है वह केवल गाव के लोगो को नही, बल्कि राष्ट्रपति से लेकर छोटे-छोटे आफिसर तक कहते हैं कि अिसे कोअी चला नही रहा है बल्कि वह चल रही है।

"वह चल रही है" ये शब्द मुझको बिहार के बुजुर्ग नेता स्वर्गीय श्री अनुग्रह बाबू ने बताये थे। जब मैंने पूछा कि आप लोग राष्ट्रपति से लेकर मिनिस्टर तक कह रहे हैं कि अिस शिक्षा से असन्तोष है तो अिसे चला कौन रहा है? तब अुन्होंने कहा था कि कोअी चला नही रहा हैं बल्कि चल रही है। आज शिक्षा के बारे में सामाजिक मान्यता क्या है, अिसका जब विश्लेषण करेंगे तो अनुग्रह बाबू की अिस कथन की सत्यता मालूम होगी। आज आप किसी लडके से पूछें, किसी लडके के पिता से पूछें कि आप क्यो पढा रहे हैं। तो जवाब मिलेगा कि नौकरी के लिअे। यानी पढना जो है वह अेक व्यापार है और पढाने में जो खर्च होता है वह अेक अिनवेस्टमेंट है। जिस तरह तिजारत में रुपया

लगाते हैं, कोअी तम्वाकू का व्यापार करता है, तो कोअी घी दूध का व्यापार करता है और अुसमें अपना पैसा लगाते हैं जिससे कि वह अधिक पैसा बना सके। अुसी तरह लडके को पढाने में भी लाग खर्च करते है क्योकि लडका पढने के बाद अधिक पैसा कमायेगा। जब अिस परिस्थिति का विश्लेपण करेंगे तो मालूम होगा कि शिक्षा-पद्धति के लिअे असतोष नही है बल्कि दूसरी चीजा के लिअे असतोप है। नेताओं का असतोप क्यो और जनता का क्यो, यह समझना चाहिये।

आज हमारे यहा साल में २० लाख लडके मैट्रिक पास करते है। मैट्रिक और नन-मैट्रिक मिला कर ४ लाख लडका को नौकरी मिलती है, और वह भी सरकारी, गैर-सरकारी सस्थाओ आदि सब को मिलाकर। मान ले कि खादी-ग्रामोद्योग सघ ३० लाख रुपये की खादी अुत्पादन करता है और ४ लाख रुपय की खादी विकती है तो विचार कोजिये कि खादी ग्रामोद्योग सघ की क्या दशा होगी और अुस तिजारत की भी क्या हालत होगी। आज लोग बच्चे को तिजारत के तौर पर पढाते हैं और वे समझते हैं कि पढन के बाद हमारी पारिवारिक स्थिति में सुधार होगा। अब सोचे कि अिस तिजारत की क्या हालत होगी। २० लाख लडके "अुत्पादित" होते हैं और ३-४ लाख लडको को नौकरी मिलती है या "विकते हैं।" अिस तरह आज हर साल १६ लाख लडके मालगुदाम में सडते हैं। लेकिन अिस मालगुदाम का माल केवल सडता ही नहीं है बल्कि बैठा-बैठा खाता भी है। यानी आज जनता का असतोप अिसलिअे नहीं है कि पढाओ में कोअी खराबो है बल्कि असतोप अिसलिअे है कि अुन्होंने अपने बच्चे को वेचने के लिअे जो माल बनाया है वह बिकता नही है यानी नौकरी नही मिलती है। १५-१६ लाख लडके बैठे रहते हैं और स्कूल कालेज में पढने के कारण अुनकी काम करने की शक्ति खत्म हो जाती है। मै अेक गाव, फतेहपुर में था। वह गाव अिस अिलाके में सबसे अच्छा है, तो वहा मैंने देखा कि अेक घर में अेक बारह साल का लडका है। स्कूल के अलावा जो समय अुसे मिलता है अुसमें और अितवार को वह घूमता रहता है। कोअी अुसे कुछ नही कहता। मैंने अुसके पिता से पूछा कि यह लडका घूमता है, काम क्यो नही करता है। अुन्होंने कहा–"वाह! यह तो पढता है, यह दूसरे काम में नही जा सकता है" हमने देखा है कि अुसी हैसियत के दूसरे सात साल के लडके को भैंस चराने का काम मिलता है। जो पढता है अुसको काम करना चाहिअे, यह मान्यता नही है। २० साल बाद जब वह खाली बैठेगा तो क्या होगा? कहा जाता है कि खाली दिमाग शैतान का घर है। लेकिन आज जो लोग बेकार बैठे हैं, जिन्हें कुछ काम नही है तो वे टिकट कलक्टर को नहीं पीटेंगे तो क्या करेंगे। आज का नौजवान निराश है और अुस निराशा के परिणाम-स्वरूप अुसके अदर सनिपात जो हो गया है अिसी के पागलपन से देश में अशाति का निर्माण होता है। अगर यही हालत रही तो और भी अशाति की वृद्धि होगी और जैसे-जैसे अशाति की वृद्धि होगी वैसे-वैसे दण्ड-शक्ति को मजबूत करने की आवश्यकता होगी और जैसे-जैसे वह मजबूत होगी वैसे-वैसे लोक-तन्त्र खत्म होगा और अधिनायकवादी तन्त्र फैलेगा। आज के नेता अिसी कारण चिंतित और असतुष्ट हैं।

आज जनता और नेता दोनों असंतुष्ट हैं। दोनों को असतुष्टि के कारण भिन्न-भिन्न हैं। किसी के असतोष का कारण शिक्षण-कला की खराबी नहीं है बल्कि शिक्षा की परिणति के कारण है। आज के पहले भी शिक्षा-पद्धति यही थी। अुस समय समाज में अितना बेकारी का अुत्पादन नही होता था, अितने लोग पढते लिखते नही थे। अिसलिअे मनुष्य को असतोष नहीं था। आज स्कूल कालेजों की सख्या बढती जा रही है और बढना ही चाहिये। कालपुरुष बैठा नही रहेगा। ५-७ साल में हर साल ५०-६० लाख लडके मैट्रिक पास कर लिया करेंगे। नौकरी ५-७ लाख लोगों को ही मिलेगी। आज देश के सामने जितनी सकट-कालीन समस्यायें है अुनमें सबसे सक्टपूर्ण समस्या यही है। समय आया है कि लोग अिसके बारे में सोचें। सवाल अुठता है, कौन सोचे? सोचना चाहिये। पहली बात आपको सोचनी होगी कि शिक्षा नौकरी के लिअे है या नागरिक का सास्कृतिक स्तर अूचा अुठाने के लिअे है। शिक्षा का अुद्देश्य प्रत्येक नागरिक को अेक बौद्धिक, सास्कृतिक वैज्ञानिक और नैतिक मनुष्य बनाने का है। अगर यह तय हो जाता है और हम कहते हैं कि यही शिक्षा का अुद्देश्य है तो दूसरा सवाल आता है कि शिक्षा किसके लिअे। देश के अदर राजतत्र खत्म हुआ और लोक-तत्र बढा। लोक-तत्र के नागरिकों को ज्यादा बुद्धि चाहिये, नही तो वे वोट कैसे देंगे? लोक-तत्र की स्थापना तो समाज के आगे बढने के कारण ही हुआे। शिक्षा अधिकाश लोगों के लिअे हुअी जिससे स्कूल गाँव-गाँव में खोले गये। शुरू में लोक-तत्र में यह था कि अमुक सम्पत्ति वाले ही वोट दे सकते हैं यानी सम्पत्ति के आधार पर वोट दिया जाता था। लेकिन आज बालिग मताधिकार हो गया है। स्त्री-पुरुष चाहे भूखे रहते हों लेकिन अुन्हें अपना प्रतिनिधि चुनना होगा। बालिग मताधिकार का माने है कि हरेक को समझ होनी चाहिये यानी अुनका सास्कृतिक और बौद्धिक स्तर अैसा होना चाहिये कि हर व्यक्ति समाज-कल्याण के लिअे विवेक से सोच सके।

तीसरा सवाल अुठता है शिक्षा कैसी हो? क्या स्कूल में भेजकर आज जिस तरह ६ घंटे पढाओ और ६ घटे होमटास्क तथा बाकी समय में खेल-कूद का कार्यक्रम है, वह चलेगा? अिस तरह क्या समाज का काम चल सकेगा? काम भी नही चलेगा और स्कूल भी अितने नही बन सकेंगे। अेक गाव में मैंने अेक मुखिया से पूछा कि आपके गाव में कितने लडके स्कूल में पढते हैं तो अुन्होंने कहा कि सब लडके पढते हैं। तब मैंने अुनसे लिस्ट मागी। लिस्ट के हिसाब से सिर्फ १३ प्रतिशत लडके ही स्कूल जाते थे। फतेहपुर में सिर्फ बालवाडी के बच्चों के लिअे २२ स्कूल खोलने होंगे। क्या यह सभव होगा या अुचित ही होगा कि स्कूल अलग और समाज अलग रहे।

आज दुनिया के शिक्षा-शास्त्री कहते हैं कि शिक्षा काम द्वारा होनी चाहिये। केवल भारत की बात नही बल्कि हाल में क्रुश्चेव साहबने भी कहा है कि काम द्वारा ही शिक्षा होनी चाहिये। हर गवर्नमेंट की शर्त है कि गाव में ५ अेकड जमीन देंगे तो स्कूल खोलेंगे। आज ५ अेकड जमीन कितने गाव में मिलेगी? क्या सभव है कि हर गाव में अलग से शिक्षा का कार्यक्रम हो और अलग साधन हो? अगर अैसा हो भी गया तो १८ वर्ष के बाद वे विद्यार्थी लेक्चर दे सकेंगे, अुत्पादन नहीं कर

सकेंगे। आज हमें बैठ कर तय करना होगा कि राष्ट्र की आवश्यकता क्या है। शिक्षा की दृष्टि से और राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति के लिअे शिक्षा का स्वरूप कैसा हो? आज की आवश्यकता है कि शिक्षा स्कूल की चहारदीवारी के अदर न होकर गाव में ही हो। आज दुनिया के शिक्षा-शास्त्री कहते हैं कि काम के माध्यम से शिक्षा होनी चाहिअे, नही तो ज्ञान गहराअी से नही मिलेगा। केवल किताब पढने से सेकेण्ड-हेंड 'नॉलेज" होती है। यह शिक्षा सागोपाग नही हो सकती। दूसरी बात यह कि हरेक आदमी को बालिग होने तक शिक्षा देना चाहिअ। राष्ट्रीय शिक्षा की बुनियाद अुसी आधार पर बनानी होगी। आज की परिस्थिति कहती है कि शिक्षा अेक्टीविटी के माध्यम से हरेक को मिलनी चाहिअे।

आखिर बेसिक और पोस्ट-बेसिक स्कूलो में क्या रहता है? अुद्योग होता है, जमीन भी अुसमें रहती है और थोडी-बहुत खेती भी होती है। ५ अेकड ही खेत क्यों? सरकार कहती है कि हर स्कूल को ५ अेकड जमीन चाहिअे लेकिन मैं कहता हू कि स्कूल में गाव भर का खेत होना चाहिअ। अिस युग में सब मानते हैं कि जिस तरह आज खेती होती है अुससे देश का पेट नही भरेगा। सारे खेतो की सयोजना करेंगे तो पेट भरेगा। प्लैनिग करनी होगी। सारे गाव की योजना बनानी होगी, जो गाववाले ही बनायेंगे। खेती, सडक, पानी की व्यवस्था, सिचाअी का प्रबन्ध, आदि की योजना बनानी होगी। कैसे औजार चाहियें, कितने हल चाहिये, कितने बखर चाहिय, आदि का हिसाब करना होगा। फिर योजना बनानी पडेगी कि हमारे गाव से कितनी चीजें बाहर भेजी जायँ और कितनी चीजें बाहर से मगायी जाय। अिस तरह जो योजना बनेगी अुसे गाव वालो को अमल भी करना होगा। अुसे अमल करने के लिअे कार्यक्रम होगा। यह कार्यक्रम बनाना शिक्षा का ही माध्यम होगा। जिसे जो शिक्षा लेनी होगी, अुसे अुस काम पर जाना होगा। गाव का जो कार्यक्रम है अुसमें ७ साल से ५० साल तक के लोग काम करते हैं। गाव में हर किस्म के लोग रहते हैं। शिक्षा-पद्धति का काम होगा कि वैज्ञानिक सयोजना और अुसके माध्यम से जो ज्ञान की बुद्धि गाव से अुपलब्ध होगी अुसका अिस्तेमाल करे। यानी शिक्षा का काम मालीगिरी का काम होगा। जगल में भी पेड रहते हैं। वे सब अपने आप अुगते हैं और बढते हैं। लेकिन खेत में पेड सिलसिलेवार ढग से लगाते हैं। माली का काम है खाद पानी आदि देकर अुसकी शक्ति को अधिक तेजस्वी बना देना। आज गाव जगल हो गया है अिसलिअे जगल को बगीचे में परिणत करना माली का काम है। गाव में आज खेती भी हो रही है, अुद्योग भी चल रहे हैं। लघु सरजाम कार्यालय भी खोले जा रहे हैं। सारे गाव की योजना बनाकर अुसको क्रमबद्ध करना है। शिक्षा-शास्त्रियो का काम है कि अुसे व्यवस्थित ढग से चलायें। किस तरह सात साल के बच्चो को, ९ साल के बच्चो को और १८ साल के नौजवानो को गाव के काम में शामिल करे, कहा किसका समुचित समाधान होगा, और फिर सम्मिलित रूप से किसको कितना ज्ञान दिया जा सकता है, अित्यादि बाते सोचनी हैं। विभिन्न स्तर के लोगो को विभिन्न काम दिया जा सकता है। अगर अैसा नही किया तो आज की शिक्षा-शास्त्रियो की माग और परिस्थिति की माग दोनों में से किसी की पूर्ति हम नही कर सकेंगे।

अब आखिरी और सब से महत्व का सवाल रह जाता है कि अुसे चलाये कौन ? अितना निश्चित है कि यह चलेगा नही, अिसे चलाना पडेगा। क्या अिसे सरकार चलायेगी। लेकिन मैं कहता हू कि सरकार नही चला पायेगी क्योकि मैंने जो शिक्षा पद्धति आपको बतायी, अुसे अगर सरकार चलान लगेगी तो अुसकी वही दुर्दशा होगी जो १८ साल के लडको की होती है जब अुन्हे जीवन-क्षेत्र में अुतरना पडता है। क्योकि अुन्होने तो सिर्फ किताबें पढी। हमे समझना चाहिये कि राज्य शक्ति से यह काम नही हो सकता है बल्कि जनशक्ति से ही हो सकता है। आज जनता अिसे कर भी रही है। जो अुनमें से कुछ अधिक जानते हैं वे शिक्षक होगे और फिर अुनसे जो अधिक जानता है अुनसे वे सीख लेगे। गाव वाले सरकार से कहेगे कि अितने लोग ही यहा रखे जाय। पुराने जमाने में गाव, गाव पुरोहित होते थे और कथा आदि कहते थे। कमण्डलु लेकर घूमनेवाले की पूर्ति सरकार करेगी, अितना हो सकता है। लेकिन सारी शिक्षा प्रणाली और अुसका सचालन जन शक्ति के द्वारा ही होगा। सैद्धान्तिक दृष्टि से भी सरकार द्वारा शिक्षा चलाना अनिष्टकारी है। पहले तो आप समझ ले कि सरकार अगर शिक्षा का नियत्रण करेगी तो लोकतत्र की हत्या होगा। लोकतत्र का मतलब है हरेक बालिग विचार कर राय दे और राय देकर तय करे कि देश की व्यवस्था कौन चलायेगा ? मान ले कि स्वतत्र पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी या और कोअी भी पार्टी निकले। पक्षनिष्ठा का मूल तत्व है कि अपने पक्ष को निरन्तर मजबूत करना और जनमत को अपने पक्ष में लाना। मेरा पक्ष ज्यादा रहे, मैंने यह मान कर स्कूल चलाया तो बचपन से पढाने के लिअे अैसी किताबें ही रखूगा। जिससे बच्चे आगे जाकर दूसरी बातें सोच भी नहीं सकेगे। अिसे अग्रेजी में ब्रेन-वाश करना कहते हैं। अपने रग के सिवा कुछ न रहे। अिस प्रकार की किताबें बनेंगी। आज धार्मिक लोग जिस तरह ब्रेनवाश करते हैं—अुत्तर भारत वाले कहते है कि रावण राक्षस था और अुसका पुतला जलाते है, अुसी तरह दक्षिण भारत में द्राविड लोग राम राक्षस है कह कर पुतला जलाते हैं—पक्षनिष्ठ लोग भी अैसा ही करेंगे। फिर पक्षनिष्ठ राजनीति में अगर सरकार के हाथ में शिक्षा रही तो लोकतत्र नही चलेगा, यानी अेक पक्ष की अधिसत्ता चलेगी।

अेक दूसरी बात है। क्या सस्थायें शिक्षा का काम चलायेगी ? अेक तो व्यावहारिक दृष्टि से यह कहा कि सारे गाव को ही स्कूल मानकर और अुसके सारे कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा चल सकेगी। दूसरे पहलू से भी शिक्षा की समस्या को समझना चाहिये। यह युग विज्ञान का है। अिस विज्ञान के युग में कुत्ते और खरगोश सारी दुनिया के अतरीक्ष की परिक्रमा करके आये हैं। आज अब कालपुरुष भी स्पुटनिक पर चढ कर चलेगा। पुराने जमाने में काल का परिवर्तन ५ हजार वर्ष में जितना होता था वह अब २५ वर्ष में हो जायेगा। जबतक सात साल का बच्चा शिक्षा लेकर २५ वर्ष का होगा तबतक काल और परिस्थिति बदल जायेगी और वह शिक्षा अुसके लिअे बेकार यानी पुरानी पड जायेगी। जो वर्तमान परिस्थिति है अुसके अनुसार शिक्षा देने लगें तो २५ वर्ष के बाद जीवन सघर्ष में कूदने पर वह देखेगा कि अुसकी शिक्षा आअुट आफ डेट (असामयिक) हो गयी है। तो फिर शिक्षा किसके हाथ में जानी चाहिये। जो भविष्यदर्शी होते हैं अुसके

हाथ में जानी चाहिये। जो यह समझ सकते हैं कि २५ साल के बाद कैसा समाज बनेगा, अुसी तरह का शिक्षण बच्चों को देना होगा। सरकार यह नहीं कर सकती है। सरकार बहुमत की होती है। क्रांतिकारियों का पक्ष अल्पमत का होता है। मैंने अिन दोनों पहलुओं को आप के सामने रखा। शिक्षा जनता चलायेंगी, सरकार नहीं चलायेगी। ३०० गांवों के सघन क्षेत्र में किस तरह से कदम अुठायें, अिस पर आपको विचार करना होगा। फिर धीरे-धीरे जो शिक्षा क्षेत्र में काम करते हैं वे चर्चा करेंगे और मार्ग-दर्शन करेंगे।

मान लीजिये कि ग्रामोदय-समिति है और अुसमें चार हजार की आबादी है। पहले दोनों स्तर की शिक्षा को लेंगे-प्रौढ शिक्षण और पूर्व स्कूल शिक्षण। तो हमारी ग्रामोदय समिति प्रौढ शिक्षा और पूर्व स्कूल शिक्षा यानी २ साल से लेकर ५ साल तक के बच्चों को शिक्षा और जो प्रौढ हो गये हैं जो स्कूल नहीं जा सकते हैं अुनकी शिक्षा। प्रौढों की शिक्षा की व्यवस्था अिस प्रकार होगी। गांव की सारी योजना बने और योजना के अनुसार काम करे और अुसमें जो वैज्ञानिक तत्व है अुसे अेक दूसरे को बताये, यह प्रौढ शिक्षण होगा। विनोबाजी अिसे महाविद्यालय कहते हैं।

छोटे बच्चों के लिअे व्यवस्था करनी होगी। दो साल के बाद बच्चे गोद से अुतर कर खेलने वाले हो जाते हैं और ५-६ साल के बाद वे स्कूल जाने लायक होते हैं। अिस बीच वाली अुम्र की कोअी व्यवस्था नहीं है। अिस अुम्र में जो संस्कार पड़ेगा, वही जीवन भर रह जायेगा। जो गांव अपना विकास चाहता है अुन्हें तुरन्त अिस अवस्था की शिक्षा को हाथ में लेना होगा। २ साल से ६ साल तक के अेक भी बच्चे न हों जो बालवाड़ी में न रहे। गांव के लोगों को अिसके बारे में सीखना होगा। गांव-गांव में जो बहनें और बहुअें हैं अुनको शिक्षा देनी होगी। अम्बर का काम सिखाते सिखाते वे बालवाड़ी की शिक्षा भी चलायेंगी। जैसे-जैसे गांव की योजना बढ़ेगी वैसे-वैसे गांव के अन्य बच्चों को भी अुसमें लाना होगा। धीरे-धीरे पूरे गांव की अेक सुव्यवस्थित शिक्षा-पद्धति तैयार करनी होगी।

(पृष्ठ ९९ का शेषांश)

अुसका दिमाग बढ़ गया, हड्डियां, जिस्म मजबूत हुअे, अिस हालत में अुसकी परीक्षा क्या लेनी है। परीक्षा तो अुस्तादों को लेनी है। भारतन् कुमारप्पा हमारे साथ जेल में थे। मैंने अेक दफा अुनसे पूछा कि क्या आप रात में कभी ख्वाब देखते हैं। तो अुन्होंने कहा कि कअी बार देखता हूं। मेरे दिल में कतअी शुब्हा नहीं है कि अब कोअी मेरा अिम्तहान लेने वाला है। लेकिन ख्वाब में मैं यही देखता हूं कि मैं अिम्तहान दे रहा हूं। पेपर कैसे लिखा जाये अिसकी फिक्र है। सामने जांचनेवाले खड़े हैं। यही मुझे दहशत है। फिर मैं जाग जाता हूं तो फिक्र खत्म होती है। बचपन में परीक्षा की जो दहशत बैठ गयी अुसका दिल पर अभी तक असर है।

मैं यही कहना चाहता हूं कि खूब घूमो वही बात यह आसमान और हवा कह रही है।

समग्र ग्राम शिक्षा ग्राम संकल्प से ही संभव

हांसा ग्राम, बिहार का अिस दिशा मे प्रयोग

श्री रामशरण अुपाध्याय

गाधी जयन्ती, अक्टूबर, २, १९५८, के अवसर पर हांसा बुनियादी विद्यालय के शिक्षकों, छात्रा तथा पालको ने हांसा ब्रह्मस्थान में अेक अैसा व्रत लिया कि १४ वर्ष की अवस्था तक के सभी बच्चों की शिक्षा का प्रबध ग्राम आयोजन से करेंगे। दिनाक ११ जून, १९५९ को हासा दुर्गास्थान में ग्राम विकास मडल की आम सभा में गाव के लोगों ने सकल्प किया कि दो वर्षों के भीतर ग्राम की याजना से समग्र ग्राम शिक्षा की व्यवस्था करेंगे।

सकल्प किन परिस्थितियो की पृष्ठिभूमि में तथा किन प्रेरणाओ से लिया गया, असके लिअे अेक सक्षिप्त निवेदन आवश्यक है। (१) अगरेजी शासन काल के अेक सौ वर्ष के भीतर ही गावो के अुद्योग तथा सगठन के विलोप के साथ साथ गाव पर आधारित ग्रामशाला की पद्धति नष्टप्राय हो गयी थी तथा दश में साक्षरता का स्तर बहुत ही नीचा गिर गया था। सन् १९०९ अी में मौर्ले–मिन्टा–भारतीय–शासन मुधार के अनुसार निर्वाचित सदस्या के भारतीय साम्राज्य व्यवस्थापक परिषद म जाते ही श्री गोखले प्रस्ताव लाये कि भारत म नि.शुल्क अनिवार्य शिक्षा को व्यवस्था की जाय, जैसा कि अिगलैंड में है। अग्रेजी शासन ने अिस प्रस्ताव को ठुकरा दिया; कारण यह बताया कि अिसके लिअे अपेक्षित द्रव्य का अभाव है।

(२) सन् १९३७ ई० में पहले पहल भारतीय अग्रेजी राज्य प्रशासन के प्रान्तो मे प्रशासन राष्ट्रीय मन्त्री मडलो के हाथ में आया। अुन्हें अब अवसर था कि जिस अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा को माग वे अग्रेजो सरकार से करते आ रहे थे, अुसे अब स्वयं करके दिखायें। साथ ही अुनपर यह भी दाअित्व था कि प्राथमिक शिक्षा की अवस्था में भी सुधार लायें जिससे शिक्षा का सम्बन्ध जीवन के साथ हो जाय, तथा न केवल साक्षरता स्थायी हो, बल्कि नागरिकता के गुणा का भी अुसके द्वारा स्थापन हो जाय। अैसे समय में बापू ने राह दिखायी तथा नयी तालीम की योजना देश को दी। अिसके अनुसार कम-से-कम सात वर्षो की अवधि की प्राथमिक शिक्षा चौदह वर्ष की अुम्र तक के सब बच्चो को मिलनेवाली थी तथा जीवनोपयोगी अुत्पादक, सामाजिक, सास्कृतिक, प्रतिवेशिक त्रियाओ के सम्पादन तथा अनके समवाय में ज्ञानार्जन क द्वारा दी जानेवाली थी। अिस योजना में बापू के दो अुद्दश्य थे, अेक शिक्षा जीवन की हो और दूसरा वह शासकीय अधिकोषों पर बिल्कुल निर्भर न रहे। सूत्र रूप में शिक्षा स्वावलबी हो तथा समवायी हो।

(३) "भारत छोडो" के अतिम राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य सग्राम के क्रम में "आगा खाँ महल" के निवास के चिंतनो के बाद बाहर आने पर बापू ने सन् १९४५ ई के सेवाग्राम के तृतीय नओी तालीम सम्मेलन को अुद्बोधन करते हुये अपने चौदह वर्ष की अुम्र तक की सात-आठ वर्षो की बुनियादी शिक्षा के प्रत्यय को विस्तारित किया तथा देश के सामने गर्भाधान से आरम्भ कर श्मशान तक की, आजीवन की "समग्र नओी तालीम" की व्याख्या की। अिसके अतर्गत बुनियादी शिक्षा तथा अुत्तर बुनियादी शिक्षा (जिसमें आगे

चलकर अुच्चतम स्तरो की विश्वविद्यालय की शिक्षा और प्रायोगिक शिक्षा भी थी) तो आती ही थी, अुसके साथ जीवन भर चलने वाली वयस्क तथा सामाजिक शिक्षा और अुसके अगस्वरूप शिशुओ का लालन-पालन और पूर्व बुनियादी शिक्षा भी आती थी। यह समग्र नअी तालीम स्वायोजित, स्वसचालित तथा स्वनिरीक्षित आर परीक्षित यानी पूर्ण स्वावलम्बन के आधार पर चलने वाली थी।

(४) सन् १९४७ में हम स्वतत्र हुअे तथा हमारे अपने बनाये हुअे सविधान के अनुसार २६ जनवरी १९५० से पूर्णसत्ताप्राप्त गण तत्र हुअे। अिस सविधान को भारतीय नागरिकता की परिभाषा में समानता, शरीर श्रम, सहयोग अित्यादि का समावेश प्रायः अुन्ही शब्दों में है जिनमें "जीवन के लिअे, जीवन द्वारा तथा जीवन भर" की समग्र नअी तालीम से निर्मित होने वाले नव समाज के स्वरूप में बापू ने अुन्हे रखा था। सविधान ने नागरिको के मूलाधिकार में अेक यह रखा था कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के लिअे चौदह वर्ष की अुम्र तक की न्यूनतम शिक्षा की व्यवस्था सविधान के लागू होने के दस वर्षो के भीतर अर्थात् १९५९-६० तक भारतीय केन्द्र तथा राज्य शासन करेंगे।

(५) अिसी बीच बापू सन् १९४८ अि· के जनवरी में ही चल बसे थे। स्वतत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा और समाज के स्वरूप के सम्बन्ध में विचारधाराओ के सघर्ष में और पुराने तथा नये के सक्रान्तिकाल की अनिश्चितता में बापू के "समग्र नअी तालीम" के प्रत्यय के प्रति सुदृढ निष्ठा नही रह पायी। अितना ही नही राष्ट्रीय शिक्षा के किन्ही भी प्रत्ययो के सम्बन्ध में राष्ट्रव्यापी अेकनिष्ठता तथा सुदृढता का अभी भी अभाव है। फलतः आज भी यानी सविधान के लागू होने के दसवे वर्ष में सन् १९५९-६० में भी, हम अपने को असमर्थ पा रहे हैं कि हम सविधान के मूलाधिकार के अनुसार चौदह वर्षो तक की अुम्र के सभी बच्चो की शिक्षा का राष्ट्रव्यापी आयोजन कर सकें। अिसके विपरीत, हमारे केन्द्र शासन तथा अुसके मार्ग दर्शन में, हमारे राज्य शासनो ने अैसी घोषणा की है कि तृतीय पचवर्षीय योजना के अत तक अर्थात् १९६५-६६ के वित्तवर्ष के अत तक, हम केवल ग्यारह वर्ष की अुम्र तक की अनिवार्य नि शुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था कर पायेंगे। कारण ? वही, जो आज से पचास वर्ष पहले अग्रेजी शासन ने बताया था। द्रव्याभाव, और वह, अिसके बावजूद कि स्वतत्रता की धुधली रेखा मात्र ही जिस समय दीखी थी, अुसी समय राष्ट्र पिता ने अिस समस्या के हल के लिये स्वावलबी समग्र नअी तालीम की योजना अपने बाद के राष्ट्र के सूत्रधारो के लिअे दे छोडी थी और जिसे श्रद्धालु व्यक्तियों ने तथा सस्थाओ ने अपनी-अपनी मर्यादाओ की सीमा में साध्य प्रमाणित कर दिया था।

(६) अिस नैराश्यपूर्ण राजतात्रिक परिस्थिति में बापू के बताये मार्ग से समग्र राष्ट्रीय शिक्षा की सभावनाओ की आशा किरणें दूसरी ओर से दिखायी दी। सत विनोबा की भूदान पदयात्रा के अिन आठ-नौ वर्षों के क्रम में, चेतना जागृत होने पर जनता की अतर्निहित असीम शक्तियों का आभास लोगो को मिलने लगा है। भूदान, सपत्तिदान, समयदान, ज्ञान-दान, जीवनदान, ग्रामदान, अेक-के-बाद अेक त्याग

के ये अुदाहरण दृष्टिगोचर होते जा रहे हैं। केवल भूमि या सपत्ति का रखने वाला ही कुछ दे सकता है अैसा नही। जिनके जीवन हैं तथा हृदय है, अुनमें त्याग की भावना जगे तथा भावनाओ को काय में परिणत करने का सकल्प आये, तो वे सभी के सभी अपनी अपनी शक्ति के अनुसार दे सकते हैं और कर सकते हैं।

(७) ग्रामदान से प्रस्फुटित हुआ ग्राम-निर्माण का दायित्व, और अुससे चेतना आयी, ग्राम स्वराज्य के सकल्प की। भारत भर में ग्रामदान काफी हो चुके है। फिर भी जितने ग्रामो में अभी ग्राम दान नही हुअे, अुतने में अुनकी सख्या अभी बहुत ही अधिक है। अिससे कोओ यह तात्पर्य नही लगा सकता कि अिन ग्रामो में ग्रामदान का सदेश अभी तक नही पहुँचा अथवा ग्राम कल्याण तथा राष्ट्र कल्याण और विश्व कल्याण के निमित्त अिसको अतत अुपादेयता तथा अनिवार्यता लाग नही समझते। अनिवार्यता का बाध होते हुअे भी, स्वामित्व विसर्जन के पूर्व, भू-ममत्व और सपति-ममत्व अवरोधक होता है। किंतु गाँव जिस दशा में है, अुससे अुपर अुठे तथा स्वय कुछ करे और बाहर के सरीख हाथ पर हाथ रख कर बैठे न रहे। अिसकी आकाक्षा सहज अुत्पन्न होती है। क्यो नही अिस शुभ परिस्थिति से लाभ अुठाया जाय? गाँव को शिक्षा, गाँव का आरोग्य, गाँव की रोजी, गाँव के सार्वजनिक स्थाना की सुरक्षा, अिनमे, जिनके अथवा जिनके प्रति भी, लोगो की दायित्व-भावना जगे और वे कुछ त्याग करने के लिअे तत्पर हो, अुनको पूर्ति का वे सकल्प ले और अुसकी कार्यान्विति के लिअे आगे बढें। अेक सकल्प के बाद दूसरेकी पूर्ति करते हुअे, वे पूर्ण ग्रामदान तथा पूर्ण ग्राम स्वराज्य के लक्ष्य की प्राप्ति करके ही रहेगें।

हाँसा का ग्राम सकल्प अिन्ही चितनो का परिणाम है। अुन्नीसवी सदी के अत तक हाँसा में अेक ग्रामशाला गाव के लोगो से परिचालित हो चलती थी। अिन पक्तियो के लेखक ने १८९७ से १८९९ ओी तक आरभिक शिक्षा ग्राम गुरु से ही पाकर दूसरे गाव के शासकीय शिक्षा विभाग के मिड्ल स्कूल में प्रवेश पाया था। बीसवी सदी के आते-आते ग्राम सगठन के विगठन के निम्नतम गर्त्त में गिरकर हासा ने अपनी ग्राम शाला का विलोप किया। कुछ वर्षों में ही जागृति हुअी तथा १९११–१२ म गाव के लोगो ने अपनी निधियो को अेकत्र कर अेक ग्राम विद्यालय का पुन स्थापन किया। ग्राम विद्यालय की स्वीकृति शिक्षा विभाग से मिली तथा दरभगा मडलीय पर्षद (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) से ग्राम से नियुक्त शिक्षको की वृत्ति मिलने लगी। घर के मकान तथा साधन-सामान गाँव वाले ही जटाते रहे। सन् १९४९ में गाव के लागो ने जमीन और आवश्यक घरो की व्यवस्था की तथा हाँसा में अेक शासकीय बेसिक स्कूल की स्थापना हुअी। सन् १९५३ साल से बिहार राज्य शासन की आज्ञा स हाँसा बुनियादी विद्यालय का बुनियादी शिक्षा के विकास के लिअे ग्राम सहयाग से प्रयोग करन की आज्ञा मिली। अिन प्रयोगो के फलस्वरूप विद्यालय क्रम-क्रम से गाव के जीवन का केन्द्र बनता गया। गाव के रहनवालो के सहयोग से छात्रों के विद्यालय के समय में नित्य के मधुभोजन की व्यवस्था १९५३ ओी से हुअी तथा क्रम-क्रम से विद्यालय में छात्रो के अेक प्रकार का वस्त्र, छात्रो के वस्त्र-व्यवसाय तथा गाव की सहायता

से बना। विद्यालय का पुस्तकालय मुख्यत: गाव की ही देन है। विद्यालय में सास्कृतिक समारोह प्रति वर्ष में दो चार अवसरो पर विद्यालय तथा ग्राम परिवार के सहयोग से मनाये जाते है। विद्यालय भवन तथा अुपस्करो की मरम्मत ग्राम सहयोग से ही हा जाती अुसके लिअे शासकीय अनुदान की अपेक्षा से काम विगाडने नही दिया जाता। नअी तालीम के स्वावलवन को दिशा के अिन कार्यान्वयनो के प्रभाव से ग्राम में कस्तूरवा स्मारक सेवा तथा प्रसूति केन्द्रो की स्थापना सन् १९५४ ई. में हुअी। भूमि, अुपस्कर, साधन-सामान प्रायः सभी गाव से ही जुटाये गये। कस्तूरवा राष्ट्रीय स्म रक निधि ने आवर्त्तक व्यय, ग्रामाश में २५% लेकर सन् १९५६-५७ तक किया। सन् १९५७ ई. से सेवा केन्द्र का पूर्ण आवर्तक व्यय ग्राम से ही किया जाने लगा तथा सन् १९५८ ई. से गाव ने प्रसूति केन्द्र का भो पूर्ण आवर्त्तक व्यय अपने कधो पर लेकर, कस्तूरवा स्मारक केन्द्रो को स्वावलवी किया है।

सन् १९५५ के अत में हासा खादी ग्रामोद्योग सघन क्षेत्र समिति का निबधन हाँसा तथा आसपास के ग्रामो के विकास के लिअे हुआ तथा अुक्त समिति खादी ग्रामोद्योग कमीशन के तत्त्वावधान में तथा सर्व सेवा सघ से प्रभावित विहार खादी ग्रामोद्योग सघ के सहयोग से काम करती हुअी खादी ग्रामोद्योग की विविध प्रवृत्तियो के सचानन के द्वारा, गाव के लोगो में निजी अवस्थाओ तथा आवश्यकताओ के अध्ययन तथा निजी योजनाओ के द्वारा अपने अुन्नयन की ओर अुत्साह देती आई है।

हासा ग्राम विकास मडल का ग्राम में समग्र नअी तालीम का सकल्प अतिम ५-६ वर्षों के अूपर के कार्यक्रमो से अुत्पन्न आत्म विश्वास का फल है।

सकल्प के दो अग है। अेक सविधान में समावेशित मूलाधिकार की पूर्ति की, गाव के छ से चौदह वर्ष तक की अवस्था के सभी बच्चो (लडके-लडकियो) की शिक्षा की व्यवस्था की जाय। दूसरा यह कि गाव के सभी निवासी, बच्चे, जवान, बूढे आजोवन "समग्र नअी तालीम" के शिक्षार्थी रहे और नित्य कुछ सीख, नित्य कुछ दोषो को छोडें तथा नित्य बढें। जो पहला अग है वह बापू की नअी तालीम योजना की पूर्ति में है कि न्यूनतम राष्ट्रीय शिक्षा की अवधि चौदहवे वर्ष का अुम्र की पूर्ति तक रहनी चाहिये, जिससे जो कुछ भो गुणो का विकास हो वह टिकाअू हो। अन्यथा शिक्षा फलप्रद नही होती। स्थायी शिक्षा की बात कौन कहे, स्थायी साक्षरता भी नही रहती। फलत: अधूरी, निकम्मी तथा नही टिकने वाली शिक्षा पर जो कुछ भी श्रम तथा द्रव्य का व्यय होता है, वह निरर्थक होता है, अेक प्रकार से बह जाता है।

सकल्प किन साधनों से पूर्ण होनेवाला है? अेक है गाव का पूर्व स्थापित बुनियादी विद्यालय। जिसकी स्थापना में, मुख्यत: जिसके अनावर्त्तक व्यय में तथा नअी दिशाओ क विकास के प्रयोगो में गाव की ओर से ही मुख्य योग दिया गया है। दूसरा है, गाव की योजना, गाव की जन-शक्ति तथा गाव की निधियो से सचालित अेक घटे की प्रात कालीन ग्रामशाला छोटे बच्चो के लिअे तथा, सायकालीन अकाध घटे का ग्राम महाविद्यालय आबाल-वृद्ध-वनिता ग्राम के सभी निवासियो के लिअे।

गाव की पूरी जनसख्या सोलह सौ की है, ये तीन सौ परिवारो में बँटे हुअे है। छ: से

चौदह वर्ष की अवस्था के बच्चे-बच्चियो की सख्या लगभग चार सौ है। अिन में औपचारिक आठ सालो के विद्यालयो में प्रवेश पाये हुअे डेढ सौ से कुछ अूपर है। विद्यालय में छात्र सख्या लगभग साढे तीन सौ है जिनमें पडोस के गावो से आनवाले छात्र भी सम्मिलित है। अिस प्रकार ग्राम को समग्र नअी तालीम योजना के आरभ में ढाअी सौ छ से चौदह वर्षों के अैसे बच्चे पाये गये जो विद्यालय में नही जाते थे। अिन ढाअी सौ बच्चे बच्चियो में पचहत्तर के लगभग प्रात कालीन अेक घटे वाली ग्राम शाला के छात्र है। बाकी अेकाध घटे के सायकालीन ग्राम महाविद्यालय के शिक्षार्थी, युवक तथा बूढो के साथ माने जाते है।

बुनियादी विद्यालयो के शिक्षको में से अेक ने स्वेच्छा से अेक-अेक घटे की प्रात कालीन ग्राम शाला तथा सायकालीन् ग्राम महाविद्यालय के सयोजन का भार लिया है। गाव के लोगो में से जिन जिन लोगो ने महीने में कुछ कुछ घटो का समय देना स्वीकार किया है, अुनका समय पत्रक सयोजक अुन शिक्षको की सुविधा की दृष्टि से समय समय पर तैयार करता है।

विकास के लिअे गाव छ प्रखडो में बाटा गया है। सायकालीन महाविद्यालय प्रखडो में अलग अलग बैठता है। प्रखड के समय दानी अध्यापक अपने अपन प्रखडो के महाविद्यालय की बैठका में अपने अपने अनुभव अथवा अध्ययन का ज्ञान प्रदान करते हैं। सयोजक विभिन्न प्रखडो में ग्राम के अपेक्षाकृत अधिक योग्यता प्राप्त तथा अुत्साही कर्मियो के साथ बारी बारी से जाता है। सायकालीन महाविद्यालयो की बैठको में सफाअी, आसन तथा रोशनी के प्रबध से कार्यारभ होता है। फिर प्रार्थना होती है। समाचार पत्र वाचन अथवा सद् ग्रथो से कुछ मिनटो का वाचन होता है। बाद में अध्यापक को जिस विषय की अभिरुचि होती है अथवा योग्यता होती है, अुसके विषय में वे कुछ कहते है और अुसपर चर्चा होती है। कृषि, गोपालन, ग्रामोद्योगो की प्रक्रियाअें, वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा, बाढ, कीडे-मकोडे, सर्प, बनैले जतु अित्यादि से अुत्पन्न समस्याअें, प्रचलित बीमारिया, सहयोग समिति, पचायत, खादी ग्रामोद्योग के विभिन्न विभाग, गाव के झगडे-झमेले और अुसके हल के शातिमय प्रयत्न, ब्याह, श्राद्ध आदि यज्ञ, अुत्सव, समारोह, पर्व-त्यौहार सभी समयानुसार शिक्षण के विषय होते है। सबसे बडी बात यह है कि श्रमदान तथा समयदान से जो भी सार्वजनिक निर्माण के कार्य तथा प्रात कालीन अे घटे की ग्राम-शाला शिक्षण के लिअ कर्मियो की आवश्यकता होती है, अुसकी पूर्ति भी अिन्ही चर्चाओ के फल स्वरूप हो जाती है। अेक अुद्देश्य है स्वाध्याय के लिअे प्रेरणा देना। बुनियादी विद्यालय के पस्तकालय का अेक विभाग, ग्राम पुस्तकालय तथा भ्रमणशील पस्तकालय का है। ग्राम महाविद्यालय के द्वारा अिस पुस्तकालय के साथ गाव का सपर्क जोडने का प्रयास होता है। प्रात कालीन अेक घटे की ग्रामशाला में शरीर, वस्त्र तथा स्थान की सफाअी के साथ, वाणी विकास के प्रयास होते है। प्रार्थना, भजन तथा पढना और पढा हुआ सुनना, प्रश्नोत्तर अिसके साधन होते है। अक्षरज्ञान तथा अकज्ञान, चिट्ठी-पत्रो, गाव बाजार तथा खेती का हिसाब किताब, राष्ट्रीय और धार्मिक कहानिया ज्ञान की पिपासा जगाने के लिअे अुपयुक्त होते है। कुछ प्रगति कर लेने

के बाद छात्र या तो बुनियादी विद्यालय मे दाखिल हो जाते हैं या अपने घर, खेत, खलिहान या परिश्रमालय के काम से बाकी समय में स्वाध्याय कर सकते है। स्वाध्याय कर सके, अिसके लिअे प्रात कालीन ग्राम शाला तथा साय-कालीन ग्राम महाविद्यालय में समय-समय पर मौन पाठ तथा मार्ग दर्शित स्वाध्याय का प्रबध होता है। जैसे-जैसे ग्राम शाला या ग्राम महाविद्यालय का काम विकसित होता जा रहा है, वैसे-वैसे अिस बात की आवश्यकता प्रतीत होती है कि गाव का कोअी अेक व्यक्ति शाति सैनिक, शाति सहायक अथवा सेवक के रूप म पूरा समय देनेवाला निकल आये। अभी तत्काल के लिअे पडोस के गाव से अेक अैसा सेवक पूरा समय देने वाला सयोजक की सहायता के लिअे आ गया है।

अिस सकल्प की पूर्ति के लिअे वस्त्र स्वाव-लबन तथा दो वर्षो के भीतर मिल वस्त्र बहिष्कार तथा प्रत्येक परिवार में अम्बर अथवा साधारण चरखे के प्रवेश का सकल्प लिया गया है। गाव के सेवक के लिअे प्रत्येक चरखा से प्रति मास अेक गुडी सूत के प्रदान के लिअे समति पत्र का आयोजन हो रहा है। लगभग डेढ सौ घरो में सर्वोदय पात्र की स्थापना हुअी है। सर्व सेवा सघ, विहार सर्वोदय मडल तथा दरभगा जिला सर्वोदय मडल के अशो को निकाल कर जो आधे अवशेष रहेंगे अुससे समग्र ग्राम शिक्षा के लिअे पूर्ण समय देने वालो का योग क्षेम निकल सकेगा।

हर्ष की बात है कि अुस सकल्प के बाद ही श्रीयुत आर्यनायकम्‌जी ने ३० जून, १९५९ को तथा श्री धीरेन भाअी ने १० अगस्त, १९५९ को हासा पधारने की कृपा की है। अिससे गाव का अुत्साह वर्द्धन हुआ है। आशा की जाती है कि ग्रामवासी और भी अधिक मनोयोग के साथ समग्र ग्राम शिक्षा के अपने सकल्प को पूरा कर सकेंगे।

गाधीजी की कार्य पद्धति आत्मा को स्फुरित करनेवाली अेक घोषणा है—मनुष्य मे मनुष्य के स्थायी विश्वास की, अिस विश्वास की कि मनुष्य की आध्यात्मिक सिद्धि मे नैतिक भावना निहित है ही। अुनकी कल्पना की स्वाधीनता कोरे कानूनों और राजकीय निर्णयों से प्राप्त नहीं की जा सकती, न वह केवल वैज्ञानिक और प्रोद्योगिक प्रगति से ही प्राप्त हो सकती है। जहा तक भारत का राष्ट्रीय जीवन अुनके विचारों से प्रेरित और अुनके विचारों के साचे मे ढला रहेगा, वहां तक वह स्फूर्ति का स्रोत बना रहेगा। जहा तक स्वतत्र भारत अुनके विचारों को कार्यान्वित करेगा और अुत्तरोत्तर अुच्च समन्वय सिद्ध करता जायेगा, वहा तक वह सस्कृति की मर्यादा विस्तृत करने और अेक नअी परपरा स्थापित करने मे सफल होगा।

—राजेन्द्र प्रसाद

चित्रकला की शिक्षा

देवी प्रसाद

["नअी तालीम" के मार्च, अप्रैल और जून १९५८ के अको में बुनियादी और पूर्व बुनियादी शिक्षा में चित्रकला शिक्षा की पद्धति के बारे में कुछ सुझाव पेश किये गये थे। प्रस्तुत सुझाव भी अुसी सिलसिले में दिये जा रहे है। सं०]

प्रारम्भ किया हुआ चित्र पूरा किया ही जाय

मार्गदर्शन या सिखाने की जो अत्यन्त आवश्यक बाते हैं अुनमें से अेक तो यह है कि बालको को जो भी काम वे हाथ में ले, अुसे पूरा करने की आदत डालनी चाहिये। छोटी अुम्र में बालक अेक ही बैठक मे चित्र पूरा कर देता है। पूरा हुआ या नही, अुसका निर्णय भी वह स्वय करता है। कभी चित्र दो मिनिट में भी पूरा हो सकता है और कभी अेक घटे तक जमकर भी बालक अुसे पूरा कर देता है। परन्तु कभी कभी अैसे मौके आते हैं जिनके कारण अेक बैठक में चित्र पूरा नही हो जाता। या तो वह चित्र अिस प्रकार का होता है कि जिसमे काम अधिक हो और या किसी दूसरे कारणवश बालक को बीच में ही अुठ जाना पड सकता है। शिक्षक का फर्ज है कि वह बालक से दूसरा चित्र बनाने के पहले अपूर्ण चित्र को पूरा करा ले। अिससे जिस मानसिक ट्रेनिंग की व्यक्ति का विकास करने के लिअे आवश्यकता है वह होगी। हा, अिस नियम को अितना कठोर न बनाया जाय कि बालक को नये चित्र बनाने की तीव्र प्रेरणा हो रही हो और शिक्षक अुससे कहे कि नही, तुम्हे रग तभी मिलेगा, जब कि पहला चित्र पूरा करोगे। अिन बातो का निर्णय शिक्षक को समझ-बूझ कर करना चाहिये।

साधनों को स्वच्छ रखें

अेक और बात जिस पर शिक्षक का ध्यान सतत रहना चाहिये, यह है कि बालको को रग, कूची आदि साधनो को गदगी के साथ अिस्तेमाल करने से रोके। रंग आदि स्वतत्रता के साथ अिस्तेमाल किये जाय परन्तु बालक अुनको सफाई से अिस्तेमाल करे। रगो को जब आपस में मिलाना है तो अलग पैलेट पर मिलाये। रगो की कटोरियो में रग आपस में मिलकर अपनी शुद्धता खो बैठते हैं। अेक रग का ब्रश बिना साफ किये दूसरे रग में न डाले जाय। पानी के बर्तन को साफ रखें, पानी बार-बार बदलते रहे। हाथ बिलकुल साफ रहे। जिस बोर्ड पर रखकर चित्र बना रहे है वह साफ हो। सफाअी के अिस पहलू पर पूरा-पूरा ध्यान रखा जायेगा तो केवल चित्र ही साफ नही बनेंगे, बालक के हृदय में सफाई और सौंदर्य का बोध गहराअी तक प्रवेश करेगा।

केवल चित्रकला में नही, सभी कामो में कुछ सिद्धातो का पालन होना आवश्यक होता है। चित्र बनाते समय बालक सीधे बैठें। अिसमें स्वास्थ्य की दृष्टि तो है ही, कला प्रवृत्ति में दक्षता हासिल करने के लिअे भी वह जरूरी है। अगर सरल आसन में बैठेंगे तो शरीर का वजन शरीर स्वय सभालेगा और हाथ कधो से लेकर अुगलियो तक स्वतत्र रहेगा, जो चित्रकला के

लिअे अत्यन्त आवश्यक है। हाथ को पूरा खोल-कर मुक्त भाव से चित्रण करना चाहिये, अिसमें सारा शरीर काम करता है। हाथ खुलता है, मन स्वच्छदता से काम करता है।

बैठने का ढंग

वर्ग में बैठने के बारे में भी कुछ सोच लेना चाहिये। आम तौर पर बालक स्वतन्त्र आत्मप्रगटन ही करेंगे। अैसी हालत में अुन्हे पास न बैठाकर अलग अलग बैठाना अच्छा है। जहा कही भी–निश्चित क्षेत्र में–बैठने की छूट देना अुचित है। साथ साथ यह भी देखना चाहिअे कि बालक बे-ढगे तौर पर तो नही बैठे हैं। अुस ओर ध्यान रखना शिक्षक का काम है। बैठने की चर्चा करते समय प्रकाश की आवश्यकता पर ध्यान देना होगा। बालक जहा भी बैठें, अुनकी बायी ओर से प्रकाश आना चाहिये। प्रकाश सामने से या पीछे से नही आना चाहिअे। अगर बालक बायें हाथ से काम करने वाला है तो प्रकाश दाहिनी बाजू से आना चाहिअे। अूपर से भी प्रकाश आना अच्छा होता है। अगर गलत जगह से प्रकाश आयेगा तो चित्र पर छाया पडेगी और बालक की आखें खराब होगी।

बच्चो को पेन्सिल या कूची को अेकदम नोक के पास मे पकडने की आदत पड जाती है। शिक्षक भी अुस पर ध्यान नही देते हैं। अिसका असर यह होता है कि ड्राअिंग करते समय हाथ नही खुलता, चित्र छोटे-छोटे, छोटी-छोटी लकीरोंवाले हो जाते हैं। अगर बिलकुल ही बारीक काम न हो रहा हो तो पेन्सिल कम से कम डेढ अिंच दूर से पकडनी चाहिअे। अगर स्केचिंग कर रहे हैं तो तीन-चार अिंच के फासले पर पकडी जानी चाहिअे।

चित्रकला की टेकनिक सिखानी नही है, किन्तु साधनों का ठीक अुपयोग कैसे करना चाहिअे अिसके बारे में बालको को आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन करना चाहिये। जिस प्रकार प्रतिभाशाली कलाकार अपनी टेकनिक अपने आप निर्माण करता है अुसी प्रकार हर बालक कलाकार भी अपनी टेकनिक स्वय तैयार करेगा।

आकारभेद और रगभेद का बोध

अलग अलग आकारो के आपस में फर्क और रगो के फर्क का ज्ञान वैसे तो कलाप्रवृत्ति करते करते आ ही जाता है, परन्तु अुसका अभ्यास सात और आठ साल की अुम्र में योजनापूर्वक प्रारम्भ करना अच्छा होता है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि अिससे बालक के आत्मप्रग-टन पर बुरा असर न पडे। ठीक ढग से दिया गया अिस प्रकार का ज्ञान चित्रकला, मूर्तिकला और दस्तकारियो द्वारा किये गये आत्मप्रगटन की मदद ही पहुचायेगा।

आम के पत्ते में और केले के पत्ते में क्या भेद है? आकाश के रग में और जमीन के रग में क्या फर्क है? यह प्रश्न वैसे तो मोटे दीखते हैं परन्तु अिन का अुत्तर बालक ठीक समझ सके और खास तौर पर शब्दो की भाषा की अपेक्षा आकार की भाषा में, तो वह ठीक शिक्षा होगी। आम के पत्ते में और अमरूद के पत्ते के आकार में क्या फर्क है? अमरूद के पत्ते के आकार में और सीताफल के पत्ते के आकार में क्या फर्क है? पीपल के पत्ते का रग और बेल के पत्ते का रग, अिन का फर्क। तोते का हरा और बेल के पत्ते का हरा। यह सब अुसी आकारभेद और रगभेद का सूक्ष्म ज्ञान है, जो धीरे धीरे बालक को कभी विशेष

पद्धति द्वारा कभी स्वाभाविक कलाप्रवृत्तियों के दौरान में दिया जाना चाहिये।

अिसी सिलसिले में अेक बात और कहना आवश्यक है। प्रकृति के साथ बधुत्व, प्रकृति के सौंदर्य के साथ सपर्क की बात पहले अध्याय में की गयी है। कला-शिक्षा स्वयं अुस कार्य को तो करती है, परन्तु अिसका सचेष्ट कार्यक्रम भी हमें बनाना चाहिये। सौभाग्य से भारतीय परम्परा में अनेक बाते अैसी है जिन्हे अगर समझकर अपना लिया जाय तो बहुत-सी मजिल तय हो जायगी:—

रंगों के नाम और सादृश्यम्

भारतीय चित्रकला के शास्त्र में षडग (छः अग) का जिक्र है। अिनमें से अेक अग है— सादृश्यम्। किसी की आख सुदर है तो अुसके साथ अुसी आकार से सादृश्य रखनेवाले आकार की सुदरता भी जोड दी गयी, आख दुगुनी सुदर हो गयी। मीनाक्षि—मछली के आकारवाली आख। शरीर का धडवाला हिस्सा गोमुखी। अिस प्रकार जिस तरह भी हो सके, जिन रास्तो से भी हो सके, प्रकृति के साथ सपर्क और अेकात्मबोध करने का यह अेक मार्ग है।

अिसी तरह रगो के नाम की भी बात है। मैं विलायती नामो को समझ ही नही सकता। न्यू ब्लू कहने से केवल वही समझेगा जिसने यह रग अिस्तेमाल किया होगा। परन्तु आसमानी नीला, तोतिया हरा सुनने से फौरन विशाल आकाश, सुदर तोता पक्षी सामने खिलवाड करने लगते है। यह रगों के नाम रखने की पद्धति रग में प्राण डाल देती है। प्रकृति आत्मसात् हो जाती है। यह पद्धति हमे शालाओं में अपनानी चाहिये। सादृश्यम् का यह पहलू शिक्षा का महत्वपूर्ण अग बन जाना चाहिये। यह कला-शिक्षा का काम है।

वर्गीकरण

यह प्रश्न कि किस-किस अुम्र के बालकों को साथ काम करने दिया जा सकता है, महत्वपूर्ण है। सामान्य तौर पर अलग-अलग अवस्था-वाले बालकों की अलग-अलग टोलियां बनाना अुचित होता है। क्योंकि हम चाहते हैं कि बालकों पर अुचित समय से पहले सयानों का असर नही पडे। अिसलिअे किशोर अवस्था में प्रवेश करनेवाली टोली को प्रतीक प्रधान अवस्थावाली टोली से अलग काम देना अुचित है। आम तौर पर अवस्था का स्याल रखना चाहिये। हालांकि पूरी शाला के सामूहिक प्रोजेक्टो में सभी साथ काम करें, यह वाछनीय है। अैसे मौको पर कार्य विविधता के कारण वर्गीकरण पर अधिक जोर देने की आवश्यकता नही।

बालक की कल्पना-शक्ति को प्रोत्साहन देने के लिअे निम्न-लिखित पद्धतियों का प्रयोग किया जा सकता है।

कहानी-चित्रण

बच्चों की पूरी टोली को कोअी सरल कहानी सुनाना और अुसके बाद अुस कहानी का चित्रण करने को कहना। कहानी बालक स्वय भी सुना सकते है। अैसा भी हो सकता है कि दो-तीन बालक अलग-अलग कहानिया सुनायें और टोली अुनमें से अेक कहानी चित्रण करने के लिये चुन ले। अिस पद्धति से बालको की कल्पना-शक्ति को व्यायाम मिलेगा। जिन्हें कोअी विषय नहीं सूझ रहा हो अुन्हे विषय मिलेगा।

अिसी को और भी असरदार बनाया जा सकता है। शिक्षक, बालको को सरल सुन्दर ढग से बैठाये और अुनसे आख मूद कर दो मिनिट शात रहने को कहे। जब बालक शाति से आख बद कर ले तो वह अुन्हे कोअी कहानी

या अपना कोओी अनुभव अिस प्रकार वर्णन करके कहे कि वह अुनके सामने सिनेमा की भाति चलने लगे। अपने अनुभवों में आकारों का विस्तृत वर्णन करे, रगों को सादृश्यम् के साथ बताये। गभीर आवाज में कभी अभिनय के ढग से भावना के साथ वर्णन करने से बालकों के मन में चित्र खिच जाता है। कल्पना दौडने लगती है।

चित्रों के लिअे विषय

चित्रण के लिअ दूसरे प्रकार के विषय भी दिये जा सकते है

अुदाहरणार्थ

१ तुम तुम्हारे माता-पिता के साथ सहल के लिअे जा रहे हो।
२ अपने छाटे भाई या बहन को स्कूल ला रहे हो।
३ सारा परिवार मिलकर खेत में धान लगा रहा है।
४ गाव के अेक अुत्सव में तुमने क्या हिस्सा लिया ?
५ तुम अकेले प्रकृति-दर्शन के लिअे गये और तुम्हे वहा सब से अच्छा क्या अनुभव हुआ ?
६ तुम्हारे गाव के अखाडे में कुश्ती का खेल।
७ पिछले हाट बजार में क्या सब से अच्छा लगा ?
८ शाला में सामूहिक सफाओी का काम।
९ तुम्हारी टोली के साथ सहल में जा रहे हो।
१०. तुम्हारी शाला का मकान अुत्सव के लिअे सजा रहे हो।
११ अुस दिन जो नट का खेल हुआ।
१२. शाला की बाल-सभा में तुम भाषण दे रहे हो।

अिस प्रकार के अनेक विषयों को मौका देखकर अिस्तेमाल किया जा सकता है। अेक बार का अनुभव है कि चौथा वर्ग मेरे पास चित्रकला के लिअे आया करता था। पाच छ बार अैसा मौका हुआ कि जब भी वे आते थे तभी खूब वर्षा होती थी। अेक दिन बालक वर्ग में आते ही हसी-मजाक में कहने लगे कि अैसा क्या होता है ? मुझे सूझा और मैंने कहा "वर्षा कहती है कि तुम लोग जितनी बार चित्रकला वर्ग में आते हो, सुदर-सुदर चित्र बनाते हो, किन्तु मेरा क्यों नही बनाते ? जबतक नही बनाओगे मैं तुम्हे भिगाती ही रहूगी।" सब बालकों ने अुत्साह के साथ कहा "अच्छा, हम वर्षा का ही चित्र बनायेंगे।" हमने चित्र का विषय रखा "वर्षा का अेक दिन"

अिस पद्धति में अेक बात ध्यान रखने की है। चाहे कितनी भी कुशलता के साथ चुनाव किया जाय, अुसी विषय का चित्र बनाना है अिसका आग्रह कदापि नही किया जाना चाहिये। हो सकता है कि टोली के कुछ बालक कुछ और ही चित्र बनायें। शिक्षक ने विषय चुनने में मदद की और अुसके लिअे आवश्यक भूमिका तैयार कर दी तो बस है। जोर देने से बालकों की रुचि नष्ट हो सकती है।

कभी-कभी अेक ही विषय के अलग-अलग पहलुओं पर टोली के बालक अलग-अलग चित्र बना सकते हैं। अगर अेक लबी कहानी है तो जितने बालक हो अुतने चित्र बनाकर पूरी कहानी चित्रित की जा सकती है। यह अेक सपूर्ण प्राजेक्ट हो सकता है। पुस्तक बनाने के

अेक प्रयोग का जिक्र पिछले अेक लेख में किया गया है। सामूहिक कार्य का यह अेक बहुत अच्छा तरीका है। जो बालक चित्र बनाना चाहें वे चित्र बनायें, कुछ सुंदर ढंग से कहानी या लेख जो कुछ भी हो लिखें, कुछ पुस्तक की जिल्द बनायें। अिस प्रकार शाला के समग्र जीवन के साथ चित्रकला-प्रवृत्ति का सुंदर मेल बैठ सकता है। भाषा, समाज-शास्त्र आदि सभी विषय आ जाते हैं। यहां तक होना चाहिये कि जो काम वर्ग में हो रहा हो अुसके साथ पूरा-पूरा समन्वित कार्यक्रम अनेक मौका पर बनाया जाय।

सामूहिक कार्यों में अेक पद्धति हमने अनेक बार व्यवहार की है। अुससे खूब लाभ हुआ। बालकों का भी वह बडी रुचिकर लगती है। अेक खूब बडे कागज पर सारी टोली मिलकर अेक चित्र बनाती है। चित्र क्या बनेगा किसी को कल्पना भी नही होती। क्रम से बालक अेक-अेक करके आते हैं और रंग से भरी कूची अेक बार कागज पर रखकर जो कुछ खींच सके, खींचते हैं। रंग जो अुन्हें पसंद आयें, ले सकते हैं। कूंचो भी पतली मोटी हर तरह की रखी होती है। परन्तु अेक बार हाथ अुठ गया तो फिर ब्रश रख देना पडता है। सभी बालकों की चेष्टा यह रहती है कि चित्र कुछ आकार ले, अिसलिअे अधिक कल्पनाशील बालक चित्र को रुख देने का काम करते हैं। कुछ देर में जब चित्र में कुछ बन जाता है तो सभी अेक अेक टच (कूची का अेक दाग) देकर चित्र पूरा करते हैं। अिसमें शिक्षक भी हिस्सा लें तो अच्छा होता है। चित्र बनाना तो होता ही है परन्तु सब मिलकर अेक ही नमूने पर आखिर पहुंचे यह सबकी चेष्टा रहती है, जो बडी बात है। हरेक के मन में तरह तरह की कल्पना रहते हुअे भी आखिर अेक ही चित्र बनता है। अिस प्रयोग की यही विशेषता है। सबने मिलकर बनाया यह भी बालकों के लिअे बडे गर्व की बात होती है।

समालोचना

समालोचना अगर शिक्षक करेगा तो बालक पर दबाव पडेगा। परन्तु बालक स्वयं अगर आपस में अेक दूसरे के चित्रों की समालोचना करेंगे तो अुससे वे खूब सीख सकते हैं। आपस में सामुदायिक ढंग से समालोचना खूब काटने वाली होने के बावजूद भी वह न्यूनताभाव (अिन्फीरीयोरिटी काम्प्लेक्स) नही देगी। वर्ग के अन्त के दस मिनिटों में बालकों को अपने-अपने चित्र दीवार पर ठीक क्रम से और सजाकर लगा देने के लिअे कहा जाय। अेक अेक करके सभी अपना अपना मंतव्य हर चित्र के बारे में दें। अिससे चित्रकार अपनी गलतियों को समझेगा। बालक बालक की दृष्टि से समालोचना करेंगे अिसलिअे वह अधिक स्वाभाविक होगी।

बालकों का मनोवैज्ञानिक प्रकार

सामान्य तौर पर दिये गये सुझाव और प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर बालकों की चित्रकला शिक्षा का कार्यक्रम चल जायेगा। आम शिक्षक अुतना भी कर लें तो बालकों को काफी आनंद और तृप्ति का अनुभव दे सकेंगे। किन्तु गहराअी से अध्ययन करते रहने से शिक्षक अपने काम में वैज्ञानिकता ला सकता है। आम शिक्षा का अेक सिद्धांत है कि प्रकृतिजन्य व्यक्तिगत अभिरुचियां होती हैं। अुनके अनुसार मनुष्यों के "प्रकार" होते हैं। शिक्षा की योजना

अुन "प्रकारों" का ध्यान रखकर करनी चाहिये। अगर अेक व्यक्ति "साहित्यिक प्रकार" का है तो अुसकी शिक्षा की योजना भी अुसी आधार पर बननी चाहिये। कुछ लोग "टेकनिकल प्रकार" के या "दस्तकार प्रकार" के हों और अुन्हें "साहित्यिक प्रकार" के व्यक्तियों के लिअे जो शिक्षा का ढांचा होगा, अुसमें डाल दिया जाय तो अुनकी शक्तियों का संपूर्ण विकास नहीं हो सकेगा।

अिसी तरह मनोवैज्ञानिक कअी प्रकार से वर्गीकरण करते हैं। शिक्षकों को अिस वर्गीकरण का लाभ अुठाना चाहिये। अगर शिक्षक बालक का मनोवैज्ञानिक प्रकार समझ लेता है तो अुससे अुसके काम को समझने और मार्ग-दर्शन करने में सुविधा होती है। शिक्षक अगर मनोवैज्ञानिक प्रकारों का महत्व समझ लेता है तो अुसे बालक की शक्ति और अुसके काम की दिशा दीखने लगती है। साथ-साथ बालक के लिअे अुसके मन में संवेदना भी अुत्पन्न हो सकती है। क्योंकि वह समझ लेगा कि अमुक बालक अमुक "प्रकार" का है तो अुससे किसी दूसरे मनोवैज्ञानिक-प्रकार के काम की अपेक्षा करना अनुचित होगा। यह विषय गहरा है। अिसका विस्तार यहां करने की आवश्यकता नहीं है। जो शिक्षक अिसका विशेष अध्ययन करना चाहते हैं अुन्हें मनोविज्ञान की पुस्तकों में काफी सामग्री मिल सकती है।

बालकों के चित्रों का रेकार्ड रखना

अपने काम में शास्त्रीयता लाने के लिअे शिक्षकों को अेक और काम करना चाहिये। बालकों के चित्रों का रेकार्ड नियमित रूप से रखा जाना चाहिये। प्रारम्भिक चित्रों से लेकर जबतक बालक शाला में रहे अुनके चित्रों में से कुछ चुनकर नियमित फाअील में रक्खे जायं। हर चित्र के पीछे बालक का नाम, चित्र बनाने की तारीख, टोली का नंबर और अगर हो सके तो चित्र की क्रमसंख्या भी साफ साफ अक्षरों में लिखनी चाहिये। अच्छा तो यह होगा कि अेक बालक के चित्र अेक साथ रखे जायं। क्योंकि अेकाध साल के बाद वह छंटाअी संभव नहीं होती। कुछ ही अैसे शिक्षक होंगे जो अुस काम को विशेष रुचि से कर सकेंगे। फाअिलिंग का तरीका हर कोअी अपने ढंग से बना सकता है।

यह जरूरी है कि चित्रों का चुनाव ठीक हो जिससे कि बाद में वह केवल अेक ढेर ही न बन जाय। अगर चित्र क्रमवार रखे होंगे तो कभी भी बालक की प्रगति का स्पष्ट दर्शन अेक नजर में ही हो जायेगा। बालक स्वयं भी अपने पुराने चित्र देखना चाहते हैं। अुससे अुन्हें लाभ होता है। "मैं प्रगति कर रहा हूं" या "मैं हमेशा अेक ही प्रकार का चित्र बना रहा हूं" यह जानकारी अुसे स्वयं ही अपने चित्र संग्रह को देखने से हो जायेगी। अनेक मौकों पर चित्र प्रदर्शनियों में रखने की आवश्यकता होती है। अुसके लिअे भी अेक अच्छा संग्रह चाहिअे। हमारे पास आज भी अनेक चित्र अुन बालकों के हैं जो अब सयाने और गृहस्थ हो गये हैं। जब वे अुन चित्रों को देखते हैं तो अुन्हें बडा मजा आता है।

बालकों के चित्रों का विनिमय दूसरी शालाओं के बालकों के चित्रों से करने में अुन्हें अुत्साह मिलता है। अिस प्रकार के चित्र विनिमय अगर शालाओं के बीच होते रहें तो बंधुत्व भी कायम होगा, साथ-साथ बालकों का कला-बोध भी विकसित होगा।

वियन्ना का विश्वयुवक सम्मेलन उत्सव

आर आर केइतान

[श्री कइतान पहले अेक औसाओी धर्म-प्रचारक (मिशनरी) के रूप में भारत आये। स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ वे गहरी सहानुभूति रखते थे और बाद में अुसमें शामिल हो गये। जिस कारण से ब्रिटिश सरकार ने अुन्हें अिस देश से निष्कासित कर दिया, अुनको भारत आने की अनुमति नही थी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वे फिर यहा आये और सर्वोदय विचार के अनुसार रचनात्मक काम में लग गये। अब वे दक्षिण भारत के वेटलागुन्डु नामक स्थान पर अेक सर्वोदय आश्रम में कार्य कर रहे हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति और सर्वोदय विचारो का प्रचार करते हैं—खासकर अुनकी मान्यता है कि साम्यवादी देश भी जिन विचारों के लिये अगम्य नही हैं। हमें अुनके साथ मैत्री व सद्भावना के सबध स्थापित कर सर्वोदय का सन्देश वहा भी पहुँचाना चाहिये —स०]

हाल ही में वियना में जो विश्व युवक सम्मेलन अुत्सव हुआ अुसके सदस्यो के द्वारा विभिन्न प्रकार के विवरण प्रस्तुत किया जाना स्वाभाविक ही है। यहा मै अक सर्वोदय कर्मी की दृष्टि से अुसकी अेक छोटी सी झाकी प्रस्तुत करता हू।

करीब अेक सौ देशो से हजारो युवको को अेकत्र लाना और अुनके लिअे दस दिन का अक अत्यत अुपयोगी तथा सुसघटित कार्यक्रम चलाना ही अपने आपमें अेक चमत्कार की कृति है। अितनी वडी सख्या क लिअे भोजन व निवास का प्रबध करना हो कोअी छोटा काम नही है। अिस सम्मेलन अुत्सव के कार्यों का सुचारु निर्वहण, व्यवस्था और अुत्साह देखकर मैं तो आश्चर्यभरित हो गया।

पहला दिन रविवार था, अुस दिन शाम को सम्मेलन का जुलूस निकला और अुद्घाटन समारोह हुआ। तीसरे पहर तीन बजे सचालन समिति को अस्त्रिया की राज्य सरकार की तरफ से जो कि सम्मेलन का आतिथ्य कर रही थी-अिस प्रकार की अेक सूचना मिली—सरकार के अधिकारियो को अुसी समय मालूम चला था कि अल्जीरिया से जो स्वतत्र युवक सघ आया है, वे अपने साथ अपनी देशीय पताका लाये हैं। यह पताका अगर फहरायी जाती तो वह आस्त्रिया की सरकार को बडे असमजस में डाल देगी, क्योकि अुसका फ्रान्स की सरकार के साथ मैत्रीपूर्ण सबध है जिसको कायम रखना जरूरी है। अिसलिअे अुनके लिअे लाजमी होता है कि यह पताका फहराने न दें। अिस आज्ञा का पालन नही किया जाता तो अुसपर सबधित व्यक्तियो को और सम्मेलन समिति को गिरफ्तार करने का सकट आयगा।

अिस समस्या का हल करना कोअी आसान बात नही थी। जूलूस के निकलने के लिअे सिर्फ तीन घटे रह गये थे। फिर भी जिस अहिंसात्मक तरीके से अिसका समाधान किया गया था अिसके लिअे अिस कार्य से सबधित सभी लोग अत्यत प्रशसा के पात्र हैं। अैसा तय हुआ कि सभी देशो के प्रतिनिधि अपने झडे लपेटकर सभास्थान में प्रवेश करेंगे, कोअी भी झडा फहराया नही जायगा। और अैसे ही किया गया। किसी को

पता तक नही चला कि कही कोअी गडबड है। दूसरे दिन सम्मेलन समिति के अेक साथी ने मुझे अिस अद्‌भुत अनुभव में हिस्सेदार बनाया, तभी मुझे भी यह मालूम हुआ। किसी अखबार में भी अिस घटना का जिक्र मैंने नही देखा। युवक सम्मेलन अुत्सव के सचालको की यह तारीफ है कि अुन्होंने अिस घटना का अपने प्रचारार्थ अुपयोग नही किया। लेकिन, अेक सर्वोदय कर्मी के नाते मुझे अुनके प्रति अपना समादर और अभिनदन व्यक्त करना चाहिये कि अेक अत्यत जटिल समस्या का अैन मौके पर अितने समाधानपूर्वक हल निकाला गया। दुनिया के युवक अुस अुत्कठाकुल क्षण में अल्जीरिया के अपने भाअी-बहनो के प्रति मैत्री का अिससे बेहतर तरीके से कोअी प्रकटन नही कर सकते थे जैसा कि अल्जीरिया की जनता को अभी तक स्वतत्रता हासिल नही हुअी, अिस दुख के सूचक अुन्होंने अपने झडे को भी लपेटकर सभा स्थान में प्रवेश करने से किया।

हमारी दृष्टि से यह भी महत्वपूर्ण बात थी कि सम्मेलन समिति ने अेक "विश्वासियो का दिन" आयोजित किया, जिसमें अैसे लोगो को जो कि जिन्दगी के प्रति धार्मिक दृष्टि रखते है, "धर्म और शान्ति" के विषय पर चर्चा करने का मौका था। अुस दिन का पूरा कार्यक्रम हम लोगो में से जिनको धार्मिक श्रद्धा है, अुन्ही के हाथ में दिया गया। अुसका सभापतित्व करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। मै फिर से अुन सबों के प्रति अपना अभिनन्दन प्रकाशित करना चाहता हूँ जिन्होंने अुस दिन के काम को सफल बनाने में अितना अच्छा सहयोग किया। और अुसमें साम्यवादी भाअियो का सहयोग दूसरो से हरगिज कम नही था। वास्तव में मुझे कअी 'धार्मिक" वक्ताओ के कथनो और प्रवृत्तियो से लज्जित होना पडा था। फिर भी मुझे मानना चाहिये कि अुन लोगो ने अपने विचार से जो सही था वही कहा और किया। खासकर चीन से आये हुअे सदस्य को अुनके भाषण के बीच-बीच में अुन्होंने कअी दफे रोका। अुसका कारण यही था कि अुनके विचार में मानवता के जो मौलिक अधिकार है अुनके बारे में वे अपनी चिन्ता प्रकट करना चाहते थे। मुझे दुख है कि यह "विश्वासियो का दिन" मुख्यत: अीसाअी धर्म विश्वासियो का ही दिन रहा। लेकिन अिस कार्यक्रम के सयोजकों को अधिकृत अीसाअियों का भी सहयोग प्राप्त करने में कअी कठिनाअियो का सामना करना पडा था। क्योंकि "साम्यवादियो" के तत्वावधान में आयोजित किसी कार्य में भाग लेने के लिअे वे जल्दी राजी नही होते थे। अिसलिअे यह अुनका कसूर नही था जो अुन्होंने दूसरा विषय—"सब धर्मों का सहयोग"—लेने में अपने आपको असमर्थ बताया। मुझे विश्वास है कि वे खुद अुसके लिअे तैयार थे, लेकिन परिस्थिति अनुकूल नही थी। अिस दफे मैंने पाश्चात्य देशों में अैसी कअी बाते देखी जिससे यह विश्वास होता है कि अब अीसाअी धर्मावलबी दूसरे धर्मों के अनुयायियो के प्रति अपने मन और दिल खोल रहे है। अीसाअी धर्म सस्थायें अितनी जल्दी अपना रुख नही बदलेगी। फिर भी मुझे लगता है कि अुनके नेता भी दूसरे धर्म के प्रति अब अेक नअी दृष्टि और नयी भावना रख रहे है। निकट भविष्य में ही विभिन्न धर्मों का कअी ठोस कार्यों में वास्तविक सहयोग प्राप्त करने की सच्ची आशा है और हरेक सर्वोदय कार्यकर्ता को जिसके लिअे प्रयत्न करना चाहिये।

(शेषाश पृष्ठ १२३ पर)

बच्चों को अंकों का परिचय कराना

राधाकृष्ण

पिछले अेक लेख में हमने यह बात रखी थी कि गणित के अध्यापन की दृष्टि से बुनियादी शाला का काल तीन भागों में बाटा जा सकता है। अिसमें पहला भाग बच्चो के नौ या दस साल की अुम्र पहुचने तक का है।

स्कूल में प्रवेश करते समय हर अेक बच्चे का अपना कुछ न-कुछ अक बोध होता ही है। यह ज्यादातर घर की परिस्थिति पर अवलबित है। जब बच्चा घर में बडों को अकों का अुपयोग करते हुअे देखता है तो वह अुनका अनुकरण करता है। अक्सर बच्चे के मन में अिसका बहुत धुंधला चित्र रहता है और ये अक अुसके लिअे कोअी अर्थ नही रखते हैं। कुछ बच्चे घर में थोडा पढने के बाद स्कूल में आते हैं। अकों को क्रमवार बोल सकते हैं। मान लीजिये वे पचास या सौ तक गिनते हैं, लेकिन शायद पाच और छ या दस और बारह के बीच में कोअी अन्तर नही समझ पाते हैं। कुछ बच्चे क्रमवार गिन नही सकते हैं, वे चौथा डेस्क, पाचवा टेबल या छठा लडका गिनते हैं, लेकिन, चार, पाच छ का कोअी मतलब नही समझते हैं। कुछ बच्चे सिक्के पहचानते हैं–दो अन्नी चवन्नी अित्यादि–लेकिन अुनका आपस का सबध नही जानते हैं। वे सामान खरीदने में पैसे का अुपयोग शायद जानते हैं, लेकिन अुसका मूल्य नही समझते हैं। कुछ बच्चे "दूर" और "नजदीक" की बाते करते हैं, लेकिन अुस फासले का माप नही जानते हैं। अुन्हाने "अेक पाव दूध", "अेक पौंड शक्कर", या "अेक सेर चावल" की बाते सुनी हैं लेकिन यह नही जानते हैं कि ये माप कैसे अेक दूसरे से सबधित हैं। कुछ बच्चो ने यह सुना है कि "अब चार बज गअे, स्कूल आठ बजे शुरू हो जाता है" अित्यादि, लेकिन अुन्हे घटे की पहचान नही है।

कुछ बच्चे तुलना कर सकते हैं। पिताजी बडे हैं, भाअी छोटा, मुझे कम दूध मिला है, ज्यादा दीजिये, हम जल्दी चले, यह डडा सीधा है बैल गोल-गोल घूमता है, देरी हो जायगी, मेरे पास बहुत किताबें हैं, सूरज दूर है अित्यादि। बच्चा अिन शब्दो को अपने ही ढग से समझता और अुपयोग करता है।

यह अक बोध, यह प्राथमिक गणित की भाषा ही बच्चे के गणित सीखने की शुरूआत होती है। रोजाना जिन्दगी का गणित अिसीसे शुरू होता है।

सामान्य तौर पर बच्चा अकों के बारे में अपने ही ढग की अेक समझ के साथ स्कूल में प्रवेश करता है। कभी कभी अुसके विचार बडे मजेदार होते हैं। शिक्षक का पहला काम अुसका ज्ञान जैसा है वैसा पहचानना और समझना है। यह कोअी आसान काम नही है। हरअेक विभिन्न घरेलू परिस्थितियों से आया हुआ होता है और अुनकी पृष्ठभूमि अलग अलग होती है। अुन्हे अेक ही स्तर पर पहुचाने की कल्पना करना अस्वाभाविक और अत्यत अशैक्षणिक होगा। प्रत्येक बच्चे के विकासक्रम की विभिन्नताओं को पहचानने और अुसकी व्यक्तिगत आवश्यकता के अुपयुक्त अध्यापन पद्धति का प्रयोग करने की जरूरत पर ज्यादा जोर

नहीं दिया जा सकता। यहां कभी दफे बच्चे के मा-बाप शिक्षक के लिये समस्या बन जाते हैं। "मेरे पडोसी का लडका चार ही साल का है, फिर भी वह जोड का गणित करता है, अेक दूसरा पाच साल का, भागाकार जानता है, लेकिन मेरा बच्चा छ साल का होने के बावजूद ठीक तरह से गिनता भी नहीं"—अैसी बाते अक्सर सुनाअी देती हैं। कभी कभी शिक्षक तक बडे आत्मगौरव के साथ कहते हैं—"मेरी क्लास के सब बच्चे सात साल से कम अुमर के हैं, फिर भी बडे-बडे भागाकार आसानी से कर लेते हैं।" यह कभी दफे पहचाना नहीं जाता है कि हर अेक बच्चे का अपना विकासक्रम होता है, अमुक अवस्था में अुसकी योग्यता घर के वातावरण और विभिन्न परिस्थितियों के अनुभवों के फलस्वरूप होती है, जिससे अुसको अंकबोध और अभ्यास मिलता है।

बच्चों के मन में जो अंकबोध बन चुके हैं, अुनको पहचानना शिक्षक का पहला काम होगा। अिसका यह मतलब नहीं कि वह अिसके बारे में जानकारी हासिल करते फिरे। यह तो अेक बढती हुअी अवस्था है। शिक्षक का काम अैसी परिस्थितियां तैयार करना है, जिनसे अंक बोध विकसित हो। यह अेक कहानी बताने, किसी अनुभव का वर्णन करने, या खेल का सगठन करने या अेक कविता का पाठ करने से भी हो सकता है। बात यह है कि जहां भी बच्चे का अनुभव बढाने, अुसको गणित की भाषा सीखने और ज्यादा अच्छी तरह समझने के लिये अनुकूल परिस्थिति अुपलब्ध होती है, अुसका पूरा पूरा अुपयोग होना चाहिये।

यह केवल शिक्षक का नहीं, मा-बाप का भी काम है। हमारी रोजाना जिन्दगी में बच्चे गणित की भाषा का बहुत दफे अुपयोग करते हैं। अैसे वास्तविक प्रसंगों में अिस्तेमाल करने पर ये परोक्ष सख्याअें बच्चों के लिये अेक मतलब ले लेती हैं। जब अिनका बार बार अिस प्रकार अुपयोग होता है तो बच्चे के मन में अुसका अर्थ स्पष्ट होता जाता है और वह अिन अंकों के अुपयोग में पक्का होता है। स्कूल के दैनिक कार्यक्रम में अैसे असख्य प्रसग आते हैं। कुशल शिक्षक अुन सबका पूरा पूरा अुपयोग कर लेता है। बच्चे प्रार्थना के लिये बैठ रहे हैं—हम लोग कितने हैं, आसन कितने? कितनी कतारें? किस आकार में बैठना—अित्यादि। अैसे ही, बच्चों की शारीरिक स्वच्छता की जाच करने के लिये अुनकी कतार होती है। सफाअी काम में स्थान और साधनों के अनुसार बच्चों को टोलियों में बाटना है। काम शुरू करने के पहले और बाद में औजारों को गिनकर रखना है। अुद्योग के वर्ग का सगठन करना, साधनों को बाटना और अुत्पादन का हिसाब रखना। अिस प्रकार बागवानी का काम हो, कताअी हो, कागज का काम हो या मूर्ति बनाने का, पहले साधनों का अुपयोग होता है, कुछ न कुछ काम होता है। और अिन दोनों को बच्चों द्वारा मापा जाना चाहिये—कितना साधन अिस्तेमाल हुआ और काम कितना हुआ। बहुत छोटी अुमर में कविता या गाना पाठ करने, कहानियां बताने और खेलने में ही बडे मजे के साथ अंकबोध के अभ्यास कराये जा सकते हैं। बहुत सी अैसी साधारण प्रवृत्तियां भी सगठित की जा सकती हैं, जिनसे बच्चे के मन में अंक की भाषा और अुपयोग स्पष्ट होता जायगा।

अिनमें से कअियों को तो बच्चे स्वय करते ही रहते हैं। शिक्षक भी कुछ सुझा सकते हैं।

अिन परिस्थितियों या स्वाभाविक और अुपयुक्त ढग से अगर अुपयोग किया जाता तो यह भावी गणित की शिक्षा की बुनियाद डाल देना होता है। बच्चा जो काल्पनिक नदी के अूपर पुरानी पेटियों और टिन के टुकडों से डाम बाध रहा हो, लकडी के डडो से घर बनाता हो, खेल की दूकान पर सामान बेच रहा हो, या प्रकृति के भडार से कुछ अमूल्य वस्तुओं का सग्रह करके प्रदर्शिनी सजा रहा हो, रेलगाडी में या बस में दूसरे बच्चों के साथ सफर कर रहा हो-घर में या स्कूल में-गणित के अकों के और साधनों के प्रमाण, वजन और आकारों के साथ परिचय कर रहा है, जो अनुभव आगे अुसकी जिन्दगी में गणित के काम की बुनियाद के तौर पर अमूल्य होते हैं। अैसी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने और अुनका अुपयोग करने से शिक्षक और मा-बाप बच्चे के गणित सीखने में आनन्द और वास्तविकता लाते हैं।

अिस तरह बच्चों के मन में अकबोध विकसित होने से अुनमें आगे गणित सीखने की तैयारी होती है। अब अगला कदम सख्याओं, अकों और अुनके नामों का समन्वय करना है, जो अितना सरल नही है।

अिस तैयारी का यह अर्थ नही कि अब बच्चा जिन्दगी में अक बोध का अनुभव छोडकर, गणित के केवल नियमित पाठ ही सीखे। तैयारी का अर्थ है, अगली प्रक्रिया समझने के लिअे अुसकी मानसिक परिपक्वता। जब बच्चा अकों को समझ के साथ गिनती कर लेता है तो शायद वह वस्तुओं और अकों का समुदायों में वर्गीकरण भी कर सकेगा। अैसे नमूना-पत्रक तैयार कर सकते हैं जिनमें बिन्दुओं द्वारा विभिन्न अकों की सख्यायें और अुनको अलग-अलग प्रकार से रखने की पद्धतियां दिखायी हों। बच्चे अभ्यास से अिन्हें पहचानने लगेंगे। अैसे पत्रक भी बना सकते हैं, जिनमें अेक ही सख्या अलग-अलग प्रकार से दिखायी हो। अिस तरह कअी विभिन्न प्रकार के अक दर्शक पत्र बना लेना और अुसके द्वारा वस्तुओं की सख्या और अुनका प्रतीक चिह्न समझना अेक बहुत रुचिकर खेल हो सकता है। बच्चों की योग्यता के अनुसार व्यक्तिगत या सामूहिक खेल के रूप में अिसका सगठन किया जाना चाहिये। यह वैयक्तिक या सामूहिक रूप में किसी प्रश्न का हल करने के अभ्यास की शुरूआत होती है। वस्तुओं के भिन्न-भिन्न समुदाय बनाने की पद्धति से बच्चा सरल जोड और घटाव भी सीख लेता है। दस्तकारी के औजारों और तैयार की हुअी वस्तुओं पर भी अक-पत्र दिये जा सकते हैं।

कुछ समय के बाद विद्यार्थी अक प्रतीक, शब्द पद्धति और वस्तुओं को तुलनात्मक रूप से दिखाने के लिअे भित्ति पत्रक भी तैयार करेंगे। अिसपर खास ध्यान दिया जाना चाहिये कि बच्चे अकों को साफ-साफ और बडा लिखें, नही तो कअी दफे वे २ और ३, ३ और ६, ६ और ९ में गडबड कर लेते हैं। लिखने की पद्धति पर भी ध्यान देना आवश्यक है। श्यामपट या रेत पर बडे-बडे अक लिखकर दिखाना अच्छा होगा।

जरूरत के अनुसार बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाना चाहिये। जो बच्चा जरा मन्दगति से चलता हो, और जो तेजी से प्रगति कर रहा हो, दोनों को अुनके अपने लिअे अुपयुक्त प्रश्न दिये जा सकते हैं। किसी को पीछे रखने या आगे ढकेलने की जरूरत नही है।

स्कूल में बड़े बच्चे अेक पत्रक तैयार करने में मदद कर सकते हैं। समय आने पर छोटे भी खुद अपने लिअे तैयार कर लेते हैं। अिस प्रकार तैयार की हुअी सामग्री से और परिस्थितियों के समवाय पूर्वक अुपयोग से बच्चों में ठीक अंकबोध का विकास किया जा सकता हैं।

"०" यह शून्य का प्रतीक बच्चों के लिअे बड़ा रुचिकर होता है। अुसका अेक प्रतीक है, फिर भी मतलब होता है "कुछ नहीं"। वह अैसा प्रतीक है जो खास स्थानों पर किसी अंक को बहुत बड़ा मूल्य देता है। कअी बच्चे कोअी काल्पनिक अंक लिखकर अुसके सामने कअी सारे शून्य लगा देने में बड़ा मजा अनुभव करते हैं।

बच्चों को अंकबोध के साथ साथ प्रमाण, लंबाअी, माप, वजन, समय और पैसे का भी ज्ञान करा देना चाहिये। रोजाना जिन्दगी में अिस्तेमाल किये जानेवाले माप की अिकाअियों का अंकों के साथ संबंध समझना चाहिये। अुदाहरणार्थ अंक ७ का बच्चे के लिअे कोअी अर्थ नहीं है, जब तक वह सात वस्तुओं को अेकसाथ देखता नहीं है। अंकों का प्रत्यक्ष अुपयोग तभी है न, जबकि वह वस्तुओं, और माप की अिकाअियों के साथ संबंधित हो। अिस विषय का आगे चलकर और विस्तार करेंगे।

(पृष्ठ ११९ का शेषांश)

युवक सम्मेलन अुत्सव की और भी कअी बातें अुल्लेखयोग्य हैं। खेल के कार्यक्रम में कअियों ने हिस्सा लिया और अुसमें आनंद का अनुभव किया। हर शाम और रात को बहुत ही बढ़िया सांस्कृतिक कार्यों का आयोजन था। खासकर *साम्यवादी देशों की टोलियाँ अपनी जनता* के पूरे सहयोग के साथ और सुसघटित होकर आयी थीं, अुनका संविधान असाधारण रूप से अच्छा था। मेरा विश्वास है कि जिन हजारों ने रूस, चीन और कोरिया के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखा वे कभी अुनको भूलेंगे नहीं। हां, और भी कअी बहुत अच्छे-अच्छे थे।

युवकों की सामान्य समस्याओं पर चर्चा-गोष्ठियां अच्छी रहीं। अुनमें हजारों की तादाद में लोगों ने भाग लिया। मैं यह जरूर कह सकता हूँ कि वियना में दुनिया के युवकों को कअी स्तरों पर सच्चा मिलन हुआ। सम्मेलन सप्ताह के आखिर में मैंने वियन्ना के कअी नागरिकों को यह कहते हुअे सुना कि यह बड़ी गलती थी कि शहर के बहुत लोगोंने सम्मेलन *अुत्सव के साथ असहयोग किया।* मुझे यह बहुत ही दुख की बात लगती है कि वियना के गिरजाघरों और धर्म-संस्थाओं ने युवक सम्मेलन अुत्सव का पूरी तरह से बहिष्कार किया। अगर ये लोग अपने दिल, अपने घर और गिरजाघर अिन अुत्साहशाली युवकों के *लिअे खोल देते तो साम्यवादियों पर भी* बहुत अच्छा प्रभाव डाल सकते थे, जिन्होंने कि यह पहली दफा अिस अुत्सव का आयोजन अेक असाम्यवादी देश में किया था।

"गृहविज्ञान की शिक्षा*"

जानकी देवी

लडकियो की शिक्षा के अक आवश्यक अंग के तौर पर गृहविज्ञान के विषय को मान्यता मिले अपेक्षाकृत कम अर्सा हुआ है। हरअेक लडकी भविष्य में अपने को प्राप्त होनेवाले पत्नीत्व, गृहिणीत्व और मातृत्व के पदो का अुत्सुकतापूर्वक अिन्तजार करती है, अुनके बारे में मनसूबे बाधती रहती है। लेकिन अिन पदो को कुशलतापूर्वक निभाने के लिअे किसी विशेष शिक्षा की जरूरत होती हो, अैसा आम तौरपर सोचा नही जाता था। यह शिक्षा सहज ही अुसको अपनी मा से और दादी नानियों से मिलती रही। अब जमाना बदला। लडकियो का समय घर में कम बीतने लगा, स्कूल कालेजो में ज्यादा। तो अक समय आया जब पढी लिखी लडकिया घर के काम धधो के बारे में बिलकुल अज्ञ और अनभ्यस्त रहती थी। फलत अुन्हे व्यावहारिक जीवन में कठिनाअियां आना अनिवार्य था। कुछ समय हुआ, विदेशो में और अब भारत में भी लडकियो की शिक्षा के दो आवश्यक पहलू पहचाने गये। अेक जो किसी काम-धधे मे प्रवेश करना चाहती हो, याने जिसे अग्रेजी में करीअर कहते हैं अुसकी तैयारी। दूसरा अुसके विवाहित जीवन याने कुटुबिनीत्व की तैयारी। यह अेक वस्तुस्थिति है और हमेशा रहेगी भी कि ज्यादातर स्त्रियो को अिस दूसरे प्रकार की शिक्षा की जरूरत है। आज के युग में कअियो को अिन दोनो पदो को अेकसाथ सभालना पडता है।

श्री राजम्माल बहन ने अपनी पुस्तक—"टीचिंग होम सायन्स्"—में अिस विषय के बारे में आवश्यक मानसिक भूमिका, भारतीय गृहिणीत्व की परपराओ और आधुनिक विचारो का अच्छा प्रतिपादन किया है। गृह विज्ञान के अंगीभूत सब विषयो का खूब विस्तृत शिक्षाक्रम भी प्रस्तुत किया है। अुनका यह कथन पूरा-पूरा सत्य और मनन योग्य है—

'आधुनिक युग में घर स्वावलबी होने से ज्यादा परस्परावलबी संस्थाअें होते हैं। आज घर और समाज को कअी सारी जिम्मेदारिया परस्पर सहयोग से अुठानी पडती हैं। जो पहले सिर्फ घर के ही दायरे की मानी जाती थी। घर और समाज आज अितना अेक दूसरे पर अवलबित हैं कि जो गृहिणी घर को अच्छा बनाना चाहती हो अुसे समाज को भी ज्यादा अच्छा सुरक्षित और स्वस्थ बनाने की तरफ ज्यादा ध्यान देना पडेगा। अिसलिअे घरवालो का समाज के दूसरे सदस्यो के साथ सतत सक्रिय सहकार आवश्यक हो गया है। आज के मानवीय सबधो के प्रश्न भूतकाल से विभिन्न हैं। अिसलिअे आज की गृहिणी अपने कार्यक्षेत्र को घर की चारदीवारी में सीमित नही रख सकती।'

पुस्तक में गृहविज्ञान की शिक्षा के अुद्देश्यो का अिस प्रकार विश्लेषण किया है—जीवन में वास्तविक आध्यात्मिक मूल्यों का तथा अुपयुक्त वृत्तियो का विकास, अपनी और परिवार की स्वास्थ्य रक्षा और कमदक्षता के लिअे आवश्यक वैज्ञानिक तथ्यो की जानकारी, विभिन्न परिस्थितियों में युक्तायुक्त विवेचन का सामर्थ्य, गृहकार्यों में कुशलता, सेवावृत्ति और अच्छी आदतो का निर्माण।—"क्योकि गृह-

विज्ञान की शिक्षा के ये तत्व और अुद्देश्य साधारण शिक्षा के अुद्देशोकी की ही पुष्टि करते हैं, अुन अुद्देश्यो को साधने में यह शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण होगी ।"

घर का वातावरण प्रीतिपूर्ण रहे, पति को यथार्थ सहधर्मचारिणी मिले, अपनी सन्तानो का बाल्यकाल शान्त, सुनियमित और आनदमय हो, परिवार के बडे बूढो की जिन्दगी समाधानपूर्ण हो, अितना मात्र नही अपने आसपास के लोगो को अच्छी पडोसिन मिले, ये सब गृहिणी की शिक्षा के अूपर निर्भर है । अिसके लिअे आवश्यक वृत्तिया और ज्ञान सब लडकियो को सहज ही प्राप्त होता हो, अैसी बात नही। अिनका प्रयत्नपूर्वक निर्माण और विकास करना भी जरूरी होता है । अिसका पहला कदम अुस विषय के महत्व का भान सबको करा देना है । कोअी जिन्दगी को ज्यो का त्यो स्वीकार करके जैसे के तैसा चला लेती है, कोअी सतत प्रयत्न के साथ अुसे ज्यादा समृद्ध और सुन्दर बना देती है । गृहविज्ञान की शिक्षा का यही अुद्देश्य है ।

यह अेक आम कहावत-सा हो गया है कि "बच्चो को पढाना हो तो पहले माओ को पढाओ" लेकिन यह पढाअी साक्षरता मात्र से होती नही है हरअेक मा के लिअे शिशुसगोपन और बाल मनोविज्ञान का थोडा बहुत शास्त्रीय ज्ञान अनुपेक्षणीय है । जैसे कि अिस पुस्तक में कहा गया है,-समाज की मूलभूत अिकाअी तो कुटुब ही है । अिसलिअे आखिर समाज कल्याण, दूसरे किसी से ज्यादा कुटुबिनी के अूपर निर्भर है । समाज में पारस्परिक प्रेम-भावना, सामाजिक स्वच्छता, समाज के बच्चो तथा प्रौढा के लिअे भी अुचित पौष्टिक आहार की व्यवस्था और अुसके द्वारा सामाजिक स्वास्थ्य की वृद्धि, अित्यादि की जिम्मेदारी भी बहुत कुछ गृहिणी के अूपर है । अपने विशिष्ट कर्तव्यो का बोध और अुनको सफलतापूर्वक निभाने की योग्यता प्राप्त करना गृहिणी के लिअे अत्यत आवश्यक है।

विषय बहुत विशाल है और अभी तक हमारे देश में अिसके बारे मे अुपयुक्त साहित्य और योजना बद्ध शिक्षाक्रम की कमी रही है । यह पुस्तक अुसकी पूर्ति में बहुत सहायक होती है । शिक्षाक्रम प्रचलित माध्यमिक शिक्षा सस्थाओ और अिसलिअे समाज के मध्यम और अुच्च वर्ग की आवश्यकताओ को मन में रखकर बनाया गया है । नअी तालीम की दृष्टि से और स्थानीय आवश्यकताओ के अनुसार अिसमें यथोचित परिवर्तन किये जा सकते हैं ।

भारतीय परिवारो की परपराओ और आदर्शो का ग्रथकर्त्री ने आदर के साथ जिक्र किया है । जैसे कि वह कहती है सयुक्त परिवारो की प्रथा अब मिट रही है। लेकिन ज्यादातर परिवारो में मा-बाप अपने लडके के पास ही रहते हैं । कअी दफे आर्थिक निर्वाह के लिअे अुसके अूपर आश्रित भी होते हैं । कुलवधू के अूपर अुनकी सेवा शुश्रूषा की जिम्मेदारी रहती है । कण्वमुनि ने शकुतला को पतिगृह भेजते समय अुसको भावी जीवन के बारे में अुपदेश देते हुअे पहली बात यही कही थी-"शुश्रूषस्व गुरून्" । वधू के अिस कर्तव्य का भारतीय आदर्श में बहुत बडा स्थान है । पाश्चात्य देशो में लडके की शादी होते ही अुसका अलग घर बनाने की प्रथा ने वृद्ध मा-बाप के जीवन को कअी दफे निराधार और निरानद बना दिया है, चाहे अुससे सास-बहू के झगडो से बचाव हो गया हो । आजकल वहा बूढे लोगो के घर-Old mens' Homes-चलाने लगे हैं

जहा अिस तरह के वृद्ध अेकसाथ रहते हैं और कुछ ताश वगैरह खेलकर अपने जीवन के अतिम दिन काटते हैं। लेकिन हमारे भारतीय परिवारों में वृद्ध पिता को अिस तरह के "घरो" में रखने की बात कौन सोच सकता है? अपने पोते-पोतियों पर अुनका प्रेम मा-बाप से भी कही ज्यादा होता है। वे शिशुओं का लालन और मनोरजन करते हैं, घर के कामो में भी यथाशक्ति मदद पहुँचाते हैं। अुन्हें अपने परिवार में ही रहने के आनंद और सुरक्षाबोध की नितात आवश्यकता है और वे अपने ज्ञान और परिपक्व बुद्धि के कारण अपने परिवार के ही नही, समाज के लिअे भी बडा सहारा होते हैं। अैसे वृद्ध माता-पिता का अतिमकाल आरामदेह हो, अुन्हे घर में आदर और प्रेम मिले, यह अुनके पुत्र से भी ज्यादा वधू की जिम्मेदारी होती है। अिसके लिअे आवश्यक मानसिक वृत्ति और तैयारी भावी वधुओ में निर्माण करना भी गृहविज्ञान की शिक्षा का अेक जरूरी अग है। पुस्तक में अिस आवश्यक शिक्षा का कुछ ज्यादा विस्तार और स्थान देना अच्छा होता।

गृहविज्ञान के बारे में लडकियो को शालाओ में दी जानेवाली शिक्षा कृत्रिम न बने, वह यथासभव वास्तविक परिस्थितियो में हो, और विद्यार्थिनी के गृहजीवन के साथ अुसका गहरा सबध रहे, अिन बातो पर पुस्तक में ठीक जोर दिया गया है। शिक्षिकाओं को यह अुचित सलाह दी है कि वे बार-बार अपनी विद्यार्थिनियों के घर जावे और अिस शिक्षा का अुनके गार्हिक जीवन पर अभीष्ट परिणाम हो रहा है कि नही, अिसके बारे में जागरूक रहे। और यह शिक्षा स्थानीय समाज और परिस्थितियो की पृष्ठभूमि में हो —

"अेक अच्छी शिक्षिका का काम "स्कूल में पढाना ही नही; अुसको समाज में काम करना, चाहिअे।" पूरे समाज तथा अलग अलग परिवारो में क्या परिस्थितिया हैं अुनके साथ अपनी विद्यार्थिनियो के जीवन और स्वभाव विकास का क्या सबध है, अिसके बारे में शिक्षिका को सज्ञान रहना चाहिये। अुसका अध्यापन पूरे समाज और अुसके परिवारो की परिस्थितियो व जरूरतो पर आधारित होना चाहिये।"

"विद्यार्थिनियो के घरो में जाने, मा-बाप से बातचीत करने, सलाहकार समितियो से सबध रखने आदि से शिक्षिका समाज की वास्तविक स्थितिया से परिचित रह सकती है। ....और कुछ परिस्थितियो को सुधारने और कुछ समस्याओं का हल ढूढने मे अपनी शिक्षा द्वारा कारगर मदद पहुँचा सकती है।"

किशोर अवस्था में लडकियो को अपने शारीरिक अेव मानसिक विकास के सिलसिले म क्या कठिनाअिया अक्सर आती हैं, अुन्हे समझकर अुनको दूर करने में विद्यार्थिनियो की कैसी मदद की जा सकती है, अिसके बारे में भी अिस किताब मे वैज्ञानिक चर्चा और अुपयोगी सुझाव मिलते हैं जो हर शिक्षिका के लिअे बहुत मददगार होगे।

हमें आशा है कि यह पुस्तक सिर्फ शिक्षिकाओं के लिअे ही नही, जिज्ञासु गृहिणियों के लिअ भी मार्गदर्शक और सहायक सिद्ध होगी।

(*टीचिङ् होम् सायन्स–लेखिका-राजम्माल पि देवदास। प्रकाशक–माध्यमिक शिक्षा की अखिल भारतीय ससद्, नअी दिल्ली।

मूल्य ७ रु)

सूचना

नअी तालीम विचार गोष्ठी—सेवाग्राम

ता० १७ से २० नवम्बर १९५९

नअी तालीम के कर्मियो को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सेवाग्राम में नवबर महीने की १७ से २० तारीख तक अेक नअी तालीम गोष्ठी का आयोजन करने का निश्चय हुआ है। चर्चाअें गहराअी, समझ और घनिष्ठता के साथ हो, अिसके लिअे अिसमें सदस्यो की सख्या को सीमित रखना अच्छा होगा। वह सम्मेलन का रूप न ले, विचार गोष्ठी हो। अिस गोष्ठी से हम नअी तालीम के सहकर्मियो में साथीपन का वोध बढे, हम अपने भावी कार्यक्रम के बारे में विधायक सहचिन्तन कर सके, यह भी अपेक्षा है।

हि. ता सघ ने सर्व सेवा सघ के साथ सगम का निश्चय करते हुअे यह विचार व्यक्त किया था कि नअी तालीम का आगे का काम सप्तविध हो (सप्तविध कार्यक्रम "नअी तालीम" के जुलाअी अक तीसरे कवर पृष्ठ में छप चुके है)।

आज नअी तालीम के तीन प्रकार के काम या स्वरूप हमारे सामने है।

१ सस्थाओ के द्वारा किया गया काम। पिछले २२ वर्षो से देश के विभिन्न कोनो में कअी सस्थाओ ने पूर्व बुनियादी से लेकर अुत्तर या अुत्तम बुनियादी तक की शिक्षा का काम किया है। अिनमें शिक्षको व कर्मियो का प्रशिक्षण हुआ। सहजीवन और सह अध्ययन की कअी पद्धतियो पर प्रयोग हुआ। ये अेक तरह से पारिवारिक जीवन और शैक्षणिक कार्यक्रम के समन्वय की प्रयोगशालायें रही। अिनका काम कहा तक सफल हुआ? कहा अुनमें पुन सगठन या नये नियोजन की आवश्यकता है?

२ साधारण सामाजिक परिस्थितियो में और शासकीय तत्र के अन्तर्गत बुनियादी शालाओ में जो काम हुआ अुसकी समीक्षा। अुनमें किन परिवर्तनो की आवश्यकता है? बुनियादी तालीम के प्रसार के लिअे अेक निम्नतम कार्यक्रम क्या हो सकता है? ये सस्थाअें किस प्रकार स्वतत्र काम कर सकती हैं। शिक्षा के काम में माता-पिताओ का और समाज का सहयोग कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

३. ग्रामदान और ग्राम सकल्प के सदर्भ में नअी तालीम के सिद्धान्तो और प्रवृत्तियो को कारगर रूप से अमल में लाना। अिसमें पहले दो प्रकार के कामो का अनुभव अुपयोगी होता है। नअी पद्धतियो का भी विकास करना होगा। अिसमें व्यक्ति का समाज के साथ अेकात्मबोध और सफल सामाजिक जीवन की शिक्षा का सवाल है।

ये मुद्दे सुझावमात्र के रूप में यहा पेश किये हैं। आशा है अिस गोष्ठी में जो प्रत्यक्ष रूप से भाग नही ले सकेंगे, अुन साथियों के भी विचार और अुत्साहपूर्वक सहयोग हमें प्राप्त होगा।

राधाकृष्ण
सयोजक।

"बच्चों की कला और शिक्षा"

हमें यह सूचित करते हुओ हर्ष होता है कि श्री देवीभाओी की यह पुस्तक शीघ्र ही सर्व सेवा संघ के द्वारा प्रकाशित हो रही है। नओी तालीम के पाठक अिस पुस्तक की योजना से काफी अरसे से परिचित हैं, क्योंकि अिसका कुछ हिस्सा समय-समय पर "नओी तालीम" में प्रकाशित होता रहा है।

लगभग २५० पृष्ठों की अिस पुस्तक में ६२ से अधिक रंगीन और अेकरंगे चित्र होंगे। अिसकी प्रस्तावना श्रद्धेय डा० जाकिर हुसैन के द्वारा लिखी गयी है।

अिसमें बच्चों की कला-शिक्षा के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक सभी पहलुओं पर विशद रूप से चर्चा की गयी है। यह केवल कला-शिक्षकों के लिओ ही नहीं, बल्कि सामान्य शिक्षा का प्रत्यक्ष काम करनेवालों और शिक्षा-शास्त्रियों, सभी के उपयोग की पुस्तक होगी अैसी हमारी आशा है।

शिक्षा और समाज के बुनियादी प्रश्नों पर लेखक ने मौलिक चिन्तन किया है।

(कीमत लगभग आठ रुपया होगी)

पुस्तक मगाने का पता –
सर्व सेवा सघ प्रकाशन,
राजघाट–वाराणसी

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-सेवाग्राम

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

नवम्बर १९५९
वर्ष : ८ अंक : ५

"बच्चों की कला और शिक्षा"

हमें यह सूचित करते हुअे हर्ष होता है कि श्री देवीभाअी की यह पुस्तक शीघ्र ही सर्व सेवा संघ के द्वारा प्रकाशित हो रही है। नअी तालीम के पाठक अिस पुस्तक की योजना से काफ़ी अरसे से परिचित हैं, क्योंकि अिसका कुछ हिस्सा समय-समय पर "नअी तालीम" में प्रकाशित होता रहा है।

लगभग २५० पृष्ठों की अिस पुस्तक में ६२ से अधिक रंगीन और अेकरंगे चित्र होंगे। अिसकी प्रस्तावना श्रद्धेय डा० जाकिर हुसैन के द्वारा लिखी गयी है।

अिसमें बच्चों की कला-शिक्षा के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक सभी पहलुओं पर विशद रूप से चर्चा की गयी है। यह केवल कला-शिक्षकों के लिअे ही नहीं, बल्कि सामान्य शिक्षा का प्रत्यक्ष काम करनेवालों और शिक्षा-शास्त्रियों, सभी के उपयोग की पुस्तक होगी अैसी हमारी आशा है।

शिक्षा और समाज के बुनियादी प्रश्नों पर लेखक ने मौलिक चिन्तन किया है।

(कीमत लगभग आठ रुपया होगी)

पुस्तक मगाने का पता –
सर्व सेवा सघ प्रकाशन,
राजघाट–वाराणसी

प्रकाशक – श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम।
मुद्रक – श्री द्वारका प्रसाद परसाअी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

नवम्बर १९५९
वर्ष : ८ अंक : ५

"नई तालीम" नवम्बर १९५९ : अनुक्रमणिका

(नोटः– कृपया पृष्ठ संख्या १४२ का शेषांश पृष्ठ संख्या १४५ में देख लें)

"नअी तालीम" के नियम

१ "नअी तालीम' अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक चन्दा चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ न पै है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी पी. से मंगाने पर ६२ न पै ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२ पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दी जाती है। माह की १५ तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरत हमें लिखें।

३. चन्दा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गांव का नाम, डाकखाने का नाम, तहसील, जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पतों पर पत्रिका नियमित पहुँचने में विशेष कठिनाअी होती है।

४ "नअी तालीम" संबंधी सारा पत्र-व्यवहार, प्रबंधक, "नअी तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहकों के पत्र या शिकायत पर अुचित कारवाअी करने में विशेष विलंब की संभावना होती है।

५. पत्र-व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक-संख्या का अुल्लेख कर सकें तो विशेष कृपा होगी।

प्रबंधक,
"नअी तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बंबअी राज्य.

नई तालीम

वर्ष ८] नवम्बर १९५९ [अंक ५

"मौन प्रार्थना का महत्व"

विनोबा

हमने जो मौन प्रार्थना चलायी है, अिसका कश्मीर में अद्भुत ही अनुभव आया। यह चीज सब के हृदय को किस तरह जोड सकती है अिसका वहीं दर्शन हुआ। वहां के मुसलमानों के सब तबकों में मेरा प्रवेश हुआ और सब ने माना कि यह अपना ही मनुष्य है। लेकिन मौन का आम जनता पर जो असर हुआ अिसमें कश्मीर के मुसलमान ज्यादा थे। उस अनुभव से मानता हूं कि यह चीज प्राणदायी है। उसका परिणाम हृदय पर बहुत गहरा होता है। खास कर विचारों में कभी क्षोभ आया, चर्चा करते हुअे क्षोभ पैदा हुआ तो उस हालत में हमने पांच मिनिट मौन रखे और शांत रहे तो आप देखेंगे कि उसका परिणाम लाठी चार्ज से भी ज्यादा होगा। मैंने लाठी चार्ज की मिसाल अिसलिअे दी: क्योंकि कुछ लोग मानते हैं कि उसका असर होता है। खास कर जो लाठी चार्ज करनेवाले होते हैं, वे अैसा मानते हैं। मौन का असर अिससे भी ज्यादा होता है। उससे चित्त अेकदम अन्दर खींचा जाता है और शान्त होता है। हम शांति-सेना की बात करते हैं, मानसिक शांति की बात करते हैं तो मौन की शक्ति को हमें समझना चाहिये, परखना चाहिये और अपने जीवन में अिसको स्थान देना चाहिये। मुझे अिसका व्यक्तिगत तौर पर अनुभव पुराना ही था और कुछ थोडा सामूहिक क्षेत्र में भी था, लेकिन वह आश्रम तक सीमित था। आम जनता के साथ जो अिसका सम्बन्ध है, खास कर जिस सभा में औरतें और छोटे-छोटे बच्चे हैं, जो ज्यादा समझते नहीं है और सब धर्मों के लोग हैं, वहां मौन का विलक्षण असर होता है यह मैंने अनुभव किया। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि हम अिसका व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर कुछ अभ्यास करें।

शांतिकार्य के लिअे तैयारी

विनोबा

शाति-सेना का विचार तो पुराना ही है। वह शब्द भी बापू का है, कल्पना भी अुनकी है। अुसके लिअे अुन्होने कोशिश भी की थी। मैंने अेक दफा गाधीजी की स्मृति में बोलते हुअे कहा था कि वे ही अुसके पहले सेनापति थे और वे ही पहले सैनिक भी थे। सेनापति के नाते "करो या मरो" का हुक्म अुन्होने दिया और सैनिक के नाते अुस पर अुन्होने अमल किया। याने अुसका अेक पूर्ण चित्र अुन्होने हमारे सामने कृति से, जीवन से रखा।

जब मैं शिवरामपल्ली के सम्मेलन के लिअे अकेला निकल पडा था तब वहा से लौटते समय तेलगना होकर जाने का तय किया था। अुस वक्त मैंने पहले ही जाहिरा तौर पर कहा था कि मै अक शाति सैनिक के नाते जा रहा हू। भूदान यज्ञ तो फिर अुसमें से आगे निकला। परन्तु मेरा विचार शाति-सैनिक के नाते परिस्थिति को देखने का और अगर कुछ बन सकता हो तो अुसकी कोशिश करने का था। अिस तरह शाति-सेना का विचार मेरे मन में सतत रहा है। बापू के जाने के बाद मुझे डेढ साल हिन्दुस्तान भर घूमने का मौका मिला था। वह पैदल यात्रा नही थी, वाहनो की थी। अुस वक्त जगह जगह मैंने सर्वोदय के विषय में कहा। अुसकी अेक छोटी-सी किताब छपी, अुसका नाम रखा "शाति-यात्रा"।

अिस तरह वह कल्पना पृष्ठभूमि में तो थी, लेकिन शाति सेना की स्पष्ट योजना हमको करनी पडेगी। योजना बनानेका प्रसग आया है, अैसा दर्शन हमें केरल में हुआ। अुस वक्त जब मुझ से पूछा जाता था कि यहा की कौन-सी परिस्थिति देखकर आपने यह सोचा? मैं अुत्तर देता था कि आज की वर्तमान परिस्थति देखकर मुझे वह विचार नही सूझा। लेकिन अुसमें अेक भावी दर्शन था। अब वह "भावी" प्रकट हुआ है। वह केरल में ही प्रकट हुआ है, यह अलग बात है। वह कहीं भी प्रकट हो सकता था। हिन्दुस्तान की परिस्थिति अैसी स्फोटक है कि कहीं भी स्फोट होना सभव है। यद्यपि दूसरे प्रान्तो में भी कुछ न-कुछ होता ही है लेकिन केरल में जो हुआ, अुसकी तरफ सारे हिन्दुस्तान का ध्यान खीचा गया। मैं तो आगे का अेक और दर्शन देख रहा था कि हमारा कुल काम—ग्रामदान, मिल्कियत मिटाना वगैरा शाति के ढग से शाति करने का काम—नही हो सकेगा, अगर अुसके साथ-साथ हम आज की हालत में भी (याने विषमता कायम रहते हुअे भी) अुनके रक्षक हैं, अैसा लोग महसूस नही करेंगे। विषमता, अुच्च-नीचता वगैरा जो अशाति के कारण हैं, वे जायेंगे तो अशाति मिटेगी, अिसमें कोअी शक नही है। लेकिन हम अितना कहकर अपने मन को शात रखेंगे और कहीं अशाति हुअी तो हम क्या कर सकते हैं? हमने तो अेक रास्ता ले लिया है मिल्कियत मिटाने का। रचनात्मक काम जो लोगो के सामने रखा है, अुसे लोग मानते हैं तो ठीक, न माने तो आज की विषम परिस्थिति में अशाति के बीज फूट ही निकलेंगे तो हम क्या करेंगे? हमने अेक रास्ता सामने रखा है, अुस पर लोग नही चलते हैं तो अुसके बूरे फल अुनको चखना पडता है, तो हम

क्या करें ? यूं कह कर हम शांत रहेंगे तो शांतिमय क्रांति के हमारे शब्द, शब्द ही रहेंगे। वह चीज जनता में नहीं पैठ सकेगी। अुससे जनता का हृदय प्रभावित नहीं हो सकेगा और अुससे अपने हृदय को भी अन्तः समाधान हासिल नहीं हो सकेगा। अिसलिअे हमने शांति की शांतिमय प्रक्रिया जो चलायी है, अुसकी भी वृद्धि के लिअे जरूरी है कि हम शांति का जिम्मा अुठायें। अिसके मानी यह नहीं कि हम कोअी अैसी ताकत रखते हैं कि दुनिया को हम बचायेंगे। ताकत हम तो नहीं रखते हैं लेकिन अहिंसा का विचार वह ताकत रखता है। दुनिया को बचाने का दावा अहिंसा का विचार कर सकता है। अैसी शक्ति अहिंसा में है, अुस विश्वास के साथ हमें अिस दिशा में कोशिश करनी चाहिये। यू समझ कर मैंने केरल में शांति सेना का विचार प्रकट किया और तदनुसार अेक छोटी-सी शांति सेना, जिसमें केलप्पनजी भी थे, बनायी और अुसकी घोषणा की।

लोगों ने अुस पर कअी शंकायें पेश कीं। अुन्होंने कहा कि आपने जो यह नया कार्यक्रम देश के सामने रखा अुससे चित्त तितर-बितर होगा, अुसमें चंचलता आयेगी, अेकाग्रता नहीं रहेगी। हमने कहा कि अैसी बात नहीं है, अपने काम में से ही अैसी चीज निकलती है और अिसके बिना शांति की प्रक्रिया आगे बढ़ना संभव नहीं है। अुसके बाद शांति-सेना के लिअे लोगों की संमति चाहिये तो अुसमें से सर्वोदय पात्र का विचार निकला। अिस तरह धीरे-धीरे विचार आगे बढ़ता गया। देश में कुछ थोड़े शांति-सैनिक बने और अुन्होंने जगह-जगह कुछ थोड़ा बहुत काम किया। काम तो अितना थोड़ा कि कुल मिलाकर अुसकी तरफ लोगों का ध्यान नहीं खिंचा। लेकिन अितना ही थोड़ा अगर हिंसा का काम हो तो लोगों का ध्यान फौरन खिंच जाता है। अिसका कारण यह है कि हमारा जीवन ही शांतिमय है। अन्तरात्मा का स्वरूप तो शांतिमय ही है। लेकिन बावजूद अिसके कि हमारे जीवन में और समाज में काफी अशांति का अनुभव हम करते हैं, कुल मिलाकर हमारा जीवन शांतिमय है। अिसलिअे कहीं कुछ अशांति दीख पड़ी तो, जैसे सफेद वस्त्र पर काला धब्बा दीख पड़ता है, वैसे सब का ध्यान अुस तरफ फौरन खिंच जाता है। अिसलिअे शांति-सेना का कुछ काम हुआ तो लोगों का ध्यान अुतना नहीं खिंचा।

फिर भी कुछ काम हो रहा है। कहीं कुछ अुपवास किये गये, कहीं कार्यकर्ताओं ने लोगों में जाकर काम किया। तमिलनाड, अहमदाबाद, बड़ोदा, अुत्तर-प्रदेश, ओरिसा और बिहार में सीतामढ़ी वगैरा कअी जगह कुछ छोटे-मोटे शांति के काम किये गये। मैं सोचता था कि अब शांति-सेना का कार्य जगह-जगह शांति-सैनिक और लोक-सेवक करेंगे, खादी के कार्यकर्ता भी करेंगे। अुसमें दूसरे लोग—चाहे पक्षवाले भी हों, कुछ मदद देंगे। आम जनता भी मदद देगी। अब सर्व सेवा संघ का नया स्वरूप बना है तो जगह-जगह जो शांति-सैनिक हैं वे वहां की परिस्थिति देखकर कुछ-न-कुछ करेंगे। वह अुनका धर्म ही है। अिस तरह स्थानिकों पर ही काम की मुख्य जिम्मेवारी आती है। अिस पर भी अखिल भारत के लिअे अेक योजना हो, यह सोचा गया। हमने अेक मंडल बनाया, जिसमें अैसे लोग हैं जो अिस दृष्टि से सोचनेवाले हैं। सब लोग अुनसे सलाह-मशविरा कर सकते हैं। कभी कोअी

बात पूछनी हो तो पूछ सकते हैं। कभी कोओी शिकायत हो तो मंडल के पास आ सकती है। अिस तरह जो मंडल बना है, वह सलाह देने का, यही कुछ हुआ तो अुसका निरीक्षण करने का और मार्गदर्शन करने का काम कर सकता है। और कुछ अुपाय भी सुझा सकता है। वह अेक सर्वसामान्य वातावरण भी सारे भारत में पैदा कर सकता है। *भारत के लोगों को अुससे* कुछ अितमीनान हो सकता है कि कहीं सलाह करने का मौका आया तो अेक मंडल है। अिससे ज्यादा भी यह मंडल कर सकता है। जहां वह जिम्मेदारी समझेगा, वहां अपनी ओर से कुछ कदम भी अुठा सकेगा। लेकिन मामूली तौर पर प्रत्यक्ष काम की जिम्मेदारी लोगों की रहेगी। यह अखिल भारत शांति-सेना मंडल अुनके अेक बोधछत्र की तरह रहेगा। अुसमें अभी, तेरह नाम जाहिर किये हैं। अुसके अलावा और भी दो-तीन नाम जोड़े जा सकते हैं। सूझने पर अुसका भी अैलान किया जायेगा।

मेरे लिअे यह पहला ही मौका है कि अपनी ओर से मैं अेक अैसा अखिल भारत मंडल जाहिर कर रहा हूं। यह जो मैंने जिम्मेवारी महसूस की, वह बापू की विरासत है जिसे टालना मेरे लिअे असंभव है। अब मैं तो पैदल यात्रा कर रहा हूं, लेकिन अिसके मानी यह नहीं कि जगह-जगह जो अशांति होगी, अुसकी जिम्मेवारी से मैं अपने को बरी मान सकूंगा, यूं कहकर कि मेरी यात्रा अेक कोने में चलती है। अिसकी जिम्मेवारी मैं अपनी मानता हूं और अुसी *जिम्मेवारी में हाथ बटाने के लिअे यह मंडल* बना है। अुन लोगों की मुझ पर कृपा है, जिन्होंने मंडल में रहना स्वीकार किया है। अिस विचार पर अुनकी कोओी कृपा नहीं है, क्योंकि वे अिस विचार का ममक खाये हुये हैं, अुसके चाकर हैं। अिसलिअे अिस विचार पर अुनका कोओी अुपकार नहीं है, अिस विचार का ही अुन पर अुपकार है। अुन पर अुसका जो ऋण है, अुससे कुछ मुक्त होने का मौका अुन्हें मिलेगा। परन्तु मुझ पर अुनका अुपकार हुआ है। अगर वे अिस बात को नहीं मानते तो *सारी जिम्मेवारी मुझ पर आती जिसे निभाना* मेरे लिअे मुश्किल हो जाता। अुसके फिर कुछ आध्यात्मिक अुपाय किये जा सकते थे, लेकिन वे आत्यंतिक अुपाय होते हैं। हर समय आत्यंतिक अुपाय करना समाज के लिअे और करनेवाले के लिअे भी कठिन होता है। अिसलिअे अुस जिम्मेवारी में हाथ बटानेवाली अेक संस्था बन जाती है, तो मेरे लिअे जरा राहत होती है। मानसिक राहत नहीं, लेकिन स्थूल राहत होती है।

अब आपकी जिम्मेवारी स्पष्ट है। अब आपको और हमको बहुत गंभीरता से सोचना चाहिये। अूपर-अूपर से सोचेंगे, तो हम पर कौन-सी जिम्मेवारी है, अुसका अेहसास नहीं होगा। आज हालत यह है कि हम पर जो जिम्मेवारी है, अुसके लिये हम छोटे पड़ते हैं। लेकिन गणपति को चूहा ही वाहन पसंद आया। अुस तरह अिस महान् विचार का हम ही वाहन मिले, अैसी अेक विलक्षण दशा आज हिन्दुस्तान में है। बापू ने अिसे टालने की कोशिश की थी और बड़े वाहन पर यह बोझ हो अिसकी अुन्होंने कोशिश की थी, लेकिन *वह नहीं बना। अिसलिअे हम जैसे छोटे वाहन* पर असका बोझ पड़ा। अिस हालत में हमें बहुत सावधान होना चाहिये। सोचने में बहुत ध्यान रखना चाहिये।

साहित्यकों का आश्रय और साहित्य शक्ति की आवश्यकता

विनोबा

हमने भारत में आठ साल में थोडे-बहुत काम किये। गाधीजी की मृत्यु को अब बारह साल हो रहे है। अिन बारह सालो में हमने क्या किया और क्या नही किया अिस पर सोचेंगे तो ध्यान में आयेगा कि जितना किया अुससे ज्यादा नही किया।,हम जो कर सके अैसी चीजें कम निकलेगी और जो नही कर सके अैसी चीजें ज्यादा निकलेगी। अिसी सिलसिले में हमने शिक्षण की बात कही थी। वैसे ही जान-बूझकर नही, लेकिन फिर भी हमने साहित्यिको की और साहित्य प्रवृत्ति की अुपेक्षा की है। मैं जहा-जहा गया, मुझे आश्चर्य हुआ कि साहित्यिको ने अिस विचार के साथ बहुत ही सहानुभूति दिखायी। कर्नाटक में जितने बडे-बडे साहित्यिक मिले, वे कुल सर्वोदय विचार पर लट्टू है, बिल्कुल फिदा है। वे अिसकी ओर अितने आकर्षित हैं कि कहते है कि यही चीज है जो साहित्य को नव जीवन देती है, अन्यथा साहित्य को जीवन देनेवाली दूसरी कोअी चीज नही है। अिसका मुझे अितना आश्चर्य नही हुआ। क्योकि मैं जानता था कि कर्नाटक में अिस विचार पर पहले से ही श्रद्धा है। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ जब बगाल के साहित्यिको ने अिस पर श्रद्धा रखी और बडे से बडे साहित्यकों ने कहा कि साहित्य में प्राण सचार करनेवाली कोअी चीज है तो यह नया विचार है जो अभी प्रगट हो रहा है। यही अनुभव मुझे गुजरात में आया तो आश्चर्य नही हुआ, महाराष्ट्र में भी अिस विचार के लिअे मैंने अनुकूलता देखी। दो विचार के साहित्यिक होते हैं और वैसे होने ही चाहिये। जहा अेक ही विचार के साहित्यिक होते हैं वहा विचार कुठित हो जाता है, अिसलिअे मैं समझता हू कि अगर सब साहित्यिक हमारे ही विचार का समर्थन करनेवाले निकले तो विचार कुठित हो जायगा।

अितना सब होते हुअे भी हमें साहित्यिको की सेवा नही मिली, अिसमें हम साहित्यिको का दोष नही मानते हैं, बल्कि हमारा अपना ही दोष मानते है। हम में यह नम्रता होनी चाहिये कि जो हमारे आदोलन में नही हैं, जो तटस्थ है, अुनके पास हम जायें। क्योकि वे अिस आरोहण को हम से ज्यादा जानेंगे, जो अिससे अलग हैं, वे अिसकी परीक्षा ठीक से कर सकेंगे। लेकिन हम सोचते हैं कि हम साहित्यिको के पास क्यो जायें? वे तो अिस काम में दिलचस्पी नही लेते हैं, योग नही देते हैं। अगर अैसी कल्पना हम दूसरो के लिअे करें कि जो हमारे काम में दिलचस्पी नही रखते हैं, मदद नही देते हैं, अुनके पास क्यो जायें तो वह कल्पना गलत नही होगी। साहित्यिको के लिअे अैसी कल्पना करना कतअी गलत है। अुन्होंने अिस आन्दोलन में हिस्सा नही लिया तो वे हमें क्या सलाह देंगे, क्या मदद देंगे, यह मानना निरा अहकार है। हमें समझना चाहिये कि अैसे भी साहित्यिक हो सकते हैं जो कि आपके आन्दोलन में दाखिल नही हुअे हैं, अिसलिअे अुन्हें आपके आदोलन का सच्चा और अच्छा दर्शन होता हो। साहित्यिको में अेक खूबी होती है कि अुन्हे दूर से ही दर्शन होता है। मैं खुद साहित्यिक नही

हूं, लेकिन साहित्य की शक्ति का भान मुझे है। दुनिया की बहुत-सी भाषाओं के अच्छे-से-अच्छे साहित्य का अध्ययन करने का मुझे मौका मिला है और मै शब्द-शक्ति के महत्व को जानता हूं। अिसलिअे मै कहना चाहता हूं कि हमने आज तक साहित्यकों की अुपेक्षा की, वह ठीक नही किया। साहित्यिको के पास हमें नम्रतापूर्वक पहुचना चाहिये। यह नही सोचना चाहिये कि फलाना मनुष्य खादी नही पहनता है, सूत नही कातता है, शायद बीडी भी पीता है, अुसका जीवन अलग प्रकार का है तो अुससे हमें क्या मदद मिलेगी? परमेश्वर की अैसी कृपा है कि कभी-कभी वह जीवन के साथ दर्शन का ताल्लुक रखता है तो कभी नही रखता है। गीता में कहा है, "अपि चेत् सुदुराचारो"। भक्ति का सदाचारण के साथ बहुत सबध माना गया है और गीता के सातवे अध्याय में कहा है कि चार प्रकार के पुण्यशाली भक्त होते है। अिस तरह यहा पुण्याचरण के साथ भक्ति का सबध बताया है तो नवे अध्याय में कहा है कि दुराचारी भी भक्त हो सकता है। याने भक्ति का सदाचरण के साथ हमेशा ताल्लुक है, अैसा नहीं। दुराचरण के साथ भी भक्ति का ताल्लुक है। यह भक्ति की कीमिया है कि दुराचारी भी भक्ति कर सकता है। वैसे ही साहित्यको में भी साहित्य का मूलभूत विचार कभी-कभी अुन लोगो को सूझता है जिनका सदाचरण से सबध है तो कभी-कभी अैसे लोगो को सूझता है जिनका सदाचरण के साथ सबध नही है और जिनका आचरण देखकर हम कल्पना नही कर सकते है कि अैसे मनुष्य को गहरा और सूक्ष्म दर्शन होगा। अिसलिअे मै अीश्वर को मानता हू। कभी-कभी अैसे मौके आते है जब चीज अेक्सप्लेन नही होती है तब परमेश्वर को लाना पडता है। शेक्सपीयर के जीवन में और दर्शन में क्या अन्तर था? कोअी अुसके जीवन से अन्दाजा करे कि अुसका चिन्तन क्या होगा तो नही कर सकता है। हमारा नीति का चिन्तन भी अैसा है जो कि हमारी अकल से ही करते हैं। कुछ चीजें हम अपनी अक्ल से जान सकते है तो कुछ चीजें हमारी अक्ल से परे हैं। अिसलिअे साहित्यिको की सेवा हमें अुपलब्ध होनी चाहिये और हो सकती है। साहित्यक हमसे काफी अनुकूल है और हमारा फर्ज है कि हम अुनकी सेवा प्राप्त करे। अगर हम अुनकी सेवा प्राप्त करते है तो आज हमारे प्रकाशन की जो हालत है अुससे बेहतर हालत होगी। अिन आठ सालो में हमारा अेक प्लेटफार्म बना है। आज हम और हमारे छोटे-छोटे कार्यकर्ता भी कही जाते है तो अुन्हे ध्यानपूर्वक सुननेवाले लोग मिल जाते हैं। अिस तरह प्लेटफार्म तो बना है, लेकिन प्रेस नही बना है। (प्रेस शब्द का अर्थ मै अग्रेजी अर्थ में कर रहा हू।) आज हमारा साहित्य जितना खपता है, अुससे बहुत ज्यादा खपता और लोगो के हृदय में पैठता, अगर हम साहित्यिको की मदद ले सकते।

कभी-कभी हमारे भूदान के अखबारो में जो निबध आते है, अुनको मै सरसरी तौर पर देख लेता हू। मैने अिन निबध लेखको को अेक विनोद की सूचना दी है। मैने कहा कि अैसे सौ डेढ-सौ शब्दो को फेहरिश्त बनावो, जैसे-मिल्कियत मिटाना, भूदान यज्ञ अित्यादि। ये शब्द टालकर आप लिखिये तो जरूर आप साहित्यक बन सकेगे और आपके निबध पठनीय होगे। बार-बार वे ही चीज दुहराते हैं तो चीज यात्रिक बनती है, अुसमें रस नही

रहता है। अभिनव अुन्मेष जो होने चाहिये, शब्दो के नये-नये अकुर फूटने चाहिये, वह नही हो पाता है। हमें शब्दतत्वसारज्ञ होना चाहिये, तभी हम लिख सकेंगे। हरेक के लिअे वह सभव नही है। लेकिन अपने काम का बयान हर कोअी कर सकता है। निबध लिखना तो प्रतिभावान् लेखक का काम है। अैसे प्रतिभावान लेखकों का आश्रय हमें मिल सकता है। हमें अुनका आश्रय ही लेना चाहिये, अुनके आश्रित ही बनना चाहिये। अिसके मानी यह नही कि हमें अपने विचार, कनृविक्शन छोडना चाहिये। हम अपने विचार पर चिपके रहे, लेकिन साहित्यक हमारी क्रिटिसिज्म करे तो अुसे भी हम मार्गे। चाहे वे तारीफ करे या समालोचना; वह सब हमारे लिअे मदद ही होगी।

हमारे कार्यकर्त्ता लिखते नही है, यह मेरी हमेशा शिकायत रही है। लिखने में विचार की सफाअी होती है। मैं अिन दिनों लिखता नहीं हूं। अिसलिअे अगर कोअी मेरा अनुकरण करके न लिखें तो वह गलत अनुकरण होगा। मेरे चित्त में नित्य नये-नये विचार आते हैं। नये-नये शब्द मुझे सूझते हैं तो मैं बोलता रहता हूं। अिसलिये लिखता नही हूं। लिखने के लिअे समय भी नही है। लेकिन कार्यकर्त्ताओ को लिखना चाहिये और लिखकर मुख्य स्थान पर भेजना चाहिये। हम लिखते नही है, अिसका परिणाम यह होता है कि हमारा चिन्तन-प्रवाह सूखता जाता है। बेकन ने कहा था—'रीडिंग मेक्स अे फुल आँफ मेन, अेन्ड रायटिंग मेक्स हिम अेक्जेक्ट।' लिखने से विचार में स्पष्टता आती है। बोलने का भी अेक गुण है, लिखने का भी अेक गुण है। लेखक बनने के लिअे लिखने की बात नही बल्कि अपने रोज के अनुभव हम लिख रखें। अुसमें किसी की कोअी हानि नही होगी। वह मुख्य स्थान पर भेजना चाहियें, फिर चाहे अुसका अुपयोग हो या न हो, तो भी परवाह नही। लिखने से रोज चिन्तन का मौका मिलेगा और विचार की सफाअी होगी।

यदा वै विजानात्यथ सत्यं वदति, नाविजानन् सत्यं वदति, विजानन्नेव सत्यं वदति, विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति विज्ञानं भगवो विजिज्ञास अिति।

जिस समय पुरुष सत्य को विशेष रूप से जानता है तभी वह सत्य बोलता है, बिना जानें सत्य नहीं बोलता; आपि तु विशेष रूप से जाननेवाला ही सत्य का कथन करता है। अत. विज्ञान की ही विशेष रूप से जिज्ञासा करनी चाहिये। "भगवन! मैं विज्ञान को ही विशेष रूप से जानना चाहता हूं।"

—छान्दोग्योपनिषद्

शांति के लिअे शिक्षा

जे. कृष्णमूर्ति

ससार की आज की दुर्घट सधि में शिक्षा से क्या लाभ हो सकता है, यह चर्चा करने के पहले हमें यह समझने की जरूरत है कि यह सधि कैसे घटी। साफ तौर पर यह हमारे लोगो के साथ, सपत्ति के साथ और विचारो के साथ के सबध में गलत मूल्यों का परिणाम है। अगर अेक दूसरे के साथ हमारा सबध स्वार्थ और महात्वाकाक्षा पर आधारित है और सपत्ति के प्रति हमारी वृत्ति अुसपर स्वामित्व प्राप्त करने की होती है, तो समाज रचना स्पर्धा-युक्त और व्यक्तियो को अेक दूसरे से अलग करनेवाली हुअे बिना नही रह सकती है। विचारो के बारे में हमारी वृत्ति अेक आदर्श को दूसरे की तुलना में श्रेष्ठ साबित करने की अगर होती है, तो परस्पर अविश्वास और दुर्भावना अुसके अनिवार्य परिणाम होगे।

आज की विषम परिस्थिति का अेक दूसरा कारण जनता के अधिकारियो पर या नेताओ पर ज्यादा निर्भर रहना है, चाहे यह रोजाना जिन्दगी में हो, छोटी शालाओ में हो, या बडे विश्वविद्यालयो में। किसी भी सस्कृति में नेतागण और अुनके अधिकार नीचे गिरानेवाले कारक होते है। जब हम दूसरे का ही अनुगमन करते है तो अुसमें समझ नही होती है। सिर्फ भय और अेकरूपता रहती है, जो आखिर में अेकशासित सत्ता की क्रूरता और सगठित धर्म-व्यवस्था की कट्टरता की तरफ ले जाते है।

× × × ×

जिस शान्ति की प्राप्ति अपने आपको समझने से ही शुरू हो सकती है, अुसके लिअे सरकारी सगठनो और नेताओ पर निर्भर रहना और अधिक सघर्ष ही पैदा कर सकता है; जब तक हम अैसी अेक समाज रचना को स्वीकार करते है जिसमें अनन्त द्वद्व और मानव मानव के बीच शत्रुता है तब तक कोअी स्थायी सुख नहीं मिल सकता है। अगर हम वर्तमान परिस्थितियों को बदलना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने आपको बदलना होगा जिसका अर्थ है, हमें दैनिक जीवन में अपनी प्रवृत्तियो, विचारो और भावनाओ के बारे में सचेत होना पडेगा।

शान्ति किसी आदर्श से प्राप्त नही की जा सकती, न वह कानून बनाने से होगी, वह तभी आयगी जब हम व्यक्तिश अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओ और प्रवृत्तिया को समझने लगेंगे। अगर हम व्यक्तिगत तौर पर काम करने की जिम्मेदारी से जो चुराते है और शाति स्थापित करने के लिअे किसी नयी व्यवस्था के अिन्तजार में रहेगे तो अुस व्यवस्था के गुलाम हो बनेंगे।

× × ×

हमारी आज की सामाजिक व्यवस्था अेक विश्वराष्ट्र में परिणत नही हो सकती है, क्योकि अुसकी बुनियाद ही गलत है। जब तक हम मानव-मानव के बीच के आज के सबध में आमूल परिवर्तन नही करते है तब तक अुद्योगीकरण अनिवार्य रूप से हमें अव्यवस्था की तरफ ही ले जायेगा, वह सहार और दु ख का ही साधन बनेगा। हिंसा, स्वेच्छाचार, वचना और झूठे प्रचार के साथ मानव भ्रातृत्व नही सध सकता है।

लोगो को अच्छे-अच्छे अिंजिनियर, बडे-बडे वैज्ञानिक, सुयोग्य शासक या कुशल कारीगर बनने मात्र की शिक्षा देने से दलित और दमनकारियो का भेद नही मिट सकता है। हम देखते हैं कि आज की प्रचलित शिक्षा-व्यवस्था ने —जो मानवप्राणियो क बीच शत्रुता और द्वेष भावना के कारणो को कायम रखती है—देश के नाम पर या अीश्वर के नाम पर सामूहिक हत्या को नही रोका है।

हम में से ज्यादातर लोगो को कअी तरह के डर हैं और हम अपनी ही सुरक्षा के बारे में चिन्तित हैं। हम यह आशा करते हैं कि किसी अद्भुत चमत्कार से अचानक युद्धों का अन्त हो जायगा और यह सारा समय हम दूसरे राष्ट्रो पर युद्ध के कारण बनने का आरोप लगाते रहते हैं, जबकि वे अिस विपत्ति के लिअे हमें अपराधी ठहराते हैं। हालाकि युद्ध अितने स्पष्ट रूप से समाज के लिअे अहितकर है, हम अुसकी तैयारी करते रहते हैं और अपने बच्चा में सैनिक वृत्ति निर्माण करने का प्रयत्न करते हैं।

× × ×

क्या शिक्षा में सैनिक प्रशिक्षण के लिअे कोअी स्थान है ? अिसका अुत्तर अिस बात पर निर्भर है कि हम क्या चाहते हैं, हमारे बच्चे क्या बनें ? हम अुन्हे कारगर हत्यारे बनाना चाहते है तो जरूर सैनिक प्रशिक्षण आवश्यक है। अगर हम अुनके मन का अेक साचे में ढालना और अेक विशिष्ट अनुशासन के आदी बनाना चाहते हैं, अगर हम अुन्हे राष्ट्रीय-वादी और अिसलिअे विश्वसमाज के प्रति गैर-जिम्मेवार बनाना चाहते है तो सैनिक प्रशिक्षण अुसके लिअे अच्छा साधन है। अगर हम मृत्यु और विनाश को पसन्द करते हैं, तो सैनिक प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। सेनानायको का कार्य युद्ध की योजना बनाना और अुसको अमल में लाना है, अिसलिअे अगर हम चाहते हैं कि हममें और हमारे पडोसियो में अविरत युद्ध हो, तो अवश्य ही हमें ज्यादा सेनानायक चाहिये।

अगर हम अपने ही अन्दर और दूसरो के साथ भी अनत सघर्ष बनाये रखने के लिअे जीते हैं, अगर हम रक्तपात और दु ख को स्थायी बनाना चाहते हैं तो हमें अधिक सैनिको, अधिक राजनीतिज्ञों और अधिक शत्रुता का निर्माण करना होगा—और हो भी यही रहा है। आधुनिक सभ्यता हिंसा पर आधारित है, और अिसलिअे मृत्यु का वरण कर रही है। जब तक हम शस्त्रशक्ति की आराधना करते हैं तब तक हमारा जीवन का तरीका हिंसामय ही होगा। लेकिन अगर हम शान्ति चाहते हैं, मानव मानव के बीच अच्छा सबध चाहते हैं चाहे वह अीसाअी हो, चाहे हिन्दू, चाहे रूसी या अमेरिकन, अगर हम अपने बच्चो को सच्चे अिन्सान बनाना चाहते हैं तो साफ है कि सैनिक प्रशिक्षण बिलकुल ही बाधारूप है, वह अेक दम गलत रास्ता है।

द्वषभाव या सघर्ष के मुख्य कारणो में अेक यह विचार है कि कोअी खास वर्ग या जाति दूसरो स श्रेष्ठ है। बच्चा स्वभावत वर्ग या जाति के बारे में सचेत नही है, घर या स्कूल का वाता-वरण या दानो मिलकर अुसमें भेदबुद्धि पैदा करते हैं। वह खुद बिलकुल परवाह नही करता है कि अुसका खेल का साथी नीग्रो हो या यहूदी, ब्राह्मण हो या अब्राह्मण। लेकिन सारी समाज-रचना की व्यवस्था अुसके मनपर लगातार असर डालती है, अुसे बदलकर नया रूप देती है।

बच्चा अिन गलत विचारो और पूर्वग्रहों से मुक्त होकर पल सके, अिसके लिअे जरूरी है

कि हम पहले अपने अन्दर से अिनको निकाल दें और फिर आसपास के वातावरण से भी– जिसका मायना है कि जिस निर्विचारपूर्वक समाज व्यवस्था हमने खडी की है, अुससे विच्छिन्न होना। घर में हम भले ही बच्चे से कहें कि यह वर्ग और वश का विचार कितना मूर्खतापूर्ण है, वह शायद हमारे विचारो से सहमत भी हो जायेगा; लेकिन जब वह स्कूल जाकर दूसरे बच्चो के साथ खेलता है तो फिर अुस भेद-बुद्धि से कलकित हो जायेगा। या अिसका अुल्टा भी हो सकता है–घर का वातावरण परपरानुसृत और सकीर्ण होगा, स्कूल का प्रभाव ज्यादा अुदार; दोनो परिस्थितियो में सघर्ष है, और बच्चा अुनके बीच में फस जाता है।

बच्चे का पालन बुद्धिपूर्वक करने के लिअे, वह अिन धारणाओ की मूर्खता को समझ सके, अिसके लिअे, हमें अुसके साथ हमेशा गहरा आन्तरिक सबध बनाये रखना पडेगा। अुसके साथ अिन बाता की चर्चा करनी होगी और अुसे बडो के अच्छे और विचारयुक्त बातचीत को सुनने का मौका देना पडेगा। अुसके अन्दर की जिज्ञासा और अन्वेषणवृत्ति को प्रोत्साहन देना होगा जिससे कि वह सत्य और असत्य को अपने आप परखकर समझ सके।

यह सतत अन्वेषणवृत्ति और सच्ची अतृप्ति ही सृजनात्मक बुद्धि को जन्म देती है। लेकिन अिस अन्वेषणवृत्ति और अतृप्ति को जगाये रखना अत्यत कठिन है। ज्यादातर लोग अपने बच्चो में अैसा बुद्धिवाद नही चाहते हैं। क्योकि जो हमेशा प्रचलित मूल्यो को मानने के लिअे तैयार नही हैं, अुनके साथ रहना असुविधापूर्ण है।

अपनी जवानी में हमारे सबके अन्दर अैसी अतृप्ति होती है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारी अनुकरणवृत्ति और अधिकारपूजा से यह अतृप्ति जल्दी ही दब जाती है। जब हम बडे होते जाते है, तो समाज से अेकरूप होने की वृत्ति बढती है, प्रचलित व्यवस्था से सतुष्ट बनते है, नये विचारो के बारे में आशका होती है। हम प्रशासक, पुरोहित, बैंको के क्लर्क, फाक्टरियों के व्यवस्थापक या प्राविधिक विशेषज्ञ बन जाते है और धीरे-धीरे हमारा सडना शुरू होता है। क्योकि हम अपने स्थानो को बनाये रखना चाहते हैं, अुस विनाशकारी समाज व्यवस्था को भी-जिसने हमें ये स्थान और कुछ मात्रा में सुरक्षा दी है–बनाये रखने में जुट जाते है।

× × ×

शिक्षा पर सरकार का नियत्रण अेक विपत्ति है। जब तक शिक्षा राज्य या सगठित धर्मव्यवस्था की दासी बनी रहती है तब तक दुनिया में शान्ति और समाधान की कोअी आशा नही। लेकिन ज्यादा ज्यादा सरकारें बच्चो के पालन और अुन के भविष्य को अपने हाथ में ले रही हैं। और जहा सरकार दखल नही देती है वहा धार्मिक सगठन शिक्षा को अपने काबू में रखना चाहते हैं। बच्चे के मन को किसी अेक विशेष आदर्श-वाद में ढालने से मानव मानव में भेद-बुद्धि निर्मित होती है।

शिक्षा में और दूसरे क्षेत्रो में भी आवश्यकता अैसे लोगो की है, जिनके अन्दर समझदारी और प्रेम हो।

युद्ध प्रतिरोधक अन्तर्राष्ट्रीय संघ

बनवारीलाल चौधरी

पश्चिम जगत् और विशेषत. यूरोप ने दो विश्वयुद्धों की भीषणता सही है। मानव समाज के लिअे युद्ध के घातक और विध्वंसकारी रूप से वह परिचित है। अिसके फलस्वरूप अेव ओसा की शान्ति की सिखावन के कारण वहा कअी शान्तिवादी सस्थाओ का जन्म हुआ है। क्वेकर (रिलीजियस सोसाअिटी आफ फ्रेंड्स) फेलोशिप ऑफ रिकनसिलियेशन, कअी अन्य शान्तिवादी (पेसिफिस्ट) सघ, वार रेसिस्टर्स अिंटरनेशनल अित्यादि सस्थायें अिस क्षेत्र में प्रमुख हैं।

सन् १९२१ में 'दी वार रेसिस्टर्स अिंटरनेशनल' (युद्ध प्रतिरोधक अन्तर्राष्ट्रीय सघ) की स्थापना हालेंट में "पाको" (Paco) नाम से हुअी। मार्च १९२३ में "दी वार रेसिस्टर्स अिंटरनेशनल" के नये नाम से परिवर्तित अेव व्यवस्थित रूप में अिसका कार्यारभ अिंग्लैंड में केन्द्रीय कार्यालय की स्थापना से हुआ। "क्वेकर फेलोशिप आफ रिकसिलियेशन" अित्यादि शान्तिवादी धार्मिक सस्थाओ से भिन्न यह सघ धर्म-निरपेक्ष है। "युद्ध मानव के प्रति महान् पाप है। अिसलिअ मेरा यह दृढनिश्चय है कि मै किसी भी प्रकार से, किसी भी रूप के युद्ध में सहायक न बनूगा और युद्ध के कारणो के निराकरण का सतत प्रयत्न करता रहूगा।" अिस विचार को जो व्यक्ति माने और अिसकी लिखित घोषणा करे, वह अिस सघ का सदस्य बन जाता है। ससार के सब देशो में अिसके सदस्य हैं। धर्म न माननेवाले, अनीश्वरवादी, कम्युनिस्ट और अन्य विचारो के लोग भी अिस सस्था के सदस्य हैं।

सघ की घोषणा का कार्यवाही रूप व्यक्ति की क्षमता, परिस्थिति अेव अुसकी अन्तः प्रेरणा और बोध पर आधारित होगा। परन्तु निश्चयात्मक रूप से युद्ध निरोधक सघ का प्रत्येक सदस्य अहिंसा में विश्वास करता है और किसी भी कारण या परिस्थिति में मानव हत्या न करेगा। अिस हेतु प्रत्येक सदस्य समाज के विरोधी अेव हिंसात्मक तथा ध्वसात्मक परिस्थिति के निवारणार्थ शान्तिमय तरीको की खोज अविरल जागरूकता से करने में सलग्न होगा। अिसके लिअे यदि आवश्यक हुआ तो वह अपना जीवन भी अर्पण कर देगा।

सघ की मान्यता है कि सुव्यवस्था की स्थापना, पारिवारिक रक्षा, सामाजिक न्याय अेव राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राप्ति हिंसा के द्वारा कदापि हासिल नही की जा सकती। दरअसल, अनुभव तो यह है कि सभी युद्धो में व्यवस्था, न्याय और स्वतत्रता का हनन होता है। सघ यह भी मानता है कि सर्वदा केवल नकारात्मक या विरोधी रुख बनाये रखना ही शान्तिवादी लागो की कार्यपरायणता की अितिश्री नही है, वरन् अनका यह प्रमुख कर्तव्य है कि शान्ति स्थापना के लिअे वे रचनात्मक कदम अुठावे।

सघ का विश्वास है कि युद्ध का प्रारभ या अकुरण मनुष्य के दिल और दिमाग में होता है, परतु समाज में कुछ अैसे व्यक्ति या दल है जो अपनी स्वार्थ साधना के निमित्त हमारी मानवीय कमजोरियो को विकृत और बढाचढा रूप देकर समाज के विभिन्न वर्गों में आपस में भय, घृणा, विरोध अेव सघर्ष की भावना

जागृत करते हैं। युद्ध के कअी कारणों में निम्नलिखित कारणों को संघ मुख्य मानता है—

१ साम्राज्यवाद अेव आर्थिक साम्राज्य–स्वराज्य की न केवल प्रत्येक मनुष्य की हार्दिक अिच्छा रहती है वरन् यह अुसका जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रत्येक समाज को अपनी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था स्वेच्छा से, बिना किसी बाहरी दबाव, प्रभुसत्ता या दखल के तय करने की पूर्ण स्वतत्रता रहे।

२ अनुदारता–समाज के आपसी जात धर्म और विचार भेदो के स्वत युद्ध के कारण न होते हुअे भी अिनके प्रति अनुदार भावना अिन भिन्नताओ को हिंसा का कारण बना देती है।

३ आर्थिक अन्याय ससार की दो तिहाअी आबादी को पर्याप्त मात्रा में भोजन, वस्त्र और वासस्थान प्राप्त नही है। अुनकी अिन आवश्य-कताओ की अवहेलना हिंसा को जन्म देती है।

४ सामरिक तैयारिया–हाअिड्रोजन बम पर खर्च की गयी रकम भोजन की अुपलब्धि अव समाज के अुत्थान के कार्यों में खर्च की जा सकती और अति सहारक शस्त्रो का सग्रह युद्धप्रतिबधक होने के बजाय भय और शका को भडकाता है।

५ राष्ट्रवाद – जगत की भलाअी का विचार न कर केवल अपने राष्ट्र के स्वार्थ को महत्त्व देना युद्ध का प्रेरित करनवाली भावनाओ को जन्म देना है।

६ राज्य प्रभुसत्ता – विभिन्न राष्ट्रो की अपनी सर्वोपरि सत्ता का अधिकार का दावा युद्ध का अेक मुख्य कारण है। राज्य की स्थापना अिन्सान के लिअे हुअी है न कि अिन्सान की पैदाअिश राज्य के लिअे हुअी है। मानव के व्यक्तित्व की विशदता का खडन न हो, यह समाज-व्यवस्था का मूल सिद्धात होना चाहिये। और मनुष्यो की आपसी भ्रातृत्व की भावना ही अतर्राष्ट्रीय सबधो की आधार शिला बने।

सघ का प्रयत्न द्वेष को सद्भावना में, घृणा को अुदारता में, अेव निराशा को आशा में बदलना है, ताकि समाज में नवजागृति आय और ससार में भ्रातृत्व की भावना सजीव रूप धारण करे।

हमारा ध्येय अपने अिन विचारो को अमल में लाना है। सर्वथा युद्ध त्याग की प्रतिज्ञा अिसका प्रथम चरण है, तथा अिसमें विश्वास करनेवाले व्यक्तियो और सस्थाओ को आत्मिक बल अेव सहायता देना अिसका क्षेत्र है।

बहुधा अिस विश्वास पर चलनवाले व्यक्ति को महान् त्याग करना होता है और दारुण कठिनाअियो का सामना करना पडता है। जैसे देशो में जहा सामरिक कार्य अनिवार्य है युवको को अिसे अस्वीकार करने का फल शासकीय सजा, गरीबी जेल अव मृत्यु भी हो सकता है। हजारो व्यक्ति अिसी कारण से कअी देशो की जेलो में हैं।

यह सस्था धर्म और राजकीय दल निरपेक्ष होने से स्वतत्रता पूर्वक विभिन्न परिस्थितियो में शाति सदेश वाहक का कार्य सफल रूप से करने में समर्थ है। अपने सिद्धान्तो के अनुरूप यह सब देशो में शाति सस्थाओ की स्थापना में प्रोत्साहन देती तथा सक्रिय भाग लेती है। सब देशो के शान्तिवादी व्यक्तियो और सस्थाओ से वह सबध बनाये रखने का प्रयत्न करती है और अिन विचारो के कारण दडित सस्था तथा व्यक्तियो को कानूनी अव आर्थिक मदद

पहुंचाती है। संस्था का प्रधान कार्यालय शान्ति समाचार का प्रचार करता है। कओी लोगो को जेल, कन्सेंट्रेशन कैंप और मृत्युदंड से बचाने में संघ समर्थ हुआ है। अिग्लंड, फ्रान्स और अिजराअिल द्वारा अरब संयुक्त राष्ट्र पर हुअे हमले का संघ ने सक्रिय विरोध किया और अिंग्लंड की जनता में युद्ध विरोधी वातावरण का निर्माण किया।

युद्धनिरोधक संघ के अुद्देश्य, भावनाअें और नीति अेवं रीति सर्वोदय विचारों से मिलते-जुलते हैं। यह संघ गांधीजी के महान व्यक्तित्व और विचारों से प्रभावित हुआ है। अिसलिअे लगभग तीन युग से अिस संघ का सर्वोदय आन्दोलन के साथ अनौपचारिक संपर्क रहा है। संघ के स्थापक स्वर्गीय अेच. रूनहाम ब्राअुन ने बापू से अिंग्लंड में भेंट की थी। होरेस अलेग्जांडर, रिचर्ड ग्रेग और स्वर्गीय रेजिनाल्ड रेनाल्डस (अंदला) युद्ध निरोधक संघ के अिन तीन सदस्यों द्वारा भारत के स्वातंत्र्य सत्याग्रह अेवं रचनात्मक आंदोलन में लिये गये सक्रिय भाग से हम सब परिचित हैं।

शांति सैनिक श्रीमती मार्जरी साअिक्स और श्री डानेल्ड ग्रूम भी अिस संघ के सदस्य हैं। विदेशों में विनोबा के विचार तथा शान्ति सेना आन्दोलन का परिचय अग्रणी रूप से अिस संघ के त्रैमासिक ने दिया। अिसका अनुवाद अेस्परांटो, फ्रेंच और जरमन में होता है और संसार के सब देशों में वितरित किया जाता है।

सर्वोदय के बढते चरणों से प्रभावित हो, संघ अपना दसवां त्रिवार्षिक सम्मेलन २१ से ३१ दिसंबर १९६० तक गांधीग्राम में करने जा रहा है। आशा है कि अिस सम्मेलन में शांति सैनिक और देश-विदेश के अिस संघ के सदस्य गांधीजी की आत्मा से अनुप्राणित हो, विश्व में शान्ति तथा प्रेम के राज्य की स्थापना का आरंभ करने में सफल होंगे।

आज हमारा जिन्दा रहना या मरना चन्द लोगों के हाथ में है। अुनमें से किसी अेक की बुद्धि बिगड़ गयी, तो हमारा जीवन खतरे में है। फिर हमारी अकल नहीं चलेगी। अुस राक्षस पर हमारा सारा जीवन आधारित है। वास्तव में वह राक्षस नहीं है। हम जैसा वह भी मनुष्य ही है। परन्तु अुसके हाथ में शस्त्र देकर अुसपर हमारी कुल जिम्मेवारी डालकर हमने ही अुसको राक्षस बनाया है और हम बिलकुल अनाथ बन गये हैं। आज विज्ञान बहुत बढ गया है। विज्ञान के आधार से जगह जगह का अिन्तजाम हो सकता है। अब अणु-युग आ रहा है। जिस वास्ते बिजली से जितनी विकेन्द्रित व्यवस्था नहीं हो सकी, अुतनी अेटमिक अेनर्जी से हो सकती है। यह जो सारी विद्युत् शक्ति है अेटमिक शक्ति है, माया शक्ति है, वह विध्वंसकारी भी हो सकती है और निर्माणकारी भी हो सकती है। कल्याण कर सकती है और अुपद्रव भी कर सकती है। अतः विज्ञान बढा है, यह अच्छी बात है। अुससे जीवन सुलभ होता है। अगर अुसके साथ अहिंसा जुड़ जाय, तो दुनिया में स्वर्ग आयेगा। लेकिन हिंसा अुसके साथ जुड़ जाती है, तो सब बर्बादी है।

—विनोबा

सेवाग्राम सघन क्षेत्र की पाठशालाओं का त्रैमासिक प्रतिवेदन

माधवराव गोडसे

सेवाग्राम, की पचनोदी में बीस गाव हैं । अुन्ही गावो को अेक सघन क्षेत्र मानकर बुनियादी शालाओं के द्वारा गावों का विकास करने का प्रयोग चल रहा है । अिन शालाओ के शैक्षणिक मार्गदर्शन का दायित्व हिन्दुस्तानी तालीमी सघ पर है । बुनियादी शालाओं को ग्रामीण सामूहिक जीवन के विकास का केन्द्र बनाने का प्रयत्न हो रहा है । जब हम ग्रामविकास का विचार करते हैं तो बहुत-सी कठिनाअियां सामने आती हैं । ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक जीवन और शैक्षणिक स्तर आदि अिनमें प्रमुख हैं । अिन कठिनाअियो की अवगणना कर बुनियादी शालायें गावों से घनिष्ठ सबध रख सकेंगी, अैसी आशा कतअी नहीं की जा सकती । बुनियादी शालाओ का पाठ्यक्रम ही हमें अैसा रखना होगा जिससे कि पाठशाला में दी जानेवाली शिक्षा और ग्रामीण जीवन में पूरा सामजस्य हो । पालक और शिक्षक के मध्य में बालक है । खेती के छोटे-मोटे कामो में पालकों को अपने बालकों की सहायता की जरूरत पडती है । अिस वजह से बुनियादी शालाओ का समय-पत्रक ग्रामीण अुद्योगो को ख्याल में रखकर बनाना अुपयुक्त होगा । ऋतुओ के अनुसार बुनियादी शालाओं के समय-पत्रक में तबादला किया जाता है । अिस वर्ष जुलाअी से सितबर तक बालकों की कुल पटसख्या १५७० रही और औसत अुपस्थिति १२०७ रही। करीब ६१० बालक अपने माता-पिता के साथ खेती काम पर लग जाते थे । बालक अिस तरह अपने माता पिता के काम में थोडा सहारा पहुँचाते हैं । सबेरे दो घटे तक वे शाला में शिक्षण प्राप्त करते हैं, दुपहर को खेती काम के लिअे अुनको छुट्टी मिल जाती है । अिसी तरह मजदूरी में भी अुन्हें मां-बाप की सहायता करनी पडती है । वहियां, पुस्तकें तथा शिक्षण के अन्य सामान खरीदने में अुन्हें अिससे कुछ राहत मिल जाती है । पिछले तीन माहों में ६१० विद्यार्थियो ने अपने माता-पिता के साथ करीब २४० रुपये मजदूरी के रूप में कमाये ।

प्रत्येक शाला में वर्षा-ऋतु में कुछ पेड लगाये जाते हैं । बीस शालाओं में जिस समय पेडों की सख्या १३० है । शासन की ओर से अगस्त माह में वृक्षारोपण सप्ताह मनाया जाता है । अैसा अुद्देश्य अिन शालाओं के सामने कभी नहीं रहा कि वृक्षारोपण सप्ताह में चन्द पेड लगाने से ही अपने कर्तव्य की अितिश्री मानी जाय । निसर्ग की अनुकूलता और रुख देखकर सितबर के अत तक आवश्यक सख्या में पेड लगाये गये । शालाओं के विद्यार्थी अुन पेडों की देखभाल तत्परता से करते हैं । विद्यार्थियों की शिक्षा की दृष्टि से वृक्षारोपण का कार्यक्रम बहुत फायदेमद रहा । पेडो के प्रकार, अुनको लगाने का तरीका, अुनकी क्रमश. बाढ, आदि के शिक्षण तथा निरीक्षण के अवसर अुनको प्राप्त होते रहे । अैसे काम के जरिये बालकों को जो शिक्षण मिलता है वह अधिक स्वाभाविक और असरदार होता है ।

मृगशिर नक्षत्र के बाद गावों में 'चातुर्मास' शुरू होता है । भावुक लोग चातुर्मास में धार्मिक ग्रथ पढते हैं । हरिविजय, भक्तिविजय, नवनाथ और पाडव प्रताप आदि ग्रथो को अुनमें से कोअी

भाओी पढकर सुनाते है। रोज रात को दस बजे तक यह कार्यक्रम शाला में या मन्दिर में चलता है। कभी कभी हमारी शालाओ के अध्यापक भी अुन ग्रथो का वाचन और स्पष्टीकरण करते हैं। लोगों की धार्मिक भावनायें अिस प्रकार के ग्रथ सुनने से अधिक तीव्र होती हैं। अिन भावनाओं की पार्श्वभूमि पर अगर ग्राम-निर्माण का काम हो सके तो अुसके अधिक सफल होने की सभावना है। अिस दिशा में शिक्षको का प्रयत्न भी जारी है।

अिस साल अिन गावो में बहुत अधिक वर्षा हुअी। हमारी फसल अच्छी नहीं है। गावों में कओ लोगों के मकान गिर गये। कअी दिनो तक लगातार वर्षा होने के कारण बहुसख्यक मजदूरो को काम न मिल सका, हफ्तो तक अुन्हे बेकार रहना पड़ा। अिन मजदूरो के बच्चो के भोजन का प्रबध न था। गावशालाओ के शिक्षको ने अैसे बच्चो के नाश्ते का प्रबध किया। तालीमी सघ की ओर से शालाओ के बच्चों को पावडर दूध देने की व्यवस्था रही है। पिछले चार माहो से आठ शालाओ के बच्चो को पावडर दूध दिया जा रहा है। बच्चो की पसन्द के अनुसार अुन्हे दही, छाछ या दूध के रूप में देने का प्रबध शाला करती है। आहारपूर्ति की समस्या का हल पूरे तौर पर शाला नहीं कर सकी, परन्तु कुछ अशो में अिस समस्या का लघूकरण हो जाता है। अिससे बच्चों का स्वास्थ्य सुधरा है। बच्चो का स्वास्थ्य किस तरह सुधरा अिसका तुलनात्मक आलेख पिछले साल के वार्षिक विवरण में सविस्तार दिया गया है।

सतत वर्षा के कारण अिस साल गावो में सफाअी की अधिक जरूरत रही। खास तौर से गावो के कुअें, नालिया और रास्ते साफ करने में शालाओ के बच्चो और शिक्षको का मुख्य हिस्सा रहा। शिक्षको के मार्गदर्शन में गाव के सभी कुओं में जतुनाशक दवाअिया डालकर गाव के पीने के पानी को शुद्ध रखने का प्रयास विद्यार्थियो ने किया। शालाओ में हमेशा पीने के पानी में दवाअी (क्लोरीन सोल्यूशन या नीरज) डाली जाती है। चार साल के पहले यह अनुभव था कि वर्षाऋतु में शाला के अधिकतर बच्चे डॉयरिया और डीसेंटरी से बीमार रहते थे। पीने के शुद्ध पानी का प्रबध स्कूलो में हो जाने के बाद ये बीमारिया कम हुअी। सफाअी को शाला के पाठ्यक्रम का प्रमुख अग मानकर काम हुआ। शाला में विद्यार्थियो को सफाअी और आरोग्य का जो शिक्षण मिला अुसने घरेलू सफाअी में बच्चो के माता-पिता को अधिक प्रभावित किया। बालक घर की सफाअी पर अधिक ध्यान देता है क्योकि अुसमें सफाअी का बोध विकसित होता है और शिक्षकों को ग्रामवासियों का सहयोग स्वाभाविक ही मिल जाता है। सहयोग प्राप्त करने की जो अपेक्षा शिक्षक रखता है, अिस प्रक्रिया से अुसको अपेक्षा से अधिक सहयोग मिल जाता है।

प्रत्येक शाला में प्रमुख मूलोद्योग कताअी और थोडी बुनाअी रही। अिस साल वर्षा के कारण कताअी से अुत्पादन का जो लक्ष्य था वह पूरा नहीं हो पाया। परन्तु बालको के बैठने के लिअे तीसरी व चौथी कक्षा के विद्यार्थियों ने और शिक्षको ने ३० गज दरी बुन ली है। अिसकी कीमत करीब ३० रुपये होती है। सिर्फ आर्थिक अुत्पादन बढाना अिन बुनियादी शालाओ का लक्ष्य कभी नहीं रहा है। काम के जरिये

शिक्षण प्राप्ति तथा अुत्पादन-वृद्धि स्वाभाविक ढग से हुअी है ।

हमारे २० गावो में से १६ गावो में ग्राम-पचायते है । आज तो ग्राम पंचायतो से गावो में झगडे शुरू हो गये है । अनेक पक्ष और पार्टियाँ तथा जातीय भावनाअें निर्मित हो रही हैं । ग्रामनिर्माण के रास्ते में यह अेक वडा खतरा है । हमारी बुनियादी शालाअें अिन अुपद्रवो से कोअी वास्ता नही रखती है । गाव के लोग कभी अच्छी वातो और अच्छे विचारो का आश्रय पाना चाहें तो अुन्हें अिन बुनियादी शालाओ में ही ढूढते है । सकुचित जातीयता भावना रहित अेव पक्षातीत अेक छोटे-से समाज का दर्शन वुनियादी शालाओ के वच्चो के सामाजिक सघटन में स्वाभाविक ही हो जाता है । शालाओ में पानी भरना, पीने के पानी का शुद्धीकरण करना, शाला की सफाअी करना, वर्ग सजाना, सामूहिक प्रार्थना करना, मिलकर अेक साथ खेलना आदि प्रवृत्तिया से विद्यार्थियों का आपसी सगठन वढता है, सगठन के बढने के साथ अुनमें सद्गुणो की अभिवृद्धि हाती है, और अिन सद्गुणो को अुनके आपसी व्यवहार में साकार होते हम देख सकते है ।

पिछले अगस्त माह से प्रायोगिक तौर पर छ. गावो में प्रौढवर्ग चलाये जा रहे है । प्रौढ-वर्गों में निरक्षरता निवारण का काम ही हुआ अैसी वात नही है, ग्रामीण समस्याओ पर भी विचार विमर्श होता रहा है । गाव के लागा को शिक्षको के जरिये मार्गदर्शन मिलता रहा है । प्रौढवर्गों में सामयिक खवरे सुनायी जाती है, लोकगीतो का अभ्यास भी होता है । प्रार्थना के जरिये अेकाग्रता का अभ्यास अुन्हे होता है और भिन्न-भिन्न अवसरोपर आरोग्य और सफाअी का ज्ञान भी मिलता है । हम चाहते हैं कि प्रत्येक पाच परिवार के लिअे अैसा अेक प्रौढवर्ग चले । गाव के सुशिक्षित भाअी-वहनो को चाहिये कि अैसे वर्गों का सगठन करे । अिन का सगठन ग्राम-पंचायतो के द्वारा भी हो सकता है ।

बीस गावो में से आठ में गाव के लोगों के लिअे सार्वजनिक वाचनालय खुले है । परन्तु वाचको की सख्या अभी वहुत कम है । आशा है कि आगामी माहो में लोग अिन वाचनालयो का अधिक लाभ अुठा सकेंगे । सभी शालाओ में विद्यार्थियो के लिअे छोटे-से वाचनालय को व्यवस्था है । अिन वाचनालयो से में हर अेक में ३०० से अधिक पुस्तके हैं । अपनी रुचि के अनुसार किताबे चुनकर विद्यार्थी पढ़ते हैं । वाचनालय हमेशा बच्चो के लिअे खुले रहते हैं और पुस्तको का वितरण विद्यार्थी ही करते हैं । कुछ पुस्तके गाववाले भी ले जाते है ।

सितवर माह में चार गावो में गाव के विद्यार्थी तथा ग्रामीण जनता के लिअे पुस्तकों की प्रदर्शिनिया रखी गयो थी । शाला में जितनी पुस्तके है अुन्हे मेज और वेंचो पर विभिन्न विषयो के अनुसार सजा कर रखा गया था । अिससे विद्यार्थी तथा दूसरे लोग भी वाचनालय को समूची किताबो से परिचित हुअे । पुस्तको के चुनाव में विद्यार्थियो को मार्गदर्शन तथा सहूलियते दी जाती हे ।

अिस साल सितवर तक पटसख्या २० प्रतिशत बढो । विद्यार्थियो की बढती हुअी सख्या शिक्षको के लिअे अेक समस्या ही रही । अधिक सख्यक विद्यार्थियो को सभालने में शिक्षकों को कठिनाई हुअी । करजीकाजी, खरागना, कोपरा, आदि गावो में वहा के कुछ शिक्षित भाअियों ने गावशाला के शिक्षणकार्य

हमारा सामयिक–परिस्थिति वर्ग

[सेवाग्राम अुत्तर-बुनियादी भवन के कुल विद्यार्थियो के लिअे (अिस समय विद्यार्थियो की सख्या ३३ रही) यह वर्ग चलता रहा है। वर्ग का समय ३० मिनिट से ४५ मिनिट तक रहता है। वर्ग में अेकदम नये विद्यार्थियो से लेकर तीसरी टोली के विद्यार्थी भी रहते थे। अिसलिअे वर्ग का स्तर कभी प्रारभिक और कभी कुछ अूचा भी होता था। अगर यह वर्ग अेक ही स्तर के विद्यार्थियो के लिअे होता तो अधिक अच्छा होता।

वर्ग में अखबार, भारत का अेक नक्शा कभी-कभी ग्लोब भी और श्याम पट हर समय रहते थे। विना नक्शे के अैसा वर्ग बेकार ही सिद्ध होता है। विद्यार्थी वर्ग मे आने के पहले वाचनालय से अखबार पढकर आते थे। पहले वे स्वय ही खबरे बताते और अुनपर चर्चा-विश्लेषण करते थे। अनेक खबरे अैसी होती थी जिन्हें वे समझ नही पाते थे। अैसी खबरो को शिक्षक समझा देता। जब नये-नये देशो का नाम आता तो विद्यार्थी बडे खेल-खेल से अुन्हे नक्शो में ढूढते और अुसकी भौगोलिक परिस्थिति को समझने की कोशिश करते।

–शिक्षक]

दोपहर को सूत्रयज्ञ के बाद यह वर्ग होता है। असल में यह वर्ग नही है, अिसमें समाचार पत्र वाचन होता है, और अुसपर चर्चा। गुरुजी और हम लोग अेक दूसरे से प्रश्न करते हैं। कितनी ही अिस प्रकार की खबरे होती है जो समझ में नही आती। बहुत-सी खबरा के पीछे अितिहास होता है, कितनी ही खबरे अैसी होती हैं जिनके अन्दर राजनीति की अुलट-पुलट और अुलझी बारीक बाते भरी रहती है। हम अुनके बारे में गुरुजी से पूछते हैं। कभी-कभी तो हमारे ख्याल में भी नही आता कि अमुक समाचार के पीछे कुछ गहरी बात है या नही। अैसी खबरो को गुरुजी स्वय समझाने की कोशिश करते हैं। खबरो को पढते समय अनेक देशो के नाम आते हैं, अुनमें से कितने ही हम जानते भी नही। अुन्हे नक्शे पर ढूढने और समझने में खूब मजा आता है। समाचार की बहुत-सी बाते अुससे समझ में आ जाती हैं।

पिछले दिना में हमारे अिस वर्ग में वैसे तो कितनी ही खबरो पर चर्चा हुअी, किन्तु मुख्य तौर पर दो समस्याओं पर कअी दिनो तक विचार-विनिमय चलता रहा। अिन में पहली तो केरल की समस्या थी और दूसरी तिब्बत की परिस्थिति। दोनो में हमें खूब जानने को मिला।

कम्यूनिस्ट पार्टी का राज्य अेक प्रदेश में चुनाव के आधार पर बना और केन्द्र में काग्रेस का राज्य बना। यह परिस्थिति अेक महत्वपूर्ण अैतिहासिक घटना थी, वहा के आन्दोलन से पहले हममें से अधिक को अिस बात का भान भी नही था। हमें लगता था कि यह मामूली बात है। परन्तु अिसके क्या क्या असर हो

सकते हैं, यह अब पता चला। कम्यूनिस्ट पार्टी का आदर्श और अन्य पार्टियों का आदर्श अलग है, यह तो मालूम था, किन्तु प्रत्यक्ष व्यवहार में अुसका क्या स्वरूप होता है यह अिस आन्दोलन के समय देखने को मिला।

राजनीति अगर पार्टीबाजी पर आधारित होती है तो अुसका परिणाम कितना खराब होता है यह केरल के अुदाहरण से हम लोगों के सामने स्पष्ट हो गया। वहा जातिवाद का भयानक दृश्य दीखा।

जब जनता अपने आप में शक्तिशाली नही होती है और जब वह सुशिक्षित नही होती है तो अपना सारा राजकाज दलबदीवाली राजनीति के लोगो के हाथ में सौंप देती है। जनता को वे सब खराब बाते सहन करनी पडती हैं जिन्हें राजनीतिवाले लोग अपने स्वार्थ के लिअे करते हैं। कोअी तो अपनी सत्ता का अुपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिअे करता है, और कोअी अपनी पार्टी के लिअे जनता के अूपर अपनी जोर-जबरन चलाता है। केरल की परिस्थिति का अध्ययन करने पर देखा कि वहा भी पार्टीबाजी की अिस प्रकार की कअी बाते हुअी।

यह चर्चा दो सप्ताह तक चली और अन्त में हम अिस नतीजे पर आये कि—

१. जबतक राजनीति का आधार पार्टिया होगी तब तक यह आशा करना कि सारी जनता का भला हो सकता है, भूल होगा।

२. प्रथम आवश्यकता है जनता की सच्ची शिक्षा की और साथ-साथ गावो को समृद्ध बनने की। जब गाव समृद्ध और जनता शिक्षित होगी तब समाज-व्यवस्था के लिअे केवल अैसे योग्य व्यक्ति ही आयेंगे जो निरपेक्ष वृत्ति से सेवा करनेवाले होगें।

केरल की परिस्थिति की चर्चा करते समय हमें निम्नलिखित बातो का अध्ययन करने का मौका मिला।

१. केरल की भौगोलिक स्थिति और राज्य पुन.सगठन के पहले और बाद का केरल राज्य।

२. केरल की सामाजिक स्थिति–वहां की जनता में क्रिस्ती, मुस्लिम और हिन्दू जातियां।

३. केथोलिक क्रिस्तियां और नायर जाति का सगठन।

४. शिक्षा व्यवस्था का ढाचा–शिक्षकों की आर्थिक अवस्था–कम्यूनिस्ट राज्य के पहले और शिक्षा कानून बनने के बाद।

५. राज्य का भूमि कानून बिल–अुसमें सचमुच गरीबो को लाभ होता या केवल मध्यमवर्गीय किसानों को।

६ केरल में शातिसेना का कार्य।

७. केरल में सर्वोदय कार्य के स्वरूप की कल्पना।

दूसरा विषय आया तिब्बत का। यह प्रसग केरल से भी अधिक कठिन था। केरल के बारे में तो हम लोग पहले से कुछ जानते भी थे, परन्तु तिब्बत देश की जानकारी अत्यत. अल्प-मात्रा में हममें से कुछ अेक को ही थी। भारत में दलाअी लामा के आने से भी यह समस्या अिस देश के लिअे महत्वपूर्ण बन गयी। वैसे तो कोअी देश किसी दूसरे देश के अस्तित्व पर हमला करे या अुसकी पूर्ण स्वतत्रता को छीनने का प्रयत्न करे तो दूसरे किसी भी देश के सामने यह प्रश्न ज्वलत रूप में आ खडा होता है। किन्तु तिब्बत का प्रश्न हमारे राष्ट्र के लिअे और भी अधिक महत्व का था।

चीन हमारा मित्र-राष्ट्र है। चीन के साथ हमारी मैत्री हजारो वर्ष की है। अिसलिअे

किसी गैर-समझी के कारण अगर वह मैत्री कम हो जाय तो वह अच्छी बात नही। चीन को यह नही समझना चाहिये कि क्योकि दलाअी लामा को हमने आदर के साथ स्थान दिया है, हम चीन के दुश्मन हो गये। भारतवर्ष की परपरा अतिथि सत्कार की है। वह हमारा श्रेष्ठ-धर्म है। दलाअी लामा तो तिब्बत के धर्मगुरु है। अुन्हे अपना अतिथि मानना तो हमारी सस्कृति का गौरव है। अुनको अतिथि बनाया तो अिसका मतलब यह नही कि हम चीन के खिलाफ कोअी कार्य कर रहे है। चीन को अैसा नही समझना चाहिये।

तिब्बत और हिन्दुस्तान का सबध भी हजारो वर्ष का है। आज से लगभग १३०० वर्ष पहले भारत से ही वहा बुद्ध भगवान का सदेश गया था। तिब्बत के लोगो ने अुसे अपना ही धर्म मान लिया। सास्कृतिक दृष्टि से भारत और तिब्बत अेक हो गये। वहा के लोग यहा व्यापार करने के लिअे आते थे। हमारे व्यापारी भी व्यापार करने के लिअे वहा जाते रहे है पिछले सौ-दो सौ वर्षो में तो भारत सरकार और तिब्बत का राजनैतिक सबध भी रहा है।

अिस प्रकार हमने तिब्बत की समस्या को लेकर अनेक प्रश्नो पर चर्चा और अध्ययन किया। अुनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं।

१ तिब्बत की भौगोलिक परिस्थिति—तिब्बत का नक्शा बनाया। वहा की अूचाअी और मौसम के बारे में खास तौर पर जाना। क्षेत्रफल और जनसख्या का सबध।

२. वहा के रीति-रिवाज—धार्मिक ढाचा। दलाअी लामा की परपरा। समाज-व्यवस्था की थोडी जानकारी मिली।

३ तिब्बत में बौद्ध-धर्म का विकास। धर्म के आधार पर भारत से सबध।

४ बौद्ध-धर्म के प्रवेश के बाद वहा का अितिहास। चीन के साथ सबध और वहा की राजनैतिक परिस्थितियो में समय-समय पर अदल बदल। गोरखो का आधिपत्य, चीन का असर, भारत की ब्रिटिश सरकार का प्रभाव अित्यादि की अैतिहासिक जानकारी मिली।

५ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिमें तिब्बत का प्रश्न।

६. भारत और तिब्बत की समस्या का सबध।

७. चीन और भारत का सबध।

अिस प्रकार हमारे समाचार पत्र वाचनवर्ग में हम तरह तरह की खबरो पर चर्चा करते है और आखिर में यह समझने की कोशिश करते है कि अुन सबका हल किस प्रकार हो सकता है।

१ सितबर १९५९ —अेक विद्यार्थी

(पृष्ठ १४२ का शेषाश)

में अुत्साहपूर्वक सहयोग दिया। वे रोज दो घटे का समय शिक्षण के लिअे शाला में देते रहे।

मनुष्य में सहयोग की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। निर्माण का काम सहयोग के आधार पर ही चलेगा। गाव की जनता का विश्वास प्राप्त हो तो अुनकी शक्ति और ज्ञान का लाभ अनायास ही शाला को मिलता है। शिक्षा का और ग्राम-निर्माण का काम परस्परावलबी ही हो सकते हैं, अिस विश्वास से अिस सघन क्षेत्र के शिक्षक काम कर रहे हैं।

वालवाडी शिक्षा के कुछ अनुभव

श्रीमती क्रिस्टीना सेगवोर

[श्रीमती क्रिस्टीना बहन पिछले फरवरी माह में सेवाग्राम आयी और तबसे नअी तालीम परिवार की सदस्या रही है। बालवाडी शिक्षा और बच्चों की मानसिक प्रवृत्तियो का अुन्होने विशेष अध्ययन किया है। अुनके स्वदेश हालैंड में बिल्टहोवन नामक स्थान पर अेक मौलिक ढग का शिक्षा केन्द्र श्री केसबुके नाम के शिक्षाविशेपज्ञ के नेतृत्व में चलता है, जिसमें क्रिस्टीना बहन ने बरसो तक प्रमुख रूप से काम किया है। अेक अत प्रेरणा के कारण वे चार साल पहले भारत आयी। वे शान्तिवादी हैं, यहा भी अुन्होने कअी स्थानो पर वालवाडी शिक्षा का काम किया। घर की प्रतिकूल परिस्थिति या दूसरे कारणों से जिन बच्चो की सर्जन शक्तियो का दमन हुआ है या अन्य मानसिक पीडायें पैदा हुअी है, बालवाडी में ठीक वातावरण, प्रेमपूर्ण बर्ताव और अुपयुक्त खेल व दूसरी प्रवृत्तियो द्वारा अुनको कैसे स्वस्थ किया जा सकता है, अिसपर अुन्होंने विशेष प्रयोग और अनुभव किये है। स्थानिक अुपलब्ध सामग्रियो से बच्चो के लिअे सस्ते व मानसिक विकास की दृष्टि से अुपयुक्त खिलौने बनाने का प्रयोग भी वह करती रहती है। भारत में बालवाडियो में प्राप्त कुछ अनुभवो का विवरण वह अिस लेख में अपने ही ढग से पेश करती है। —स०]

महाभारत की अेक कथा है कि गगादेवीने शापग्रस्त वसुओ की मा बनकर अपने जातमात्र शिशुओ को नदी में बहाकर अुन्हे मुक्ति दिलायी। बालवाडी के कुछ बच्चो को देखते समय मुझे अक्सर यह कहानी—जो कि मातृत्व की दृष्टि से भयावह, लेकिन अुसी समय कठोर सत्य से करुण है—याद आती थी।

छोटा बच्चा राम तीन ही साल का है। अगर वह अपनी कहानी बता सकता तो वह अिस प्रकार होती—'मेरी मा मुझे बहुत प्यार करती थी, लेकिन अुस प्रेम की पवित्रता दैनिक जीवन के अनत कष्टो के अेक मोटे तह से ढकी हुअी थी। अुसका जीवन बहुत कठिन था। रोज आठ दस आने कमाने के लिअे अुसे खेत में मजदूरी करने जाना पडता था। वहा से थकी मादी शाम को घर लौटी तो अुसे फिर अिधन के लिअे लकडी चीरना, खाना पकाना और घर के दूसरे धधे करने पडते थे। मैं चाहता था कि मा मुझे गोदी में लेकर बैठे और चूकि मुझे बोलने की भाषा नही आती थी मैं रोने से ही अपना मत प्रकट करता था। आखिर मुझे चुप करने के लिअे बिचारी मा के पास मारने के सिवा कोअी साधन नही रह जाता था और मैं रो रोकर सो जाता। मुझे अैसो याद है कि मेरी अेक छोटी बहन और भाअी हुअे थे, बाद में वे नही दीखे तो शायद वे रहे नही। मा चाहती थी कि मैं खूब तगडा मोटा बनू, तो मुझे जबरदस्त खिलाने का

प्रयत्न करती थी। मेरे पिताजी पास के गाव में काम करने जाते थे और शायद रात को घर आते थे। मुझसे लाड-प्यार करने का अुनके पास कभी समय नही था। मैं बडा से बहुत डरता हूँ।"

राम अितनी बाते बोल तो नही सकता है, लेकिन अुसकी अुन बडी-बडी आखो में से—जो आशका और आश्चर्य के साथ हमारी तरफ देख रही हैं, यह कहानी हम पढ सकते हैं। अिस बालवाडी में "बडे" मैत्री का व्यवहार करते हैं, और वे धीरे-धीरे बोलते हैं, कुछ जल्द बाजी में नही दीखते। यहा कहीं कोअी अच्छी मौसी रहती होगी जो अितने अच्छे-अच्छे खिलौने देती है। यहाँ दूध दिया जाता है और अिस में भी कोअी जबरदस्ती नही। तो जिस स्वर्ग से शाप के कारण वसुआ का भूमि में पतन हुआ, अुसकी कुछ झलक राम का फिर से दीखने लगती है। यहा अेक बडा आगन है, २० फीट लबा और २० फीट चौडा। अुसमें साफ रेत बिछाया हुआ है। राम अुसमें आराम से खेल सकता है। बरामदे के छत पर फूल से लदे बेल चढ रहे हैं। सूर्य की सुनहली किरणें अिस रेत और बेला के साथ खेल रही है। बेल के नीचे छाया में अच्छी ठडक लगती है। बालवाडी की ताअी ने अुसे खेलने के लिअे अेक बडे चौडे बर्तन में भर कर पानी दिया है। पास में कुछ रगीन सीप और पत्थर हैं। रेत का पहाड बनाकर अुसे सीप से सजाने और अुसपर से अेक नदी बहाने में कितना आनद है! बास और लकडी के टुकडो से बच्चे घर, पुल और सडके बना रहे है। अेक छोटी-सी सुन्दर चक्की है, जिसमें थोडा-थोडा अनाज डालकर पीस सकते हैं। क्या मजा है। थोडा पीसा तो साथी लोग अुसे ले जाकर रखते हैं। फिर कोअी दिन अुससे वन भोजन के लिअे रोटी बनेगी। यह स्कूल है, यहा कोअी अध्यापिका है, अैसा किसी को ख्याल नही आता।

राम जब पहले बालवाडी में आया तो कुछ दुबला-सा था। अब अुसका स्वास्थ्य अच्छा हो गया है और अिस अनुकूल वातावरण में अुसकी जन्मजात सर्जन शक्तिया फिर से जग गयी। वह फुर्तीला है, अुसकी निरीक्षण शक्ति ठीक है। यहा वह अपने साथियो के साथ हिल-मिल गया। सब के साथ दोस्ती करता है, और क्योंकि अब अुसमें "बडो" का भय नहीं है अिसलिअे वह सहयोग करने के लिअे और प्रेम दिखाने के लिअे तैयार है। अुसके छोटे शरीर में जीवन-शक्ति का सचार है, अुसके मन और बुद्धि अब दमन और भय से कुठित नही हैं।

अुसकी मा ने देखा कि अब राम ठीक खाता और सोता है, पहले जैसे तग नही करता है। अपने लडके का स्वस्थ शरीर और सुधरी हुअी आदते देखकर अुस बेचारी का हृदय आनद और कृतज्ञता से भर अुठा। अध्यापिका समय-समय पर अुसको समझाती है कि बच्चे के साथ प्रेमपूर्ण बर्ताव करना और डाटने मारने से बचना ही अुसकी बीमारियो का सबसे अच्छा अिलाज है।

गोपाल पाच साल का है। अुसमें और राम में बहुत फरक है। गोपाल के पिता पास के शहर में चाय की अेक छोटी दूकान चलाते हैं। गोपाल, अुसके मा-बाप, दादी, और अेक बुआ दूकान के पीछे अेक छोटे-से कमरे में अेक साथ रहते, खाते-पीते, और सोते हैं। गोपाल को अुसकी दादी या बुआ हमेशा अपनी गोदी में लेकर बैठती थी। अुसको खेलने, कूदने, दौडने

के लिअे कही जगह नही थी। थोडा बडा होने पर कभी-कभी अुसे अपने पिता के साथ दूकान में बैठने देते थे, जहा से वह रास्ते से जानेवाले लोगो को देखता था। जब बालवाडी में पहले आया तो वह खूब राने लगा और घर जाकर फिर दादी की गोद में बैठना चाहता था। अुसकी स्वयप्रेरणा बिलकुल लुप्त हो गयी थी। वह दूसरे बच्चो के साथ नही खेल सकता था। बच्चे को हमेशा पास में ही पकडकर रखना अुतना ही नुकसानदेह है जितना अुसकी तरफ बिलकुल घ्यान नही देना।

अध्यापिका को कअी दफे गोपाल के घर जाकर अुसकी मा-दादी से बाते करके बैठना पडा तब कही वह अुसका विश्वास प्राप्त कर सकी। दूसरे बच्चों के साथ मिलने जुलने में गोपाल को कुछ माह लग गये।

शहर के पास की अेक बस्ती से दो लडके आते है। अुनके चेहरो पर हमेशा आशका और सतर्क होने का भान रहता था। बास के टुकडे जोड-जोडकर और अुनमें चक्के लगाकर गाडिया बनाने और अुनमें सामान भरके ले जाने में अुन्हे बहुत मजा आया। लेकिन वे अपने आपको भूलकर स्फूर्ति से खेल नही पाते थे। अुनके जीवन में बहुत अरक्षा की भावना रही। शाम को जब सामान अुठाकर रखने और जगह साफ करने का समय आया तो ये भागने की कोशिश करते थे। अुन्हे सफाअी और नियमितता अप्रिय लगती थी। दूसरे दिन भी वे अेक अनिश्चित भाव से आये। तब हमने अुनकी दिलचस्पी बास के खिलौनों से गाडी बनाने में खीचने का प्रयत्न किया। अुनका मन थोडी देर के लिअे अिसमें अेकाग्रता के साथ लग गया और चेहरे में कुछ तनाव था भाव दीख रहा था। बच्चो को अिस तरह समाधानपूर्वक खेलने का अवकाश मिलता है, कोअी अुन्हे डाटते-डपटते नही, यह अुनके लिअे अेक नया अनुभव था। सिह, भालू, जैसे दुष्टमृग बन कर खेलने, बेरोक टोक भोकने और काल्पनिक शत्रुओं पर पजा मारने में अुन्हे बडी कृतार्थता मालूम हुअी; यह अुनके अन्दर भरे हुअे द्वेषभाव और हिंसावृत्ति के निकास का अच्छा मार्ग था। धीरे धीरे अुनका मन खिल गया। जब वे अपने आपको भूलकर खेल में मस्त हो गये और फिर दूसरी प्रवृत्तियो में भी लग गये तो आखो में स्फूर्ति और आनद की झलक दीखने लगी। अध्यापिका के और दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खेलना ही अुनके लिअे सबसे ज्यादा मददगार सिद्ध हुआ। अुससे अुनके मन से आशका और तनाव हट गये।

अब हम लक्ष्मी की कहानी सुनें। बालवाडी में सामूहिक और व्यक्तिगत तौर पर भी खेलने के अुपकरण है। लक्ष्मी अलग बैठकर अेक धागे पर मणिया पिरोकर माला बना रही है, क्योकि वह अभी सब के साथ खेलना नही चाहती है, सकोच शील है। अुसका परिवार मध्यमवर्ग का है और अुसको बार-बार यही समझाया गया कि कोअी "काम नही करना" है। लक्ष्मी खुद पानी भरना, नहाना, कभी कपडे भी धोना चाहती थी, लेकिन अुसे अिन प्रवृत्तियो से जबरदस्ती रोका गया। शुरू में अुसने बगावत की, वह रोयी चिल्लायी और जिद करती थी। लेकिन जब अुसका अनुभव पक्का हो गया कि मा का ही बश चलता है, अुसका नही, तो वह चुपचाप बैठने में ही गौरव महसूस करने लगी। फिर यहा बालवाडी में आयी तो क्या ताज्जुब है, यहा सब लोग कुछ-न-कुछ करते ही रहते

है। अुसे भी छोटी छोटी बाल्टियों में पानी भरने और खेलने की गाडियां खीचने के लिअे प्रोत्साहन देते है, जबकि घर में अुसे हमेशा यही शिक्षा मिली कि "कुछ करना नही" है। बेचारी लक्ष्मी दुविधा में पड गयी। दूसरे बच्चा के साथ खेलन में अुसे अच्छा नही लगता था क्योंकि अुनके कपडे अुसके जितने अच्छे और चमकीले नही थे। और ये बच्चे पढना लिखना भी नही जानते है जबकि लक्ष्मी को तीन साल की अुमर से ही अेक "मास्टर" आकर पढाते है। अुसे लिखना पढना और थोडा गणित भी आता है। फिर वह अिनके साथ क्या खेलेगी ? लेकिन लगता है कि अिन बच्चों को खेल में बहुत मजा आ रहा है, जो आनद लक्ष्मी को कभी अनुभव नही हुआ है। तो कभी-कभी लक्ष्मी विना कारण रो पडती है। अध्यापिका अुसे बडे प्रेम के साथ समझाती है और धीरे-धीरे सब के साथ हिल मिलकर खेलने के लिअे प्रोत्साहित करती है। लेकिन लक्ष्मी का बालसहज अुत्साह और स्फूर्ति करीब-करीब खतम हो चुके है। अुन्हे पुन-र्जीवित करने में समय लगेगा। स्वच्छन्द खलने कूदने और प्रकृति में आनद लेने की अुसकी आदत नही रही। प्रभात के सूर्य प्रकाश में गाती हुअी चिडियों और सुन्दर सुन्दर तितलियों को देखकर अुसका हृदय प्रफुल्लित नही हो अुठता। अुसे यही बताया गया कि पेड में फल होते है तो वे मनुष्य के लिअे अुपयोगी हैं। अुसके अलावा अुसने पेड पौधों के साथ बधुत्व का अनुभव नही किया। फूल जो है वे अुसके बालो को सजाने के लिअे है। यह अपने में ही कोअी प्रिय चीज है, अैसा बोध लक्ष्मी को नही होता। आगे भी अुसे अैसी ही शिक्षा मिलती रहेगी तो वह सब चीजों की तरफ अुनकी "अुपयोगिता" याने अपनी ही स्वार्थ-पूर्ति की दृष्टि से देखती रहेगी। अुसका जीवन सकीर्ण, निरुन्मेष और निरानद हो जायेगा। लेकिन हमें पूरा विश्वास है कि अैसा नहीं होगा। धीरे-धीरे बालवाडी के क्रियाशील और प्रीतिपूर्ण वातावरण से वह समरस हो जायगी। प्रकृति की तरफ और अपने सहजीवियों की तरफ अुसका मन खिल जायगा, अुसके हृदय में छिपा हुआ स्वाभाविक प्रेम और कोमल भावनाअें अुमड अुठेंगी। कुछ दिन के बाद आप देखेंगे कि वह अेक प्रेमल और जीवन के जोश से भरी हुअी बालिका है।

छोटे-से-छोटे बच्चे के साथ भी अुस आदर भाव के साथ व्यवहार कीजिये जो विश्व के अेक भावी नागरिक को मिलना चाहिये। आपकी तात्कालिक सुविधा के लिअे अुसके भविष्य की बलि नहीं दीजिये—न ही अुसको बढा-चढा कर अुसे बरबाद कीजिये। यह दूसरी वृत्ति पहली की जितनी ही नुक्सानदेह है। सब बातों के जैसे जिसमें भी ठीक रास्ते पर चलने के लिये प्रेम और समझदारी दोनों के सयोग की जरूरत है।

—बर्टरान्ड रसल

गणित की शिक्षा

राधाकृष्ण

जैसे कि पिछले लेख में कहा जा चुका है, अंकबोध के साथ-साथ बच्चे को पैसे, समय, लबाअी, परिमाण व वजन के साथ अिसका संबंध समझना चाहिये, क्योंकि तभी अुसके लिअे अिन अंकों का कोअी अर्थ होता है। बच्चों को घर में अिन अंकों और मापों का जो प्रारंभिक ज्ञान मिलता है, वह अुनके लिअे वास्तविक और अर्थपूर्ण होता है; क्योंकि जिन्दगी के याथार्थ्यों के साथ जुड़ा हुआ है।

अिस अवसर पर अिन बातों पर ध्यान रखना आवश्यक होगा:—

१. शिक्षा का काम व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर होना चाहिये–याने वह स्कूल में और घर में भी बच्चे के दैनिक जीवन के प्रश्नों से निकलना चाहिये।

२. बाद में गणित की मानसिक बुनियाद डालने के लिअे अिस स्तर पर खूब मौखिक प्रश्नोत्तर सहायक होंगे। लिखित अभ्यास बहुत कम किया जा सकता है।

३. माप से संबंधित प्रयोगों, और समस्याओं पर सामूहिक काम का खूब प्रोत्साहन देना चाहिये।

४. जहां आवश्यक हो या जहां अुसकी योग्यता और तैयारी हो वहां गणित के लिखित अभ्यास का प्रारंभ कर देना चाहिये।

५. हरअेक अवस्था में गणित का शिक्षाक्रम कुछ मौलिक बोधों के निर्माण के आधार पर बनाना चाहिये। और शिक्षकों को अिसके बारे में सावधान रहना होगा कि अगले कदम पर जाने के पूर्व अुसके पहले की प्रक्रिया का पूरा अभ्यास और समझ हो जाय।

६. प्रत्येक क्रिया में कितना समय दिया, क्या सीखा, कितनी योग्यता प्राप्त की, अिसका व्यक्तिगत आलेख रखने से किसी विशेष प्रक्रिया में बच्चे की कठिनाअियां समझने, अुसको मदद पहुंचाने, और अुसके लिअे ज्यादा अनुकूल कार्यक्रम बनाने में सहायता होगी।

वस्तुओं के साथ गणित का संबंध अुनके माप में है। ये माप किसी पदार्थनिष्ठ वस्तु-स्थिति पर आधारित नहीं, वे साधारणतया यों ही बनाये गये और परंपरागत हैं। अितना ही है कि मापी जानेवाली वस्तु के विस्तार के अनुसार हम छोटी-बड़ी अिकाअियों का प्रयोग करते हैं। जैसे—छपाअी की अेक लाअिन को अिंचों में, अेक कमरे को फुटों में, खेत को गजों में, और किसी यात्रा को मीलों में मापते हैं। अभी तक हमारे पैसे का हिसाब जो दो और तीन की अिकाअियों में होता था, काफी जटिल था। असली बात तो अेक प्रमाणित अिकाअी को चुनने और अुसका दूसरे मापों की अिकाअियों के साथ संबंध समझने की है।

स्कूल के पहले तीन साल की अवधि में बच्चे को अिन विषयों का बोध होना चाहिये।

१. माप की अिकाअियां—

अ. लंबाअी—अिंच, फुट, गज, फरलांग, मील।

आ. क्षेत्रफल–चौरस अिंच, चौरस फुट, चौरस गज।

अि वजन और परिमाण—मन, सेर छटाक, तोला।

औ. समय—दिन, घटे मिनिट।

अु पैसा—रुपया, नया पैसा।

२ सिक्कों की, फुटरूल की और वजन के विभिन्न अिकाअियो की पहचान।

३ समय, लवाअी, पैसे अित्यादि की अिकाअियो का परस्पर सबध और तुलनात्मक मूल्य।

४ अिनमें से प्रत्येक के साथ पहाडे को समझना और अुसका अभ्यास।

५ जोड, घटाव, गुणाकार, भागाकार, –अिन चार मूल क्रियाओं का विभिन्न अिकाअियो के सबध में अभ्यास।

६ सरल गणना के तीन सुसबद्ध अिकाअियो का परस्पर में बदलना।

७ साधारण दशमलव और अपूर्णाको का परिचय।

८ ज्यामिति के सादे आकारो से परिचय

९ सादे घन आकारों का परिचय।

१० अपने किये गणित में गल्तियो को स्वय देखकर समझने और सुधारने की क्षमता।

वस्तुओ के परिमाण, लवाअी अित्यादि की तुलना करने से ही माप का बोध बच्चो के मन में होगा। अिसी के साथ-साथ निर्धारित अिकाअियो के अुपयोग की आवश्यक्ता को भी स्पष्ट कर देना चाहिये। दो क्यारिया, दो रस्सी के टुकडे या दो कपडे मापने है। प्रश्न यह होता है कि कौन-सा ज्यादा लबा है? फिर चर्चा होती है। अच्छा, क्यारी को अपने पैरो से और रस्सी या कपडे को हाथो से माप ले। मान लीजिये—चार लडको ने खेत को पैरो से मापा। चारो के अलग-अलग माप निकलते है। अिसी तरह कपडे का भी। अब बच्चो को समझा सकते हैं कि अेक निर्धारित माप की आवश्यकता क्यो है? अिस समय फूट रूल (रूल-पट्टी) का अुपयोग शुरू करना चाहिये। वर्ग के सब बच्चे अुससे क्यारियों को या कपडे को मापेंगे और देखेंगे कि सबका माप बराबर आ रहा है। अैसे प्रसगो के बाद अक्सर बच्चे कुछ दिन तक सब चीजें मापना चाहेंगे। अुन्हे तब लकडी या बास से अपनी ही रूल पट्टी बना लेने के लिअे प्रोत्साहित करना चाहिये। फिर बच्चे अपने स्कूल का बगीचा या बरामदा मापेंगे तो देखेंगे कि रूल-पट्टी से काम ठीक नही होता। बहुत दफे रूल-पट्टी आगे ले जाने पर थोडा अन्तर हो जाता है। कभी-कभी भूल भी जाते हैं कि कितने दफे रूल-पट्टी रखी गयी। अब गज का डडा या टेप (नापने का फीता) बच्चो को दिया जाना चाहिये। अिसी तरह दूसरी अिकाअियों का भी परिचय होता है। वर्ग के सब बच्चों की अूचाअी ली जा रही है। बच्चे खुद दीवार पर या और कही अेक फुट, दो फीट, तीन फीट अित्यादि निशान लगा देते है। वर्ग में बहुत काम और हलचल है। सब बच्चे बडी तत्परता से वर्ग के सब बच्चो की अूचाअी का आलेख तैयार कर रहे हैं। शिक्षक या अेक बडा विद्यार्थी अेक-अेक करके सबकी अूचाअी बताता जाता है। अब मालूम हो गया कि फुट से काम नही चलेगा। अुसकी छोटी अिकाअी–अिच आती है, और फिर अुसके भी भाग करने पडते है। अपनी-अपनी रूल-पट्टी के भी अब भाग करके समझने का समय आ गया। अिसके बाद व्यक्तिगत

और सामूहिक रूप से भी बहुत-सारी वस्तुओं को मापने का काम देना अच्छा होगा-- सामूहिक रूप से हो तो ज्यादा अच्छा है। बच्चों की टोलियां बनाकर बगीचे की और क्यारियों की लबाअी, पौधों के बीच का फासला, दीवारों की अूचाअी, वर्ग कमरों की लबाअी, अित्यादि मापने का काम दिया जा सकता है। जिन बच्चों को अुनकी क्षमता या वृत्ति के कारण व्यक्तिगत रूप से काम करना ज्यादा अनुकूल होगा, अुन्हें वैसा ही काम देना चाहिये। बच्चे अपना-अपना आलेख भी तैयार करेंगे और तब वे अुसमें विभिन्न अिकाअियों का आपसी सबध समझेंगे।

क्यारियों, दीवारों, कागज अित्यादि की लबाई, चौडाई के माप के साथ क्षेत्रफल के ज्ञान का भी आरभ होता है। अपना काता हुआ सूत लपेटते समय बच्चे का भी गज और फुट के साथ सबध आता है। प्रमाणित अिकाइयों और अुनके आपसी सबधों का बोध हो गया तो फिर आगे अभ्यास के लिअे बहुत मौके आते हैं।

समय -- हर अेक बच्चा समय की कुछ स्थूल बातों से परिचित होता है। जैसा सूर्योदय, सूर्यास्त, और मध्याह्न। देहात के ज्यादातर घरों में कोअी घडी नहीं रहती है, अुनका कार्यक्रम सूर्य की गति के अूपर चलता है। फिर भी घडियों के बढते हुअे अुपयोग के अिस जमाने में अुसका ज्ञान छोटी अुमर में ही होना आवश्यक होगा। छोटे बच्चों के लिअ किसी निश्चित स्थानपर परछाअी मापना और अुसपर से समय बताना अेक मजेदार खेल हो सकता है। घटों, दिनों, हफ्तों और माहों के व्यवहार से भी साथ-साथ परिचय होते रहना चाहिये। स्कूल शुरू होते, दुपहर की छुट्टी के और शाम को बद होते समय घडी में सुअियां कहां पर रहती हैं यह बच्चे जल्दी समझ लेंगे। अिस सबध में छोटी सुअी की अपेक्षा में बडी सुअी की द्रुततर गति का निरीक्षण करना और अुसका अर्थ समझाना भी रसावह होगा।

अुद्योग या सफाअी के काम के बाद की चर्चाओं में बच्चों को समय और काम के सबध का बोध कराया जाना चाहिये। अेक घटे में कितने गज सूत काता? कितने तोले कपास साफ हुआ? कितने पौधे लगाये गये? अित्यादि। बाद में बच्चा अपने काम का दैनिक आलेख रखने की योग्यता प्राप्त कर लेगा, तब तक वह गणित की भाषा से काफी परिचित हो जायेगा।

परिमाण और वजन -- स्कूल की प्रवृत्तियों में बच्चों को वजन का बोध और अनुभव देने के मौके बहुत आते हैं। कपास, बीज, सूत और कपडे का वजन करना अेक अत्यन्त प्रासगिक व करीब करीब दैनिक अनुभव होता है। अपने बगीचे में अुत्पादित सब्जी वगैरह का वजन करना और अुसका मूल्य निर्धारित करना है। अुद्योग या स्कूल का कोठार, वजनों के साथ परिचय पाने, तोलने और अिसका गणित सीखने के लिअे बडा अच्छा स्थान है। जहां तक सभव हो, सेर पाव आदि बडो अिकाइयों से शुरू करना चाहिये और प्रसग के अनुसार बाद में छटाक, तोले, आदि छोटे भागों का परिचय करा सकते हैं। कपास और बिनौले का वजन करते समय वजन और परिमाण के सबध का वस्तुओं के अनुसार जो महान अन्तर होता है वह बच्चा बडे मजे के साथ देखेगा। यह सब शिक्षा बच्चे को घर में अत्यत स्वाभाविक रूप से मिल ही जाती है। अुसी की पुष्टि और नियमों का क्रमबद्ध ज्ञान शाला में होना चाहिये।

अुत्तर लखिमपुर, आसाम में निर्माण कार्य

विमला ठकार

[देश के कुछ सघन क्षेत्रो में, विशेष तौर पर ग्रामदानी क्षेत्रो में ग्रामनिर्माण का कार्य पिछले कुछ वर्षों से हो रहा है। अुडीसा में कोरापुट, तमिलनाड में तिरुमगलम्, महाराष्ट्र में अमाणीमहाल, मध्यप्रदेश में सरगुजा और आध्र में कडपा जिले के बदवेल तालुका अित्यादि क्षेत्रो में कार्य का कुछ-न-कुछ प्रारभ हुआ ही है। अिनमें कोरापुट में यह काम शुरु किये सबसे अधिक समय हुआ है। बाकी में अवस्था प्रारभिक ही है। अिसी प्रकार आसाम का अुत्तर लखिमपुर का क्षेत्र है जिसमें पिछले दो-तीन वर्षों में छोटे प्रमाण में किन्तु सघन दृष्टि से काम हो रहा है। आसाम की कर्मठ बहन अमल प्रभा और अुनके साथी अिस कार्य में लग गये हैं। अैसे कर्मठो को मदद मिली है विमला बहन की। अिससे तो वहा के काम में प्राण भर गये हैं और धीरे-धीरे अुनका काम जडें पकडता जा रहा है।

आसाम के अिस क्षेत्र के काम की रिपोर्ट पिछले साल भी पेश की गयी थी। विमला बहन से हमें '५८ की रिपोर्ट मिली है। यह अुसी के आधार पर सक्षिप्त ढग से "नओ तालीम" के पाठको के सामने पेश कर रहे हैं। निर्माण-कार्य में दृष्टि शिक्षा की होगी तभी वह टिकाअू होगा और काम बुनियादी होगा। देश के स्थान-स्थान पर होनेवाले अिन प्रयोगो का हमें गहराओ से अध्ययन करना चाहिये। हालाकि हर क्षेत्र की अपनी विशेष परिस्थिति और अपने गुण होते हैं, परन्तु अेक दूसरे के अनुभवो से, और अेक दूसरे की दृष्टि से हमें भरपूर लाभ मिल सकता है। अिसलिअे हम चाहते हैं कि "नओ तालीम" के द्वारा हम अिस प्रकार के सघन क्षेत्रों में जो ग्राम-स्वराज्य नओ तालीम के प्रयोग हो रहे हैं अुन्हें समय-समय पर शिक्षा-जगत् के सामने रखते रहें। हम यह भी चाहते हैं कि अुनपर दूसरे क्षेत्रों के कर्मियों के जो विचार बनें अुन्हें अपने अनुभवो के आधार पर सुझावों के रूप में लिखकर अगर हमारे पास भेजा जायगा तो हम अुनका अुपयोग करने का भी प्रयत्न करेंगे। आशा है कि निर्माण की अिस अवस्था में हम अेक दूसरो को "नओ तालीम" के द्वारा भी मदद कर करेंगे। -स.]

प्रस्तावना : गत वर्ष की रिपोर्ट में हमने यह लिखा था कि निर्माणकार्य के लिअे जिले के बाहर से या प्रात के बाहर से कार्यकर्त्ता न लाना हम अुचित समझते हैं। स्थानीय कार्यकर्ताओं की शक्ति, कार्य और लोक-सग्रह की कला-अिसमें से जो काम होगा वही स्थायी होगा। अिस वर्ष की रिपोर्ट में आप यह देखेंगे कि जो थोडा-सा भी काम हुआ वह बाहर की किसी भी मदद के बिना हुआ है। दीखने में वह काम थोडा और गौण भी मालूम होगा लेकिन हमारी दृष्टि से यही ग्राम-स्वराज्य का सच्चा रास्ता है। अुचित मदद और वैचारिक सहायता मिलने पर अुत्तर लखिमपुर सब-डिविजन में अुत्साही नव-युवको का अेक दल सन् '५७ से सगठित हो गया है। अिनमें पाच कार्यकर्त्ता खादीग्राम ट्रेनिंग के लिअे भेजे गये थे। तीन ने चार माह की ट्रेनिंग समाप्त करके कार्य प्रारभ किया है। और दो अब भी वही हैं। ये अेक वर्ष की ट्रेनिंग पूरी करेंगे।

हमारे आप्त मित्रो के पास तथा शुभ चिंतको के सामने अिस आशा से हम यह रिपोर्ट

पेश कर रहे हैं कि वे हमारा मार्गदर्शन करें और हमको आशीर्वाद दें।

बरदलनी अंचल की करुण कहानी :- सन् '५० में जो भूकंप हुआ था अुसमें यह अंचल अुजड गया था। लोग जहां कहीं भी जगह मिली जाकर बस गये थे। अुनका जीवन अबतक भी स्थिर नहीं हो पाया है। सरकार और अन्य संस्थाओं से कुछ मदद भी मिली पर वे अभी तक सुख की नींद सो नहीं सके हैं।

घाटापथार और व्हेबेलो–नाम के दो गांव भिगभाग अुखमति रिजर्व में जाकर बसे। सरकार से जमीन की मांग की गयी है, किन्तु अभी तक परवाना नहीं आया है। लोगोंने घर बना लिये हैं, जमीन १२० बीघा है। वह जमीन धानके लिअे अुपयुक्त है। वहां पहले से ३०० परिवार हैं, किन्तु वे ग्रामदान में शामिल नहीं हुअे हैं। अिन नये २८ परिवारों की मांग १०० बीघा जमीन की है। अिससे वे सामूहिक खेती, गोपालन, स्कूल, मकान आदि का अिन्तजाम करना चाहते हैं। अगर यह मांग पूरी होती है तो गांव का पुनः संगठन ठीक ढंग से हो सकेगा।

कोकाअियाल पदमनी–ये दो गांव भिन्न-भिन्न हैं। भूकंप के बाद अिनमें से कुछ लोग अपना स्थान छोडकर दूसरी ओर जाकर बस गये और कुछ लोग यहीं हैं। जिस जगह जाकर वे लोग बस गये अुस जगह का नाम आज केन्दुगुरी देमाजी मौजा पडा। अिनकी परिवार-संख्या ११, जनसंख्या ५४ है। यहां सरकारी पडती जमीन प्राय ५०० बीघा है। यहां बसने के बाद अुन्होंने अिस जमीन की मांग सरकार से की। अब निर्माण-समिति की ओर से भी आवेदन किया गया है, परन्तु अभी तक कोअी कार्रवाअी सरकार की तरफ से नहीं हुअी। लोगों में भय का वातावरण निर्मित हो गया है। अिसका कारण यह पाया जाता है कि अिस जमीन के चारों ओर कुछ और गांव हैं, जिनके पास आवश्यकता से अधिक जमीन होने पर भी अुनकी नजर अिस जमीन पर है। वे अिस नये गांव का विरोध करते हैं। ग्राम विधान-सभा चाहती है कि यह जमीन अुन्हें सरकार की ओर से कानूनी ढंग से मिल जाय। वे घूस दें तो काम आसान होगा, किन्तु अुनमें अैसी जागृति आ गयी है कि वे सब घूस देने के सख्त विरोधी हैं।

सुतियकारी, व्हेबेली व सोलाम :- भूकंप में बरबाद होने के बाद ये लोग बरचोला रिजर्व में आकर बसे। यह स्थान अुनके पहले के स्थान से करीब २½ मील की दूरी पर है। तीनों गांवों में कुल ३८ परिवार हैं। अिन्हें यहां बसाने का प्रबंध सरकार के पुनर्वास विभाग ने किया है। अिनके पास ३०० बीघा जमीनहै।

सरकार ने अपनी अुदारता का परिचय देकर अिनको यहां लाकर बसाया तो है, परन्तु फारेस्टवालों ने डराना शुरू किया है। सरकार ने जमीन दे तो दी है, परंतु फारेस्ट खाते की ओर से विरोध है। अिधर जीयाढाल नदी भी अुन्हें चैन से बैठने नहीं देती। अैसे त्रिविधताप की अवस्था में जनता अपने भाग्य का निर्णय नहीं कर सकती। सरकार का ध्यान अिस ओर जाना चाहिये और जीयाढाल नदी से कुछ दूर बसने के लिअे अिन्हें जमीन मिलनी चाहिये।

नालीगांवमेरो, व्हेबेली, शालामारी व बाहकलिका ये चार गांव शालमारी रिजर्व में जाकर बस गये। कुल ४२ परिवार हैं। भूकंप के बाद सरकार की ओर से ही अिन्हें यहां बसने के लिअे कहा गया, परन्तु दुर्भाग्य से यहां भी फारेस्ट खाते का घोर विरोध है। अिन्होंने करीब १००० बीघा जमीन अपने काम में ली है। वे चाहते हैं कि अिस जमीन की व्यवस्था हो।

अुपरोक्त चार विभागो के ११ गावो में परिवार सख्या १२० और जनसख्या ५६२ है। जिनमे सुतिया, कोस, मिरी कसारी और अहम जाति के लोग हैं।

अिस सारे अचल में ग्रामदानी गाव ३३ हैं। सपूर्ण अंचल की जमीन ८७२० बीघा, परिवार १८ और जनसख्या ४६६० है।

बरदलनी अचल में लोगो ने जो स्वयस्फूर्त निर्माण कार्य श्रमदान के आधार पर किया वह अिस प्रकार है—

१. ग्रामदानी गाववालो ने अपने श्रम द्वारा अुत्तर ट्रक रोड का ३ फर्लांग का रास्ता तैयार किया। अिसमे १५५ लोगो ने काम किया। ३५००० घनफुट मिट्टी का काम हुआ जिसके लिअे सरकार से ८४१ रुपये मिले। काम फागुन '५८ में प्रारभ हुआ और चैत्र में पूरा हुआ।

(२) ५३१ फुट वास का पुल वनाया जिसके लिअे सरकार से ५०० रुपये मिले।

(३) १५५ लोगोने १९५० फुट बाध बनाने का काम किया। अिससे ३०७१ रुपये मिले।

(४) जून '५८ में जीयाढाल नदी की बाढ से मढापुरी बाध टूट रहा था। १२२ लोगो के परिश्रम से अिस बाध को बचा लिया।

अवर चरखा परिश्रमालय ' ग्राम निर्माण समिति द्वारा असम समग्र सेवा सघ की ओर से ग्रामदानी गावो में अवर चरखा परिश्रमालय खोलने की योजना बनी, किन्तु शिक्षको के अभाव में वह काम अुतना न हो पाया, जितना कि करना चाहते थे। समिति के पास केवल तीन शिक्षक थे। अुन तीन शिक्षको के द्वारा चार केन्द्र चार अलग-अलग ग्रामदानी गावो में चलाये गये। शिक्षण की अवधि तीन-तीन महीने की थी। कुल ३१ छात्रो (२१ छात्र और १० छात्राअें) को शिक्षा मिली।

खादी बोर्ड की ओर से सहायता मिलने की बात थी लेकिन वह अभी तक नहीं मिल पायी।

प्रादेशिक और जिलादान पदयात्री दल:– जुलाअी '५८ के शिवसागर में हुअे ग्राम स्वराज्य सम्मेलन में तय किया गया था कि अेक ग्रामदान प्रचारक दल प्रादेशिक स्तर पर सयोजित किया जाय और अेक दल जिला दान कार्य के लिअे अुत्तर लखीमपुर में पदयात्रा करे। अिस आधार पर १५ अगस्त '५८ से प्रादेशिक दल ने यात्रायें प्रारभ की। अिस दल ने अुत्तर लखीमपुर के ८०० गावो में से लगभग २०० गावो की यात्रा की और अुसे अेक गाव ग्रामदान में मिला।

जिलादान पदयात्री दल का कार्य ११ सितंबर '५८ को प्रारभ हुआ। जिनका कार्य चार मौजो में हुआ है, और प्रचार कार्य १४३ गावो में १८० मील पदयात्रा करके हुआ। साहित्य बिक्री ४२६ रु ६ न. पैसो की हुअी है, सर्वोदय पात्र १५०० हुअे। बरदलनी अचल में ही ५०० सर्वोदय पात्र हुअे हैं। सर्वोदय पात्र रखने का अभी तक का अनुभव अच्छा नही हुआ, क्योकि वे अभी तक ठीक ढग से नही चल सके हैं।

अिस काम को ठीक ढग से करने के लिअे तय किया गया कि कार्य सघन रूप से हो। अिसलिअे तीन गाव चुनकर अुनमे काम शुरू किया। अब तक अेक गाव का कार्य प्रारभ हुआ है। कार्य सफल होगा, अैसी आशा है।

अुत्तर लखिमपुर में ५ शाति-सैनिक बने हैं। चार सर्वोदय प्रचार मडल बने, जिलादान प्रचार में १२ ग्रामदान मिले, अुनमें परिवार सख्या २१६ है।

पदपुर बरमोति, सरायदलनी रगठी और दाधरा गावो के निर्माणकार्य का विवरण, हिसाब और अगले साल की योजना "नअी तालीम" के अगले अको में देने का प्रयत्न करेगे।

संपादक के दो शब्द

प्रिय मित्र,

"नअी तालीम" पत्रिका आपकी सेवा में पिछले कअी वर्षों से लगी हुअी है। ज्यों-ज्यों नअी तालीम का विकास होता गया त्यों-त्यों "नअी तालीम" अुसे आपके समक्ष प्रस्तुत करती गयी। देश के कोने-कोने में जो कार्य और प्रयोग हुअे जितना भी हो सका, पत्रिका ने अुन्हें प्रकाशित करने का प्रयत्न किया। संक्षेप में रखा जाय तो यह कहना अुचित ही होगा कि "नअी तालीम" पत्रिका नअी तालीम जगत् की संदेश-वाहिका और नअी तालीम के शिक्षकों की सहायक के तौर पर आपके सामने आती रही।

जैसे-जैसे बुनियादी तालीम का काम बढ़ता गया वैसे-वैसे अुसका क्षेत्र भी व्यापक होता गया। पहले कल्पना केवल ७ वर्ष से लेकर १४ वर्ष की बालक-बालिकाओं की तालीम तक ही सीमित थी–यहा तक कि वह भी स्कूल के घंटों तक ही। हालांकि बापू की कल्पना के अनुसार वह जीवन के हर पहलू तक फैलनी चाहिये थी, सामान्य तौरपर अुसका विस्तार स्कूल तक ही सीमित था। परिस्थिति परिवर्तन और अनुभवों के आधार पर अुसमें व्यापकता आयी और अुसका ध्येय व्यक्ति के समग्र जीवन के लिअे शिक्षा बन गया। आज परिस्थिति और भी बदली है। नअी तालीम की जिम्मेदारी संपूर्ण समाज का पुनर्निर्माण करने तक फैल गयी। ग्रामदान और ग्रामसंकल्प के संदर्भ में अुसके क्षेत्र में ग्रामनिर्माण का कार्य भी आ गया।

"नअी तालीम" अिस नये संदर्भ में नअी तालीम जगत् के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रही है। अुसे आपकी मदद की अत्यंत आवश्यकता है। अगर आप अुसे आपकी अपनी पत्रिका नहीं मानेंगे तो वह शिक्षा जगत् की और आपकी सेवा नहीं कर पायेगी।

आज हमारे सामने तीन पहलू हैं जिनकी ओर हमें चिंतन और कार्य करने होंगे।

१. आज आवश्यकता है समाज शिक्षा की। सामूहिक शक्ति और सहकारिता का निर्माण करने से ही समाज का विकास संभव है। यह काम ग्रामस्वराज्य नअी तालीम का है। अिसका प्रारंभ रचनात्मक कार्य को शैक्षणिक ढांचे में ढालने से होगा। अिसका क्षेत्र वर्तमान समाज है और अुसे अुसकी स्वाभाविक परिस्थिति में रखते हुअे ही शिक्षा का कार्यक्रम बनाना होगा।

देश में कअी जगह अिसके प्रयोग हो रहे हैं। ग्रामदानी अिलाकों में निष्ठावान कार्यकर्ता बैठे हुअे हैं और अपने कार्य में संलग्न हैं। अुन्होंने कुल समाज को और गांव को ही अपनी शाला मान लिया है।

२. देश में कअी अैसे आश्रम और संस्थायें हैं जिनमें अनेक कार्यदक्ष कर्मी शिक्षा का काम कर रहे हैं या करना चाहते हैं। कअी संस्थाओं ने पिछले वर्षों में नअी तालीम का महत्वपूर्ण कार्य किया है। अुस प्रकार के कार्य को और भी गहराअी से करने की आवश्यकता है। सघन क्षेत्रों में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं की तैयारी में ये आश्रम प्रचुर सहायता दे सकते हैं। देश के सर्वोदय कार्यकर्ताओं के बच्चों के लिअे ये संस्थायें शिक्षास्थल बन सकती हैं। अिस तरह नअी तालीम के 'सघन प्रयोग' (अिन्टेन्सिव

प्रयोग) अिन केन्द्रों के द्वारा हुअे है और ये अधिक गहराअी से होने चाहियें ।

३. सरकारी और गैर-सरकारी तौर पर बुनियादी तालीम के स्कूलों को भी विशेष मार्ग-दर्शन की जरूरत है । आज आवश्यकता है अेक राष्ट्रीय शिक्षण कार्यक्रम की । नअी तालीम का प्रवेश देश के हर अेक स्कूल में होना चाहिये । अुसके लिअे हमें विशेष ध्यान शिक्षण पद्धति और शाला में सामूहिक जीवन और सामाजिक बोध का विकास करने में देना पडेगा ।

सरकारी और गैर-सरकारी दोनों तरह की संस्थायें यह काम कर रही है । अिसकी जानकारी अेक दूसरे को हो, अिसका प्रयत्न करना होगा और अिस तरह शिक्षा के अिस पहलू के पीछे चाहे वह "क्रान्तिकारी" स्वरूप का न हो, तो भी अुचित शक्ति लगानी पडेगी ।

"नअी तालीम" अिस सारे कार्यक्रम में अपना हाथ बंटाना चाहती है । अुसके मुख्य कार्य हैः– (अ) तालीम के चितकों के विचार आपके पास पहुंचाना (आ) नअी तालीम का जितना कार्य जहा कही भी हो रहा है, अुसकी हर अेक को जानकारी हो, अैसा प्रयत्न करना, (अि) कार्यकर्त्ताओं के बीच और संस्थाओं के बीच आपस में भाअीचारा हो, अिसके लिअे अेक दूसरे का परिचय कराने का प्रयत्न करना । (ओ) देश-विदेश में शिक्षा के जो खास-खास प्रयोग हो रहे हैं, अुनसे पाठकों को परिचित कराना (अु) शिक्षा शास्त्रियों के विचारों से परिचय ।

अिसके लिअे आवश्यकता है आपकी मदद की । आप हमारी मदद किस तरह कर सकते है अिसके लिअे कुछ सुझाव दे रहे हैं । (अ) आप अपने शिक्षण कार्य की जानकारी नियमित रूप से देते रहें । (आ) जो-जो प्रत्यक्ष कार्य आपके क्षेत्र में हो रहे हैं अुनका आकडों सहित अहवाल हमें भेजते रहे । (अि) "नअी तालीम" के अुपरोक्त तीन पहलुओं के प्रत्यक्ष कार्यक्रम में आप अपने क्षेत्र की संस्थाओं की मदद करें और अुसको सूचनादि हमें देते रहें । (ओ) "नअी तालीम" पत्रिका जहां जहां भी नहीं पहुंचती है, अुसे वहां ले जाने में हमारी मदद करें । आपके जिले के सभी स्कूलों और रचनात्मक संस्थाओं में "नअी तालीम" जाय अिसका प्रयत्न करें ।

अन्त में हम आप से फिर यही निवेदन करेंगे कि यह पत्रिका आपकी है, आप ही अिसे "नअी तालीम" का कारगर वाहन बनाने में मदद कर सकते हैं ।

सादर प्रणाम
देवीप्रसाद

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-सेवाग्राम

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

दिसम्बर १९५९
वर्ष : ८ अंक : ६

"नई तालीम" दिसम्बर १९५९ : अनुक्रमणिका

"नई तालीम" के नियम

१. "नई तालीम" अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। जि वार्षिक चन्दा चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ न. पै. है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता वी. पी. से मंगाने पर ६२. न. पै. ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२. पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दी जाती है। माह की तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरंत हमें लिखें।

३. चन्दा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गांव का नाम, डाकखाने का नाम, तह जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पतों पर पत्रिका नियमित पहुँच विशेष कठिनाअी होती है।

४. "नई तालीम" संबंधी सारा पत्र-व्यवहार, प्रबंधक, "नई तालीम" सेवाग्राम (वर्धा पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहकों के पत्र या शिकायत पर अुचित कार्रवाअी करने में विशेष विलं संभावना होती है।

५. पत्र-व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक-संख्या का अुल्लेख कर सकें तो विशेष कृपा होगी

प्रबंधक,
"नई तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बंबअी राज

नई तालीम

वर्ष ८] दिसम्बर १९५९ [अंक ६

पक्षपाती तटस्थता : साहित्यिक का धर्म *

विनोबा

मेरे अत्यन्त प्रिय मित्रो, मैं वर्णन नहीं कर सकता कि अिस छोटे से सम्मेलन से मुझे कितना आनन्द हुआ और कितना बल मिला है।

यह कोअी आकस्मिक घटना नहीं कि हिन्दुस्तान में १४ विकसित भाषायें मौजूद है। अभी आपने गीत सुना हो था–'भारतेर महामानवेर सागरतीरे।' भारत के अिस समुद्र में दुनियाभर की संस्कार-नदियां मिली हैं। अिसलिअे यहां के प्राचीनतम ग्रंथ में अेक नवीनतम शब्द हमें मिल गया, 'विश्व-मानुषः।' ऋग्वेद में यह शब्द आया है, जो आज के हमारे कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह प्रकट करता है। यह शब्द यहाँ की संस्कृति को अिसीलिअे सूझा कि अिस संस्कृति में निरतर यही खयाल किया गया है कि हम कोअी संकुचित नहीं, परम व्यापक हैं। अिसीको 'दर्शन' कहते हैं। फिर अुसके अनुसार आचरण और जीवन के लिअे चाहे समय लगे, चाहे युग बीत जाय, लेकिन दर्शन तो दर्शन ही है। अिसलिअे भारत के लिअे जो प्रेम में अपने में पाता हूँ, बावजूद अिसके कि 'जय-जगत्' का मन्त्र मैं बोलता हूँ, अुस प्रेम का 'जय-जगत्' के साथ मैं कोअी विरोध नहीं देखता।

तुलसीदासजी ने अेक पद्य लिखा है, जो मुझे अिस पदयात्रा में बार-बार याद आता है: "भलि भारत भूमि, भले कुल जन्म, समाज शरीर भलो लहिकै। करषा, तजिकै तरुषा, बरषा हिममारुत घाम सदा सहिकै। जो भजे भगवान सयान सोअी। तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै।" धन्य है यह भारत-भूमि, धन्य है यह मानव का कुल, जिसमें हमें जन्म मिला है। हमें समाज भी बहुत अच्छा मिला है और शरीर भी अच्छा मिला है, जिसमें अष्टधा प्रकृति चरितार्थ हुअी है। कठोर वाणी छोडकर बारिश *ठंड, धूप, हवा–सब सहन करते हुअे जो भगवान* की भक्ति करता है, वही सयाना है। अक्सर ठड, बारिश आदि सहन करनेवालों के चित्त में बहुत दफा अहंकार, वाणी की कठोरता, क्रोध आदि होते हैं। अुन सब को छोडकर नम्र भाव से बिना अहंकार के भगवान की भक्ति करनेवाला सयाना है। तुलसीदासजी कहते हैं कि जैसे चातक ने हठ पकड लिया है, अुस तरह आग्रह के साथ जिस तपस्या में, हरिभक्ति में चिपके रहकर जिस किसी ने अपना जीवन बिताया, वह धन्य है। "नन्नु और सर्व विषबीज

* साहित्यकार परिषद् में।

बये। हर हाटक कामदुहा नहिं। "नही तो फिर धामधेनु की नल्थी डालकर और सोने का हल बनाकर विष-बीज ही बोया, यही कहा जायगा।

अिसलिअे जय-जगत् के साथ भारत-भूमि का जो प्रेम महापुरुषों ने हमें यहा सिखाया अुसका पूरा मेल है, दोनो में किसी प्रकार का विरोध नही है। बल्कि भारत भूमि कुल जगत् का अेक छोटा-सा नमूना है। अेक त्रिकोण को लेकर, जिसे कोअी अुपाधि न हो, हम अेक सिद्धान्त सिद्ध करते हैं तो फिर वही सिद्धान्त सिद्ध करने के लिअे कोअी बडा त्रिकोण लेने की जरूरत नही रहती। अिसी तरह भारत में अेक चीज हम सिद्ध करते हैं तो वह चीज कुल दुनिया में सिद्ध होती है, अैसी श्रद्धा रखकर आप लोगो की सेवा में आठ साल से घूम रहा हूँ।

साहित्यिक आशीर्वाद दें

आपके आशीर्वादो का मै अत्यन्त अिच्छुक हू। मै जानता हू कि आप सारे अपने-अपने कामो में लगे है। जिस काम में लगने की भगवान ने मुझे भावना दी है, अुस काम मे समय देने के लिअे आपके पास अुतना अवकाश नही रहता होगा। लेकिन अिसीलिअ मै आपके आशीर्वादो का अिच्छुक हू कि आप अिस काम में थोडे तटस्थ रहकर सोच सकते है। जो खेल में शामिल होता है, वह अुसे अुतना नही पहचानता, अुसके गुण दोषों को अुतना नही जान सकता, जितना तटस्थ साक्षी रहनवाला जान सकता है। अिसीलिअे खेल में अेक 'अपायर' रखा जाता है, जो ठीक फैसला दे सके। मैने आप लागो को 'अपायर' माना है। पठानकोट में सर्व सेवा-सघ की सभा में मैने अपने कार्यकर्ताओ से कहा था कि आपको साहित्यिको का आशीर्वाद हासिल करना चाहिये।

मैने अुनसे यह भी कहा था कि बाहर का जीवन किस प्रकार का है, यह हमें नही देखना चाहिये। जहा अुत्तम जीवन है, वही अुत्तम विचार का सभव है—यह तो सामान्य नियम हुआ। लेकिन किसी कारण अन्दर अेक चिन्तन-प्रवाह होता है, तदनुसार बाहर का जीवन नही बनता। फिर भी अन्दर में परम रमणीय अुन्नत विचार हो सकते हैं। अिसलिअे मैने कहा कि भगवान को मानना पडता है, क्योंकि भगवान अेक 'डिस्टर्विग फैक्टर' है। दुनिया में सब कुछ कार्य कारण के नियम से चलता तो भगवान को कोअी तकलीफ नही देनी पडती। लेकिन बाह्य आचरण भिन्न कोटि का होते हुअे भी अन्दर अुन्नत विचार की स्फूर्ति होती है। आखिर शरीर से आत्मा भिन्न तो है ही। अिस हालत में आरोग्यवान शरीर में आरोग्यवान मन हो, अिस सामान्य नियम के लिअे असख्य अपवाद हुअे हैं और होगे। अिसलिअे मैने कार्यकर्ताओ से कहा था कि अैसे जो भी साहित्यिक होगे, अुनके पास नम्रतापूर्वक जाकर अपने काम की जानकारी अुन्हे देनी चाहिये और अुनसे तटस्थ फैसला मागना चाहिये। यही आपके आशीर्वाद का अर्थ है। मैं यह नही चाहता कि आप हमारे विचारो के पृष्ठपोषक बने। आप स्वय स्वतत्र हैं। आपकी आलोचना भी हमें मददगार साबित होगी। अगर आपने अनुकूल दर्शन किया तो भी हमारे लिअे वह लाभदायी साबित होगा। *दोनो बाजू हमें लाभ ही है।*

साहित्यिक सबकी परवाह करें

अेक भाअी ने कहा था कि 'अिन दिनो हम सहित्यिको की अिज्जत बहुत थोडे लोग करते है। नेता अपनी धुन में रहते हैं। धार्मिक कहलाने-वाले पुरुष भी अपने आचार-धर्मों में फँसे रहते

हैं। शायद अपने को कुछ अूचा भी मानते हैं। फिर जो व्यवहारकुशल माने जाते हैं, अुनके पास तो हमारा कोअी हिसाब ही नही है। वे हमारी कोअी परवाह ही नही करते।' मैंने अुनसे पूछा कि क्या आप लोगों को परवाह करते हैं? अगर आप सबको परवाह करते हैं तो आपके लिअे काफी है। क्योंकि आप मातृस्थान में हैं और बाकी सब बच्चे हैं। बच्चे अगर माता को भूल जायँ तो बहुत हानि नही होती। लेकिन माँ अगर बच्चे को भूल गयी तो बहुत हानि होती है।

अिन दिनों कुछ लोग मेरे पास आते हैं, जो बहुत अुत्साह से बातें करते हैं, जो आगामी भविष्यकाल का चिन्तन करनेवाले होते हैं। सब पुरानी चीजें छोड़ चुके होते हैं, यहाँ तक कि अीश्वर को भी नहीं मानते। मैं अुनसे कहता हूँ कि आप अीश्वर को छोड़ते हैं तो कोअी परवाह नही, अीश्वर आपको नही छोड़ता। आप परमेश्वर को मानें या न मानें, अिससे कोअी नुकसान नही होगा। वह आपको मानता ही है। अगर अैसा कोअी दिन आये, जब कि भगवान तुम्हें, हमें मानना छोड़ दे, तब तो सबके लिअे खतरा पैदा होगा। अिसलिअे साहित्यिकों की कोअी परवाह नही करता, अैसा खयाल साहित्यिकों को नहीं करना चाहिये। लोग परवाह करें, या न करें साहित्यिकों को सबकी परवाह करनी चाहिये और सबकी तरफ वात्सल्य-भाव से देखना चाहिये। बच्चे प्रयोग करते हैं तो माता अुन प्रयोगों को देखती है। अिस तरह साहित्यिकों की तटस्थ भूमिका होनी चाहिये। लेकिन सिर्फ तटस्थ नही, बल्कि पक्षपाती तटस्थ भूमिका होनी चाहिये, अुदासीन तटस्थ नही। वे दुनिया का दर्शन तटस्थ रूप से करें। लोगों से, अुनके विकारों से अलग रहकर अुनकी तरफ देखें, फिर भी अुनके लिअे हमदर्दी और पक्षपात हो।

वेद में अेक मंत्र है: "आयन्मा वेद अरुदन् ऋतस्य। अेकमासीन हर्यतस्य पृष्ठे। मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवाचत्। अचिक्रदन् शिशुमान् सखाय.॥" परम रमणीय सत्य के पर्वत पर बैठकर मैं वहाँ आनन्द लूट रहा था, अकेला अेकान्त में बैठा था। अुतने में मेरे हृदय से अेक मानसिक अुद्गार निकला—ये सारे शिशुमान सखा, मित्र, मेरे पास आयें। मैं तो संसार से मुक्त अूपर सत्य-गिरि पर बैठा हुआ हूँ, लेकिन ये मेरे मित्र गृहस्थ-धर्मी, संसार में पड़े लोग दुःख से रो रहे हैं। मेरी मदद के लिअे चिल्लाते हैं। जब मैं यह देखता हूँ तो मुझे पर्वत-पृष्ठ से नीचे अुतरकर, सत्य की भूमिका छोड़े बिना, अिनकी सेवा करनी पड़ती है। यह अध्यात्मभाव है जो वहाँ नही लिखा है, सिर्फ सूचित किया गया है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि जो तटस्थ, निर्विकार होने पर भी संसार में बरतनेवाले सामान्य जनों के लिअे अत्यन्त प्रेम रखकर चित्त में अुनके लिअे पक्षपात रखकर बरतेगा, वही सर्वोत्तम साहित्यिक होगा।

दोहरी शक्ति जरूरी

साहित्यिक के लिअे विकारों से परिपूर्ण निर्लिप्तता अनिवार्य है। लेकिन विकारों को पहचानने लायक अुन विकारों के साथ समरस होने की शक्ति भी अुतनी ही अनिवार्य है। साहित्यिक के लिअे ये दो अनिवार्यतायें हैं। बहुत दफा आश्चर्य होता है कि परम तटस्थ ऋषि व्यावहारिक ज्ञान की सूक्ष्मता और मनुष्यस्वभाव की परख किस तरह दिखाते थे। खास कर व्यास का जो दर्शन हमें होता है, अुसे देखकर आश्चर्य होता है कि मानव-भावनाओं का

अितना सूक्ष्म ज्ञान अुन्हें किस तरह हुआ होगा। लेकिन अिसमें आश्चर्य की बात नहीं,' क्योंकि वे निर्लिप्त अेवं तटस्थ थे और बेचारे लोगों के साथ पक्षपात करने की शक्ति रखते थे। यह दोहरी शक्ति होने के कारण वे लोगों को न सिर्फ पहचानते थे, बल्कि अुनके साथ हमदर्दी भी रखते थे। साहित्यिक में द्रष्टा की शक्ति, निर्लिप्तता चाहिये, लेकिन अुसके साथ, बुखार के साथ हमदर्दी दिखानेवाले वैद्य का भी लक्षण चाहिये। बुखार को ठीक पहचानकर अुसके निवारण के लिअे दवा भी बतानी चाहिये। वे निर्विकार होने के कारण बुखार को ठीक पहचान सकेंगे। यह साहित्यिक की शक्ति है। परमात्मा की कृपा से दुनियाभर में निरन्तर अैसे साहित्यिक हुअे हैं और अुनकी राह पर चलनेवाले असंख्य छोटे-मोटे साहित्यिक भी हुअे हैं।

छोटे-छोटे साहित्यिक भी शक्तिशाली

आज अेक भाई ने कहा कि अगर हम सत्य, शिव, सुन्दर का योग अपेक्षित रखें तो वह दुर्लभ होगा। अुनका अभिप्राय यह था कि अिस कसौटी पर नापा जाय तो शायद सिर्फ तुलसीदास ही खरे निकलेंगे और बाकी सारे किसी अेक या दो अंश में अुत्तीर्ण होंगे और बचे हुअे अंशों में फेल होंगे। अुनका यह अभिप्राय सही हो सकता है। मुझे हिन्दी-साहित्य का अितना ज्ञान नहीं है कि मैं अपना विचार पेश करूँ। लेकिन अिसमें कोई शक नहीं कि अुन्होंने तुलसीदास के लिअे जो कहा, वह सर्वथा सत्य है। तुलसीदासजी की कोटि के न हों, लेकिन हम अुनके रास्ते पर चलनेवाले हो सकते हैं। अेक ज्ञानी को जो गुण-संपदा हासिल हो सकती है, वह अुसे भी हासिल हो सकती है, जो ज्ञानी नहीं है, परन्तु ज्ञानी के वचनों पर श्रद्धा रखकर चलने की श्रद्धा जिसमें है।

मैंने अिस वाक्य का प्रयोग जान-बूझकर किया है। श्रद्धा रखनेवाले को ज्ञानी का गुण-समूह मुफ्त में हासिल होता है। रामजी जो काम ज्ञान से कर सके, वही काम हनुमान श्रद्धा से कर सके। तुलसीदासजी अेक-आध ही निकले। लेकिन अुस कोटि के न होने पर भी अुस दिशा में जिनका विचार जाता है, अैसे साहित्यिक भी बहुत काम करते हैं। मुझे तो अैसे साहित्यिकों का विशेष आकर्षण है, जो अपूर्ण होते हुअे भी पूर्ण के साक्षात्कार के लिअे प्रयत्नशील होते हैं।

अिसी तरह मिलते रहिये

साहित्यिकों को मिलने की बात के बारे में मैं अपना विचार स्पष्ट करना चाहता हूँ। मैंने कहा था कि अुपासनायें अनेकविध होती हैं अुन सबका अनुभव लेनेवाला कोअी शख्स रामकृष्ण के जैसा निकला तो जीवन का सर्वांग-दर्शन होता है। अिसी तरह अगर साहित्यिक अपने अनुभवों को अेकत्रित अुपासना की दृष्टि से अनुभूत करें तो किसी अेक सूरज से जो रोशनी नहीं मिलेगी, वह अुनसे मिलेगी, दिशा-दर्शन होगा। आप अभी यहाँ आये हैं और अेकत्र बैठकर आपने कुछ सहजभाव से अपने विचार प्रकट किये हैं। यह प्रथा आप जारी रखिये और बीच-बीच में मिलते रहिये, सिर्फ मिलने के लिअे, और किसी अुद्देश्य से नहीं। दीवाली आयी तो लड़की चंद दिन बिताने के लिअे मायके जाती है, और कोअी प्रयोजन नहीं होता। सिर्फ मायके जाना ही स्वयंपूर्ण प्रयोजन होता है। वैसे ही सिर्फ मिलने के लिअे बीच-बीच में आप मिलते रहिये और अेक-दूसरे के अनुभवों को जोड़कर अुपासना कीजिये, अितनी नम्र प्रार्थना कर मैं समाप्ति करना चाहता हूँ।

ठीक प्रकार की शिक्षा

जे. कृष्णमूर्ति

जो अज्ञ है वही अशिक्षित नही, लेकिन वह भी अशिक्षित है जो पढा-लिखा होने के बावजूद अपने आपको नही जानता है। और वह पंडित तो मूर्ख है जो ज्ञान के लिअे पुस्तक, पाडित्य और अधिकार पर निर्भर रहता है। यथार्थ ज्ञान आत्मज्ञान से ही मिल सकता है जो कि अपनी सपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओ के बारे में सचेतता है। अिसलिअे शिक्षा का असली अर्थ है अपने आपको जानना, क्योकि हममें से हरअेक के अन्दर ही सारा अस्तित्व निहित है।

आजकल जिसको हम शिक्षा कहते हैं वह किताबो से कुछ जानकारी और ज्ञान अिकट्ठा करना मात्र है। यह तो पढना जाननेवाला हर कोअी कर सकता है। अैसी शिक्षा अपने आपसे छुटकारा पाने का अेक सूक्ष्म अुपाय है और अैसा छुटकारा अनिवार्य रूप स अधिकाधिक दुःख ही पैदा कर सकता है। अेक दूसरे के साथ, वस्तुओ और विचारो के साथ, हमारे गलत सबध से सघर्ष और भ्रम पैदा होते हैं और जबतक हम जिन सबधो को समझकर, बुद्धि-पूर्वक बदलते नही, कोरी पढाअी, जानकारिया, और विभिन्न कुशलतायें प्राप्त करना हमें अव्यवस्था और विनाश की ओर ही ले जा सकता है।

आज के समाज में हम अपने बच्चो को स्कूल में अिसलिअे भेजते हैं कि वे अैसी कोअी विद्या सीखें जिससे कि बाद में अपनी आजीविका कमा सकें। हमारी पहली अिच्छा अपने बच्चो को विशेषज्ञ बनाने की है, अिस आशा से कि अुससे अुसकी आर्थिक स्थिति सुरक्षित हो जायगी। लेकिन क्या अैसी विद्या हमें अपने आपको समझने के समर्थ बना देती है? जबकि लिखना-पढना जानना और अिंजिनि-यरिंग या अन्य कोअी अुद्योग यथा सीखना स्पष्टतः जरूरी है, वह ज्ञान जीवन को समझने की शक्ति प्रदान नही करता है। ये विद्यायें निर्वि-वाद रूप से गौण हैं और अगर हमारा प्रयत्न अुन्हीके लिअे होता है तो स्पष्ट है कि हम जीवन के ज्यादा महत्वपूर्ण भाग को छोड रहे हैं। जीवन माने वेदना, आनद, सौदर्य, असौन्दर्य, प्रेम सब है और जब हम अिसे हर स्तर पर अुसके समग्र रूप में समझते हैं तो वह समझ अपनी ही विद्या का निर्माण करती है; लेकिन अिसके विपरीत केवल मात्र विद्या अपने आप में सर्ज-नात्मक ज्ञान नही ला सकती है।

आज की शिक्षा पूरी तरह से असफल है; क्योकि वह किसी विशेष ज्ञान के अूपर जोर देती है। विशेष ज्ञान पर जोर देने से हम आदमी को बनाते नही हैं, अुसे खतम करते हैं। जिन्दगी को समझने के बगैर सिर्फ कुशलता और कार्यक्षमता बढाने से, मनुष्य के विचारों और आकाक्षाओं का समग्र दर्शन न होने से हम अधिकाधिक निर्दाक्षिण्य बन जाते हैं। अिससे युद्धो के लिअे अनुकूल वातावरण तैयार होता है और हमारा भौतिक अस्तित्व ही खतरे में पड जाता है। अैसी विशेष विद्या के विकास ने वैज्ञानिको, गणितज्ञो, पुल बनानेवालों और बाह्यान्तरीक्ष को जीतनेवालो का निर्माण किया है, लेकिन क्या वे जिन्दगी की समग्र प्रक्रिया को समझते हैं?

ठीक प्रकार की शिक्षा विशेष कुशलता सिखाने के साथ साथ अुससे कहीं महत्वपूर्ण कार्य को भी साध लेती है, वह मनुष्य को जिन्दगी की समन्वित प्रक्रिया की अनुभूति करा देती है और यही अनुभूति जीवन की सब बातों को ठीक परिप्रेक्षण से समझने की शक्ति प्रदान करती है।

× × × ×

जब हम किसी आदर्श को पाने के अुद्देश्य से शिक्षा का काम करते हैं, तो अुस भविष्य की हमारी कल्पना के अनुसार व्यक्तियों को ढालते हैं, याने मानव प्राणी जैसा है अुससे नहीं, हमारे विचार में वह जैसा होना चाहिये अुसीसे हमारा मतलब है। जो होना चाहिये वह हमारे लिअे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है बनिस्बत मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरियों से भरे हुअे व्यक्ति के।

ठीक प्रकार की शिक्षा किसी आदर्शवाद पर आधारित नहीं हो सकती, चाहे वह आदर्श कितने ही मोहक अेक स्वप्न जगत् का निर्माण करनेवाला क्यों न हो। सच्ची शिक्षा वही है जो आदमी को परिपक्व और स्वतंत्र बनाने में मदद देती है अुसके व्यक्तित्व को प्रेम और सद्वृत्ति में खिलने का मौका देती है। वही हमारा ध्येय होना चाहिये, न कि किसी आदर्श स्वरूप का निर्माण।

जब शिक्षा रूखे सूखे सिद्धान्तों पर आधारित हो जाती है तो वह कार्यकुशल स्त्री पुरुषों का निर्माण कर सकती है, लेकिन भावनाशील मानव प्राणियों का नहीं। अेकमात्र प्रेम से ही हम अेक दूसरे को समझ सकते हैं। जहां प्रेम है वहां फौरन ही पारस्परिक समझ होती है—अेक ही समय और अेक ही स्तर पर। हम खुद अितने सूखे, शून्यहृदय और प्रेमविहीन हैं, अिसीलिअे तो हम सरकारों और संघों के हाथ में अपने बच्चों की शिक्षा और भावी जीवन का मार्गदर्शन सौंप देते हैं। सरकारों को कार्यकुशल प्राविधिक चाहियें, आदमी नहीं, क्योंकि स्वतंत्र विचार के आदमी सरकार के लिअे खतरनाक होते हैं—संगठित धर्म-संस्थाओं के लिअे भी। अिसीलिअे सरकारें और धर्म संस्थायें शिक्षा को अपने काबू में रखना चाहती हैं।

शिक्षा का अुच्चतम साध्य समन्वित व्यक्तियों का निर्माण है जो जिन्दगी के साथ समग्र रूप से पेश आ सकते हैं। विशेषज्ञ के जैसे आदर्शवादी भी समग्रता में तत्पर नहीं होते हैं, अुन्हें जीवन के कुछ हिस्सों से ही प्रयोजन है। साधारण तौर पर आदर्शवादी शिक्षक आदर्श को ही बड़ा मानते हैं और प्रेम को दूर रखते हैं। अुनके मन सूखे और हृदय कठोर होते हैं। बच्चे का अध्ययन करने के लिअे यह जरूरी है कि शिक्षक का मन जागरूक, सतर्क और ध्यानयुक्त हो। अिसके लिअे बच्चे के लिअे बहुत ज्यादा प्रेम और बुद्धिपूर्वक समझ आवश्यक है। अुसे किसी विशेष आदर्श के पीछे चलने के लिअे प्रोत्साहित करना अपेक्षाकृत आसान है।

सहानुभूति और भावुकता कभी भी जबरदस्ती से जगायी नहीं जा सकती हैं। बाह्यरूप से शान्त रहने के लिअे बच्चे को बाध्य कर सकते हैं, लेकिन असल बात तो अुसके अुद्दंड और हठी होने के कारणों को समझना और अुनका निवारण करना है। जबरदस्ती करने से तो अुसके मनमें सिर्फ द्वेष और भय पैदा होगा। पुरस्कार का लोभ और सजा का भय—चाहे वह किसी भी

रूप में हो–अुसके मन को कर्कशी और निस्तेज ही बना देता है।

अैसी शिक्षा पद्धति बच्चे को समझने में हमारी मदद नही करती है, न ही वह अुस अच्छी सामाजिक परिस्थिति का निर्माण करेगी जिसमें भेदभाव और द्वेष न हो। असली शिक्षा तो बच्चे के साथ के प्रेम के सबध में ही निहित है। असल में हममें से ज्यादातर अपने बच्चो से वास्तविक प्रेम नही रखते है, हम अुनके लिअे महात्वाकाक्षा ही रखत हैं। दुर्भाग्यवश हम बुद्धि और मन के कार्यो में अितने व्यस्त हैं कि हमारे पास हृदय की बाते समझने के लिअे समय नही बचता है। आखिर अनुशासन का मतलब है अुसके प्रति विरोध– Resistance– और विरोध से प्रेम कैसे पैदा हो सकता है? अैसा अनुशासन हमारे चारो तरफ दीवारे खड़ा करता है, अुससे अेक दूसरे को समझने में कोअी मदद नही मिलती है, क्योंकि समझ तो बिना किसी पूर्वग्रह के, अन्वेषण वृत्ति और निरीक्षण से ही होती है।

अनुशासन बच्चे को अपने काबू में रखने का अेक आसान तरीका है, लेकिन जीने की समस्याओ को समझने में वह अुसकी मदद नही करता है। जब बडी सख्या में विद्यार्थियों को अेक वर्ग कमरे में अिकट्ठा करते है तो अुनमें अेक बनावटी शान्ति कायम रखने के लिअे सजा के भय या पुरस्कार के लोभ के रूप में अनुशासन आवश्यक हो सकता है लेकिन जब सुयोग्य शिक्षक के पास कम सख्या में विद्यार्थी रहते हैं तो अैसे दमन–जिसे सभ्य भाषा में अनुशासन कहते हैं—की क्या जरूरत है? जब वर्ग छोटे होते है और शिक्षक हर अेक बच्चे पर पूरा ध्यान दे सकता है, अुसकी मदद कर सकता है, तो अिस तरह की जबरदस्ती और जोर स्पष्टत: अनावश्यक हैं। अगर अैसे वर्गों में भी कोअी विद्यार्थी अनियत्रित होता है और बिना कारण दगा करता है तो शिक्षक को विद्यार्थी के अिस बर्ताव के कारण ढूढने पडेंगे, सभवत: वे कारण अुचित पोषण और आराम की कमी, पारिवारिक असतृप्ति या कोअी छिपा हुआ भय होते हैं।

ठीक प्रकार की शिक्षा में अेकरूपता और आज्ञापालन के लिअे जगह नही है। जहां परस्पर प्रेम और आदर नही है, वहा शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सहयोग असभव है। जब बडो के प्रति अिज्जत दिखाने के लिअे बच्चों को बाध्य करते है तो वह अेक आदत या बाह्य आचरण मात्र बन जाता है। अगर शिक्षक अपने विद्यार्थियो से सम्मान की माग करता है और खुद अुनके प्रति सम्मान नही दिखाता है तो स्वाभाविक तौर पर वह अुनमें अनास्था और अनादर ही पैदा कर देगा। दूसरो के प्रति आदर भाव का विकास करना अच्छी शिक्षा का अेक सारभूत अग है, लेकिन अगर खुद शिक्षक अिस गुण से खाली रहता है, तो वह अपने विद्यार्थियो को अेक समन्वित जिन्दगी के लिअे मदद नही कर सकता है।

हममें से अधिकतर में बचपन में ही स्कूल में या घर में भय पैदा किया जाता है। न तो शिक्षक न ही मा-बाप अितनी सब्र, सयम और समझदारी रखते हैं कि बालकों के बचपन के अिन भयो का निराकरण किया जाय। बडे होने पर भी ये भय हमारे निर्णयों और प्रवृत्तियों पर अपना प्रभाव डालते हैं। अिससे कअी सारी समस्यायें पैदा होती हैं। शिक्षा को अिस भय के प्रश्न का समाधान ढूढना

(शेषाश पृष्ठ १७० पर)

शिक्षण प्रसंग

मनमोहन चौधरी

हिमाचल प्रदेश में विनोबाजी के साथ कुछ समय बिताने का अवसर मुझे मिला था। अुस समय अुनके साथ नअी तालीम के बारे में कुछ चर्चा हुअी थी। अुसका सार आगे दे रहा हू। चर्चा पद-यात्रा के समय चलते-चलते हुअी थी। अुसका विवरण बाद में लिखा गया है। अिसलिअे अुसमें थोडी-सी स्थूलता आ जाना स्वाभाविक है। फिर भी मुझे आशा है कि मित्रो के लिअे यह अुपयोगी होगा।

मैंने विनोबाजी से कहा कि हमारी शालाओ के लडको को अपनी तालीम के बारे में काफी असतोष रहता है। विनोबाजी ने पूछा—असतोष किस चीज के लिअे है? मैंने जवाब दिया—अेक, अुनको लगता है कि अुनको पूरी तालीम नही मिल रही है और दूसरा, अुनके लिअे सरकारी नौकरो आदि का रास्ता खुला नही है।

विनोबा—तो वे सरकारी शाला में क्यो नही जाते?

मैं—हमने नअी तालीम के लिअे अेक सघन क्षेत्र लिया है, जहा बुनियादी के सिवा अन्य शाला नही है। सामान्य स्थिति के लोग अपने बच्चो को दूर की मामूली शाला में भेज नही सकते।

विनोबा—तो वहा अच्छी सरकारी स्कूल हो और अुसमें अच्छे शिक्षक रखे जाय। हम ब्रह्मविद्या मदिर चलावे, अुसमें जो लडके आना चाहे वे आवे।

मैं—मुझे यह विचार जँच रहा है। मुझे लगता है कि सघन क्षेत्र लेने के कारण नअी तालीम के लिअे विरोध बढा है। अगर थोडे समय में नअी तालीम सारे देश में लागू होती तो अलग बात थी। मगर हमने अुसे अेक सीमित क्षेत्र में लागू किया और अुसमें वह सीमित ही रहा। अुसका दायरा बढा नही, अिसका नतीजा अुल्टा ही आया। अिसके बदले अगर बुनियादी शालायें दूसरी मामूली स्कूलो के मुकाबले में अपनी करामात दिखाती तो अच्छा हुआ होता।

विनोबा—सघन क्षेत्र याने अेकदम कसकर बाध देना, घन बधन, जैसे कि अिधर-अुधर हिलने की भी गुजाअिश न रहे याने अुसमें हम अेकदम अेअरकन्डिशन्ड—वातानुकूलित सर्वोदय लाना चाहते हैं। बाहर जो कुछ चल रहा हो अुसका कोअी असर अुस क्षेत्र पर बिलकुल नही होगा। यह असभव वस्तु है। अिसलिअे यह परमार्थ भक्ति करवाने की बात हो जाती है।

धर्मदेव शास्त्री—स्वराज्य के पहले ठक्कर बापा की प्रेरणा से हमने आदिवासियो में बुनियादी शालायें शुरू की। अब अुन स्कूलो को सरकारी विभाग को हस्तातरित करने का क्रम शुरू हुआ है। तो अुन सारी शालाओ को आदर्श ढग से चलाने का अब हम सोच नही रहे हैं। क्या हमें अुनको आदर्श रूप से चलाना चाहिये?

विनोबा—अनेको शालाओ की जरूरत नही, अगर सारे हिन्दुस्तान में अेक ही शाला हमारे आदर्श के अनुसार चल सकी तो बहुत काम होगा। सरकार के लोग आकर वहा या

काम देखेंगे, और अुसमें से अुनको जितना जचेगा अुतना करेंगे।

शास्त्रीजी—पर विशेषज्ञों का कहना है कि अेक शाला में कुछ सिद्ध नहीं होता। २५-३० शालाओं में करके दिखाना चाहिये। थोडे-से अच्छे शिक्षक मिल गये तो अेक शाला अच्छी चल सकती है, मगर अुतने अच्छे शिक्षक अधिक सख्या में नहीं मिलेंगे।

विनोबा—अेक से नहीं होगा तो पच्चीस से क्या होगा? जहा हिंदुस्तान में साढे पाच लाख गाव हैं अुनकी तुलना में २५-३० की क्या कीमत है? फिर तो २५-३० हजार शालाओं में कर के दिखाना चाहिये। मगर वे हमारी शिक्षण पद्धति का परीक्षण करना चाहते हैं या हमारी सगठन शक्ति का? मान लीजिये, अेक हजार शालायें चलाने की जितनी सगठन शक्ति हममें नहीं है। तो क्या हुआ? फ्रोबेल, पेस्टालाजी आदि ने कितनी शालायें चलायी? पेस्टालोजी की बडी-बडी पोथियां अिनको पढाओी जाती हैं। अुन्होंने तो सिर्फ २०-२५ लडकों को लेकर ही प्रयोग किया था। अब मैं ही खुद अेक शिक्षण शास्त्रज्ञ माना जाता हूं। मेरी पुस्तक 'शिक्षण-विचार' सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में पढायी जाती है। मैंने कितनी शालायें चलायी हैं? अेक विचारा आश्रम चलता था। अुसमें २०-२५ लडके आये। अितने से प्रयोग में से कुछ तथ्य निकला। शिक्षण शास्त्र का ज्ञान कुछ बढा। अिस प्रकार से अगर अेक भी पूर्ण आदर्श शाला चलेगी तो काम होगा।

शास्त्रीजी—तो क्या जो बहुत-सारी दूसरी शालायें हम चला रहे हैं अुन्हें बद कर देना चाहिये?

विनोबा—बन्द करने की जरूरत नहीं है। शालायें चल रही हैं तो अच्छा ही है। मगर हम अुनसे बहुत ज्यादा अपेक्षा न रखें।

मैं—नओी तालीम में नये प्रयोग की दिशा अब क्या होनी चाहिये?

विनोबा—जैसे सर्व सेवा संघ ने प्रस्ताव किया है। सारे गाव को लेकर ग्रामशाला चले। गाववालों को ग्राम-स्वराज्य के लिअे तैयार करना हमारा काम होगा। वहा अच्छी सरकारी (गैर-बुनियादी) स्कूल चलेगी। हम अुस स्कूल के शिक्षकों को जितने नये विचार स्वीकार करवा सकेंगे अुतना करेंगे। हम ब्रह्म विद्यामंदिर चलायेंगे। सरकारी स्कूल के साथ बुनियादी स्कूल की तुलना करने जावे हैं तो सवाल खडा होता है। मगर अुनके साथ हमारी तुलना कहां? यहा ब्रह्मविद्या सिखायी जाती है; भजन, अुपासना होती है, खेती में स्वावलंबन होता है, अुत्तम रसोअी के साथ आरोग्य, विज्ञान आदि का अुत्तम ज्ञान मिलता है। दूसरी शालाओं में अिन चीजों के बारे में कुछ जानते ही नहीं, अिसलिअे अिन सबमें तुलना का सवाल ही नहीं। हां, जब हिस्टरी, ज्याग्रफी (अितिहास, भूगोल) आदि पढाने का सवाल आता है तो फिर तुलना की बात आती है। हमारी तुलना तो अिन गुजरों के साथ होगी। रात को तीन बजे अुठकर ये भी हमारे जैसे यात्रा शुरू कर देते हैं। अगर हम दफ्तर खोलकर बैठते, चार आने के मेंबर बनाते अुसमें से कुछ बोगस भी होते तो फिर हमारी तुलना कांग्रेस के साथ होती। लेकिन कांग्रेस के साथ हमारी तुलना ही नहीं हो सकती।

मैं—नओी तालीम के बारे में हमारे मन में कुछ अस्पष्टता या दुविधा है। अेक तरफ

हम यह चाहते हैं कि सारे देश में हर अेक बच्चे को यथासभव अच्छा शिक्षण शीघ्रातिशीघ्र मिले। कोरापुट जैसे पिछड़े हुअे क्षेत्रों में जहा आज तालीम का नामो-निशान नही है, वहा भी यथाशीघ्र कुछ-न-कुछ शिक्षण बच्चो को मिले। अिसलिअे अेक घटे की शालायें भी चलायी जायें आदि। मगर अिस प्रकार से सारे बच्चो के लिअे शीघ्रातिशीघ्र जिस शिक्षण की व्यवस्था होगी वह कनिष्ठतम ही हो सकेगी, अपेक्षित अुत्तम नही। मगर हम अुतने में ही रुके रहे तो काम नही चलेगा। सबके लिअे सर्वोत्तम शिक्षण की व्यवस्था का ध्येय हमारे सामने होना चाहिये और देश की सेवा के लिअे, कुछ लोगों के लिअे सर्वोत्तम शिक्षण की व्यवस्था अभी होनी चाहिये। लेकिन आज जिनको शिक्षण मिल ही नही रहा है, अुनके लिअे तात्कालिक न्यूनतम व्यवस्था को ही अक्सर हम देश के सर्व सामान्य लोगो के लिअे पर्याप्त व्यवस्था मान बैठते हैं।

दूसरा, हम ग्रामीण जनता की सेवा करना, ग्राम राज्य स्थापित करना चाहते है और हम मान लेते हैं कि अुसके लिअे बहुत ज्यादा ज्ञान की जरूरत नही है। तो हमने बच्चो को अमुक हदतक सीमित ज्ञान दे दिया तो पर्याप्त है, अैसा मानते है। मान लीजिये हम अर्थशास्त्र पढाते है तो गाधी, विनोबा, कुमारप्पा के विचारों से कुछ परिचय को पर्याप्त मानते है। अर्थशास्त्र का व्यवस्थित ज्ञान आवश्यक नही मानते। समवाय का अत्याधिक मोह भी हमने बना लिया है। फिर हमने ग्रामसेवा की अेक सकुचित कल्पना बना ली। व्यापक दृष्टि से सोचे तो ग्रामसेवा के लिअे परमाणु-शास्त्रज्ञ की भी जरूरत है और सारे देश के लिअे जब हम सोचते है तो शाति सैनिक से लेकर परमाणु-शास्त्रज्ञ तक हर प्रकार के मनुष्य नअी तालीम के द्वारा तैयार हो सकने चाहिये। मगर हम अक्सर नअी तालीम के बारे में अिस प्रकार से नही सोचते हैं।

मुझे लगता है कि हमारे कअी कार्यकर्ता जो अपने बच्चो को नअी तालीम में नही भेजते हैं अुसका यह भी अेक कारण है कि अुनको लगता है कि नअी तालीम में बच्चो को व्यवस्थित ज्ञान नही मिलता। अवश्य ही कअियो को मन में नौकरी करने, पैसा कमाने आदि की भावना होगी, मगर कअियो को यह भी लगता है कि हमारे बच्चो को ज्ञान तो सर्वागीण मिलना चाहिये, मगर नअी तालीम में वैसा नही मिलेगा। हमने तो देश सेवा के लिअे मूर्ख रहना स्वीकार किया, मगर हमारे बच्चे वैसे न रह जायें। अगर हमको यह लगता कि हम में ज्ञान की कमी रही, अिसलिअे हम पूरी सेवा कर नही सके, हम अपने बच्चों को अधिक ज्ञान देकर सेवा के लिअे अधिक योग्य बनायेंगे तो सारी दृष्टि बदल जायेगी।

विनोबा— हा! सर्व सामान्य व्यापक न्यूनतम शिक्षण की व्यवस्था सरकार करे, और अल्पसख्यक के लिअे सर्वोत्तम शिक्षण की व्यवस्था हम अपने तथा अपने मित्रो के बच्चो के लिअे करे। सर्वोत्तम शिक्षण की व्यवस्था आज जनता भी अधिक-से-अधिक बच्चो के लिअे कर सकती है, बशर्ते कि सरकार डिग्री परीक्षा हटा दे और सरकारी विभागों में नौकरी के लिअे विभागीय परीक्षा चालू करे। मगर यद्यपि नेहरूजी ने डिग्री परीक्षा हटा देने की आवश्यकता स्वीकार की फिर भी वह होता नही है। अिस सबध में विचार करके अेक

कमीशन ने जो सलाह दी है वह रीट्रोग्रेड विपरीत दिशा में ले जानेवाली है और सरकार ने अुसको जिस स्वरूप में स्वीकार किया है वह और भी विपरीत है। कुछ नौकरियों के लिअे डिग्री का कोअी महत्व नहीं है, विभागीय परीक्षा होगी, और बाकियों के लिअे आज जो चल रहा है वही चलेगा। अुनको डर है कि नौकरी के लिअे परीक्षा सब के लिअे खुली रख देंगे तो बहुत अधिक लोग परीक्षा में दाखिल होंगे। तो मैंने कहा है कि अुसके लिअे पच्चीस रुपये फीस रखो। ज्यादा लोग आयेंगे तो सरकार को अच्छी आमदनी होगी। यूनिवर्सिटियों की डिग्री परीक्षाअें न भी अुठायें तो कम से कम यह तो करें कि सरकारी नौकरी के लिअे सब को समान रूप से विभागीय परीक्षा में बैठाया जा सकेगा।

शास्त्रीजी--आदिवासियों को अिस चीज पर आपत्ति है कि अुनके लिअे बुनियादी स्कूल और दूसरों के लिअे हाअीस्कूल चलते हैं।

विनोबा--होना तो यह चाहिये कि नेहरूजी, पंतजी आदि के लडकों के लिअे बुनियादी शाला हो और आदिवासी हरिजन आदि के लिअे हाअीस्कूल। ये हाअीस्कूल में पढकर जब बेकार बनेंगे तो फिर अुनको सूझ होगा। असली बात यह है कि अेक राष्ट्र में दो किस्म की शिक्षण पद्धति चल नहीं सकती। मगर ये लोग तो वैसा चला रहे हैं। फिर स्वर्गलोक में बसनेवालों के लिअे अेक तीसरा प्रकार--पब्लिक स्कूल।

मैं--आज शिक्षितों में पब्लिक स्कूल और कोन्वेन्ट की खूब हवा बनी है। मगर अुनकी शिक्षण पद्धति कम-से-कम दो सौ साल पुरानी है और अुनमें बच्चों के व्यक्तित्व को कुचला जाता है अिसका ख्याल किसी को है नहीं।

विनोबा--शिस्त पर वे बहुत जोर देते हैं। बारामुला (काश्मीर) में मैंने अपने भाषण में कहा कि अगर मैं कालेज के क्लास छोडकर अिधर अुधर घूमा न होता तो भूदान-ग्रामदान आन्दोलन का जन्म ही नहीं हुआ होता। वहां अेक कोन्वेन्ट है और अुसकी प्रधान संचालिका (Mother superior) बहुत ही सज्जन हैं और अुन्होंने हमें अेक बाअिबल भी भेंट की। यह भाषण सुनकर अुनको बहुत ही भय हुआ और अुन्होंने मुझसे कहा कि आपका यह भाषण बहुत ही खतरनाक है। वैसे ही तो आज के लडके डिसिप्लिन नहीं मानते, और आप जैसों से अिस प्रकार की बात सुनेंगे तो फिर क्या न होगा?

अेक समय हमारे आश्रम में अेक भाअी आये थे जो चौबीसों घंटे सोते जगते टोपी लगाये हुअे रहते थे। नहाने के लिअे स्नानघर में टोपी पहनकर जाते थे और फिर टोपी पहनकर निकलते थे। अेक दिन मैंने अुनसे अिसका कारण पूछा--अुन्होंने बताया कि पूना के फर्ग्युसन कालेज के जिस होस्टल में वे रहते थे वहां अेक लंबे बरामदे के सामने लडकों के लिअे कोठरियां थीं। वहां यह नियम था कि बिना टोपी के कोअी कमरे से बाहर नहीं निकल सकता। वैसा निकले तो शायद चार आना जुरमाना देना पडता था। नियम का पालन ठीक से हो यह देखने के लिअे मॉनीटर भी थे। तो कोअी थूकने के लिअे भी जरा बरामदे में बगैर टोपी के निकला तो अुसको चार आना जुरमाना देना पडता था। फिर

अुन लोगों ने २४ घंटे टोपी लगाये रखने की आदत डाल ली।

शास्त्रीजी—स्वराज्य के बाद तो पब्लिक स्कूल बंद होनी चाहिये थी, लेकिन बढ रही है।

विनोबा—बंद करने की जरूरत नहीं है। अिस शर्त पर वे रह सकती हैं कि सबकी तनख्वाह बराबर हो। अेक बढअी की आमदनी सौ रुपये है तो राष्ट्रपति को भी सौ ही रुपये मिलने चाहिये। आज कोअी आपका वेदांत पढ़ता है तो अुसको पांच सौ रुपये नहीं मिलते। मगर वैसा मिलने लग जाय तो वेदांत पढ़ने के लिअे भीड ही अुमड पडेगी।

शास्त्रीजी— यह सारा झगडा तो अुसी के लिअे है। अगर सबकी तनख्वाह बराबर हो जाय तो तनातनी का कोअी कारण ही न रहे।

विनोबाजी—हमारे देश में प्राचीन काल से कुछ ट्रस्टीशिप का विचार चला आया है कि कुछ लोग संपत्ति के ट्रस्टी बनेंगे। कुछ लोग सत्ता के और कुछ विद्या के। ब्राह्मण विद्या के ट्रस्टी हैं अैसी कल्पना की गयी थी। ब्राह्मण ज्ञान कमायेगा परन्तु वह अुसे अपने लिये नहीं रखेगा। वह अपने ज्ञान को सबको मुफ्त बांटता जायगा। अगर सब लोग अुस ज्ञान को प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखते हों तो थोड़े ही लोगों को देगा। मगर अुसके लिअे कोअी फीस नहीं मांगेगा। जैसे गाय घास-चारा खाकर दूध बनाती है और बछडे को पिलाती है वैसे ही ज्ञान की प्रक्रिया होगी। अिस प्रकार के ब्राह्मण को पेट के लिअे थोडा-सा भोजन और साल में अेक दो कपडे मिल गये तो बस। शिक्षक, वेदांती, साहित्यक, आज के वैज्ञानिक, यह मनमोहन जो परमाणु-शास्त्रज्ञ की बात कर रहा है वह भी, अिस प्रकार विद्या के ट्रस्टी बनें।

(पृष्ठ १६५ का शेषांश)

चाहिये। निर्भय होना ही ज्ञान का आरंभ है। अुसके बगैर गहरी सर्जनात्मक बुद्धि संभव नहीं होती है।

ठीक प्रकार की शिक्षा भय और प्रलोभनों के बिना ही दूसरों का ख्याल करना सिखायगी। अगर हम तात्कालिक परिणामों को ही नजर में नहीं रखते हैं तो समझेंगे कि शिक्षक और विद्यार्थी को भी सजा के भय, पुरस्कार की आशा और दूसरे भी सब प्रकार के दबाव से मुक्त होना कितना महत्वपूर्ण है, लेकिन जब तक शिक्षक का विद्यार्थी के साथ संबंध अधिकार का है तब तक दबाव रहेगा ही।

सच्ची शिक्षा हमें अपने से अूपर अुठायेगी। कितने ही न्याय्य कारणों के लिअे या कितने ही अुन्नत आदर्शों के लिअे क्यों न हो अेक दूसरे को नहीं मारने के निश्चय में हमें अपने आपको पुनः शिक्षित करना पडेगा। हमें संवेदनाशील होने की, थोडे से तृप्त होने की और हर काम में परा-शक्ति के दर्शन करने की वृत्ति सीखनी चाहिये। तभी मानव जाति का सच्चा अुद्धार हो सकेगा।

नई तालीम की असली बुनियाद

अ. वा. सहस्रबुद्धे

हिन्दुस्तान में डेढ-सौ साल अंग्रेजों का राज्य रहा। गुलामी के कारण देश का कअी तरह से नुकसान हुआ। सबसे ज्यादा नुकसान यह हुआ कि आम जनता में प्रेरक शक्ति कम होती गयी। व्यवस्था शक्ति के लिअे मौका नहीं मिला। ग्रामीण अुद्योगों के विनाश से हाथ की कारीगरी के विकास का अवसर नहीं मिला। सारे देश में अेक प्रकार से जडता आयी। धीरे-धीरे दरिद्रता भी बढती गयी और अुसके कारण जडता और भी बढती गयी और आज हम अिस परिस्थिति में पहुचे हैं कि स्वराज्य मिलने के बाद बडी-बडी योजनायें हम करते हैं लेकिन अुन योजनाओ को अमल में लाने और आम जनता से आवश्यक सहकार प्राप्त करने में सफलता नही मिल रही है। अिसका अिलाज नअी तालीम की पद्धति से ही किया जा सकता है।

बच्चे से लेकर बूढे तक देश के हर अेक नागरिक को आठ घंटे लगातार काम मिले, अिस तरह की परिस्थिति देश में पैदा करनी चाहिये। देश का आयोजन भी अुसी दृष्टि से करना चाहिये। आज हाथ से ज्यादा काम नही होता है। फिर भी हाथ की कुशलता बढाना ही है अिस ख्याल से हर अेक जितना अधिक काम कर सकता है अुतना काम अुससे लेना चाहिये और अुसके हाथ की कारगरी बढे अिस दृष्टि से भी विशेष प्रयास करना चाहिये। आज के हमारे जो अुत्पादन के साधन हैं अुनमें भी तरक्की होती रहे अिस दृष्टि से भी सोचना है। अेकदम अच्छे साधन यदि अुनको दिये जायेंगे तो वे नही चला सकेंगे। लेकिन जितना हाथ से काम होता है अुसके बदले अैसे औजार अिस्तेमाल किये जायं कि हाथ से डेढ-दो गुना तक काम हो सके। धीरे-धीरे अुतनी कुशलता हाथ में आ जायगी। फिर समय आयगा कि औजारों में और भी सुधार किये जायं, जिससे कि अुनको कुशलता बढती जाय और अुत्पादन की मात्रा भी बढती रहे। अुदाहरणार्थ कालेज या हाअीस्कूल के युवकों का आज शिविर होता है, परिश्रम करने की वे अिच्छा रखते हैं, कुदाल फावडा लेकर रास्ता बनाने का काम भी हाथ में लेते हैं लेकिन अेक मजदूर जितना काम करता है अुसके चौथाअी हिस्सा भी काम अुनसे नही हो पाता है। शरीर को श्रम करने की आदत नहीं होती है। मान लीजिये कि शरीरश्रम का अुनका अभ्यास भी बढ गया तो भी वे आज काम कर पायेंगे, अैसा नहीं दीखता है; क्योंकि कुशलतापूर्वक और फुर्ती से काम करने की अुनमें आदत नही होती है। मिट्टी का काम बहुत कुशलतापूर्वक करनेवाले वड्डर जाति के लोग आज महाराष्ट्र में रहते हैं जो मिट्टी खोदने में भी अेक दिन में ६-७ रुपये कमाते हैं। अुनके साथ यदि ये लोग काम करेंगे तो महीने-पंद्रह दिन में काम करने की अुनकी गति बढती है, अैसा अनुभव है। प्रत्यक्ष अेक शिविर में अैसा किया गया था और अिन लोगो का काम आठ ही दिन में तीन-चार गुना तक बढ गया, अैसा देखा गया। वड्डर ने अपने अनुभव से कुदाल चलाने का अेक शास्त्र बनाया है। ज्यादा काम हो अिस दृष्टि से कुदाल का कोना बदलना, हैन्डिल और हाथ

का अँन्गिल क्या रखना, यह सचमुच में अेक बहुत बडे अभ्यास का विषय हो सकता है। अिंजीनियरिंग के शास्त्र जैसा शास्त्र अिसमें भी बन सकता है। लेकिन अुस दृष्टि से हमारे देश में अभ्यास नहीं हुआ। भविष्य में देश की कारीगरी यदि बढानी हो तो अिन विषयों की ओर ज्यादा ध्यान देना होगा। कितने काल में कितना काम होता है और ज्यादा काम करना हो तो किस तरह से किया जा सकेगा अुसके प्रयोग देश में जितने होंगे धीरे-धीरे काम की गति अुतनी ही बढेगी।

चरखे को ही ले लीजिये। १९२२ साल में अखिल भारत स्पर्धा में चरखे के अूपर अेक घंटे में २२० तार की गति सबसे ज्यादा थी। आज किसान चक्र के अूपर अेक घंटे में अेक गुंडी कातनेवाले देश में सौ दो सौ लोग मिल सकते हैं। अिसमें औजार वही है, सिर्फ हाथ की कुशलता बढाने का काम किया गया है। तकली के अूपर १९३० साल तक अेक घंटे में १०० तार की गति अच्छी मानी जाती थी लेकिन पूज्य विनोबाजी के पवनार आश्रम में तकली के अूपर दो साल तक प्रयोग किये गये, अुसका शास्त्र बनाया गया, जिसके कारण अेक घंटे की औसत गति तीन सौ-साढे तीन सौ तार तक बढ गयी और अेक "वस्त्रपूर्णा" नाम की किताब भी बनी जिसे अेक अिंजीनियरिंग के शास्त्र की दृष्टि से वस्त्रोद्योग में महत्व का स्थान दिया जाता है। वैसे ही बुनाअी में, धुनाअी में पिछले बीस सालों में काफी सुधार हुअे, हाथ की कारीगरी बढाने में भी काफी सुधार हुअे और औजार में भी नये-नये आविष्कार हुअे। अुसी का आज का रूप है अम्बर चरखा। धीरे-धीरे ये सुधार बढते ही जायेंगे और अिसकी खोज चलती ही जायगी तो आगे आनेवाली पीढी के हाथ की कुशलता और भी बढेगी और अुसमें से धीरे-धीरे शास्त्र भी बढता जायगा। जैसे वस्त्रविद्या है वैसे ही खेती तथा अन्य हस्त-अुद्योग हैं। खेती में भी कअी प्रकार के सुधार सोचे जा सकते हैं। कुदाल-फावडे से काम अुतना ही अच्छा होता है जितना हल से होता है लेकिन हल और बैल की शक्ति से कुदाल और फावडे की अपेक्षा चार गुना काम अधिक मिलता है। जमीन सुधारने के लिअे अगर आठ बैलों की जरूरत हो तो जमीन सुधरने पर दो बैल ही पर्याप्त होंगे। सेवाग्राम के अिर्द-गिर्द की सारी जमीन को देखते हुअे पहले अिसको ट्रैक्टर से ही जोतना पडेगा लेकिन जमीन की किस्म जैसे-जैसे सुधरती जायगी फिर चार बैल और दो बैल से खेती की जा सकेगी। पहले हर साल हल चलाना होगा फिर जमीन की किस्म सुधरने से तीन साल के बाद भी हल चलाने से काम बनेगा। बागवानी बनती है और योग्य मात्रा में खाद का आयोजन होता है तो मिट्टी की किस्म अैसी सुंदर हो जाती है कि भविष्य में दो बैल से भी खेती की तैयारी का काम किया जा सकता है।

निराअी या गोडाअी आज हाथ से होती है। ४० बहनों से अेक दिन में अेक अेकड की निराअी होती है, अैसा यदि हम मानें तो अुतना ही काम अेक बैल जोडी से दौरा चलाकर अेक दिन में किया जा सकता है बशर्ते कि खेत में जो बोवाअी हो वह दोनों तरफ अेक पंक्ति में की जाय जिससे बीच से दौरा चलाने का काम हो सके। अिस तरह से व्यक्ति के हाथ की कारीगरी बढाने में काफी तरक्की की जा सकती

है, औजारों में भी अदल-बदल करके आगे हम लोग बढ सकते हैं, साथ-साथ फसल आज जितनी ली जाती है असे कओ गुना ज्यादा फसल लेने का शास्त्र भी काफी मात्रा में बढाया जा सकता है। आज पाश्चात्य देशों ने अिन शास्त्रों में काफी तरक्की की है। लेकिन अनका शास्त्र यदि जैसे का वैसा यहां लाने की हम कोशिश करेंगे तो संभव है कि अुनमें हम सफलता नहीं पायेंगे। यहां का शास्त्र यहां ही बढाना पडेगा और शास्त्र सिद्धांत की दृष्टि से कितना भी बढेगा लेकिन अुसको अमल में लाने की शक्ति यदि समाज में नहीं रही तो अेक तरह से अुद्योग का नुकसान ही होगा। अंगुलियों की कारीगरी बढती रहे, अिस बढती हुओ कुशलता को और बढाने के लिअे औजार सुधार भी होते रहें, औजारों का अुपयोग मनुष्य-शक्ति से हो, पशु-शक्ति से भी हो, जरूरत पडने पर बिजली आदि यंत्र शक्ति का अुपयोग अुसमें किया जाय। अिस तरह से व्यक्ति की या समाज की कुशलता के साथ औजारों में सुधार होते रहेंगे तो सारे समाज की तरक्की होगी, अुत्पादन भी काफी मात्रा में बढेगा अन्यथा यंत्रों का अुपयोग जिस तरह से आज किया जाता है अुससे बेकारी बढेगी, देश का अेकांगी विकास होगा और देश में जो जडता आयी है वह वैसी ही बनी रहेगी जो आज हमारा बुनियादी रोग है। योजनापूर्वक सारे समाज की बुद्धिमत्ता बढाना, हाथ की कुशलता बढाना और नागरिक भावना बढाना यही नओ तालीम का अुद्देश्य है और वह अेक पीढी दूसरी पीढी को देती रहेगी तो समाज के हर पहलू से शक्ति और योग्यता बढाने का प्रयास अिस नओ तालीम की पद्धति से सदैव के लिअे चलता रहेगा।

प्रजातंत्र देशों में अभी तक प्रश्न पूछे जा सकते हैं, बुद्धि को दबाकर नहीं रखा है। लेकिन शायद और अेक लडाई के बाद यह स्वतंत्रता बचेगी नहीं। अिसलिअे शिक्षकों का यह अेकदम आवश्यक कर्तव्य हो गया है कि वह अपने विद्यार्थियों में झूठे प्रचार के कायल न होने की मानसिक शक्ति पैदा करें। नहीं तो अगली पीढी के स्त्री-पुरुष अैसे किसी भी समर्थ प्रचारक के हाथ के पुतले बन जायेंगे जो कि सूचना और प्रसार के साधनों पर कब्जा कर लेता है। अिसके लिअे जरूरी है कि बच्चों को किसी बाह्य अुत्तेजना के वशवद न होकर अपनी ही आन्तरिक शक्तियों पर निर्भर रहना और स्वतंत्र बुद्धि का विकास करना सिखायें। यह दो दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बाह्य अुत्तेजना पर निर्भर रहना चरित्रहीनता है।... आज पाश्चात्य देशों में बहुत ज्यादा लोग बिना किसी अुद्देश्य के किताबें पढते हैं, भाषण सुनते हैं, सिनेमा देखते हैं। यह अेक व्यसन बन गया है और यहां तक बढा है कि अिन लोगों के लिअे कुछ दिन या कुछ घंटे तक भी अिन चीजों से अलग होना बडा कठिन होता है। यह अिसलिअे नहीं कि अिनसे अुनको कोओ आनंद मिलता हो, बल्कि वे लोग अिस नशे के ऐसे आदी हो गये हैं कि अिनसे अलग होकर कुछ निराधार और खोये-से महसूस करते हैं। आज के तथा-कथित सभ्य स्त्री-पुरुषों में अधिकतर अपने आध्यात्मिक विचारों के बल पर जीने से असमर्थ हैं, अुन्हें निरंतर किसी बाह्य अुत्तेजना की जरूरत है।

—आल्डस हक्सली

परिसंवाद क्यों ?

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ के सर्व सेवा सघ के साथ सगम होने से नअी तालीम के काम में अेक अैतिहासिक अध्याय का आरम होता है। अिस कदम से नअी तालीम के विकास के लिअे नअी स्फूर्ति और व्यापक क्षेत्र हासिल होंगे, जिससे सर्वोदय के काम में तेजस्विता प्रकट होनी चाहिये।

नअी तालीम का जन्म केवल अेक नये शिक्षासिद्धान्त से नही, बल्कि अेक मौलिक सामाजिक-शैक्षणिक विचार से हुआ। शिक्षण पद्धति की दृष्टि से ही नही बल्कि शिक्षण पानेवाले व्यक्ति के समग्र विकास की दृष्टि से-अुसके व्यक्तित्व के सब अगो को शिक्षित करने की दृष्टि से-नअी तालीम में शिक्षा के माध्यम के तौर पर अुद्योग अपनाये गये। शिक्षा के सबध में यह नही सोचा गया कि वह सिर्फ व्यक्ति को अुसकी भलाअी और विकास की तरफ ले जाने-वाली है बल्कि सोचा यह भी गया है कि सबकी भलाअी का वह अेक साधन है। अिस शिक्षा ने अक अैसी सामाजिक पद्धति का निर्देश किया जिसमें गरीब और अमीरो का अस्वाभाविक भेदभाव नही होगा, जिसमें आजीविका और आजादी के हक के आश्वासन सबको प्राप्त होंग। सच्ची शिक्षा राष्ट्र की मौलिक आवश्य-कताओ की पूर्ति का प्रयत्न करे—अिस सूत्र के मुताबिक नअी तालीम के कार्यक्रम की आयो जना हुअी और वही नअी तालीम की क्रान्ति का वाहन बना।

अगर नअी तालीम को क्रांति का वाहन बनना है तो सिर्फ १४ साल की अुमर तक में बच्चों की शैक्षणिक समस्याओ का हल करने से यह सभव नही हो सकेगा। अुसे और व्यापक बनाना होगा। गांधीजी ने अिस बात की ओर कार्यकर्त्ताओ का ध्यान प्रारभ से ही आकर्षित किया। अुन्होने नअी तालीम को "जीवन के लिअे तालीम" कहा। अतअेव यह स्वाभाविक था कि यह जो शिक्षण जीवन के लिअे था, जीवन के द्वारा भी होना था। अुन्ही के शब्दो में—शिक्षण जीवन के समूचे क्षेत्र को घेर लेता है जीवन में अैसी कोअी चीज नही, चाहे कितनी भी छोटी क्या न हो, जो शिक्षण से सबध नही रखती। प्रौढ शिक्षा की अुनकी व्याख्या थी—"अेक विशाल और राष्ट्र के समस्त विषयो का समावेश करनवाला प्रयोग' अिस तरह वह बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा ही नही, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्रचना के लिअे शैक्षणिक आधार भी बन गया। यह राष्ट्रीय पुनर्रचना सत्य और अहिंसा के द्वारा ही होगी। आठ सालो के सपूर्ण शिक्षाक्रम की प्रस्तावना में बुनियादी शिक्षा की व्याख्या करते हुअे गाधीजी ने अपने ही अनूठे ढग से कहा-"आज राष्ट्रीय शब्द सत्य और अहिंसा को सूचित करता है।" बापू द्वारा स्थापित और रचनात्मक काम का प्रतिनिधित्व करनेवाली सस्थाओ का अुद्देश्य बेकारो को आर्थिक सहायता देना या गरीबो में वेतन बाटना नही रहा बल्कि अुनका असली मकसद अेक अहिंसात्मक सामाजिक पद्धति खडा करना था। अुनसे यह अपेक्षा की गयी थी कि वे लोगों को अहिंसात्मक सगठन तथा अनुशासन का आधार देंग और देश के करोडो लोगो को भ्रातृत्व भाव

में पिरोयेंगे और अुनके जीवन की बुनियादी प्रवृत्तियों में अहिंसात्मक पद्धति कायम करेंगे"। अिसका यह स्पष्ट अर्थ है कि अिन संस्थाओं को अेक श्रेष्ठ और प्रगति शील प्रकार के कार्यकर्ता तैयार करने हैं जिन्हें रचनात्मक काम के वैज्ञानिक आधार की समझ हो और अुन्हें यह भी ज्ञात हो कि अहिंसात्मक भाव से अुन रचनात्मक कामों को कैसे कारगर बनाया जा सकता है। अैसे कार्यकर्त्ताओं का निर्माण करना नओी तालीम का काम है।

नओी तालीम के सामने यह कोओी कम या सामान्य काम नही रहा। नओी तालीम ने अिन बाओीस सालों में प्रचलित शिक्षण-पद्धति और अुसकी विचार-धारा पर काफी प्रहार किया है। शिक्षण में अुत्पादक परिश्रम के मूल्य को मान्यता मिली है। मगर अिसके साथ-साथ अुद्योग–दस्तकारियों की वैज्ञानिक खोज शिक्षण कला और शास्त्र के अनुरूप व अनुकूल नही हो रही है। खादी ग्रामोद्योग आयोग की सहायता हमने जगह-जगह की शालाओं में ली है। लेकिन आयोग के द्वारा अुद्योग का जो विकास हो रहा है वह नओी तालीम का अंग नही बन पाया है। खादी आयोग के प्रशिक्षण में नओी तालीम की पद्धति और दर्शन का सबध बहुत कम हो रहा है। खेती-बागबानी या अितर अुद्योगों के स्वावलंबन के हिसाब रखे जाते है, लेकिन काम के नमूने या अुत्पादन की अपेक्षित अुत्तम स्तर की दृष्टि से हमारा काम बहुत ही कम हुआ है यह हमें मानना ही होगा। हमारे अैसे विद्यालय बहुत ही कम है जहां को खेती में काम करने से किसानों के लडके भी कुछ नओी चीजें सीख सके हों और अपनी योग्यता व क्षमता बढा सके हों। साथ-साथ यह सब आर्थिक दृष्टि से शक्य भी हो। अुद्योगों में दक्षता हासिल करना नओी तालीम की अेक बुनियादी चीज है। नओी तालीम के प्रसार और विकास के लिअे, राष्ट्र की जनता के चारित्र्य के निर्माण के लिअे यह विशेष आवश्यक कार्यक्रम है। यह स्वावलंबन पर ही जोर देने की बात नही है। हर शाला के पास ५-१० अेकड जमीन होनी चाहिये और अुसके छोटे-से-छोटे हिस्से का भी पूरा अुपयोग होना चाहिये। अितना ही नही बल्कि जबतक अुस जमीन में फसल की योजना वैज्ञानिक दृष्टि से न बनती हो और बुनाओी-बढओीगिरी आदि के साधनों और अुपकरणों में तरक्की न हो, अुनके जरिये जीविका कमाने का आत्म विश्वास नहीं बनता हो, तब तक नओी तालीम की जड नहीं जमेगी। जो काम पूरी श्रद्धा और ध्यान के साथ नहीं किया जाता वह खराब काम ही नही, खराब शिक्षण भी है। अगर भावी भारत की हमारी कल्पना अेक विकेन्द्रित राजनैतिक और आर्थिक प्रजातन्त्र की कल्पना है तो वह भारत कारीगरों का राष्ट्र होगा। अुसकी नींव हमारी शालाओं की दस्तकारियों के वैज्ञानिक विकास पर आधारित होगी।

नओी तालीम ने शिक्षाजगत् को यह दृष्टिकोण दिया है कि शिक्षण अनुभव पर आधारित हो, ज्ञान अेकांगी और कट्टर न होकर परस्पर सबधित और समग्र हो। यह विचार अेकदम नया नही था। शिक्षण शास्त्रियो के सामने अिसके कुछ प्रयोग तथा अनुभव मौजूद हैं। यह विचार यद्यपि सर्वसम्मत नही रहा लेकिन सर्वमान्य तो जरूर रहा। हम लोगों ने समवाय शब्द को और अुसके विचार को चलाया। अुसपर काफी प्रयोग हुअे और कुछ साहित्य भी प्रकाशित हुआ है।

जिस पद्धति और विचार पर कार्यकर्त्ताओं का अुत्साह बढा और जिसमें अुनका विश्वास भी दृढ हुआ। लेकिन तिसपर भी आज साधारण पालको, विद्यार्थियो और अनेक शिक्षकों के मनमें यह विश्वास पैठ नही पाया है कि यह अेक क्रमबद्ध तालीम हो सकता है। अिन शालाओं के बुनियादी और अुत्तर बुनियादी स्तर के विद्यार्थी समाज शास्त्र की काफी जानकारी रखते हैं, अुनमें जिम्मेदारी का बोध तथा सामाजिक परिस्थितियो और समस्याओं का भान है। अिस बात को कअी लोग स्वीकार करते हैं। लेकिन हम सबको यह विश्वास नही हो पाया है कि भाषा में वे अपने समवयस्क अितर विद्यार्थियो की बराबरी कर सकते है, गणित और विज्ञान में अुनकी योग्यता अच्छी है। आज साधारण पालक भी यह चाहता है कि मेरे बच्चे को विज्ञान की बुनियादी बाते मालूम हो। अिस बात से कोअी अिनकार नही कर सकता कि यह मांग जमाने के लायक है और अहिंसा के विकास के लिअे जरूरी भी है। अिन आवश्यकताओ की पूर्ति करने में हमें कुछ कठिनाअियां हुअी हैं। हम लोगो को केवल अेक आदर्श विचार बता दें और अैसा सोचकर कि वह विचार स्वत सिद्ध है स्वय तृप्त हो जाय यह ठीक नही है। किसी भी विचार को अगर हमें लोकप्रिय बनाना है तो अुस विचार पर प्रयोग कर अुसे कारगर साबित करना होगा। नअी तालीम के व्यापक आन्दोलन के लिअे यह आवश्यक है कि प्रौढ, बाल, किशोर आदि सभी स्तरो पर यह काम तीव्रता से हो। अितना ही नही, नअी तालीम के सही विकास के लिअे भी यह अनिवार्य है। हमारे अपने ही काम की क्रमिक अुन्नति के लिअे विधायक चिंतन और सही मूल्यांकन अनुपेक्षणीय है। हमें बालकोपयोगी तथा शिक्षकोपयोगी साहित्य की भी विशेष जरूरत है।

नअी तालीम के विद्यालयो में अब तक सहजीवन के कुछ प्रयोग हुये हैं। सहकारी और स्वयप्रेरित समाज बने अिस ध्येय से हमने कुछ तत्र अपनाये। पुरस्कार और दड, स्वशासन, समीक्षा और परीक्षा अिन सबके बारे में कुछ मौलिक विचार प्रकट हुअे हैं और अनुभव भी प्राप्त हुआ है। अिस सहजीवन का विकास कुछ हद तक मूल्य परिवर्तन में होना चाहिये और वह लोकनीति का आधार बनना चाहिये। कुछ हद तक अिसलिअे कह रहा हू क्योकि सिर्फ शालाओ से ही सामाजिक क्राति नही हो सकती है। यह सभव नही मालूम होता है कि अकेली शालायें सामाजिक क्राति लाने में सफल हो। बल्कि साथ-साथ यह जरूरी है कि सामाजिक वातावरण भी अुस क्राति के अनुकूल बनता जाय। शालायें दिशा दर्शन करा सकती हैं, परिवर्तन के लिअे प्रेरणा दे सकती हैं। अिससे हम समझ सकते हैं कि ग्रामदानी और ग्राम-सकल्प के सन्दर्भ में ही नअी तालीम की क्रान्तिकारी सभावनाओ का पूरा दर्शन हो सकता है। पुनर्निर्माण का कार्य तभी पूरा सफल होगा जब अुसके साथ सामाजिक मूल्य परिवर्तन भी हो।

हमारे प्रयास की दिशा यही होगी कि शाला का सहजीवन लोकनीति पर आधारित हो। लोकनीति पर आधारित होने का यह अर्थ है कि हमारे समाज में आचार सयम, विचार स्वातत्र्य, निर्भयवृत्ति और स्वयप्रेरणा से जिम्मेदारी अुठाने की आदतो की स्थापना हो। मतभेद होते हुअे भी हम परस्पर की रायो का आदर करें। वैयक्तिक और सामूहिक रूप से

भी हम स्पष्ट और खुले ढंग से अपने कामों की समीक्षा करने की आदत डालें। अधिकार या संख्या के बल से अेक दूसरे पर अपना विचार लादने का आग्रह न रखें। शाला समाज में और शिक्षक मण्डलो में अिन आदतों और गुणों का विकास करने में जब हम सफल होंगे तभी लोकनीति की बुनियाद भी डाल सकेंगे। अिसके लिअे हमारे मंडलों के घटन-संगठन में कुछ फर्क करना पडेगा। हमें अपनी सारी समस्याओं का हल अहिंसा को नजर में रखकर ही ढूढना है। वे चाहें विद्यार्थियों की पारस्परिक समस्यायें हों, विद्यार्थी और कार्यकर्ताओं के बीच की हों, कार्यकर्ताओं की पारस्परिक समस्यायें हों। हो सकता है कि अपनी समस्याओ का अहिंसात्मक हल ढूढने के लिअे हमें सुमति और सुचेतना का अिन्तजार करना होगा या मुल्तवी रखना होगा। हमारे बीच में सब की सम्मति जब तक न हों तब तक जरूर अिन्तजार करें। हमारे काम की खूबी यह होनी चाहिये कि समस्याओं के हल करने में अहिंसा ही प्रकट हो।

आज नओी तालीम के बारे में चर्चा करते हुअे खूब सुनने को मिलता है कि "नओी तालीम के प्रति विश्वास नही है।" शिक्षकों का कहना है कि "नओी तालीम के प्रति विद्यार्थी और पालकों का विश्वास नहीं है।" साथी शिक्षक या पालक यह कहते है कि अिस तालीम पर अिस शिक्षक की कोओी श्रद्धा नहीं है। राज्य-प्रतिनिधियों की यह शिकायत है कि अधिकारियों को अिसके प्रति अविश्वास है। आखिर कही-न-कही अिसकी कुंजी तो होगी ही। असल में विश्वास का यह संकट (crisis of faith) क्यों है, और अिसे कैसे मिटाया जा सकता है ? रोग समझने मात्र से अुस का अिलाज नहीं होगा न ?

नओी तालीम के सामने सब से बडी समस्या यह है कि जिस क्षेत्र में या गांव में शाला चलती है, वह क्षेत्र या गाव अुसका सेवाक्षेत्र कैसे बन पायेगा। आज की भूमिका में हमने यह तो माना ही है कि नओी तालीम अपनी चार-दीवारों के भीतर ही अपने काम को सीमित रख नही सकेगी। गांव की समस्यायें शाला के अध्ययन का विषय और प्रत्यक्ष काम का क्षेत्र *(माध्यम) बनेंगी और अुनसे ही शाला के काम* को वास्तविकता और पुष्टि प्राप्त होंगी। समाज में चलनेवाली प्रवृत्तियां, अुपलब्ध लोकशक्ति और साधन संपत्ति शाला और समाज के शिक्षण के माध्यम बनें। अिससे हमारे सामने अेक बहुत बडा दरवाजा खुल जाता है, बडी सभावनाओं और शक्यताओं का रास्ता खुलता है। सर्वोदय की सब प्रवृत्तियां अेक होकर आस-पास के लोकजीवन में गुण-विकास प्रधान समृद्धि लाने के लिअे जब स्वयस्फूर्ति से अुद्यम करेंगी तब ग्राम-स्वराज्य का चित्र प्रस्फुटित होगा।

—राधाकृष्ण

अेक समीक्षा और कुछ सुझाव

आज देश भर में कओी सारी सस्थायें गैर-सरकारी तौर पर नओी तालीम का काम कर रही है। अुनमें कुछ तो १५-२० साल पुरानी हैं, कुछ अुससे कम अर्से की है। अब समय आ गया है कि हम अिस लबे अर्से के अनुभवो के आधार पर गभीर चिन्तन करे कि अिन सस्थाओ का काम कहा तक सफल रहा, कहा त्रुटिया या कमिया रही और किस दिशा में या किन बातो पर अिनमें पुनर्गठन की जरूरत है।

पहले सफलताओ की बात ले, तो अेक अच्छे पारिवारिक जीवन का ढाचा तैयार करने में ये काफी हद तक कामयाब हुओ है। बाकी किसी भी प्रकार का असतोष क्यो न हो, सामाजिक जीवन में अेक सतृप्ति का बोध अिनमें आम तौर पर पाया जाता है जो कम महत्व की बात नही है। कुछ तरुण कार्यकर्त्ताओं ने अिनमें अच्छा प्रशिक्षण पाया है। यह जरूर मानना पडेगा कि देश की विशालता की तुलना में अिनकी सख्या अत्यल्प रही। फिर भी अुन्हे जीवन के प्रति सर्वोदय-विचार की अेक समग्र दृष्टि मिली, वे अैसे निष्ठावान सेवक व जिम्मेदार नागरिक बने जो किसी भी देश के लिअ "अेसेट" ही कहलायेंगे। अिन सस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ के अन्दर प्रान्तीय भावना, जातिभेद और वर्ग भेद अित्यादि का निराकरण हुआ, अुनका मानसिक क्षेत्र कुछ विशाल बन पाया। अिनमें नओी तालीम की शिक्षा पद्धतियो के मूल्यवान प्रयोग हुओ जिनके फलस्वरूप अुसका अब शास्त्र भी आज हमें अुपलब्ध है जो आगे भी विकास करता जायगा। नओी तालीम के शिक्षा सिद्धान्तो को देश विदेश के शिक्षा शास्त्रियो का अनुमोदन व समर्थन प्राप्त हुअे। शिक्षा के क्षेत्र में अेक नओी दिशा में शोध और अनुसधान का काम हुआ, शैक्षणिक सिद्धान्तो का गहरा अध्ययन और शिक्षको के मन में अपने काम के महत्व का बोध और अेक नये अुन्मेष का अनुभव भी हुआ।

यह कहना शायद गलत नही होगा कि जन सेवा और जन सपर्क का सब से कारगर और जल्दी असर दिखानेवाला साधन आरोग्य का काम है। अिन सस्थाओ के जरिये आस पास के बालको की आरोग्य-सेवा और स्वास्थ्य सुधार का कुछ काम हुआ है जिससे लोगो का विश्वास भी प्राप्त हुआ। ग्राम सफाओी का बोध, ग्रामीण समस्याओ का अध्ययन और प्रौढ शिक्षा की दिशा में भी कुछ काम हुआ। अिनके अलावा अिनमें कअियो में लोक कला और लोकनृत्य का अच्छा अभ्यास और विकास हुआ। मनोरजक कार्यक्रमो का अैसा सादा और अुसी समय सुरुचिपूर्ण आयोजन हुआ जिससे अेक अूचे सास्कृतिक जीवन की झलक मिली।

अब अपनी कमियो की बात हम सोच ले तो यह अब वस्तुस्थिति है कि अिन सस्थाओ को आस पास की जनता की प्रीति और समति जैसी हम चाहते हैं वैसी प्राप्त नही हुओी है। अधिकतर नओी तालीम शालायें हम अपने ही अिच्छाबल से चला रहे है, जनता की प्रेरणा और अुत्साहपूर्वक सहयोग से नही। अिसके पीछे मूलभूत बात जरूर यही है कि प्रचलित शिक्षा की मान्यता और अुससे प्राप्त होनेवाली सुविधायें अत्यधिक हैं, लोगो का अुससे आकर्षित

होना और अपने बच्चों के लिअे वैसी शिक्षा चाहना स्वाभाविक ही है। जिसमें कोअी ताज्जुब भी नहीं कि आज की सामाजिक परिस्थिति में अुनका मानसिक परिवर्तन हम नहीं कर पायें। अलावा अिसके नअी तालीम शालाओं को सरकारी और विश्वविद्यालयों से आवश्यक मान्यता नहीं मिलने के कारण यहां से निकले विद्यार्थियों को अुच्च विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिल पाता है। डाक्टरी, अिंजीनियरिंग अित्यादि विषयों की प्रावैधिक शिक्षा का रास्ता अुनके लिअे बन्द होता है। यह अेक अत्यन्त वास्तविक कठिनाअी है। अिससे भी खेदजनक बात यह है कि अिन शालाओं में गणित व विज्ञान की आवश्यक ठोस बुनियाद भी नहीं डाली जाती जिससे कि बाद में ये विद्यार्थी वैज्ञानिक अनुसन्धान या अुच्च विज्ञान की साधना में स्वयं भी लग पाते। अिसमें हमें गंभीर आत्म-निरीक्षण करने की जरूरत है। क्या अपने विद्यार्थियों को अेक साधारण ज्ञान और बौद्धिक योग्यता के आवश्यक स्तर पर पहुचाने में हम सफल रहे? हमारी शिक्षा और शिक्षण कला में कुछ अैसी त्रुटियां नहीं रहीं, जिससे विद्यार्थियों और अुनके पालकों के मन में असन्तोष अुत्पन्न हुआ? हम क्या खुद भी अुनकी शैक्षणिक योग्यता से सन्तुष्ट हैं? नहीं हैं तो क्यों अैसा हुआ?

अेक बात तो यह लगती है कि पालकों को हमारे विचारों और शैक्षणिक सिद्धांतों को समझाने के लिअे हमने पूरा प्रयत्न नहीं किया। अक्सर पालक आकर पूछते हैं—आपके यहां या तो काम होता है या सभायें और चर्चायें होती हैं। कोअी "क्लास" नहीं होती है, फिर हमारे बच्चे क्या सीखेंगे? हमारे काम का शैक्षणिक अुद्देश्य, औपचारिक "क्लास" के बदले विद्यार्थियों की चर्चा-गोष्ठियों से क्या फायदा होता है, हमारा प्रयत्न क्या है, यह सब अुन्हें सन्तोषजनक ढंग से समझाना चाहिये। कअियों को अिस पर भी ताज्जुब और कभी-कभी आपत्ति भी होती है कि बच्चों के शरारत करने या नहीं पढने पर यहां "अुचित दण्ड" याने मारना-पीटना क्यों नहीं होता है। अुन्हें शिक्षा मनोविज्ञान की कुछ मूलभूत बातें अवश्य ही समझानी चाहिये। होना तो यह चाहिये कि जो भी पालक नअी तालीम संस्थाओं के संपर्क में आते हैं वे अैसे "कनविन्स्ड" हो जायं कि फिर कभी अुस अिलाके की किसी भी शाला में बच्चों को मारना-पीटना सहन न करें, अुसका अपनी पूरी शक्ति से विरोध करें। यह तो अेक दुहरी प्रक्रिया है—बच्चों के जरिये हम अुनके मा-बाप और समाज के अूपर भी अिस शिक्षा का परिणाम लाना चाहते हैं। दूसरा, वैसी अनुकूल सामाजिक परिस्थिति के निर्माण के बगैर बच्चों में हमारा शिक्षा का काम टिकाअू भी नहीं हो सकता। तो अिस दिशा में हमारा प्रयत्न पर्याप्त नहीं रहा। अिसी सिलसिले में हमें यह भी मानना चाहिये कि जन-सामान्य का विश्वास और सम्मति हम प्राप्त नहीं कर सके तो सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में नये मूल्यों का विकास करने में भी हम असफल रहे—अन्त्योदय की हमारी कल्पना तो दूर रही। समाज की तात्कालिक समस्याओं के समाधान में भी हम अपनी शिक्षा पद्धतियों के जरिये कोअी कारगर मदद पहुंचा नहीं सके।

अिन संस्थाओं की—अन्य रचनात्मक संस्थाओं की भी— और अेक कमजोरी यह रही कि वे आस-पास की जनता से-चाहे कुछ अनिवार्य कारणों से हो—अलग ही रहीं। अुनके

सदस्यों का अपना ही अेक समुदाय बन गया। अिनके पास कुछ धन-संपत्ति भी होती है। आत्म-निर्भरता का आदर्श और प्रयत्न रहने के बावजूद खेती, मकान बनाना, अित्यादि कामों में अक्सर अिनको आस-पास के देहातों से कुछ लोगों को मजदूरी के लिये लगाना पड़ता है। ये लोग संस्था के स्थायी कार्यकर्त्ता नहीं बन पाते हैं तो संस्था का और अिनका सम्बन्ध मालिक मजदूरों का जैसा हो जाता है। फलस्वरूप बेकारी के दिनों में असन्तोष, मजदूरों से "काम लेने" की नौबत, मजदूरी में भी विषमता अित्यादि बअी बातें अुस जनता के साथ संस्था के संबन्ध को दूषित कर देती हैं। यह निःसंदेह सामाजिक-आर्थिक समता की हमारी लक्ष्यप्राप्ति और साधना में अत्यन्त बाधारूप है। संस्थाओं में परिग्रह के बारे में विनोबाजी कहते हैं—"अपरिग्रह का विचार हम सिद्धांत-रूप में मानते हैं, पर संस्थाओं में परिग्रह रखते हैं, मिलकियत भी—जमीन, मकान, जायदाद सब। सार्वजनिक होने के नाम से अुनका बचाव करते हैं। बचाव तो कुछ हो ही सकता है। पर चाहे सार्वजनिक हित के लिअे, चाहे संस्था के नाम से भी क्यों न हो, परिग्रह की मात्रा का ख्याल करना जरूरी है।"

अब सोचना चाहिये कि हमारी अिन असफलताओं के मूल में क्या कारण हैं? सामाजिक वातावरण की प्रतिकूलता को ही हम कारण नहीं ठहरा सकते हैं; क्योंकि अुस वातावरण को ही बदलने का हमारा दावा है। अेक तो अपने ध्येय के बारे में हममें से बहुतेरों के सामने चित्र स्पष्ट नहीं था। तात्कालिक परिस्थिति, बदलते हुअे युग के नये प्रश्न, नअी सुविधायें और नअी समस्यायें और हमारे आदर्श भविष्य की कल्पना-अिनके बीच में हम दुविधा में पड़ गये। ग्रामोद्योग, यंत्रशक्ति व बिजली का अुपयोग अित्यादि प्रश्नों पर भी हमारा मन पक्का और आचरण सातत्ययुक्त नहीं रहा, तो अिसमें क्या आश्चर्य है कि विद्यार्थियों में हम श्रद्धा और विश्वास पैदा नहीं कर सके। अिन बातों में कुछ मतभेद होना स्वाभाविक है और शायद अवांछनीय भी नहीं है, बशर्ते कि अुससे विद्यार्थियों के मन में दुविधा न हो। अिसके लिअे हमें अपनी दृष्टि और आचरण शुद्ध रखना अत्यन्त जरूरी है। अिन दुविधाओं और अनिश्चयात्मकता के कारण हमारे औजारों में और काम के तरीकों में जो सतत अनुसन्धान, विकास और सुधार होना चाहिये था और अुससे जो शैक्षणिक लाभ और ज्ञान हमें प्राप्त होना चाहिये था वह हो नहीं पाया। असल में यह अेक अत्यन्त व्यापक और मूलभूत प्रश्न है। अक्सर हमारा जोर "अुत्पादक कामों" पर ही रहा तो मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिअे आवश्यक अन्य पहलुओं पर कुछ कम ध्यान दिया गया, अेकांगीपन आ गया। बौद्धिक, कलात्मक और सर्जनात्मक शक्तियों का अुचित विकास "अुत्पादक" प्रवृत्तियों की पुष्टि के लिअे भी जरूरी है—अिनके बगैर "बुद्धियुक्त कर्म" संभव ही नहीं होता है। फिर भी अिन प्रवृत्तियों में अेक समतोल और सामंजस्य को हमारे अन्दर कमी रही—अेक समन्वित कार्यक्रम बनाकर अुसको सातत्य के साथ हम चला नहीं पाये।

संस्थाओं की और अेक समस्या यह रही कि वह बहुत दफे व्यक्ति प्रधान बन जाती है। सहजीवन और सहचिन्तन की टेकनिक का विकास नहीं हो पाया। दूसरे के विचारों के

लिअे आदर और अपनी दृष्टि में अुदारता के वगैर साथीपन पनप नहीं सकता और अुसके विना साथ मिलकर संगठित काम भी नहीं हो पाता। अिसी साथीपन की कमी के कारण कार्यकर्त्ताओं की बौद्धिक व नैतिक अुन्नति और गुण-विकास अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाया।

ये सब कुछ नकारात्मक पहलू हो गये। अब प्रश्न यह है कि अिन संस्थाओं का आज के सन्दर्भ में नया स्वरूप क्या हो। अिसके बारे में कुछ मित्रों ने जो अपनी राय दी है, अुनके सारांश यहां दिये जा रहे हैं।

श्री देवेन्द्र गुप्त लिखते हैं :—

गांधीजी के आदर्शों के अनुसार काम करने वाली सभी संस्थाओं का ध्येय अेक जातिहीन वर्गहीन समाजरचना है और सत्य और अहिंसा जिसका मूलमंत्र है। अब हमारी सब प्रवृत्तियों का आधार शैक्षणिक होना चाहिये, मेरे विचार में नअी तालीम का रंग देने का अर्थ यही है। जो सामाजिक, आर्थिक, या राजनैतिक परिवर्तन हम लाना चाहते हैं, अुनकी बुनियाद पक्की तभी होगी जब वह *सामान्य जनता की शिक्षा के* द्वारा सध जायगी और नअी पीढ़ी में नये मूल्यों का बोध होगा। पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा नयी पीढ़ी अेक नया जीवन का तरीका अपनाने के लिअे अधिक तैयार होगी। मानव समाज के क्रमविकास के साथ-साथ तालीम में भी नवीनता आती रहेगी। अब हमारे सामने आज की संस्थाओं में अिन विचारों को कार्यान्वित करने का सवाल है। मैं मानता हूं कि अिस नअी दृष्टि के अनुसार हरिजन सेवक संघ का काम तथाकथित नीचे स्तर की जातियों की सामाजिक अवशताओं का निवारण करना मात्र नहीं *होगा, बल्कि अुसी समय वह नअी तालीम के* द्वारा जनमत को बदलने का काम भी करता रहेगा; यानें वह अच्छे लेख, भाषण व यात्राओं द्वारा अिस विषय पर जन सामान्य को शिक्षित करने का प्रयत्न करेगा, अपने कार्यकर्त्ताओं में सर्वोदय समाज के समग्र दर्शन व दृष्टि का निर्माण करेगा, और नअी पीढ़ी में मानव समानता का बोध अुत्पन्न करके अिस पाप का अुन्मूलन करेगा। अिसके लिअे हरिजन सेवक को अपने क्षेत्र की शालाओं के शिक्षाकार्य से घनिष्ठ संबंध रखना पड़ेगा। अुनकी हर तरह की मदद करके अुन्हें अिन विचारों से प्रभावित करना होगा। अुसे नअी तालीम का शिक्षक ही बनना होगा। नअी तालीम अेक पद्धति नहीं, वह जीवन का अेक तरीका और मानसिक वृत्ति है जिसका पहले अपने अन्दर ही विकास करना होगा।

मैं नअी तालीम वृत्ति से क्या अर्थ समझता हूं, अुसका विशदीकरण करने का प्रयास करूं। क्योंकि अुसका स्पष्ट बोध हो तो ही हम सब सर्वोदय संस्थाओं में नअी तालीम का रंग देने *का मतलब भी समझेंगे। नअी तालीम मानव* की अच्छाअी—मूलभूत गुणात्मकता और विकास करने की अुसकी आन्तरिक क्षमता पर दृढ़ श्रद्धा है। वह यह विश्वास है कि केवल बाह्य परिवर्तन से कोअी लाभ नहीं होगा जब तक अुसके साथ साथ मनुष्य का हृदयपरिवर्तन भी नहीं होता है। हृदय परिवर्तन हो जाय तो सामाजिक परिवर्तन अपने आप हो जायगा। हाँ, समुचित शिक्षा के साथ साथ सामाजिक जीवन में परिवर्तन करना भी जरूरी है, अुस रास्ते में जो भी बाधायें हैं, अुन्हें हटाना ही होगा। नअी तालीम के द्वारा हमें यही हृदय

परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू करनी है। और यह जैसे पहले भी कहा जा चुका है, तीन स्तरो में होगा–सामान्य जनता, हमारे अपने कार्यकर्त्ता और आनेवाली पीढी याने बच्चे। अिस दृष्टि के बगैर किसी काम में नअी तालीम का रग है, अैसा नही कहा जा सकता। सब रचनात्मक प्रवृत्तियो के मूल में जन-सामान्य की शिक्षा का अुद्देश्य होना चाहिये। अगर कोअी खादीकेन्द्र आर्थिक अुत्पादन की दृष्टि से ही काम करता हो, तो अुसके पीछे के विचार शुद्ध और आदर्श अुन्नत होने पर भी वैसा काम काल के प्रवाह में टिक नही सकता है। खादी के द्वारा आर्थिक अुत्पादन हमारा साध्य नहीं—वह साध्यप्राप्ति के लिअे साधनमात्र है। साध्य तो मानव-मानस में परिवर्तन है और यह परिवर्तन विश्वप्रेम और आध्यात्मिक विकास की साधना के रूप में होना चाहिये। अुसके लिअे कार्यकर्त्ताओ को अेक समग्र दर्शन मिलना चाहिये, तो अुनका प्रशिक्षण नअी तालीम के जरिये होना पडेगा। खासकर सारी सर्वोदय सस्थाओ को–चाहे अुनका विशिष्ट काम और कुछ हो–अपने आसपास के बच्चो की तालीम पर ध्यान केन्द्रित करना पडेगा।

"नअी तालीम के नये मोड" के बारे में मनमोहन भाअी ने लिखा है—

अेक चीज साफ करने की आवश्यकता है कि नअी तालीम के कई स्तर या प्रकार रहेगे। देश में सर्वत्र अेक ही स्तर की तालीम चलेगी, यह सभव नही है। अेक तो नअी तालीम का जो पूरा आदर्श हमारे सामने होगा अुसे पूरा का पूरा राष्ट्र अेक्दम स्वीकार करना सभव नही है। कदम-ब-कदम अुस सबध में जितनी सफाअी होती जायगी अुतना ही सर्वमान्य होता जायगा। दूसरा, जहां हम चाहते है कि राष्ट्र के हर बच्चे के लिअे शीघ्र-से-शीघ्र तालीम की व्यवस्था हो, वहा राष्ट्र के द्वारा स्वीकृत स्तर के अनुसार कोरापुट, कोल्हापुर जैसे पिछडे हुअे क्षेत्रो की शालायें अेकदम साधन सपन्न हो यह सभव नही है। अिसके लिअे समय लगेगा। अिसलिअे बिलकुल व्यापक पैमाने पर नअी तालीम का अेक तात्कालिक तथा न्यूनतम कार्यक्रम की आवश्यकता होगी।

दूसरी ओर समाज की आवश्यकता की दृष्टि से कुछ लोगो को अच्छी-से-अच्छी तालीम भी मिलनी चाहिये। वैज्ञानिक, टेक्निशियन, व्यवस्थापक आदि कअी प्रकार के लोगो की आवश्यकता है और आज की तालीम के बनिस्बत नअी तालीम में से बेहतरीन परमाणु-शास्त्रज्ञ से लेकर मत्रालय के कर्मचारी तक मिलेगे, यह समझना चाहिये। राष्ट्र-व्यापी नअी तालीम में से अिस प्रकार के लोग भी निकलने चाहिये। तीसरी ओर, आज जिनकी आवश्यकता समाज महसूस नही करता, वैसे शाति सैनिक, समाज सेवक, शिक्षक, विकेन्द्रित अुद्योग के तज्ञ आदि कअी प्रकार के सेवको की जरूरत हम महसूस करते है। अुनकी तालीम की व्यवस्था नअी तालीम के जरिये होनी चाहिये और यह तालीम सर्वोत्कृष्ट होनी चाहिये।

हम जो तालीम की सस्थायें चलायेंगे अुनमें सर्वोत्कृष्ट तालीम की कोशिश रखनी चाहिये। सर्वोदय प्रेमी तथा मित्रों के बच्चे अिनमें आयेंगे। ग्यारह या बारह साल की बुनियादी तथा अुत्तर बुनियादी तालीम के बाद विशिष्टता होगी। राष्ट्र भर में जितने प्रकार के तज्ञ आवश्यक है अुतने प्रकार के शिक्षाक्रम रखने की ताकत हमारी नही होगी, अिसलिअे सर्वोदय

की दृष्टि से आज जिनको हम जरूरी समझते हें वैसे तज्ञ, शान्तिसैनिक, विकेन्द्रित अुद्योग के तज्ञ, शिक्षक, आदिवासी सेवक, आदि बनाने के लिअे हम विशिष्ट पाठयक्रम रखेंगे। मगर जो लडके दूसरे सामान्य मार्ग में जाना चाहेगे वे यहा से वैसे चले जा सकेंगे।

सर्वोत्कृष्ट तालीम में सर्वप्रथम स्थान है अेक सृजनशील आत्मानुशासन के विकास का। जहा हम समाज में दडशक्ति का अुपयोग मिटाना चाहते हें और भय तथा लालच के प्रलोभन का अुपयोग नही करना चाहते है, वहा स्वयस्फूर्त सृजनशीलता का विकास सबसे अधिक महत्व रखता है। अिसके साथ-साथ स्वतत्र व्यक्तित्व का विकास भी चाहिये। नअी तालीम में अिस दिशा में काफी प्रगति नही हुअी है। हमारे लडकों की स्वतत्र चितनशक्ति के विकास की ओर कम ध्यान गया है। अुनमें दुविधा पैदा हुअी है। आज सारे हिन्दुस्तान में जो पुरानी पद्धति-रुकावट और अवरोध की–चली आयी है अुसी को हमने सर्वोदय में जाने-अनजाने चारित्र्य निर्माण के तरीके के रूप में अपनाया है। अिसलिअे हमारे कार्यकर्त्ताओ का असर लोगो पर बधन जैसा होता है, बधन से मुक्ति का अनुभव अुनमें से मिलता नही है। अिस दिशा में काफी सोचने का और प्रयोग करने का है। यह सारा नअी तालीम का पहला काम है।

तीसरा काम विकेन्द्रित अुद्योगो के सामर्थ्य-विकास का है। विकेन्द्रित धधे से ५-६ घटो के श्रम की मजदूरी पाच-छ रुपये मिले, यहा तक हमें जाना है। अिसके लिअे हमें भाप, बिजली, आदि कुदरती ताकतो की मदद भी लेनी होगी। अिस तरह से आज परमाणु शोध भी नअी तालीम के दायरे में आ जाता है। अण्णासाहब का दावा है कि हम पाच अेकड में से ढाअी तीन हजार की खालिस आमदनी कर सकते हें। वैसे ग्रामोद्योगो में भी प्रयोग और शोध होने चाहिये। यह तीसरा महत्व का काम नअी तालीम के सामने है।

अिस तरह हमें तीन मुद्दो को लेकर संस्थाओ में काम करना होगा। समाज तथा राष्ट्र के द्वारा नअी तालीम के स्वीकार के लिअे हमें किस प्रकार से कोशिश करनी होगी अुस सबध में मे यहा निवेदन करना नही चाहता। अुसका विवेचन भी हुआ है और कुछ सुझाव हमारे सामने हें।

"संस्था का रूप क्या हो?"

अिस शीर्षक से बनवारीलाल चौधरी लिखते हें :–

धर्म, सेवा या साधना के आश्रम अनतकाल से भारतीय सस्कृति के अभिन्न अग रहे हें। स्थापक के विचार, सिद्धात और जीवन के मूल्यों के अनुसार अिनका रूप और कार्यक्रम रहा है। आश्रम विशेष के जन्मदातानुसार अलग–अलग आश्रमो के रूप भिन्न रहे हें। अुदाहरणार्थ गुरु-कुल आश्रम, ऋषिकुल आश्रम, रामकृष्ण आश्रम, अरविंद आश्रम, अद्वैत आश्रम, समन्वय आश्रम–ये अेक दूसरे से बिलकुल भिन्न हें।

क्रमश अिन आश्रमो में अनुयायियो की सख्या बढती है। आश्रम कुछ अेक कार्यक्रम अपनाता है और फलस्वरूप व्यवस्था का प्रश्न खडा होकर अेक सस्था में परिणत हो जाता है। कअी अेक अैसे भी अुदाहरण हें कि किसी महान पुरुष के विचारो को व्यावहारिक रूप देने के लिअे सीधे–सीधे सस्था की ही स्थापना हुअी। हमारी सस्थायें-अखिल भारत ग्रामोद्योग सघ, चर्खा सघ, गो-सेवा सघ, हिन्दुस्तानी

तालीमी संघ अित्यादि अिसी श्रेणी की हैं। आरम्भिक काल में अिन्हें बापू का मार्गदर्शन प्राप्त था। बापू के स्वर्गवास के बाद ये संस्थायें प्राणहीन, लकीर की फकीर बन गयी। अिसके बाद चर्खा संघ ने जो रूप धारण किया कुछ-कुछ अिन संस्थाओं का भी वही रूप हो चला था।

भूदान-क्रान्ति अर्थात् सर्वोदय के बढते चरण ने अिस जड़ता को नष्ट किया और प्रत्येक युवक अेवम् संस्था के संचालकों के मन में संस्थाओं में मूलभूत परिवर्तन करने की प्रेरणा जाग्रत की। "संस्था चले भी या नहीं?" यह प्रश्न भी बार-बार अुठा।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण, सर्व व्यापी क्रान्ति के संचालन अित्यादि के लिअे संस्थायें अनिवार्य हैं। जिस तरह मरुस्थल के अुद्यान पथिक को आश्रय देते हैं अुसी तरह आन्दोलनकारियों को पाथेय, आश्रय अेवम् स्फूर्ति प्रदान करने का भार संस्थायें अुठा सकती हैं और अुन्हें अुठाना भी चाहिये। व्यावहारिक कठिनाअियां और मानवीय कमजोरियां अिन्हें यह नहीं करने देती। दुर्भाग्य से जिन मूल्यों को मिटाने के लिअे सर्वोदयी संस्थाओं की स्थापना हुअी वे ही मूल्य अुन संस्थाओं के सहारे या दीवाल बन गये। शोषण हीन, स्वावलम्बी समाज की स्थापना करने के चक्कर में संस्था ही स्थानीय शोषण के बल पर पनपी। परावलम्बी तो वे हैं ही। कांचन का खेल भी हुआ। असत्य ने प्रवेश पाया और सिद्धान्त पर संस्थायें अडिग जम न सकी। अिससे युवकों को आकर्षित कर रख न सकीं। क्रांति में सहायक न बन सकी और अुनका विकास हाथीपाव की बीमारी के समान रूपित रूप में हुआ। अिससे संस्था व्यक्ति से-मानव से बड़ी बन गयी। संस्था केवल अेक स्तर तक ही व्यक्ति के विकास में सहायक है। बाद में वह बाधक भी सिद्ध हो सकती है। परन्तु व्यक्ति का आरम्भिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और विकास को दिशा देने के लिअे संस्था का होना अनिवार्य है। अिसके लिअे यह जरूरी है कि संस्था का रूप अैसा हो कि वह देश भरमें स्थान स्थान पर स्थापित की जा सके। अेक छोटे आश्रम या सर्वोदय केन्द्र के रूप में यह संभव है।

विनोबाजी के मतानुसार "अैसे आश्रम जगह-जगह होने चाहिये, जहां सेवक, साधक, शोधक तीनों प्रकार के भक्तजन काम कर रहे हों। सेवक आस-पास के जनों की सेवा करते हों। साधक आत्मचिन्तन और ध्यान के अलावा अपनी रुचि के किसी विषय-जैसे खेती, वस्त्रविद्या, यंत्रशास्त्र अित्यादि के द्वारा आस-पास की जनता के जीवन के दैनिक प्रश्नों का समाधान करने की साधना करते हों, शोधक अिन शास्त्रों में निरंतर शोध और अुन्नति करने में लगे हों। तीनों प्रकार के "भक्तजनों" को सतत अध्ययन वृत्ति की जरूरत है। अैसे आश्रमों में दुखीजन दुःख निवृत्ति के लिअे आयेंगे, रोगी रोग निवारण के लिअे आयेंगे और अज्ञानी अज्ञान निवारण के लिअे आयेंगे। आश्रम अैसे हों जो ग्राम से पास भी हों और दूर भी हों।

"तद्दूरे तदु अंतिके"—सेवा के लिअे पास रहना और ध्यान चिन्तन के लिअे कुछ दूर रहना आवश्यक है। स्वराज्य के बाद अैसे आश्रमों की आवश्यकता है, जहां गहराअी से चिन्तन होता हो। स्वराज्य को सर्वांग सुन्दर और परिपूर्ण बनाने के लिअे जनता में जो विविध दोष हैं वे कैसे मिटें यह सोचने का काम अैसे स्थानों पर हो सकता है।

नअी तालीम के मुताबिक ग्रामदानों और ग्राम संकल्प के गांवों की पुनर्रचना।

[नअी तालीम के सामने हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का सन् १९५७ का प्रस्ताव चुनौती के रूप में अपस्थित है। प्रस्ताव में नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओं को यह आवाहन दिया गया है कि अिसके आगे ग्रामदानरूपी अहिंसात्मक सामाजिक क्रांति के काम को प्रत्यक्ष रूप से अमल में लाने के दिन आ गये हैं क्योंकि अहिंसात्मक क्रांति राज्यसत्ता के द्वारा नहीं, बल्कि शिक्षा के द्वारा ही हो सकती है।

देश में ग्रामदानी गावों के छः मुख्य सघन-क्षेत्र हैं:—

१. दक्षिण भारत–तिरुमंगलम्, २. महाराष्ट्र–अकराणी महल, ३. अुडीसा–कोरापुट, ४. असाम–अुत्तरलक्ष्मीपुर, ५. आंध्र–कडप्पा जिला, ६. मध्यप्रदेश–सरगुजा।

अिन सब क्षेत्रों की भूमिका अलग-अलग ढंग की है। आर्थिक-सामाजिक रचना में भी काफी अन्तर है और सब निर्माण काम अेक ढांचे में बिठाना संभव नहीं है। कुछ क्षेत्रों का–जैसे कि कोरापुट का अनुभव कार्यकर्त्ताओं के सामने अबतक आ चुका है। कुछ क्षेत्रों का सर्वे किया जा रहा है और योजनायें तैयार की जा रही हैं। पृष्ठभूमि भिन्न-भिन्न होने के कारण अुनकी समस्यायें भी भिन्न-भिन्न होना स्वाभाविक है और अुन परिस्थितियों के अनुकूल कार्यक्रम बनाना होगा, पद्धतियों का विकास करना पडेगा। अिन सब क्षेत्रों के मुख्य कार्यकर्त्ताओं से हमने विनति की कि अपने-अपने क्षेत्र की समस्यायें परिसंवाद के सामने रखकर सबको जानकारी दें।

भाअी अरुणाचलम् और दादा भाअी नाअिक ने तिरुमंगलम् और सरगुजा जिले के काम के अनुभव के आधार पर कुछ टिप्पणियां दी हैं, जो नीचे दी जा रही हैं। –संपादक]

आज अधिकांश गांवों में परस्पर सहयोग और अैक्य की भावना का अभाव है। गांवों में सामाजिक जीवन असगठित है। वहा व्यक्तिगत और दलगत सघर्ष और तनाव हैं। कुछ सदियों के पहले जो जीवनशक्ति अुनमें थी वह आज पायी नहीं जाती है। अेक फुर्तीले समुदाय *के रूप में अिन गांवों की तरक्की होने के* विरोध में कुछ आन्तरिक और बाह्य ताकतें काम कर रही हैं। अिन गावों में करने लायक अत्यावश्यक काम यह है कि अिनका गठन स्वयंपर्याप्त और आत्मनिर्भर समुदायों के रूप में किया जाय। अिस दिशा में काम करने के लिअे ग्रामदान और ग्रामसकल्प अेक सुअवसर प्रदान करते हैं।

ग्रामदानी गांवों में हमारे काम का अुद्देश्य यह होना चाहिये कि अुन्हें संपूर्ण प्रजातंत्र, अपनी जरूरी मांगों और आवश्यकताओं के लिअे अपने पडोसियों पर निरवलंबी, साथ ही जिन आवश्यकताओं में अवलंबन की जरूरत है अुनमें परस्परावलंबी–होते हुअे अपना विकास *करने में मदद करें। नअी तालीम का यह* फर्ज है कि अिस ध्येय की प्राप्ति के लिअे जरूरी ढांचा, सामर्थ्य और ज्ञान गांवों को दें। ग्रामदानी ग्राम के नअी तालीम कार्यकर्त्ता को व्यक्ति और समुदाय के बीच में काम करने का हुनर हासिल कर लेना चाहिये। अुसे गांववालों के साथ अनौपचारिक आचरण करना चाहिये। रात्रिशाला जैसी औपचा-

रिक संस्थाओं पर वह निर्भर नहीं रहेगा। सारे गाव के साथ जिस तरह का आचरण होना चाहिये मानो वह अेक स्कूल है। शिक्षण का माध्यम गांव का कोअी प्रधान अुद्योग-जैसे कि कृषि—होना चाहिये। प्रारभ में गांव अपने साधनों की जाच और पैमाअिश करेगा। यह भी शिक्षण माध्यम से ही कराया जा सकेगा। अुससे सबधित जितनी भी सामग्रियां अिकट्ठी की जायें वे तस्वीर,चार्ट आदि रूप में प्रस्तुत किये जायें जिससे कि गांववाले अुन्हें अेकदम देख और समझ सकें। अिसका नतीजा यह होगा कि वे अपनी सरलता, कमजोरियों और कमियों से स्वय वाकिफ हो जायेंगे। जो भूपट, चार्ट, जमीन की योजनायें आदि ग्राम आयोजन से सबध रखते हैं अुन्हें ग्राम के आम भवन में प्रदर्शन के तौर पर रखा जाय ताकि गाववाले अुन साधनों की सांकेतिक भावनाओं से परिचित हो जाय। योजना और अुसका कार्यान्वयन गाववालों का चिन्ता करने और अुसके अनुसार काम करने के काफी मौके प्रदान करेंगे।

जो लोग शैक्षणिक दक्षता चाहते हैं अुन्हें विशेष समय में वह दिया जा सकता है। योजना तथा योजना को कारगर करने के सबध में समय-समय पर पुनर्विचार करने के लिअे होनेवाली चर्चाओं में भाग लेने के लिये सभी ग्रामवासी अपने बच्चों सहित अेकत्रित होंगे। अैसी सभाओं में आवश्यक और सभव सभी जानकारियों का प्रचार ग्रामवासियों में होना चाहिये। मडलियों में चर्चा विचार के द्वारा सार्वजनिक मत निर्मित करके ग्रामविकास की योजनाओं के प्रति लोगों की ठीक मनोवृत्ति का विकास किया जा सकेगा।

गावों में काम करनेवाले नअी तालीम के कार्यकर्ताको गाववालों के साथ आचरण करने की कला में प्रशिक्षित होना चाहिये। गांव की पैमाअिश के लिअे तथा गाव के विकास की योजना तैयार करने के लिअे गांववालों का मार्गदर्शन करने में जिस चातुर्य और योग्यता की जरूरत है वह कार्यकर्ता में हो। अुसको खेती के सारे कार्यविधान मालूम होने चाहिये और सभव हो तो वह खेती के किसी न किसी धंधे का ज्ञान भी हासिल कर ले।

ग्रामस्वराज्य में खेती का प्राधान्य होगा, साथ ही साथ खादी तथा अन्य ग्रामीण अुद्योगों का काम भी गाव में जनसमुदाय के तथा व्यक्ति के अुत्थान का वाहन बनाया जा सकता है।

अिसके अलावा लोगों के साधारण शिक्षण की भी योजना होगी। समान अभिरुचिवाली मडलियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के द्वारा यह योजना बन सकती है। जैसे कि—गृहविज्ञान के बारे में महिला मडली हो, शारीरिक और मनोरंजन की प्रवृत्तियों के लिअे युवक मडली हो। भजन मडली और बच्चों की मडलियां हों।

तमाम समुदाय सामूहिक चिंतन और सामूहिक क्रिया के लिअे प्रोत्साहित किया जा सकता है। विशेषज्ञों से सीखने के अलावा गाववाले अेक दूसरे से सीखें, यह भी जरूरी है। रात्रि पाठशाला या सगठित अन्य सस्थाओं द्वारा गाव जो औपचारिक शिक्षण पाते हैं अुसकी अपेक्षा अुस शिक्षण में सांस्कृतिक मूल्य अधिक है जो वे अनौपचारिक तौर से पाते हैं।

अिस काम को हाथ में लेने के लिअे अुचित रीति से प्रशिक्षण पाये हुअे कर्मियों की सख्त जरूरत है। यह महसूस किया जाता है कि बाहर से अिस काम के लिअे कार्यकर्ताओं

को न लाकर स्थानीय चतुर कार्यकर्त्ताओ का ही अुपयोग करना होगा ।

× × × ×

ग्रामदान और ग्राम-स्वराज्य की भूमिका में नअी तालीम का नया विकास कैसे हो यह सवाल हमारे सामने है । हम जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं वह आरण्यक और वन्य क्षेत्र है । यहाँ अनुभव होता है कि ये वनवासी जातिया, अितनी दीन, दवी, शोषित, पीडित, व्यसनग्रस्त तथा दरिद्र हैं कि अुनमें अपनी अुनति या अुत्कर्ष का और अुसके लिअे जीवन-परिवर्तन का खयाल तक मिट चला है । अभिक्रम की बात तो दूर ही है । अत प्रयत्न करने पर भी वे या अुनके बच्चे रात्रिशाला या पाठशाला में आने को तैयार नही होते । जो आते हैं वे मुश्किल से टिकते हैं । अिसका कारण अुनकी निपट दरिद्रता ही है । छोटे बच्चो से भी काम करा लेने के लिअे वे मजबूर हैं और दिनभर के परिश्रम के पश्चात् अुनमें पोषक अन्न के अभाव में कोअी स्फूर्ति, अुत्साह या शक्ति नही रह जाती कि वे रात्रि को पुन आकर कुछ कर । यह भी अेक कारण हो सकता है कि हमारी अपनी सभ्यता, हमारे खयालात, सब अुनसे भिन्न हैं । अिसीलिअे अुन्हे हमारे तरीको में रस नही आता, बल्कि वह अेक बोझ-सा लगता है ।

अिसलिअे हमें नअी तालीम सफल करनी है तो—

१ अुनके बच्चो के पोषण की जिम्मेवारी अुठानी होगी । मनुष्यो के लिअे भी कुछ पौष्टिक खुराक–दूध नही तो छाछ व फल दाखिल करने होगे । अुनकी सस्कृति व सस्कार की अच्छी बाते हम सीखें, अुनमें ताल, स्वर, नये भाव भरें तथा अुनसे मिलती-जुलती हमारी अच्छी बाते हम अल्पप्रमाण में जोडते जावे । अुदाहरणार्थ–हमारी सामूहिक प्रार्थना शान्त मौन की तरफ झुकती है । अुनकी नारदीय तरीके का नाच, आवाज जोश लिये होते हैं ।

४ हमारी पाठशाला अब सारी ग्रामीण प्रवृत्तियो का केन्द्र, समस्याओ के हल का प्रयोगालय होनी चाहिये जिसमें आबालवृद्ध आत्मीयता महसूस करे, रस ले । शिक्षकगण 'सेवक सचिव सखा' होने चाहिये नेता नही, साथी हों ।

५ शिक्षा का माध्यम अैसा हो कि जो अुनके जीवन में ओतप्रोत है । अर्थात् हमें जगल के रोजगार, खेती-पशुपालन, गृहवाटिका तथा वृक्षसवर्धन, बाध (Soil Conservation) भूरक्षण तथा निशानवाजी, फुर्तीला आरोहण-अवतरण, तैरना, दौड, नृत्य-कला आदि द्वारा ही शिक्षण देना होगा । यह ध्यान में रखना होगा कि नित्य के काम और शिक्षण में समरसता हो । आगे चलकर हम अुनमें ओटाई-धुनाई, चरखा, कोल्हू, चक्की मगन चूल्हा, बुनाअी, रगाअी, छपाअी, भी दाखिल कर सकते हैं ।

पाठशाला केवल प्रयोगालय (Experimental Institution) न रहे—बल्कि आदर्श प्रदर्शन कार्यालय भी बने ।

६ शाला खर्च के बारे में स्वावलबी बने या न बने, पर वहा आनेवाले के अपने समय और परिश्रम का अपने स्वावलबन के लिअे अुपयोग हो यही मुख्यत देखना होगा ।

७ ग्रामवासियो से चर्चा कर प्रश्न और सुझाव लेकर अुन्हे आगे रखकर–हम सूत्र-धार हैं अिसका अुन्हे या हमें भान न रहे जिस तरह काम चलाने से अुनमें अभिक्रम और आत्म-विश्वास का निर्माण होगा । वही बुनियादी शिक्षा मानी जा सकती है ।

ग्रामस्वराज्य नई तालीम की दिशा में

दिनाक १२-११-५९ से १४-११-५९ तक पूसा-सकरा हासा समन्वय क्षेत्र के प्राअिमरी, मिड्ल, सीनियर बेसिक स्कूल, पोस्ट बेसिक स्कूल, हाअी स्कूल के प्रधानाध्यापको, ग्रामोदय सहयोग समिति और अवर सघन क्षेत्र के अुपकेंद्रों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं तथा क्षेत्रीय सयोजको की सगोष्ठी बिहार खादी ग्रामोद्योग सघ, लक्ष्मीनारायणपुरी मे हुअी। ग्राम स्वराज्य के सदर्भ मे समग्र ग्राम विकास तथा समग्र ग्राम शिक्षा के समन्वित आयोजन पर विचार करना गोष्ठी का अुद्देश्य था। विषयो का अध्ययन पाच मडलियो म हुआ। बाद म गोष्ठी ने सम्मिलित रूप से अुनपर चर्चा की। यहा अध्ययनो के निष्कर्ष दिये जा रहे है।

१ विषय :– समग्र ग्राम शिक्षा, जनानुमोदित और जनाधारित का स्वरूप।

क ग्राम के सभी लोगो मे (बच्चे-जवान बूढे, स्त्री-पुरुष म) अैसी भावना और सकल्प की अुत्पत्ति कि जबतक जीना है तबतक बढना है, नित्य कुछ सीखना है और नित्य कुछ दोषो को छोडना है और जो कुछ भी काम छोटे-से छोटा या बडा, हाथ मे ले, अुसे अच्छी तरह करना और हर अेक काम से कुछ सीखना है।

ख गाव के सभी निवासी शिक्षार्थी होंगे और सभी शिक्षक भी होग। गाव के प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ अनुभव है, कुछ ज्ञान है, कुछ हुनर है। जो जिसके पास है, वह व्रत लेगा कि दूसरो को भी सिखाय। और जिस चीज के सीखने की अुसे जरूरत होगी, अुसे वह गाव के जानकारो से सीखने को तैयार होगा, चाहे वे अुम्र में या किसी खास विषय की जानकारी में, अुससे छोटे ही क्यों न प्रतीत होते हों।

ग समग्र ग्राम शिक्षा गावा म जो भी प्रवृत्तिया चलती होंगी (खेती, बागवानी, खादी ग्रामोद्योग पचायत राज्य सहयोग समिति, मन्दिर, मस्जिद, पुस्तकालय आदि) अुनसे सहज रूप से प्राप्त की जायगी। दूसरे शब्दों में सभी प्रवृत्तियो के चलानेवाले चैतन्य रूप से सोचेंगे कि अुन्हें क्यों चला रहे हैं और किस प्रकारों से चलाना चाहिये। जिन तरहो से चला रहे हैं अुनसे कुछ अधिक अुन्नत ढग हो सकते हैं या नही? जिस अुद्देश्य से शुरू किया वह सधा या नहीं? जिस तरह सभी प्रवृत्तिया शिक्षा की प्रवृत्तिया बन जायेंगी और अुनपर शिक्षा का रग चढ जायेगा।

घ समग्र ग्राम शिक्षा स्वावलबन के आधार पर होगी। स्वावलबन का ही दूसरा स्वरूप है परस्परावलम्बन। हमने कुछ दिया या सिखाया और दूसरो से भी कुछ लिया और सीखा, यह परस्परावलम्बन है और स्वावलबन भी है। केवल दूसरो के भरोसे ही रहे, चाहे वह सरकार हो या कोअी सस्था हो, तो वह परावलम्बन होगा। हां, सरकार और सस्था की प्रवृत्तियो में योग देकर कुछ ग्रहण किया और सीखा वह भी स्वावलम्बी शिक्षा है।

ङ जिस तरह की समग्र ग्राम शिक्षा के लिअे सारे गाव के घर, खत खलिहान, और परिश्रमालय शिक्षा के साधन बन जायेंगे। किन्तु अिन सबो का सयोजन समुचित रूप से हो और सभी प्रवृत्तिया विकास की दृष्टि से चले जिसके लिअे अेक ग्राम महाविद्यालय का सगठन प्रत्येक गाव में होगा।

च ग्राम-महाविद्यालय गाँव के किसी भी स्थान में, जहा कुछ लोग आसानी से अेकत्र हो सकते हो, सायकाल मे अेकाध घट के लिअे बैठा करेंगे। वहा मौन प्रार्थना या बोलकर छोटी प्रार्थना होगी और गाँव की और देश तथा विदेश की समस्याओं पर चर्चायें होंगी। कुछ लोग जो पुरुषार्थ कर चर्चा का आरम्भ करेग, वे अुस दिन के लिअे शिक्षक बनेंगे और अन्य जो श्रवण करेगे या चर्चा में भाग लेंगे शिक्षार्थी बनेंगे। दूसरे दिन दूसरे पुरुषार्थ कर सकते हैं और शिक्षक हो सकते हैं। जिस प्रकार नित्य के श्रवण-ज्ञान प्रदान की प्रवृत्ति चलती रहेगी।

छ महाविद्यालय गाव के भिन्न भिन्न भागो में (ब्रह्म स्थान, मन्दिर, मस्जिद, विद्यालय, पचायत घर, वाचनालय, किसी का घर या दालान) घूम-घूम कर

में ही बडा हो तो गाव की दूसरी ग्रामोदय या सर्वोदय सहयोग समिति जिसकी प्रेरणा से बनेगी ।

अूपर की सारी बाते निर्भर करेगी शिक्षक तथा कार्यकर्त्ता की आत्म प्रेरणा और अुसके स्थायित्व पर, और ग्राम में अुनके समुचित प्रवेश के अूपर ।

३. विषय – समग्र ग्राम विकास तथा समग्र ग्राम शिक्षा की अनुबधित योजना ।

क शिक्षक और दूसरे कार्यकर्त्ता यह समझने का प्रयत्न करेंगे कि अेक दूसरे की चलती हुअी प्रवृतिया की मर्यादा और क्षेत्र क्या है ।

ख अुन्हे समझते हुअे दोनो तरह के कार्यकर्त्ता सम्मिलित प्रयास से गाव का सर्वांगीण अध्ययन करेंगे । यही अध्ययन तथा सर्वेक्षण परस्पर के विचार-मथन से अनुबधित ग्राम विकास योजना की आधार-शिला होगी ।

ग शैक्षणिक सस्थाओ के कार्यकर्ता अिस बात का प्रयास करेंगे कि गाव में सर्वांगीण शिक्षा सबधी सभी आयोजनो का प्रबध हो जैसे –शिशु विहार, बालवाडी, ग्राम–महाविद्यालय अित्यादि । ठीक अिसी प्रकार खादी ग्रामोद्योग में लगे हुअे कार्यकर्त्ता ग्राम के सतुलित विकास के लिअे गृह अुद्योगो और ग्रामोद्योगो के आधार पर अनुबधित ग्रामोदय समिति, कताओ मडल बुनाओ, रगाओ और छपाओ, तेलघानी, काठ और लोहे के काम, चर्मोद्योग और खिलौने बनाने के काम साबुन–साजी, चमडे के काम, लघुसरजाम, सहयोगी भडार आदि सस्थाओ का आयोजन करेंगे । अिन आयोजनो में दोनो प्रकार के कार्यकर्त्ताओ का सहयोग होगा ।

घ अिन प्रयासो का यह फल होगा कि आगे चलकर ग्राम स्वराज्य समिति अिन सारे आयोजनों के समन्वय के विचार के लिअे सस्थापित हो जायेगी । अिसमें सम्मिलित रूप स विभिन्न सस्थाओ के कार्यकर्त्ता और ग्रामीण मिलजुल कर अेक साथ ग्राम जीवन के सभी पहलुओ को ध्यान में रखते हुअे अपनी योजना स्थिर करेंगे । ग्राम स्वराज्य समिति में होंगे गाँव की कार्यकारिणी सस्थाओ के सर्व समति से चुने हुअे प्रतिनिधि । अर्थात् अिसमें होंगे शैक्षणिक सस्थाओ (स्कूल, पुस्तकालय, वाचनालय, सगीत, नृत्य, मडल, कीर्तन मडली आदि) और खादी सबधी सस्थाओं (ग्रामोदय समिति, ग्राम अित्यादि) के कर्मियों तथा-कार्यकारिणी ... प्रतिनिधि ।

ग्राम स्वराज्य समिति क्रम-क्रम मे विकसित जायेगी ग्राम सभा म । ग्राम सभा होने पर अेक योजना समिति होगी जो ३० सदस्यों तक हो सकती है । यह ६ पचायतो मे बटकर निम्न लिखित ग्राम की आवश्यकताओं के सबध म ... देगी और सस्थाओ के द्वारा तत्परता कराने का करेगी । ग्राम-स्वावलम्बन, ग्राम-स्वास्थ्य, ... ग्राम-सहकार, ग्राम-सस्कृति, ग्राम-सरक्षण ।

अिस व्यवस्था की सभावना गाव के ... विकास पर निर्भर करेगी । आरभिक अवस्था मे स्वराज्य समिति ही योजना समिति रहेगी और पा पाँच की ६ अुप समितिया न बनाकर दो या ती सदस्यो की ही अुपसमितिया बना सकती है ।

४ विषय –ग्राम प्रवेश विधि और योजना कार्यान्वियन का आरम्भिक कदम ।

क ग्राम प्रवश की पहली शर्त है कि कार्यकर्त्ता ग्रामीणो के स्तर पर अपनी वेशभूषा, रहन-सहन और अनके सुख-दुख मे शामिल रहने की सहज और शुद्ध प्रवृत्ति रखें ।

ख गाव मे प्रवेश करने के जो क्षेत्र हैं और योजना म निहित जो अुद्देश्य है तदनुसार कार्यकर्त्ताओ म आचरण होना चाहिये जिसस गाववालो का विश्वास अुनमे हो ।

ग गाव की अत्यन्त आवश्यक समाधान के लिअे कार्यकर्त्ताओंको समर्थ साधन बनना चाहिये जिससे गाव वाले अुनको अपना हितैषी समझें ।

ङ गाव म प्रवेश करने की अेक बडी शर्त है कि कार्यकर्त्ता जातिगत दलगत, सम्प्रदायगत और सकीर्ण ...गत भावनाओ से बिल्कुल विलग रह ।

च ग्रामीणो के साथ जब भी सामूहिक मिलन का अवसर हो तब अुनके अुठने बैठने, मिलने-जुलने, आतिथ्य-स्वागत म किसी तरह का भेद-भाव न हो ।

छ. अलग-अलग लोगो की अलग-अलग आवश्यकतायें होती हैं। जिसलिये अुपलब्ध संस्थाओं के द्वारा अुनकी आवश्यकताओं की पूर्ति का संनियोजन करना चाहिये यथा-प्रखंड विकास का कार्यालय, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, लोक निर्माण विभाग, सहकारिता विभाग, सिंचाओी विभाग, विद्युत विभाग, पशुपालन विभाग जित्यादि अेक ओर, सर्व सेवा संघ तथा अुससे संबंधित रचनात्मक संस्थाओं के साथ दूसरी ओर।

ज. जैसे अवसर बार-बार आयें जिसके लिये संस्थाओं में ग्रामविकास संबंधी आयोजन और ग्राम संस्थाओं के विकास से ग्राम-आयोजना के द्वारा निकटतम सम्बन्ध अुन विभागों से और संस्थाओं से स्थापित किया जाय।

अूपर के आयोजनों में कार्यकर्त्ताओं को निम्नलिखित अनुष्ठानों से और संकल्पों से बल मिलेगा —

अ. महीने में चार शाम अुपवास और बचे हुअे अन्न का अभावग्रस्त लोगों के कल्याण के लिये अुपयोग।

आ. परिवारों में संस्कार अुत्पन्न करने के लिये सर्वोदय पात्र की स्थापना।

इ. वस्त्र स्वावलंबन की प्रेरणा के लिये घर घर चर्खे का प्रवेश, महीने में सर्वोदय पर्व के अवसर पर सूतांजलि अर्पण।

ई. श्रम द्वारा प्रथम अुत्पादित चीजों का ग्रामसमाज के लिये समर्पण।

अु. आकस्मिक घटनाओं, बीमारियों के अवसर पर विशेष दान का आयोजन।

अू. कार्यकर्त्ताओं के लिये ग्राम प्रवेश का अेक समर्थ साधन है सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन। अिससे ग्रामीण कलाकारों को प्रदर्शन का मौका मिलता है और श्रोताओं को हृदय स्पर्शी कार्यक्रम को सुनने और देखने का अवसर प्राप्त होता है।

ये. कार्यकर्त्ता सरल प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद (जड़ी-बूटी लगाने) का प्रबंध करें। शिक्षित तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को प्रत्येक परिवार से संपर्क स्थापित करना होगा।

५ विषयः— ग्राम योजना कार्यक्रम के न्यूनतम आवश्यक अुपकरण।

क. ग्राम स्वराज्य समिति यानी ग्राम शिक्षा और ग्राम की संस्थाओं की समन्वय समिति ग्राम विकास की अपनी योजना तैयार करेगी। योजना तैयार करने में केवल गांव में अुपलब्ध अुपकरणों को ध्यान में रखेगी। जिसका फल यह होगा कि वृहद और अनावश्यक अुपकरणों की सूची दरबार दाम करने में कोअी अड़चन पैदा न होगी।

ख. चूंकि योजना अुनकी अपनी बनायी हुअी होगी अतः गांव में सब अुपकरण अुपलब्ध होंगे और अुनका समन्वित अुपयोग भी होगा।

ग. अन्य ग्रामीण संगठन के द्वारा बड़े-बड़े अुपकरण जैसे रोलर, धीरा पेरने की मशीन, पम्पिंग सेट, टायर गाड़ी, बड़े-बड़े धागा, शामियाना, पेट्रोमैक्स, बल्टीहल जित्यादि अेक गांव से दूसरे गांव में लाये जा सकते हैं।

घ. प्रत्येक नियोजीजन के लिये अुपकरणों की जानकारी होनी चाहिये। जिसका संकेत खादी ग्रामोद्योग संघ, लक्ष्मीनारायणपुरी, बैनी (दरभंगा) से प्रकाशित पुस्तिका नं. ८ में सूची सुझाव के लिअे है। अुससे अुपकरणों को अपने आवश्यकतानुसार बढ़ाया घटाया जा सकता है।

च. जिन अुपकरणों के अुपयोग से कौन-कौन समवायी ज्ञान सहज अुपलब्ध हो सकते हैं अुन्हें अुक्त पुस्तिका में सूचित किया गया है।

छ. गांव के शिक्षक मित्रों अथवा कर्मी शिक्षकों को अपने को जिन सुझावों से बंधा हुआ नहीं मानना चाहिये। अुन्हें सर्व-सेवा-संघ तथा शासकीय विभागों द्वारा प्रस्तुत किये गये विभिन्न पाठ्यक्रमों और अभ्यासक्रमों का अध्ययन करते जाना चाहिये और जब जैसा अवसर या सुयोग हो ग्राम महाविद्यालयों में ज्ञानार्जन के क्षेत्र को बढ़ाना चाहिये। गांव में आनेवाले अतिथि तथा गांव में प्राप्त पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकाओं से अैसे सुयोग मिल सकते हैं।

नई तालीम

"नई तालीम" जनवरी १९६० : अनुक्रमणिका

नई तालीम

वर्ष ८] जनवरी १९६० [अंक ७

ओशु जयन्ति

यद्यपि मैं मनुष्य और देवदूतों की वाणी बोलता हूं, पर अगर मुझमें प्रेम नहीं है, तो मैं आवाज करते हुअे पीतल के बरतन या बजते हुअे मजिरे की तरह ही होअूगा।

और अगरचे मुझमें भविष्य वाणी करने का गुण है और मैं सब रहस्यों को जानता हूं, सर्वज्ञान-सपन्न हू और हालाकि मुझमें अुतनी श्रद्धा है कि पहाडों को भी हटा सकू, पर अगर मुझमें प्रेम नहीं है, तो मैं कुछ भी नही हू।

और चाहे मैं अपनी सारी सपत्ति गरीबों को खिलाने में लगा दूं, पर अगर मुझमें प्रेम नहीं है, तो अुससे मुझे लाभ नहीं होगा।

प्रेम चिरकाल दुख अुठाता है और वह कृपालु होता है। प्रेम ओर्ष्या नहीं करता। प्रेम गर्व से फूल नही जाता। वह अनुचित वर्ताव नहीं करता, अपने लिअे कुछ नही चाहता, आसानी से अुत्तेजित नहीं हो जाता और बुराअी को नहीं देखता, वह अन्याय से नहीं, सत्य से आनदित होता है।

प्रेम सब कुछ झेलता है, सबको विश्वास करता है, सब चीजो में आशा देखता है और सब सहन करता है। प्रेम कभी असफल नहीं होता, किन्तु भविष्य-वाणी असफल होगी, वाणी बन्द हो जायगी, ज्ञान ओझल हो जायगा, क्योंकि हम पूर्ण को नहीं, अेक भाग को ही जानते हैं, और भाग की ही भविष्य-वाणी करते हैं। किन्तु जब अुसका दर्शन होगा जो पूर्ण है, तब अपूर्ण रहेगा ही नहीं।

जब मैं शिशु था, तब शिशु की तरह बोलता था, शिशु की तरह ही महसूस करता था, शिशु की तरह ही सोचता था किन्तु जब मैं सयाना हो गया तो मैंने लडकपन की बाते छोड दी।

क्योंकि अभी तो हम अेक आयने में प्रतिबिम्ब देखते हैं, जो अस्पष्ट है। सम्मुख होते हुअे भी अेक भाग ही है। किन्तु तब मैं पूर्ण को जानूगा, जैसा कि मुझे जना गया है।

और अब श्रद्धा, आशा और प्रेम अिन तीनो का पालन करो। किन्तु अिनमें सबसे श्रेष्ठ है प्रेम।

कोरन्थियन्स प्रथम (बाअिबल) का तेरहवां-अध्याय

आज सुबह कुछ भाओी हमसे मिलने आये थे। यहां स्कूलों में जो तालीम दी जाती है, अुसके बारे में हमने अुनसे जानकारी मांगी। अुसमें वही पाया, जो कश्मीर वैली में था। हमें मालूम ही था कि दोनों जगह बहुत फर्क नहीं हो सकता। दोनों अेक ही प्रदेश के हिस्से हैं। मालूम हुआ कि तालीम में अंग्रेजी अनिवार्य है और गणित तथा अितिहास अिन तीनों के लिअे हफ्ते में ३६ पीरियड होते हैं, बाकी १२ पीरियडों में विद्यार्थी कोओी भी दो विषय ले सकता है। अिनमें हिन्दी, अुर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, विज्ञान और चित्रकला-अितने विषय रहते हैं। नतीजा यह होता है कि कओी बच्चे विज्ञान और चित्रकला ले लेते हैं। अिस जमाने में विज्ञान विषय कौन नहीं लेगा?

अंग्रेजी का यह मोह

यह सारा सुनकर मुझे अच्छा नहीं लगा। शायद ही अैसा कोओी देश हो, जहां बाहर की भाषा अनिवार्य हो और अपने देश की भाषा अनिवार्य न हो। जर्मनी में जर्मन भाषा लाजमी है, अिंग्लेंड में अिंग्लिश, चीन में चीनी और जापान में जापानी। दुनिया के हर देश में अुस-अुस देश की भाषा लाजमी तौर पर बच्चों को सिखायी जाती है। बाकी विषय अनिवार्य नहीं होते। जहां अंग्रेजी सिर पर लादी जाती है, वहां अुसे बिलकुल नहीं सीखते, अैसा नहीं, थोड़ा सीखते भी हैं। पर आखिर अंग्रेजी सीख कर बच्चों को मिलता क्या है? लेकिन अगर वह थोड़ी-थोड़ी लादी जाय तो बच्चे अुसे फेंक देंगे। अिसलिअे अुसे अनिवार्य बना दिया गया है। अिससे बच्चे को अुर्दू, संस्कृत और हिन्दी का ज्ञान नहीं होता है। नतीजा यह होता है कि अुनकी विचार-शक्ति कुंठित हो जाती है। अेक भी भाषा ठीक से न आये तो व्यवहार नहीं कर सकेंगे।

तीन मांगें की जायें:

अिसके लिअे अुपाय यही है कि गांव गांव में सभा करके यह मांग करनी चाहिये—हमें राष्ट्रभाषा हिन्दी या अुर्दू सिखाअिये। मैं अिन दोनों में कोओी फर्क नहीं करता। यही जबान मैं कश्मीर-वैली में बोलता तो अुर्दू मानी जाती थी और यहां हिन्दी मानी जाती है। कहीं संस्कृत ज्यादा बोलूं तो वह हिन्दी और अरबी ज्यादा बोलूं तो वह अुर्दू बन जाती है। दोनों अेक ही हैं। बच्चों पर अंग्रेजी लादी जा रही है; वे कमजोर हो रहे हैं। अिसलिअे आप लोग यही मांग करें कि हिन्दी भाषा लाजमी हो। नहीं तो बच्चे बेकार बनेंगे और काफी बातें अुन्हें नहीं सिखायी जायगी। अुनकी जिन्दगी में चैन और सुख नहीं आयगा। अिसकी भी मांग होनी चाहिये कि खेती और बुनाओी भी तालीम के अंग हों। कम-से-कम खेती तो जरूर हो।

आज की अिस तालीम में आध्यात्मिकता नहीं है, वह होना जरूरी है। कारण, यह समाजवादी राज्य है। अिसका नतीजा यह हुआ है कि तालीम में न तुलसी-रामायण है, न कुरान-शरीफ न जपुजीसाहब है और न गीता। मेरी राय में ये किसी अेक मजहब की किताबें नहीं हैं, ये रूहानियत सिखानेवाली किताबें हैं। अगर हम अिन्हें न सीखेंगे तो देश का चारित्र्य नहीं बनेगा। वह गिर जायगा। चारित्र्य न रहा तो देश भी न टिकेगा। अिसलिअे आप लोगों को ये तीन मांगें करनी चाहिये।

१. अंग्रेजी लाजमी न हो, हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा लाजमी की जायें।

२ काम की बातें–खेती, बुनाओी आदि सिखायी जायें, और

३ आध्यात्मिक बातें भी सिखायी जायें।

स्वतंत्र शिक्षा की योजना हो।

दूसरी बात यह है कि लोकतंत्र में लोगों की आवाज नहीं अुठेगी तो सरकार भी ठीक काम न कर सकेगी। खुशी की बात है कि अब यहां हिन्दुस्तान का सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग (अिलेक्शन कमीशन) लागू हो गया है। जिससे जम्हूरियत में जो रुकावटें थीं, वे दूर होंगी। लोगों की आवाज अुठेगी तो अुसका परिणाम सरकार पर भी होगा।

यह तो सरकार की बात हुअी। लोगों की बात क्या होनी चाहिये? मेरी राय में शिक्षा लोगों के हाथ में होनी चाहिये। आज की हालत में आप अितना कर सकते हैं कि अेक्स्ट्रा करिक्युलर अेक्टिविटी जिसे कहते हैं, अुसमें स्पेशल क्लासेस हों। अुनमें हिन्दी वगैरह सिखायी जायें। अुनके लिअे फीस न हों। स्कूल के शिक्षकों को यह पढ़ाने का काम करना चाहिये। अिससे अुनपर कुछ बोझ तो पड़ेगा, लेकिन अुन्हें सहन करना चाहिये। हमारी भाषा हमें सिखानी है। हमारे विद्यार्थी सीखते हैं, यह समझना चाहिये। अैसे विषयों की परीक्षा भी हो। स्कूल के अलावा बाहर के लोग भी यह परीक्षा दे सकें अैसा अिन्तजाम भी हो। अिस तरह लोगों को तालीम मिलनी चाहिये।

नई तालीम के बारे में चर्चा चलती है कि अुद्योग के जरिये तालीम दी जाय या निसर्ग के जरिये या परिस्थिति के जरिये? पर मैं कहना चाहता हूं कि आत्मा में कुछ गुण होते हैं। अुन गुणों को प्रकाश में लाना, यही तालीम का काम है। गुण विकास से बढ़कर तालीम का कोअी अुद्देश्य नहीं है। अुस गुण-विकास के लिअे भले ही आप ग्रंथ का, कुदरत का, अुद्योग का अुपयोग कीजियें, लेकिन जहां गुण विकास नहीं है, वहां तालीम नहीं है। गुण विकास की प्रक्रिया कहां-से-कहां जाती है, अुसे जरा हम देखें तो पता चलेगा कि पचास गुणों का अधिष्ठान जो आत्मतत्व है, अुसे टालकर गुण विकास की चर्चा नहीं की जा सकती है। सब गुणों का अधिष्ठान है निर्भयता। निर्भयता का अधिष्ठान क्या है? क्या अपने पास शस्त्रास्त्र आ जाने से निर्भयता पैदा हो जाती है? क्या हमारे बड़े शस्त्र दूसरे के पास गये तो भी हमारी निर्भयता कायम रहेगी? समझने की जरूरत है कि सामने जो खड़ा है, वह मेरा ही रूप है। अिस तरह आत्म रूप का दर्शन हो तो निर्भयता आती है। आत्म-तत्व के बिना कौन-सा गुण स्थिर हो सकता है?

–विनोबा

भर बहुत-सी तकलीफो और असुविधाओ से बचा रहेगा, साथ ही अुसके जीवन के आरभिक वर्षो में अुसकी देखभाल का भार जिन लोगो पर होगा अुनका काम भी बहुत अधिक आसान हो जायगा।

प्राण की शिक्षा

सब प्रकार की शिक्षाओ में सभवत प्राण की शिक्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक आवश्यक है। फिर भी अिसका ज्ञानपूर्वक तथा विधिवत् आरभ और अनुसरण बहुत कम लोग करते है जिसके कअी कारण हैं, सबसे पहले अिस विशेष विषय का जिन बातो से सबध है अुनके स्वरूप के विषय में मानव-बुद्धि को कोअी सुस्पष्ट धारणा नही है, दूसरे, यह कार्य बडा ही कठिन है। और अिसमें सफलता प्राप्त करने के लिअे हमारे अदर सहनशीलता, अनत अध्यवसाय और सुदृढ सकल्प होना आवश्यक है।

प्राण की शिक्षा के दो प्रधान रूप हैं। वे दोना ही लक्ष्य और पद्धति की दृष्टि स अेक दूसरे से बहुत भिन्न है, पर है दोनो ही अेक-समान महत्वपूर्ण। पहला अिंद्रियो के विकास और अुनके अुपयोग से सबध रखता है और दूसरा है अपन चरित्र के विषय म सचेतन होना। धीरे-धीरे अुसपर प्रभुत्व स्थापित कर अत में अुसका रूपातर साधित करना।

फिर अिंद्रियो की शिक्षा के भी कअी रूप हैं। जैसे-जैसे सत्ता वर्द्धित होती है वैसे-वैसे वे रूप अेक दूसरे के साथ जुडते चले जाते हैं, निश्चय ही यह शिक्षा बद कभी भी नही होनी चाहिये। अिंद्रिया को अिस प्रकार सुशिक्षित किया जा सकता है कि वे अपनी क्रिया में साधारणतया अुनसे जैसी आशा की जाती है अुससे बहुत अधिक निर्दोषता और शक्ति प्राप्त कर सके।

अिंद्रियो और अुनके व्यापार की सामान्य शिक्षा के साथ ही यथाशीघ्र विवेक और सौंदर्यबोध—अर्थात् जो कुछ सुन्दर और सामजस्यपूर्ण है, सरल, स्वस्थ और शुद्ध है अुसे चुन लेने और ग्रहण करने की क्षमता—के विकास की शिक्षा भी देनी होगी। क्योकि शारीरिक स्वास्थ्य के समान ही मानसिक स्वास्थ्य भी होता है, जिस तरह शरीर और अुसकी गतियो का अेक सौंदर्य है, अुसी तरह अिंद्रियानुभवो का भी अेक सौदर्य और सामजस्य है। जैसे-जैसे बच्चे की सामर्थ्य और समझ बढे वैसे वैसे अुसे अध्ययन काल में ही यह सिखाना चाहिये कि वह शक्ति और यथार्थता के साथ सौदर्य विषयक सुरुचि और सूक्ष्म वृत्ति का भी विकास करे। अुसे सुन्दर, अुच्च, स्वस्थ और महत् चीजें, चाहे वे प्रकृति में हो या मानवसृष्टि म—दिखानी होगी, अुन्हे पसद करना और अुनसे प्रेम करना सिखाना होगा। वह अेक सच्चा सौंदर्यानुशीलन होना चाहिये और वह पतनकारी प्रभाव से अुसकी रक्षा करेगा।

सार-रूप में कह सकते हैं—हमें अपने स्वभाव का पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और फिर अपनी क्रियाओ पर अैसा सयम प्राप्त करना चाहिये कि हमें पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो जाय और जिन चीजा को रूपातरित करना है अुनका रूपातर साधित हो जाय।

मन की शिक्षा

मन की सच्ची शिक्षा के, अुस शिक्षा के जो मनुष्य को अेक अुच्चतर जीवन के लिअे

तैयार करेंगी पाच प्रधान अग हैं । साधारणतया ये अग अेक के बाद अेक आते हैं, पर विशेप-विशेष व्यक्तियो म बदल बदलकर या अेक साथ भी आ सकते हैं । वे पाचो अग, सक्षेप में अिस प्रकार हैं

(१) अेकाग्रता की शक्ति का, सजग होने की क्षमता का विकास करना ।

(२) मन को व्यापक, विशाल, बहुविध, और समृद्ध बनाने की क्षमतायें विकसित करना ।

(३) जो केंद्रीय विचार या अुच्चतर आदर्श या परमोज्वल भावना जीवन में पथ-प्रदर्शक का काम करेगी अुसे केंद्र बनाकर समस्त विचारो को सुसगठित सुव्यवस्थित करना ।

(४) विचारो को सयमित करना, अनिष्ट विचारो का त्याग करना जिससे मनुष्य अत में जो कुछ चाहे वही और जब चाहे तभी विचार कर सके ।

(५) मानसिक निश्चलता का, परिपूर्ण शाति का और सत्ता के अुच्चतर क्षेत्रो से आने वाली अत प्रेरणाओ को अधिकाधिक पूर्णता के साथ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना ।

जब हम अपनी अिच्छानुसार मन को निश्चल निरव बनाना और ग्रहणशील निश्चल नीरवता में अुसे अकाग्र करना सीख जायग तब अैसी कोअी समस्या नही रह जायगी जिसे हम हल न कर सकें, कोअी अैसी मानसिक कठिनाअी नही रह जायगी जिसका कोअी समधान न प्राप्त हो जाय । जब विचार चचल होता है तब वह अस्तव्यस्त और शक्तिहीन हो जाता है, सजग शाति के अदर ही ज्योति प्रकट हो सकती है और मनुष्य की क्षमताओ के नवीन क्षेत्रों को अुन्मुक्त कर सकती है ।

आन्तरिक और आध्यात्मिक शिक्षा

अब तक हमारा विषय वह शिक्षा रही जो ससार में जन्म लेनवाले प्रत्येक बच्चे को दी जा सकती है और जो केवल मानवी क्षमताओ से ही सबध रखती है, परतु हमें अनिवार्य रूप में वही रुक जान की आवश्यकता नहीं । सब मानव प्राणियो म अदर छुपी हुअी, अेक महत्तर चेतना की सभावना मौजूद है जो अुनके सामान्य जीवन की सीमा से बडी है और जिसकी सहायता से वे अेक अुच्चतर और अधिक व्यापक जीवन में भाग लेने के अधिकारी बन सकते हैं ।

बाह्य वस्तुओ पर ध्यान केंद्रित करना बहुत लाभदायक तो है पर यह कार्य अुचित ढग से करना चाहिये । ये तीन प्रकार की शिक्षाय व्यक्ति का निर्माण करन, मनुष्य को अस्पष्ट और अवचेतन जडता से अुबारन तथा अुसे अेक सुनिश्चित और आत्मसचेतन सत्ता बनाने के साधन हैं । अतरात्मा की शिक्षा के द्वारा हम जीवन के सच्चे आशय, पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के कारण तथा जीवन की खोज के लक्ष्य और अुसके परिणाम अपनी नित्य सत्ता के प्रति व्यक्ति क आत्मसमपण के प्रश्न पर आते हैं । अिस खोज का सबध साधारणतया अेक गुह्य भाव तथा धार्मिक जीवन से है । क्योकि विशेष रूप से धर्म मत ही जीवन के अिस पहलू में व्यस्त रहे हैं । पर अैसा होना आवश्यक नही । अीश्वरविषयक गुह्यविचार के स्थानपर सत्य का अधिक दार्शनिक विचार आ सकता है पर फिर यह खोज सार रूप में वही रहेगी, केवल अुस तक पहुचने का मार्ग अैसा हो जायगा

कि अत्यधिक आग्रहशील प्रत्यक्षवादी भी अिसको अपना सकेगा। क्योंकि आन्तरात्मिक जीवन की तैयारी के लिअे मानसिक विचारों और धारणाओं का अधिक महत्व नहीं है।

आंतरात्मिक अुपस्थिति के द्वारा ही व्यक्ति का सच्चा अस्तित्व व्यक्ति तथा अुसके जीवन परिस्थितियों से संपर्क प्राप्त करता है। यह कहा जा सकता है कि अधिकांश व्यक्तियों में यह अुपस्थिति अज्ञात और अपरिचित रूप में पर्दे के पीछे से कार्य करती है। पर कुछ में यह अनुभवगोचर होती है तथा अिसकी क्रिया को भी पहचाना जा सकता है, बहुत ही विरले लोगों में यह अुपस्थिति प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होती है और अिन्हीं में अिसकी क्रिया भी अधिक प्रभावशाली होती है। अैसे लोग ही अेक विशेष विश्वास और निश्चय के साथ जीवन में आगे बढते हैं, ये ही अपने भाग्य के स्वामी होते हैं।

आराम-सुखभोग या प्रसन्नता के लिअे हर प्रकार की वैयक्तिक कामना त्याग कर दो, बस अुन्नति के लिये अेक प्रज्वलित अग्नि-शिखा बन जाओ। जो कुछ तुम्हारे मार्ग में आये अुसे अपने विकास के लिअे सहायक मानो और तुरत अिस अपेक्षित विकास को साधित भी कर लो।

सब कार्य प्रसन्नता से करने का यत्न करो, परंतु प्रसन्नता कभी तुम्हारे कार्य का प्रेरक भाव न बनने पाये।

कभी अुत्तेजित, अुद्विग्न या विक्षुब्ध मत होओ। सब अवस्थाओं में पूर्णरूप से शांत बने रहो। फिर भी सदा सजग रहो जिसमे कि जो अुन्नति तुम्हें करनी है अुसे तुम जान सको तथा बिना समय नष्ट किये अुसे प्राप्त कर सको।

भौतिक घटनाओं को अुनके वाह्य रूप के आधार पर अंगीकार मत करो। ये सदा ही किसी अन्य वस्तु की, जो सत्य वस्तु है परंतु जो हमारी तलीय बुद्धि की पकड में नहीं आती, अशुद्ध अभिव्यक्ति होती है।

किसी के व्यवहार के प्रति शिकायत मत करो, जब तक तुम्हारे अंदर अुसके स्वभाव की अुस चीज को बदलने की शक्ति ही न हो जो अुसे वैसा करने को प्रेरित करती है; और अगर तुम्हारे पास वह शक्ति है तो शिकायत करने के स्थान पर अुसको बदल दो।

आध्यात्मिक शिक्षा में मनुष्य का स्वीकृत लक्ष्य, अुसके वातावरण विकास तथा स्वभाव की रुचियों के संबंध से मानसिक निरूपण में, भिन्न-भिन्न नाम धारण कर लेगा। धार्मिक वृत्तिवाले अुसे अीश्वर कहेंगे और अुनका आध्यात्मिक प्रयत्न फिर अिस रूपातीत परात्पर अीश्वर के साथ तादात्म्य प्राप्त करने के लिअे होगा न कि अुस अिश्वर के साथ जो वर्तमान सब रूपों में है। कुछ लोग अिसे परब्रह्म या सर्वोच्च आदि कारण कहेंगे, और कुछ निर्वाण, कुछ और जो संसार को तथ्यहीन भ्रम समझते हैं अिसे "अेकं अद्वितीयं सत्" का नाम देंगे, जो लोग अभिव्यक्तिमात्र को असत्य मानते हैं अुनके लिअे यह अेक मात्र सत्य होगा।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अतिमानसिक शिक्षा के फलस्वरूप केवल मानव-प्रकृति का अुत्तरोत्तर विकास ही नहीं होगा और न केवल अुसकी सुप्त शक्तियां ही दिन-दिन बढती जायेंगी बल्कि प्रकृति का अपना और साथ-ही-साथ संपूर्ण सत्ता का भी रूपांतर हो जायेगा। *प्राणियों की अेक योनि का नया आरोहण होगा,* मानव से अूपर अतिमानव की ओर जिससे अंतमें पृथ्वी पर दिव्य जाति का आविर्भाव होगा।

सच्ची शिक्षा मानव-मानस अध्ययन पर आधारित होनी चाहिये—शिशु और प्रौढ का मानस। शिक्षा के साधन की अपेक्षा कर शिक्षा के विषयो को ही सर्व-श्रेष्ठ मान कर बनायी जानेवाली पद्धति का बौद्धिक विकास में बाधा देना ही ज्यादा सभव है, बनिस्बत अेक विशिष्ट ज्ञानयुक्त श्रेष्ठ मन का निर्माण करने के। क्योकि चित्रकार या मूर्तिकार के जैसे शिक्षक को निर्जीव माध्यम से काम नही करना है, बल्कि अुसके पास तो अेक अत्यत सूक्ष्म जटिल और भावनायुक्त प्राणी है। वह लकडी या पत्थर के मानव से शिवपा का अेक श्रेष्ठ और भावनायुक्त नमूना नही तैयार कर सकता है, बल्कि अुसे तो नितान्त दुर्ग्राह्य मानस से काम करना पडता है और मानव शरीर की दुर्बलता-जन्य अुपाधियो (मर्यादाओ) को मानना पडता है।

सही अध्यापन का पहला सिद्धात यह है कि कोओ बात सिखायी नही जा सकती। शिक्षक काम लेनेवाला या सिखानेवाला नही, वह अेक मार्गदर्शक और मददगार ही है। अुसका काम विषय को अुपस्थित करना मात्र है, लादना नही। वह विद्यार्थी के मानस को प्रशिक्षित नही करता, अुसके ज्ञानोपार्जन के अुपकरणो को ठीक करने का तरीका दिखाता मात्र है, अुस प्रक्रिया में अुसको सहायता और प्रोत्साहन देता है। वह ज्ञान प्रदान नही करता है, विद्यार्थी अपने लिअे ज्ञान अर्जन करे, अिसका रास्ता बताता है। विद्यार्थी के अन्दर निहित ज्ञान को प्रकाश में लाता भी नही है, वह कहा पडा है अुसे बाहर लानेकी आदत कैसे डाली जा सकती है अितना मात्र अुसे दिखाता है। यह तत्व किशोर और वयस्क के मानस के लिअे ही लागू है, बच्चे के लिअे नही, अैसा सोचना रूढिवाद और बुद्धिपूर्वक नही। बच्चा हो या बूढा, लडका हो या लडकी, अच्छी शिक्षाका अेक ही सच्चा सिद्धात है, अुम्र के फर्क से मार्गदर्शन और मदद की आवश्यकता कम या ज्यादा ही होती है, अुस सिद्धात में बदल नही होता है।

दूसरा सिद्धात यह है कि मन के स्वभाव का ख्याल रखते हुअे ही अुसके विकास के तरीके निश्चित करने चाहिये। मा-बाप या शिक्षक जैसा चाहता है बच्चे को ठोक-पीट कर जबरदस्ती वैसा आकार देने का ख्याल क्रूर और मूर्खतापूर्ण है। बच्चे को अपने स्वभाव के अनुसार विकास करने के लिअे अनुकुल परिस्थिति निर्माण कर देनी चाहिये। अपने बच्चे में अमुक गुण, योग्यताये और विचार हो और वह अमुक धन्धा करे यह मा-बाप का पहले से तय करना बडी ही भूल है। व्यक्ति के स्वभाव को अपना धर्म छोडने को वाध्य करना अुसका स्थायी नुकसान करना है। वह मानव की आत्मा पर स्वार्थपूर्ण अत्याचार है अुसमें राष्ट्र की वपति है, क्योकि तब व्यक्ति का श्रेष्ठतम रूप अुससे नष्ट होता है, अुसके बदले अेक अपूर्ण, कृत्रिम, न्यून और मामूली चीज ही रह जाती है। हर अेक मनुष्य के अन्दर कुछ अेक दिव्य भाव है, जो अुसका अपना ही होता है, कितनी ही छोटी परिधि में क्यो न हो, परिपूर्णता और प्रबलता भगवान् का दिया हुआ अेक मौका है जिसको आदमी अपना भी सकता है छोड भी

सकता है। हमारा काम अुसे पहचानना, अुसका विकास करना और अुसको अुपयोग में लाना है। शिक्षा का मुख्य ध्येय आत्मा में जो श्रेष्ठतम है, अुसका विकास करना और अेक अुच्च ध्येय के लिअे अुपयोग करना है।

शिक्षा का तीसरा सिद्धांत निकट से शुरू करके दूर तक काम करना है। जो है अुससे जो होना चाहिये अुस तक जाना है। करीब-करीब हमेशा ही आदमी के स्वभाव का आधार अुसकी आत्मा के पूर्व संस्कार के अलावा, अुसका पैतृक, परिस्थिति, वंश और देश होते हैं। वह मिट्टी जिससे अुसे अन्न मिलता है, वह वायुमंडल जिसमें वह श्वास लेता है, और वे दृश्य, शब्द और प्रवृत्तियां जिनके वह आदी है, अुसका स्वभाव निर्माण करते हैं। अिनका प्रभाव कम कारगर नहीं होता है, हालांकि वह अिनके बारे में सचेत नहीं। अिसलिअे हमें अिन्हीं से शुरू करना चाहिये। जिस मिट्टी में वह पला है, वहां से अुसकी जड़ों को अुखाड़ना नहीं, मन को अैसी कल्पनाओं और विचारों से भरना नहीं है जो अुस जीवन के लिअे गैर हैं जिसमें अुसका भौतिक अस्तित्व है। अगर कोअी बाह्य चीज लानी भी है तो वह मन के अूपर लादना नहीं है। व्यक्ति स्वतन्त्र और स्वाभाविक रूप से बढ़े, वही सच्चे विकास के लिअे आवश्यक शर्त है। कुछ अैसे लोग होते हैं जो अपनी परिस्थितियों में जम नहीं पाते हैं, अुनका स्वभाव अुसके विरुद्ध है, वे दूसरे किसी काल या देश के होते हैं। अुन्हें अपनी प्रकृति का अनुसरण करने के लिअे निर्बाध मौका मिलना चाहिये। लेकिन ज्यादा तर लोग अपने सहज धर्म के विरुद्ध ढांचे में ढालने के प्रयास से प्राणहीन और कृत्रिम बन जाते हैं। यह प्रकृति की व्यवस्था है कि वे अेक खास देश, काल और समाज के नागरिक हों, भूत की सन्तान, वर्तमान के अधीश और भविष्य के निर्माता हों। भूत में हमारा आधार है, वर्तमान हमारा कर्मक्षेत्र है, भविष्य में हमारा कर्मफल है—अुद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा की व्यवस्था में हर अेक को अपना स्वाभाविक और अुचित स्थान मिलना चाहिये।

मनुष्य की शिक्षा अुसके जन्मकाल से ही आरंभ हो जानी चाहिये और अुसके समूचे जीवन भर चलती रहनी चाहिये। बल्कि, सच पूछा जाय तो, यदि शिक्षा को अत्यधिक मात्रा में फलदायक होना हो तो अुसे जन्म से पहले ही आरंभ हो जाना चाहिये। वास्तव में स्वयं माता ही अिस शिक्षा का प्रारंभ द्विविध क्रिया के द्वारा करती है सबसे पहले वह अपनी निजी अुन्नति के लिअे अुसे स्वयं अपने अूपर आरंभ करती है, और फिर अुस बच्चे के अूपर आरंभ करती है जिसे वह अपने अंदर स्थूल रूप में गढ़ती है।

श्री माताजी

बचपन में हमने कासाबीआका की कविता पढी थी। बाप ने असको हुकुम दिया था कि जबतक मैं न आवू तुम यही खडे रहो। जहाज में आग लग गयी थी। बाप का कही कुछ हो गया होगा। कासाबीआका वही खडे-खडे रोने और चिल्लाने लगा। बाप से वहां से हटने का आदेश मागने लगा। मगर आदेश कौन देता? आखिर वह वहां जल कर मर गया।

यह कविता शायद अुस लडके की पितृभक्ति या कर्तव्यज्ञान या हिम्मत का सबक सिखाने के लिअे हमें पढाई जाती थी। मगर असमें आज की सामाजिक स्थिति का करुण रूपक ही मुझे दीखता है।

आखिर मरे हुअे या भागे हुअे पिता के हुकुम से अुस लडके के वहा जल मरने से दीन या दुनिया किस को फायदा पहुचा? किस आदर्श या नीतिका रक्षण हुआ? अगर वह अपना दिमाग लडाता और अुस अर्थहीन तथा प्रयोजनहीन मृत्यु से भाग निकलता तो क्या बुद्धिमानी का काम नही होता? मगर वैसा करना अुसके लिअे संभव नही था। क्योकि वह अेक 'टँबु' के नीचे था। अुस 'टँबु' ने अुसकी बुद्धि को कुठित कर दिया था। वह स्वतत्र रूप से सोच ही नही सकता था और आखिर वह मरा।

'टँबु' किसी आदिवासी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है निषेधात्मक आदेश-"रेल के पटरी पर से मत जाओ। आनेवाली गाडियो से खतरा है", टँबु अिस प्रकार का सामान्य बुद्धिगम्य निषेध नही होता। अुसके पीछे अमूर्त भावनाओ का, खास करके भय, घृणा तथा लज्जा का जबरदस्त बल होता है। अिसके कारण मनुष्य अुस निषेध को बिना सोचे समझे ही मानने को बाध्य होता है। निषेधो के जैसे विधिया भी होती हैं। अिनके पीछे भी अुसी प्रकार की मानसिक बाध्यता (compulsion) का बल रहता है। आजतक मनुष्यसमाज में अिन विधि तथा निषेधो का बहुत बडा स्थान रहा है। बच्चो के शिक्षण में, अुन्हें समाजानुकूल बनाने के लिअे तथा आदतें डलवाने के लिअे घर-घर में सोचे या बिना सोचे अैसे ही तरीके अपनाये जाते हैं जिससे बच्चे का दिमाग कुठित हो जाता है और वह अमुक प्रकार का आचरण करने में जडवत् अभ्यस्त बन जाता है।

अेक बिलकुल तुच्छ अुदाहरण लिया जाय—

ओडिसा, बगाल आदि चावल प्रधान प्रांतों के लोगो में चावल के लिअे बडा आकर्षण होता है। दिन में अेक दो बार चावल खाये बिना अुनसे रहा नही जाता। पूरी, मिठाअी, हलुवा, फल आदि जितनी भी दूसरी चीजें दिनभर अुनको मिलती रहे फिर भी चावल न मिला तो अुनको लगेगा कि दिनभर अुन्होने कुछ खाया नही। अिसका कारण चावल का कोअी विशेष गुण नही, बल्कि बचपन का शिक्षण है। यहा की माताओ की धारणा है, जो अुन्होंने अपनी माताओ से पायी है कि भात से शरीर हट्टा-कट्टा बनता है। फिर दो साल की अुमर से ही यह शुरू हो जाता है। "भात खाओ, भात खाओ" सिर्फ अुतना ही नही, अुसके साथ डराना, धमकाना, पीटना भी चलता है। अेक चीज समझने की है-बच्चो का सब से बडा भय किसी भूतप्रेत से नही, मगर

मां का प्यार न मिलने का होता है। तो माताअें अिसका पूरा अुपयोग करती हैं। "देखो अितना भात न खाओगे तो मैं रूठ जाअूंगी, तुझे प्यार नहीं करूंगी।" माताअें आपस में मिलती हैं तो आपस में यही चर्चा, बच्चों के सामने बोलती हैं कि "मेरा रमू बिलकुल भात नहीं खाता। भगवान जाने अुसका शरीर कैसे टिकेगा।" रमू का पेट आम, अमरूद, केले, नारियलों से कितना भी भरा क्यों न हो अुसने भात न खाया तो मानो अुसने दुनिया का सब से भारी अपराध किया। दस बारह साल तक अिस जबरदस्त कैंपेन (campaign) का यही परिणाम होता है, कि हमारे रमू के मन में अेक अपराध-बोध का निर्माण हो जाता है। भात में कौनसे पौष्टिक तत्व हैं और भात के बदले केले खायें तो क्या हुआ अित्यादि सारा समझने तक अुसका दिमाग चलता ही नहीं। अुसके मन में यही आशंका काम करती रहती है कि अगर मैं भात नहीं खाअूंगा तो मां गुस्सा करेगी, दुखी होगी। और यह सारा मन के अचेतन स्तरपर चलता है। अुसका भान भी अुसे नहीं होता। मनोविज्ञान का यह अेक बहुत महत्व का शोध है कि मनुष्य के मन में सिर्फ चेतन ही नहीं, अचेतन का भी अेक बहुत बड़ा हिस्सा होता है जो चेतन से कअी गुना बड़ा होता है। लज्जा, भय, घृणा आदि के कारण दबी हुअी या निर्मित हुअी भावनायें अिस अचेतन के राज्य में चली जाती हैं और वहीं से मनुष्य को प्रेरित करती रहती हैं। अिनकी खबर खुद अुस मनुष्य को भी नहीं होती। सचेतन रूप से सोच समझकर किये गये संकल्प के बनिस्बत अिनकी प्रेरणा बहुत बड़ी और जबरदस्त होती है। अुस मनुष्य के लिअे अिनको अमान्य करना असंभव-सा होता है। अिसलिअे वह खुद ६० साल के होने पर भी और मां कब की दफनायी जा चुकने पर भी अुसको मन की गहराअी से यही प्रेरणा मिलती रहती है कि भात न खाओगे तो मां गुस्सा करेगी।

मनोविज्ञान में अचेतन मानस की खोज सबसे महत्व की है। अुससे यह भी पता चला है कि कअी प्रकार की मानसिक व्याधियों की जड़ मानस के अिस अचेतन हिस्से में होती है। और अुनके कारण मानस पर कअी प्रकार का दबाव या धक्का होता रहता है।

मानसिक अुपचार के सिलसिले में यह धीरे धीरे साफ हो रहा है कि मानस पर दबाव किसी कारण से भी क्यों न आये हों, अुनका असर खतरनाक होता है। अुनसे सिर्फ बुद्धि कुंठित होती है अितना ही नहीं, कअी प्रकार की विकृतियां भी पैदा होती हैं। हिन्दुस्तान में सफाअी के संस्कार बहुतांश जड़वत हो गये हैं, मैले का व्यवस्थित ढंग से कारोबार करने की बात सुनने के लिअे भी हम तैयार नहीं होते। जब बच्चा मैला छूना चाहता है, तब हम अुसे सिर्फ मना ही नहीं करते, परंतु अुस निषेध को अधिक असरदार बनाने के लिअे अुसके साथ भय तथा घृणा का भी भाव जोड़ देते हैं। सिखाये हुअे आचरण ही वह करता है, विचारयुक्त आचरण नहीं। योरोप में बच्चों को साफ सुथरा रखने के लिअे बिलकुल छुटपन से ही बड़ी कोशिश की जाती है और अक्सर दबाव का भी अुपयोग किया जाता है। मनोविज्ञान का कहना है कि अिस दबाव के कारण बच्चे के स्वभाव में क्रूरता, अनुदारता आदि कअी दुर्गुण आ जाते हैं। बड़े होने पर अुसके यौन-व्यवहार में भी अमुक प्रकार की विकृतियां

पायी जाती है। असलिअे आज वहा के जानकार समाज में बच्चा में सफाअी की आदत डालने के तरीको में बदल हो रहा है। अिस प्रकार के सैकडो छोटे छोटे, तुच्छ समझे जानेवाले दबावो का कितना भारी परिणाम व्यक्ति के जीवन पर होता है, यह आज धीरे धीरे मनोवैज्ञानिको के सामने साफ हो रहा है।

मनुष्य के अतर की वृत्तिया या प्रेरणाओ का सबध जीवन से है। जीने की प्रेरणा जितनी प्रबल होती है, ये प्रेरणायें भी अुतनी ही शक्तिशाली होती है। अुनपर सिर्फ दबाव ही डाला जाय तो परिणाम यही होता है कि वे किसी न किसी रूपमें फूट निकलती है। जब अुनके नियमन में बुद्धि का सहकार नही मिलता तो मनुष्य अुनका शिकार बनता है।

पराक्रमशीलता या पुरुषार्थवृत्ति मनुष्य की अेक मूलभूत प्रेरणा है। मगर कअी समाजो म अुसे अिस तरह से दबाया जाता है कि सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के कारण वह आक्रमणशीलता या झगडालूपन में बदल जाती है। यहा तक कि झगडालूपन को मनुष्य की अक मूलभूत प्रेरणा मान लिया गया है। वैसे यौन वृत्ति भी मनुष्य की अेक मूलभूत प्रेरणा है। अुसके नियमन के लिअे भी 'टैबू' का अुपयोग बडे पैमाने पर किया गया है, जिसके कारण अुसमें से विशेष प्रकार की विकृतिया पैदा हुअी है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक खोज से पाया गया है कि यह विकृतियाँ, क्रूरता, भयशीलता, शौर्यवृत्ति आदि कअी स्वरूपो में प्रकट होती है, जिनको अूपर अूपर से देखने पर हम कल्पना भी नही कर सकते कि यौन वृत्ति के साथ अिसका कोअी सबध होगा।

मानसिक विकृतिया के परिणाम स्वरूप मनुष्य की कार्यक्षमता, सृजनशीलता तथा जीवन में आनद अुतने अश में कम हो जाते है। अुतने अश में वह बाहरी दुनिया को समझने में तथा अुसमें सही ढग से बरताव करने में असमर्थ होता है। अुनके अुपचार के जिन तरीको का प्रयोग आज हो रहा है, अुनमें कुछ मुख्य अुपाय अैसे है, जिनमें बीमार के आचरण को अुसकी बुद्धि की पकड में ला देने की कोशिश की जाती है। जिस भावना के दब जाने के कारण वह विकृति पैदा हुअी, अुसकी स्मृति को, अुसके अचेतन के अतस्तल में से अुठाकर अुसके चेतन में जागृत करने की कोशिश की जाती है। अुसकी स्मृति लौटने पर वह फिर अपन आचरण को अपनी बुद्धि से तोल सकता है और अपने आचरण को नियत्रित करने में समर्थ होता है।

दुनियाभर में अिस मानसिक दबाव के तरीके सर्वत्र अपनाये गये है। कही बिना सोचे अेक व्यावहारिक अुपाय के तौर पर अुसका अुपयोग हुआ है तो कही अुसके साथ सिद्धात जोड दिया गया है। सिद्धात से यह माना गया है कि मनुष्य की मूल प्रेरणायें खुदगरजी की ही होती है वे समाजविरोधी होती है और अुनको कुठित करन में ही समाज का भला है। जहाज से परदेश जाने से लेकर छोटी बहू से जठ बात करने तक की हजारो बातो पर यहा विधि-निषेध है। अिस प्रकार से नियत्रित समाज अूपर अूपर से व्यवस्थित दीखता है। अुसमें आपसी सघर्ष अधिक नही होते, अुथल-पुथल नही होते। बाहर से दडके अुपयोग की आवश्यकता बहुत कम होती है। मगर यह चीटी या दीमको के समाज की तरह स्थितिशील होता है। अुसम परिवर्तन

का माद्दा नही होता। बाहर की परिस्थिति जबतक न बदले तबतक वह ठीक चलता रहता है, मगर परिस्थिति बदलने पर अुस परिवर्तित परिस्थिति का सामना करने में वह अपने को असमर्थ पाता है। अुनके नागरिको की सृजन-शक्ति खिल नही पाती। व्यर्थ विकृतियो में तितर-बितर हो जाती है। अिसलिअे अुनका जीवन रसहीन तथा तेजोहीन बन जाता है। समाज में भी सृजनशीलता तथा पुरुषार्थ का अभाव हो जाता है।

यहा हमें अितना ही देखना है कि जहा हम अेक नये, जीवित समाज की कल्पना करते हैं वहा अुसमें सिर्फ व्यवस्थितता बडी चीज नही है। अितना ही काफी नही है कि अुसमें पुलिस के डडे की जरूरत नही होती, कोअी गलत काम नही होता। वैसे कअी आदिवासी समाज हैं जिनमें व्यवस्था करीब-करीब परीपूर्ण है, दड का अश नही-सा है, मगर वे हजारो साल से जहा के तहा खडे हैं। अिसलिअे नये समाज का अेक महत्व का लक्षण अुसकी गतिशीलता तथा सृजनशीलता होगी। जैसे कविगुरु रवीद्रनाथ ने गाया है "देशे-देशे दीशे-दीशे कर्मधारा धाय, आपन सहस्त्रविधि परिपूर्णताये" अध्यात्म, विज्ञान, कला, साहित्य आदि की हजारो दिशाओ में अुस समाज की सृजनशक्ति तथा पराक्रमशीलता दौडती होगी। जब हम समाज परिवर्तन का सोचते हैं तब अैसे साधनो की खोज करनी चाहिये जिनसे लोगो की बुद्धि पर से दबाव हटे, वे बुद्धि युक्त तथा समाजानुकूल आचरण अदर की प्रेरणा से करे तथा अुनकी सृजनशक्ति प्रस्फुटित हो।

समाज परिवर्तन के लिअे कानून का तरीका निरे दबाव का ही होता है। दूसरा तरीका धर्म प्रचार का या विचार प्रचार का रहा है। मगर अिसमें बडा भारी परपरागत जोर विधि-निषेधो पर ही रहा है। अमुक बुराअी को अधर्म, पाप बताया जाता है। अुसका निषेध किया जाता है और अुससे अलग होने के लिअे लोगो से वचन लिये जाते हैं। कोअी सत या महापुरुष अिस तरह का जोरदार प्रचार करें तो अुसका जरूर कुछ असर होगा। जिन लोगो पर बुराअी की पकड ज्यादा मजबूत न हो वे मनोबल से अुसे हटा सकेंगे। बहुत सारे लोगों पर महापुरुष का असर, बच्चे पर मा का जैसा होगा जिसमें भय का अश भी काफी होगा। महात्मा की बात न मानेंगे तो न जाने क्या नुकसान होगा, महात्मा की मानेंगे तो अुनका आशीर्वाद मिलेगा, अिस प्रकार की प्रेरणायें होंगी मगर अुससे बुद्धि पर का बोझ हटेगा नही, शायद अेक नया बोझ ही पडेगा।

बुराअी के मूल कारण का पता लगाये बिना अुसको सीधे सुधारने की कोशिश अवश्य ही असफल होगी।

होली के अवसर पर हिन्दुस्तान में आनंद-अुल्लास के साथ बहुत सारे गदे कारोबार भी होते हैं। यह भी देखा है कि साधारण तया अुत्तरी प्रातों में बनिस्बत दक्षिण के प्रातों में अुद्दडता कम होती है। बिहार और ओडिसा पडोसी राज्य हैं। मगर ओडिसा में अुद्दडता नही के बराबर होती है। क्या अिसके मूल में लौकिक धर्म तथा रीतिरिवाजों में फरक है? होली अेक सेफ्टीवाल्व का काम करती है। क्या जहा लोगों के मानस पर ज्यादा दबाव है वही अुसे मौका मिलने पर वह ज्यादा अुछलता है? यह सारा जाने बिना हम अिस बुराअी को काबू में ला सकेंगे अैसा दीखता नही है।

मैंने जानबूझकर छोटी मिसाल ली। जिससे कहीं बडे बडे सवाल देश तथा दुनिया के सामने आज हैं। समस्या की जडो को बाहर की परिस्थिति तथा लोगों के मानस में समझना, बुद्धिपर जिन रुकावटों के कारण सामने वाला मनुष्य समस्या का असली स्वरूप देख नही पाता अुन रुकावटो को हटाने में मदद करना और फिर समस्याओ को सुलझाने में अुसकी बुद्धि की मदद प्राप्त करना, यही मेरी समझ में आगे बढने का रास्ता है और सौम्य-सौम्यतर, सत्याग्रह की अेक महत्व की प्रक्रिया है।

आज हम मालकियत मिटाने के लिअे जुटे हैं। मालकियत अनैतिक है, पाप है, आज के जमाने में समाज की अग्रगति में बाधा डाल रही है, यह सारा बुद्धि से समझा देने पर भी मालकियत मिट जायगी, अैसा हम देख नही रहे हैं। मालकियत के पीछे कुछ सीधे सादे आर्थिक तथा सामाजिक कारण हैं। मनुष्य सुख तथा सुरक्षा चाहता है और अुसके लिअे संपत्ति का संग्रह करता है। अरक्षितता का भय बहुत बडा होता है और जिसलिअे जब अपनी आर्थिक सुरक्षा पर प्रहार होने का अंदेशा अुसे होता है, तब यह भय अुसकी बुद्धि को दबोच लेता है। लेकिन मालकियत या संग्रह की भावना के पीछे दूसरे भी मनोविज्ञानिक कारण हैं। अिस समय समाज-विज्ञान तथा मनोविज्ञान में कुछ अैसे तथ्य प्रकाश में आये हैं जिनसे नये सिरे से सोचने की प्रेरणा मिलती है। मनोविज्ञान का यह माना हुआ तथ्य है कि जिस बच्चे को मा का प्यार पर्याप्त मात्रा में नही मिलता वह अुस प्यार की कमी को अधिक अन्न से भरता है। प्यारा बच्चा कम खाता है, मगर अुतने से अुसको जितनी पुष्टि मिलती है, अुतनी प्यार के भूखे बच्चे को अधिक अुनसे नहीं मिलती। यह पाया गया है कि दीर्घ काल तक संतानहीन रही स्त्रियों को बेकार की चीजों का ढेर अिकट्ठा करने की धुन सवार होती है। संतान प्राप्ति के बाद यह मिट जाती है। क्या समाज में आर्थिक सुरक्षा के साथ-साथ व्यक्ति के लिअे भाविक-सुरक्षा (emotional security) की योजना से मालकियत की जडें ढीली होगी? हमारे सामने खोज के लिअे यह अेक बडा क्षेत्र पडा है।

धार्मिक सुधार की धारा हमेशा विधि निषेधा की रही है अैसा नही। औशु, चैतन्य जैसे विभूतियों ने विधि निषेधात्मक समाज के खिलाफ बगावत की है। कभी धार्मिक आन्दोलनों के परिणाम से लोगों के मानस में से भय, आदि के बंधन ढीले हुअे हैं और अुनमें नव-जीवन, नवसर्जना की लहरे आयी हैं। आधुनिक जमाने में जो क्रांतियां हुअी हैं अुनमें भी हम देखते हैं कि जनशक्ति के स्फोट हुअे हैं। पुरानी मान्यताअें, भय आदि के बंधनों को तोडकर जनता अुठ खडी हुअी है। अिसके कारण पुरानी व्यवस्था टूट पडी है। पर अितना ही सब नही। क्रांति की घटनाओं के बाद भी अुन समाजों में सृजनशीलता का नया स्रोत फूट निकला है और बीसियों तक बहता रहा है, मानो जनता की बुद्धिपर बडा भारी पत्थर लादा हुआ था, जो हट गया हो।

गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन के द्वारा हिन्दुस्तान के मानस पर से भय आदि के कितने ही दबाव हट गये। अेक नयी स्फूर्ति का संचार देश में हुआ। मगर अुनके बाद सर्वोदय के कार्यक्रमों को सामान्य नैतिक सुधार की भूमिका पर लानेकी, विधिनिषेधों का जामा पहनाने की

और झुकाव रहा है। सत्याग्रह को अेक दवाव डालने के साधन के रूप में ही अधिकतर लोगोंने देखा है। विनोवाजी अिस स्थिति को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं और अुसमें काफी सफल हुअे हैं, मगर अिस दिशा में और भी प्रयत्न की आवश्यकता है। समाज परिवर्तन की प्रक्रियाओं में भावात्मक (पाजिटिव्) सत्याग्रह के कार्यभार को ठीक ठीक समझने और अुसकी सूक्ष्म प्रक्रियाओ की खोज पर ही भविष्य की सारी प्रगति निर्भर है।

दूसरा मोरचा, जिसपर हमें आगे बढना है, तालीम का है। नये समाज के लिअे नये नागरिक निर्माण करना तालीम का काम है। आज तक की तालीम में बच्चो को सामाजिक जीवो में परिणत करने का तरीका मारपीट का, टँबु का रहा है। परिवारों में तथा विद्यालयों में यही चलता है। नये समाज के लिअे अुनमें भावात्मक सृजनात्मक आत्मानुशासन का विकास करना होगा। यही आज नई तालीम के सामने सर्व प्रधान महत्व रखनेवाला सवाल है।

तालीम याने चारित्र्य निर्माण का परंपरागत तरीका निष्फल होने का अेक नतीजा यह हुआ है कि आज का विद्यार्थी व्यापक सामाजिक जीवन से विछुड गया है। वह हर तरह के नियमन से वरी हुआ दीख रहा है। और अिस विभेद में से संघर्षों का जन्म हो रहा है। कलकत्ते में जो खाद्य आन्दोलन हुआ अुसमें बारह-चौदह साल के लडके भी वसें वगैरह जलाने में आगे थे। करीब हर-अेक शहर में विद्यार्थियों को किसी न किसी गडवड में अुलझे हुअे पाया जायगा। मैंने कअी शहरी अभिभावकों से चर्चा की है और करीब-करीब हर अेक का यह कहना है कि आज अुनकी संतान अुनके हाथ से बाहर चली जा रही है। वे अपने को वेवस, असाहय महसूस कर रहे हैं। कलकत्ते में अेक वाप ने अपने लडके को खाद्य आन्दोलन में शरीक होने से रोका और तीन चार दिन तक बाहर जाने नहीं दिया। चौथे दिन वह लडका भाग निकला और अुसके पच्चीस-तीस साथियों ने हाकीस्टीक्स् तथा सोडा-वाटर की बोतलें लिये अुसके घर पर घेरा डाला और अपने साथी पर किये अिस अत्याचार के लिअे अुसके बापको फटकारने लगे। यह कासावीआका की कहानी की प्रतिकाष्ठा (anticlimax) है और यह अेक हास्य-वियोगांतक परिणति है। जिस दवाव की तालीम में से यूरोप के करोडों नवयुवक डिक्टेटरों और युद्धनेताओं के हाथ के कठपुतले वने, अुसी तालीम के बंधन टूटने के, अुसके खिलाफ प्रतिक्रिया के ये लक्षण हैं।

अिसलिअे नअी तालीम में अंदरूनी शक्ति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सामाजिक बोध पर आधारित नये अनुशासन के विकास का प्राथमिक महत्व है। यह सिर्फ शाला में नहीं, घरों में भी करना होगा। परिवारो में पिता-माता और संतानो के सबंध को नई वुनियाद पर खडा करना होगा, आधिपत्य-आनुगत्य-मूलक सबंध के वदले समानता तथा मैत्री का, विनोबाजी की भाषा में-सख्य-भक्ति का संबंध परिवारों में स्थापित करना होगा। अिससे परिवार का जीवन भी नयी आध्यात्मिक समृद्धि से परिपुष्ट होगा। अिस लिहाज से तो आज नयी तालीम का काम देहातों के बनिस्बत शहरों में कहीं ज्यादा जरूरी दीखेगा।

मगर मुझे लगता है कि अिस महत्व की वुनियाद की बात पर नई तालीम में काफी

(शेषांश कवर पृष्ठ ३ पर)

"मेरे प्यारे बच्चों ! तुम सब को देखकर मुझे बहुत ही आनंद होता है। आज हम तुम सब से मिलने आये है, वह तुमको पसंद है न ?"

"हां ! हमको खूब पसंद है।"

"और कल से तुम लोगो के साथ हम रहने आ रहे हैं; तुम सब को अच्छा लगेगा ?"

"हां !"

"तुम सबने गाधीजी का नाम सुना है ?"

"हां जी"

"गाधीजी हर रोज प्रार्थना करते थे, हम सब भी करेगे ?"

"हां !"

"गाधीजी हर रोज सूत कातते थे। कन्नंचेरी की बहनें भी अच्छा कातती हैं। अिस लिअे तुम सब गाधीजी के प्रिय हो। हम भी हर रोज कातेगे ?"

"हां जी।"

"अच्छा, देखो, यह बताओ कि प्रेम से रहना अच्छा है, कि झगडा करना अच्छा ?"

"प्रेम से रहना अच्छा।"

"तो क्या तुम सब प्रेम से ही रहोगे ?"

"हां जी।"

प्रेम और शान्ति का काम करना तुमको पसन्द है ?"

"हां !"

"तो कल से हम यहां शान्ति-सेना का काम शुरू करेगे। हां, मानो कि कालिकट में कही झगडा हो जाता है तो तुम सब लोग हमारे साथ लोगों को समझाने के लिअे और शान्ति स्थापना के लिअे आओगे ?"

"हा ! जी जरूर आयेंगे।"

"तुम्हे मार पडेगी तो ?"

"हम मार खायेंगे।"

"तुम लोगो में शान्ति सेना की तैयारी है, अिसलिअे तुम सब बहादुर हो।"

"तुमको मैं धन्यवाद देती हू। प्रेम में ही सच्ची बहादुरी है; अिसलिअे कल से हम यहा प्रेम का काम शुरू करेगे। अपने गांव का दुख कैसे कम हो, और हम कैसे सुखी हो सकेंगे, अुसकी भी, साथ मिलकर बाते करेंगे।"

कालिकट से सटे हुअे कन्नन्चेरी नाम के बिलकुल गरीब गाव में शान्ति-सेना के शिविर के लिअे अेक गृहस्थ के दिये हुअे मकान में गाव के बच्चो के साथ तन्मय होकर वात्सल्य भाव से माता आशादेवी जी बाते कर रही थी। आज तो हम सब लोग सपर्क की दृष्टि से गये थे, पर कल से शुरू होनेवाले तालीम शिविर की अिस तरह सहज रूप से आज ही शुरुआत हो गयी।

आज समाज मे अशान्ति है और तालीम शाला में है। शाला की तालीम को समाज में शान्ति स्थापना के लिअे बाहर आना पडेगा। अिसलिअे अखिल भारतीय सर्व सेवा सघ में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ विलिन हो गया, वह अिसका बहुत ही बडा सूचक है।

केरल में नये चुनाव आ रहे है और सभी पार्टियां अपने-अपने तरीको से प्रचार करने में लग गयी है। अिस समय लोक-तन्त्र के बुनियादी

(शेषाश कवर पृष्ठ ३ पर)

[राष्ट्रभाषा का प्रश्न बडा महत्वपूर्ण है। अुसका हल खोज निकालना आज की अेक समस्या बन गयी है। श्री अण्णासाहब ने नई तालीम परिसवाद के सामने कुछ विचार रखे थे। अुन्हे शिक्षा-जगत के सामने हम अिसलिअे पेश कर रहे हैं कि जिससे, हम अिस समस्या पर गहरा चिन्तन करे। अिसका हल शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। —संपादक]

माननीय श्री जुगतराम दवे की तरफ से राष्ट्र की अग्रेजी विषयक नीति क्या रहे, अिस सबध का अेक निवेदन ३ से ६ दिसबर तक सेवाग्राम में हुअे नअी-तालीम-परिसवाद के समक्ष पेश किया गया था, जिसके अूपर हम सब लोगो को गभीरता से सोचना चाहिये। अिसके बारे में अेक आदोलन के रूप में कुछ कदम लेने की आवश्यकता है। अिस तरह का आदोलन चलाना आज के नई तालीम के कार्यक्रम का अेक मुख्य अग माना जा सकता है। जो विचार श्री जुगतराम भाअी ने रखे हैं अुनके पूरक के रूप में मैं कुछ विचार देश के सामने रखना चाहता हू। भाअी श्री जुगतराम का मतव्य अिस लेख के अन्त में दिया जा रहा है।

दक्षिण भारत के लोगो को अुत्तर भारत की हिन्दी, जो भारत की राष्ट्रभाषा भी मानी गयी है, सीखनी चाहिये, यह सही है और अुत्तर भारत के लोगो को दक्षिण की अेक भाषा सीख लेनी चाहिये, अिस विचार को भी हमने सिद्धात की दृष्टि से मान्यता दी है। लेकिन अुसको सही मान्यता देनी हो तो दक्षिण की अेक भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना होगा, अैसा मुझे तीव्रता से लगता है। राष्ट्रीय भाषा के लिअे यदि अग्रेजो को हटाना हो तो राष्ट्र के सारे व्यवहार सिर्फ हिन्दी भाषा में चलाने का विचार करने के बदले हिन्दी के साथ-साथ अेक दक्षिण की भाषा भी राष्ट्रभाषा मानी जाय, अुसको हमारे सविधान में भी राष्ट्रभाषा का स्थान रहे और सारे देश को राष्ट्रभाषा के नाते दो भाषाओ को सीखना अनिवार्य किया जाय।

लोग यह जरूर पूछ सकते हैं कि दक्षिण की कौन-सी अैसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा का रूप ले सकती है। यदि दक्षिणवाले, जिनकी भिन्न-भिन्न चार मुख्य भाषायें हैं, आपस में मिलकर सर्व-सम्मति से अेक भाषा निश्चित करते हैं तो अुसी भाषा को हमें अपनाना चाहिये, अन्यथा दक्षिण भारत में ज्यादा बोली जाने वाली जो भाषा हो अुसे राष्ट्रभाषा मानना चाहिये। अिस प्रकार देश में दो राष्ट्रभाषाओ का अभ्यास आरभ किया जाना चाहिये। लोकसभा में हिन्दी के साथ-साथ वह भाषा भी राष्ट्रभाषा के नाते चलायी जाय, और जो लोकसभा की कार्यवाही रखी जाय वह भी दो भाषाओ में लोगो को मिलती रहे।

अग्रेजी भाषा का गैरवाजबी स्थान अिस देश से यदि हटाना है तो वह दक्षिण भारत और अुत्तर भारत दोनो को समाधान देकर ही हटाया जा सकेगा। और दोनो को समाधान अिसी तरह के हल से मिल सकेगा। धीरे-धीरे अग्रेजी को जो असाधारण महत्व युनिवर्सिटियो व पाठशालाओ में दिया गया है वह आगे कम होता जायगा। आगामी सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर अिस सबध में विचार किया जाय, अैसी मेरी विनती है।

देवनागरी लिपि को यदि सारा देश मंजूर करता है तो वह सारे देश की सब भाषाओं के लिअे हो सकती है। दो भाषायें राष्ट्र-भाषायें रहे और निश्चित काल में अंग्रेजी को अिस देश में स्थानीय व्यवहारो से हटा दिया जाय।

अंग्रेजी के बारे में नीति :
श्री जुगतराम दवे का मतव्य

१. नई तालीम के अनेक तत्व राष्ट्र में श्रद्धा के साथ स्वीकारने योग्य हैं। अंग्रेजी का महत्व शिक्षा में से हटाना अुनमें से अेक है।

२. लोगों का शासन से अेव विश्वविद्यालयो से यह मांगने का पूरा अधिकार है कि नीचे से अूपर तक का अेव सब विषयों का शिक्षण मातृ-भाषा में ही दिया जाय और राज्य कार्यों के संचालन के लिअे और न्यायालयों में मातृभाषाओं का ही अुपयोग हो। शासन की नौकरियो के लिअे जो परीक्षायें ली जायें, वे मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा में ही ली जायें।

३. यह सुधार जो राष्ट्र के विधान में स्वीकार किया गया है और जिसे डा० राधाकृष्णन् व यूनिवर्सिटी कमीशन जैसे अधिकारी मंडल ने भी दुहराया है, अमल में नहीं लाया जा रहा है। अिसी से जनता को अपने बच्चो के भावी जीवन के संबंध में चिन्ता रहना और अंग्रेजी भाषा अुन्हे सिखायी जाय अैसी अिच्छा रहना स्वाभाविक हो गया है। शासन तथा विश्व-विद्यालयों की अुलटी नीति से जन्मी हुअी अिस लोकअिच्छा को लोकमत बताकर सत्ता-धिकारी वर्ग शिक्षा में अंग्रेजी को कायम रख रहा है। यह दुश्चक्र दिन-प्रतिदिन आगे ही बढ रहा है और अंग्रेजी को पक्का बनाने के लिअे अिसे छोटे बच्चों के शिक्षण की प्राथमिक कक्षाओं तक भी जानेका आन्दोलन किया जा रहा है और अुसे लोकमत का नाम दिया जाता है, लेकिन यह सही लोकमत नहीं है। अूपर बताये दुश्चक्र को छेदने से ही सही लोकमत प्रकट हो सकेगा।

४. अंग्रेजी को बनाये रखने की अिच्छा आजकल दाक्षिणात्य प्रदेशों में व्यक्त की जा रही है। अिसका कुछ समाधान शासनों और विश्वविद्यालयों का कार्य मातृ-भाषाओं में करने से हो सकेगा। लेकिन पूरा समाधान तो दाक्षि-णात्य भाषाओं को अुत्तर प्रदेशों में आदर के साथ सीखने का भरसक प्रयत्न करने से ही हो सकेगा। महात्मा गांधीजी ने जिस धर्म-बुद्धि के साथ हिन्दी का प्रचार चलाया था अुसी धर्म-बुद्धि के साथ दक्षिणी भाषाओं का प्रेम अुत्तर में बढाने का कार्य अविलम्ब हाथ में लेना चाहिये।

५. अंग्रेजी का आश्रय बनाये रखने के कारण देश में विभिन्न विद्याओं की परिभाषा और पाठ्य पुस्तकें तैयार करने का प्रयत्न बहुत ही कम मात्रा में चल रहा है। यह प्रयत्न शीघ्रता के साथ हाथ में लेकर खोये हुअे समय का बदला प्राप्त कर लेना चाहिये।

आज तक यह विचार सिर्फ स्थानिक संदर्भ में और राजकीय कारणों को आगे करके निब-लता रहा है। राष्ट्रीय दृष्टि से और विशेषत: शिक्षा और संस्कृति की दृष्टि से अिसका प्रतिपादन कम हुआ है। अिसका फल कलुषित राष्ट्र-जीवन के स्वरूप में हम भुगत रहे हैं।

सर्व सेवा संघ के द्वारा, जिसने अब नयी तालीम का संचालन अपने हाथ में लिया है, राष्ट्रीय स्तर पर अिस का शीघ्र आन्दोलन शुरू कर दिया जाय अैसी अपेक्षा रखी जाती है।

बच्चे की देखभाल और शिक्षा

जानकी देवी देवीप्रसाद

[बच्चे की देखभाल करने, अुसके शिक्षण की योजना बनाने और अुस योजना को कार्यान्वित करने का फर्ज पहले तो माता पिताओं का है, और अुतना ही शिक्षकों का है। बालक जब पाठशाला में जाने की अुम्र में नहीं होता, तब से ही शिक्षकों को अुसकी शिक्षा के बारे में सोचना प्रारभ करना चाहिये। गाधीजी ने कहा ही था कि व्यक्ति की शिक्षा मा के गर्भ से ही प्रारभ हो जाती है। नई तालीम की यही योजना होनी चाहिये। सुसस्कृत समाज में शिक्षा की योजना, आज शाला में जानेवाले बालकों के लिअे ही केवल नहीं बनती, बल्कि वह तो अुन बालकों के लिअे भी है जो कल शाला में आनेवाले हैं। जहा शिक्षण-कार्य के लिअे जितना विचार-चिंतन होता है, वहा शिक्षण की योजना बनाने के पहले बालक को समझने का प्रयत्न किया जाता है। अगर माता पिता अपने बालकों की देखभाल और शिक्षा की चिन्ता करना चाहते हैं और अगर शिक्षक अपने विद्यार्थियों की, तो अुन्हें बालकों को समझना अत्यन्त आवश्यक होता है। बालकों को समझने के लिअे सबसे आवश्यक है, माताओं और शिक्षकों के बीच सहयोग। आम माता अपने बच्चे का हमेशा निरीक्षण तो करती रहती है, किन्तु वह बाल मनोविज्ञान की बारिकियों को वैज्ञानिक तौरपर नहीं समझती। अध्ययनशील शिक्षक अुसके मनोविज्ञान को समझ सकता है, किन्तु वह बालक का हर समय निरीक्षण नहीं कर सकता। अिसलिअे दोनों के सहयोग से ही शिक्षा का सच्चा वातावरण बन सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि से जिस वस्तुनिष्ठ (आब्जक्टिव्) वृत्ति की आवश्यकता है, वह शिक्षा शास्त्री के पास होती है और बाल-मनोविज्ञान को सयानों के मापदड से बचाने के लिअे माता की सवेदना और प्रेम चाहिये।

'नई तालीम' पत्रिका में अिसी दृष्टि को लेकर, अेक लेखमाला देना प्रारभ किया जा रहा है। अिसमें माता की शिक्षा से प्रारभ करके, शिशु का निरीक्षण और अुसके स्वभाव की बुनियाद पर देखभाल और शिक्षण की योजना और कार्यक्रम कैसे हो सकते हैं, अिसकी विस्तृत चर्चा करने का प्रयत्न किया गया है। बालक के प्रारंभिक जीवन से लेकर अुसके ११ वर्ष तक की चर्चा हम अिस लेखमाला में करना चाहते हैं। आशा है कि अिसके द्वारा शिक्षकों में बच्चों का वैज्ञानिक निरीक्षण करने की दृष्टि को मदद मिलेगी। हमारी प्रार्थना है कि चिन्तनशील मित्र अपने विचार आदि अिसके बारे में हमें लिखते रहें।

—सपादक]

"जो भी नअी पिढ़ी के कल्याण की कामना करते हो, अुन्हें माताओं की शिक्षा को सबसे महत्व का काम समझना चाहिये।" पेस्तलॉजी के अिस वाक्य को अब डेढ सौ साल बीत चुके हैं। अिस अर्से में शिक्षा जगत् में शैशवावस्था के बच्चों की शिक्षा का महत्व अधिकाधिक समझा गया है। कअी बड़े-बड़े शिक्षा-विशेषज्ञों ने अिस विषय का व्यापक और गहरा अध्ययन तथा प्रत्यक्ष काम किया। मनोवैज्ञानिकों ने अिस क्षेत्र में विशिष्ट शोध का काम किया, विभिन्न स्तरों और विभिन्न परिस्थितियों में बच्चे के मनोविकास का बारीकी से अध्ययन हुआ, जिसके फलस्वरूप अुसका अेक सपूर्ण शास्त्र आज हमें अुपलब्ध हुआ है। अिस अुम्र के बच्चों के शारीरिक विकास-क्रम और अुसमें होनेवाली कमियों और बीमारियों का वैद्यशास्त्र ने भी अलग तौरपर अध्ययन करके शिशुसंगोपन और बालारोग्य की अेक विशिष्ट शाखा बना ली, जिसको अंग्रेजी में पीडियाट्रिक्स् कहते हैं। ये सब शास्त्र अिस विचार की अेक यण्ठ से

घोषणा करते हैं कि शिशु की अत्यन्त अपरिहार्य आवश्यकता अपनी मां, या जहा यह सभव न हो तो वहा मातृस्थान पर अेक धात्री के प्रेम-युक्त लालन-पालन की है। बच्चे के स्वास्थ्य और अुसके स्वभाव निर्माण और अिसके द्वारा अुसके सारे भावी जीवन की बुनियाद अिन शुरू के सालों में ही पड जाती है। और अुसपर मा का ही सब से अधिक प्रभाव होता है। यह अेक वैज्ञानिक तथ्य है और अुससे पेस्तलॉजी के अुपर्युक्त वाक्य की पुष्टि और समर्थन होता है। शिक्षा का काम करनेवालों का फर्ज अिस अुम्र के बच्चो की शिक्षा के विषय में अितना-मात्र है कि वे अिन वैज्ञानिक खोजों से प्राप्त जानकारी का लाभ माताओ तक पहुचा दें और मातृत्व के अपने महत्वपूर्ण कार्य को अधिक सुचारु रूप से करने में अुनकी मदद करें। आम तौर पर अैसा माना जाता है कि मा बनने मात्र से, शिशु को जन्म देने मात्र से-बच्चे के लालन-पालन करने की योग्यता और अधिकार प्राप्त हो जाता है। अिसमें कोअी शक नही कि अैसा होता भी है। यह प्रकृति की अपार कृपा है कि मा के हृदय में बच्चे के प्रति जो अत्यत प्रेम भर जाता है, अुसी से वह अपने कर्तव्य पालन में बहुत कुछ समर्थ हो जाती है। आवश्यकताओ के कारण और अनुभवों के द्वारा वह बहुत कुछ सीख लेती है। फिर भी आज के सामाजिक जीवन में जो द्वद्व है, मन की चचलता और व्यस्तता है, अुनके और अज्ञान के कारण माताअें कितनी ही भूलें कर बैठती हैं। परपरागत आदर्श और मूल्य 'पुराने' कह कर छोड दिये गये। जो नये विचार अपनाये गये, अुन्हे वस्तु-निष्ठ और वैज्ञानिक बनाने का सामर्थ्य भी नहीं रहा। अिन सब के कारण कअी दफे बच्चे की हर अेक हलचल के बारे में मा अितनी चिन्तित होती है कि जीवन बोझ बन जाता है, बच्चे का भी नुकसान करती है, अिसके अुल्टा कअी दफे अुसकी अुपेक्षा होती है। अेक बहुत ही साधारण अुदाहरण लें तो हमारे देश में आम तौर पर बच्चे को दूध पिलाने में नियम या समय का कोअी ख्याल नही रहता है। बच्चा रोता है तो वह कभी दफे बदहजमी के कारण पेट के दर्द या अन्य किसी कारण से भी होता है। लेकिन मा को किसी से बात करनी है या बच्चे को चुप करना है तो अुसे अेकदम दूध पिला देती है, जो अुस समय नुकसान ही करेगा। अगर शुरू से ही बच्चे का दैनिक कार्यक्रम ठीक सोच समझ कर बनाया जाता और अुसका पालन होता तो वह सिर्फ बच्चे के स्वास्थ्य के लिअे नहीं, घर में शान्ति और प्रसन्नता का वातावरण कायम रखने के लिअे भी अच्छा होता है, मा को दूसरे कामो के लिअे भी फुरसत मिलती है।

बच्चे को चुप करने का अेक दूसरा साधारण अुपाय अुसे झूले में डालकर जोर से झुलाना है। बच्चा चुप हो जाता है तो लोग समझते हैं कि अुसे आराम मिला, वह सो गया। असल में कअी दफे वह डर के मारे चुप होता है, या अुसे अैसे झटके पहुचते हैं जिनसे वह रोने के लिअे असमर्थ हो जाता है। आजका वैद्यक-शास्त्र बच्चा को झुलाने के सख्त खिलाफ है।

अज्ञान या समय के तकाजे के कारण बहुत दफे बच्चों के कपडे की सफाअी अित्यादि की तरफ भी पूरा ध्यान नही दिया जाता। काफी समय अुसे पेशाब और गन्दगी में पडे रहने देते हैं। अिससे जो खुजली, सर्दी अित्यादि बीमारियां हो सकती हैं, अुससे बच्चे के स्वास्थ्य और अपने समय का भी ज्यादा नुकसान हो जाता है।

शायद पुराने समय में जब जीवन ज्यादा शान्त और कम अुथल-पुथलवाला था, ये समस्यायें अितनी विकट नहीं होती थीं। हमारी कुछ परंपरायें भी अितनी अच्छी थी कि आज का शास्त्र भी अुनकी तारीफ करता है।

लेकिन अब हमें सोचना आज की परिस्थिति में है। आज जो वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त हुअी है, अुसका पूरा पूरा लाभ सबको मिलना चाहिये। शहरों में माताओं को जब चाहिये, अुचित सलाह और मदद मिलना मुश्किल नहीं होता है। देहात में माताओं को अिस विषय में मदद पहुंचाने का काम शिक्षकों और शिक्षा के काम में रुचि रखनेवालों का है। अुससे हर अेक माता कअी सारी भूलों से बच सकती है, अपने बच्चे के विकासक्रम और विभिन्न अवस्थाओं में अुसकी विभिन्न आवश्यकताओं को समझने से वह अधिक सफल रूप से अुसके लिअे अनुकूल वातावरण तैयार कर सकती है, अुसमें ठीक वृत्तियों का निर्माण कर सकती है।

हमारे देश में बच्चों के प्रति आम तौर पर आदरभाव की कमी है। बच्चा है, तो वह कुछ जानता-समझता नहीं, अुसकी अिच्छाओं का बहुत अधिक मूल्य नहीं। बड़े जैसा चाहें वैसा अुसके साथ बर्ताव कर सकते हैं। बहुत दफे अत्यंत स्नेहशील मां-बाप भी बिना सोचे समझे अपने बच्चों से तिरस्कार भरी अपमानजनक बातें कह देते हैं। अुससे बच्चे के मन में जो चोट पहुंचती है, वह वे लोग समझते नहीं। बच्चे को जैसा बर्ताव दुनिया से मिलता है, वैसी ही वृत्ति अुसे दुनियां के प्रति हो जाती है। अिसलिअे वैसी चोटों से वह भी अनादर और लापरवाही का बर्ताव करना शुरू कर देता है। यह मां-बाप को सह्य नहीं होता है, फिर डांटना-डपटना व मारना-पीटना होता है; संघर्ष शुरु हो जाता है। जरा भी समझदारी से अगर काम लिया जाता तो बच्चा और मां-बाप दोनों अिन मुसीबतों से बच सकते हैं। बच्चे की मनोवृत्ति और स्वभाव-निर्माण पर अैसे वातावरण का प्रभाव और भी अधिक गंभीर चिन्ता का विषय है। असल बात यह है कि मां-बाप अपने बर्ताव के परिणामों के बारे में सचेत नहीं होते हैं। मां-बाप या घर के लोगों के द्वारा ही नहीं, समाज में भी बच्चों के व्यक्तित्व की अवहेलना होती रहती है। बड़े बच्चे के साथ खेल या प्यार करते समय अक्सर यह नहीं सोचते कि वह खेल या प्यार अुस समय बच्चे को जचता है कि नहीं, बच्चा अेक तरह का खिलौना ही समझा जाता है। गैर लोग अुसे चूमते हैं, चिबुक पकड़कर हिलाते हैं या और कुछ करते हैं तो वह बच्चे को अच्छा नहीं लगता है, वह अपना प्रतिषेध व्यक्त करता है, लेकिन अुस प्रतिषेध की कोअी कद्र नहीं की जाती। अिसी तरह जाने-अनजाने कितने ही मौकों पर हम बच्चे की भावनाओं का अनादर करते रहते हैं; क्योंकि वह असहाय और दुर्बल है, अुसकी अिच्छाओं की परवाह नहीं करते हैं। आजकल जापान से आये हुअे अेक मित्र हमसे कह रहे थे, वहां अुन्होंने देखा कि बच्चों के साथ बड़ी अिज्जत का व्यवहार होता था। कलकत्ता पहुंचते ही अुन्होंने जो देखा कि बच्चों से अपमान के शब्द बोले जाते हैं, अुन्हें अिधर-अुधर हटा देते हैं, तो अुनको अपने देश की अिस नासमझी और भावना की कमी पर बड़ा ही दुख हुआ।

अिन तीन चार दशाब्दियों में शिक्षा जगत् में सब से बड़ी क्रान्ति यह हुअी कि बच्चों के

प्रति जो दृष्टि थी वह बदल गयी, छ: साल के पहले याने स्कूल जाने की अुम्र के पहले की अवस्था की शिक्षा का महत्व समझा गया ।

बच्चे का अपना अेक जगत् है, अुसकी भावनायें, चीजो के प्रति अुसकी दृष्टि बडो से भिन्न है । वह अेक छोटा 'सयाना' नही है । अुसकी आवश्यक्ताओ की पूर्ति का तरीका भी भिन्न होगा । जो बच्चे मानसिक या शारीरिक अवशताओ से पीडित हैं, अुन्हे विशेष सुविधायें और अुपयुक्त शिक्षा पाने का हक है । मानवजाति के सचित ज्ञान का पूरा-पूरा लाभ और श्रेष्ठतम देन आज के बच्चो को मिलनी चाहिये, यह बोध अब समाज में हो गया है ।

आज हमारे देश में माताओ की और अुनके द्वारा शिशुओ की शिक्षा का सवाल और भी कअी सारी बातो के जैसे ही, आर्थिक प्रश्न के साथ जुडा है । बहुत माताओ को अेक दो महीने के शिशुओं को छोडकर बाहर काम के लिअे जाना पडता है । दिन का अेक वडा समय वह जबरन् बच्चे से अलग रहती हैं । वापस घर आने पर भी अुनको घर के आवश्यक काम धन्धो में लग जाना पडता है, वह बच्चे की तरफ पूरा ध्यान नही दे पाती । गरीब परिवारो में अक्सर छोटे शिशुओ को अुनके वडे भाअी-बहन सभाल लेते हैं जो अिस काम के लिअे सर्वथा असमर्थ होते हैं । जहा दादी, नानी का लालन बच्चे को मिलता है, वह काफी सतोपप्रद होता है । नानो-दादी अनुभवी और बच्चे के लिअे मा के जैसे ही प्रेम रखनवाली होती हैं, अुनके पास फुरसत है, जल्दीबाजी के कारण अुन्हे बच्चे को डाट-डपट नही करना पडता है । पुराने तरीके के सयुक्त परिवारो में बच्चो को अकेले छोडने का प्रसग ही नही आता था, घर की कोअी वडी स्त्री अुनकी देखभाल करने के लिअे रह जाती थी । चीन में सयुक्त परिवार की जो प्रथा थी, अुसका श्रीमती पर्ल बक वडा ही सुन्दर वर्णन और प्रशसा करती है । अुनका *कहना है कि वहा अनाथालयो की जरूरत ही नही* होती थी क्योकि मां-बाप न रहने पर भी बच्चा अनाथ नही होता था, वह तो अपने परिवार का था । लेकिन अब तो वह प्रथा नही रही । आज काम करनेवाली माताओ के बच्चो के लिअे अुपयुक्त श्रेश (creche) अित्यादि का प्रबध हर सस्कृत देश में होना चाहिये । हमारा देश अभी अुस स्थिति से काफी दूर ही है । किसान की स्त्री तो अपने बच्चे को खेत में ले जाती है, जो घरपर छोडने से कही ज्यादा अच्छा ही है ।

आज के शिक्षा-शास्त्रियो और मनोवैज्ञानिको का मत है कि छोटे शिशुओ को दिन का ज्यादा समय सस्थाओ में रहना भी ठीक नही है, अुन्हे अपने घर में ही मा का पूरा ध्यान और प्रेम सतत मिलते रहना चाहिये । "सामान्य स्त्रियों में मातृत्व की भावना बहुत प्रबल होती है और जब वह खुद मा बन जाती है तो यह अपने ही बच्चे के अूपर केद्रित होती है, अुसमें बच्चे की रक्षा और पालन करने की अुत्कट अिच्छा होती है । यह माता का विशिष्ट कार्य है, जिसके निर्वहण में अुसे अैसी अेक तृप्ति और आनद का अनुभव होता है जो मनुष्य की अनुभूतियो में शायद सब से निराली है । अिन भावनाओ की शक्ति अुसे और किसी से ज्यादा अपने बच्चे के पालन के लिअे समर्थ बना देती है । वह मा जो बच्चे को छोड कर काम पर जाने के लिअे बाध्य होती है, अपनी स्वाभाविक अभिलाषाओ की पूर्ति न होने के कारण मानसिक अस्वस्थता

की शिकार बन जाती है। या अुसे अपने बच्चे का पालन और किसी के अूपर छोड देना पडता है, अुसकी अपनी जिम्मेदारी का बोध कम होता है। ये दोनों ही बातें अुसके लिअे नुकसानदेह हैं।

"और बच्चे का क्या होता है?"

"अुसके लिअे तो यह और भी कही ज्यादा गंभीर बात है। क्योंकि अुसपर सब से शुरू में जो छाप पडती है, वही ज्यादा गहरी होती है। अुसके शुरू के अनुभव ही अुसके भावी जीवन पर ज्यादा असर करते हैं, चाहे वे लंबे अर्से के बाद ही प्रकट हों। अुसका पालन कहां पर और कौन करता है, अिसपर अुसका कोअी वश नही है; वह पूरा-पूरा दूसरों की ही दया पर निर्भर रहता है।

"वह शिशु-मंदिर जहा अुसको रखा जाता है, अुसके घर से कही अच्छी जगह होगी, वहां रोशनी और हवा का अच्छा प्रबंध होगा, सफाअी होगी, शिक्षिकायें स्नेहशील और कार्य-दक्ष महिलायें होगी। लेकिन यह सब मिलकर भी अुसको अपनी मां के नजदीक रहने की तृप्ति और सुरक्षा का बोध नही दे सकते हैं। अलावा अिसके, अुस अवस्था के शिशु के लिअे यह नितान्त आवश्यक है कि अुसे किसी अेक व्यक्ति की सेवा और प्रेम का आधार मिले, अुन व्यक्तिओं के बदलते रहना—जैसे कि संस्थाओं में अनिवार्य होता है—अुसके लिअे अच्छा नहीं होता।"*

कअियों का मत है कि अेक सभ्य देश में अिस प्रकार माताओं को बच्चों को छोडकर जाने की परिस्थिति होनी ही नही चाहिये। बच्चा दो साल का होने के बाद वह धीरे-धीरे मां के अूपर कम निर्भर होता है। तब अुसके लिअे दिन का कुछ समय अेक अच्छी बालवाडी में बिताना रुचिकर और अुपयोगप्रद होगा। तब तक अुसे घर के वातावरण में ही अच्छी देखभाल मिलनी चाहिये। यह तभी संभव होगा जब समाज की रचना अैसी होगी कि कोअी भी मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं से वंचित न रहे, हर अेक मां-बाप अपने बच्चों को जिन्दगी में असर करने वाला सम्पूर्ण और सुन्दर बाल्यपन दे सकें।

लेकिन आर्थिक प्रश्नों का परिहार अिस लेख का विषय नही। नही ही बच्चों के लालन-पालन में गरीबी सब से महत्व का सवाल है, बशर्ते कि आत्यंतिक अभाव ही न हो। अगर मां-बाप का सस्कार अच्छा है, परिवार के सदस्य अेक दूसरे से प्रेम और आदर करते हैं, वह घर गरीब होने पर भी वहां के बच्चों को प्रेम और सुरक्षा का बोध मिलता है, अुनका बचपन सुखी और भावनाओं की दृष्टि से समृद्ध हो सकता है। अिसके अुल्टा, धनी घरों की सब भौतिक सुविधायें प्राप्त होने पर भी अगर मां-बाप बच्चे के प्रति अुदासीन और अपने ही भोग-विलास के पीछे लगे हों, तो अुस बच्चे का जीवन अत्यंत दुःखमय और अभावग्रस्त हो सकता है। कहने का मतलब यह है कि घर का वातावरण ही बच्चे के मानसिक विकास पर सब से ज्यादा प्रभाव डालता है। बाह्य जगत् या घर के बाहर के समाज के प्रति मां-बाप की जो वृत्ति है बच्चे की भी वही रहती है। अुनकी आध्यात्मिक या धार्मिक भावनायें, सौंदर्यबोध, दैनिक जीवन

(शेषांश कवर पृष्ठ ३२२ पर)

*अेडना मेलॉर—अेज्यूकेशन फ्रॉम अेक्सपीरियेन्स अिन द अिन्फेन्ट स्कूल अियर्स, पृष्ठ ३३–३४।

[नवम्बर १९५९ के अंक में आसाम के अुत्तर लखीमपुर के ग्रामनिर्माण कार्य का ब्यौरा दिया गया था। वह ब्यौरा अुस क्षेत्र में होनेवाले निर्माण कार्य की रूपरेखा के तौर पर था। वहां के तीन ग्रामदानी गांवों में जो काम पिछले वर्ष हुआ है अुसका अहवाल यहां दे रहे हैं। बाहर की कम से कम मदद से और गांव की स्वयं प्रेरणा से यह काम हो रहा है, यह बात अिस अहवाल से स्पष्ट दीखती है। हम यह चाहते हैं कि अिस प्रकार अगर अन्य क्षेत्रों के ग्राम-निर्माण कार्य की गहरी जानकारी नई तालीम के कार्यकर्त्ताओं को मिले तो अुससे बहुत लाभ होगा। —सम्पादक]

(१) पदमपुर का निर्माण कार्य

परिवार १४, जनसंख्या ७८, कुल जमीन २२४ बीघा ४ कठा १० लोसा।
छात्र ३२, हाईस्कूल में १, मिडोल स्कूल में ५, प्रायमरी स्कूल में २६।

यहां की जनता ने १२ वर्ष के अूपर अिस हिसाब से प्रति व्यक्ति २ बीघा १ कठा, अिस प्रकार जमीन का वितरण किया। यह वितरण, सामूहिक रूप से की जानेवाली २० बीघा जमीन अलग निकालकर किया गया।

सामूहिक खेती में १०० मन धान पैदा हुआ जिसमें से ५० मन धान बेचकर गांव की जमीन का सरकारी लगान चुकाया और शेष ५० मन धान ग्राम-विधान-सभा के पास रखा गया है। शेष जमीन (बीघा–२०४-४-१०) व्यक्तिगत रूप से वितरित की गयी जिसके धान का अुपयोग प्रत्येक परिवार ने अपने लिअे किया।

सामूहिक खेती में १०० मन धान के अलावा १४ मन अुडद की दाल पैदा हुअी जिसका समान बंटवारा १४ परिवारों में किया गया। गाव से ६-७ मील दूरी पर अिस गाव की जनता ने २० बीघा जमीन में सरसों की फसल ली, जो ६० मन हुअी। वह अभी ग्राम-विधानसभा के पास पडी है।

प्रत्येक परिवार ने अपनी-अपनी खेती में सब्जी के रूप में अेक-अेक कठा में आलू की खेती की। अुसमें अनुमान लगाया गया कि प्रति कठा आलू २८ मन आयेगा। अगले वर्ष के लिअे ३ बीघा जमीन में गन्ने की खेती करने का कृषि-समिति ने निश्चय किया है।

गाव में अेक कस्तूरबा केन्द्र है। वह भी ग्रामदान में शामिल किया गया, जिसकी जमीन ७२ बीघा है। अुसका वितरण अभी तक नही किया गया है परतु अिस जमीन पर मेहनत शुरू कर दी है। अिस वर्ष अिस जमीन में ३ बार हल जोता गया है। अिसके बीज के लिअे ६ मन धान लगेगा अैसा अनुमान लगाया गया है।

गाव में वस्त्र-स्वावलबन की दृष्टि से समिति ने अभी काम चालू किया है। घर-घर में अेंडी का काम चलता है। अेंडी के लिअे लगने-वाले कीडों का पालन घर-घर में किया जाता है।

यहा अेक अबर चरखा केन्द्र ३ महिने के लिअे निर्माण समिति की ओर से चलाया गया। जिसमें यहा के ५ छात्रों ने शिक्षा प्राप्त की। अिसके अलावा २ छात्रायें बाहर से भी आयी थी अभी गांव को अंबर चरखा मिला नही।

(२) ब्रमिसि गांवका निर्माण कार्य

परिवार	८	जनसख्या	४५
कुल जमीन	११३ बीघा ।	छात्र	१७ ।

यह ग्रामदान दिनाक २७-४-५८ को हुआ था। ग्रामदान के पहले यहा की जनता ने २८ बीघा जमीन में आहू धान पैदा किया था, जो ग्रामदान होने के बाद ८ परिवारो में समान रूप से बाट दिया गया। वह धान २३० मन हुआ था। जब धान का वितरण किया गया तब गाव की जनता धान की चिन्ता में ही थी, परन्तु ग्रामदान के बाद ही यहा की जनता ने गाव का अेक कुटुम्ब बना लिया था। अब यहा अेक पेट-भर खाये और अेक भूखा सोये अैसा नही होगा। सबको भोजन मिलना ही चाहिये। अब हम ८ परिवार अेक परिवार में बदल गये हैं। अिस प्रकार हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया का यह प्रथम दर्शन हुआ और ग्रामदान के पहले का २३० मन अनाज समान रूप से बाट कर लोगोने गाव को अन्न सकट से बचा लिया।

(१) ग्रामदान के बाद सर्व प्रथम पानी की सहूलियत पर ध्यान दिया गया। दो तालाब साफ किये गये, जिनमें ३० व्यक्ति १५ दिन तक श्रम देते रहे, जिसका मूल्य २५०) रुपये लगाया जायेगा। फसल के समय पर ३ बैल बीमार पडे जिनका अिलाज गांव की जनता ने प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा किया।

मकानो के लिअे सामूहिक रूप से जनता २५०० पूली घास काटकर लायी। घास का खेत ७० रुपये देकर खरीद लिया था। घास काटना और लाना, अिसका मूल्य ३०) रुपये होगा।

सामूहिक रूप से अेक भडार-घर बनाया गया और अुसमें सारा अनाज भर दिया गया। अब भडार भर गया है अिसलिअे शेष अनाज घर घर में रखा गया।

यहा परिवार ८ हैं अतः अपनी ११३ बीघा जमीन अिन्होंने सामूहिक पद्धति से ही जोती।

४ बीघा जमीन में १० मन धान का बीज बोया गया। बैल जोडी ३ थी। श्रावण माह में ३ बैल बीमार पडे। अिस कारण हल ४० दिन बद रखना पडा। काम सिर्फ ३ बैलो से ही लिया गया।

(२) अिस ४ बीघा जमीन में डाले गये बीज को ८१ बाघा में लगाया गया, जिससे ५५० मन फसल हुई। यह सारा धान सामूहिक रूप में जमा है। अिस अनाज में से प्रतिमास ८ परिवारो में अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार अनाज निकाला जाता है। अनाज के अलावा घर-गृहस्थी में लगनेवाली खाने-पीने की चीजो के लिअे अिस भडार ने २२ मन ३ सेर धान ६) मन रुपये के हिसाब से बेचा और अुस से वह चीजें लाकर समान रूप से बाट दी। जिस समय जनता ने अनुभव किया कि गाव में अेक दूकान की भी आवश्यकता है, जिससे गाव को कम दाम में नित्य के अुपयोग की वस्तुयें मिल सके। बाहर जानेवाला मुनाफा गाव के लिअे बचा रहेगा और जो लाभ होगा वह गाव का होगा। गाव की लक्ष्मी किस प्रकार गाव में ही रहकर गाव समृद्धिशाली बन सकता है अिसका यह दर्शन है।

(३) गाव में सबके मकान ठीक ढग के हो। अुनमें से वर्षाऋतु में पानी चूकर जनता के स्वास्थ्य में बिगाड न होने पाये अिस

के लिअे २५० लोगों ने घास की पूलिया लाकर मकानों की छतों को ठीकठाक किया ।

(४) गाव के कुल १७ बालक पढते हैं । जिनमें हाओस्कूल में ५, मिडील में ७ और प्रायमरी में ५ छात्र हैं । प्रायमरी में कुछ छात्रायें भी पढती हैं । अिन सब छात्रों को किताबों के लिअे गाववालों ने करीब २००) रुपये का खर्च किया है । गाव में से निरक्षरता का प्रमाण घटे और साक्षरता का प्रकाश आवे अिस दृष्टि से अिनकी यह कार्य सराहनीय है । अिनका यह चौथा क्रांतिकारी कदम है ।

जनता ने ६ बीघा जगल तोडकर खेत तैयार किया । यह खेत सामुदायिक रूप से जोतेंगे अैसा तय हुआ । अुसमें जो फसल आवेगी असे बेचकर गाव की अुन्नति के लिअे वह पैसा काम में लाया जावेगा ।

आगामी वर्ष के लिअे २४ बीघा जमीन में मेहनत की गयी । अिस वर्ष ६ बीघा में अुडद बोया गया था परंतु वह फसल नष्ट हो गयी । आधा बीघा में तिल की फसल बोयी गयी थी जिसमें १० सेर तिल आया । वह बाट दिया ।

गाव में ६ जोडी बैल थे जिसमें से २ जोडी बैल मर गये । अिसलिअे अेक जोडी किराये से लायी गयी । अिसके लिअे किराया १० मन धान के रूप में देना निश्चित किया गया ।

गाव ने अपनी दुकान सगठित करने का सोचा है, लेकिन धनाभाव से वह नही हो सका । निर्माण कार्य में जनता की जो अेक आत्मीयता की लगन देखी अुसके प्रभाव से १५००) रुपये देने के लिअे निर्माण-समिति से सिफारिश की गयी है ।

वस्त्र स्वावलंबन के लिअे अभी कुछ तय नही हुआ, परतु फिर भी हिसाब लगाकर देखा गया कि अेक साल के लिअे गाव को ७२० गज कपडा लगेगा । अुसमें से दो-तिहाओी कपडा गाव-वाले आज भी अपने गाव में तैयार करते हैं । यह अेंडी और मूगे का है । शेष अेक-तिहाओी कपडे के लिअे बाजार से सूत खरीदा जाता है । जनता का कहना है कि यदि हमें अबर चरखा मिल जाता है तो अेक-तिहाओी कपडे के लिअे लगनेवाला सूत जो आज बाजार से लाया जाता है, हम अुसका भी निर्माण गाव में ही कर सकेंगे । अबर के लिअे, अबर आने के पहले ही अिस विचारी जनता ने अपने गाव से अेक व्यक्ति अबर ट्रेनिंग के लिअे भेज भी दिया था । वह निर्माण समिति की और से चलाये गये अबर वर्ग में ट्रेनिंग लेकर आया । यहा प्रत्येक गुरुवार को नामघर में भजन व प्रार्थना का अभ्यास चलता है ।

यहा की जनता नई तालीम शिक्षा केन्द्र की आवश्यकता को महसूस करती है ।

जनता का कहना है कि कर्जा लौटाने के लिअे, बैल खरीदने के लिअे और दुकान आदि के लिअे अगर आर्थिक सहायता मिल जाती है तो गाव अपने अथक परिश्रम द्वारा अपने पडोसियों के लिअे अेक आदर्श सामने रख सकेगा ।

(३) सरायदलनी का निर्माण कार्य

परिवार	१०	जनसख्या	४४
कुल जमीन	८८ बीघा	छात्र	१२

यहा की जनता ने अपनी खेती सामूहिक रूप से की है । ग्रामदान के बाद अिस गाव में अेक नया ब्राह्मण परिवार आकर बस गया, अेक अन्य परिवार दूर से लाकर जनता ने अपने गाव में बसाया ।

खेती के लिअे जनता के पास ८ जोडी बैल थे । परतु बैलो की बीमारी के कारण खेती का

काम २० दिन तक बंद रहा। आश्विन माह के ५ को ७० बीघा जमीन में धान की फसल बोयी गयी। जो दो नये परिवार यहा आये थे अुनमें से अेक को गाव से दूर १६ बीघा जमीन थी। वह दूसरे को लगाने को दे दी। गाव में सब्जी आदि के लिअे जमीन नहीं थी अिसलिये १२ बीघा जमीन दूसरे से लेकर अुसमें सरसों का खेत किया परन्तु वह फसल नष्ट हो गयी। जो सब्जी स्वावलंबन की दृष्टि से पैदा की गयी थी अुसका हिसाब नहीं है।

अिस साल का अुत्पादन थोडा-सा कम आया है। अुसका अेक कारण बैलों की बीमारी थी और दूसरा कारण चार बीघा जमीन की फसल बिलकुल ही कम आयी।

खेती की मेहनत, फसल बोना, धान काटना, हल आदि जोतना, आदि काम सामूहिक रूप में किये गये और प्राप्त अनाज परिवारों को व्यक्तियों की संख्या के हिसाब से बांट दिया गया। अिसमें से ग्राम-पूंजी के लिअे २०० मन अनाज अलग रख दिया है।

गन्ने के लिअे चार बीघा जमीन में मेहनत की गयी है। *अिस वर्ष अुसमें गन्ना लगाया जायेगा।*

कपास के लिअे भी ३ कठा जमीन में तैयारी करके रखी गयी है। आहू खेती के लिअे व्यक्तिगत रूप में हल जोता। यह काम ग्राम-सभा के विचार से किया गया है।

यहा दूर से जो दो परिवार आये थे अिसी वर्ष चले गये क्योंकि सामूहिक खेती में श्रम करना अनिवार्य था और ये लोग श्रम से बचना चाहते थे। श्रम से अंग चुराते थे। हम परिश्रम न करे और सब सुविधायें भी हमें प्राप्त हों अैसी अुनकी प्रवृत्ति थी फिर भी गाववालों ने अिन्हें निकाला नहीं, वे स्वयं ही चले गये।

शुरू में अेक माह धुनाई और कताई का काम चालू किया गया था परंतु रुई की कमी के कारण वह बंद हो गया।

जनता ने ट्रंक रोड से गाव तक अेक रास्ता अिस वर्ष में बनाया, जो पहले भी था, परन्तु अभी और भी मजबूत बनाया गया है।

गौशाला, धान कुटाई, मधुमक्खी पालन, तेल-घानी और वस्त्र-स्वावलम्बन अित्यादि अुद्योग यदि गाव में रहें तो हम अपने गाव की अुन्नति भली-भांति कर सकते हैं अैसा जनता का कहना है। अुसी तरह गाव में अेक बुनियादी स्कूल खोलने का भी जनता का अिरादा है। परंतु यह कार्य अिमारत से शुरू करना है। अतः अुसके लिअे पैसा चाहिये। गाव में छात्र १२ हैं जिसमें २ छात्र हाईस्कूल में जाते हैं और १० छात्र प्रायमरी शाला में।

ग्राम-विधान-सभा १५ दिन में अेक बार सभा करती है और अुसमें नव *निर्माण* की चर्चा होती है।

जनता को सामूहिक दूकान खोलने की अिच्छा है। परंतु पैसों के अभाव से अभी काम रुका है।

पिछले वर्ष में जो खेतों की गयी थी असके लिअे अेक बैल की जोड़ी किराये से लायी गयी थी, जिसका किराया १२ मन धान्य के रूप में दिया गया।

अनाज के अलावा घर गृहस्थी में खाने *पीने की जो वस्तुयें लगती हैं* वह २०० रुपये की अेक बार खरीदकर लायी गयी और परिवारों में वितरण कर दी। यह काम *ग्राम विधान-*सभा द्वारा किया गया परन्तु पैसा के अभाव के कारण यह काम बाद में नहीं चल सका। बाद में ये चीजें व्यक्तिगत रूप में आती हैं।

आज गाववालों के अूपर १५०० रु. कर्ज है। अिसका सूद १५० रुपया होता है।

जो दो परिवार यहा आये थे अुनके चले जाने से अब यहा ८ परिवार और ७२ बीघा जमीन है। जनसंख्या ४४ है।

कुमारप्पाजी का ७० वां जन्म-दिवस

अिस चार जनवरी को श्री. जे. सी. कुमारप्पा का ७० वा जन्म-दिवस पड रहा है। कुमारप्पाजी पिछले कुछ वर्षों से अस्वस्थ है। वे अिस बीमारी के कारण मद्रास के जनरल हास्पिटल में रहते हैं। कुमारप्पाजी गाधीजी के परिवार के अत्यत प्रिय बुजुर्गों में से हैं। नई तालीम परिवार के गुरु-जनो में अुनका स्थान है। अुनके कार्य और जीवन-दर्शन से सभी परिचित हैं। अिस शुभ अवसर पर नई तालीम परिवार की ओर से हम अुन्हे बधाई देते है और अपनी श्रद्धा अर्पण करते हैं। हम सब यह कामना करे कि अुनके जीवन की अिस वेला में अुन्हें अस्वस्थता क कारण जो कष्ट है वह शीघ्र ही मिट जाय। वे प्रसन्न रहें और अपने काम में प्रेरणा देते रहे।

कुमारप्पाजी के बारे में अेक छोटा–सा परिचय यहा अिसलिये देना जरूरी है कि 'नई तालीम' पत्रिका के जो पाठक अुन्हें नही जानते, वे भी हमारी शुभ कामनाओं में सम्मिलित हो सके। अिस शुभ अवसरपर श्री आर कैतान ने कुमारप्पाजी के जीवन परिचय के बारे में अेक पुस्तिका प्रकाशित की है, हम अुसीके कुछ हिस्से यहा दे रहे हैं।

"क्रास अुठाने का मतलब अुस आकार में रखे गये दो डडो की रोज पूजा करना नही है। क्रास का आह्वान है जिन्दगी में सब सुविधा और आराम का त्याग करने का, यहा तक कि अपने परिवार और मित्रों को भी छोड दें, अुस साधना में अपने प्राणों को भी खो दें।" कुमारप्पाजी ने अिन शब्दो को कहा ही नही बल्कि अुन्होने अुनपर पूरा-पूरा आचरण किया। जब ये गाधीजी के सपर्क में आये तो "अीसा-मसीह की शिक्षा की व्यावहारिकता के बारे में अुनकी आखें खुल गयी।" अुन्होंने महसूस किया कि आधुनिक मानव को "सत्य की आत्मा के मार्गदर्शन पर निर्भर रहने की आवश्यकता है।" अीसामसीह ने अपने शिष्यों से कहा था। "अुन्हे बहुत कुछ बताना बाकी है, वे अभी पूरे तैयार नही हुअे। सत्य की आत्मा आकर अुनका मार्गदर्शन करेगी।"

कुमारप्पाजी अेक प्रतिष्ठित तमिल अीसाअी परिवार से आये हैं। अुनके माता-पिता अत्यत गुणी थे–मा अेक असाधारण अीसा-सदृश महिला थीं। कोअी ताज्जुब नही कि कुमारप्पाजी ने अेक अच्छी आर्थिक व्यवस्था को "मा की आर्थिक व्यवस्था" के नाम से पुकारा। अुनके पिताजी अेक सुयोग्य अफसर थे। अपने परिवार की बहुत अच्छी देखभाल करते थे, कडे अनुशासन मे विश्वास करनेवाले।

शायद झोपडी में रहने वाले इस व्यक्ति का अेक पथ–प्रदर्शक के रूप में लोग ज्यादा सम्मान करते हैं। अिन दिनो जब यह राष्ट्र अितने कालातिक्रमण के बाद भूमि-हीन खेती के मजदूरो के लिअे, जो अक्सर बेकार रहते हैं और जिन्हे पूरा पूरा काम कभी भी नही मिलता, ग्राम–अुद्योगो का कार्यक्रम अपना रहा है, यह याद करने लायक है कि कुमारप्पाजी ने अुनकी जरूरतो के बारे में पहले सोचा था। और अुन्होने ठीक रास्ते से सोचा। अिस व्यक्तिने, जिसका भूमि के साथ सीधा सबध नही था, राष्ट्र की भूखी जनता से जब अत्यत अर्थपूर्ण बाते कहीं, अुनकी देन और दूरदर्शिता

को हम लोग शायद पूरा-पूरा समझ नही पाये। ओसा मसीह के बारे में "जीवन के पथ-प्रदर्शक" कहते हैं। अैसा लगता है कि अुनके अिस विनम्र अनुयायी ने अुनके जीवन के अिस पहलू का भी ग्रहण किया है।

आखिर जब हम अिस असाधारण व्यक्ति के बारे में सोचते हैं तो अिन्हें अेक शांति-वादी के रूप में समझना चाहिये। बगलोर के गिर्जा-घरो ने अेक दफे श्री. कगुवा और फिर दीनबधु अैड्रूज को अपने अेक मकान में बोलने की अनुमति देने से अिन्कार किया था, वैसे ही अिस शान्तिवादी की, जिसे ओसाई धर्म ने जन्म और प्रेरणा दी थी, बाते सुनने से ये धर्म-व्यवस्थापक अिन्कार करते थे। जैसे कि ओसा ने अपने जमाने के कट्टर धार्मिको से कहा था, "तुम लोग अुन पैगवरो के स्मृति-स्तंभ बनाते हो जिनकी तुम्हारे पूर्वजो ने हत्या की थी।" कुमारप्पाजी अेक अकेले चलनेवाले व्यक्ति हैं, क्योकि अुन्होंने "शांति के राजकुमार" के मार्ग का निष्ठा के साथ अनुसरण किया।

जब बुनियादी तालीम का विचार सामने आया तो अुस पर चिंतन, मनन और अमल करने वालो में से कुमारप्पाजी भी थे। अुन्होंने अपनी संस्था "मगनवाडी" को पूरा-पूरा शिक्षण संस्था का रूप देना प्रारभ कर दिया था।

कुमारप्पाजी क्या ही अच्छे मित्र हैं, अुनकी हसी बडी हृदयपूर्ण रही है। अेक दफे वे देवकोटाओ में हमारे घर में बैठे थे, हमारा छोटा लडका, रिचर्ड अुनकी गोद में था। दोनो खूब मजा कर रहे थे। अचानक बच्चे ने बडे कुतूहल से अिस गभीर व्यक्ति से पूछा "आपके सिर पर बाल क्यो नही हैं?" बडा कठिन प्रश्न था। लेकिन ज्ञानी आदमी हमेशा ज्ञान की खोज में रहते हैं और जानते हैं कि यह ज्ञान कभी दफे बालको के मुख से निकलता है। अुन्होने पूछा, "तुम क्या सोचते हो, मेरे सर पर बाल क्यो नही हैं?" रिचर्ड ने झट से जवाब दिया, "शायद भगवान आपके सिरपर बाल देने के लिअे भूल गये।" अिस पर खूब हसी हुअी। अैसी थी कुमारप्पाजी की मित्रता।

अुनके धर्म-विश्वास ने अुन्हे भगवान के और अपने पडोसियो के अूपर प्रेम करना सिखाया था, यह सिखाया था कि प्रत्यक्ष काम के बिना श्रद्धा और प्रेम मृतप्राय है। देहाती भारत के अिस सरल मनुष्य ने ओसा-मसीह की सीख के अनुसार अपने पडोसी पर जो प्रेम किया वैसा विरलो ने ही किया होगा। सब कोअी जानते थे कि अिस आदमी का धर्म सच्चा है।

१९४५ में अुन्होंने जेल में "ओसू की शिक्षा और अुपदेश" नाम की पुस्तक लिखी। अैसी पुस्तक लिखने की फुरसत अुन्हे जेल में ही मिल सकती थी। गाधीजी से जब अिसकी प्रस्तावना लिखने को कहा गया तो अुन्होंने लिखा "ओश्वर के पुत्र के रूप में ओसा का यह अेक क्रान्तिकारी रूप है।" अेक क्रान्तिकारी को छोडकर दूसरा कोअी अिसको लिख नही सकता था।

आज अुनके जन्म-दिन पर अिससे अधिक, श्रद्धा के रूप में लिखना आवश्यक नही है, और खास तौर पर अेक पुराने साथी के बारे में।

(पृष्ठ २०५ का शेषांश)

ध्यान नही दिया गया है। बच्चे को मारना डाटना मना है यही तक हम गये हैं। पाजिटिव अहिंसक अनुशासन की खोज हमने नही की है। अिसलिअे आज अैसे सैकडो नई तालीम के शिक्षक मिलेगे जो दिल में यही मानते हैं कि न मारने-डाटने की बात तो महात्माओ के लिअे ही ठीक है, पर हमारे लिअे नही। और जैसा हमने अूपर देखा, मारने डाटने से भी बढकर मानसिक दबाव की प्रक्रियायें हैं, जिनसे शायद अधिक ही नुकसान होते हैं। हमें मानसिक प्रक्रियाओ की बारिकिया में अुतरना होगा और शाला तथा परिवार में शिक्षण की प्रक्रिया में अुस ज्ञान से प्राप्त सूक्ष्मता का समावेश करना होगा।

अिस तरह से हमें समाज सुधार तथा तालीम, अिन दोनो मोरचो पर नयी दृष्टि को फैलाना होगा। अिन दोनो के साथ अेक तीसरी चीज भी आयेगी। वह है अपराधियो तथा मानसिक व्याधिग्रस्ता का अुपचार। तीनो मिलकर समाज परिवर्तन का अेक विज्ञान होगा। अिसीका विकास करना आज हमारा सर्वोत्तम कर्तव्य है।

(पृष्ठ २०६ का शेषांश)

सिद्धातो का पालन हो, अिसलिअे जनता को अुस दृष्टि से तैयार करने के लिअे और पठानकोठ म अखिल भारत सर्व सेवा सघ ने लोकतत्र की जो नीतिमर्यादा तय की है, अुसको सभी पार्टियो के सामने रखने का, अपने से जितना हो सके अुतना प्रयत्न करने के लिअे शान्ति सैनिको का पहला तालीम शिविर शुरू हुआ है।

श्री आशादेवी और श्री केलप्पन के मार्ग-दर्शन में १७ शान्ति सैनिको से अिस शिविर की शुरुआत आज हुअी है। अुसमें नौ बहनें और आठ भाअी हैं। केरल के सभी जिलों में अैसे शिविर शुरू करने का सोचा गया है।

(पृष्ठ २१३ का शेषांश)

की चीजों के बारे में अुनकी अच्छी या हलके स्तर की रुचि, अुनकी सामाजिक वृत्ति, ये सब बच्चे में भी सक्रमित होती है। और जहा बाद में अुससे भी अधिक प्रबल प्रभाव अुसपर नही पडते हैं, वहा ये ही स्थायी होती है।

अिसलिअे बच्चों की शिक्षा में प्रथम स्थान घर का ही है। पेस्टलोजी के ही अेक वाक्य का यहा अुद्धरण करेगे। "घर के पवित्र वातावरण में ही—जहा प्रकृति खुद मानव शिशु की शक्तियो के सुसमजस विकास के लिअे प्रबध करती है, हमें अपने शिक्षा शास्त्र का प्रारभ करना है।"

"नई तालीम" के नियम

१ "नई तालीम" अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। जिसका वार्षिक चन्दा चार रुपय और अक प्रति की कीमत ३७ न पै है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी पी से मगाने पर ६२ न पै ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२ पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दी जाती है। माह की १५ तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरंत हमें लिखें।

३ चन्दा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गांव का नाम, डाकखाने का नाम, तहसील, जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पता पर पत्रिका नियमित पहुँचने में विशेष कठिनाओी होती है।

४ "नई तालीम" सबधी सारा पत्र-व्यवहार, प्रबंधक, "नई तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहकों के पत्र या शिकायत पर अुचित कारवाओी करने में विशेष विलंब की सभावना है।

५ पत्र-व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक-सख्या का अुल्लेख कर सकें तो विशेष कृपा होगी।

प्रबधक,
"नई तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बबबी राज्य.

[पृष्ठ २०५ और २०१ का शेषांश पृष्ठ २२२ पर पढ़ें]

हमें अपना हृदय दरिया जैसे विशाल रखना चाहिये। दरिया में लोग कितना कूड़ा-करकट फेंकते हैं? फिर भी उसमें नहाकर हम पवित्र हो जाते हैं। खारा होने पर भी उसकी कितनी ज्यादा जरूरत है, यह कभी सोचा है? अगर हम इस तरह उदार बनें, तो अपनी मानवता से दुनिया भर में दरिया जैसी आवश्यकतावाले महत्वपूर्ण देश के नागरिक के नाते ख्याति प्राप्त करेंगे।

—गांधीजी

श्री कृष्णदास भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा नई तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम में मुद्रित और प्रकाशित।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-सेवाग्राम

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

फरवरी १९६०
वर्ष : ८ अंक : ८

संयुक्त राष्ट्र परिषद् द्वारा बालक के अधिकारों की घोषणा

ता २० नवंबर १९५९ को संयुक्त राष्ट्र संघ की परिषद् ने बच्चो के अधिकारो के बारे में अेक घोषणा का प्रस्ताव स्वीकार किया था। अिस घोषणा के अुद्देश्यो का सघ अिस प्रकार विशदीकरण करता है :–

बच्चे के अधिकारो की अिस घोषणा का अुद्देश्य यह है कि अुसका बाल्यकाल सुखी हो और अपने तथा समाज के कल्याण के लिअे अिसमें प्रख्यापित अधिकारो और स्वतत्रताओ का वह पूरा-पूरा लाभ अुठायें। व्यक्तियो के नाते मा बापो और अन्य स्त्री-पुरुषो को तथा स्वयप्रेरित सगठनो, स्थानीय अधिकारियों अेव राष्ट्रीय सरकारो को सघ आह्वान करता है, कि वे अिन अधिकारो की मान्यता दें और कानूनी तथा अन्य अुपायो से भी नीचे लिखे सिद्धातो के अनुसार अुनके पालन का प्रयत्न करे :–

१. अिस घोषणा में निर्दिष्ट सब अधिकार हर बच्चे को प्राप्त हो। बिना अपवाद के सभी बच्चो को अिनका हक है। अिसमें वश, वर्ण, लिंग भेद, भाषा, धर्म, राजनैतिक या दूसरा कोअी मत, राष्ट्रीय या सामाजिक भेद, जायदाद और कुलगत या जन्मगत विभिन्नताओ के कारण कोअी फर्क नही होगा।

२. बच्चे को विशेष रक्षा व्यवस्थायें प्राप्त होगी। अुसको स्वतत्रता और आत्मसम्मान के साथ स्वस्थ और स्वाभाविक रूप से शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास करने की सब सुविधायें कानूनी और अन्य तरीको से प्राप्त होगी। अिसके लिअे आवश्यक कानून बनाने में बच्चे का अपना श्रेय और हित ही अुच्चतम ध्येय रहेगा।

३. बच्चे को जन्म से ही अेक नाम और राष्ट्रीयता का हक होगा।

४. बच्चे को सामाजिक सुरक्षा के लाभ प्राप्त होंगे। अुसके स्वास्थ्य का पूरा-पूरा खयाल किया जायगा। अिसके लिअे अुसकी और अुसकी मा की विशेष देखभाल व रक्षा की व्यवस्था होगी, जिसमें प्रसूती के पूर्व और बाद का भी अुपचार शामिल है। बच्चे को पर्याप्त पोषण, अुपयुक्त निवास, मनोरजन और स्वास्थ्य सेवा पाने का हक होगा।

५. जो बच्चा शारीरिक, मानसिक या सामाजिक अवशताओ से पीडित है, अुसको अुस विशिष्ट स्थिति के लिअे अुपयुक्त विशेष अुपचार, शिक्षा और देखभाल अुपलब्ध होगी।

६ बच्चे के व्यक्तित्व के सपूर्ण और सुसमजस विकास के लिअे अुसे प्रेम और समझदारी का बर्ताव मिलना चाहिये। जहा भी सभव हो वह अपने मा-बाप की देखभाल और जिम्मेदारी में ही रहेगा। अैसी परिस्थिति न भी हो, तो भी वह नैतिक तथा भौतिक सुरक्षा और स्नेह के वातावरण में रखा जायगा। अत्यत अपवादात्मक परिस्थितियो को छोडकर कभी भी बहुत छोटी अवस्था के बच्चे को अुसकी मा से अलग नही किया जायगा। जिन बच्चो के अपने परिवार या आजीविका के पर्याप्त साधन नही हैं, अुनके प्रति समाज का और शासन का अेक विशेष कर्तव्य है। बडे परिवारो के बच्चो को सरकार की तरफ से या अन्य सार्वजनिक निधियो से सहायता मिलना वाछनीय है।

७ बच्चे को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा–कम से कम प्राथमिक स्तर पर–मिलने का अधिकार है। *यह शिक्षा अुसके सामान्य* सस्कारो का विकास करनेवाली होनी चाहिये। वह सबको समान मौके के आधार पर अपनी कुशलताओ का, विवेक बुद्धि का और नैतिक तथा सामाजिक जिम्मेदारियो का विकास करने और समाज का अेक अुपयोगी सदस्य बनने में बालक को समर्थ बनानेवाली होगी। बच्चे की शिक्षा और मार्गदर्शन की जिम्मेदारी जिनपर है अुन्हें अपने काम में बच्चे के हित और श्रेय को ही सब से बडा सिद्धात मानना चाहिये। यह जिम्मेदारी मुख्यत अुसके मा-बाप की है।

बच्चे को मनोरजन और खेलकूद का मौका मिलना चाहिये। जिसकी दिशा और अुद्देश्य शैक्षणिक ही हो। अुसे *जिसका पूरा पूरा लाभ* और आनन्द मिले, यह देखने का कर्तव्य समाज का और अधिकारियो का है।

८ रक्षा और समाधान सब परिस्थितियो में सब से पहले बच्चे को मिलना चाहिये।

९ सब प्रकार की अुपेक्षा, क्रूरता और शोषण से बच्चे को बचाया जायगा। अुसके *अूपर किसी प्रकार का व्यापार नही किया* जायगा।

अेक निर्धारित न्यूनतम अुम्र के पहले बच्चे को किसी धन्धे में नही लिया जायगा। अुसके स्वास्थ्य के और शिक्षाके अननुकूल या अुसके शारीरिक मानसिक व नैतिक विकास में बाधा देनेवाली प्रवृत्तियो या कामो में अुसे लगने नही दिया जायगा।

१० वशगत, धार्मिक या और भी किसी प्रकार की भेद बुद्धि को बढावा देनेवाली सब बातो से बच्चे का रक्षण किया जायगा। देश देश के लोगो के बीच में समझ, सहिष्णुता और मित्रता की तथा शान्ति और विश्व भ्रातृत्व की भावना के साथ में अुसका पालन-पोषण होगा। अुसमें अपनी सारी शक्तिया और सामर्थ्य अपने सहजीवियो की सेवा में लगा देने का बोध निर्माण करने का पूरा प्रयत्न किया जायगा।

हम अेक नया मानव बनाना है। जिसे अृग्वेद ने 'विश्व मानुप' नाम दिया है, वह बनाना है। आज हमारे सामने बहुत छोटे-मोटे मानव खडे हैं, कोओी जातिवाले, कोओी भाषावाले, कोओी प्रान्तवाले, कोओी पथवाले, कोओी देशवाले, कोओी धर्मवाले। हमने धर्म के नाम से भी हृदय को सकुचित बना दिया है। जाति, भाषा, प्रात, धर्म, ये सारे हम तोडनेवाले बन गये हैं। जिन सबको बदलना है और 'विश्व मानुप' का निर्माण करना चाहिये।

–विनोबा

१. संस्था की नई तालीम

मैं नही कह सकता कि मुगेर जिले का हमारा अनुभव देश के हर क्षेत्र के लिअे प्रामाणिक होगा, क्योंकि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से बिहार की परिस्थिति बहुत अशो में दूसरे भागो से भिन्न है। अेक बहुत बडी और बुनियादी भिन्नता अिस बात में है कि बिहार में केवल तीन प्रतीशत लोगो के पास जमीन है, बाकी सब बटाअीदार या भूमिहीन मजदूर है। जमीन की अिस मालिकी में और जाति-पाति के कठोर बधन में बिहार के ग्रामीण समाज का आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ है।

खादीग्राम में १९५४ से १९५६ तक हम लोगो ने शिक्षा के कअी प्रयोग किये। सब से पहले सस्था के निर्माण कार्यों में लगे हुअे मजदूरो को अेक घटा पढाने–लिखाने का काम शुरू हुआ। अुसके बाद श्रमशाला का प्रयोग हुआ। जो लडके–लडकिया काम पर आती थी अुनका सुव्यवस्थित शिक्षण हाथ में लिया गया। चार घटा श्रम, डेढ घटा वस्त्रोद्योग और दो घटा पढाअी–लिखाअी, यह क्रम था। आखें खोल देनेवाला प्रयोग था वह। गाव के लडको ने काम में कितनी तेजी से दक्षता हासिल की, अुनका कितना बौद्धिक विकास हुआ, अुनके सस्कार सुधरे, अुनका सामाजिक और नैतिक जीवन अुनत हुआ। सब मिलाकर हम लोग अिस नतीजे पर पहुचे कि अगर देश भर में अिस तरह के कामो में लगे हुअे लडको और लडकिया के लिअे श्रम और शिक्षण का सम्मिलित कार्यक्रम बनाया जाय तो अुनका कितना विकास हो और राष्ट्र में अेक नभी लहर पैदा हो जाय। कुछ दिन बाद श्रमशाला बद कर दी गयी और पूर्व–बुनियादी, बुनियादी और अुत्तर–बनियादी का क्रमबद्ध शिक्षण प्रारभ हुआ। दो साल के सुव्यवस्थित काम में अनेक कीमती अनुभव आये। लेकिन सन् ५७ के क्रान्ति वर्ष में सब प्रयोग बन्द हो गये। साल भर तक चलनेवाली पदयात्रा में अुत्तर बुनियादी के कअी विद्यार्थी पूरी अवधि तक शामिल रहे, जिनको लेकर अेक प्रकार का जगम विद्यापीठ चलता रहा। १ जनवरी १९५८ को जब हम लोग श्रम भारती वापस आये तो अेक बहुत बडा अनुभव लेकर आये। हम लोगो ने साफ देख लिया कि नई तालीम सस्था की दीवालो में बधकर अपना नित्य नयापन खो देती है। कारण यह है कि सस्था स्वाभाविक समुदाय नही है, अुसमें विद्यार्थी का जीवन सहज नही हो पाता। सस्था नियनित है, अुसका जीवन नियोजित है, लेकिन अुसकी सभावनाअें और समस्यायें स्वाभाविक समाज की नही है, अिसलिअे वह कृत्रिम है। सस्था किसी बच्चे के लिअे घर नही है, अिस कारण बच्चे में सहकार की सहज प्रेरणा पैदा नही होती, पैदा हो भी नही सकती। सस्था में ज्यादा अच्छी तालीम हो सकती है, जीवन व्यापी नई तालीम नही हो सकती। यात्रा से लौटकर हम लोगो ने अपना यह अनुभव पूज्य धीरेन भाअी के सामने रखा लेकिन तय यही हुआ कि बालमदिर से लेकर अुत्तर बुनियादी तक सभी वर्ग नये अुत्साह के साथ फिर शुरू किये जायें। कुछ ही महीनो तक काम हुआ था कि चालीसगाव का प्रस्ताव आ गया और निधिमुक्ति की तैयारी होने लगी। महीनो के विचार-मथन के

बाद ३१ जनवरी १९५९ को कओ भाओ बहनों ने निधिमुक्त होकर गाव के लिओ प्रस्थान किया।

२. श्रमभारती से ग्रामभारती

३१ जनवरी से अिस समय तक हम लोगो को गाव में गये हुओ महीनो बीत गये। बुजुर्ग और मित्र सभी पूछते हैं कि अितने दिनो में क्या हुआ, कितना काम हुआ। क्या अुत्तर दू मे अिन प्रश्नो का? सच बात यह है कि आखो से दिखायी देनेवाला कोओ काम हम लोग अभी तक नहीं कर सके हैं, करने की कोशिश भी नही की है। और यह भी कहू कि फिलहाल करना चाहते भी नही है, क्योकि करने का काम हमने गाव वालो पर छोडा है और कहने का काम अभी अपने जिम्मे रखा है। श्रमभारती से निकलते समय ही सोच लिया था कि हमें ग्रामसेवा नही करनी है, बल्कि ग्राम-शक्ति प्रकट करने की कोशिश करनी है। यो अगर कोओ कुछ देखना ही चाहे तो बालमदिर, ग्रामशाला, प्रौढो का घटे-भर का महाविद्यालय आदि देख भी सकता है। लेकिन हमारी निगाहे अुस दिशा में नहीं हैं। हमारी निगाहे तो अिस चीज पर लगी हुओ है कि किसी तरह गाव के नव-निर्माण के लिओ गाव के अन्दर से ही शक्ति पैदा हो जाय और यह सब काम नीचे से हो और अूपर बढे। हम लोकनवित के क्षेत्र में "विल्डिग फाम विलो" का प्रयोग करना चाहते हैं।

३. गांव कहां है ?

श्रमभारती से निकलते समय हम लोग मन में अेक फार्मूला लेकर निकले थे। वह फार्मूला यह था कि सर्वोदय हमारा दर्शन है, ग्राम-स्वराज्य नारा है और ग्राम-दान हमारा कार्यक्रम है। लेकिन जब हम गाव में पहुचे तो हमने देखा कि सस्था में रहकर गांव की सेवा करना और संस्था की शक्ति और सरक्षण से अलग हटकर गाव के अन्दर से गाव की शक्ति प्रगट करने में बहुत अन्तर है। गांव में पहुंचने पर हम लोगो को अिस बात का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ कि जिसे हम गांव कहते हैं वैसी कोओ चीज सचमुच है नही। सदियो से चली आयी हुओ सामाजिक और आर्थिक विघटन की प्रक्रिया में गाव अब केवल भौगोलिक अिकाओ रह गया है। गाव गरीबी, गन्दगी और झगडे का अड्डा है। अुसमें न खेती है, न धधा है, न शिक्षा है। लोग जी रहे हैं, अिसलिओ कि मरने के पहिले जीना ही है। गाव हर दृष्टि से जातिगत दमन और वर्ग-शोषण का नमूना बना हुआ है। कोओ भी अैसी चीज नही रह गयी है जिसमें गाव के लोगों में परस्पर अेकता हो।

४. कार्यक्रम क्या हो ?

जाति भेद, आर्थिक विषमता और तरह-तरह के सस्कारो से भरे अैसे गाव में नई तालीम की कौन सी प्रक्रिया चलेगी, हम लोग शुरू में समझ नही पाते थे। श्रम भारती में हममें से अधिकाश नई तालीम के कार्यकर्ता थे। अपने बुजुर्ग और मित्र स्वाभावतः यह अपेक्षा रखते थे कि तालीम के कार्यकर्ता होने के नाते हम लोग ग्राम-स्वराज्य ग्रामभारती का सफल प्रयोग करके दिखायेंगे। हौसला अपने मन में भी यही था और है, लेकिन कहां शुरू करे, कैसे शुरू करें, यह प्रश्न था। स्थिति यह है कि गाव का आदमी सर्वोदय की समाजनीति को चाहता नही, जब यह हालत है तो कौन-सा काम हो जिसे वह अपना मानकर चलाये। मुगेर जिले

के तीन हजार से अधिक गावों में अेक भी अैसा *नही मिला जो अिन कठिनाअियो से मुक्त हो।* ग्रामदानी गावो में स्वामित्व-विसर्जन के कारण कई आर्थिक गाठें खुल जाती हैं, लेकिन अुनमें भी नई तालीम के लिअे रास्ता बहुत साफ निकलता है, अैसी बात नही है। हा, प्रारंभ करने के लिअे भूमिका मिल जाती है। कुछ भी हो, गाव अच्छे हो या बुरे हो, ये गाव हिन्दुस्तान है, अिसलिअे दुश्चक्र को कही-न-कही तोडना ही है, यह बात हम लोगो ने मन में *ठान ली थी।*

५. हम सुधार का भ्रम न फैलायें

आज नौ वर्षों से सर्वोदय आन्दोलन चल रहा है लेकिन अैसा लगता है कि अभी तक हम लोग गाववालो के सामने अैसा कार्यक्रम नही रख सके जिसे वे समाजपरिवर्तन के प्रारंभिक अभ्यासक्रम के रूप में, अपनी शक्ति और परिस्थिति को देखते हुअे, आसानी से अपना सकें। जीवनी-शक्ति की बात तो दूर रही, हम *अुनके अन्दर आशा और स्फूर्ति का सचार* भी नही कर सके। कुछ थोडे ग्राम-दानी गावो में जो कुछ हुआ है, अुससे जन-मानस आन्दोलित नही हुआ है। मुगेर जिले में कअी ग्रामदानी गाव हैं जिनमें दो तो अैसे हैं जो अपने काम के लिअे ख्याति पा चुके हैं, लेकिन मुझे नही लगता है कि अभी तक का गाव का अनुभव सर्वोदय आन्दोलन को पूजीवादी सपत्ति के सबधो को बदलने की कोअी चावी दे सका है। कभी-कभी मेरे मन में भय भी होता है। अगर हम यह मान ले या हमारी आशा भी अैसी हो कि देश पूजीवादी और सामन्तवादी बना रहे और कुछ गाव अपनी कोशिश से सर्वोदयी बनते जायें तो मेरी समझ में यह बुनियादी भूल होगी, क्योंकि अिस धारणा से *सुधार का भ्रम (अिल्यूजन ऑफ रिफार्म)* पैदा होगा जो क्राति की शक्ति को कुठित करेगा, और हम लोग क्रान्ति के नाम से सरकार के सुधारवाद मे ही फसे रह जायेंगे। अहिंसक शक्ति के निर्माण में रचनात्मक कार्य अनिवार्य है, लेकिन परिस्थिति में अुसकी सीमा होती है। सीमा को हमें बराबर पहचानते रहना चाहिये कि रचनात्मक कार्य से स्वतत्रजन-शक्ति पैदा होनी चाहिये यह अहिंसक क्राति *का मूल है। अिसलिअे अगर हमारे हाथ से यह* मूल तथ्य निकल गया तो मानना चाहिये कि क्रान्ति ही निकल गयी।

६. वर्ग-सघर्ष का विकल्प

अभी तक गाव में हमारे सामने सब से अधिक चिंता का विषय यही है कि हम कौन-सा अैसा काम करे जिससे जनता की शक्ति जनता के अन्दर से पैदा हो, हमारा क्या दिशा (अप्रोच) हो, क्या टेकनिक हो। शायद परिस्थिति के कारण अभी तक सर्वोदय की व्यूह-रचना अैसी रही है कि अुसका सब कार्यक्रम कार्यकर्ता के चारो तरफ घूमता है। जनता कार्यकर्ता को दूर से देखती है, अुसे कुतूहल होता है। कभी-कभी वह प्रशसा के दो शब्द भी कह देती है, लेकिन वह अुसके पास नही जाती। आज तक हम लोगो ने लाखो अेकड जमीन मागी है और कअी लाख अेकड बाटी भी है लेकिन हम जनता को अन्याय, अभाव और अज्ञान से मुक्ति का कोअी प्रमाणित रास्ता नही दिखा सके हैं। अुदाहरण के लिअे अेक छोटा-सा प्रश्न लीजिये। भूमिहीन हम से पूछता है—अपनी भूमिहीनता मिटाने के लिअे मैं खुद क्या कर सकता हू? यह छोटा-सा अति-सामान्य

प्रश्न है लेकिन हमारे पास अिसका कोअी जवाब नही है। जहा तक मुझे मालूम है सर्वोदय आन्दोलन ने भी अिसका कोअी अुत्तर नही दिया है। आज की सामाजिक और आर्थिक रचना अैसी है कि वह शोषण करनेवाले और शोषित होनेवाले दोनो की जीविका पर निर्भर है। शोषण करनेवाले के साथ थोडा स्वार्थ जुडा हुआ है और शोषित होनेवाले के साथ अुसका अज्ञान। लेकिन समाज रचना ने जो सामाजिक सबध स्थिर कर रखा है, अुसे स्वीकार करने के लिअे दोनो अपनी-अपनी जगह विवश हैं। अिस सबध को तोड देना सहसा दोनो में से किसी के लिअे सभव नही है, क्योकि जीविका का दूसरा विकल्प नही है। पर अिस सबध को हमेशा के लिअे बदलना है, यह निर्विवाद है। अब प्रश्न यह है कि अिस स्थिति को बदलने की शक्ति कहा से आये और कौन अगला कदम अुठाये। सपत्ति के सबध कैसे बदले ? मानवीय मूल्यो की स्थापना कैसे हो ? अभी तक तो सपत्ति के सबधो को बदलने का और पसीने की कमाअी खानेवाले को शोषण से मुक्ति दिलाने का, अितिहास को अेक ही रास्ता मालूम है—वह है वर्गसघर्ष का। अुस सघर्ष का रूप हिंसात्मक षड्यत्र हो या लोकतत्रीय चुनाव, यह परिस्थिति पर निर्भर है। हमारा आज का समाज वस्तुत हर क्षेत्र में वर्ग-विद्वेष और वर्गसघर्ष की ही स्थिति में है। अिस स्थिति को बदलना है। लेकिन कैसे ? हम जानते हैं कि वर्ग-सघर्ष के विचार में मानवीय मूल्य नही है। अुसकी कार्य-पद्धति में असत्य और अन्याय भी बहुत है। लेकिन अगर विकल्प नही है तो अुपाय क्या है ? मार्क्स के दर्शन में शास्त्र हो या न हो, लेकिन अुसमें शक्ति तो है। वह शक्ति के भरोसे खडा है, विज्ञान के भरोसे नही, अगर हम मार्क्स के रास्ते नही जाना चाहते तो हमें नया रास्ता ढूढना चाहिये। क्योकि मनुष्य असहाय होकर बैठ तो जा सकता है लेकिन आशा लेकर प्रतीक्षा नही कर सकता। अगर हम अुसके सामने वर्गसघर्ष का कोअी विकल्प नहीं रख सकते तो अभाव, अन्याय और अज्ञान से ग्रस्त मानव अेक बार हिंसा-अहिंसा का विचार छोडकर वर्गसघर्ष की सहार-लीला देखेगा। सर्वोदय की आकाक्षायें मन में रखते हुअे भी जनता विवश होकर सर्वनाश का ताडव-नृत्य नाचेगी। अिसलिअे मुख्य प्रश्न यह है कि अहिंसा को हिंसा का विकल्प बनाया जाय, और वर्गसघर्ष के बिना शोषण-मुक्ति का रास्ता ढूढा जाय। लेकिन हम अिस बात का ध्यान रखें कि हमारा विकल्प अैसा हो जिसे जनता आज ही अपनी परिस्थिति में व्यावहारिक रूप से स्वीकार कर सके। जो विचार अपने आप आचार की शक्ति नही प्रकट कर सकता वह विचार न रहकर स्वप्न बन जाता है। हमें क्रान्ति में मुक्ति का आकर्षण भरना है। सर्वोदय को हर अेक के लिअे सहज बनाना है।

७ सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम

विनोबाजी सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम सत्याग्रह की बात कहते हैं। क्रान्ति-शास्त्र के अिस विकासक्रम से हम क्या समझें और जनता को कैसे समझायें ? क्या अितिहास हमें कुछ प्रकाश दे सकता है ? १९१७ की रूसी क्रान्ति तक जितनी क्रान्तिया हुअी हैं वे सब सघर्ष के रास्ते हुअी हैं। सघर्ष को परम्परा में मार्क्स अतिम प्रॉफेट-पैगम्बर था। गाधी ने क्रान्ति-शास्त्र में नया अध्याय जोडा और कहा कि मनुष्य विकास की जिस मजिल पर पहुच चुका

है वहां क्रान्ति के लिअे खुला संघर्ष अनावश्यक है। संघर्ष का काम दबाव से हो सकता है और स्वराज्य की लड़ाओ में अुन्होंने हिंसा और संघर्ष को अलग रखकर नैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में दबाव के अनेक सफल प्रयोग किये और अुसे लोक-शक्ति का समर्थ माध्यम बनाया। जब विनोबा यह कह रहे हैं कि अणु-शक्ति के जमाने में दबाव पद्धति 'आऊट-ऑफ-डेट' हो गयी, अब केवल विचार परिवर्तन यानी 'परसुयेशन' से काम चलेगा। लेकिन 'परसुयेशन' कोओ स्थायी चीज नही है। भविष्य का क्रान्ति द्रष्टा कहेगा कि 'परसुयेशन' भी जरूरी नही है, विचार का प्रभाव यानी शिक्षा काफी है। अब क्रान्ति किसी घटनाविशेष का नाम नही है। क्रान्ति अब विकास का क्रम यानी आरोहण बन गयी है। अिस क्रम से अेक दिन अैसा भी आयगा जब तालीम और क्रान्ति अेक हो जायगी। तालीम की प्रक्रिया में ही क्रान्ति के लक्ष्य पूरे होते चले जायेंगे। वह दिन नई तालीम, का स्वर्ण युग होगा। लेकिन अेक बात है। हर नई टेकनिक में पुरानी टेकनिक के कुछ तत्व छिपे रखे है, जैसे जीवन की हर नई परिस्थिति में बीती परिस्थिति से 'कम्प्रोमाअिज' करना पडता है। यह कम्प्रोमाअिज कमजोरी का कारण और शक्ति का स्रोत दोनों बन सकती है। काम्प्रोमाअिज कमजोरी लेकर सामने आती है तो प्रतिक्रिया बन जाती है। अहिंसक क्रान्ति भी प्रतिक्रान्ति बन जाती है। अहिंसक क्रान्ति भी प्रतिक्रान्ति के खतरे से मुक्त नही है। अिसलिये हमें आज से ही यह सोच लेना चाहिये कि हम 'काअुंटर रेवोल्यूशन'-प्रतिक्रान्ति के संबंध में क्या व्यूह-रचना करेंगे। पहली जरूरत तो यह है कि हम अपनी क्रान्ति की लीडरशिप को कम्प्रोमाअिज से अधिक से अधिक अलग रखें। हम जानते हैं कि हम लोग स्वामित्व विसर्जन की बात करते हैं लेकिन हममें से कितने हैं जो व्यक्तिगत या संस्थागत संपत्ति का सहारा छोड चुके हैं? प्रश्न केवल नियम का नही है। जीवन सुरक्षा चाहता है। क्रान्तिकारी अिसका अपवाद नही है। रचनात्मक क्रान्ति में काम्प्रोमाअिज की सीमा समझना और प्रतिक्रिया से बचना ये दोनों कलाअें आवश्यक हैं।

८ तालीम की क्रान्ति

यह है हमारे आन्दोलन और समाज की भूमिका। स्पष्ट है कि अिस भूमिका में हमारा ग्रामीण समाज नई तालीम या कोओ ग्रेडेड-अभ्यासक्रम तत्काल स्वीकार करने की स्थिति में नही है। नई तालीम जीवन को जो दिशा देना चाहती है अुसे जनता ने ग्रहण नही किया है। जनता को वर्तमान से असमाधान है, लेकिन भविष्य के संबंध में वह सर्वथा अस्पष्ट है। अस्पष्टता की अिस स्थिति में विचार का नया मोड देना नई तालीम का काम है। नई तालीम नयी बुनियाद की शिक्षा है। वह आज की बुनियादों के समाज में नही चल सकती। अिसलिअे अुसे सबसे पहले प्रचलित समाज की बुनियाद बदलने का काम करना पडेगा ताकि वह चौखट हो जाय जिसके अंदर नई तालीम का चित्र फिट किया जा सके। पहला काम यह है कि वह समाज की बुनियादें बदले। अुसका दूसरा काम यह है कि वह समाज को बनाये यानी जीवन को समृद्ध करे। अुसका तीसरा काम यह है कि वह नित्य नई बनकर समाज को नित्य नई परिस्थिति में बदलते रहने की सहज स्फूर्ति और शक्ति दे। अिस

तरह तालीम ही समाज की शक्ति और धर्म दोनो बन जाय। तालीम और क्रान्ति, अेक हो जायें। *पहिले तालीम में क्रान्ति, फिर तालीम से क्राति और अत में तालीम ही क्रान्ति,* यह भ्रम हमारे दिमाग में साफ हो जाना चाहिये।

९. नई तालीम की नई दिशा

यह सब कैसे होगा? हमारी तालीम अपने अन्दर क्रान्ति की शक्ति यानी रक्षण, पोषण और शिक्षण की शक्ति कहा से लायेगी? जैसा मैंने पहले कहा कि वर्ग-सघर्ष के सिवाय अिस जमाने में वर्ग-सघर्ष के लिअे हिंसा अनिवार्य नही रह गयी है। अगर दूसरी कोअी प्रक्रिया मनुष्य को मालूम नही है तो क्या नई तालीम वर्ग-सघर्ष के सगठन का काम करेगी? वह चाहे तो कर सकती है, लेकिन तब अुसे मनुष्य की मुक्ति का स्वप्न छोडना पडेगा, और वह तालीम न रहकर षड्यत्र बन जायगी। अगर वह नयी है तो अुसे नया रास्ता ढूढना चाहिये, मनुष्य के अितिहास में अेक नया अध्याय जोडना चाहिये और यह सिद्ध करना चाहिये कि तालीम का काम क्रान्ति के बाद नही बल्कि क्रान्ति के पहले शुरू होता है। जिसे हम क्रान्ति कहते है वह वास्तव में नई तालीम की पूर्व तैयारी है, जिसे पूर्ण करने की जिम्मेदारी स्वय तालीम की है, न कि किसी अन्य आन्दोलनकारी की। नई तालीम का शिक्षक सब से बडा क्रान्तिकारी है और नई तालीम की पद्धति स्वय क्रान्ति की प्रक्रिया है। नई तालीम का स्वप्न मनुष्य की मुक्ति का सपूर्ण सदेश है। अिसलिअे मेरा निवेदन है कि नई तालीम का अिस समय अेकमात्र काम है वर्ग-सघर्ष का विकल्प ढूढना। गाधीजी ने अहिंसात्मक असहयोग (नॉनवायलेट नान-कोऑपरेशन) को वर्ग-सघर्ष का विकल्प बताया था। यह सहज है, स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य में अपने अूपर होनेवाले अन्याय और शोषण के प्रति "नही" कहने की *शक्ति नही आयेगी तब तक अुसके व्यक्तित्व का* विकास नही होगा, तब तक वह सही अर्थ में स्वतत्र नही हो सकता। अिसलिअे नई तालीम को "नही" की शक्ति के विकास का अभ्यासक्रम अुसी तरह बनाना होगा जिस तरह वह अन्य कलाओं के लिअे बनाती है। अगर अुसने अभाव से मुक्ति के लिअे स्वावलबन की पद्धति निकाली है तो अुसे अन्याय से मुक्ति के लिअे प्रतिकार की पद्धति भी विकसित करनी होगी, जो पूर्णत: शैक्षणिक हो और जिसमें असहयोग (प्रेशर) की आवश्यकता क्रमश: कम होती जाय।

लेकिन कोअी भी विचार हो, वह समाज में सक्रिय अुसी समय होता है जब वह अपने लिअे सबल सामाजिक माध्यम तैयार कर लेता है। जब तक वह अैसा नही करता अुसमें समाज को बदलने या नये मूल्यों की स्थापना की शक्ति नही आती, भले ही वह व्यक्तिगत साधना का आधार बन जाय। अिसलिअे नई तालीम को अपने क्रान्तिकारी लक्ष्य की पूर्ति के लिअे सामाजिक माध्यम (सोशियल मिडियम) की तैयारी में अविलब लग जाना चाहिये। मेरी समझ में अैसा सामाजिक माध्यम आज की परिस्थिति में सेवा-सेना के ही रूप में तैयार हो सकता है।

ग्राम-स्वराज्य-ग्रामभारती का सम्मिलित अभ्यास क्रम

१. समाज की रचना तथा सरकार की योजनाओं के कारण जो परिस्थिति पैदा हो गयी है अुसमें नअी तालीम का ग्रेडेड शिक्षण अभी गाव में सभव नही है। वर्तमान दूषित शिक्षा-पद्धति ने अभी प्रतिक्रिया के रूप में नई

तालीम की आकांक्षा तो पैदा कर दी है, लेकिन अुसे आवश्यकता के रूप में ग्रहण करने की प्रवृत्तिया नही पैदा हुअी है। अिसलिअे पहला काम यही है कि जनता नई तालीम की आवश्यकता महसूस करे।

२. अिसके लिअे सुनियोजित विचार-शिक्षण की आवश्यकता है। विचार शिक्षण का अर्थ यह है कि गांव की समस्याओं (तात्कालिक और बुनियादी) के अनुबध में लोगो की सामूहिक ग्राम-चेतना जगायी जाय। कुछ अिस तरह के विषय लिये जा सकते है :

मुफलिसी और मालिकी का सबंध। अरक्षा और मालिकी। परिवारगत पुरुषार्थ की विफलता। चुनाव–निष्ठ राजनीति और अुसके दुष्परिणाम। पूजी निष्ठ अर्थनीति और अुसके दुष्परिणाम। किताब–निष्ठ शिक्षानीति और अुसके दुष्परिणाम। सरकार निष्ठ समाज।

अिनके सदर्भ में नई तालीम को रक्षण, पोषण और शिक्षण की कल्पना और योजना बतायी जाय। यह लोक–शिक्षण नई तालीम का पहला कदम है, जो ग्राम–चेतना जगाने का माध्यम बन सकता है।

३. ग्राम–चेतना के आधार पर गाव में कुछ लोग अैसे निकलेगे जिनमें सेवा की भावना पैदा होगी। अिस ग्रामभावना के आधार पर गाव में सेवा सेना का सगठन हो सकता है, जो गाव में नई तालीम के कार्यो का वाहन होगी।

४. सेवा-सना ग्राम शक्ति की प्रतीक होगी। अुनके सदस्य अपनी गृहस्थी के साथ-साथ अपने गांव तथा पडोस में सेवा और सघटन के कामों में समय और शक्ति देंगे।

५. जिस गांव में कम-से-कम पाच सदस्य होगे, वहा सेवा-सेना की बुनियादी अिकाअी मानी जायगी। गांव के अूपर क्षेत्र, अचल, सबडिविजन और सबसे अूपर जिले की अिकाअियां होंगी, जिनकी रचना नीचे की अिकाअियों के टोली नायकों से होगी।

६. क. शुरू में सेवा-सेना के सदस्य कम होंगे–अुन्हे गाव का विश्वास तथा सेवा की क्षमता प्राप्त करने में समय लगेगा। अिसलिअे सबसे पहले अुनके लिअे परस्पर सहकार का अभ्यासक्रम बनाना पडेगा। अिस अभ्यासक्रम के बाद ही सेवा-सेना को पूरे गाव के लिअे सेवाकार्य की जिम्मेदारी लेनी चाहिये।

ख अभ्यासक्रम की शुरूआत अिस प्रकार हो कि हर सेवा सैनिक अपने घर मे सर्वोदय पात्र रखे और सप्ताह मे कम-से-कम चार घटे श्रम के रूप में दे।

ग. दूसरा कदम पचविध परस्पर सहकार का होगा :

श्रम-सहकार––खेती के कामो में सदस्य अेक दूसरे के खेत पर काम करें।

शिक्षा-सहकार––जो पढा-लिखा हो वह अपढ को पढा दे।

अुद्योग-सहकार––कताअी जाननेवाला न जाननेवालो को सिखा दे–अपने-अपने परिवार में स्वावलबी खादी का प्रचार।

न्याय-सहकार––आपस के विवाद को आपस में ही तय कर लिया जाय। गाव की पचायती अदालत या सरकार की कचहरी में कानून का विषय न बनने दिया जाय।

मत्रणा-सहकार–साप्ताहिक बैठक में आपसी तथा गाव की समस्याओ पर विचार।

घ. श्रम-सहकार से धीरे-धीरे सहकारी खेती और बाद में स्वामित्व विसर्जन के

आधार पर अपने स्थायी मजदूर को मिलाकर खेती करने की स्थिति पैदा होगी। यह सबसे अधिक प्रभावशाली कदम होगा।

च सेवा-सेना के प्रशिक्षण के लिअे समय-समय पर श्रम-शिविर की व्यवस्था करनी होगी, जिसमें स्वच्छ पूर्ण श्रम, विनय, अनुशासन तथा विचार का अभ्यास हो।

७ *गाव की सुसगठित सेवा-सेना में चार* टोलियाँ होगी . बाल–टोली, वृद्ध टोली, युवक टोली, नारी टोली। हर टोली का अपना नायक होगा *और गाव की पूरी सेवा-सेना का नायक* अलग होगा। गाव की ग्राम स्वराज्य समिति का अध्यक्ष सेवा-सेना का भी अध्यक्ष होगा।

८ सेवा-सेना की हर टोली के काम बटे होगे। काम कुछ अिस प्रकार हो सकते है :

युवक टोली क १६ से ४५ साल–रक्षण–फसलो की रक्षा, गाव का पहरा, आकस्मिक सकट में सेवा-कार्य।

ख पोषण–अच्छी खेती, सहकारी खेती का प्रयोग, खाद, खादी तथा अन्य अुद्योग शक्ति और सुविधा के अनुसार सफाअी, खेल और मनोरजन, श्रमदान से निर्माणकार्य, धर्म गोला, काआपरेटिव दूकान आदि।

ग शिक्षण—प्रात काल या शाम की प्रार्थना और घटे भर का महाविद्यालय, रोगी-सेवा पुस्तकालय।

नारी टोली–सूतदान सग्रह, सर्वोदय पात्र, खादी शिक्षण, स्त्रियो में रोगीसेवा, सफाअी, श्रमदान, शिशु-विहार, बाल-मदिर, स्त्रियो में साक्षरता, साप्ताहिक गोष्ठी।

वृद्ध टोली–४५ से अूपर आतरिक शाति, न्याय, तथा गाव की योजना।

बाल टोली–५ से १५ वर्ष– अेक दूसरे के खेत में खेती की मुख्य प्रक्रिया में श्रम, कुछ टुकडो में सब्जी खेती, निर्माण कार्यो में श्रम-दान, अुत्सव सभा आदि में प्रबध। गावो में विवाह के या अन्य अवसर पर भोजन में खाना परोसना।

९ सेवा-सेना का कुछ काम गाव में फैल जाय और वह गाव में विश्वास और आदर की पात्र बन जाय तथा गाव के अधिकाश घरो में सर्वोदय पात्र रख लिये जाय तो गाव में सभी वयस्को की सभा में सर्व समति के आधार पर ग्राम-स्वराज्य समिति का सगठन किया जाय। अिस समिति के अलावा सात अुपसमितिया होगी, जिनका गठन सेवा–समर्पण के आधार पर हो। अुपसमितिया ये है १. खेती, सिचाअी, भूमि-सुधार २ अुद्योग, खादी, गाव की दूकान तथा व्यापार ३ शिक्षा और मनोरजन ४ स्वास्थ्य और सफाअी ५ न्याय ६ सुरक्षा ७ बाह्य सबध।

ग्राम स्वराज्य समिति में ७ सदस्य होगे जिनमें से प्रत्येक किसी-न-किसी अुपसमिति का सदस्य होगा। सयोजक के अलावा हर अुपसमिति में ग्रामसभा में से लिये गये दो और सदस्य होगे।

१० *ग्राम-स्वराज्य* समिति मुख्य रूप से गाव के लिअे रोजगार और चिंता-मुक्ति की चेष्टा करेगी। अुसकी शिक्षा दो दिशाओ में प्रकट होनी चाहिये। अेक तो भूमिहीनता और आत्महीनता मिटे, दूसरे गाव के धनियो *का ग्राम-सहकार की परिधि में आने के सबध* में भय मिटे। मालिको के सामने ट्रस्टीशिप का विचार रखा जाय। अुनके कमीशन, बच्चो की शिक्षा, विवाह, श्राद्ध आदि की गारटी दी जाय। ट्रस्टीशिप का प्रारभ, मुनाफे के बटवारे।

(शेषाश पृष्ठ २५४ पर)

[पिछले अक में श्री अरविन्द के शिक्षा विषयक विचार दिये थे। पाडीचेरी के आश्रम में अिन विचारो को कार्यान्वित करने का प्रयत्न हो रहा है। भाई कृष्णराज मेहताजी पिछले दिनो कुछ दिन पाडीचेरी आश्रम में, वहा के जीवन-दर्शन का अध्ययन करने गये थे। वहा से लौटने के बाद अुन्होंने अपने विचार मित्रो के सामने रखे और साथ-साथ अुन्हें पाडीचेरी आश्रम के अधिकारियो के पास भी भेजा। अुनकी शंकाओ के समाधान के लिअे आश्रम से अुन्हे अुत्तर मिला है, जिसमें स्पष्ट दीखता है कि दोनो ओर से सवेदनापूर्ण चितन चल रहा है। अुन्होंने श्री मेहता की अिस नोट को प्रकाशित करने की अनुमति भी दी है। श्री मेहता और आश्रम में श्री पडित जो श्री माताजी के व्यक्तिगत सचिव हैं, दोनो ने लिखा है कि जो व्यक्ति अपने प्रश्नो का स्पष्टीकरण चाहते हैं, वे सीधे अुनसे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। श्री पडित का अुत्तर स्थानाभाव के कारण यहा देना सभव नही है। अिस लेख के द्वारा हमारे पाठको को अरविंद की शिक्षा के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी। —संपादक]

मेरे वहा आने का निमित्त तथा अुद्देश्य व साधना केद्र* की जानकारी देने पर करीब-करीब हर साधक ने पहली बात यही बतायी कि साधना के लिअे गुरु की तलाश करनी होती है। "बिना गुरु साधना बिना पतवार की नाव की तरह समुद्र में अिधर-अुधर थपड़ें खाती रहती है। अिसलिअे प्रथम गुरु की खोज होनी चाहिये। गुरु की प्राप्ति के बाद अपने को अुसे सर्वस्व समर्पण कर देना चाहिये।" अेक साधक ने कहा, "चूकि आप ब्रह्म-विद्या जसे अूचे विचार की बात करते है, वह बात अुनके (गुरुके) बिना सभव नही है।" अुन्होने बताया कि वे साबरमती गाधीजी के पास १९२०–२२ के करीब गये थे और कल्कि अवतार मानकर अुनके साथ रहे। परन्तु जब वे पाडीचेरी पहुचे तो अुनके दिल को अैसा महसूस हुआ कि जिसकी तलाश में वे थे वह विभूति या गुरु यहा है। "दिल को सपूर्ण खोलकर मैंने अुनके सामने रख दिया और अपने आपको समर्पित कर दिया। तब से अभी तक यहा स्थिर और अेकाग्र हू और साधना कर रहा हू। ब्रह्मविद्या यह पुस्तकी विद्या या शाब्दिक विद्या नही है बल्कि अनुभव करने की या अनुभूति लेने की विद्या है। अिसलिअे अुसके लिअे वैसे ही आत्म-साक्षात्कारी गुरु की शरण में जाना चाहिये और अैसे व्यक्तियो के अधिष्ठान ही साधना के केन्द्र बन सकते हैं। आश्रम, सस्था, मकान या केन्द्र साधना के केन्द्र नही होते, वे तो स्थान मात्र होते है। अैसे स्थानो में अधिष्ठान ही मुख्य चीज है। अैसे अधिष्ठान के सपर्क से जीवन साधना का विकास शुरू होता है। बिना अन्तर-आधार के साधना का बाह्य जीवन खडा ही नही हो सकता। बाह्य जीवन तो धीरे-धीरे स्वत विकसित होता है। अिसलिअे बिना अन्तर-आधार के समझे या अनुभव किये बाह्य प्रवृत्तियों का अनुकरण अुपयोगी नही होगा। व्यक्ति, स्थान और अधिष्ठान के अनुरूप बाह्य जीवन विकसित होता है, वह नकल करने की वस्तु या पद्धति नही है। हमें अपने-अपने स्थानो पर अपनी शक्ति, वृत्ति और परिस्थित के

*सर्व सेवा सघ द्वारा सचालित केन्द्र।

अनुसार ही बाह्य ढाचा विकसित करना होता है।"

दूसरी बात मैंने अुनसे साधको के चुनाव और अुनकी प्रारभिक मर्यादाओ के बारे में पूछी। जहा तक चुनाव का सबध है वह सारा अधिष्ठान के व्यक्ति पर निर्भर करता है। वह जिसे योग्य व अुचित समझता है अुसे स्वीकार करता है या अस्वीकार करता है। फिर साधक का सीधा सबध अुस अधिष्ठान से रहता है। जहा तक प्रारभिक मर्यादाओ का सवाल है अुसमें मोटे तौर पर चार बाते हैं।

१. राजनीति में भाग न लेना २ बीडी सिगरेट न पीना ३ शराब न पीना ४. ब्रह्मचर्य पालन। "अिन प्रारभिक मर्यादाओ का पालन होता है या नही, होता है तो कितनी मात्रा में होता है आदि का पता कौन रखता है और कैसे रखा जाता है?" "यहा चार साल की अुम्र से ६० साल तक के स्त्री-पुरुष करीब १४००, १५०० की तादाद में रहते हैं। ये भिन्न-भिन्न देशो, प्रान्तो, धर्मों, भाषाओ आदि के हैं। अुनका जीवन भी स्वच्छ, सुन्दर और स्वस्थ रहता है। अेक प्रकार से जो बहनें यहा रहती हैं वे बिना रोक टोक व मर्यादा के सह-जीवन बिताती हैं और जीवन की हर प्रवृत्ति में सहकार्य करती हैं। याने साधना में स्त्री-पुरुष का भेद ही नही मालूम पडता" यदि कही शिथिलता या अजागृति में साधक को अुसका ध्यान न रहे तो अुस पर वे लोग खास कोई ध्यान भी नही देते और न अुसका कोअी बडा हव्वा ही बनाते हैं। क्योकि साधना का मुख्य प्रवाह अन्तर आधार पर निर्भर करता है और अुसका विकास अतिमानस, 'डिवाअिन' के द्वारा होता है, अिसलिअे यदि अितने बडे समुदाय में कुछ शिथिलता के प्रसग पैदा होते होंगे तो भी वे स्वत ही अपने आप छट जाते हैं और अैसे व्यक्ति आश्रम छोडकर चले जाते हैं। अिन बाह्य मर्यादाओ में नियत्रण व नियमन आदि पर कोअी बाह्य अकुश नही होता। पर साधक स्वय अपने अनुशासन से अुसका सहज पालन करते हैं या सरलता से अुसका पालन होता है।

अन्य साधको की चर्चा में घूम-फिरकर अुपरोक्त बातो का निचोड कही-न-कही आ ही जाता था। वे जिस आध्यात्मिक विकासक्रम को मानते हैं, वह अिस प्रकार है —

प्रकृति धीरे-धीरे पुरुष की ओर बढ रही है। अिस विकास क्रम में १—पदार्थ २—लाईफ—वनस्पति और पशुजीवन ३—मानस तक—चेतना (कान्शियसनेस) का विकास हुआ है। यह विकास का अन्तिम मुकाम नही है, बल्कि ट्रान्झिटरी स्टेज (क्षणिक अवस्था) है। अिसके आगे अतिमानस की ओर प्रकृति को आगे बढना है। चूकि मनुष्य ही प्रकृति में अत्यधिक चेतनावान प्राणी है अिसलिअे मनुष्य को जागरूक होकर प्रयत्न करना है। हर मनुष्य में मैटर का अेक फिजिकल लेयर—शरीर—दूसरा जीव का वाइटल लेयर—प्राण—तीसरा मानस का मानसिक स्तर—मन—होता है। वह अपनी चेतना को मानसिक स्तर से अूपर अुठाकर सुपर लेयर में ले जाना चाहता है। अिसलिअे ज्यो-ज्यो वह विकास करना चाहेगा, त्यो-त्यो अुसे निचले स्तर के सस्कारो व बधनो का निराकरण करते जाना होगा। अिसलिअे वह कोशिश यह करेगा कि जीवन की सारी प्रवृत्तिया वह 'सुपरमेन्टल लेअर' अर्थात् आध्यत्मिक स्तर से करने की कोशिश करे। व्यक्ति जब आध्यात्मिक चेतना के स्तर पर पूरा जागरूक हो जाता है तो फिर अन्य स्तरो

से अुठनेवाले विचार, विकास सस्कार, कल्पनायें तथा होनेवाले कार्य को बहुत तटस्थता से देखने लगता है और अुसके परिणामों को समझने लगता है। जब अेक बार अितना प्रत्यय हो जाता है तब व्यक्ति अपने आपको तामसिक और राजसिक वृत्तियों से छुडा सकता है और सात्विकता का सतत अभ्यास करने की कोशिश करता है। अन्तर चेतना अितनी जागृत हो जाती है कि अुसके लिअे बाह्य जीवन में किसी प्रकार का नियमन, नियत्रण आदि की जरूरत नही होती और यही कारण है कि वहा पर चलनेवाले अितने बडे सामुदायिक परिवार में कोअी बाह्य नियमन, नियत्रण, निरीक्षण या सुपरविजन नही है। हर साधक अपनी अन्तर-चेतना के प्रति वफादार रहकर काम करता है। अिसलिअे अुसके हर काम में विशेष भावनायें होती है जिसे अुपासना की भावना कह सकते हैं। यही कारण है कि साधक ३०-४० साल से अेक ही कृति करते हुअे नही अघाये। अुनके चित्त में समाधान रहता है। कृति को परिपूर्ण करने की कोशिश करते हैं और अुसको अुपासना का माध्यम मानते हैं।

वहां पर साधको के बाह्य जीवन या आवश्यकताओ के बारे में आकिक (गणित) समानता पर ध्यान नही दिया जाता है। हरेक को लगनेवाली वस्तुओ का आयोजन सामान्य तौर से करने की कोशिश की जाती है। साधक अपनी आवश्यकतायें हर महीने की २५ तारीख को लिखकर माताजी को भेज देता है। माताजी अुसकी जरूरतो को ध्यान में रखकर जो निर्णय करती हैं, अुसके अनुसार वे वस्तुयें साधकों को हर महीने की पहली तारीख को जो 'प्रास्पेरिटी डे' माना जाता है, प्रसाद रूप में अुन्हे माताजी की ओर से मिल जाती है। और अुसमें साधक पूर्ण समाधान मानते हैं। सामान्य तौर से साधक के चित्त को ठेस न पहुचे और सन्तुष्ट रहकर साधना कर सके, अिस दृष्टि से भोजनालय तथा अन्य सहूलियतों का वहा आयोजन किया गया है। आश्रम की ओर से अिन आयोजनो में यह दृष्टि रहती है कि साधक को किसी प्रकार का कष्ट न हो। अुनका स्वास्थ्य तन्दुरुस्त रहे और चित्त समाधानमय। साधक अपनी ओर से कम-से-कम, या जो आवश्यक है अुतनी भर सहूलियतो का अुपभोग करने की दृष्टि रखता है। संसार के करीब २६ मुल्को के साधक वहां रहते हैं। दोनो सस्कृतियो के समन्वय की दृष्टि से वहा का जो जीवन स्तर है वह भारत के सामान्य जीवन-स्तर से अूचा है और वह अेक प्रकार से विचारपूर्वक रखा गया है। सामान्य तौर से यह कहा जाता है कि झगडे आदि वस्तुओ के अभाव से पैदा होते हैं। चूकि वहा अभाव नहीं है, अिसलिअे झगडा वहा दिखायी नही देता। भारत की दृष्टि से यह कहा जा सकेगा कि वहा अभाव नही है, परतु अन्य सपन्न मुल्को की दृष्टि से जो जीवन का स्तर है वह कोअी सपन्न नही माना जायगा, बल्कि सादा ही माना जायगा। अेक ही प्रकार का भोजन तथा जीवन वर्षों तक चलता रहे यह भोगवृत्ति से सभव नही हो सकता। अिसलिअे अुनके सारे जीवन में साधना का असर दिखायी देता है।

सारे आश्रमवासी माताजी को अेन्लाअिटन्ड सोल (सम्बुद्ध आत्मा) मानते हैं। अिसलिअे वहा अब अुसी का प्रत्यक्ष अधिष्ठान है और सर्वत्र अुसका प्रभाव नजर आता है। वहा की हर प्रवृत्ति में स्वच्छता, सुन्दरता, स्वस्थता और व्यवस्थितता का पूरा ध्यान रखा जाता है। अुसमें किसी प्रकार की सकीर्णता या कजूसी नही की जाती।

आश्रम में शरीक होनेवाला साधक पहले मदर को समर्पित होता है और फिर परस्पर स्नेह-भाव व सेवा-वृत्ति से साधनामय जीवन विताता है। जीवन को लगनेवाली छोटी-बडी हर प्रवृत्ति जैसे–खेती, गोपालन मुर्गीपालन, बागवानी, भोजनालय, अुद्योग-शिक्षण, कपडा-धुलाअी-सिलाअी, बरतन सफाअी, बढअीगिरी, गृह-निर्माण, छापखाना, प्रकाशन, पुस्तकालय आदि सारे काम साधक करते है। प्रवृत्ति के पीछे अुनकी मुख्य त्रिविध दृष्टि रहती है। १–अपनी आवश्यकता की पूर्ति, २. रोजगार पाना ३ ट्रेनिंग, शिक्षण देना। साधको की आवश्यकताओ की पूर्ति तथा विकास कार्यो के लिअे करीब ६०० मजदूरो का अुपयोग भी वे करते है। अुन्हे आवश्यक मजदूरी तथा कुछ विशेष सुविधायें भी देते है। किसी भी काम में अूच-नीच क भाव नही दिखाई देता। साधका के जीवन में समर्पण के कारण आयी हुअी नम्रता दर्शको का विशेष लक्ष्य खींचती है।

कुछ बाते जो वहा पर रहने से तथा साधको से चर्चा करने पर भी स्पष्ट नही हो पायी, वे अिस प्रकार है –

(१) साधको का आम जनता से सीधा सपर्क नही के बराबर है यद्यपि वे सब आम जनता के बीच रहते है और साधनामय जीवन बिताते है। जन-सपर्क के अभाव में मोटे तौर पर अैसा लगता है कि दैनंदिन की अुठनेवाली समस्याओ का साधकों पर विशेष असर नही होता है। या दूसरे शब्दो में यह भी कहा जा सकता है कि सवेदनाशीलता का अभाव ही दीखता है। वे प्रयत्नपूर्वक अलग रहते है अिसलिअे वे न तो आम जनता के दु खदर्दों मे हिस्सा ही बटाते है और न अुनकी समस्याओ के हल निकालने का प्रयत्न ही करते है। शायद अूचे स्तर के प्रयोग में लगे रहने के कारण वैसा पथ्य पालना जरूरी भी समझा हो। परन्तु प्रयोग की निष्पत्ति का लाभ आम जनता को कब और कैसा प्राप्त होगा यह चीज मुझे स्पष्ट नही हो सकी है।

(२) सर्व सामान्य व साधारण से साधारण व्यक्ति की सहज साधना का क्रम अुसमें दिखायी नही दिया। साधना के लिअे विशेष पूर्व तैयारी की वहा आवश्यकता लगती है।

१–मदर को सर्वस्व समर्पण करना होता है।
२–अपना सहज सेवा क्षेत्र या कार्य क्षेत्र छोडना होता है।
३–साधना के लिअे पांडिचेरी जाना होता है।
४–परिवार छोडना होता है।
५–फिर साधना के लिअे आध्यात्मिक स्तर पर जागृतिपूर्वक प्रयत्न करना होता है।

अिसलिअे अनायास जीये जानेवाले सहज जीवन में से साधना हो रही है अैसी सर्वसुलभ और सर्वत्र हो सकनेवाली साधना नही दिखायी दी। वैसी साधना की पद्धति खोजनी होगी।

अुपर्युक्त बाते वहा की न्यूनताओ का दिग्दर्शन कराने की भावना से नही, स्पष्टता से समझने के लिअे व्यक्त की है, क्योकि वह शायद अपने अल्पकालिक निवास और चद साधको से ही हुअी अेकांगी चर्चा का ही असर हो। वहा की साधना के बुनियादी साहित्य, अुनके जीवन की अन्तरधारा तथा सारे प्रयोग के समग्र स्वरूप की जानकारी के अभाव में अुपर्युक्त बातो का अस्पष्ट रहना काफी मुमकिन है। आशा है आगे सपर्क और स्वाध्याय से इन बातो का विशेष स्पष्टीकरण हो सकेगा।

आज की प्रचलित सामाजिक व्यवस्था की प्रकट अन्यायपूर्णता ने अेक-आध सदियों से कओ चिन्तनशील व्यक्तिओं को अेक बेहतर व्यवस्था की खोज और प्रयत्न करने के लिअे प्रेरित किया है। अिसमें से कओ विभिन्न सिद्धान्तो का भी जन्म हुआ, जैसे साम्यवाद, समाजवाद अित्यादि। कुछ भावनावाले व्यक्तियोंने, जिनका आधार ज्यादा आध्यात्मिक है, आज और अभी अिस अन्यायपूर्ण व्यवस्था से अलग होकर तुल्यविचारवाले दूसरे व्यक्तियों के साथ छोटे-छोटे कर्मनिष्ठ समुदायों में अेक शोषण-मुक्त और अुद्देश्यपूर्ण जीवन बिताने तथा अुसके द्वारा दूसरों को भी मार्ग दिखाने का प्रयत्न किया है। फलस्वरूप आज दुनियाभर में–विशेषतः यूरोप और अमेरिका में–अिस तरह के कओ छोटे-छोटे समुदाय स्थापित हुअे हैं, जो भ्रातृभावना से अिस आदर्श के लिअे प्रयत्न करते हैं। क्योंकि ये समुदाय जान-बूझ कर अेक विशेष अुद्देश्य से कुछ व्यक्तियों द्वारा बसाये गये हैं, अिनको अंग्रेजी में 'अिन्टेन्शनल कम्युनिटी' कहते हैं। आजकल इन समुदायों का अेक केंद्रीय सगठन भी बना है, जिसका नाम अिन्टेन्शनल कम्युनिटीज फॅलोशिप रखा है।

अपने भावी कार्यक्रम के बारे में चर्चा करने के निमित्त अुसका वार्षिक अधिवेशन हाल में ही हुआ। अिस तरह के सामुदायिक जीवन के जो प्रयोग हुअे अुस आरोहण ने दुनिया भर में हर अेक विचारशील नागरिक को वर्तमान समाज के आधारो और मूल्यों के बारे में पुनर्विचार करने के लिअे प्रेरित किया है। यह अब अधिकाधिक समझा जा रहा है कि नैतिकता, भ्रातृत्व, सृजनात्मकता और प्रगति की जो जरूरतें मानव को हैं वे अेक अैसे समाज में रहते हुअे पूरी नहीं की जा सकतीं, जो न नैतिक है, न सुन्दर है, जिसमें न भ्रातृत्व की भावना है, न प्रगतिशीलता है। अिस फॅलोशिप में सामुदायिक जीवन की विभिन्न पद्धतियां अेकत्र हुअी हैं, जो कि आपस में भिन्न होते हुअे भी पारस्परिक सवेदना और अुद्देश्यपूर्ण जीवन के मूलभूत तत्वो पर आधारित हैं।

सामुदायिक जीवन के अिन प्रयोगो की विभिन्नता सगठन के तरीको पर ही ज्यादा है, और यह देश-देश में तथा समुदाय-समुदाय में विभिन्न है। अिस्रायल में जो २२६ क्विबुत्ज हैं वे देश के पुनर्निर्माण व नवागन्तुकों को बसाने पर मुख्य जोर देते हैं। फ्रान्स के कर्म-समुदाय, अेरिक फ्रॉम के कथन के अनुसार कार्यनिष्ठ जीवन के ज्वलत अुदाहरण हैं। हमारे आज के पूंजीवादी समाज के जीवन की दृष्टि से अुनकी सफलतायें व कृतियां आश्चर्यकारी हैं। वहां काम सामाजिक व सास्कृतिक प्रवृत्तियों का ही अेक अभिन्न अग बन गया है, जिसके द्वारा मानव की शक्ति व अुत्साह का प्रस्फुरण होता है, अेकरूपता का नहीं–अैक्य का निर्माण होता है। अत्यन्त विभिन्न और कओ दफे परस्पर विरोधी विचार रखनेवाले भी वहां अेक दूसरे के प्रति सम्मान और भ्रातृभावना के साथ रहते हैं। अुन्हें समुदाय के द्वारा निर्धारित किसी 'ठीक विचार' का अनुसरण नहीं करना पडता। अिसका कारण यह है कि वहां आदर्श भेद पर नहीं सहजीवन पर ज्यादा महत्व दिया जाता है। राजनैतिक, धार्मिक या दार्शनिक

मान्यताओं की वजह से किसी को वहां प्रवेश का निषेध नही है; न वंश, लिंगभेद या राष्ट्रीयता के कारण । हर-अेक सदस्य का व्यक्तिगत विकास संपूर्ण हो, अिस अुद्देश्य से शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है ।

न्यूज़ीलेंड की 'रिवरसंड कम्यूनिटी' में कुछ अीसाअी लोग अेक सच्चे अीसाअी धार्मिक जीवन बिताने के प्रयासमें है । कर्म और आराधना का अुन्होने समन्वय किया है; कर्म में आराधना की ही भावना है । करीब साठ सदस्य खेत में काम करते हैं, मवेशियो और मुर्गियों का पालन करते है, लकडी का काम करते है, मकान बनाते हैं और अेक परिवार के जैसे रहते हैं । अपने अेक कार्यविवरण में अुन्होने कहा—"कभी कभी तो हमारे पास नगदी पैसा बिलकुल नही रहता, फिर भी हम मानते है कि आर्थिक कठिनाअियो में भी सामुदायिक जीवन का विकास होता है, हम कठिनाअियो में भी हिस्सेदार बनते हैं । सामूहिक हित के लिअे सब का कुछ न कुछ छोडना, किफायत की आवश्यकता, अुद्देश्य पूर्ण काम, अेक साथ काम करना, अर्पण बुद्धि, ये सब बडी अनुभूतिया हैं । और क्योंकि अुसके साथ अपने समुदाय के बाहर के समाज की भी भरपूर सेवा करते है, अुससे हमारी अनुभूति और भी समृद्ध बनती है, जीवन में तृप्ति का बोध होता है ।

होविस नाम का समुदाय अैसे समुदायो में सबसे पुराना है । अुनका जीवन बहुत ही सादा है, वे सब चीजो में हिस्सेदार होते हैं । और सब कामो में सहकार करते हैं । अमेरिका में नार्थ कोरोलिना का सेलो समुदाय डॉ. मारगन की प्रेरणा से आरंभ हुआ, जो कि प्रजातंत्र के आधार के रूप में छोटे समुदायो के प्रसिद्ध समर्थक हैं । यह अत्यंत सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों के बीच बसा है । अेक मित्र जो वहां दर्शक के तौर पर गये थे, कहते हैं, "वहां की अेक चीज, जिसका हमारे अूपर सबसे गहरा असर पडा, लेकिन जिसके बारे में अुस समुदाय के सदस्य सचेत नही मालूम देते थे, वहां के बच्चों का समुदाय के साथ का असाधारण संबंध था। जिस सरलता और विश्वास के साथ वे अेक दूसरे के घर जाते थे, और जिस स्वाभाविक प्रेम के साथ बडे किसी भी बच्चे के लिअे जिम्मेदारी महसूस करते थे, यह मेरे अनुभव में अपूर्व था । अिस सामाजिक व्यवस्था का स्वास्थ्यकर प्रभाव वहा के बच्चो की प्रसन्नता और भावनापर सुरक्षाबोध से साफ प्रकट होता था ।"

अमेरिका में जब गोरो और नीग्रों के बीच संघर्ष और हिंसा हुअी तो कोअिनोनिया समुदाय को बहुत मुसीबतो का सामना करना पडा। कोअिनोनिया समुदाय की यह परंपरा है कि वह सारी मानवजाति को अेक पिता की सन्तान मानते है और जो भी अिस प्रेममार्ग को मानने के लिअे तैयार है, अुन सब के लिअे वहा बिना किसी भेदभाव के प्रवेश है। चारों तरफ के तनाव के वातावरण में अुनके अिस सिद्धांत ने अेक दुर्घट सन्धि पैदा कर दी। फिर भी समुदाय ने अिन आघातों को धीरतापूर्वक सहन किया और अपने दृष्टिकोण और अुद्देश्य में अटल रहा ।

अड्वेन्टिस्ट स्वावलंबी समुदाय की आधारभूत प्रवृत्तिया शिक्षा, कृषि और स्वास्थ्य-कार्य है । जिनकी अनेक शाखायें है और वे अुनका हर अेक का अेक शिक्षा केंद्र के रूप में विकास

करने का प्रयत्न करते हैं जहा से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अपने आसपास के क्षेत्र की सेवा करेंगे, खासकर स्वास्थ्य और पोषण के विषय में।

"नई तालीम" के पाठक अिंग्लैंड और अमेरिका के ब्रूडरहोफ समुदायों से पहले से परिचित हैं ही। गोल्ड फार्म वेल कोआपरेटिव्ज् अित्यादि अैसी ही सामुदायिक भावना के साक्षात्कार प्रयत्न के परिणाम है।

अपने अुच्च ध्येय और सयुक्त प्रयत्न से अिन समुदायोंने बहुत कुछ सफलतायें प्राप्त की हैं। लेकिन अुनके समन्वित सगठन के सामने अब अिन प्रयत्नों को अधिक कारगर और तीव्र बनाने का सवाल है। रोज की जिन्दगी में कअी सारे प्रश्न अुठते हैं, व्यक्ति और व्यक्ति के बीच संघर्ष और मनमुटाव के मौके आते है। वे महसूस करते हैं कि अिनके समाधान या निराकरण के लिअे अिस ओर विशेष प्रयत्न की जरूरत है कि सामूहिक प्रार्थना और दैनिक जीवन में सामूहिक निर्णयो की जिम्मेदारी में अेक साथ भाग ले, व्यक्तिगत अभिमान, महत्वाकाक्षा, स्वार्थपूर्ण अुद्देश्य और पूर्वग्रहो से अूपर अुठें, और सब के हित के लिअे सोचने व काम करने का प्रयत्न करे। यह कोअी छोटा या आसान काम नही है। वह अेक सतत और क्रियाशील साथीपन का प्रयत्न है। अिन समुदायो ने अिस तथ्य को भी पहचाना है कि अिस तरह के सहजीवन में हिस्सेदार होने के लिअे जो लोग अिकट्ठे होते हैं वे अपने ही समुदाय के कार्यों में, अुसके सदस्यो के कल्याण में और समस्याओ में अितने मग्न होते हैं कि आसपास के क्षेत्रों की आवश्यकताओं की अुनके द्वारा-अुपेक्षा हो जानेका खतरा है। अिनमें से कअी समुदाय आसपास की जनता के दुःख निवारण के प्रयत्न में लगे रहते हैं। अुनके सुखदुःख में व्यक्तिगत रूप से शामिल होते हैं और स्थानीय सहकारी समितियों के सदस्य बनते हैं, विकास के कामों में सक्रिय भाग लेते हैं। जो अभी फॅलोशिप-केंद्रीय संगठन-के सदस्य बने हैं, अुन समुदायों की भावनाओं व अुद्देश्यों को अुनके ये साधारण मूलभूत आदर्श तथा सिद्धात व्यक्त करते हैं। वे महसूस करते हैं कि हालाकि जीवन के सभी क्षेत्रो में पारिवारिक भावना से काम लेना चाहिये, जमाने की जरूरतों को ध्यान में रखकर फिलहाल अेक तरफ आर्थिक तथा दूसरी तरफ आध्यात्मिक पहलुओ पर विशेष ध्यान देना होगा, अुत्पादन व अुपयोग दोनों बाजुओं को महत्व देना होगा।

मूलभूत विचार :

१. समुदाय का मतलब है कि जीवन के सारे तरीके में, अुसके मूल्यों में और जिम्मेदारियों में पारस्परिक सहकार।

२. समुदाय का सारभूत आधार आध्यात्मिक होता है, याने पारस्परिक सम्मान, प्रेम और समझ-चाहे अुसका कोअी स्थूल प्रकटन न हो।

३. व्यक्तित्व का मूल्य, आदरपूर्वक समझ का महत्व, करुणापूर्ण सबंध, भावनात्मक, सास्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यो की श्रेष्ठता, सकल मानव का अैक्य, ये अिन समुदायो के आदर्शों तथा सिद्धातो की बुनियाद हैं।

४. व्यक्ति के विकास के लिअे सामुदायिक जीवन जरूरी है, और अैसे छोटे समुदाय मानव समाज की परिपक्वता के लिअे आवश्यक

हैं । "इन्टेन्शनल कम्युनिटी" अिन दोनों अुद्देश्यों की पुष्टि करती है ।

५. "इन्टेन्शनल कम्युनिटी" अैसी अेक समाजरचना के निर्माण का प्रयास करती है, जो धीरे धीरे समय के अनुसार सारी दुनिया में मान्य होगी और अेक सकल मानव-समुदाय की स्थापना में सहायक होगी, जहा परस्पर आदर और प्रेम सर्व साधारण होगा और पूरी समानता के साथ समाज की सब जिम्मेदारियो में और जीवन के मूल्यों में सभी सहकार करेंगे ।

६ परस्पर प्रेम और सहयोग, अेक समग्र जीवन के लिअे प्रयत्न, जीवन के आधारभूत मूल्य और सुविधायें सब को समान रूप से प्राप्त हो–यह निश्चय, दैनिक जीवन की जिम्मेदारियों और आकस्मिक परिस्थितियों में सब का सहकार, अिन अुद्देश्यों की साधना के लिअे जिन्होंने आत्मार्पण किया हो अैसे व्यक्तियों के छोटे-छोटे दल अिन समुदायों में काम करते हैं ।

७ ये सब समुदाय आरंभकाल में विचार आचार और अनुभव में अपरिपक्व ही होते हैं। धीरे-धीरे अुनका विकास होता है । श्रद्धा, नम्रता और अनुभव से परिपक्वता आती है ।

सिद्धात

फॅलोशिप के सदस्य-समुदायों में नीचे लिखे सिद्धात सर्वमान्य किये गये हैं और अधिकतर अुनका अमल भी होता है

१ प्रजातंत्रात्मक पद्धतियां—सामुदायिक कार्य निर्वहण में और अन्य कार्यों में मित्रमंडल की कार्य-पद्धति काम में लायी जाती है ।

२ अहिंसात्मक तरीके—संघर्ष में या समुदाय के किसी अुद्देश्य की पूर्ति के लिअे हिंसा का अुपयोग पूरा-पूरा निषिद्ध है । हिंसा सामुदायिक जीवन के अुद्देश्यों व सिद्धांतों के सर्वथा प्रतिकूल है ।

३ भौतिक संपत्तियों और आध्यात्मिक साधनाओं में सब के साथ हिस्सा लेना—यह महसूस किया जा रहा है कि सामुदायिक जीवन की असली परीक्षा आर्थिक क्षेत्र में है । समुदायों के अुद्देश्यों, परस्पर संबंधों और लक्ष्यों का जन्म आध्यात्मिक क्षेत्र में ही होता है, अिसलिअे अिसमें साथीपन जरूरी है ।

४ जीवन के किसी भी विशेष तरीके का विकास करने की स्वतंत्रता, समुदाय को अेक पूर्व निर्धारित ढांचे के बंधन में नहीं डालना—समुदाय किसी अेक विशेष वर्ग का आश्रयस्थान या किसी विशिष्ट आदर्श के विकास का क्षेत्र न बने । अिसलिअे अिनमें अपने विश्वासों की बडे शब्दों में घोषणा करने के बदले आतरिक भावना से काम करने का प्रयत्न होता है ।

५ वैयक्तिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं और मूल्यों में समतोल ।

६ वंश, वर्ग या धर्म के भेदभाव के बिना अपने समुदाय के बाहर भी सब के साथ साथीपन की भावना और अुसके लिअे प्रयत्न ।

विद्यार्थियों के समग्र-जीवन-सस्कार की दृष्टि से छात्रावासीय जीवन का अपना विशेष महत्व है। पुरानी शिक्षा के छात्रावासो में विद्यार्थियो को केवल रहने तथा खाने-पीने और पढाओी की सुविधा की दृष्टि से ही भेजा जाता था, किन्तु नई तालीम के छात्रावासो से समग्र-जीवन के सस्कारो की अपेक्षा अभिप्रेत है। सेवाग्राम छात्रावास में, जिसको आनद-निकेतन--आनद का घर--कहा जाता है, बालको के भेजे जाने के कओी कारण हैं। जिनको पू० बापू के अूपर पूर्ण श्रद्धा है, नई तालीम से राष्ट्र का अुत्थान होगा, अैसा जो मा-बाप मानते हैं, वे अपने बच्चो को बुनियादी शिक्षा पाने के अुद्देश्य से भेजते हैं। दूसरे भी अैसे कुछ पालक हैं जो नई तालीम के शैक्षणिक आदर्श को पूरी तरह समझकर अपने बच्चो को यहा भेजते हैं।

अपना बच्चा पुरानी पढाओी करने मे असमर्थ है, बौद्धिक शक्ति कम है, अुसका विकास तो किसी अुद्योग द्वारा ही हो सकता है, अैसा मानकर अपने बच्चो को भेजनेवाले भी कुछ लोग हैं। अुनका विश्वास है कि यहा के वातावरण में विद्यार्थी जीवन का अच्छा रास्ता पकड लेगा।

जो बालक अुनके पालको के लिअे समस्या बने हैं अुनके लिअे बापू की आश्रम-शाला अेक अच्छा स्थान होगा, अैसा कुछ पालक सोचते हैं। जिस वातावरण में अपने बच्चे सुधर जायेंगे, यह अुनकी भावना रहती है। सेवाग्राम नजदीक होने के कारण भी कुछ पालक विद्यार्थी को यहा रखना चाहते हैं। गरीबी के कारण बाहर के शिक्षण तथा छात्रावास का खर्च बर्दाश्त करने की शक्ति नही रहती; जिसलिअे भी कओी मां-बाप स्वावलबी शिक्षा में अपने बच्चो को रखना चाहते हैं।

सक्षेप में मैंने सेवाग्राम छात्रावास में आने वाले बालकों के माता-पिताओ की भावना का चित्र यहाँ रखा। छात्रावास में प्रवेश के लिअे आयु मर्यादा ८ साल से १२ साल तक रखी है। अिसका यह कारण है कि ८ साल की अुम्र के पहले तो बच्चा अपने आपको स्वतत्ररूप से सभालने में असमर्थ ही रहता है और अिस अुमर में माता-पिताओ से भी अलग कैसे हो सकता है? कुछ विशिष्ट परिस्थिति में हमें छोटे बालको को भी प्रवेश देना पडा, किन्तु अुनको सभालने में अुतनी सफलता नही मिल पायी। वे थे शरणार्थी बालक। अुनके पालन-पोषण के साथ-साथ और भी बहुत-सी समस्यायें थी। अन्य बुनियादी शाला में शिक्षा पाया हुआ यदि १२ साल से बडा विद्यार्थी आता है तो अुसे प्रवेश देने में कोओी कठिनाओी नही होती।

समय का बोध--बाहर के वातावरण में पले हुअे बालको को सर्व प्रथम यहा के कार्यक्रम के सबध में कुछ कठिनाअियां होती हैं, जैसे सुबह साढे-चार या पाच बजे अुठना। बाहरी स्थानो में तो सूर्योदय के पहले अुठने वाले बिरले ही बालक होगें। किन्तु आश्रम छात्रावास में प्रतिदिन सुबह ५ बजे अुठना पडता है। छात्रावास व्यवस्थापक के लिअे यह अेक काफी कठिन कर्म है। सोते हुअे बच्चो को जगाना, घटी दिलवाना, प्यार से समझाना, मुह पर से अुढावन खोलकर बैठाना, यह सब करने के पश्चात् भी थोडी दूर जाते ही बालक फिर से सो जाते हैं।

अिसके लिअे क्या किया जाय ? सुबह शाम की सामूहिक प्रार्थना में अुपस्थिति का भी यही प्रश्न है। कोअी घूमने चला जाता है तो कोअी शौचादि के लिअे चला जाता है। बुनियादी शिक्षा में कोअी दड तो है नही, जिससे डरकर बच्चे सारे काम ठीक कर डाले। बालको के समग्र-जीवन की सारी व्यवस्था अुन्ही के द्वारा सगठित करने से क्या अिसमें कामयाबी मिल सकेगी ? छोटी छोटी बातो में बालको की दृष्टि पैनी बनाना तथा जागरूकता पैदा करना और समझदार बालको में नेतृत्व के गुण का विकास करने का मौका देना, यह भी अिसी से साध्य होगा। देखा गया कि बडे बालक तो अिस तरह की सधि मिलन से स्वय ठीक हो जाते है, साथ साथ टोली के और बालक भी ठीक रहे, अिसका पूरा पूरा ख्याल रखते है। हर सप्ताह के अत में शनिवार को सुबह बाल-सभाओ में बच्चो की खुली चर्चा होती है। नायक अपनी टोली की प्रगति का विवरण सभा के सामने रखते है। विद्यार्थी दिल खोलकर चर्चा करते है और निर्णय लेते है। अिससे बालको को सामाजिक बोध, समय का बोध तथा कर्तव्यपालन की चेतना होती है और समाज का वातावरण ठीक रखने में मदद भी होती है।

बिस्तर में पेशाब—८-९ साल के छोटे छोटे बालक अपने माता पिता को छोडकर जब छात्रावास में नये-नये प्रवेश पाते है तब कभी-कभी रात के समय बिस्तरे में पेशाब कर देते है। और कुछ तो अैसे भी बालक होते है जिनकी बिस्तरे गीला करने की आदत ही पड जाती है। यह कभी कभी अेक कठिन समस्या बन जाती है। रात को सोने के पहले विद्यार्थी पेशाब कर ले अिस पर ध्यान दिया तथा शाम के भोजन में चावल और अन्य जलपूर्ण पदार्थों की मात्रा कम की गयी। अिस पर भी कामयाबी प्राप्त नही हुअी। फिर क्या करे ? नायको के साथ अिस सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ। नायको ने अपनी टोली के अैसे बालको को रात में दो तीन बार जगाकर अपने साथ पेशाब कराने के लिअे ले जाने की जिम्मेवारी ली। अिससे काफी मदद हुअी। नायको के प्रेममय व्यवहार और नियमित रूप से जगाने से ही इस समस्या का हल मिला।

चीजें अुठा लेना— दूसरो की चीजो को अुठा लेने की आदत अेक खास समस्या है। पुराने सस्कारो के साथ ही साथ घर की परिस्थिति तथा बच्चो के पास वस्तुओ का अभाव अिसके मुख्य कारण है। बच्चो की बाल-सभा में खुली चर्चा तथा अुनके मत्रि मडल द्वारा सामानादि की अुचित समय, पर देख भाल और अभावपूर्ति ही अुसके लिअे अुपाय है।

झगडा और मारपीट : बच्चे आपस में कभी-कभी झगड पडते है। अैसे समय अेक रोते हुअे आता है। अैसे समय क्या किया जाय ? शिकायत करने की वृत्ति तो बच्चो में नही आनी चाहिये। बडे बच्चे या टोली नायक अुस स्थान पर होने से वे ही अिसका ठीक फैसला कर देते है। दोना को समझाने का प्रयत्न करते है। हमारे पास यदि बालक रोते हुअे आता है तो मारनेवाले बच्चे को भी बुलाकर कारण समझ लिया जाता है और समझाने से काम बनता हो तो समझाकर नही तो नायको की मदद से मत्रिमडल में अुसका निर्णय होता है। बच्चों के झगडे बच्चे ही निपटा ले, यह मुख्य बात है।

स्वाध्याय : बुनियादी तालीम में कोई पाठ्य पुस्तक नहीं है और न कोई परीक्षा। सावधानी न रखें तो यह भी नतीजा होता है कि बच्चों में स्वाध्याय प्रवृत्ति ही कम हो जाती है। बच्चों में स्वाध्याय-प्रवृत्ति कैसे निर्माण करें, यह अेक प्रश्न छात्रावास-जीवन के सम्बन्ध में विचार करते समय सामने आता है। जिसके लिअे साहित्य सभाओं का आयोजन करने से काफी लाभ मिला है। सप्ताह में अेकबार बच्चे याद किये हुअे तथा स्वरचित दलोक, कवितायें, प्रहसन, कहानियां तथा नृत्य-गीत आदि अपने बाल समाज के सामने पढ़ते या प्रदर्शित करते हैं। कार्यक्रम तथा कुमवार बच्चों के कार्यक्रम प्रति सप्ताह होने से अुसके लिअे अुन्हें पाठान्तर और अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस होती है। खुला वाचनालय भी बनाया गया जिसमें बच्चे जाकर पढ़ते हैं। दैनिक तथा मासिक पत्रिकाओं का भी वे स्वेच्छा से वाचन करते हैं। बच्चों ने अपनी दैनिक पत्रिका भी शुरू की है। बच्चे आपस में अपने संपादक चुन लेते हैं और भिन्न-भिन्न विषयों के वार्ता संकलन की जिम्मेवारियों का बटवारा कर लेते हैं। दैनिक "अंकुर" पत्रिका का प्रकाशन भी होने लगा है। जिससे बच्चों की अध्ययन प्रवृत्ति तो बढ़ी ही, साथ-ही-साथ समाज के बड़े बुजुर्गों के साथ अुनका प्रेम संपर्क भी बढ़ा है।

साप्ताहिक बाल-सभा में साहित्य सभा के लिअे सब बच्चों की सम्मति से अेक विषय चुना जाता है। अगले सप्ताह में अुस विषय पर बच्चे बोलते हैं। सप्ताह भर किताबों से, शिक्षकों से, साथी-मित्रों से बच्चे अुस विषय की जानकारी हासिल कर लेते हैं और साहित्य सभा में संकलित की हुअी जानकारी अपने ढंग से पढ़ी जाती है। चर्चा के लिअे विवाद का विषय रखना ज्यादा श्रेयस्कर नहीं पाया गया क्योंकि वाद विवाद रखने के लिअे जिस मानसिक गुण की आवश्यकता होती है वह १२ साल की अुम्र तक विकसित नहीं हो पाता है। जिसलिअे वाद-विवाद झगड़े का स्वरूप ले सकता है।

छात्रावास-जीवन में आनेवाली समस्याओं में से कुछ का जिक्र यहां किया। छात्रालय का संगठन करने में जिन बातों की आवश्यकता होती है अुनका हमें गहरा अध्ययन करना चाहिये। साथी शिक्षक अपने-अपने अनुभवों का आदान प्रदान करेंगे तो अुससे काफी मदद मिलेगी।

मनुष्य पूर्ण नहीं है, पूर्ण होना है। अिस "है" के छोटे से पिंजरे में ही यदि हम अुसे कैद कर देंगे तो यह अुसके लिअे नरक हो जायगा। अुसकी भवितव्यता ही अुसका स्वर्ग और अुसकी मुक्ति है। अपनी संभावनाओं से अुसका मन सदा अुदयोन्मुख रहता है। अुसका भविष्य अपनी संभावित महानताओं के स्वप्न लिया करता है, वह वहां तक पहुचने के लिअे भूखा है, अुस भूख को वह कभी नहीं खो सकता, क्योंकि अपनी कल्पित सम्भावनाओं तक वह कभी नहीं पहुच सकता।

तरह लपेटकर लटकाया हुआ है, अुससे वह अपने अंगों को हिला डुला नहीं सकता। शिशु स्वाभाविक ही कअी प्रकार की चेष्टायें करता है। वह यह सब क्यों करता है? और अिन चेष्टाओं का अुसके व्यक्तित्व के अूपर क्या असर होता है?

शिशु की चेष्टाओं को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है।

आवेगात्मक चेष्टायें (अिम्पल्सिव):—बालक हाथ-पैर अिधर-अुधर हिलाता है, पटकता है। ये चेष्टायें अुसकी स्वाभाविक शक्ति और स्फूर्ति के बहि:प्रवाह के रूप में होती हैं। ये दबी नहीं रखी जा सकती, अुनका कुछ-न-कुछ निकास होना पडता है। गर्भवती माता अच्छी तरह जानती है कि गर्भावस्था में भी शिशु अपना शरीर, हाथ-पैर खूब हिलाता-डुलाता रहता है। प्रकृति ने अुसके लिअे सुन्दर व्यवस्था की है। गर्भ के पाचवे महीने से ही अुसकी ये चेष्टायें शुरु होती हैं। ये अुसके जीवन-शक्ति का लक्षण हैं। जन्म के बाद भी अुसे अिन चेष्टाओं को स्वतन्त्रतापूर्वक करने का मौका रहना चाहिये। शिशु को अिस प्रकार लिटाना चाहिये कि अुसके हर अवयव बिना रुकावट हिल-डुल सके। अुसकी प्राकृतिक प्रवृत्तियों पर बाधा या बंधन डालकर कतअी अच्छा नहीं हो सकता है।

प्रतिवर्त चेष्टायें (रिफ्लेक्स):— शिशु की कअी चेष्टायें अुसकी प्रतिवर्त क्रिया के तौर पर होती हैं। अुनके लिअे किसी बाह्य अुद्दीपन की आवश्यकता होती है। अिन चेष्टाओं में भी दिमाग का हिस्सा नहीं होता। यह स्वय ही "आटोमेटिकली" हो जाती हैं। शिशु को अुठाते समय अगर थोडा झटका लगे या कुछ असावधानी बरते तो अुसका शरीर तन जाता है। यह अुसके समतोल खोजाने के कारण, भय आदि के कारण होता है। शिशु की मुट्ठी कुछ पकडने लायक जब हो जाती है तो जब कभी मुट्ठी का स्पर्श किसी चीज से हो जाता है तो वह अुसे पकडने की कोशिश करता है। ये सब अुसकी प्रतिवर्त चेष्टायें होती हैं। बाह्य अुद्दीपन या संवेदाग ग्रहण करते हैं और चेता-संहति द्वारा ग्रंथियां और पेशियां अिन चेष्टाओं को प्रवृत्त करती हैं।

वातावरण के साथ धीरे-धीरे परिचय होने पर शरीर अिनका आदी हो जाता है। अिन्हें न तो टाला जा सकता है और नहीं ही ये बदलती हैं। अिनके तो आदी होना ही पडता है। काफी परिपक्वता पाने के बाद ही व्यक्ति अिनमें से कुछ का सचित प्रयत्न के द्वारा नियंत्रण कर सकता है।

नैसर्गिक प्रवृत्तियां (अिन्स्टिन्क्टिव):— अिन चेष्टाओं में दिमाग को अधिक काम करना पडता है और मनुष्य की ये ही चेष्टायें अैसी हैं जिनका स्थान व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अिन्हीं के द्वारा वह बाह्य जगत को जानता है, पहचानता है। बाह्य जगत के साथ संबंध भी अिन्हीं की बुनियाद पर बनते हैं।

शिशु जन्म से ही बाह्य जगत से परिचय पाने लगता है और तभी से अुसकी यह अिन्स-टिंक्टिव चेष्टायें प्रारंभ हो जाती हैं। और शिशु की देखभाल में अिन चेष्टाओं का महत्व नहीं समझा गया तो अुसके मानसिक व्यक्तित्व का विकास समुचित नहीं होता।

शिशु की यह सब चेष्टायें अुसके सीखने और विकास करने के माध्यम हैं, अिसलिअे अिन्हें

अपनी प्राकृतिक माग के अनुसार आगे बढने देना चाहिये। अिनमें दिमाग, सवेदाग, चेता-संहृति, ग्रथिया अित्यादि सभी अग काम करते है। जैसे-जैसे ये चेष्टायें विकसित होती जाती है वैसे-वैसे शिशु अधिक अनुभव प्राप्त करता जाता है, और जैसे-जैसे शिशु का विकास होता जाता है वैसे-वैसे वातावरण का असर भी अुसके अूपर अधिकाधिक होता जाता है। साथ-साथ अुसकी अनुक्रियाओ का दायरा भी बढता जाता है।

शिशु के प्राथमिक हफ्तो और महीनो में विशेष तौर पर अुसकी सबसे अधिक आवश्यकता असे माता-पिता की होती है जो अुसे अपनी शरीर की गरमी के द्वारा स्नेह, सुरक्षा और आराम का अनुभव दे सकते हैं। गर्भ में शिशु अेक खास वातावरण में रहता है। अुसमें गर्मी, सुरक्षा और आराम सभी होते हैं। हालाकि अभी तक अिसके कोअी स्पष्ट सबूत नही दिये गये हैं, किन्तु कुछ वैज्ञानिक तो मानते हैं कि जन्म का अनुभव ही बालक के अन्दर अेक तनाव और चिन्ता का भाव पैदा कर देता है। अेक आरामदेह सुरक्षित जगह को छोडकर अुसे ठड, सख्त और अजीब नअी जगह में आना पडता है और वह भी अेक कठिन अनुभव के बाद। बाहर आने के क्षण से ही अुसे नअे-नअे प्रतिबोधन होने लगते हैं। इनमें से कअी तो अुसे तकलीफ ही देते हैं। यह भी अेक अच्छी ही बात है कि अुस समय तक बेचारे शिशु की दर्द महसूस करने की शक्ति अुतनी विकसित नही हुअी होनी है, नही तो जन्म का अनुभव अुसके लिअे अैसा धक्का होता जिसे वह सहन ही नही कर पाता। फिर भी अगर अुसे थोडी भी चिन्ता और तकलीफ होती होगी तो अुसके भावी जीवन में अुसका असर रहेगा ही। यह तभी सुधारा जा सकता है जब कि जन्म के ठीक बाद के महीनों मे अुसे स्नेहमय गर्मी का भान हो। यह अुसे मा से मिलेगा और अिसलिअे शिशु को मा से अलग कभी भी सोचा नही जा सकता। हम यहा तक कहना चाहते हैं कि शिशु और मा को अेक ईकाई मानकर ही अुसकी प्रारम्भिक देख-रेख और शिक्षा के बारे मे सोचना चाहिये।

किन्तु अेक दूसरा भी पहलू है जिसका अुतना ही महत्व है। वह है शिशु का अेक स्वतत्र जगत में प्रवेश करना। ज्यो ही वह मा के शरीर से अलग होकर अपना अस्तित्व कायम कर लेता है, अुसका अपना जीवन प्रारम्भ हो जाता है, अुसके अपने आचरण और चेष्टायें करने के लिअे पूरा मौका मिले, अैसा वातावरण तैयार हो जाना चाहिये। अुसे लिटाने के लिअे खुली जगह हो, क्योकि अुसकी आखें देखना चाहती हैं तो अुन्हे देखने का मौका मिलना चाहिये। अिसी तरह अुसकी कअी अैसी आवश्यकतायें होती हैं जिनका मा-बाप को सोच समझकर अिन्तजाम करना चाहिये। अुसका भोजन, अुसकी नीद, अुसकी शौचादि की जरूरतें, आपसी सम्बन्ध–अिन सबका खास अिन्तजाम करना होता है। अिसके लिअे आवश्यक है–मा और शिशु का अैसा प्रेम बन्धन जो अन्धविश्वासो स मुक्त होकर वैज्ञानिक तथ्यो को ठीक-ठीक समझ ले और अैसी समझदारी के आधार पर शिशु का पालन पोषण प्रारम्भ हो।

मां, मैं कहां से आया ?

देवीप्रसाद

कितना सामान्य प्रश्न है। कितना जिज्ञासा-पूर्ण, पर कितना कठिन।

मुन्ना चार बरस का था। अेक दिन बेचारे ने मा से पूछ लिया, "मां, मैं कहां से आया ?" मा कुछ काम कर रही थी। अुसने झटक कर मुन्ना को डांट दिया, "अितने छोटे बच्चे को अिससे क्या मतलब ?" अिसी तरह अेक दिन बगल के मकानवाली मा को, सुना, अपनी बच्ची से कहते हुअे, "अभी तू नही समझेगी, जब बडी हो जायगी तो खुद समझ जायगी।" भला क्या लगा होगा, अिन बालकों को ? अुनकी जिज्ञासा का जबाब तो मिला ही नही, बल्कि अुसके पीछे, अेक अजीब भाव आ गया। मन में बेचारे बालक ने सोचा होगा, "शायद अिसके पीछे कुछ रहस्य होगा," और वेह अजीब तरह से अुसके बारे में सोचने लगता है।

अेक अवस्था तक तो बालक यही सोचता है कि मा अुसे कही से अुठाकर ले आयी या शायद बाजार से लायी। किन्तु जब पडोसी के घर में बच्चा आया तो यह प्रश्न फिर अुठता है कि वह कहा से आया ? फिर जब बालक की अपनी छोटी बहन या भाई होने वाला होता है तो सवाल और भी अुत्कट हो जाता है। "मा के पेट में छोटी बहन या भाभी है। मैं भी मां के पेट में था।" अिस अवस्था मे जिज्ञासा और भी अुत्कट हो जाती है। "मा, मैं पेट में कहा से आया।"

अिधर "आधुनिक शिक्षण शास्त्र" यह कहने लगा था कि बालक की जिज्ञासा को पूरा-पूरा तृप्त कर देना चाहिये, बल्कि बालक की जिज्ञासा वृत्ति का लाभ अुठाकर अुसे वैज्ञानिक जानकारी देनी चाहिये। अिस "सद्‌भावना" के कारण अनेक पढे-लिखे माता-पिता और शिक्षक भयानक गलतियां कर बैठते हैं। जब "वैज्ञानिक" बारीकियों में जाकर बालक को शिशु-जन्म की बात बताने बैठते है तो बहुत आदर्शवाद के बावजूद भी बालक को वही कुछ बता डालते हैं जो बालक को अुसके वे साथी बतायेंगे जो "बदमाश-शैतान, बिगडे हुअे लडके लडकियां" कहलाते हैं।

श्री. मेकेरेको अपनी पुस्तक "अे बुक फार पेरेन्ट्स" में अेक किस्से का वर्णन करते हैं। अेक पिता को अपने पांच वर्ष के पुत्र को यह ज्ञान देने का प्रसग पडा, तो अुसने अुसकी माता को शिशु-जन्म देते हुअे निरीक्षण करवाया। कितना भयानक अनुभव हुआ होगा अुस पाच साल के कोमल हृदय को। मेकेरेंको कहते है कि अिस पिता के बारे में अुनका ख्याल है कि अुसे किसी मनोवैज्ञानिक बीमारी ने घेरा होगा, नही तो वह अैसा दृश्य अपने पुत्र को क्यों दिखाता ?

यह हुअी अेक हद। और दूसरी हद है जिसका पहले ही जिक्र किया गया—बालक को जवाब देने के बदले डाट-फटकार कर चुप कर देना।

आजकल के ज्ञानी शिक्षा-शास्त्री कहते हैं कि बच्चे के अिस प्रश्न का अुतना ही अुत्तर दो जितना कि अुसने पूछा है, यानी अुसे खेंचतान कर अुससे अधिक बताने का प्रयत्न मत करो। यह भी कठिन चीज है, क्योंकि कितना बताना, यह तय करना क्या आसान है ? चार वर्ष का

चुन्नू, जो प्रश्न पूछ रहा है, वह क्या छोटा प्रश्न है। "मा, मैं कहा से आया"—कितना प्रकाण्ड प्रश्न है। बडे-बडे दार्शनिक भी अुसका अुत्तर नही दे पाये। बेचारी अहिल्या या रामदुलारी अुसका क्या अुत्तर देगी? या, बेचारा पूर्व बुनियादी का शिक्षक विट्ठल महाजन क्या कहेगा अिस के अुत्तर में।

हम अिस प्रश्न के दो अुत्तर आपके सामने रखना चाहते हैं। ये दोनों अुत्तर कल्पना से तैयार नही किये, बल्कि अिन्हें हमने अपने आप सुना और देखा। अिसका यह मतलब नही कि हर माता-पिता और शिक्षक अिन प्रश्नों को अपना नमूना समझे और हमेशा अिस तरह के मौके पर अुनका अुपयोग कर लें। अुन्हें तो समझना है अुनकी भावना से। अुनके पीछे जो चीजें हैं वह "वैज्ञानिक जानकारी" नही है। अुनके पीछे अुस प्रेम और मानवीय संबंध का चित्र है जो शिक्षा का आदर्श है, शिक्षा का अुद्देश्य है।

अब माता—दोपहर में बैठी शाम के भोजन के लिअे भाजी काट रही थी। साढे चार साल का नन्दु जो शाला छूटने के बाद अभी तक अन्य बालकों के साथ खेल रहा था, आया। गंभीर आवाज में अुसने अपनी मा से पूछा, "मा, रामलाल है न! वह कहता है कि मैं तुम्हारे पेट में था। मा मैं तुम्हारे पेट में कहा से आया।' मा का हृदय स्नेह से लबालब भर गया, और अुसने बडी गंभीर, पर प्रेम भरी आवाज से नन्दु को कहा "बेटा, तुझे मैंने बहुत तपस्या करने के बाद पाया।"

नन्दु को प्रश्न का अुत्तर ही केवल नही मिला। अुसे मा के हृदय में अेक बार और गोता लगाने का मौका मिल गया। वह मा के कंधे पर चढ गया और अुसने अुस अपने कोमल शरीर और मन से मा को प्यार से छा दिया। "मा तू मुझे अिसीलिअे तो अितना प्यार करती है न?" अेक सामान्य स्त्री, न तो बाल-मनोविज्ञान की शब्दावली से परिचित और शायद पढी-लिखी भी अल्प ही। कितना समुपयुक्त अुत्तर। विज्ञान के कहीं अूपर।

दूसरा अुत्तर अेक महापुरुष द्वारा दिया गया है। असे पढकर पता चलेगा कि प्रश्न के अुत्तर में वह बालक को किस मानवीय जगत में ले जाता है। वह, वह जगत है जिसमें निवास करना सिखाना शिक्षा का अेकमात्र अुद्देश्य होना चाहिये। प्रेम का जगत, मानवीय संबंधों का जगत। "शिशु" नाम कविता संग्रह की यह प्रथम कविता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ मा बनकर बालक के अिस प्रश्न का अुत्तर देते हैं—"

खोका माके शुधाय डेके—
"अेलेम आमि कोथा थेके,
कोन्खाने तुमि कुडिये पेलि आमारे।"
मा शुने कय हेसे केन्दे
खोकारे तार बुके बेंधे—
'अिच्छा हये छिलि मनेर माझारे।

छिलि आमार पुतुल-खेलाय,
प्रभात शिवपूजार बेलाय

शिशु मां को पुकार कर पूछता है—
"मैं कहां से आया,
तू मुझे कहा से अुठा लायी।"
सुन यह मां, हंसकर और रोकर और
शिशु को छाती से लगाकर कहती—
"तू अिच्छा बनकर मेरे मन में था।

तू था मेरे गुडिया के खेल में,
प्रभात में शिव पूजा के समय

तोरे आमि भेगेछि आर गडेछि।	तुझे मैंने गढा और तोड़ा।
तुमि आमार ठाकुरेर सने	तू मेरे ठाकुर के अन्दर
छिलि पूजार सिंहासने,	था तू पूजा सिंहासनपर,
ताँरि पूजाय तोमार पूजा करेछि।	अुनकी पूजा मे मैंने तेरी पूजा की।
आमार चिरकालेर आशाय,	मेरी चिरकाल की आशा मे,
आमार सकल भालोबासाय,	मेरे सारे प्यार में,
आमार मायेर दिदिमायेर पराने—	मेरी मा और दादी के प्राण मे—
पुरानो अेअि मोदेर घरे	हमारे अिस पुराने घर मे
गृहदेवीर कोलेर परे	गृहदेवी की गोद मे
कतकाल ये लुकिये छिलि के जाने।	कौन जाने कितने काल तू छिपा हुआ था।
यौवनेते यखन हिया	यौवन मे जब हृदय
अुठे छिल प्रस्फुटिया,	प्रस्फुटित हो अुठा था,
तुमि छिलि सौरभेर मतो मिलाये,	तू सौरभ की भांति अुसमे मिला हुआ था,
आमार तरुण अंगे अंगे	मेरे तरुण अंग-अंग मे
जडिये छिलि संगे संगे	साथ-साथ जुडा हुआ था
तोर लावण्य कोमलता बिलाये।	तेरी लावण्य-कोमलता मिलाकर
सब देवतार आदरेर धन	सब देवताओं के प्यार का तू धन
नित्यकालेर तूमि पुरातन,	चिरकाल का तू पुरातन
तुमि प्रभातेर आलोर समवयसी—	तू है प्रभात प्रकाश का समवयसी—
तुमी जगतेर स्वप्न हते	तू ससार के स्वप्न मे से
अेसेछिस आनन्द स्रोते	आनन्द स्रोत मे आया है
नूतन हये आमर बुके विलसि।	नूतन होकर मेरे हृदय मे
निर्निमेषे तोमाय हेरे	पलभर तुम्हे खोकर
तोर रहस्य बुझि ने रे,	तेरा रहस्य नहीं समझ पाती,
सबार छिलि आमार हलि केमने।	तू सबका था मेरा हुआ कैसे।
ओमी देहे अेअि देह चुमि	अुस देह मे अिस देह को चूम कर
मायेर खोका हयें तुमि	तू मां का बेटा होकर
मधुर हेसे देखा दिले भुवने।	मधुर हसी हसकर भुवन मे दिखायी दिया

(शेषांश पृष्ठ २५३ पर)

समाचार और टिप्पणियां

न्यू अेज्युकेशनल फॅलोशिप–नई शिक्षा सम्मेलन–का दसवा अधिवेशन गत दिसबर के आखिरी हफ्ते में भारत में हुआ। अेक पौरस्त्य देश में अिस फॅलोशिप के अधिवेशन का यह पहला मौका था। जिससे भारत में शिक्षा का काम करनेवाले और शिक्षा में अभिरुचि रखनेवाले लोगो को अेक काफी बडी सख्या में विभिन्न देशा से आये हुअे सज्जनो से सपर्क पाने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिनका भी यही कार्यक्षत्र है। अिस साल के अधिवेशन के विचार के लिअे विषय रखा था–शिक्षक और असका काम–पूर्व और पश्चिम म। आधुनिक समाज में शिक्षक के कार्य तथा वच्चा और नौजवाना मे अध्ययन अेव सामाजिक सबधो व व्यवहारा के प्रति विधायक वृत्तिया के निर्माण के बारे में गहरा विचारविमर्श और स्पष्टीकरण का प्रयत्न हुआ। सम्मेलन न अिस विषय के विभिन्न पहलुओ पर विचार व अध्ययन करन के लिअे छ टालियो को चुना था। टालिया की चर्चा के विषय अिस प्रकार थे –

१ शिक्षा में गाधीजी की देन।

२ शिक्षक–शिक्षा के सिद्धान और अनुभव व असका अभ्यास।

३ शिक्षा विभाग की शासकीय व्यवस्था, स्कूला का निरीक्षण तथा कर्मियो की शिक्षा।

४ घर में तथा स्कूल में जिम्मेदारी के साथ जीने की शिक्षा।

५ आधुनिक शिक्षा में कलाओ की देन।

६ आधुनिक शिक्षा में विज्ञान का स्थान।

अिन चर्चाओ के अलावा प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रिया के द्वारा कुछ व्याख्यान भी हुअे। अेक साथ रहने और खाने पीने का जो प्रबध था असुसे प्रतिनिधियो का व्यक्तिगत सपर्क तथा अेक दूसरे से ज्यादा नजदीक आने का अच्छा मौका मिला।

प्रथम विश्व महायुद्ध के दुरत अनुभवो ने कुछ चितका को महसूस कराया कि युद्ध और असकी विपत्तियो क निराकरण में शिक्षा की अेक वडी जिम्मेदारी है। अिसी विचार से न्यू अेज्यूकेशन फेलोशिप की स्थापना हुअी। यह समझा गया कि अब यह किसी अेक राष्ट्र या कुछ लोगो का काम नही रहा। ससार के नागरिको को राष्ट्रीय सीमाओ और विभागीय तथा औद्योगिक रुकावटो को तोडकर अेक साथ आना होगा। मा बापो, शिक्षको, मनोवैज्ञानिका, डाक्टरा तथा शासको का अेक साथ शिक्षा के अूपर समग्र रूप से सोचना होगा। फॅलोशिप अतर्राष्ट्रीय समझ और शाति के लिअे अुपयुक्त शिक्षा पद्धतियो व विषयो के अूपर विशेष ध्यान देता है।

अिस सम्मेलन का अेक विशेष पहलू यह था कि असुसे पहले साठ टोली नायको के अेक परिसवाद का आयोजन था जिसमें अुन्हे छ विभिन्न टोलिया में अेक विशेष विषय का प्रशिक्षण मिला। सम्मेलन में करीब ७०० प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। अिनको छ विभागा में बाटा गया और फिर अुन छहो का दस दस टोलियो में बटवारा हुआ। अुपरोक्त परिसवाद में प्रशिक्षण पाये हुअे शिक्षकोने अेक अेक टोली में चर्चा का नेतृत्व किया। जिससे सुयोजित ढगसे विषय की पूरी पूरी चर्चा करने

और प्रत्येक टोली की चर्चा का निष्कर्ष क्रमबद्ध रूपसे सब को पहुचाने में बहुत सुविधा मिली। समेलन की सफलता में अिस व्यवस्था का बडा भाग रहा।

× × ×

भारत की शिक्षा जगत् के सामने आज अेक गंभीर परिस्थिति अुपस्थित है। पिछले दिना में तीन विश्व विद्यालयो में–अिलाहाबाद लखनअू और बगलोर–जो घटनायें हुअी हैं वे तो आँखें खोल देनेवाली ही है। व्यवस्थापक और विद्यार्थियो में अितना तनाव पैदा हो गया है कि कुछ अधिकारी अैसी बातें भी प्रस्तुत करते हैं– 'अिसका तो अेक ही अिलाज है कि विद्यार्थियो की सर्व यूनियन को और सब अित्यादि को गैर-कानूनी करार कर दिया जाय।" यह सब सुनकर और भी चिंता लगती है। आशा है कि शिक्षा जगत् अिस परिस्थिति का सामना समझ के साथ और शातिपूर्वक करेगा। हमें भी अपना ध्यान अिस ओर लगाना चाहिये।

× × ×

भाओी गाराजी के सुपुत्र लवणमजी के शुभविवाह की खबर देते हुअ हमें बहुत हर्ष हो रहा है। वधू तेलगू के प्रसिद्ध कवि श्री जोशुआ की सुपुत्री हेमलता है। १२ जनवरी को बुजुर्गों, छोटे बडे भाओी बहनो, और मित्रो की अुपस्थिति मे यह शुभ कार्य बापू के आश्रम मे बा कुटी के सामने बडे प्रेमपूर्वक सपन्न हुआ।

× × ×

अखिल भारत सर्व सेवा सघ की प्रबध समिति की अेक बैठक अिस महीने में वाराणसी में हुअी। अुसमें सेवाग्राम के नई तालीम परिसवाद का अेक विवरण पेश किया गया। सर्व सेवा सघ और हिन्दुस्तानी तालीम सघ के सगम के प्रस्ताव में नई तालीम के भावी कार्यक्रम का जो अुल्लेख किया था अुसे कार्यान्वित करने के लिअे अेक समिति बनाने का निर्णय हुआ। अिस समिति की बैठक फरवरी में होगी।

सर्वोदय सम्मेलन की तारीख भी निश्चित कर दी गयी है। सम्मेलन सेवाग्राम में मार्च की २५, २६ और २७ तारीखों को होगा। सभी को याद होगा कि पहला सर्वोदय सम्मेलन सेवाग्राम में ही ठीक १२ वर्ष पहले हुआ था। अिसलिअे अेक पर्व के बाद यहां होनेवाले अिस सम्मेलन का खास महत्व है।

× × ×

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ में प्रारम्भ से ही शिक्षको के प्रशिक्षण का काम चला है। अिन शिक्षकों में से कुछ व्यक्तिगत रूप से, कुछ सस्थाओ की तरफ से और बाकी राज्य सरकारो की तरफ से आये थे। अिन्होने जो प्रशिक्षण यहा पाया, अुसको सरकारी मान्यता मिलने का प्रश्न था। भारत की केन्द्रीय सरकार ने २१ जनवरी १९६० को अेक विज्ञाप्ति में कहा है–

भारत सरकार ने केन्द्रीय लोक सेवा आयोग की सलाह से वर्धा, सेवाग्राम के हिन्दुस्तानी तालीम सघ के टीचर्स ट्रेनिंग डिप्लोमा को मान्यता देना स्वीकार कर लिया है। यह डिप्लोमा सरकारी नौकरियो के लिअे विश्वविद्यालयों या राज्य सरकारो के बी० *टी०, बी० अेड०, अेल० टी० या बुनियादी* शिक्षा के पोस्ट ग्रेजुअेट डिप्लोमा के बराबर माना जायेगा।

नअी दिल्ली–२१ जनवरी १९६०

× × ×

बम्बअी राज्य सरकार के शिक्षा विभाग ने भी १३ जनवरी १९६० को यह प्रस्ताव स्वीकृत

(पृष्ठ २३३ का शेषांश)

पाच-सात वर्षों में धीरे-धीरे अिस क्रम से आगे बढा जाय कि मालिक तय किया हुआ कमीशन लेकर गाव को अपनी सेवा समर्पित करने को प्रोत्साहित हो।

११. शिक्षण, सुरक्षा और सहकार के व्यवस्थित कार्यक्रम के कुछ वर्षो में गाव मे ग्राम-चेतना, ग्राम-भावना, ग्राम-शक्ति और ग्राम-सगठन के क्रम से ग्राम-स्वराज्य ग्राम-भारती की दिशा में काफी आगे बढेगा। विकास क्रम में अेक स्थिति अैसी आ जायगी, जब गाव के लोग बैठकर अपने निर्णय से ग्राम परिवार की स्थापना करेगे।

१२. अिस प्रकार नई तालीम का अभ्यास वास्तव में वर्ग सघर्ष के स्थान पर ग्राम-परिवार की स्थापना का प्रयोग है।

१३ अगर अैसा नही होगा तो अन्याय-ग्रस्त मानव अपने साथ होनेवाली हिंसा और अन्याय के प्रति "नही" नही कह सकेगा। मनुष्य में "नही" कहने की शक्ति कैसे आये, यह नई तालीम के चिंतन और अभ्यास का मुख्य विषय है। यही अुसके क्रातिकारी स्वरूप की कसौटी है। "नही" में वह शक्ति है जिसमें विकृति की अस्वीकृति के साथ-साथ सस्कृति की स्वीकृति भी है। ग्राम-स्तर पर विकृति की अस्वीकृति में ग्राम स्वराज्य तथा सस्कृति की स्वीकृति मे ग्राम-भारती का मत्र छिपा हुआ है। अुसे प्रकट करने का अभ्यास क्रम क्या होगा?

(पृष्ठ २५० का शेषांश)

हाराअि हागअि भये गो ताअि
व के चेपे राखने ये चाअि,
"दे मरि अेकटु सरे दाँडाने।
जानिना कोन् मायार फंदे
विश्वेर धन राखब वेंधे
आमार क्षीण बाहु दुटिर आडाले।"

*कविता का शाब्दिक अनुवाद—

यो बैठूगी यही डर होता है
अिसलिअे चाहती हू छाती से लगा रखना
रो-रो मर जाती हू जब आंखो से हट जाते हो
न मालूम किस माया जाल मे
विश्व के धन को बाघ रखूगी,
मेरे अिन दो क्षीण बाहुओ की आड मे।"*

(पृष्ठ २५२ का शेषांश)

किया है—आठ दर्जे की शिक्षा के बाद जिन्होंने दो साल शिक्षा के कार्य में प्रशिक्षण पाया हो अुन प्राअिमरी अध्यापको को हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम, वर्धा—के द्वारा जो सर्टिफिकेट दिया जाता है, तालीमी सघ के अध्यक्ष के निर्देशानुसार, अुसको मान्यता देने का प्रश्न अिन दिनो सरकार के विचाराधीन था। अब सरकार यह आदेश जारी कर रही है कि आठ दर्जा पास करने के बाद दो साल शिक्षा के काम में प्रशिक्षण पाये हुअे प्राअिमरी अध्यापको को हिन्दुस्तानी तालीमी सघ जो सर्टिफिकेट देता है, वह अिस राज्य के जूनियर प्राअिमरी ट्रेनिंग-सर्टिफिकेट के बराबर माना जाय।

श्रद्धाञ्जली

अिस सर्वोदय दिवस पर श्री जे सि कुमारप्पा का देहान्त हो गया ।

देश ने ४ जनवरी को अुनका ६९ वाँ जन्म दिवस मनाया था । हृदयरोग से पीडित होकर गत ढाअी साल से वे मद्रास के जनरल हास्पिटल में थे । कुछ दिन पहले अुनके शरीर का बायां भाग पक्षाघात से अवश हो गया और ३० जनवरी रात को नौ बज कर पच्चीस मिनट पर अुनकी मृत्यु हुई ।

श्री कुमारप्पाजी नई तालीम परिवार के सब से *पुराने बुजुर्गों में से थे । 'वे नाकिर हुसैन कमिटी'* के सदस्य भी थे ।

हम अत्यंत आदरपूर्वक अुनके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हैं ।

—नअी तालीम परिवार

"नई तालीम" के नियम

१ "नई तालीम" अंग्रेजी माह के पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। जिसका वार्षिक चन्दा चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ न. पै. है। वार्षिक चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी. पी. से मंगाने पर ६० न. पै. ग्राहक को अधिक खर्च होगा।

२ पत्रिका प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दी जाती है। माह की १५ तारीख तक अगर पत्रिका न मिले तो कृपया अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करने के बाद तुरंत हमें लिखें।

३ चन्दा भेजते समय ग्राहक कृपया अपना पूरा पता (गांव का नाम, डाकखाने का नाम, तहसील, जिला और राज्य सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखें। अस्पष्ट और अधूरे पतों पर पत्रिका नियमित पहुँचाने में विशेष कठिनाई होती है।

४ "नई तालीम" संबंधी सारा पत्र-व्यवहार, प्रबंधक, "नई तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ही किया जाय, अन्यथा ग्राहकों के पत्र या शिकायत पर उचित कार्रवाई करने में विशेष विलंब हो सकता है।

५ पत्र व्यवहार के समय ग्राहक अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख कर सकें तो विशेष कृपा होगी।

प्रबंधक,
"नई तालीम"
सेवाग्राम, (वर्धा) बंबई राज्य.

सब के विचारों को परखने के लिये बुद्धि की तटस्थता, वाणी की निर्विकारता और अपने बारे में निरहंकारिता जरूरी है। जहां सूक्ष्म बुद्धि से मनन करके वाणी का उपयोग किया जाता है, वहां सब तरह की शोभा, ऐश्वर्य, वैभव, सौंदर्य और आनन्द की वृद्धि होती है।

—विनोबा

श्री सदाशिव भट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा नई तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम में मुद्रित और प्रकाशित।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-सेवाग्राम

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

मार्च १९६०
वर्ष : ८ अंक : ९

नई तालीम

"नई तालीम" मार्च १९६० : अनुक्रमणिका

सूचना – 'नई तालीम' का अगला अंक अप्रैल के पहले सप्ताह में प्रकाशित न होकर अप्रैल ता० १५ को प्रकाशित होगा।

वर्ष ८ अंक ९ ★ मार्च १९६०

जीवन के लिअे शिक्षा

सारी समस्याओ का हल शिक्षा से ही आरंभ होता है। हम अपनी कठिनाअियों को तभी दूर कर सकते हैं, जबकि लोगो की शिक्षा अिस प्रकार की हो कि अुनके जीवन का दृष्टिकोण सब के भले पर आधृत हो। शिक्षण ही वह कुंजी है, जिससे जीवन के सब प्रवेशद्वारो के ताले खुल जाते हैं।

हमारा शिक्षा से मतलब क्या है? क्या अिसका अर्थ अुस शिक्षा से है, जो बच्चे को पांच बरस की आयु के बाद स्कूल में तब तक दी जाती है, जब तक मा-बाप अुसे पढाने का खर्चा अुठा सके और वह बडा होकर कमाने-खाने योग्य न हो जाय? क्या वह शिक्षा किताबी होगी या किसी धन्धे की या कि अुपयोगी? क्या सब साधनों का यही साध्य है? क्या अिसका आरंभ और अन्त होता है? जो कुछ हमें विचार करना है, अुसका आधार हमारा शिक्षा संबन्धी दृष्टिकोण है।

अगर शिक्षा का ध्येय हमें अच्छा जीवन बितानेवाला बनाना है–कि हम अच्छे नागरिक बन सके–तो अिसका आरंभ पालने से और अन्त चिता पर होना चाहिये। जीवन के सब परिवर्तनो से हम कम-से-कम घबराहट से गुजर सके। लेकिन अगर कही शिक्षा से हमें कुछ अैसी चालाकियां मिलती हैं, जिनका अिस्तेमाल हम विशेष परिस्थिति में कर सकते हो, तो अुस परिस्थिति में हम बिलकुल असफल प्रमाणित होगे। शिक्षा का काम हमारे दिमाग में कुछ बाते या आंकडे भर देना नही है, बल्कि जीवन के प्रति अेक दृष्टिकोण देना है।

शिक्षण प्रणाली के पीछे कोअी दर्शन होना आवश्यक है और अिसका ध्येय व्यक्ति में महान् भावनाओ को जाग्रत करना होता है। अिसलिअे शिक्षा का कार्य अेक गंभीर और खतरे से भरी जिम्मेदारी है और अिस प्रकार के किसी भी काम को बिना पूरी तैयारी के, बिना समझ-बूझे चालू नही कर सकते।

दुर्भाग्यवश पढाई-लिखाई को ही लोगोने शिक्षा समझ रखा है। अिससे ज्यादा भ्रम कोई नही हो सकता। पढाई-लिखाई तो संस्कृति प्राप्त करने के साधन मात्र हैं, लेकिन न तो वे अेकमात्र साधन ही हैं, और न सब से अधिक आवश्यक ही।

–जे. सी. कुमारप्पा

शिक्षा कौन-सा पथ ग्रहण करे ? गांधीजी का कहना था कि शिक्षा को स्वावलंबी बनाना होगा। वे लिखते हैं, "शिक्षा से मेरा मतलब है युवा या बालक में अुच्च-से-अुच्च गुणों का, शरीर के, मस्तिष्क के और आत्मा के गुणों का विकास करना। साक्षरता शिक्षण का ध्येय नहीं है, न अुसका आरंभ ही है। यह तो केवल अेक साधन है, जिससे स्त्री और पुरुष शिक्षित किये जा सकते हैं। साक्षरता स्वयं कोई शिक्षा नहीं है। अिसलिअे मेरी शिक्षा बालक से ही आरंभ होगी और मैं अुसे कोई अैसी दस्तकारी सिखाअूंगा, जिससे आरम्भ से ही वह अुत्पादन करना शुरू कर दे। अिस तरह सब स्कूल स्वावलंबी बनाये जा सकते हैं, पर शर्त अितनी है कि अुनका बना सामान राज्य खरीद ले।

"मेरा विश्वास है कि आत्मा और मस्तिष्क का *अुच्चतम विकास शिक्षा की अैसी ही* प्रणाली में संभव है। सिर्फ अिस बात का विचार रखा जाय कि दस्तकारी की शिक्षा *आजकल की तरह यन्त्रवत् न देकर वैज्ञानिक* ढंग से दी जाय, यानी बालक को हरअेक विधि के "क्या और क्यों" का ज्ञान होना *चाहिये। मैं यह बात बिना आत्मविश्वास के* नहीं कर रहा हूं, अुसके पीछे मेरा अनुभव है। यह पद्धति करीब पूरे तौर पर वहां अपनायी *हैं जहां कार्यकर्ताओं को कताई सिखलाई जाती* है। मैंने स्वयं चप्पल बनाना और कातना भी अिसी तरीके पर सफलतापूर्वक पढ़ाया है। *अिस विधि में अितिहास-भूगोल को निकाल* नहीं दिया है। लेकिन मेरा अनुभव है कि सामान्य जानकारी की ये बातें जबानी सब से अच्छी तरह सिखायी जा सकती हैं। पढ़ाई-लिखाई के द्वारा जितना सिखाया जा सकता है, अुससे दस गुना इस तरह सिखाया जा सकता है। वर्णमाला तभी सिखायी जाय, जब विद्यार्थी की रुची थोड़ी विकसित हो जाय। यह अेक क्रान्तिकारी प्रस्ताव है, परन्तु इससे बहुत-सी परेशानी और मेहनत बच जाती है और इसके द्वारा विद्यार्थी को जो बात साल भर में आ जाती हैं, वह दूसरी तरह सीखने में और अधिक समय लग जाता। अिसका अर्थ होता है सर्वांगीण व्यवस्था। यह तो है ही कि विद्यार्थी दस्तकारी की शिक्षा के साथ साथ हिसाब भी सीख लेता है।

"मैं प्राथमिक शिक्षण को सब से अधिक महत्व देता हूं जो मेरे विचार से आजकल के मैट्रिक (अंग्रेजी छोड कर) के बराबर होना चाहिये। *अगर सारे कालेजवाले अपनी सारी* पढ़ाई अेकाअेक अेकदम भूल जायें, तो इन थोड़े-से लाख कॉलेजवालों की स्मरण शक्ति समाप्त होने से *जो नुकसान होगा*, वह अुस नुकसान की अपेक्षा कहीं कम है, जो तीस करोड़ लोगों के अज्ञान के अन्धकार से हो रहा है। *असाक्षरता के नाम से देश के करोडों की* अज्ञता का अन्दाज करना बिलकुल गलत है।"

बालकों की शिक्षा शुरू-शुरू में कभी भी *स्वावलंबी नहीं हो सकती। जो चीजें वे* बनायेंगे, अुनका विनिमय-मूल्य कुछ भी नहीं होगा।- यदि राज्य अुनको खरीद लेगा, तो *इस हानि को पूरा करने का यह दूसरा ढंग* होगा और हम अपने-आपको धोखा देते रहेंगे कि शिक्षा स्वावलंबी है। स्वावलम्बी से गांधीजी

का यह मतलब नहीं है कि विद्यार्थी का साल भर का खर्च अुसके अुसी साल के अुत्पादन के मूल्य से चल जाय। यह तो बड़ा संकुचित दृष्टिकोण होगा और कभी पूरा नहीं हो सकता। इसका अर्थ अधिक व्यापक है, केवल रुपयों में नहीं, बल्कि आगे चलकर बालक सुशिक्षित नागरिक के रूप में जो सेवा करेगा, अुसके अनुसार यह नापा जाना चाहिये। जैसा अब है, बच्चे को छुटपन में जितना पढ़ाया लिखाया जाता है, अुसका अभ्यास अितना कम कराया जाता है कि बड़ा होने पर वह फिर निरक्षर ही रह जाता है। अिस तरह अुसकी शिक्षा में जो कुछ खर्च होता है, वह बेकार जाता है। लेकिन अगर व्यवस्था ठीक रखी जाय, तो सात साल की शिक्षा में जो खर्च शिक्षकों के वेतन आदि पर होता है, वह अुनके सातों वर्ष के अुत्पादन से पूरा किया जा सकता है। हर वर्ष का खर्च अुसी वर्ष के अुत्पादन से, संभव है, पूरा न हो पाये। पहले दो वर्षों में हानि आयेगी, बीच के तीन वर्षों में आय-व्यय बराबर पड़ेगा और यदि शिक्षा ठीक से दी गयी है, तो कक्षा को अपने पहले दो वर्षों का घाटा आखिरी दो वर्षों में लाभ दिखलाकर पूरा कर देना चाहिये। अिसके अतिरिक्त जैसा कि पहले ही सुझाया गया है, शिक्षा में जो खर्च लगता है, अुससे यदि अच्छा नागरिक बना सके, तो राज्य की लागत से कहीं अधिक के बराबर लाभदायक सिद्ध होगा। अगर विद्यार्थी को अैसी दस्तकारी सिखायी जाती है, जिसकी बनी चीजों की स्थानीय खपत है, तो अुनकी बिक्री में कोअी कठिनाई न हो पायेगी। कुछ अैसी दस्तकारियों के नाम ये हैं—कताअी, बुनाई, रंगाई, दर्जीगिरी चटाई और टोकरी बनाना, कुम्हारी, मोचीगिरी, बढ़ईगिरी, पीतल और धातुओं का काम, कागज बनाना, गुड़ अुत्पादन, तेल पेरना, मधुमक्खी पालन अित्यादि। धन्धा सीखनेवाला मजदूर भी शुरू में अपना खर्च नहीं निकाल पाता। थोड़े समय तक अुसका सिखाना घाटे में ही होता रहेगा। प्रारम्भिक अवस्थाओं के बाद कुछ काम की चीजें बना सकेगा फिर बाद में वह अपनी शिक्षा का खर्च पूरा कर सकेगा। अैसी प्रारंभिक शिक्षा का खर्च चलाने के लिअे सरकार को पूंजी जुटानी होगी या जनता को प्रबन्ध करने के वास्ते अुसके नाम कुछ जमीन वगैरह करनी पड़ेगी। ब्रिटिश राज्य के पहले स्कूलों को चलाने का यह तरीका प्रचलित था। लेकिन फिर भी बच्चों की शिक्षा का जिम्मा तो राज्य का ही है। हमारी जैसी अवस्था आज है, अुसमें तो हमारी समस्या स्वाभाविक न होकर राजनीति द्वारा आर्थिक प्रश्न बना दी गयी है, अिसका हल भी राजनैतिक होगा। अिस अवस्था को बेबसी से स्वीकार नहीं किया जा सकता। शिक्षक अच्छी तरह से ट्रेन्ड किया हुआ होना चाहिये और अुसको वेतन भी अच्छा मिलना चाहिये। स्कूल का समय और अवधि ग्राम-अवस्था के अनुकूल रखी जानी चाहिये। जिन दिनों फसल की कटाई होती हो या खेत में काम अधिक हो, अुन दिनों पढ़ाई बन्द रखी जानी चाहिये।

नई योजना में जिसे बुनियादी योजना के नाम से पुकारा जाता है, सात से चौदह बरस के लड़के लड़कियों को सात बरस का प्राथमिक शिक्षण अनिवार्य माना गया है। शिक्षा का जरिया कताई की तरह का कोई धन्धा माना गया है, जिसे केन्द्र मानकर सब पढ़ाई चला करेगी। बालक की दिनचर्या के साथ दस्तकारी का संबन्ध और बच्चे का भौतिक और सामा-

जिक वातावरण अैसे विषय हैं, जिनका तालमेल ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में मिलाना आवश्यक होगा। शिक्षा की समाप्ति पर अुसका ज्ञान आज के मैट्रिक या दसवी श्रेणी के ज्ञान के बराबर हो, यह ध्येय रखा गया है। जब तक बालक को चित्राकन का ज्ञान न हो जाय, अुसे लिखना सिखाने का प्रयत्न न किया जाय। पढना पहले सिखाया जायगा। बारह बरस की आयु के बाद बालक को किसी दस्तकारी को धधे के रूप में चुनने का अवसर दिया जाय। ध्येय यह नही है कि बालक चौदह बरस का होकर अुस धधे में प्रवीण होकर निकलेगा, बल्कि यह है कि अुस धन्धे में घुसने लायक ज्ञान अुसको होगा, और अुसके गुण विकसित किये जा चुके होगें, जिनसे किसी भी धधे में वह सफल हो सके।

अिस योजना का आधार यह है कि दस्तकारी द्वारा विद्यार्थी की बुद्धि विकसित की जाय। आधुनिक प्रणाली में साधारण शिक्षण के आधार पर दस्तकारी की शिक्षा रखी गयी है। अिसलिअे जहा बौद्धिक शिक्षण को प्रथम स्थान दिया गया है, हम अेक तरह से बालक के हाथ-पैर बाध कर अुसे अव्यावहारिक बना देते हैं। बचपन में जो हाथ-पाव शक्ति हीन हो जाते है, अुनका असर बडा होने पर कोशिश करने से भी नही जाता। जिस शिक्षण में अनुभव का आधार न हो वह सर्वथा स्मरण-शक्ति का व्यायाम बन जाती है। अिससे सामान्य सूझ-बूझ या व्यक्तिगत विकास में कोई सहायता नही मिलती।

हमें बालक के स्वाभाविक शारीरिक विकास का मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक ढग से अनुसरण करना होगा। बच्चा पहले शक्ल, रग और हलचल पर नजर डालता है और फिर सोचता है कि अैसा क्यो होता है। फिर वह प्रयोग करके देखता है कि अिन चीजों को अपने मन के अनुकूल कैसे बदल सकता है। अिस तरह से वह खेल से खोज और खोज से नव-अुत्पादन की ओर जाता और बढता है। यदि हम बालक का सही और पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो हमारी शिक्षा-पद्धति को विकास की अिन अवस्थाओ की आवश्यकताओ की पूर्ति करनी पडेगी। अैसा करने के लिअे शिक्षक को पूरी जानकारी होनी चाहिये, जिससे वह बालक की भावनाओं में प्रवेश करके अुसमें हिस्सा बटा सके। स्वभाव और प्रकृति-दत्त भावना से ही आम तौर पर स्त्रिया बालक की अिस पहली अवस्था को सभालने के अधिक अुपयुक्त होती हैं। भारत की प्रणाली में बहुत बडी कमी स्त्रियो की अशिक्षा के कारण भी रह जाती है। माताओ की शिक्षा अैसी नही है कि वे शिक्षक का काम कर सके और न अुपयुक्त स्त्रिया शिक्षा-कार्य सीखने के लिअे मिल सकती हैं। मुझे अैसा मालूम होता है कि यदि हमें स्कूलो का सुधार करना है, तो पहला कदम यह लेना पडेगा कि अुन बालिकाओ और नवयुवतियो की शिक्षा का प्रबध करे, जो कि आग आनेवाली पीढी की स्वाभाविक सरक्षिकायें हैं। जब तक हम वहा से आरभ नही करते, पुरुष की बनायी सारी योजनायें बेकार साबित होगी, क्योंकि अुसके हाथ में तो बालक अपने सहज में प्रभावित होनेवाले शिशुकाल के बाद में ही आता है। हर अेक गाव में आठ वर्ष से कम आयु के बालकों का शिक्षण स्त्रियो द्वारा होना चाहिये।' यहा तक कहा जा सकता है कि विशेष अपवादो को छोडकर अैसे स्कूलो में पुरुष शिक्षक रखे ही न जायें।

बालक के विकास की दूसरी अवस्था में हमें असे लोग चाहिये, जो बालक की सोचने की शक्ति बढा सके और दूसरों के "क्यों और कैसे" को समझा सकें। मुझे लेबर यूनियनों के फेडरेशन द्वारा चलाये गये न्यूयार्क के अेक स्कूल को देखने का इत्तफाक हुआ है। अुस स्कूल में सब लोग अेक साथ रहते थे और विद्यार्थी खाद्यसामग्री के हिसाब-किताब और दूसरे सब प्रबन्धों में हाथ बटाते थे। अुनकी अपनी गोशाला थी, जिसका प्रबन्ध शिक्षक के हाथ में था और कुछ लडके अुसे सहायता देते थे। मैंने ११ वर्ष के बालकों की अेक "अर्थविज्ञान की कक्षा" में भी भाग लिया। अुस दिन पढाई का विषय था "गाय की खरीदारी"। क्लास ले रहा था दस साल का अेक लडका और शिक्षक मेरे साथ पिछली लाइन में बैठा था। पढानेवाला बालक (हम अुसे 'हेनरी' कहेंगे) क्लास को गाय खरीदने का अपना अनुभव बता रहा था। वह पास के अेक बाजार में अपने डेयरी के प्रबन्धकर्त्ता शिक्षक (बिल) के साथ गाय लेने गया था। क्लास अैसे चल रहा था, "क्योंकि जितनी गायें हैं, वे हमारे दूध के लिअे पूरी नहीं पडती, इसलिअे बिल और मैं अेक गाय खरीदने नीलामघर में गये।" अेक विद्यार्थी ने पूछा, "नीलाम घर क्या होता है?" दूसरे ने जवाब दिया, "नीलामघर अैसी दूकान होती है, जहां किसी चीज के दाम नियत नहीं होते। दूकानदार अेक चीज निकाल कर लाता था, खरीदार अुसे बताते थे कि अुसके लिअे कितना तक मूल्य वे दे सकते थे। जो सब से अधिक दाम लगाता, अुसी को चीज मिल जाती।" फिर समझाया गया कि 'दाम लगाना' क्या होता है। किसी ने पूछा कि "सब लोग भिन्न-भिन्न कीमतें क्यों लगाते हैं? हेनरी ने जवाब दिया, "जो गाय हमने खरीदी, वह ७५ डालर से शुरू हुई और आखिरी बोली बिल की १२० डालर तक चढी।" 'आखिरी बोली' का अर्थ समझाने के बाद अुसने बताया कि पहले अेक आदमी ने गाय का दाम ७५ डालर लगाया। दूसरे ने अिससे ज्यादा देने की राय प्रकट की। अिसी तरह सब खरीदार आपस में दाम बढाते गये। आखिर में बिल ने १२० डालर में गाय खरीद ली, क्योंकि १२० डालर के आगे कोअी बढा ही नहीं। दूसरे किसी ने प्रश्न किया १२० डालर से अधिक देने को कोअी आदमी क्यों तैयार नहीं हुआ?" हेनरी ने विस्तार से समझाया कि "किस तरह *नीलाम के पहले ही सब खरीदार अुस गाय के* पिछले साल का ब्योरा देखते हैं कि वह कितना चारा खाती है? कितना दूध देती है? अिस सब से हिसाब लगाकर अुस गाय पर कितने तक रुपया लगाना ठीक होगा, यह वे निश्चित कर लेते हैं और अुस सीमा तक बोली बोलते जाते हैं। जब अुतनी रकम पर पहुँच जाते हैं, तब बोली रुक जाती है।" पूरे घण्टे भर अिस विषय पर जो कुछ वे माथापच्ची खुद करते रहे, अिससे अुनका बौद्धिक विकास अुसकी अपेक्षा कहीं अधिक हुआ, जो अेडम स्मिथ से लेकर मार्शल तक के आर्थिक सिद्धान्तों को रटने से हुआ होता। जब सिद्धान्त अनुभव पर आधृत होते हैं, तो वे अपने-आप नवीनता और अुत्पादन की ओर ले जाते हैं। यह अगली अवस्था हुई।

मौजूदा शिक्षा प्रणाली के द्वारा नवीन विचारक पैदा होना सम्भव ही नहीं है। हमारी यूनिवर्सिटियों के ग्रेजुअेट भी विकास की अिस

तीसरी श्रेणी तक नही पहुच पाते । अिसी दोष के कारण हम अुसी जगह पडे सड रहे है । जैसा कि हम पहले ही देख चुके है, हमारी शिक्षा हमें क्लर्क बनने के लिअे दी गयी है और क्लर्क के लिअे अपनी निजी सूझबूझ की कोअी जरूरत ही नही पडती । अिस अवस्था के लिअे आत्मविश्वास और साहस आवश्यक है । शिक्षक का काम अितना ही होगा कि वह खडा रहे, देखता रहे और आवश्यकता पडने पर सुझाव देता जाय ।

दस्तकारी की कोअी भी शिक्षा बिना कला के साथ सम्बन्ध रखे पूरी नही हो सकती । हमारी शिक्षा के अिस पहलू पर महाकवि टागोरने ध्यान दिया है । हर ग्राम पाठ-शाला में लोक-गीत, सगीत और कला पर पूरा जोर दिया जाना चाहिये । जिन स्कूलो का आधार दस्तकारी और साधन-कला हो, यदि वह सरल-से सरल पाठ्यक्रम भी पूरा कराते हो, तो अुनसे निकले विद्यार्थी अच्छे आचरणवाले स्त्री-पुरुष बन कर निकलेगे, जिन में आत्मविश्वास होगा । वे रेशमी गद्दे मागने के लिअे विदेशी मालिकों के चरणो पर नाक नही रगडेगे, बल्कि सिर अूचा करके स्वाधीन रहेगे और साधारण जनता की साधारण मुसीबतों वाली जिन्दगी में साथ देने को तैयार रहेंगे । जब तक हम जनता की स्थायी सस्कृति के आधार पर अेक अैसा बलवान राष्ट्र बनाने के लिअे कमर नही कस लेगे, अूपर की यह सारी लीपापोती बेकार सिद्ध होगी । राष्ट्रों की कतार में कन्धे-से-कन्धा मिलाकर खडा होने के लिअे हमारी जडें अपनी सस्कृति में होनी आवश्यक हैं । अुधार मागे हुअे परों को लगा कर हम चमक नही सकते । हमें संसार के साहित्य, कला और सगीत में अपना भी कुछ *हिस्सा बटाना आवश्यक है ।*

गाधीजी के सुझाव के अनुसार कॉलेज-शिक्षण को स्वावलबी होना आवश्यक है । जो कृषि-कॉलेज अपनी जमीन की अुत्पत्ति से अपना खर्च नही चला सकता, वह अपने ध्येय को ही गलत प्रमाणित करेगा । अिसी तरह से सब औद्योगिक और धन्धे के विद्यालयो को अपना खर्च खुद चलाने के योग्य होना चाहिये ।

अुद्योग से शाला का सारा खर्च निकले या न निकले, यह मुख्य प्रश्न नहीं है । क्योंकि किसी भी हालत में शिक्षा का प्रचार तो करना ही चाहिये । शिक्षा के प्रति हमें भविष्य में आय देनेवाली पूंजी की दृष्टि से ही देखना चाहिये । केवल पुस्तकीय शिक्षा के खर्च को भी हम अच्छी पूंजी समझते आये है, तो फिर औद्योगिक शिक्षा को तो हमें अधिक अूंची कीमत समझनी चाहिये ।

—किशोरलाल मशरूवाला

पूज्य गाधीजी से प्रेरणा पाकर जिनके साथ वरसो तक काम किया और सस्थाअें चलायी वे अेकके पीछे अेक चल दिये। जिन्हे सब लोग आश्रम का प्राण कहते थे वे मगनलाल गाधी तो गाधीजी के जीते जी चले गये। अिसी तरह आश्रम को तन मन धन से मदद करनेवाले श्री जमनालालजी वजाज और गाधीजी की चैतन्यमयी छाया स्वरूप श्री महादेव देसाअी भी अुनके जीते जी चले गये। अुनके जानेका दारुण दुख गाधीजी को सहन करना पडा। लेकिन वे तो गाधी-वियोग के दुख से बच गये। माताजी कस्तूरबा के बारेमें भी हम आश्रमवासी यही कह सकते है कि वे अपने सौभाग्य तिलक के साथ चली गयी। और अुनके जानेके पश्चात् दुनिया अुनकी अधिकाधिक भक्ति करने लगी।

मैं तो अपने साथियो का चिंतन कर रहा हू। श्री किशोरलाल मशरूवाला ने गाधीकार्य चलाते चलाते रोग जर्जरित देह छोड दिया। देह की सतत पीडा भुगतते रहते भी आत्मा कैसे अलिप्त रह सकता है और मनुष्य अपनी प्रसन्नता भी कैसे सभाल सकता है अिसका वे ज्वलत अुदाहरण थे।

अुनके बाद चले गये मेरे निकटतम साथी श्री नरहरीभाई परीख। वे जैसे सेवामूर्ति थे वैसे नम्रता की भी मूर्ति थे। अुन्होंने जहा तक शरीर और मन चल सका पूरी पूरी सेवा दी—सस्थायें चलाने में और बहुत कीमती साहित्य लिखने में भी।

जो किसी समय मेरे विद्यार्थी थे और जिन्होंने कम या अधिक मेरे कार्यों में साथ दिया वैसे श्री चन्द्रशकर शुक्ल और श्री गोपालराव कुलकर्णी दोनो का स्मरण अिस क्षण हो रहा है। दोनो का कार्य भिन्न था। लेकिन दोनो ने अपने ढग से साहित्य की और समाज की अुत्तम सेवा की और शिक्षा के क्षेत्र में कीर्ति पायी। अिनका जब स्मरण करता हू तब अेडमण्ड बर्क का वचन याद आता है—जो मेरे वशज होनेवाले थे वे पूर्वज हो गये।

और अब श्री जोसेफ कार्नेलियस कुमारप्पा भी चले गये। अुनके छोटे भाअी भारतन् कुमारप्पा मेरे ही आग्रह से दिल्ली आये थे और अुन्होंने समग्र गाधी वाडमय के सपादन का काम सिर पर लिया था। श्री जे. सी. के प्रति असीम भ्रातृभक्ति होने के कारण ही वे गाधीकार्य में सम्मिलित हुअे थे। अुनके नैष्ठिक जीवन के बारेमें बहुत कम लोग जानते होगे।

श्री जे सी. (सब लोग अुन्हे अिन्ही आद्याक्षरो से पहचानते थे) अपने ढग के आदर्श ख्रिस्ती थे। अखण्ड सेवा श्रमपरायण जीवन, असाधारण सादगी और विनोद-प्रियता अित्यादि गुणो के कारण वे अपना प्रभाव सब पर डालते थे। ब्रह्मचर्य कितना सहज और सुवासिक बनाया जा सकता है अिसके वे नमूना थे। अुन्होंने भी श्री किशोरलाल जी के जैसे बरसो तक शारीरिक कष्ट सहन किये और रोग के साथ अपराजित युद्ध चलाया।

गुजरात विद्यापीठ चलाने में वे मेरे मान्य साथी थे। आये थे साथी होकर लेकिन थोडे ही दिनो में वे बन गये मेरे भाअी। हमारा परस्पर व्यक्तिगत आकर्षण अेक तरह से

पारिवारिक के जैसा था और दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो बिलकुल अलिप्त। मैं जिन्दगी भर सिद्धांतों का पालन समझौते के मिलान से करता आया हूं और कुमारप्पा सिद्धांत-निष्ठा के पालन में बिलकुल प्रखर थे। लेकिन समझौते के बावजूद मेरी सिद्धांत-निष्ठा अक्षुण्ण है अितना ही अुनके लिअे काफी था। अिसलिअे जब कभी मैंने अुनसे कुछ करने के लिअे कहा, बिना सकोच वे मान जाते थे।

गांधीजी के तत्वज्ञान का आर्थिक पहलू तो अुन्होंने (और भारतन्‌ने भी) बडी योग्यता के साथ सभाला था ही। लेकिन गांधीमत या गांधी-जीवननिष्ठा का धार्मिक पहलू कुमारप्पा-बन्धु को विशेष प्रभावित कर सका था।

ग्राम-पुनर्रचना की धुन अुन्हें विनोबा भावे जैसी ही थी, लेकिन ग्राम पुनर्रचना के आन्दोलन के बारे में दोनों में दृष्टिभेद था। काफी था। अुन्होंने वर्धा के पास अेक गांव पसंद किया था। जमीन भी खरीद ली थी। अुस स्थान को अेक तमील नाम भी दिया था, और वहां रहकर वे ग्रामोद्योग और ग्रामजन के पुनरुद्धार का और नवीनीकरण का प्रयोग करनेवाले थे। लेकिन शरीर चल नही सका। अिसलिअे अुन्होने अपनी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सेवा की सस्था सर्व सेवा संघ को दे दी और खुद निवृत्त हुअे।

संस्था के भार से तो वे निवृत्त हुअे और स्वास्थ्यलाभ की निवृत्ति ही अुन्हें चलानी पडी। लेकिन अुनका दिमाग और अुनका व्यक्तित्व अपना काम करते रहे और मुझे विश्वास है कि शरीर छूटने पर भी अुनका यह कार्य चलता ही रहेगा।

शरीर छोडने के लिअे अुहोंने मुहूरत भी अच्छा पसन्द किया। हम भूलेंगे नही कि अुनका शरीर गांधीजी के बलिदान के दिन ३० जनवरी को ही छूटा। गांधीजी के बाद अेक तप याने बारह बरस वे अिहलोक में रहे और अुन्होंने गांधी विचार का प्रतिनिधित्व किया।

गांधीजी से प्रेरणा पाकर जिन्होंने अुनके कार्यको अपना जीवन अर्पण किया अैसे लोग अेक के पीछे अेक जा रहे हैं अिसमें कोअी आश्चर्य नही है। सृष्टि का यह क्रम ही है।

अेक दिन आयेगा जब गांधीजी का कार्य सफल बनाने का भार अैसे लोगो के सिर पर आयेगा जिन्होने न गाधीजी को देखा था न अुनके साथियों को भी देखा था। क्योंकि गाधीजी का कार्य अेक जमाने का नही, किन्तु सदियो का है। वह कार्य सफल होकर ही रहेगा। हमारे ढग से नही, किन्तु अपने ही अद्वितीय और लोकोत्तर ढंग से।

[मार्टिन ब्यूबर योरोप के आधुनिक विचारकों में से हैं। वे जर्मनी के हैं और अुनका जन्म वियाना में १८७८ में हुआ। अुनके द्वारा किया गया बायबल का अनुवाद जर्मन भाषा में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। ब्यूबर अुन आधुनिक चिन्तकों में से हैं जो आज के जीवन को भलीभांति समझते हैं, जिन्होंने मानव के बीते हुअे और वर्तमान जीवन की बारीक-से-बारीक बातों का अध्ययन किया है। जीवन को समग्र दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, मानव परिवार की सर्वश्रेष्ठ शक्तियों को समझने की आवश्यकता है। बाह्य जगत के साथ मनुष्य का अैसा संबंध कायम होना चाहिये जैसा चेतन का चेतन के साथ, यानी संबंध "मैं" और "तू" का होना चाहिये—यह विचार ब्यूबर ने अपनी कृतियों में प्रकट किया है। अुनकी पुस्तक "बिट्वीन् मैन अेण्ड मैन" में अुनके विचारों का गहराई से प्रतिपादन किया गया है। अिस पुस्तक के दो अध्याय शिक्षा के संबंध में हैं। प्रस्तुत लेख अुनमें से अेक अध्याय के आधार पर तैयार किया गया है। ब्यूबर कहते हैं कि सृजनात्मक प्रवृत्तियों का विकास बच्चों की शिक्षा के लिअे अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु वह तो शिक्षा का प्रारम्भ ही है। सृजनात्मकता का विकासमात्र तक शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अुसके साथ-साथ मनुष्य-समाज में सहजीवन—आन्तरिक सहजीवन और संवेदना-पूर्ण संबंध कायम करना शिक्षा का मुख्य ध्येय है। वे कहते हैं कि शिक्षक-विद्यार्थी संबंध शिक्षा का प्राण हैं। सच्चा शिक्षक, विद्यार्थी को सिखाता नहीं है। अुसके द्वारा बालक को जो शिक्षा मिलती है वह अिस प्रकार मिलनी चाहिये कि न तो शिक्षक को यह भान हो कि वह सिखा रहा है और न शिक्षार्थी को पता ही चले कि अुसे सिखाया जा रहा है। जिस प्रकार मनुष्य को संसार के हर तत्व से शिक्षा मिलती है अुसी प्रकार शिक्षक भी अेक तत्व के समान ही अपना काम करता है।

मार्टिन ब्यूबर के विचार गहराई से अध्ययन करने चाहिये। हर शिक्षक को अुनसे प्रेरणा मिलेगी। —संपादक]

आजकल अधिकाधिक शिक्षाशास्त्री यह मानने लगे हैं कि शिक्षा का मुख्य अुद्देश बच्चे की स्वाभाविक सर्जनात्मक शक्तियों का विकास करना है। लेकिन शायद अिस बात पर हमें और गहराई से विचार करने और समझने की जरूरत है।

अिस क्षण में जब आप यह पढ रहे हैं पृथ्वी पर कितने ही नये मानव प्राणियों का जन्म हो रहा है, जिनका चरित्र कुछ तो बन चुका है, कुछ बनने का है। हर घडी नये मानववंश का अुदय होता रहता है। भूतकाल के अपार समुद्र के दृश्य के सामने, जिसे हम विश्व अितिहास कहते हैं, हम अेक तथ्य को आसानी से भूल जाते हैं। हर बच्चा अितिहास की अेक विशिष्ट घडी में जन्म लेता है, अुसकी परंपरायें विचार और स्वभाव कोअी अचानक घटना नहीं हैं, बल्कि अुस पूर्व अितिहास के द्वारा निश्चित की गयी हैं। बच्चा मानव अितिहास के महान् पैतृक को लेकर जन्मता है। अुसी समय यह भी कम महत्व की बात नहीं है कि जो 'अभी हुआ नहीं' अुसका प्रभाव 'जो हो रहा है' अुस पर पड रहा है। यह अेक नवीनता का अनन्त स्रोत, जिसके अन्दर अपार संभावनायें

है, बहना चला जा रहा है। अुसका अेक बड़ा भाग योंही बरबाद हो रहा है। हर बच्चे का जन्म अेक अनोखी घटना है, अेक याथार्थ्य है, जिसके विकास और पुष्टि का काम अत्यन्त महत्व का है। अिस चिरनवीनता के स्रोत का अब आगे अपव्यय न हो, हर अेक बच्चा, जो अिसका घटक है पूरा विकास कर पाये, अिससे ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य हमारे सामने और क्या हो सकता है? अिस महान् कार्य पर हम जितना भी ध्यान और शक्ति लगायें कम ही रहेगा। भावी अितिहास कहीं अैसे लिखकर रखा हुआ नहीं होता, जिसे सिर्फ खोलते ही देखा जा सके। वह आगामी पीढ़ी के निर्णयों से और कर्मों से बननेवाला है, जिसकी अब हम कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। आज के हर अेक बच्चे का और किशोर का भाग अिस भविष्य के निर्माण में अपरिमेय महत्व का है। अगर हम सच्चे शिक्षक हैं तो हमारा भाग भी अुतना ही अपरिमेय है। आनेवाली पीढ़ियों की कृतियां मानव संसार को या तो अुज्वल कर सकती हैं या अुसे अन्धकार में डुबा सकती हैं। शिक्षा की भी यही बात है। अगर अुसका कोअी अस्तित्व है, अगर वह अपना कार्य करती है तो प्रकाश की तरफ ले जायगी, करनेवालों के हृदय में शक्ति का संचार कर देगी। यह कहां तक कर सकेगी अिसका अन्दाज अभी नहीं लगा सकते। प्रयत्न करते-करते ही हम अिसकी संभावनाओं को समझ पायेंगे।

बच्चा अेक याथार्थ्य है, शिक्षा को भी यथार्थ बनना होगा। लेकिन जब हम "सर्जनात्मक शक्तियों के विकास" की बात करते हैं तो हमारा मतलब क्या है? शिक्षा का याथार्थ्य क्या वही है? शिक्षा को वास्तविक बनने के लिअे क्या इसी ओर काम करना होगा? आज के शिक्षा शास्त्री यही मानते हैं। वे सोचते हैं कि शिक्षा अभी तक अपना अुद्देश पूरा नहीं कर पायी, क्योंकि बच्चे के अन्दर की नैसर्गिक शक्तियों का विकास करने की तरफ कम ध्यान दिया गया है। हमारा प्रयास दूसरी ओर ज्यादा रहा है।

सृष्टि या सर्जन का मूल अर्थ है असद् में जो सद्भाव छिपा हुआ है, अुसको प्रकट होने का दिव्य आह्वान। रूप देने की मनुष्य शक्ति के लिअे जब सृजन शब्द का प्रयोग होने लगा तो अुससे मानवकृति के अेक शिखरपर पहुचने का दर्शन हुआ। सृजन की शक्ति-याने मानव के अन्दर की दैवी शक्ति का प्रकटन। अब इस शब्द का अर्थ और विशाल बना है। सब मानवों में और मानव की सन्तान में यह सृजन शक्ति छिपी हुई है। अुसका ठीक विकास करना मात्र आवश्यक है। कला का जगत् ही अेक अैसा क्षेत्र है जहां इस निर्माण करने का गुण, जो सब में है, पूर्णता प्राप्त कर सकता है। हर अेक के अन्दर मूल रूप से यह कलात्मक वृत्ति विद्यमान है। इसके विकास के द्वारा ही संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है।

बच्चा चीजें बनाना चाहता है। वह किसी वस्तु का आकार बनते हुअे देखना ही नहीं चाहता, अुस निर्माण की प्रक्रिया में अपना हिस्सा भी चाहता है, अपना कर्तृत्व चाहता है। बच्चे की इस बनाने की इच्छा के बारे में अैसा ख्याल नहीं होना चाहिये कि वह कुछ-न कुछ काम में 'व्यस्त रहना" ही चाहता है। मैं अैसा मानता ही नहीं हूं कि बच्चा व्यस्त रहना चाहता है। वह कुछ बनाना चाहता है, नहीं तो तोडना चाहता है मारना चाहता है, चीजों को हाथ में लेकर देखना चाहता है। लेकिन वह सब "व्यस्त

रहने" के लिअे नहीं। महत्व की बात यह है कि अपने ही काम से, जिसके दौरान में अुसे तीव्र अनुभूतियाँ होती हैं, कोई अैसी चीज बनती है, जो पहले नहीं थी। बच्चा जब पूरे दिल से कोई चीज बनाने में लग जाता है तो वह अपनी ही शक्ति से, शरीर और हाथ के चलनों से, आश्चर्यचकित होता है। प्रागैतिहासिक काल के मानव की तरह वह भी अपनी कृति के सामने मूक और स्तब्ध खड़ा हो जाता है। जब हम समझते हैं कि बच्चा कोई चीज तोड़ रहा है, अुसके अन्दर "विध्वंस वृत्ति" काम कर रही है तभी भी आप देखेंगे कि अुस प्रवृत्ति में सर्जन की वृत्ति भी निहित है। अुदाहरणार्थ--वह अेक कागज फाड़ फाड़ कर फेंक रहा है। तो अधिक देर के पहले ही अुन टुकड़ों के आकारों में अुसकी दिलचस्पी हो जाती है और फिर कुछ निश्चित आकार बनाने की तरफ अुसका प्रयास रहता है।

यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यह बनाने की अिच्छा या सर्जनात्मक वृत्ति मनुष्य में सहजात ही होती है, वह बाह्य कारणों से प्रेरित नहीं है। और यह मनुष्य की सहजात वृत्तियों में अेक मुख्य वृत्ति है। अिसलिअे शिक्षा के कार्य में वह बहुत महत्व की है। वह अेक अैसी वृत्ति है जो कभी लोभ या लालसा की तरफ नहीं ले जाती, क्योंकि यहां आकांक्षा कुछ 'रखने' की नहीं, करने की होती है। अिसलिअे वह अत्यंत तीव्र होने पर भी साधना ही होती है, लालसा नहीं। और यह अेकमात्र अैसी वृत्ति है जो दूसरे पर अपना प्रभाव नहीं जमाना चाहती है। दुनिया को छीनना नहीं चाहती, सिर्फ अपने आपको दुनिया के सामने प्रकट करना चाहती है।

क्या यही व्यक्ति के विकास व चरित्र निर्माण के लिअे सब से सही आरंभ स्थान नहीं है? अिसी से हमें सफलता की ज्यादा से-ज्यादा आशा है। क्योंकि अिस अमूल्य गुण की वृद्धि और विकास का काम बिना बाधाओं के हो सकता है। और वह तो पहले भी प्रयोगसिद्ध हो चुका है। कई प्रकार के अंगवैकल्यों से अवश *कितने ही बालक बालिकायें अपने अन्दर निहित* सर्जन शक्ति के विकास के द्वारा--संगीत और कलाओं के द्वारा--जीवन को सार्थक बना कर अुज्वल कर्मपथ पर अग्रसर हुअी हैं।

लेकिन अिन्हीं अुदाहरणों के गहरे अध्ययन से हमें यह भी पता चलेगा कि स्वाभाविक सर्जनशक्तियों के निर्बाध विकास के साथ अुनका ठीक दिशा में प्रवृत्त करना भी चरित्र निर्माण के लिअे आवश्यक है। व्यक्ति की मुक्तशक्तियों का विकास किस ओर होता है, अुससे क्या बनता है, यह शिक्षा को शुद्धि और तेजस्विता, प्रेम और विवेक पर निर्भर है।

किसी काम में साथ मिलकर हिस्सा लेना और परस्पर विश्वास करना अैसे दो गुण हैं, जो सच्चे मानव जीवन के निर्माण के लिअे अपरिहार्य हैं। सर्जनात्मक वृत्ति को यों ही छोड़ देने से वह अिन गुणों का विकास नहीं करती है और नहीं कर सकती है।

व्यक्ति की अपनी कृति और समाज के लिअे कुछ करना, ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं। किसी वस्तु के निर्माण करने में मर्त्य चरितार्थता का अनुभव करता है, लेकिन सामूहिक कार्य में हिस्सेदार बनने में अेक अंग मात्र होने की नम्रता स्वाभाविक ही आती है। अैसे सहकार में, अेक दूसरे के साथ अेकात्म्यबोध में, मर्त्य को अिस पृथ्वी पर अमरत्व प्राप्त होता है।

वैयक्तिक कृति के लिअे किये जानेवाला कर्म अेकतर्फा होता है। आदमी के अन्दर अेक

शमित है जो निकास चाहती है, किसी वस्तु पर प्रकट होती है और वस्तुनिष्ठ रूप से अुसकी कृति का आविर्भाव होता है। यहां वह क्रिया समाप्त होती है। हृदय के स्वप्न में से बाह्य जगत की तरफ अुसका प्रवाह हो गया, अुसकी गति वहां खतम हो गयी। कलाकार की अन्तःप्रेरणा अत्यन्त तीव्र होती है, अुसके मन में अेक विचार छाया हुआ है, जिसे रूप देना ही है। जब तक वह अुस काम में लगा हुआ है, अुसकी आत्मा बाहर की तरफ जाती है, वह बाहर से कुछ लेता नहीं। वह दुनिया के सामने अपने आपको प्रकट करता है लेकिन दुनिया से अुसे कुछ मिलता नहीं, अिसलिअे सर्जनकर्त्ता के तौर पर, आदमी अकेला है। वह अपनी ही प्रतिध्वनि करती हुई कृतियों के बीच अकेला खड़ा है। समाज से अुसकी कृति का अुत्साहपूर्ण स्वागत हो तो भी अुसका यह अकेलापन नहीं मिटता, क्योंकि जिनके पास वह पहुचती है, वे लोग अुसके लिअे अनजान हो रह जाते हैं। जब तक कोअी व्यक्ति अुसका हाथ अपने हाथ से नहीं पकड़ता—अेक "कलाकृत्" के रूप में ही नहीं, अिस विशाल विश्व में खोये हुअे अेक सहजीवी के नाते, अुसका साथी, मित्र और प्रेमी के रूप में, जिसे अुसकी कलाओं से कोई अपेक्षा नहीं—तब तक अुसे आत्मीयता का बोध नहीं हो सकता।

शिक्षा में अगर सिर्फ सर्जनात्मक वृत्ति का विकास होता है तो अुससे व्यक्ति का अकेलापन होगा, जो अत्यन्त दुःखद है। अुसके साथ-साथ अुसे अपने सहजीवियों के साथ काम में हिस्सेदार बनने की, आतरिक भावनाओं के आदान प्रदान की शिक्षा भी मिलनी चाहिये।

बच्चा जब चीजों को जोड़ कर कुछ बनाता है तो वह अैसा बहुत कुछ सीख लेता है जो किसी दूसरे तरीके से नहीं सीख सकता। वह अुन वस्तुओं की संभावनाओं को, मूल को और चीजों की बनावट और अुनके परस्पर संबंध को जान लेता है। सिर्फ निरीक्षण मात्र से अुसे यह ज्ञान नहीं मिल सकता है। लेकिन जीवन की कुछ और अैसी बातें हैं जो अिस तरीके से भी वह नहीं सीखेगा। दूसरों के साथ सवेदना का भाव सर्जनात्मक वृत्ति से नहीं, आन्तरिक संबंध से ही होता है।

दुनिया को अेक वस्तु के रूप में अपने अन्तर्बोध के द्वारा जाना जा सकता है, लेकिन अुसके साथ गहरी सहानुभूति और संवेदना का भाव आन्तरिक संबन्ध और सक्रिय सहकार से ही बन पाता है, यानी अपना और बाह्य जगत का अैसा संबन्ध जो चेतन के साथ चेतन का होगा।

मनोवैज्ञानिकों की परिभाषा और व्याख्या ने अिस वृत्ति को जितना महत्व दिया है वह दर असल अुससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह अेक अुत्कट आकांक्षा है कि दुनिया हमारे सामने अेक व्यक्ति के जैसे रूप में प्रकट हो। वह भी हमारे नजदीक आये जैसे हम अुसके नजदीक जाते हैं, हमें वैसे ही जाने पहचाने जैसे हम अुसको जानते पहचानते हैं, वह भी हमारे अन्दर प्रतिष्ठित हो जैसे हम अुसके अन्दर प्रतिष्ठित होते हैं। बच्चा जो अर्धनिमीलित नयनो से अपनी मा के बोलने की अुत्कंठापूर्ण प्रतीक्षा करता हुआ लेटा है, अुसकी अिच्छा के रहस्य में अपनी मां से आनन्द पाने की या अुसके अूपर काबू पाने की वृत्ति नहीं है, बल्कि संवेदना अनुभव करने की वृत्ति है।

शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच अैसी संवेदना और परस्पर भावनाओं का आदान प्रदान

ही शिक्षा का अुत्तम साधन है । शिक्षक के व्यक्तित्व की गहरी छाप विद्यार्थी के अूपर पडती है । आज का शिक्षा–सिद्धान्त जो स्वतंत्रता के विचारों पर आधारित है, अिस बात को ठीक रूप से नही समझता । पुराना शिक्षा सिद्धान्त अधिकार की भावना पर आधारित था । वह शिक्षा के अिस हिस्से को जो दो व्यक्तियों के बीच के आदान-प्रदान के अूपर आधारित है, अुचित महत्व नही देता था ।

अेक समय था जब शिक्षा की योजना जानबूझकर नही बनायी जाती थी । शिक्षक का धन्धा नामक कोई चीज नही थी । अेक गुरु था, अेक दार्शनिक था, अेक लोहार था, जिसके पास जवान लडके जाकर पढा करते थे । अुसके पास जो भी दिमाग का या हाथ का काम था अुसमे हिस्सा लेकर वे वह काम सीखते थे और गुरु के साथ रहते थे । अनजाने हो वे अुस गुरु से जोवन की गहराअिया भी सीख जाते थे । भावनाओं की अनुभूति प्राप्त करते थे । आज भी शिक्षा का यह तरीका कही-कही चलता है । जहा मनुष्य और अुसकी भावना जीवित है वहा वह चलेगा ही । लेकिन आज हमने अुसको केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में रख छोडा है और वह अपवादात्मक हो गया है जो अूचे स्तर पर ही सभव है । शिक्षा की, हमें अुद्देश के साथ योजना बनानी पडती है । यह ठीक भी है । अब हम अुस जमाने में लौट कर नही जा सकते हैं जब कि स्कूल नहो हं ते थे, नही ही प्राविधिक विज्ञान के आविर्भाव के पहले के युग में वापस जा सकते हैं । मगर हमें अिस विकास को वास्तविक और पूर्ण बनाना है । अुसको मानवीय बनाना है । तब हमारे पथ में जो हानिया हुई हैं, वे ही अनजाने में हमारे लाभ बन जायेंगी ।

हमारे शिक्षक का आदर्श वह पुराना गुरु ही है, जो कुछ सिखाता नहीं था । आज अुसे हालाकि सोच समझकर शिक्षाप्रदान का काम करना पडता है, फिर भी अुसे वह काम अैसे करना चाहिये कि जैसे वह कुछ कर ही न रहा हो ।

ससार ही बच्चे का पहला गुरु है—प्रकृति के रूप में और समाज के रूप में । अुसको शिक्षा प्रकृति और मूल तत्त्वों से होती है । वायु, प्रकाश, पौधो की और जानवरों की जिन्दगी-अुनके साथ अुसके सबधो से अुसे शिक्षा मिलती है । शिक्षक प्रकृति और समाज दोनो का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन अुसको बच्चे के प्रति अैसा सबध बनाना चाहिये जैसे वह भी मूलतत्वों में अेक ही हो ।

आज के शिक्षक के सामने अपने विद्यार्थियो को चुनने का प्रश्न नही है, यही अुसकी महत्ता है । वह अपने क्लास के कमरे में प्रवेश करता है । अुन बालको का दर्शन अुसे पहली बार होता है । अच्छे, बुरे, बुद्धिमान, मूर्ख, तेजस्वी, और जड, सब अेक साथ बैठे हुअे है, जैसे सृष्टि से अैसे ही अुठाकर लाये गये हैं । अुसकी नजर अुन सब को अपना लेती है और स्वीकार करती है । क्योकि जब सृष्टि में प्रकाश और अन्धकार दोनो हैं तो आदमी को दोनो से प्रेम करना चाहिये । प्रकाश अुसे अच्छा लगता है और अन्धकार से वह आशा करता है कि वह प्रकाश की तरफ ले जायगा ।

अगर यह शिक्षक सोचता है कि शिक्षा के लिअे अुसे अुन्हे चुनना पडेगा, वर्गीकरण करना होगा तो अुसमें भी निर्णायक तत्व अुसकी इच्छा नही होती है । अेक शिक्षक के नाते जो मूल्य वह सही समझता है, अुन्ही के आधार पर वह अपना निर्णय करेगा और अुसमें भी अुसे शिक्षक की स्वाभाविक नम्रता के साथ जाच और परख करनी होगी, क्योकि अपने विद्यार्थीयो का विकास और कल्याण ही अुसके

(शेषांश पृष्ठ २७० पर)

प्रशिक्षण केन्द्र में बढ़ई कार्य

के. अेस्. आचार्लु

हमारी बेसिक प्रशिक्षण सस्था का स्वरूप पारिवारिकता पर आधारित है। सभी विद्यार्थी और शिक्षक कार्यकर्त्ताओ में से अधिकतर सस्था में ही रहते हैं। सस्था में लगभग अेक सौ विद्यार्थी हैं। वे सभी मैट्रिक पास करके आये हैं।

अिन नवयुवको में से दो-तिहाई तो सीधे स्कूल से निकलकर ही आये हे और वाकी अैसे हैं जिन्हे कुछ वर्षो या प्राथमिक शालाओ में पढाने का अनुभव हुआ है।

यह केन्द्र बिना स्पष्ट अुद्देश्य या योजना के, सन् १९५९ के जुलाई माह में प्रारम्भ हुआ था। तब शिक्षा की साधन सामग्री नही के बराबर ही थी और यहा तक कि पीने का पानी भी अेक समस्या ही था। स्नान और कपडे धोने के लिअे शिक्षको और विद्यार्थियो को दूर अेक गाव के तालाब पर जाना पडता था। अिस परिस्थिति में सामाजिक जीवन का सगठन अेक आवाहन ही था। नई तालीम फिर नई तालीम कैसे रहेगी अगर वह प्रतिकूल वातावरण को बदल कर अनुकूल बना देने का आह्वान स्वीकार न करे।

सरजाम तो अति अल्प मात्रा में था। हमने सस्था के प्रवन्धको को सुझाया कि अेक बढई को अुद्योग शिक्षक के तौर पर रख लिया जाय। सौभाग्य से हमें अेक ग्रामीण बढई मिल गया जो सामान्य लिखना-पढना भी जानता था। किसी भी शिक्षा केन्द्र में पाठ्यक्रम का प्रश्न तो खडा रहता ही है। और सरकारी शिक्षा विभाग के पास तो बना-बनाया अैसा पाठ्यक्रम तैयार रहता है जो अुस दस्तकारी के तज्ञो द्वारा बनाया हुआ होता है। किन्तु नई तालीम की दृष्टि तो कुछ अलग ही होती है। नई तालीम के अनुसार पाठ्यक्रम परिस्थिति के अनुसार बनाया जाता है। वह आम परिस्थिति के लिअे नही, बल्कि समाज विशेष की परिस्थिति के लिअे बनता है। यह अपने समाज की आवश्यकताओ को दृष्टि में रखकर बनाना पडता है। नई तालीम के पाठ्यक्रम को बनाते वक्त यह ध्यान में रखना पडता है कि हमारी कौन-सी आवश्यकता अैसी है, जिसकी पूर्ति करने के प्रयत्न में हमारे समाज का स्वस्थ विकास होगा और जो कारीगरी की दक्षता हासिल करा सकेगा और साथ-साथ समुचित शिक्षण का माध्यम भी बन सकेगा।

पहले तो हम सबने बैठकर अध्ययन किया और यह तय किया कि लकडी की किस-किस वस्तु की हमें आवश्यकता है। प्रशिक्षार्थियो की टोली ने लकडी की अुन सब चीजो की सूची तैयार की जो हमारे जीवन के हर अलग अलग विभागो में प्रथम आवश्यकता की होती हैं। हर विभाग की वस्तुओ के बारे में अेक-अेक करके सोचा और यह तय किया कि अुनमें से कौन-सी अत्यन्त आवश्यक है और कौन-सी अैसी है जिसके न होने स भी चल सकता है। दफ्तर के सामानो में हमने निम्नलिखित वस्तुअें लीं

अेक अलमारी—दफ्तर के कागजात रखने के लिअे।

अेक शेल्फ

लिखने के लिअे डेस्क

टाअिपरायटर के लिअे अेक मेज

पुस्तकों के लिअे अेक शैल्फ

कागजों के लिअे ट्रे

अेक खजांची पेटी

कलमदान

कुछ विद्यार्थियों ने सुझाया कि रद्दी कागज की टोकरी भी चाहिये। किन्तु अुसको सबने नामजूर कर दिया, क्योंकि बांस की टोकरियों से वह काम हो जाता है। अिस बात पर भी विद्यार्थियों के बीच काफी चर्चा हुई कि हमें आधुनिक स्टील के और पाअिप के बने फर्निचर को दफ्तर में क्यों नहीं अिस्तेमाल करना चाहिये। अिस सिलसिले में सर्वोदय पर आधारित स्वदेशी विचार पर भी खूब चर्चा हो गयी।

प्रशिक्षार्थियों ने अिन विभागों की आवश्यकताओं पर विचार किया :

रसोई, कक्षागृह, पुस्तकालय और वाचनालय, बुनाई गृह, कताई अुद्योग, सफाई और स्वास्थ्य विभाग, छात्रालय।

अिस सारे चिन्तन के बाद अुन्हें ताज्जुब हुआ कि काष्ठ-कला की, अेक अुद्योग के नाते अेक शैक्षणिक केन्द्र में कितनी सम्भावनायें हैं।

अिसके बाद सवाल आया कि बननेवाली किन-किन चीजों को प्राथमिकता मिलनी चाहिये। पेशाबघर और पाखानों को दफ्तर की अलमारी के बदले स्वाभाविक ही सब से पहले हाथ में लिया। शिक्षक को बैठने के लिअे जो पीढा बनाना था, अुससे भी अधिक आवश्यक था कक्षा के लिअे कालातख्ता।

काष्ठ-कला की टोली में १६ विद्यार्थी थे। बढई शिक्षक के मार्गदर्शन में वे हफ्तेमें छः दिन और रोज दो घन्टे काम करते थे। पहले चार हफ्तों तक अिस टोली ने बड़ी कठिनाइयों के साथ काम किया, क्योंकि तबतक न तो औजार ही थे और न आवश्यक लकडी। साथ-साथ विद्यार्थी भी अिस अुद्योग में बिलकुल नये थे। अुन्हें किसी तेज औजार को हाथ लगाने में भी डर लगता था। छुट्टियाँ, बीमारियाँ और सामाजिक पारियाँ आदि को लेकर कुल हाजरी १० से भी कम रहती थी।

तारीख १६-२-५९ से ३०-१-६० तक जिसमें से तैय्यारी के चार हफ्ते निकालने चाहिये, जो सामान बना वह अिस प्रकार है :—

वस्तु	काम के घण्टे	कच्चे माल की कीमत	मजदूरी	कुल कीमत
१. स्टूल (२)	१८	२.६३	३.५०	६.१३
२. वाचनालय के शैल्फ (४)	२८	३५.२०	७.५०	४२.७०
३. भाजी काटने की छुरी	३६	१६.४५	९.५०	२५.९५
४. पीढा	३५	१४.७५	२२.००	३६.७५
५. पूनीसलाई (१२)	६२	१२.००	१०.५०	२२.५०
६. बांस के फ्रेम	४	३.२५	१.५०	४.७५
७. बुनाई घर के लिअे चरखा	५	१.००	१.००	२.००
८. अटेरन (१२)	१८	६.००	३.००	९.००

वस्तु	काम के घण्टे	कच्चे माल की कीमत	मजदूरी	कुल कीमत
९. चौखटें (२)	१८½	११.८७	५.५०	१७.३७
१०. पाखाने	१८	११.८७	४.५०	१६.३७
११. बोर्ड	६	१.००	३.००	४.००
१२. प्रार्थना भूमि का घेरा.	२१.१५	८.३७	४.००	१२.३७
१३. कपडे सुखाने के स्टेण्ड	१८	४.५०	४.००	८.५०
१४. अधूरा काम पाखाने २, स्टूल २, खिडकियाँ २, पीढे २—कुल ५० घण्टे.				
कुल :-	२८७	१२८.८६	७६.५०	२०८.३६

अुपरोक्त आकडो से पता चलेगा कि छह हफ्तो के अरसे में शिक्षक और विद्यार्थियो ने २८७ घण्टे काम किया। चार आना प्रति घण्टे के हिसाब से कुल मजदूरी रु. ७९.५० हुअी। पूरे सामान की कीमत अगर बाजार के हिसाब से लगायी जाय तो लगभग रुपये २६०.०० होगी–यानी हमारी कीमत बाजार से २५% कम हुई। काष्ठ अुद्योग शिक्षक का दो माह का वेतन रुपये १५०.०० ।

अेक दिन अेक इजीनियर अतिथि हमारे केन्द्र में आये थे। अुन्होने अनेक अुद्योगो की बात करते हुअे कहा कि हमें केन्द्र में बढई काम का खूब विस्तार करना चाहिये। अुन्होने कहा कि तैय्यार माल जिससे कि बिक सके, हमें अेक आकर्षक प्रदर्शन कमरा बनाना चाहिये। मैंने अुसका अुत्तर नही दिया, क्योंकि मैं अुनकी बात से असहमत था। दो महीने बीत गये हैं। अगर वे मित्र फिर यहा आयें और वह प्रदर्शन कमरा देखना चाहे, तो मैं वह नही सकता कि वे क्या सोचेगें। वे सोचेगें कि सस्था बडी पिछडी हुई है–कोई "शो रूम" नही है–वह माल जो तैय्यार किया गया है कहा रखा। वस्तुअें जिस कार्य के लिअे बनी थी वही रखी हैं। वही हमारा प्रदर्शन है। शैल्प कमरो में, दफ्तर में है। रसोई का सामान रसोई में है, प्रार्थना भूमि का सुन्दर घेरा, ये सब हमारी काष्ठकला कक्षा के काम का प्रदर्शन है। यहा कुछ खरीदने का नही है, किन्तु अगर आप यहा आयें तो अुन चीजो में हमारे परिवार के साथ हिस्सा बटा सकते हैं।

(पृष्ठ २६७ का शेषांश)

सर्वोच्च सिद्धान्त है। अपने सामने के बच्चो के व्यक्तित्व की विभिन्नता में सृष्टि की विभिन्नता अुसके सामने अुपस्थित है।

शिक्षा के आधारभूत तत्व हैं, पहला–दो व्यक्तियो का (गुरु और शिष्य के बीच का) सबध, दूसरा–किसी प्रवृत्ति में साथ मिलकर हिस्सा लेने की अनुभूति, तीसरा–अुस प्रवृत्ति में अपने हिस्से की वास्तविकता को भूले या कम किये बगैर हो दूसरे के मद्दे नजर से अुसे अनुभव करने की क्षमता।

कक्षा–अुत्तर बुनियादी दूसरा वर्ग

शैक्षणिक सरंजाम–श्यामपट, मीटर-फुट-स्केल पट्टियाँ, दशमिक, सेर छटांक और तोला मासा, वजनो के बाट, तराजू, तरल पदार्थ नापने के बरतन, ड्राअिंग कागज, पेन्सिल आदि। चार्ट-भिन्न-भिन्न परिमाणों की सारणी, सरकारी प्रकाशन विभाग से प्राप्त पोस्टर और पुस्तकें।

प्रसंग–रेल्वे और अन्य विभागों में होनेवाले माप-तौल में परिवर्तन।

विद्यार्थियों का पूर्वज्ञान–दशमिक सिक्कों के परिवर्तन के बारे में वर्ग हुअे थे।

योजना–निम्नलिखित योजना की अवधि–१५ वर्ग।

योजना की रूपरेखा–(६ विभाग)

१. माप-तौल में परिवर्तन की आवश्यकता।

२. माप-तौल की रूपरेखा और दशमिक पद्धति।

३. दशमिक माप-तौल का अितिहास।

४. माप-तौल का सरकारी अधिनियम १९५६।

५. परिवर्तन सारणी (टेबल्स),—सेर से कीलोग्राम और कीलोग्राम से सेर–आदि।

६. मूल्य परिवर्तन सारणी।

वर्गों का बंटवारा–विभाग १ से ५ में कुल ५ वर्ग जिनका समय ३ घण्टा ४५ मिनिट हुआ।

विभाग ६ में ७ घण्टे ३० मिनट (१०वर्ग)। विभाग ५ में दो अुप-विभाग किये गये हैं। अुप-विभाग "अ" में प्रत्यक्ष कार्य करना है, अिसलिअे अुसके लिअे स्वतत्र अवधि देने की आवश्यकता नही पडती है। परिवर्तन सारणी बनाने के लिअे भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मापतौल का प्रत्यक्ष अुपयोग करके बताना पडता है, यह काम अुद्योग के समय होता है।

विभाग १

माप-तौल के परिवर्तन की आवश्यकता

भारत में माप-तौल की भिन्नता–भारत में भिन्न भिन्न प्रदेशों में अलग अलग माप-तौल चलते हैं। यहाँ पर बंगाल, अुडीसा, मद्रास, बम्बई और अुत्तर प्रदेश के विद्यार्थी हैं। हरेक राज्य में जो माप-तौल चलता है, अुसकी जानकारी चर्चा करके प्राप्त की गयी। सोना चांदी के लिअे सब जगह रत्ति, मासा, तोला चलता है। सामान्य तौल के लिअे औंस, पौंड, क्वार्टर, हड्रडवेट और टन, ये वजन चलते हैं। (avoirdupois weights)

दूसरे देशों में सोना चांदी के लिअे "ट्राय" वजन और दवाई के लिअे "अॅपोथिकरी" वजन अुपयोग में लाते हैं। "ट्राय" पद्धति के अनुसार ग्रेन, पेनीवेट, औंस और पौंड व अपोथिकरीज वजन–ग्रेन, औंस और पौंड चलते हैं। भारत में भी अिसका अुपयोग कुछ-कुछ होता है।

अभी तक दशमिक पद्धति ५४ देशों में अपनायी जा चुकी है और दुनियां की तीन चौथाई आबादी अुसका अुपयोग कर रही है। दशमिक पद्धति से हिसाब आसान हो जाता है और गलतियां कम होती हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्र में यह पद्धति सोच विचार करके अपनायी गयी है, क्योंकि अुसके पिछे अेक ठोस वैज्ञानिक विचारधारा है।

भारत में परिवर्तन के लिअे यह अेक योग्य समय है। अभी नई-नई प्रगतियां हो रही हैं। अगर अभी परिवर्तन कर लिया तो आसानी से हो जायगा। देर होने से परिवर्तन में अधिक कठिनाअियां होगी।

विभाग २

माप-तौल की रूपरेखा और दशमिक पद्धति

दुनियां में साधारण रूप में दो प्रकार की पद्धतियां चल रही हैं। (१) फुट-पौंड (२) मीटर-ग्रॅाम।

भारत में जो पद्धति चल रही है वह फुट-पौंड पद्धति है। अुसमें लंबाई का माप फूट-गज, फर्लांग, मील है और वजन का माप तोले, छटाकें, सेर है। तरल पदार्थ का आयतन मापने के लिअे गैलन का अुपयोग किया जाता है।

दशमलव पद्धति में लंबाई का माप मीटर है। अुसके अवनत क्रम को क्रमश: दस-दस विभाग में बांटकर डेसी, सेंटि और मिली– ये अुपसर्ग लगा देते हैं। वैसे ही बडे परिमाण बताने के लिअे डेक्मा, हेक्टो, कीलो–ये अुपसर्ग लगाते हैं। ये छ: अुपसर्ग मन में बैठ जाय तो दशमिक पद्धति समझना आसान हो जाता है।

वैसे ही वजन के लिअे ग्राम है। ग्राम छोटा वजन है, अिसलिअे व्यवहार में अुसके बडे परिमाण ही ज्यादा अुपयोग में आते हैं। सोना और चादी के वजन में छोटे परिमाणो का भी अुपयोग होता है।

आयतन के लिअे लिटर, यह मान है। अिसका अुन्नत व अवनत क्रम अिसी प्रकार के अुपसर्ग लगाकर किया जाता है।

फूट-प्रौंड और मीटर-ग्राम पद्धति का आपसी सबंध देखना भी जरूरी है।

लंबाई में मीटर को तुलना यार्ड से करनी चाहिये। १ यार्ड ९१ सेंटिमीटर लंबा होगा– या ०.९१ मीटर होगा। वैसे ही ११.६ ग्राम का अेक तोला होगा और अेक गॅलन ४.५५ लिटर के बराबर होगा।

तुलना अिसलिअे करना आवश्यक होता है कि विद्यार्थियो को दशमिक माप-तौल की कुछ कल्पना आनी चाहिये। यह कल्पना केवल सैद्धान्तिक तौर पर समझ में आने से नही चलेगा। विद्यार्थियो को अुसका चाक्षुप अनुभव भी होना चाहिये। जिस तरह अेक गज कहने से अुतनी लंबाई का अन्दाज आंखो के सामने आ जाता है अुसी प्रकार मीटर आदि का भी होना चाहिये। और अिसी प्रकार दोनों की तुलना की कल्पना भी।

सारणी पट:– यह स्पष्ट करने के लिअे भित्तिचित्र और प्रत्यक्ष माप-तौल का भी अभ्यास कराया जा रहा है।

विभाग ३

दशमिक माप-तौल का इतिहास

पुराने जमाने में व्यापार की अितनी वृद्धि नही हुई थी जितनी आज हुई है। वह बहुत सीमित था। अिसलिअे विशेष परिमाणो की आवश्यकता नही थी। लम्बाई के लिअे भारत में हाथ, बालिश्त, अंगुल, व्यगुल आदि माप थे और योरोप में क्युबिट, स्पैन, पाम अित्यादि माप चलते थे।

वजन भी खास तरह से नही बनाये गये थे। जिसकी जरूरत होगी अुसका आपसी व्यवहार अनाज को या कीमती चीजो को बदल कर होता था। सिक्के की भी आवश्यकता नहीं थी।

फ्रेंच क्रांति के समय लोगों के विचार में परिवर्तन हुआ। व्यापार की वृद्धि हुअी। परिमाणों की आवश्यकता होने लगी। ई. सन् १७९१ में फ्रेंच कमीशन ने "मीटर" सुझाया। १७९४ में अेक मीटर की प्लॅटिनम की सलाख निश्चित करके "ब्युरो ऑफ ट्रेड" पेरिस में रखी गयी। यह अंतर भूमध्य रेखा से अुत्तर ध्रुव तक के अंतर का अेक करोडवा भाग माना गया था। यह रेखा भी वह ली गयी थी जो पेरिस शहर से गुजरती थी। अिसी हिस्से को अुन्होंने अपनी इकाई मान ली थी। १८७० में भारत में दशमिक पद्धति अपनाने का नियम बनाने का प्रयत्न किया गया था। अुसमें सेर (किलोग्राम की जगह) और मीटर को अपनाया गया था। लेकिन वह अेक्ट पास नहीं हुआ। १८७१ में फिरसे वही प्रयत्न किया गया और वह पास भी हुआ था, लेकिन व्यवहार में नहीं आ पाया।

१८९८ में ब्रिटीश पार्लमेंट में भी अधिनियम बनाया गया था। लेकिन वहां भी अुसका अमल बहुत कम क्षेत्रों में हुआ।

इसके बाद इसका प्रचार अन्य देशों में हुआ। अमेरिका को छोडकर और सारे देशों के वैज्ञानिकों ने भी इसे मान लिया है।

भारत में १९५६ के अधिनियम के अनुसार यह प्रणाली लागू होगी। अैसी अपेक्षा की जाती है कि १ अक्टूबर १९५८ से १९६८ तक धीरे-धीरे सारे भारत में सब क्षेत्रों में यह लागू हो जायगी।

१ अक्टूबर १९५८ को बडे-बडे कारखानों, सरकारी रिपोर्टों, कुछ म्युनिसिपल क्षेत्रों में और सरकार की कई संस्थाओं में लागू की गयी।

नोट :–यह योजना अभी चल रही है। विद्यार्थियों को अलग अलग क्षेत्रों में अभ्यास कराया जा रहा है। योजना का आखिरी विभाग, जिसमें विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अैसी सारणियां बनानी हैं, जिनके द्वारा मूल्य-परिवर्तन आसान हो जाय, अभी प्रारम्भ हुआ है। अुसमें लगभग आठ वर्ग और लगेंगे।

अगले तीन, यानी चौथे, पांचवें और छठे विभाग की जानकारी अगले अंक में देने का प्रयत्न करेंगे।

जब तक देश में चरित्रवान शिक्षकों द्वारा विद्या नहीं दी जायगी, जब तक गरीब-से-गरीब भारतीय को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिलने की स्थिति पैदा नहीं होगी, जब तक विद्या और धर्म का संपूर्ण संगम नहीं होगा, तब तक विद्या का देश की परिस्थिति के साथ संबंध नहीं जुडेगा, जब तक विदेशी भाषा में शिक्षा देने से बच्चों और जवानों के मन पर पडनेवाला असह्य बोझ दूर नहीं कर दिया जायगा, तब तक कोअी शक नहीं कि जनता का जीवन कभी अूंचा नहीं अुठेगा।

—गांधीजी

[भाषा के प्रश्न पर जो मतभेद प्रकट होता है और अुसके कारण जो तनाव पैदा हुआ है, वह कुछ सुलझता हुआ नहीं दीखता। शिक्षा में अंग्रेजी भाषा का क्या स्थान है, अिस प्रश्न पर अगर आज भी हमें वादविवाद करना पड़े या अुसके लिअे आवाज अुठाने की आवश्यकता महसूस पड़े, तो वह राष्ट्र की प्रगति का कोअी अच्छा चिह्न नहीं है। हर स्तर की शिक्षा अपनी-अपनी भाषा में हो हो, अिसके बारे में शिक्षा-शास्त्र की गहराअी में जानेवाले लोग क्या कहते हैं, अिसके कुछ नमूने नीचे दे रहे हैं।

आगामी सर्वोदय सम्मेलन के समय भाषा के प्रश्न पर गहरा चिन्तन हो और अुस पर अेक स्पष्ट राय भी दी जाय, अिस विचार से यह लेखसंग्रह दिया जाता है। —संपादक]

विद्या विस्तार के प्रश्न पर जब गहराअी से सोचता हू तो अुसकी सर्वप्रधान बाधा यही दीखती है कि शिक्षा का वाहन अंग्रेजी है, विदेशी माल जहाज से बाहर के घाट-बंदरगाह तक आ सकता है, किन्तु अुसी जहाज से अुसे देश के बाजार में ले जाकर व्यापार करने की दुराशा मिथ्या है। यदि अिस विदेशी जहाज को कायम के लिअे जकड कर रखना चाहें तो व्यापार भी बाहर में ही अटका पड़ा रहेगा।

अभी तक अिस असुविधा का सच्चा-सच्चा बोध हमें हुआ नहीं है। अिसका कारण यही है कि अभी तक हमने शहरों का ही देश मान रखा है। जब दाक्षिण्य अधिक हो जाता है तो हम यहां तक केवल कह देते हैं कि *प्रारम्भिक शिक्षा तो मातृभाषा में दे सकते हैं*, किन्तु यदि मातृभाषा अुच्च शिक्षा की ओर हाथ बढ़ायगी तो वह अुपहास का विषय हो जायेगा। हमारी यह भीरुता क्या चिरकाल रह जायगी, हम भरोसे के साथ क्या किसी दिन यह नहीं कह सकेंगे कि अुच्च शिक्षा को हमारे देश की भाषा में देश की ही वस्तु बना लेना होगा? पश्चिम से जो कुछ सीखना था, जापान ने देखते देखते ही अपने देश में फैला दिया। अुसका प्रधान कारण यही है कि वे शिक्षा को देशी भाषा के आधार पर खड़ा कर पाये हैं।

जापानी भाषा की धारण करने की शक्ति हमारी भाषा से अधिक नहीं है। हमारी भाषा में नयी सृष्टि करने की शक्ति असीम है। अुसके अतिरिक्त यह भी है कि योरोप की बुद्धि वृत्ति का आकार प्रकार जितना हमारे देश से मेल खाता है, *जापान से अुतना भी नहीं* खाता। किन्तु बात यह है कि अुद्योगी पुरुषसिंह केवल लक्ष्मी को नहीं सरस्वती को भी प्राप्त करता है। *जापान ने पुकार कर कहा था कि यूरोप की विद्या को* वह अपने वाणी मंदिर में प्रतिष्ठित करेगा। जैसी वाणी का अुच्चारण वैसा ही कर्म और वैसा ही अुसका फल लाभ। हम अभी तक भरोसे के साथ यह नहीं कह पाये हैं कि मातृभाषा में ही हम अुच्च शिक्षा देंगे और वह दी भी जा सकती है और वैसा करने पर ही विद्या की फसल सारे देश में फैलेगी।

हमारा आत्मविश्वास अितना कम है कि स्कूल-कॉलेज के बाहर भी जिस लोकशिक्षा का आयोजन हम कर रहे हैं अुसमें भी मातृभाषा को प्रवेश निषेध है। देश के लोगों के चन्दे के आधार पर विज्ञानशिक्षा के विस्तार के लिअे अेक विज्ञान सभा खड़ी हुअी है। प्राच्यदेश के किसी किसी राजा की तरह वह गौरवनाश के भय के कारण प्रगट ही होना नहीं चाहती। बल्कि अचल रहेगी तो भी देशी भाषा नहीं व्यवहार करेगी। अैसा लगता है जैसे कि वह देशी लोगों के चन्दे से अुनकी अक्षमता और अुदासीनता का स्मृति स्तम्भ बनकर खड़ी है। अुसे भुलाया नहीं जा सकता है और अुसे याद रखना भी कठिन है। अुसका दावा है (विज्ञान सभा का) कि मातृभाषा में विज्ञान-शिक्षा असम्भव है। वह तो अक्षम की कायरता का दावा है। काम जरूर कठिन है और अिसीलिअे तो कठिन संकल्प चाहिये। मातृभाषा बोलते हैं अिसीलिअे क्या अुन्हें दंड देना है? अनजाने में जो "अपराध" हुआ है, अुसके कारण क्या चिरकाल अज्ञानी ही बने रहेंगे? सारी जनता के बारे में जो निर्णय कुछ पढ़ लिखे

लोगो ने लिया है, क्या वह हमेशा ही टिका रहेगा ? जो बेचारे मातृभाषा बोलते हैं, वे क्या आधुनिक मनुसंहिता के लिअे शूद्र ही बने रहेंगे ? अुनके कानो को क्या अुच्चशिक्षा का मंत्र नही सुनाअी देगा ? मातृभाषा से अंग्रेजी मे जन्मग्रहण करने पर ही क्या हम द्विज होंगे ?

यह कहना जरूरी है कि अंग्रेजी हमे चाहिये ही-केवल जीविका के लिअे नही। केवल अंग्रेजी क्यो ? फ्रान्सीसी, जर्मन सीखना तो और भी अच्छा। अिसके साथ यह भी कहना जरूरी है कि अधिकांश भारतीय अंग्रेजी नही सीखेंगे। करोडो भारतीयो के लिअे विद्या का अनशन या अधूरी व्यवस्था रहे, यह हम किस मुह से बोल सकते हैं . .

"शिक्षा मे मातृभाषा ही मा का दूध है। ससार में यह सर्वजन-स्वीकृत बिलकुल सहज बात मैंने बहुत दिन पहले भी अेक बार कही थी। और आज भी अुसको दुहराअूगा। अुस दिन अंग्रेजी शिक्षा के मंत्रमुग्ध कर्ण-कुहरों मे जो अश्राव्य मालूम हुआ था, आज भी अगर वह लक्ष्य भ्रष्ट हो, तो आशा करता हू कि अिस तरह का दुहरानेवाला आदमी आपको बार-बार मिला करेगा।

मैं अपनी प्यासी मातृभाषा की तरफ से, अपने ही देश के विश्वविद्यालय के द्वार पर खडा, चातक की तरह अुत्कठित वेदना के साथ प्रार्थना करता हू- तुम्हारे अभ्रभेदी शिखर को घेरे हुअे जो पुंज-के-पुंज श्यामल मेघ घूम फिर रहे हैं, अुनका प्रसाद आज फल और अनाज पर बरस ने दो, पुष्प और पल्लवो से पृथ्वी सुंदर हो अुठे, मातृभाषा का अपमान दूर हो, युग-शिक्षा को अुमडती हुअी धारा हमारे चित्त की सूखी नदी के रीते मार्ग से बाढ की तरह बह निकले, दोनो तट पूर्ण चेतना से जाग अुठें, घाट-घाट पर मुखरित हो अुठे आनंदध्वनि।"

भाषा का सवाल

गांधीजी

मातृभाषा-शिक्षा के माध्यम के रूप में देशी भाषाओं का सवाल राष्ट्रीय महत्व का है। देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा जारी रखने की हिमायत करनेवालो में बहुत से लोग यह कहते सुने जाते हैं कि अंग्रेजी शिक्षा पानेवाले भारतीय ही जनता के और राष्ट्रीय काम के रक्षक हैं। अैसा न हो तो वह भयकर स्थिति मानी जायेगी। अिस देश में जो भी शिक्षा दी जाती है वह अंग्रेजी भाषा के द्वारा दी जाती है। सच्ची हालत यह है कि हम अपनी शिक्षा पर जितना समय खर्च करते हैं, अुसके हिसाब से नतीजा कुछ भी नहीं मिलता। हम आम लोगो पर कोअी असर नही डाल सके।

मध्य और पूर्वी यूरोप के यहूदी दुनिया के बहुत से हिस्सो में फैल गये हैं। अुन्होंने आपस के व्यवहार के लिअे अेक समान भाषा की जरूरत जानकर यीडिश को वह दर्जा दिया है। अुन्होंने दुनिया के साहित्य में मिलनेवाली अच्छी-से-अच्छी किताबो का यीडिश में अनुवाद करने में सफलता पायी है। वे बहुतेरी दूसरी भाषायें अच्छी तरह जानते हैं, फिर भी अुनकी आत्मा को पराअी भाषा में शिक्षा मिलने से शान्ति नहीं मिली। अिसी तरह अुनके छोटे से शिक्षित वर्गने यह नही चाहा कि अपनी हैसियत समझ सकने के पहले यहूदी जनता को विदेशी भाषा सीखने की तकलीफ अुठानी चाहिये। अिस तरह जो किसी समय अेक टूटी-फूटी बोली समझी जाती थी, परन्तु जिसे यहूदी बच्चे अपनी मा से सीखते थे, अुसीको अुन्होने अपने विशेष प्रयत्न से दुनिया के अच्छे-से-अच्छे विचारो का अनुवाद करके कीमती बना लिया है। सचमुच यह अेक अद्भुत काम है। यह काम आजकी पीढीने ही किया है। अुस भाषा का वेब्स्टर के कोष में यह लक्षण दिया गया है कि वह तरह-तरह की भाषाओं से बनी हुअी अेक टूटी-फूटी बोली है और अलग-अलग राज्यो मे बसनेवाले यहूदी आपस के व्यवहार में अुसका अुपयोग करते हैं। यदि अब मध्य और पूर्वी यूरोप के यहूदियों की भाषा का अिस तरह वर्णन किया जाय तो अुन्हें बुरा लग जाय। यदि ये यहूदी विद्वान अेक पीढी में ही अपनी जनता को अेक भाषा दे सके हैं—जिसके लिअे अुन्हे गर्व है—तो हमारी देशी भाषाओं में, जो परिष्कृत भाषायें हैं, दोष दूर करने का काम तो हमारे लिअे अवश्य आसान होना चाहिये।

दक्षिण अफ्रीका हमें यही पाठ पढ़ाता है। वहाँ डच भाषा की अपभ्रंश टाल और अंग्रेजी के बीच होड़ होती थी। वीर माताओं और वीर पिताओं ने निश्चय किया था कि हम अपने बच्चों पर, जिनके साथ हम बचपन में टाल भाषा में बातचीत करते हैं, अंग्रेजी भाषा में शिक्षा लेने का बोझ नहीं डालने देंगे। वहाँ भी अंग्रेजी का पक्ष बड़ा जोरदार था, अुसके हिमायती शक्तिवाले थे। परन्तु वीर देशाभिमान के सामने अंग्रजी भाषा को झुकना पड़ा था। यह जानने लायक बात है कि अुन्होंने अूची डच भाषा को भी नामजूर कर दिया। स्कूलों के शिक्षकों को भी, जिन्हें युरोप की सुघरी हुअी डच भाषा बोलने की आदत पड़ी हुअी है, ज्यादा आसान टाल भाषा में बोलने को मजबूर होना पड़ा है। और दक्षिण अफ्रीका में टाल भाषा में जो कुछ ही वर्षों पहले सादे परन्तु बहादुर देहातियों के बीच बात करने का समान साधन था आजकल अुत्तम प्रकार का साहित्य अुन्नति कर रहा है। यदि हमारा विश्वास हमारी भाषाओं पर से अुठ गया हो, तो वह अिस बात की निशानी है कि हमारा अपने आप पर विश्वास नहीं रहा। यह हमारी गिरी हुअी हालत की साफ निशानी है। और जो भाषायें हमारी मातायें बोलती हैं, अुनके लिअे हमें जरा भी मान न हो, तो किसी भी तरह की स्वराज्य की योजना, भले ही वह कितनी ही परोपकारी वृत्ति या अुदारता से हमें दी जाय, हमें कभी स्वराज्य भोगनेवाली प्रजा नहीं बना सकेगी।

राष्ट्रभाषा-

अलग अलग प्रदेशों के लोग किस तरह अपना सम्बन्ध कायम कर सकते हैं या अनकी बातें सुन और समझ सकते हैं? हमारे कुछ लोग मानते थे, और शायद अब भी मानते होंगे कि अंग्रेजी अैसे माध्यम का काम दे सकती है। अगर यह सवाल हमारे कुछ हजार पढ़े लिखे लोगों का ही सवाल होता, तो जरूर अैसा हो सकता था। लेकिन मुझे विश्वास है कि अिससे हम में से किसी को सन्तोष न होगा। हम और आप चाहते हैं कि करोड़ों लोग अन्तर प्रान्तीय सम्बन्ध स्थापित करें। अैसा सम्बन्ध कभी अंग्रेजी द्वारा स्थापित हो भी सके, तो भी स्पष्ट है कि अभी कभी पीढ़ियों तक यह मुमकिन नहीं। कोअी वजह नहीं कि वे सब अंग्रेजी ही सीखें। और, अंग्रेजी जीविका का अचूक और निश्चित साधन तो हरगिज नहीं। अगर अुसकी अैसी कोअी कीमत कभी रही भी होगी, तो जैसे-जैसे अधिक संख्या में लोग अुसे सीखने, लगेंगे, वैसे-वैसे अुसकी वह कीमत कम होगी। फिर अंग्रेजी सीखना जितना कठिन है, हिन्दी-हिन्दुस्तानी सीखना अुतना कठिन है ही नहीं। अंग्रेजी सीखने में जितना समय लगेगा, अुतना हिन्दी हिन्दुस्तानी सीखने में कभी नहीं लग सकता। हिन्दी-हिन्दुस्तानी बोलने और समझनेवाले हिन्दू-मुसलमानों की संख्या २० करोड़ से ज्यादा है।

मेरा यह विश्वास है कि रोज कुछ घंटे लगन के साथ मेहनत करने से अेक महीने में हिन्दी सीखी जा सकती है। क्या हिन्दी सीखने के लिअे आप अेक महीने तक रोज के चार घंटे भी नहीं दे सकते? अपने २० करोड़ देशबन्धुओं के साथ संबंध स्थापित करने के लिअे क्या अितना समय देना आपको ज्यादा मालूम होता है? अब मान लीजिये कि आपमें जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते, वे अुसे सीखने का निश्चय करते हैं। क्या आप मानते हैं कि रोज चार घंटों की मेहनत से आप अेक माह में अंग्रेजी सीख सकेंगे? कभी नहीं।

भाषा का सवाल

विनोबा

१ जब से अंग्रेजों का राज्य हिन्दुस्तान में हुआ, हिन्दुस्तानियों के दो भाग हो गये। कुछ लोग शिक्षित हुअे और कुछ लोग बिना किसी तालीम के रह गये। ९० प्रतिशत से ज्यादा लोग बिना तालीम के रह गये, और कुछ लोग अूची अंग्रेजी तालीमवाले बन गये। तालीम का अभाव और अंग्रेजी तालीम-अैसे दो बड़े विभाग हिन्दुस्तान में हो गये। अब भाषानुसार प्रांत-रचना हुअी है। अब हम आशा करते हैं कि मातृ-भाषाओं का अधिक अध्ययन होगा। अिसलिअे अुस मातृभाषा के आधार पर यह जो दो विभाग हो गये हैं वे अेक किये जा सकते हैं। सौ साल से ज्यादा अंग्रेजों का राज्य यहाँ चला। लेकिन हिन्दुस्तान में

विज्ञान अधिक नहीं फैला। अुसका कारण यही था कि सारा विज्ञान अंग्रेजी किताबों में बंद था। विज्ञान तो सृष्टि के साथ संबंध रखता है। खेती में विज्ञान हो सकता है, रसोअी में विज्ञान हो सकता है, सफाअी में विज्ञान हो सकता है, जिस तरह जीवन के हर हिस्से में विज्ञान की जरूरत है।—चूंकि अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था, अिसलिअे करोड़ों लोगों को विज्ञान का ज्ञान नहीं हो सका। विज्ञान के लिअे अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। और अब सौ साल के बाद चिल्ला रहे हैं कि विज्ञान की पुस्तकें मातृभाषा में कम हैं। यह अपराध किसका? क्या अुन मातृभाषाओं का अपराध है? या योजना करनेवालों का अपराध है? लेकिन आज भी कहा जा रहा है कि बिना अंग्रेजी के विज्ञान कैसे सीख सकते हैं? सवाल ठीक है। अगर विज्ञान सीखना है तो आज की हालत में अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन के जरिये वह हिन्दुस्तान में फैलेगा नहीं। अिसके आगे विज्ञान का संबंध अगर मातृभाषा से नहीं होगा तो विज्ञान सीखनेवालों के दिमाग में ही विज्ञान खतम हो जायेगा। बड़ी भारी गलती हम कर रहे हैं। हम नहीं सोच रहे हैं कि विज्ञान जैसी महत्व की चीज मातृभाषा में न हुआ तो वह कैसे फैलेगी?

× × ×

बिलकुल छोटी अुमर से, बचपन से, अंग्रेजी सिखायेंगे तो बच्चे बचपन से ही अच्छी अंग्रेजी बोल सकेंगे, यह विचार गलत है। जहां समाज की आबोहवा अंग्रेजी की है, वहां बचपन से ही अंग्रेजी सिखायी जा सकती है। लेकिन जबतक व्याकरण के जरिये भाषा सिखाने का क्रम है, तब तक मातृभाषा के व्याकरण और साहित्य की अच्छी जानकारी हुअे बिना दूसरी भाषाओं का ज्ञान नहीं हो सकता। मातृभाषा का व्याकरण और साहित्य न जाननेवाला, दूसरी भाषाओं का व्याकरण और साहित्य कैसे सीखेगा? अिसलिअे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण देना शतप्रतिशत मूर्खता है।

× × ×

बहुतों का यह भी ख्याल है कि अन्य देशों के साथ राजनैतिक ताल्लुक रखना है तो अंग्रेजी आनी चाहिये। हम अिसे भी अेक भ्रम समझते हैं। परदेश के साथ राजनैतिक ताल्लुक रखना है तो अपने देश को मजबूत बनाये बगैर हम कुछ नहीं कर सकते।

अगर सारे राष्ट्र पर विदेशी भाषा लादी जाती है, तो बुद्धि अत्यन्त क्षीण हो जाती है। अिंग्लैंड के सात-आठ साल के लड़के "विकार आफ वेक फिल्ड" आदि जिन पुस्तकों को पढ़ते हैं, अुन्हें हम सोलहवें वर्ष में पढ़ते हैं, जब कि अुस समय हमें अुपनिषद जैसे ग्रन्थ पढ़ने चाहिये। अिसलिअे राष्ट्र पर अंग्रेजी लादना गलत है।

शिक्षा-शास्त्री सूक्ष्म विचार करें तो अुन्हें स्वयं ध्यान में आ जायगा कि आरंभ से अंत तक मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम रहना चाहिये। सिर्फ कॉलेज में यह सुविधा हो कि दूसरी यूनिवर्सिटी का प्रोफेसर वहां की मातृभाषा में न बोलकर हिन्दी में बोले तो विद्यार्थी अुसे समझ पायें। मेरा तो यह मत है कि जिस तरह मानव दो आंखों से देखता है, अुसी तरह हर भारतीय को मातृभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों आनी चाहिये।

विदेशी भाषा सीखने की दो पद्धतियां हैं—अेक तो बचपन से वह सिखलायी जाय और अुसके लिअे अुस भाषा का वातावरण निर्माण किया जाय। याने वातावरण के बीच बोलते चलते बच्चों को वह भाषा आ जायगी। दूसरी पद्धति यह कि भाषा व्याकरण युक्त सिखलायी जाय। अुसके लिअे पहले मातृभाषा अच्छी तरह आनी चाहिये। आज हमारी भाषा में अेक संकर प्रयोग है, जिसमें क्रियापद पर कर्ता का और कर्म का भी प्रभाव पड़ता है। क्या यह कोअी जानता है? "तू पुस्तक वाचलेस का?" (क्या तुमने पुस्तक पढ़ी?) जिसमें संकर प्रयोग है। पहले कर्तरी और कर्मणि का संकर हो गया है। अिसलिअे अपनी मातृभाषा का सांगोपांग अध्ययन होने के बाद ही जब हम विदेशी भाषा सीखेंगे तब वह शीघ्र आवेगी। पहले जैसे अंग्रेजी का वातावरण था वैसा अब कैसे निर्माण हो सकेगा? हम लोगों के जमाने में स्कूल में सिवा अंग्रेजी की दूसरी भाषा बोलने की सुविधा ही न थी। अगर हम अंग्रेजी चाहते हों तो हमें "भारत छोड़ो" प्रस्ताव वापस लेकर अंग्रेजों को पुनः

(शेषांश पृष्ठ २८३ पर)

अमेरिका में कहीं अेक विशेषज्ञ का शिक्षा पर व्याख्यान हुआ। श्रोताओं में से अेक मां अुनकी बातों से बहुत प्रभावित हुआीं। अुन्होंने व्याख्यान के बाद अुन शिक्षा शास्त्री के पास जाकर पूछा, "बताअिये, मुझे अपने बच्चे की शिक्षा कब शुरू करनी चाहिये?" शिक्षा शास्त्री ने अुनसे पूछा, "आपके बच्चे का जन्म कब होनेवाला है?" स्त्रीने अत्यन्त आश्चर्य के साथ कहा, "जन्म होनेवाला? वह तो अभी पांच साल का है।" तब शिक्षा शास्त्री कहते हैं, "अरे, रे, बहनजी, तब तो आपने सब से मूल्यवान् पांच साल यों ही खो दिये। आपके लड़के की शिक्षा पांच साल पहले ही शुरू होनी चाहिये थी। अब जल्दी घर जाअिये और अुसकी शिक्षा फौरन शुरू कर दीजिये।"

असल में शुरू के दो साल में बच्चा जितना बढ़ता है, अुसकी शक्तियां जितनी विकसित होती हैं, वह जितना सीखता है, अुतना बाद के किसी काल में नहीं सीखता है। दुनिया के प्रति अुसकी भावना और मनोवैज्ञानिक वृत्तियों की बुनियाद भी अिसी समय डाली जाती है। और यह अेकदम जन्म से ही शुरू होती है।

दुनिया के प्रति बालक की वृत्ति.– नवजात शिशु की शारीरिक आवश्यकताओं की यथासमय और अुचित पूर्ति का अुसकी मनोवृत्ति पर गहरा असर पड़ता है। वास्तव में पहले के कुछ हफ्तों में वह वही अेक "भाषा" समझ सकता है। अपनी कोअी तकलीफ या जरूरत दुनिया के सामने प्रकट करने के लिअे अुसके पास अेक मात्र साधन होता है रोना, और बाह्य जगत से वह जो ग्रहण करता है वह अुसकी भूख की तृप्ति, गर्मी और सुरक्षाबोध–या अिनका अुल्टा जो होता है अुसके रूप में ही। जहां बच्चे के ये पहले के अनुभव अनुकूल और आरामदेह होते हैं वहां दुनिया के प्रति अुसकी भावना या मनोवैज्ञानिक वृत्ति की बुनियाद प्रीतिपूर्ण और संतोषजनक होती है। अिसके अलावा समुचित देखभाल से बच्चा कअी अैसी बीमारियों से बच सकता है जिनका असर अुसकी मानसिक वृत्ति पर पड़े बिना नहीं रह सकता। शुरू से ही स्वस्थ और निर्बाध विकास पाने से अिस दुनिया में अुसकी जिन्दगी का प्रारंभ ज्यादा अच्छा और आशापूर्ण होता है।

अिसमें पहली बात बच्चे के प्रति मां बाप की वृत्ति है। अुसके जन्म का आनंदपूर्वक स्वागत होता है, या वह अेक बड़े परिवार में और अेक बोझ होगा, अैसी भावना है। अगर वह बोझ माना जाता है तो अुसका असर जाने अनजाने अुसके प्रति व्यवहार में होता ही है और यह अुसके मानसिक स्वास्थ्य के लिअे अत्यन्त हानिकारक है।

अिन्द्रिय विकास:– जन्म के समय बच्चे की चेता सहति पूर्ण विकास पाया हुआ नहीं होता है। अुसकी अिन्द्रियां विषय ग्रहण में पूर्णतया समर्थ नहीं होती हैं।

आंखें :– अुसकी आंखें तेज रोशनी को देख सकती हैं, कअी दफे बच्चा रोशनी की तरफ आंखें कर के अेकटक देखता हुआ जैसा नजर आयगा। लेकिन वे आंखें वस्तुओं को नहीं देखतीं, नहीं पहचानतीं। अुसका कारण यह है कि अुसकी आंखों के पीछे के पर्दे पर वस्तुओं का चित्र अभी ठीक नहीं पड़ता और

नही अुसके ज्ञानतंतु जिस आकार को दिमाग के पास पहुचाने के समर्थ होते हैं। चार-पाच हफ्ते में वह कुछ देखना शुरू करता है। नजदीक के लोगो के मुह की तरफ भी देखता है, कभी अुसके मुह पर प्रीति का, हसने का जैसा भाव आता है। दो माह में वह आखो को चलते-फिरते लोगो के साथ घुमाना शुरू करने लगता है। कोअी चमकीली वस्तु सामने हो तो अुसकी दृष्टि अुस पर भी जम जाती है।

कान: अुसकी श्रवणेन्द्रिय भी विभिन्न ध्वनियो का ग्रहण नही करती है। लेकिन कुछ गिरने के जैसे या दरवाजा जोर से फटकने जैसी आवाज से वह चौंक जाता है। गर्भ में जिस जल में बच्चा तैरता रहता है अुससे अुसके कान भरे रहते हैं। बाहर आने पर कान के बाहरी हिस्से का पानी अिधर-अुधर हिलने डुलने में निकल जाता है, लेकिन कान के बीच के हिस्से—याने पर्दे के सामने के हिस्से का पानी सूखने में लगभग अेक हफ्ता लगता है। सूक्ष्म ध्वनियो को वहा तक और कब से वह पहचानने लगता है, यह ठीक-ठीक मालूम नही हुआ है। सभव है, अलग अलग बच्चो में विभिन्न अवस्थाओ में यह शक्ति आती है।

स्वाद - नमकीन, मीठा या कटु रसों से कुछ हफ्तो तक बच्चे की प्रीति या अप्रीति होती हुअी नही मालूम देती है। लेकिन धीरे-धीरे वह दूध और मीठी चीजें पसन्द करने और दूसरी चीजो के प्रति अरुचि दिखाने लगता है।

नाक: चीजों की गंध पहचानने की शक्ति बच्चे में कब से होती है, जिसका ठीक-ठीक पता नही चला है।

स्पर्श: स्पर्श में वह आराम देनेवाले या तकलीफ देनेवाले को जानता है। गरम ठण्डे का भी अुसकी त्वचा पर असर पडता है।

जन्म के बाद कुछ दिन तक शरीर का तापमान कायम रखने की शक्ति बच्चे को नहीं होती। जब तक गर्भ में है तो मां के शरीर का तापमान ही बच्चे का भी तापमान होता है। लेकिन ज्यों ही बाह्य जगत् में प्रवेश करता है तो अिसमें गडबडी होती है। बाहर अगर ठण्डा है तो बच्चे का शरीर भी ठण्डा हो जाता है, अुसके रक्त का तापमान गिरता है। तब अुसे गरम कपडे अुढा कर और गरम पानी के थैले अित्यादि से बिस्तरा गरम करके लिटाना पडता है। अिसके अुल्टा, बहुत गरमी भी बच्चा बरदास्त नही कर सकता है। हमारे देश में गरमी के दिनो में जन्मे बच्चों को अक्सर बुखार हो जाता है। कभी-कभी तो यह १०४, १०५ डिग्री तक चला जाता है। जचकी के अस्पतालों में यह अेक विशेष समस्या रहती है कि अुस समय बच्चे को अिस बढते हुअे तापमान से कैसे बचाना। तब अुसके पालने पर पानी से गीला किया हुआ कपडा डालना या किसी तरह आसपास के वातावरण का तापमान कम करना पडता है। ज्यों ही बाहर का तापमान कम होता है, बच्चे का बुखार भी अुतर जाता है।

श्वसन संस्था: गर्भस्थ शिशु को आवश्यक प्राणवायु और पोषक तत्व मा के खून से ही मिलते हैं। दुष्टवायु और अन्य त्याज्य वस्तुओं का निकास भी अिसी जरिये होता है। पेट में बच्चे के फेफडे बद रहते हैं, श्वासोच्छ्वास की क्रिया नही होती है। बाहर आते ही हवा के स्पर्श के कारण या नाक में हवा के प्रवेश पाने पर अुसके फेफडे खुल जाते हैं। अुनमें हवा

जाती है और बाहर निकल आती है। याने श्वासोछ्वास की क्रिया चालू होती है। यह पहले तेज और अनियमित होती है। अुसकी गति प्रति मिनिट पेंतीस से पेंतालीस तक होती है, जहा अेक बडे का श्वासोछ्वास प्रति मिनट सोलह या अठारह है। रोते समय या बच्चा जब कोअी तकलीफ महसूस कर रहा हो तो यह और भी तेज होती है और गहरी नीद में कुछ धीमी। अिसी तरह अुसके हृदय की गति भी बडो से बहुत तेज और बहुत बदलनेवाली होती है। लेकिन पहले के दो तीन हफ्तो में ही यह काफी नियमित और ठीक हो जाती है।

पाचन संस्था : बच्चे की पाचन संस्था भी बाहर आने के बाद ही काम करना शुरू करती है। भूख लगने पर अुसके आमाशय की पेशियाँ सिकुडती हे–जैसे बडो की सिकुडती हे। यह अेक तकलीफ देनेवाला अनुभव है, तब बच्चा रोता है। कुछ बच्चे शुरू से ही दूध चूसना और पीना जानते है, कुछ को यह सीखने के लिअे दो तीन दिन लगते है। शुरू से ही बच्चे को दूध पिलाने में दो तीन घटे का नियमित अतर रखना अच्छा होता है लेकिन किसी कारण अैसा लगता है कि अुसको सचमुच भूख लगी है या पिछली बार अुसने पूरा दूध पिया नही, तो अिस नियम के पालन का अत्यधिक आग्रह भी नही रखना चाहिये। लेकिन जैसे हमारे देश में आम तौर पर होता है कि बच्चे को दूध पिलाने में कोअी नियम ही नही, जभी रोया तो दूध पिलाया, यह कतअी ठीक नही। जैसे बच्चा बडा होता जाता है अुसके भोजन के बीच का अतर भी बढाया जा सकता है। रात को अुसे कम से कम पाच, छ: घटे लगातार सोने की आदत डालना अत्यन्त आवश्यक है–अिस ओर भी हमारे देश के आम परिवारों में कम ध्यान दिया जाता है। बच्चे को बार-बार दूध पिलाते रहते हैं। बच्चे के अपने स्वास्थ्य के लिअे यह जरूरी है कि अुसकी पचनेन्द्रियो को कुछ समय आराम मिले। और अिससे अुसकी मां को भी कुछ आराम मिल जायगा जो अुसकी अपनी, बच्चे की तथा सारे परिवार की भी भलाई के लिअे लाभदायक होगा। यह समझना भी गलत है कि बच्चा हर समय भूख के कारण ही रोता है। अुसे तो प्यास भी लगती हैं। बच्चे को बीच-बीच में पानी भी देना आवश्यक है।

पहले के छ. महीनो में बच्चे के लिअे अुत्तम आहार अुसकी मा का दूध ही है। अुसमें अुसके लिअे आवश्यक सब पौष्टिक तत्व मौजूद है। दूध में लोहे का प्रमाण अत्यल्प या नही के बराबर होता है। लेकिन प्रकृति की व्यवस्था अितनी समग्र सुदर है कि बच्चा जब मा के पेट में है तभी अुसके छ: महीनो के लिअे आवश्यक लोहा अुसकी यकृत् में सचित होता है। अिसलिअे अुसे लोहे की कोअी कमी नहीं पडेगी। आजकल पाश्चात्य देशो में अेक आध महीने के बाद ही बच्चे को थोडा फल का रस देना शुरू करते है, अिसलिअे कि अुससे आवश्यक जीवनतत्व मिल जाय। यह अच्छा जरूर होगा, लेकिन हमारे देश में अैसे फल सब मौसम में मिलना मुश्किल है, जो साधारण मध्यम वर्ग के परिवारो को भी आर्थिक शक्यता के अदर समव हो। चार-पाच महीने के बाद अलबत्ता बच्चे को थोडी-थोडी भाजी अुबालकर अुसका पानी देना अच्छा होगा।

जहा मा का दूध किसी कारण से अुपलब्ध नही है, या कम पडता है, वहां छोटे बच्चे के

आहार की समस्या बन जाती है। अैसी परिस्थिति में गाय या बकरी का दूध आधा पानी मिलाकर अुबालकर देना सबसे अच्छा होगा। कअी बने बनाये दूध के पाउडर भी मिलते हैं। अिनमें कुछ तो बहुत शास्त्रीय ढग से और अत्यन्त सावधानी से बनाये और बद डब्बो में सुरक्षित रखे होते हैं। और यह प्रयत्न किया हुआ होता है कि वह पोषण तत्वों के प्रमाण में मा के दूध से यथासभव बराबर हो। अिनमें से कौन-सा देना या गाय, बकरी का दूध देना—अिसका निर्णय स्थानीय अुपलभ्यता और हर परिवार की अपनी आर्थिक क्षमता पर ही हो सकता है।

बच्चे को प्रकृति से ही चूसने की प्रवृत्ति होती है। यह अुसे अेक सतृप्ति का बोध भी देता है, जो चम्मच से पिलाने से नही होता। मा और बच्चे के अत्यन्त निकट सबध का यह सबसे महत्वपूर्ण अग है लेकिन जहा मा का दूध पीने के सतृप्तिजनक अनुभव से बच्चा वचित रह जाता है, वहा बोतल से दूध पिलाना ही अुसके लिअे अधिक सतोषप्रद होगा। लेकिन अिसमें बोतल और अुसकी चूसनी की सफाई का पूरा ध्यान रखना बिलकुल जरूरी है। अुसे हर भोजन के पहले—नही तो दिन में कम-से-कम अेक दफे पानी में अुबाल कर साफ करना चाहिये। नवजात शिशु के पेट में रोग के कीटाणु बहुत जल्दी असर कर देते हैं क्योंकि अुसकी प्रतिरोधक शक्ति कम रहती है। अिसी लिअे आम तौर पर बच्चों में पेट की बीमारिया अितना ज्यादा होती है और यह शिशुमरण के कारणों में अेक मुख्य कारण है। अन्य देशों में, जहा अिसका ज्ञान और बोध साधारण माताओ तक पहुच गया है, अब बहुत कम बच्चे अिस कारण से मृत्यु के शिकार बनते हैं। मां का दूध अिस खतरे से सुरक्षित है। लेकिन जहां भी दूसरी कोअी चीज बच्चे के मुह में देते हैं, चाहे दूध, पानी या कोअी दवाअी हो, अुसकी और पिलाने के अुपकरणों की अत्यन्त शुचिता पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये।

अिसी प्रसग में अेक और बात यह देना आवश्यक होगा। कअी लोग बच्चे को चुप रखने के लिअे रबर की बनायी चूसनिया अुनके मुह में रख देते हैं। बच्चा अुसको चूसते-चूसते चुप रहता है, लेकिन यह अेक बहुत गदी आदत है जिससे छुड़ाना बाद में बहुत मुश्किल होता है। अिससे बहुत गदगी भी बच्चे के पेट में चली जाती है। दूसरा, प्रकृति ने बच्चे को आहार ग्रहण करने के लिअे चूसने की प्रवृत्ति रखी है, यह यो ही चूसते रहे, यह कोअी वांछनीय बात नहीं है। अुससे अुसके ओठो और मुह की पेशियो पर अनावश्यक जोर पड़ता है। बच्चे का पाखाना और पेशाब जाना बहुत नियमित नही होता है। अुसका शुरू के महीनों में अिन क्रियाओ पर कोअी नियत्रण नही होता। जन्म के पहले ही अुसकी आतडियो में कुछ मैला जमा रहता है, यह दो-तीन दिनो के अदर ही निकल जाता है। जन्म के समय अुसके पाचकावयव अपने काम के लिअे तैयार रहते हैं। आमाशय और आतडियो की दीवारों से पाचक रस निकलते और दूध को पचाते हैं, लेकिन पिष्टमय पदार्थ को पचानेवाले रस अभी तैयार नही हुअे होते हैं। बच्चे के पाखाने में दूध के बिना पचे हिस्से के टुकड़े रहना असाधारण नही है। जब तक शरीर दूध को पचाकर पोषण लेने का आदी नही होता है, अुसका वजन थोड़ा घटता है। यह अुसके शरीर में

पानी की मात्रा कम होने के कारण भी हो सकता है। सातवें और दसवें दिन के अंदर आम तौर पर अुसका वजन शुरू में जो था वही होता है और फिर बढने लगता है। तीसरे चौथे महीने में यह जन्म के समय से दुगुना और सालभर में तिगुना होता है।

बच्चा अक्सर दूध पीने के बाद अुसका अेक हिस्सा निकाल देता है। कभी-कभी तो यह अिसलिअे होता है कि अुसने कुछ ज्यादा पी लिया। हमारी अेक दीदी कहा करती थी कि बच्चा तो बोतल जैसा होता है, अिधर-अुधर कुछ हिला डुला तो अुसके अंदर का दूध गिर जाता है। अिसलिअे दूध पिलाने के बाद कुछ समय तक बच्चे को आराम से लिटा देना या सुला देना चाहिये। अुस समय अुससे खेल करना या अुसे अुत्तेजित करना भी ठीक नही है।

मल-विसर्जन . जैसे कि पहले कहा जा चुका है, बच्चे का पेशाब और पाखाना बहुत नियमित नही होता है। शुरू के हफ्तो में—जब तक अुसका क्रम जम नही पाता है—अिसके बारे में नियम का आग्रह रखना अनावश्यक है। अेक-दो महीने के बाद सुबह काअी निश्चित समय वह पाखाना करे, अिसकी आदत डालने का प्रयत्न कर सकते हैं। जब बच्चा पकडकर बैठने लायक होता है, अुसे अेक छोटे "कमोड" पर और जहा यह संभव न हो मा अपने पावो पर पकडकर किसी तामचीनी के बरतन के अूपर बिठाने से वह साधारण तौर पर यह क्रिया कर लेता है। अुसके लिअे अेक निश्चित स्थान और बैठने के ढंग की आदत डालने से वह अिधर अुधर गदगी फैलाने से बच सकता है।

नींद : शुरू में बच्चा अधिक समय सोता रहता है। करीब अेक महीने के बाद वह दिन में कभी-कभी खेलते रहने—हाथ पाव हिलाते और कुछ आवाज करते हुअे—लगता है। जहा भी संभव हो बच्चे का अेक छोटा अलग बिस्तरा रखना वाछनीय है। और यह अेक तख्त पर होना चाहिये, अिसलिअे कि बच्चे की कमर—रीढ की हड्डी—सीधी रहे। जभी बच्चा सोता है, अुसे आराम से सोने देना चाहिये। अुस समय अुसे प्यार करना या खिलाने का प्रयत्न करना बहुत ही अनुचित है। बच्चे से जिनको सच्चा प्यार है वे अुसके आराम और स्वास्थ्य का ख्याल करेंगे, सोते हुअे बच्चे को अुठा कर तकलीफ देना कोअी प्यार का निदर्शन नही है।

बच्चे के बिस्तरे और कपडो की सफाअी का बहुत ख्याल रखना चाहिये। अुसकी खाल मुलायम होती है और पेशाब पाखाने में ज्यादा देर पडे रहने से अुसमें घाव हो सकते हैं। अुसका बिस्तरा ज्यादा देर तक गीला रहना नही चाहिये। बच्चे को मक्खियों और मच्छरो से बचाना भी नितात आवश्यक है। अुसके ओठो पर और आखो पर मक्खी बैठने से वह वहाँ रोग के कीटाणु छोड कर बीमारी पैदा कर सकती है। मच्छरों से अुसे मलेरिया हो सकता है। जहा भी संभव हो अुसके पालने को मच्छरदानी लगाकर बचाना ही अच्छा होता है।

सब प्राणियों में से मनुष्य का बच्चा सबसे असहाय होता है और अपेक्षाकृत ज्यादा समय तक वह दूसरो पर निर्भर रहता है। अुसे अपने पावों पर खडा होने और चलने फिरने में ही १० से लेकर १८ महीने तक लग जाते है। छ महीनो में तो वह सिर्फ पलटने और बैठने ही लायक होता है। कोअी कोअी बच्चा तो अुतना भी नही कर पाता।

लेकिन बच्चे के विकास की ये अवस्थायें और शैशव चेष्टायें असुके मां-बाप और दूसरे बन्धु-गणो के लिअे अितने आनंदप्रद होती हैं कि माता पितृत्व की अवस्था जिंदगी के सब से बडे सुखों में अेक मानी जाती है। बच्चे के मां-बाप पर यह पूरा-पूरा अवलंबन और मा-बापों के द्वारा असुकी देखभाल अनुके परस्पर स्नेहबंधन का अेक मुख्य आधार बनता है। मां नही हैं तो मा की जगह पर जो असुकी देखभाल करती है,- असुसे खिलाती, पिलाती, नहलाती, सुलाती है,- असुके प्रति बच्चे की वैसी ही भावना बनती है। अिस दुनिया में असुका आधार, आश्रय, सहारा और आराम, सब कुछ शुरू के सालों में वही होती हैं। हमारे पुराने साहित्य में अिस माता-पुत्र के स्नेहबंध का अुत्तम अुदाहरण यशोदा और कृष्ण की कहानी है। यशोदा और नंदगोप कृष्ण के असल मां-बाप न होने पर भी पितृ लालन की अिससे सुन्दर कहानी कौन-सी हो सकती है? प्रकृति की सब से अूंची भावनाओं में और जीवन के सब से ज्यादा सतृप्तिजनक अनुभवों में से यह अेक है और अितनी स्वाभाविक है कि असुको सोच समझकर करना नही पडता है।

मां के बाद स्वभाविक ही बच्चे का सब से ज्यादा घनिष्ठता अपने पिता से होती है; परिवार की अेकता के लिअे यह जरूरी भी है। अेक दम छोटे बच्चे के लिअे भी पिता के स्नेह का अनुभव मिलना चाहिये। अिसके लिअे आवश्यक है कि बच्चे की देखभाल में पिता सक्रिय रूप से मा का साथ दे; असुको अुठाना, कपडे बदलना, सुलाना, अित्यादि में भाग ले। क्यों कि अुस अवस्था में बच्चा अुन्हीं क्रियाओं के द्वारा किसी को पहचानता है, असुके अूपर विश्वास करने लगता है। अिससे मां को तो सहारा मिलेगा ही, पिता भी शिशु के आनंद के भागी बनेंगे, अुनका जीवन भावनाओं में ज्यादा समृद्ध और सुखी बनेगा। छ: महीने तक बच्चा अपने भाई-बहनों और परिवार के दूसरे लोगों को भी पहचानने लगता है। अपने से बडे बच्चों को खेलते देखकर वह खुश होता है, हँसने लगता है। बहुत बच्चे अनजाने लोगों के पास जाने से घबराते भी हैं।

अिस अवस्था में बच्चे को जो वात्सल्य और सुरक्षाबोध मिलता है असुके अूपर ही दुनियां के प्रति असुका प्रेमपूर्ण संबंध बनता है।

(पृष्ठ २७७ का शेषांश)

बुलाना पडेगा। तब जैसी चाहते हैं, वैसी अंग्रेजी सीखी जा सकेगी। लेकिन वैसा न करना हो, तो बच्चों को पहले मातृभाषा का अच्छा ज्ञान करा दें, असुके बाद अंग्रेजी पढायें तो साल भर मे अंग्रेजी आ जायगी। अुस साल अंग्रेजी के लिये अधिक समय भी दिया जा सकता है। अिस तरह अब अंग्रेजी बडी आयु मे और व्याकरणयुक्त ही सिखलानी पडेगी।

× × ×

अंग्रेजी का मोह छोडो। अंग्रेजी के माध्यम से पढाने से सारा देश निर्वीर्य बन जायेगा। ९-१० साल की अुम्र मे अंग्रेजी पढाने से बच्चे पुरुषार्थहीन हो जायेंगे। बल्कि जाति भी खतम हो जायेगी। आप जरा प्रयोग करके देखिये-अिंगलैंड के बच्चे को हिन्दी या तामिल के माध्यम से पढाकर। देखें कि वे कितने दुर्बल और निर्वीर्य बनते हैं। अंग्रेजी अिस देश मे टिकनेवाली नही है, मेरा यह वाक्य लिख रखिये। हम चाहते हैं कि कुछ अंग्रेजी पढें और खूब अच्छी तरह पढें लेकिन सिर्फ अंग्रेजी नही, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी, अरबी आदि सभी भाषायें पढी जायें। पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही हो।

नई तालीम का भावी कार्यक्रम

दैवी प्रसाद

देश मे नई तालीम की आज की परिस्थिति को देखते हुअे जो अेक न्यूनतम कार्यक्रम तुरत अपनाने की जरूरत महसूस होती है अुसके मुद्दे सर्वोदय परिवार में सामने रखना चाहता हू । आगामी सर्वोदय सम्मेलन के समय अिस पर विचार होगा, अैसी आशा है ।

पठानकोट की बैठक मे नई तालीम के भावी काम की जो सप्तविध योजना हम ने मान्य की थी अुनम से दो पर अविलब अमल होने की जरूरत है ·

१· हमारा अपना कार्य सवारना

२· राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाना

केवल नमूने के स्कूल, केंद्र आदि चलाने से ही काम नहीं होगा क्योकि अुल्टी धारायें अितनी प्रबल हैं कि हमारा "नमूना" अुसके सामने असरदार होने पर भी टिक नही सकता । राष्ट्रव्यापी आदोलन चले, तो भी कोअी नही सुनेगा, जब तक हमारे पास दिखाने लायक चीज नहीं होगी । अिसलिअे दोनो बाजू साथ-साथ सयोजित किये जायें ।

हमारा अपना काम

(१) पूर्व बुनियादी, बुनियादी, अुत्तर बुनियादी तक की शिक्षा के काम शिक्षा शास्त्र की दृष्टि से (फार्मल शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से भी) अच्छे से अच्छे हो। अब दकियानूसी विचार नही चलेंगे । आधुनिक विज्ञान हमे जो कुछ दे सकता है अुसे खोज खोज कर अपनाना चाहिये । अभी तक हमारी दृष्टि मे यह बात झलकती थी कि चूकि परिस्थिति अमरजेंसी की है, अिसलिअे जीवन के कुछ पहलुओ पर अधिक जोर देना पडेगा, जैसे भोजन पैदा करन के लिअे फूल अुखाड कर फेंक देना होगा, अुत्पादक श्रम करना है तो पढाअी-लिखाअी कम करनी पडेगी, अित्यादि । अब हमें शिक्षा की योजना अेमरजेंसी की दृष्टि के बदले नॉर्मल ढग से बनानी होगी-अुसमें मनुष्य की तरह तरह की भावनाओ, वृत्तियो और मागो का ख्याल रखना होगा । व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक प्रकार (साअिकालॉजिकल टाअिप) का ख्याल रखकर प्लान करना पडेगा। समाज के समग्र जीवन के बारे मे सोचना होगा ।

शिक्षण पद्धति का अुससे भी अधिक विकास करना होगा, जितना आज आधुनिकतम ढग से शिक्षा जगत में हो रहा है । अिस तरह के कम-से-कम चार केंद्रो को शीघ्रातिशीघ्र यह काम प्रारंभ करना चाहिये । अुनका अेक अनऑफिशियल बोर्ड हो, जो साल मे दो बार मिल कर विचार विनिमय करे ।

(२) अुतने ही महत्व का काम है लोक-शिक्षा के क्षेत्र का । जबतक शिक्षा का फैलाव ग्रामीण जनता के अन्दर नही होगा तबतक आदोलन भी आगे नहीं बढेगा । अिसके लिअे लोकशालायें हो, ग्रामीण जनता के जीवन को और अुनके मानस को शक्तिशाली बनाने के लिअे सघन-कार्य हो । अिसके साथ ग्राम-परिवार के विचार का मेल बैठाया जाय ।

राष्ट्रव्यापी आदोलन – यह कार्य दो ढग से होना चाहिये । अेक तो जनता और शिक्षा जगत् के अदर और दूसरा सरकार के साथ ।

(१) विद्यार्थी समाज म अध्ययन गोष्ठियां हो । शिक्षा शास्त्रियों के साथ चर्चा–विचार और प्रचार का कार्य नियमित विचार गोष्ठियो द्वारा हों । जनता मे प्रचार के लिअे सबसे अच्छा तरीका यह है कि हमारे लाग जब भी सभायें आदि करे तो अुनमे नई तालीम की भी चर्चा करे–अिससे अिस विचार का कारगर प्रचार होगा।

(२) दूसरा काम सरकार के साथ करना होगा । अिसमें काफी "परसिस्टेन्स" की आवश्यकता है । यहाँ "गाइडेन्स' का सवाल नही । अिसमें तो सरकार की शिक्षा सबधी नीति को बदलने की बात है । जैसे कि बुनियादी के आधार पर माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप और अुच्च शिक्षा में तबदीली करने की बात तक मे, हमें आग्रहपूर्वक कदम अुठाने होंगे ।

अगर हमारा अपना काम ठोस नही होगा तो समाज और सरकार दोनो पर हमारा असर नही हो सकता । और साथ-साथ अिसमें भी कोअी शक नहीं कि बिना व्यापक कार्य के किसी अेक जगह पर नमूने का कार्य करने से भी अपेक्षित फल नही मिलेगा ।

(शेषांश पृष्ठ २८८ पर)

विद्यार्थी समस्या और राष्ट्रीय सेवा कार्य समिति की रिपोर्ट

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विद्यार्थी समाज की ओर से जितनी सहायता राष्ट्र के निर्माण कार्यों में और देश के मानसिक स्वास्थ्य को अूपर अुठाने में मिलनी चाहिये थी, नहीं मिली है। हम यह कल्पना कर रहे थे कि स्वतन्त्रता प्राप्त नये भारत को लाखों नवयुवकों के लाखों हाथ और हृदय देश के अुत्थान के लिये मिलेंगे। आशा यह की थी कि विद्यार्थी समाज राष्ट्र निर्माण की ध्वनि से गूंज अुठेगा।

किन्तु यह नहीं हुआ। विद्यार्थियों ने मदद करने के बदले देश की काफी बडी शक्ति को अुनके अूपर पुलिस की निगरानी, पुलिस के डण्डे और गालियां और अनेक दिशाओं से निन्दा पाने में लगा दी।

क्यों हुआ अैसा? अुत्तर किसी से छिपा हुआ नहीं है, चाहे हम असलियत को तरह-तरह के वक्तव्यों या जनता का मानस तरह-तरह से रंगकर भूलने या भुलाने का प्रयत्न करते रहे।

पिछले दिनों अेक बडे टैक्नोलॉजिकल इन्स्टीट्यूट की मिकेनिकल शाप को देखने का मौका मिला। वहां कई तरह के यन्त्रों के साथ अनेक विद्यार्थी अैसे मग्न थे जैसे कोई निर्माता अपने काम में जुटा हुआ रहता है। मन-ही-मन सोचा कि ये विद्यार्थी भला कैसे और क्योंकर अेजीटेशन और डायरेक्ट अेक्शन की बात सोचेंगे। अुन्हीं दिनों अेक दूसरे अिंजीनियरिंग कॉलेज के कुछ विद्यार्थियों से पता चला कि जब अुनकी युनिवर्सिटी में गडबड हुई थी, तो अुनके विभागवालों ने अुसमें हिस्सा नहीं लिया था। अुनमें से अेक ने कहा, 'हमको अुसके लिये समय नहीं मिलता'।

क्या कारण है कि टेक्नीकल दिशा में जानेवाले विद्यार्थियों के अन्दर दूसरे विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अनुशासन है?

ज्ञान विज्ञान, सर्टीफिकेट, डिग्री के अलावा भी शिक्षा के दूसरे कुछ अधिक महत्वपूर्ण अंग होते हैं। अेक तो आन्तरिक तृप्ति और आनन्द तथा दूसरा, शिक्षा समाप्ति के बाद अुन्हें धन्धा मिलने का विश्वास। आज की शिक्षा अिन दोनों चीजों का प्रदान करती ही नहीं। टेकनिकल लाइनवाले विद्यार्थियों को थोडे प्रमाण में ये चीजें मिलती हैं और अिसलिये अुनका तथाकथित डिसीप्लिन कुछ परिमाण में कायम दीखता है। टेक्नीकल शिक्षा लेने के बाद देश में अिस तरह के ट्रेन्ड लोगों की अभी आवश्यकता है और कुछ हद तक अुनकी खपत भी हो जाती है। अिसलिये अुन्हें सुरक्षा का प्रश्न भी, तुलना में कम ही सताता है।

भले ही अनुशासन की दृष्टि से टेकनिकल लाइन वाले कम समस्यात्मक हों, किन्तु शिक्षा की दृष्टि से वे भी अुतने ही छिछले पानी में हैं। अेक योरोपीय लेखक ने अपने देश की शिक्षा के बारे में कुछ अिस प्रकार लिखा था–

"विद्यार्थी अपने दिमाग को आवश्यक और विशाल महत्व के प्रश्नों में लगायें, अिसका प्रयत्न ही नहीं होता, इतना ही नहीं, बल्कि अिसके बारे में आज की युनिवर्सिटी शिक्षा का ध्यान भी नहीं जाता।

'विद्यार्थी अवस्था में "न्यूट्रलिटि" के बहाने अुनका मानस अिस प्रकार गढा जाता है कि वे सामाजिक और राजनैतिक प्रश्नों के बारे में सोचना छोड दें, जिससे कि अुनमें स्थिति को बदलने का विचार भी न आय। अुनके शिक्षण के अेकांगी स्वरूप के कारण विद्यार्थी अिस योग्य नहीं रह जाता कि वह जिम्मेदारी के साथ अुद्देश्यपूर्ण जीवन की तैयारी अपनी शिक्षा के द्वारा कर सके। वह किसी महत्वपूर्ण प्रश्न के अूपर जिम्मेदारी के साथ विवेकपूर्ण निर्णय भी नहीं ले पाता। अुसको शिक्षा के द्वारा अुसमें यह गुण पैदा नहीं किया जाता कि वह जिस विषयका अध्ययन कर रहा है या जिस धन्धे की तैयारी कर रहा है अुसके पीछे भावना क्या है, अुसका अुद्देश्य क्या है, अिस बात को बुद्धिपूर्वक काट छांट कर समझ सके। अुसके अन्दर वह शक्ति पैदा नहीं की जाती कि आध्यात्मिक, राजनैतिक और सामाजिक विचारों और विश्वासों को, जिन्हें वह सोचता है कि

वह स्वय मानता है, गहराई से समझ सके। सच कहा जाय तो वह अशिक्षित ही रह जाता है।"

आज यहां की युनिवर्सिटी शिक्षा की यह हालत है तो हम खुद ही समझ ले कि हमारी युनिवर्सिटी की शिक्षा कितने पानी में है।

शिक्षा जगत की अिस दुर्घटना समय के सदर्भ में देश के सामने दो तरह के सुझाव आये हैं। डिसीप्लिन के बारे में जो कमेटी बनी थी असकी रिपोर्ट तो प्रकाशित नही हुई है किन्तु असके अध्यक्ष का वक्तव्य और शिक्षा मत्री के अुद्गार प्रकाशित हुअे हैं। 'शिक्षक और विद्यार्थियो के सबध ठीक नही हैं,' 'पालक अपने लडको को सभालते नही,' 'युनिवर्सिटी मे दाखल अधिक नही होना चाहिये, अित्यादि बातों के साथ कहा गया है, 'अैसे कदम तो लिअे ही जायगे, अुनके लिअे समय भी अधिक लगेगा और जो लागरेज योजना के हैं–जैसे, अधिक कालेज खोलना, इमारते बनाना, अधिक शिक्षको का अित-जाम करना अित्यादि। किन्तु अभी तो यह जरूरी है कि बलवा करने वाले विद्यार्थियो के नेताओं को सजा दी जाय। जो कानून का भग करता है असके लिअे बचन का कोओी रास्ता नही हो सकता। हो सकता है कि युनिवर्सिटी की तालीम में कुछ कमी रहने के कारण विद्यार्थियो में फ्रस्ट्रेशन आ गया हो। किन्तु फ्रस्ट्रेशन का बहाना लेकर अनुशासन भग होने नही दिया जा सकता।

अिसमे कोई शक नही कि शिक्षा जगत के लिअ और राष्ट्र के लिअे विद्यार्थियो के द्वारा अैसा काम होना शोभाजनक चीज नही है। किन्तु क्या किशोर अवस्था और प्रारम्भिक युवावस्था को बरतने का तरीका सजा ही है? धमकियां ही हैं? और क्या धमकियो से जवानी का खून ठण्डा हो सकता है? बगावत को भूल सकता है? सौभाग्य से देश का जवान अभी जीवित है और विद्यार्थियो के ये कारनामे, चाहे लज्जास्पद ही क्यो न हों यह सिद्ध करते हैं कि हमारे युवको म अब भी जान है।

हमे बडा आनन्द और सतोष होता है जब हम यह वाक्य अुन अुद्गारो के बीच पढते हैं "आवरम और डिसिप्लिन अिज ये ह्यूमन प्रावलम अैंड अिट कैन बी साल्व्ड ओनली अिन दे ह्यूमन वे," दर असल आज शिक्षा जगत को अपनी वृत्ति १६ आने मानवीय करनी चाहिये। अगर डण्डे के जोर से विद्यार्थियो में अनुशासन कायम भी कर दिया तो वह न तो टिकाअू होगा और न कारगर। साथ-साथ यह भी कहा गया है कि विद्यार्थियो के सगठन अगर बनते हैं तो अुनकी प्रवृत्तिया केवल मनोरजन, सस्कृति और पढाई लिखाई के क्षेत्र तक ही सीमित रहे। अगर वे अिस दायरे से बाहर नजर डाले, या अपने आप को और बातो के बारे में जिम्मेदार महसूस करे, तो अुन्हे तोड देना चाहिये। शिक्षा जगत के साथियो, अिस तरह के निर्णयो म कोई सार नहीं। अगर हम अिस तरह की दृष्टि रखेंगे तो भला जिस लोकतात्रिक परम्परा की बुनियादें हम डालना चाहते हैं, वे कैसे पडेंगी? अगर युवको को दुनिया की परिस्थिति से परिचित कराना है और अुन्हें आगे के लिअे जिम्मेवारी से महत्वपूर्ण विषयो के बारे म निर्णय लेने की तैयारी करानी है, तो विद्यार्थी-अवस्था से ही अुनके सामने जिम्मेवारी के काम देने होंगे। अुन्हे सास्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रश्नो के अूपर विवेकपूर्ण चिन्तन करने का अभ्यास अभी से मिलना चाहिये। हम तो विद्यार्थियो से कहना चाहिये कि आज तो नारा लगाना और डायरेक्ट अेक्शन राजनीति म भी आउट आफ-डेट चीज हो गयी है–विद्यार्थियो को तो अिस प्रकार सोचना ही नही चाहिये। अुन्हें देश की समस्याओ के अूपर विचार गोष्ठिया, फोरम, आदि का सगठन करना चाहिये।

आज जो डर है और जो होता भी है कि राज नीति म हिस्सा लेने से विद्यार्थियो म अनुशासन की मात्रा घटती ही जाती है असकी जिम्मेवारी पार्टी के अूपर आधारित राजनीति की है। अिस सिलसिले मे सव सेवा-सघ ने राष्ट्र के सामने यह सुझाव रखा है कि सब राजनैतिक पार्टिया आपसी समझौते पर आयें और अगर वे राष्ट्र का भला चाहती हैं तो आज जो युवक समाज मे अुनके द्वारा विषैला वातावरण बनता है अुसे हमेशा के लिअे बन्द कर दें।

हल अेक ही तरीके से हो सकता है और वह है

"मानवीय तरीका"। जब विद्यार्थियो को अैसी शिक्षा मिलेगी जो पहले कही गयी दो बातो को पूरा करे और राजनैतिक पार्टिया भी जब अपना अुचित निर्णय ले लेगी तो वे विद्यार्थी सगठन अनुशासन-हीनता का प्रदशन करने के बदले रचनात्मक वृत्ति का प्रदर्शन करेगे। तब हम कहेगे कि हा, विद्यार्थियो के सगठन होने ही चाहिये।

अिस मानवीय तरीके से सोचा जा सकता है और सोचा जा भी रहा है। अिसका धुधला-सा अुदाहरण वह राष्ट्रीय सेवायेंवाली कमेटी की रिपोर्ट से मिलता है। चिन्तनशील अनुभवी लोगो को यह लगने लगा है कि चरित्र निर्माण के लिअे सेवा की भी आवश्यकता होती है। सुझाया गया है कि माध्यमिक शिक्षा के बाद लगभग अेक वर्ष हर विद्यार्थी को कही सेवा करने का मौका देना चाहिये। भावना ठीक है, किन्तु अुसका विश्लेपण करके देखें। जिन लडके-लडकियो ने अपनी १७ सालकी अुम्रतक शरीरश्रम नहीं किया हो वे और अुनके पालक भी क्या अिस चार घटे के श्रम को मजूर करेगे? अिसका विरोध कुछ कम नही होगा और जिसे दवाना केवल सैनिक शक्ति से ही समव होगा। कहा गया है कि अिस योजना को चालना म डिसीप्लिन बिल्कुल सैनिक ढग का होगा। कौन कह सकता है कि अनुशासन रहना नही चाहिये, किन्तु आज सैनिक अनुशासन की स्थापना करने के लिअे सैनिक शिक्षक की आवश्यकता होगी। याने सारी योजना म मिलिटरीजम की वू आयगी। दूसरा प्रश्न है, लाखो विद्यार्थियो को काम देना, अुनकी नियमित शिक्षा चलाना अित्यादि के लिअे शक्ति हमारे पास कितनी है? और खास तौर पर शिक्षा की दृष्टि रखन वाली शक्ति। और इस योजना का रग शैक्षणिक नहीं रहता है तो इसम कोई शक नही कि अुसे मिलेटरी का रग ही चढेगा। हा, अगर इसके पीछ यही भावना है कि परिस्थिति का लाभ अुठाकर देश को और खास तौर पर नवयुवको को मिलीटराइज करना है, तो बात अलग है। पर अुसपर भी आज देश को साफ साफ निर्णय ले लेना चाहिये कि क्या वह अुधर जाना चाहता है। आशा है गाधी का देश अपने सकल्पो को भूलेगा नही। जिन विद्यार्थियो की माध्यमिक शिक्षा पूरी करने तक अुनकी तालीम मे सेवा, शरीरश्रम, सामाजिक दृष्टि और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का भान नही आया है, वे बाद मे चलकर अुन चीजो को कहा तक ग्रहण करेगे? अुसके लिअे जो विरोध खडा होगा और वातावरण को दूषित करेगा, अुसकी हम अभी से कल्पना कर सकते हैं।

हमारा कहने का मतलब यह है कि जिस भावना से यह राष्ट्रीय सेवा कार्य का सुझाव रखा गया है अुसी भावना से पहले शिक्षा मे आमूल परिवर्तन किये बिना हमारे किसी भी अैसे कार्य मे सफलता नही मिलेगी, जिसके पीछे सेवा, राष्ट्रीयता, मानवता और जिम्मेदारी से सोचने की वृत्तिया का आधार है। बालक को जो माध्यमिक शिक्षा मिलती है अुसीमे नेशनल-सर्विसेज को समन्वित करना चाहिये। शिक्षा का "कन्टेन्ट" इस प्रकार का होना चाहिये कि माध्यमिक शिक्षा के बाद ही अधिकतर नवयुवक राष्ट्र का ख्याल रखते हुअे किसी न किसी धन्धे म लग जायें। साथ-साथ युनिवर्सिटी की शिक्षा का भी बदलना पडेगा। अुसका स्वरूप अैसा बनाना पडेगा कि अुस स्तर की शिक्षा केवल वे ही विद्यार्थी ले जो किसी अुद्देश्य से आगे का अध्ययन करना चाहते हैं।

माध्यमिक शिक्षा के ढाचे म अगर सृजनात्मकता और वह भी अुद्देश्यपूर्ण सृजनात्मकता का समुचित विकास करने का मौका मिलेगा, विद्यार्थियो को साथ साथ मिलकर किसी अुद्देश्यपूर्ण कार्य को पूरा करन की शिक्षा मिलने का इन्तजाम होगा, तो नवयुवको का मानस ठीक ढग से बनेगा।

आज जो परिस्थति है वह इस प्रकार है

स्कूल की शिक्षा म तो विषय ज्ञान और परिक्षाओ की तैयारी होती और परीक्षा के बाद अधिकारियो को यह चिन्ता होती है कि अिन पासशुदा लडकें-लडकियो को किस प्रकार आत्मानुशासन और सेवा की वृत्ति दी जाय। यह कभी होनेवाला नही है। अगर ये वृत्तियाँ देनी हैं तो शिक्षा का अग मानकर ही अिन्हें लिया जाय।

राष्ट्रीय सेवा जब माध्यमिक शिक्षाका ही अग होगी तो स्वाभाविक ही अुसकी पूरी जिम्मेदारी स्कूल

की होगी। किसी क्षेत्र में किये जानेवाले कार्य की योजना अपने क्षेत्र के लोगों के साथ मिलकर स्कूल कमेटी (जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों हो) करे और अगर टेक्नीकल सहायता की आवश्यकता पड़े तो सरकार के कितने ही विभाग हैं जो अिस कार्य में मदद कर सकते हैं।

जिस मिलीटरी अनुशासन की बात की है वह अगर सिखाना है तो स्कूल की मदद में वह मिलीटरी शिक्षक आये। शाला का यह प्राजेक्ट अिस प्रकार संयोजित किया जाय कि क्षेत्र के अनुभवी लोग अुसमे आ सके, क्षेत्र के सरकारी अफसर भी अुसमे भाग ले सके। अगर १०-१० विद्यार्थियों की टोलियो के साथ अेक शिक्षक या बाहर के कोई अनुभवी सज्जन रहें और मिलकर काम करे तो विद्यार्थियो को आनद आयेगा और अुनकी जिम्मेदारी का भान और ज्ञान भी बढेगा। देश के सामने भोजन की समस्या ही अितनी विशाल है कि अुसी मे अनेक प्रकार से विद्यार्थियो को लग जाने मे गर्व महसूस होगा। विद्यार्थियो का समाज अिस प्रकार अेक भूमि सेना का निर्माण कर सकता है और गाव गाव में स्कूलों, सडको, आदि का निर्माण बडे अुत्साह के साथ कर सकता है। किन्तु हम भूलना नही चाहिये कि विद्यार्थियो का मानस केवल अच्छे-अच्छे कैम्प चलाने से तैयार नही होगा। अुनके लिअे सारे राष्ट्र का वातावरण भी बदलना होगा, जो तालीम और सामाजिक और आर्थिक मूल्यो मे परिवर्तन से ही सम्भव है।

कमेटी द्वारा प्रस्तुत योजना के खर्च का हिसाब करे। आज जो योजना बनी है अुसके पीछे जो खर्च होनेवाला है, वह भी कुछ कम होगा, यह नहीं कहा जा सकता है। किन्तु, अगर विद्यार्थियो को समुचित शिक्षा मिले और तब अुनकी स्वेच्छा और सामाजिक बोध जगाया जा सके तो वे जिस समाज की सेवा करने के लिये तत्पर होगे अुनके जीवनक्रम मे पूरे-पूरे मिलकर, अुनकी गरीबी और सादगी को अपना कर ही अुस काम मे लगेंगे। अगर अिन बातो को ध्यान मे न रखकर यह योजना चलेगी तो हम डर है कि राष्ट्र की सपत्ति का अेक हिस्सा यों ही बेकार खर्च किया जायगा। आज की हालत मे अगर ये सेवा शिविर आयोजित किये जायेंगे तो वे अधिक से अधिक भय के आधार पर चलनेवाले श्रम शिबिर ही हो सकेगें। अिस-लिअे आवश्यकता है कि शिक्षा का ढाचा अिस प्रकार बदला जाय (माध्यामिक और युनिवर्सिटी दोनो का) जिससे कि विद्यार्थियो को जिम्मेवारी के साथ अुद्देश्य-पूर्ण जीवन की तैयारी करने की शिक्षा मिले। अुसके लिअे परीक्षाओ के बारे में भी पुन विचार करना पडेगा। यह तो अेक वर्ष मे ही सरकार कर सकती है कि सरकारी नौकरिया और युनिवर्सिटी के प्रवेश के लिअे पिछली परीक्षा का सर्टीफिकेट न देखकर अलग कम्पीटीटिव समीक्षाओ के आधार पर भर्ती हो। जो दरवाजा आज अनेक जवानो के लिअे बन्द-सा है खुल जायगा। अुससे हमारे नवयुवक के मानस का तनाव भी कम होगा।

अिस टिप्पणी के द्वारा हम अुन मित्रो को जो आज की विद्यार्थी समस्या के बारे म सोच रहे हैं, यही कहना चाहते हैं कि समय की माग समस्या को सुलझाने के लिअे अूपरी अुपचार करने की नही है, बल्कि शिक्षा म आमूल परिवर्तन करने की है।

(पृष्ठ २८४ का शषाश)

तालीम का कार्य हमारे समग्र आदोलन का अेक मुख्य अग है। अगर हमने यह सोचा कि समाज परिवर्तन के बाद शिक्षा स्वय सुधरेगी, तो वह भी गलत होगा। साथ साथ यह भी गलत होगा कि हम यह सोचे बैठे रहे कि शिक्षा का काम करते करते समाज परिवर्तन स्वय हो जायगा। दोनो बाजुओं को आदोलन का रूप दिये बिना, हमारा काम अब आगे बढने की सभावना नही दीखती।

"नई तालीम" पत्रिका की जानकारी

फार्म ६, रूल ८.

प्रकाशन का स्थान	सेवाग्राम
प्रकाशन काल	मासिक
मुद्रक का नाम	सदाशिव भट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	अ० भा० सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
प्रकाशक	सदाशिव भट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	अ० भा० सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
संपादक	देवीप्रसाद और मनमोहन
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	अ० भा० सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
पत्र के मालिक	अ० भा० सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

मैं, सदाशिव भट, विश्वास दिलाता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

१ मार्च १९६०

सदाशिव भट
प्रकाशक

अेक बडा विचार हमारे देश को मिला। वैसे तो वह नया नहीं है, क्योंकि कोओी भी सत्य अनुभव नया नहीं होता। यह तो सनातन होता है। लेकिन हमारे लिअे वह नया होता है। आज यह चीज अेक अैसी हालत में है कि उसका सत्य, उसकी असलियत, उसकी पुष्टि, उसका अमृतत्व संशय से परे है। फिर भी हम अिस पर अमल नहीं कर पा रहे हैं। स्वराज्य प्राप्ति के बाद क्या अेक दिन भी हमसे पुराने राज्य का झंडा बर्दास्त होता। जो झंडे की हालत है, वही तालीम की है।

देश में शुरू से आखिर तक जो भी तालीम दी जायगी वह सारी की सारी अिस बुनियाद पर खडी करनी होगी। तभी यह बुनियादी तालीम है। यह तालीम सबके लिअे है। शहर और गांव, अैसे फर्क यह महसूस नहीं करती है। यह नहीं हो सकता कि देश की सेवा की तालीम गांववाले पायें और शहर वाले बच्चे देश को लूटने की तालीम पायें। शहरवाले जिन ग्रामीणों के आधार पर खडे हैं उनकी सेवा में उन्हें लग जाना चाहिये और इसी ख्याल से अपने बच्चों को तालीम देनी चाहिये।

मुझे डर इस बात का है कि लोग इस बुनियादी तालीम को आजकल अेक पद्धति के तौर पर देख रहे हैं। मैं कहता हूं कि यह अेक पद्धति नहीं है, यह अेक विचार है।

—विनोबा

श्री. सदाशिव भट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा नई तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम में मुद्रित और प्रकाशित।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

अप्रैल १९६०
वर्ष : ८ अंक : १०

नई तालीम

अप्रैल १९६०
वर्ष ८ अंक १०

अनुक्रम

"नई तालीम" हर माह के पहले सप्ताह में सर्व सेवा संघ द्वारा सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। जिसका वार्षिक चंदा चार रुपये और अेक प्रति का ३७ न. पै. है। चन्दा पेशगी लिया जाता है। वी. पी. डाक से मंगाने पर ६२ न. पै. अधिक लगता है। चन्दा भेजते समय कृपया अपना पूरा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। पत्र व्यवहार के समय कृपया अपनी ग्राहक संख्या का अुल्लेख करें। व्यवस्था सम्बन्धी पत्र व्यवहार प्रबन्धक, "नई तालीम" के पते पर और अन्य पत्र व्यवहार सम्पादक, "नई तालीम" सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर किया जाय।

वर्ष ८ अंक १० ★ अप्रैल १९६०

जय जगत्

देश के किसी कोने में आप काम करें, मंत्र "जय जगत्" होना चाहिये। जब अिस भगवान सूर्य नारायण की ओर से मिलनेवाले अिस प्रकाश की तरह सबको पोषण मिलेगा—सबको शिक्षण मिलेगा, सबको रक्षण मिलेगा, तभी "जय जगत्" सिद्ध होगा।

यह सारा भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति का जो काम अिस देश में आज हो रहा है, "जय जगत्" का ही है। लेकिन "जय जगत्" के लिअे पहले जय-ग्राम होना चाहिये। ग्राम की जय तभी हो सकती है, जब सारा ग्राम अेक हृदय हो, अेक परिवार बने। अिसलिअे सेवा ग्राम की हो और भावना जगत् की रहे। पांव जमीन पर रहें, आंख विशाल आकाश में रहें। अगर आंख भी पांव की जगह रह जायेंगी, यदि दृष्टि संकुचित होगी, तो विकास रुक जायगा। अिसलिअे अेक तरफ ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य और शांतिसेना का काम होता रहेगा, तो दूसरी तरफ विश्वशान्ति की प्रक्रिया भी शुरू हो जायगी।

—विनोबा

गांधीजी के निर्वाण के बाद सेवाग्राम में अुनके साथियों का अेक समेलन हुआ था। अुसके बाद हर साल सर्वोदय समेलन हो रहा है। बारह साल के बाद हम फिर से सेवाग्राम में मिल रहे हैं। अिस अवधि में देश तथा दुनियां गांधीजी की राह पर कहा तक आगे बढ़ी है जिसका लेखा-जोखा लेना अुचित होगा।

गांधीजी का विचार व्यक्ति या देश की सीमाओं से बधा हुआ नही है। वह सर्वोदय का विचार है जो सार्वभौम है। यह निःसदेह कहा जा सकता है कि बावजूद नये नये हिंसक शस्त्रो के आविष्कारो के और शीत युद्ध के वातावरण के, जगत् कुल मिलाकर गाधीजी के दिखाये हुअे मार्ग की ओर प्रवृत्त हुआ है। भारत की स्वतंत्रता का और अुसकी प्राप्ति के अहिंसक साधन का असर अेशिया तथा आफ्रिका के कअी मुल्कों पर पड़ा है। दुनिया में शाति की आकाक्षा पहले से अधिक तीव्र हुअी है। युद्ध की तैयारी में तथा अुत्तरोत्तर अधिक विनाशक शस्त्रो की खोज में लगे हुअे राष्ट्र भी आज निःशस्त्रीकरण का विचार गभीरता से करने लगे है। विज्ञान की प्रगति ने समस्याओ के हल के लिअे हिंसा को निरर्थक सिद्ध कर दिया है और शातिमय अुपाय ढूढने के लिअे बाध्य किया है।

अिन दिनों अेक और शुभ लक्षण यह भी दिखायी दिया है कि दुनिया के किसी भी अेक क्षेत्र में अन्याय या अत्याचार होने पर अुसके खिलाफ कअी मौकों पर दुनिया भर के लोगों का पुण्य प्रकोप प्रकट हुआ है और जागतिक लोकमत की अिस अभिव्यक्ति का असर भी हुआ है। दुनियां के कुछ देशों में अहिंसक प्रतिकार के प्रत्यक्ष प्रयोग भी हुअे हैं। अिस सिलसिले में हमें अमेरिका में नीग्रो जाति के सामान्य नागरिक अधिकारो की प्राप्ति के लिअे किये सत्याग्रह का तथा आणविक शस्त्रो के खिलाफ योरप, अमेरिका और आफ्रिका में किये गये प्रतिकारो का विशेष स्मरण होता है। कुछ जगह लोगों ने सामूहिक जीवन में सर्वोदय विचार को अपनाने के प्रयोग भी शुरू किये हैं।

दुनिया की यह अपेक्षा स्वाभाविक ही थी कि गाधीजी की भूमि, भारत अहिंसा की दिशा में विशेष प्रयोग करेगी। लेकिन दश की आजादी के साथ ही देश-विभाजन के कारण जो बुराअियाँ प्रकट हुअी, अुनसे लोक मानस में अुथल-पुथल मच गयी और समस्त जीवन-मूल्यो पर प्रहार हुआ। साप्रदायिक संघर्ष की आग भभक अुठी और अुसने गाधीजी का बलिदान लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध का असर भी भारत पर था। अिन कारणो से देश के नैतिक स्तर में अवनति दिखायी दी। आजादी की लडाअी के समय सेवा और त्याग की जो भावना व्यक्त हुअी थी अुसके बदले स्वार्थवृत्ति प्रकट हुअी। पुरुषार्थ के बदले सरकार पर अवलबित रहने की प्रवृत्ति लोगो में बढी। अिन सब के होते हुअे भी यह कहना होगा कि भारत का लोकहृदय मूलतः शुद्ध है।

अहिंसा की दिशा में दो प्रयोग विशेष रूप से अुल्लेखनीय हैं। अेक तो यह कि हमारी विदेश नीति में मैत्री, तटस्थता तथा शाति का आग्रह रखा गया है। यह विश्व शाति की दिशा

में अेक बडी देन है और अुससे देश का गौरव बढा है।

दूसरी महत्व की बात भूदान-ग्रामदान आंदोलन की है। अिसमें लाखो दाताओ ने प्रेम तथा करुणा की माग स्वीकार कर अपनी जायदाद का हिस्सा समाज को समर्पित किया। अिस आदोलन ने भूस्वामित्व की जड ढीली कर दी, देश में नैतिक वातावरण के निर्माण का यत्न किया और समाज की समस्याओ के अहिंसक हल का अेक नया मार्ग दिखाया। देश के रचनात्मक काम में तथा कार्यकर्त्ताओ में भूदान आदोलन ने फिर अपने लक्ष्य का भान कराया और नअी चेतना पैदा की। अिस आदोलन के कारण देश में स्वतत्र लोक शक्ति का स्रोत खुला है-तथा विभिन्न राजनैतिक पक्षो को अेकत्रित होकर काम करने का मौका भी मिला।

अिन दो मुख्य चीजो के अलावा देश की प्रगति में कुछ और भी बाते हैं। बुनियादी नागरिक स्वातत्र्य, कानून की सत्ता, बालिग मताधिकार के आधार पर बने हुअे सविधान का निर्माण तथा जनता में लोकतात्रिक अधिकारो का अहसास, जनतत्र के समकालीन अितिहास में अेक विशेष घटना है। आजादी के बाद देशी रियासतो के शातिमय विलीनीकरण से तथा जमीदारी अुन्मूलन के कानून से, सदियो से चली आयी सामतशाही नष्ट हुअी और स्वस्थ समाज जीवन की नीव डाली गयी। शासन की तरफ से भौतिक विकास का जो प्रयास चल रहा है अुसमें देश के निर्माण के लिअे गाव बुनियादी महत्व रखता है, अिस चीज का स्वीकार सामुदायिक विकास योजना के द्वारा हुआ है तथा सत्ता के विकेन्द्रीकरण की ओर भी ध्यान आकर्षित हुआ है।

खादी ग्रामोद्योग आयोग तथा देशभर में फैली हुअी स्वतत्र सस्थाओ के द्वारा खादी व ग्रामोद्योग का कार्य अिस अर्से में बढा है। अिस क्षेत्र में काम करनेवालो का ध्यान ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य तथा अुसकी पूर्ति के साधन स्वरूप स्वावलबन की ओर गया है। यह नया मोड विशेष रूपसे स्वागत योग्य है।

देश के विभिन्न राजनैतिक दलो को समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में वैधानिक और शाति-पूर्ण तरीको का महत्व मान्य हुआ है। यह भी अेक हर्ष का विषय है।

पर अिस सबके बावजूद यह कहना होगा कि आजादी के बाद गाधीजी के भारत से जो अपेक्षा हुअी थी वह पूरी नही हुअी। गाधी-विचार के अनुसार आर्थिक विकेंद्रीकरण के आधार पर जिस प्रकार के समाज की रचना होनी चाहिये थी वह नही हुअी, बल्कि गाव-गाव में परपरा से चले आ रहे ग्रामोद्योगो को धक्का पहुचा है। अिस प्रकार से स्वातत्र्य प्राप्ति के बाद समाज व अर्थरचना में मूलभूत परिवर्तन का जो मौका मिला था अुससे देश फायदा नही अुठा पाया।

देश के आतरिक प्रश्नो के हल के लिअे शातिमय साधनो के अुपयोग की नीति का प्रत्यक्ष व्यवहार नही हुआ। जरा-जरा सी बात पर देश में पत्थर और गोली चलती है। हम अभी तक आतरिक शाति के मामले में सफल नही हो सके हैं। परिणामस्वरूप पुलिस अेव सेना की आवश्यकता कायम रही है।

भूमि समस्या के जैसी देश की बुनियादी समस्या अभी तक हल नही हो पायी तथा नियोजन के बावजूद भी बेरोजगारी की समस्या बढती जा रही है। देश अभी तक अनाज के

मामले में स्वावलंबी नही बन सका है, जिसके फलस्वरूप हर साल करोडो रुपयो का अनाज विदेशो से मगवाना पडता है।

हालाकि केंद्र और राज्य सरकारो ने बुनियादी तालीम को असूल्न स्वीकार कर लिया है, फिर भी प्रत्यक्ष अमल में शिक्षा की नीति में कोअी खास परिवर्तन नही हुआ है। शिक्षण न देश के निर्माण का पूरक बना है, न अुसमें नैतिकता का तत्व आया है। अिसलिअे छात्रो के लिअे सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन में पुरुषार्थ के अवसर नही रह गये हैं।

राज्य सरकारो का कारोबार प्रादेशिक भाषा में तथा अतरप्रदेशिक व्यवहार राष्ट्रभाषा में चलना चाहिये। अिस दिशा में कोअी खास प्रगति नही हुअी है। बल्कि अग्रजी की प्रतिष्ठा बढी है। जहा तक अस्पृश्यता निवारण का सबध है, कानून से जो प्रयत्न हो सकता था वह किया गया है लेकिन अस्पृश्यवर्ग को अपने में समरस करने के लिअे सामाजिक क्षेत्र में पर्याप्त प्रयत्न नही हुआ।

शराबबदी की नीति राष्ट्रव्यापी तौर पर नही अपनायी गयी है। जहा पर नीति अपनायी गयी है वहा अुसके अमल में शिथिलता है। समाज में अुसके लिअे कोअी प्रभावशाली नैतिक वातावरण नही बन सका है। भारत की संस्कृति तथा अहिंसा के मन को देखते हुअे अिस देश में गोहत्या बद होनी चाहिये थी, वह पूर्ण रूपेण नही हुअी है, तथा गो-सवर्धन के कायक्रम को भी जो अिस देश की आर्थिक रचना में अेक महत्व की कडी है, योग्य प्रोत्साहन नही मिल सका है।

यह परिस्थिति जनता तथा सर्वोदय में श्रद्धा रखनेवाले सेवको के लिअे अेक चुनौती है। हम मानते हैं कि सर्वोदय की राह पर चलकर अिन सारी समस्याओं का हल निकल सकता है। भारत की जनता ने गाधीजी के नेतृत्व में बडी-बडी समस्याओं का सामना किया है। आज भी अुस अपरिमेय पुरुषार्थ की सभावना जनता में भरी पडी है। भूदान-ग्रामदान आदोलन के दौरान में अुसकी झाकी मिली है। अिसमें सदेह नही कि जनता अपनी अिस शक्ति को पहचान कर यदि पूर्ण रूपसे जाग अुठे तो सर्वोदय समाज रचना का वह स्वरूप प्रकट होगा जो मानव के अितिहास में अनोखा रहेगा तथा अिससे विश्व शाति और मानव मानव के बीच मधुर सबधो की अेक चिरस्थायी भूमिका का निर्माण होगा। अिस शक्ति के आवाहन के लिअे और अिस नव जागरण के लिअे जनता की सेवा में सर्व अर्पण का सकल्प ही आज बापू के निर्वाण के बारहवे साल में हमारा पवित्रतम कर्तव्य है।

मानव धर्म में निराशा को स्थान नहीं है।*

आचार्य हरिहरदास

देश को स्वराज्य मिले १२–१३ साल हो चुके है, फिर भी आज जब हम देहात में घूमते है और वहा की स्थिति देखते है तो पता चलता है कि देहात की जनता जानती ही नही कि स्वराज्य मिला है। और जहा पर स्वराज्य का कुछ भान लोगो को हुआ है, वहा गाव में जो दुष्ट लोग होते हैं, अुनको लगता है कि स्वराज्य हो गया तो वे जैसी चाहे मनमानी करने के लिअे मुक्त हो गये हैं। अिसलिअे लोगो पर अत्याचार करने के काम में वे जुट जाते हैं। अिस दृष्टि से देखा जाय तो हमें जो स्वराज्य मिला है वह सचमुच हमारे गाव तक नही आ पहुचा है, बीच में कही रुक गया है। अपने पितृपुरुषो के अुद्धार के लिअे जिस तरह से भगीरथ ने गगा का आवाहन करके अुसकी धारा को पृथ्वी पर लाया था, अुसी तरह कष्ट करके गाधीजी ने स्वराज्य को प्राप्त किया। लेकिन अुसकी धारा बीच-बीच में रुकती आ रही है। गगा की धारा जब बह रही थी तो जनु मुनी ने अुस गगा की धारा को पी लिया था। अुसी तरह से स्वराज्य की धारा दिल्ली में और कुछ बडे-बडे शहरो में जो अधिकारी वर्ग है अुनके पास अटक गयी है, भगीरथ ने जैसी तपस्या गगा की धारा का जनु मुनी से छुडाने के लिअे की थी, वैसा ही करके गाधीजी ने स्वराज्य की धारा को अग्रेजी शासन से मुक्त किया। लेकिन स्वराज्य की धारा को गाव तक पहुचाने का कार्य पूरा करने से पहले ही वे चले गये। अिसलिअे यह जो धारा दिल्ली में और बडे-बडे शहरो में आज अटक गया है, अुसे मुक्त करने में विनोबा जुट गये हैं। अुनके कारण अुस धारा का कुछ कुछ अश तो गाव में पहुचा भी है, लेकिन फिर भी जब हम पदयात्रा करते-करते गाव में घूमते हैं, तो लगता है कि अभी भी पूरा स्वराज्य गाव में नहीं पहुचा। गाव-गाव में स्वराज्य की यह धारा अगर पहुचे तो गाव की जनता अुसका पूरा-पूरा लाभ अुठा सकेगी, अिसमें मुझे कोअी सदेह नही है। गाधीजी पहले से ही जानते थे कि स्वराज्य आने के बाद अुस की धारा बीच में कही रुक जानेवाली है और देहात तक नही पहुच पायेगी। यह धारा बीच में कही न रुके अिसलिअे दुनिया से जाने के पहले ही यह सर्वोदय विचार अुन्होंने देश के सामने रख दिया, जिसके आधार पर यह धारा सतत बहती रहे।

सर्वोदय स्वराज्य का मूल है और सर्वोदय का विचार क्या है? सब का कल्याण हो। यह मूल धर्म जो है, अिसका पालन अगर हमारे देशवाले करे, पडोसी धर्म का पालन करें तो सारा देश शाति और सुख से जीवन बिता सकेगा और कही भी किसी भी प्रकार की अशाति का चिन्ह नही दीखेगा। सृष्टिकर्त्ता ने अनेक प्राणी, पशुपक्षी बनाये हैं और अुनको अपने-अपने गुण धर्म दिये हैं। वैसे ही अुसने मनुष्य को भी बनाया है और अेक मानव धर्म दिया है। सब मनुष्यो को समान बनाया। आज अितने सारे जो भेद है, वे मनुष्य ने समाज बनाने की प्रक्रिया में खडे किये हैं। ये मनुष्यकृत भेद हैं। आज दुनिया में जो किसी प्रकार की अशाति या दगा-फसाद दिखायी देता है अुसका कारण यह है कि मानव धर्म को

*अध्यक्षीय भाषण, बारहवा अ. भा. सर्वोदय सम्मेलन, सेवाग्राम–२६-३-६०

मनुष्य ने ठीक नही पहिचाना। शिक्षण जैसा आज चलता है अुसमें मानवता का विचार कम है। कहा जाता है कि दो गुण हैं–अेक पशुओं की पाशविकता और दूसरा, मानवता। मनुष्य में ये दोनों गुण हैं। प्रकृति ने पशुओं को जैसा बनाया है, वैसे ही वे रहते हैं। शेर मांस खाता है, *वह घास नही खायेगा और बकरी* जो घास खाती है वह मांस नही खायेगी। जानवर पालतू हो तो बदल सकते हैं। मानवता के गुण क्या हैं? सत्य, प्रेम, करुणा सदसद्विवेक बुद्धि, *संयम आदि* गुण हैं–यही मानवता है।

जो स्वतंत्रता है वही मानवता है और अिसे समझना मानवधर्म है। स्वराज्य अपने देश में आया। स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी ज्यादा परिवर्तन हमारे देश में नहीं हुआ है। अच्छा शिक्षण और अच्छी रीति-नीति लोगों में फैली नहीं है। हम लोगों ने पिछले महीनों में तीन हजार मील की पदयात्रा की, अुस दौरान में हम स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों और शिक्षकों के संपर्क में आये। मैंने अुनसे पूछा कि आप किस लिअे पढते हैं? तो अुन्होंने जवाब दिया कि हम पढकर नौकरी करेंगे और पैसा कमायेंगे। शिक्षण का यही हमारा ध्येय है। अुससे मानवता के जो गुण हैं अुनका विकास करके आगे बढना है यह विचार नहीं है। खाना-पीना और अुनके लिअे पैसा कमाना-यही अुनके शिक्षण का मकसद है। अिसी में वे फंसे हुअे हैं। यह जो शिक्षण की पद्धति हमारे देश में है, अिसमें परिवर्तन नहीं हुआ तो आगे अिसका परिणाम बहुत बुरा आयेगा।

अेक गाव के स्कूल में हम गये। चौथे क्लास के लडकों को गणित का विषय पढाया जाता था। शिक्षक विद्यार्थियों से प्रश्न कर रहे थे कि दो सेर दूध में दो सेर पानी मिलाकर अुस दूध को चार आने सेर के हिसाब से बेचोगे तो कितना मुनाफा होगा? क्या यही पद्धति है बच्चों को पढाने की? अिसमें सत्य, प्रेम, करुणा, की बातें कहां से आयेंगी? अिसका विचार हम सब को करना चाहिये। जिस *सर्वोदय की कल्पना हमारे सामने गांधीजी ने* रखी थी या आज ग्रामस्वराज्य की जो कल्पना विनोबा रख रहे हैं, वह कैसे संभव होगी अिस तरह के शिक्षण से? बापू ने जो संगठन किया, अुसमें सहयोग की भावना से हम न चले और देश की जो समस्याअें हैं अुनको साथ बैठकर सोच-विचार, विचार विमर्श न करे तो जो सर्वोदय समाज की स्थापना हम करना चाहते हैं अुस ओर हम कैसे बढेंगे? अिसलिअे यह अेक बहुत बडी समस्या आज हमारे सामने है।

जैसे यह शिक्षण की समस्या है अुसी तरह से जो और समस्याअें हैं अुनका सामना भी हमें करना है। और सर्वोदय समाज की स्थापना करनी है, तो जो संगठन है अुसको बढावा चाहिये, यह विचार का मुख्य विषय होना चाहिये। अिस प्रकार से अपनी शक्ति नहीं बढायेंगे तो सर्वोदय समाज की जो कल्पना है कि समाज की बुराअियां मिटेंगी, जो दुख है वे मिटेंगे, अुस सर्वोदय समाज को हम हासिल नहीं कर सकेंगे।

गांधीजी ने जो आदर्श दिया और जिसको विनोबाजी कार्यान्वित कर रहे हैं अुसमें जो बन्धुत्व या भाअीचारे का पहलू है, अुसके विकास की दृष्टि से किस तरह से हम आगे बढेंगे, अुसका विचार करना चाहिये। मुझे विश्वास है कि सब मिलकर काम करेंगे तो जरूर यह काम आगे बढेगा, हम जो सत्कार्य करने के

(शेषांश पृष्ठ २९८ पर)

दशमिक मापतौल

देवलाल अम्बूलकर

[पिछले अंक में अुत्तर बुनियादी भवन, सेवाग्राम में अिस विषय पर जो वर्ग हुअे थे अुनके बारे में अेक लेख प्रकाशित हुआ था । प्रस्तुत लेख अुसी का दूसरा भाग है । सारे देश में मापतौल के परिवर्तन के कारण अिस विषय का बडा महत्व है। अनुभवी शिक्षक विषय को किस तरह पढाते हैं, यह बताने के लिअे अिन दो लेखों को दिया गया । हम यह चाहते हैं कि अन्य स्तरों–बुनियादी–पूर्व बुनियादी अित्यादि में, दशमिक मापतौल की जानकारी, दैनिक प्रवृत्तियों का अुपयोग करते हुअे किस प्रकार देना अुचित होगा, अिसके बारे में अेकाध लेख "नई तालीम" में दें । अनुभवी शिक्षक अगर अपनी डायरी के कुछ पन्नों को लेख के रूप में तैयार करके भेजेंगे तो अुससे और मित्रों को भी लाभ होगा । विशेष तौर पर प्रारंभिक कक्षाओं के अनुभव अधिक अुपयोगी होंगे । –सपादक]

अिस अध्ययन योजना के पिछले चार भागों का पठन करने के बाद विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव और अभ्यास कराया गया । वैसे तो हमेशा अुन्हे कअी कार्यों में मापतौल से सरोकार पडता है किन्तु अिस अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित प्रवृत्तियों में अिसका विशेष ध्यान रखा गया ।

१. बगीचे से अुत्पादित भाजी का तौल ।

२. रसोअी घर में भोजन सामग्री का तौल ।

३. दूध का तौल ।

४. सहकारी कोठार में माप तौल ।

५. कपडे आदि की लंबाअी, मीटरों में ।

६. बढअीगिरी में लकडी का घनफूट निकालने में ।

७. अन्य कामों में–वर्ग कमरे के क्षेत्रफल के सिलसिले में, खेत की पैमाअीश आदि में ।

यह सारा काम प्रत्यक्ष अुद्योग के समय होता है, अिसलिअे अलग समय देनेकी जरूरत नही पडी ।

विभाग ५ :– परिवर्तन सारणी

जब विद्यार्थियों को मॅट्रिक मापतौल से अच्छा परिचय हो गया और पुराने मापों के साथ नये माप का तुलनात्मक ज्ञान भी हो गया, तब परिवर्तन सारणियों का कार्य प्रारंभ किया । पुराने मापतौल को हर बार परिवर्तन करने की कोअी आवश्यकता नही, अगर अुसकी सारणियां बनाकर रख ली जायं तो प्रत्यक्ष कार्य में सुविधा होती है। अिस बात का ठीक-ठीक भान करा देने के बाद विद्यार्थियों ने सारणी बनाने का कार्य प्रारम्भ किया । हरेक ने अपने-अपने लिअे अधिक-से-अधिक सारणियां बना लेने का प्रयत्न किया ।

दो प्रकार की परिवर्तन सारणियां

१. साधारण परिवर्तन सारणी ।

२. मूल्य परिवर्तन सारणी ।

१. साधारण परिवर्तन सारणी

१. तोला से ग्राम ।

२. छंटाक से ग्राम ।

३. सेर से ग्राम और किलोग्राम ।

४. मन से किलोग्राम ।

५. गज से सेंटिमीटर और मीटर ।

२. मूल्य परिवर्तन सारणी ।

१. रुपया प्रति तोला से रुपया प्रति ग्रॉम अित्यादि ।

व्यवहार में अुपयोग की दृष्टि से देखा जाय तो निम्नलिखित परिवर्तन सारणियों को पढाना आवश्यक है ।

१. छटाक से ग्राम ।
२. सेर से किलोग्रॉम ।
३. गज से मीटर
४. मील से किलोमीटर
५. मन से किलोग्राम
६. रुपया प्रति सेर से रुपया प्रति किलोग्राम
७. नया पैसा प्रति सेर से नया पैसा प्रति किलोग्राम
८. रुपया प्रति गज से रुपया प्रति मीटर
९. नया पैसा प्रनि मील से नया पैसा प्रति किलोमीटर
१०. नया पैसा प्रति गज से नया पैसा प्रति मीटर ।

और भी कअी सारणीयाँ बन सकती हैं । फिलहाल अुपयोग के लिअे अितना ही अभ्यास करना आवश्यक समझा गया ।

अिन तालिकाओं के लिअे निम्नलिखित सूत्रों का अुपयोग करना होता है ।

१ किलोग्राम = १.०७१७ सेर
१ सेंटीमीटर = ०.३९७३ अिंच
१ मीटर = १.०९३६ यार्ड
१ छटाक = ५८ ३२ ग्रॉम
१ तोला = ११.६६ ग्रॉम

यहां पर यह भी बताना आवश्यक है कि सूत्र प्रत्यक्ष मापतौल करके देखे गये हैं । यदि प्रयोग शाला में वर्नियर और रासायनिक तराजू हों तो सेंटीमीटर और तोला का अिंच और ग्रॉम कितना होता है, यह भी देख सकते हैं । हमारे विद्यार्थियों ने रासायनिक तराजू का अुपयोग किया । वर्नियर नही होने के कारण अुसका काम नहीं कर पाये ।

विभाग ६

परिवर्तन सारणियाँ

(१) छटाक से ग्राम–परिवर्तन के समय अूपर दिये हुअे सूत्रों का यदि अुपयोग करना है तो दशमलव संख्या आयेगी । लेकिन मिलीग्राम *अितना छोटा नाप है कि अुसका छटाक की* तुलना में दुर्लक्ष कर सकते हैं । अिसलिअे पूर्ण ग्रॉमसख्या लेकर ही तालिका बनानी चाहियें ।

जैसे–

छटाक	१	२	३	४	५....१५
ग्रॉम	५८	११७	१७५	२३३	२९२-..८७५

(२) सेर से किलोग्राम–सेर की दृष्टि से ग्रॉम बहुत ही छोटा नाप है । ५ ग्रॉम का वजन भी दुर्लक्ष करने में हानि नही होगी । अिसलिअे सेर का किलोग्रॉम में परिवर्तन करते समय ग्रॉम में १० के निकटतम ग्रॉम का वजन सारणी में और व्यवहार में लेना अपेक्षित होगा–जैसे–

सेर	१	२	३	४..	३९
किलो-ग्राम	९३०	१.८७०	२.८००	३.७३०..	३६.३९०

(३) गज से मीटर–गज की दृष्टि से मिलीमीटर बहुत छोटा हिस्सा है । अिसलिअे ५ मिलीमीटर तक दुर्लक्ष करना साधारण ही होगा–

जैसे–

गज	१	२	३...	१०
मीटर	०.९१	१.८३	२.७४...	९.१४

(४) मालसे किलोमीटर–मीटर की लंबाओ किलोमीटर या मील की दृष्टि से बहुत छोटी होती है। सेंटिमीटर की लंबाओ तो अुससे भी छोटी होती है और दुर्लक्ष किया जा सकता है। व्यवहार में १० मीटर के निकटतम अंतर लेंगे।

मील	१	२	३...	१०
किलो-माटर	१.६१	३.२२	४.८३...	१६.०९

मन से किलोग्रॉम–मन का मतलब है बंगाली मन। मन की दृष्टि से मिलीग्रॉम और ग्रॉम भी बहुत छोटे वजन होते हैं। अिसलिअे निकटतम किलोग्रॉम व्यवहार में लेना अपेक्षित होगा–

मन–	१	२	३...	२०
किलोग्राम	३७	७५	११२...	७४६

साधारण सारणियाँ बनाने के बाद मूल्य परिवर्तन सारणियाँ बनाओ गयी। अिनके दो प्रकार हैं।

(१) रुपये में।

(२) नये पैसे में।

हरेक साधारण सारणी दो मूल्यों में बनानी पडती है।

सारणी क्रमांक (६)

रुपया प्रति सेर से रुपया प्रति किलोग्रॉम।

रुपये प्रति सेर		०	१०
०	रु. प्रति. कि. ग्रा.	०	१०.७२
१	,,	१.०७	११.७९
२	,,	२.१४	१२.८६
३	,,	३.२२	१३.९३
४	,,	४.२९	१५.००
५	,,	५.३६	१६.०८
६	,,	६.४३	१७.१५
७	,,	७.५०	१८.२२
८	,,	८.५७	१९.२९
९	,,	९.६५	२०.३६

सारणी क्रमांक (७)

नया पैसा प्रति सेर से नया पैसा प्रति किलोग्राम।

नया पैसा प्रति सेर	०	१०
०	०	११
१.	१	१२
२.	२	१३
३.	३	१४
४.	४	१५
५.	५	१६
६.	६	१७
७.	७	१८
८.	९	१९
९.	१०	२०

सारणी क्रमांक (८)

रुपया प्रति गज से रुपया प्रति मीटर।

रुपये / यार्ड	०	१०	२०	३०
०	०	१०.९४		
१	१.०९			
२	२.१९			
३	३.२८			
४	४.३७			
५	५.४७			
६	६.५६			
७	७.६६			
८	८.७५			
९	९.८४			

सारणी क्रमांक (९)

नये पैसे प्रति गज से नये पैसे प्रति मीटर

नये पैसे / यार्ड.	०	१०	२०
०	०	११	
१	१		
२	२		
३	३		
४	४		
५	५		
६	७		
७	८		
८	९		
९	१०		

सारणी क्रमांक (१०)

नया पैसा प्रति मील से नया पैसा प्रति किलोमीटर।

	०	१०	२०
०	०	६	
१	१	७	
२	१	७	
३	२	अित्र.दि	
४	२		
५	३		
६	४		
७	४		
८	५		
९	६		

औसतन अेक सारणी के अध्ययन के लिअे ४५ मिनिट अवधि आवश्यक हुअी। व्यवहार में सभी सारणियों का अुपयोग होता है। सारणी क्रमांक १, २, ६, ७ का अुपयोग रसोडे में और बगीचे से भाजी विक्री में होता है। सारणी ५ का अुपयोग लकडी खरीदने में (रसोडे के लिअे) और अन्य धान्य खरीदने के समय हुआ। सारणी क्रमांक ८, ९, ३ का अुपयोग वस्त्रस्वावलंबन के कार्य में हुआ। सारणी ४ और १० का अुपयोग प्रवास के समय हो सकता है।

सुझाव-वैसे ही पैमाइश के लिअे (लैंड सर्वे) अेक नयी सारणी बनाना आवश्यक होगा, जिसमें अेकड से हेक्टअर और वर्ग-गज से वर्ग-मीटर की तुलना होगी।

सहायक ग्रंथ :

१. मीट्रिक मेजर्स (अंग्रेजी त्रैमासिक), अंक-जुलाअी १९५८

प्रकाशन विभाग, केंद्रीय सरकार, नअी दिल्ली।

२. अुपरोक्त पत्रिका के अन्य अंक भी अुपयोगी होंगे।

३. लॉंगमैन सीनियर अरिथ्मेटिक (अंग्रेजी) प्रकाशन-लॉंगमैन ग्रीन कंपनी।

४. अिन्ट्रोडक्ट्री कॉलेज फीजिक्स-(अंग्रेजी) लेखक-आसवॉल्ड बूलेक्वुड।

५. हिन्दुस्तान अियरबुक लेखक-सरकार

६. अेन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका का लेख-"मेजर्स अण्ड वेट्स"

(पृष्ठ २९४ का शेषांश)

लिअे प्रवृत्त हुअे हैं अिसमें पीछे हटना नहीं है, पीछे देखना भी नहीं है। सत्य कार्य करनेवाले का कभी पतन नहीं होता है, वह आगे बढ़ता ही रहेगा। *अिस काम को करनेवाले के दिल में* निराशा कभी आनी नहीं चाहिये। मानव-धर्म में निराशा को स्थान ही नहीं है। वह आशावादी होना चाहिये। अिसलिअे मनुष्य भगवान पर विश्वास रखके आगे बढ़ते चला जाय।

प्रारम्भिक अवस्था में बच्चेकी शिक्षा की बात सोचने बैठें तो स्वाभाविक ही अुसको स्वास्थ्य रक्षा ही सबसे पहले आ जाती है और अुसके लिअे अुसकी मां की शिक्षा पहली जरूरत है। बच्चे के पहले महीनो में—अेक डेढ साल तक भी—"बालक की शिक्षा" का मतलब ही यह है कि अुसकी मा को यह सिखाया जाय कि अैसा-अैसा करने से बच्चे का स्वास्थ्य ठीक रहेगा, वह स्वाभाविक और निर्बाध विकास करता रहेगा। आगे चलकर अुसकी भावनाओ का समुचित दिशा में विकास हो, दुनिया के साथ अुसका प्रीतिपूर्ण सम्बन्ध रहे, अुसकी बुद्धि तेजस्वी और बोधमय बने, अिसके लिअे भी अुसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को होशियारी के साथ समझकर सभालना जरूरी है।

अिसके पहले के लेखो में बालक के अिन्द्रिय विकास, अुसकी चेष्टाओ और सम्बन्धों के बारे में लिखा है। यहा जन्म के पहले और पहले छह माह की आयु तक साधारण तौर पर स्वास्थ्य के बारे में जो दृष्टि रहनी चाहिये, अुसका जिक्र करेंगे। अिस समय के बच्चे का स्वास्थ्य बहुत कुछ अुसकी मां के स्वास्थ्य के साथ जुड़ा हुआ है। अिसलिअे अुनको अलग करके नही सोचा जा सकता है। शायद अधिकतर माता पिताओ को अिन बारीकियो में जाना सम्भव नही होता है। किन्तु क्या यह आवश्यक नही है कि अधिक-से-अधिक माता-पिताओ और शिक्षको को अिस विषय की जितनी भी अच्छी जानकारी हो सके, रहनी चाहिये, ताकि वे बच्चे के विकासक्रम को ज्यादा अच्छी तरह समझ सके, जो अुनके विवेकपूर्ण पालन के लिअे आवश्यक है।

पोषण :

बालक के स्वास्थ्य की सबसे पहली और मुख्य बात अुचित पोषण की है और अिसका ख्याल गर्भावस्था से ही शुरू करना चाहिये। जब निषेचित मानव बीज मा के पेट में बढना शुरू करता है तो अुसके सब टीश्यूज-धातु-मा के शरीर से ही आवश्यक पौष्टिक तत्व लेकर बढते है। अिसलिअे वह मां के शरीर पर अेक बडा ड्रेन (अुत्सारण) होता है। प्रकृति का नियम होता है कि अिस बढनी हुई खर्च की पूर्ति करने के लिअे पहले के दो तीन महीने के बाद मा की भूख भी बढनी है, अुसका आहार भी साधारण अवस्था से कुछ ज्यादा हो जाता है। यह बिलकुल स्वाभाविक रूपसे हो जाता है, मां को या दूसरे लोगो को अुनके बारे में सोचना भी नही पडता है। लेकिन अगर मा का आहार परिमाण में पर्याप्त होने पर भी कुछ आवश्यक तत्वो की अुसमें कमी रह जाती है, तो अुसका असर बच्चे से भी ज्यादा अुसके अपने शरीर पर होता है। बच्चे की हड्डिया बन रही है, तो अुसके लिअे आवश्यक सारा केलशियम्-चूना-मा के शरीर से लिया जाता है। और यह खास कर गर्भ क शुरू के महीनो में होता है। अगर अुस समय मा के आहार में केलशियम् की कमी रही तो भी बच्चा अपना आवश्यक केलशियम् अुसके शरीर से लेता ही है। फलत. मा की अपनी हड्डिया कमजोर हो जाती है, अुसको शरीर में कही कही पीडायें होती है, अुसके दात

भी केलशियम् के निवास के कारण विकृत और खराब हो सकते हैं। यह स्थिति और भी गंभीर अगर हो जाती तो अुसके कटिबन्ध पर अुसका भयंकर असर होता है। य हड्डियां चूने की अत्यधिक कमी के कारण अपना स्वाभाविक आकार खो देती हैं टेढ़ी हो जाती ह, जिससे मा को प्रसूति के समय बहुत तकलीफ हो सकती है। कभी कभी स्वाभाविक मार्ग से बच्चे का निकलना तक असंभव हो जाता है और अुसे आपरेशन करके निकालना पड़ता है।

हमारे देहात की स्त्रियां साधारणतया खुली हवा में काफी रहती हैं, अुन्हें सूर्य प्रकाश भी भरपूर मिल जाता है। सूर्यप्रकाश से अुनके शरीर में जीवनतत्व डि काफी मात्रा म पैदा होता है जिसकी वजह से वे अुपलब्ध केलसियम् का पूरा पूरा अुपयोग कर पाती हैं। अिसलिअे आहार में अिष्ट मात्रा में अुसकी पूर्ति न होने पर भी वे केलशियम् की कमी से अुत्पन्न गंभीरतर रोगों से बच जाती हैं। जो स्त्रियां शहरों के तंग मकानों के अन्दर ही अपना पूरा समय बिताती हैं और जिन्हें पर्दा में रहने की प्रथा है, अुनमें गर्भावस्था में और अुसके बाद केलसियम् की कमी से अुत्पन्न विकृतियां अत्यधिक पायी जाती हैं। अिस हालत में गर्भस्थ शिशु के अूपर भी अिसका असर दिखायी देता है, अुसकी हड्डियां अच्छी मजबूत नहीं बन पाती हैं, अुसका रिकट्स का रोग हो जाता है। वह कमजोर और दुर्बल हड्डियों को लेकर जन्म लेता है।

गर्भिणी मा के शरीर पर दूसरा सब से बड़ा अुत्तारण (झ्रन) लोहे का है। बच्चे का खून मा के खून से आवश्यक तत्व लेकर ही बनता है, अिसलिअे मा में रक्त की कमी अक्सर प्रकट होती है। अगर आहार में अुसकी पूर्ति नहीं होती तो मा कमजोर हो जाती है, अुसके मुंह में अक्सर छाले हो जाते हैं, अुसका पेट भोजन नहीं पचा सकता है। लेकिन मा के भोजन में लोहे की कमी होने पर भी बच्चा अपनी आवश्यकता भर ले ही लेता है, अैसा कम ही पाया जाता है कि जन्म के समय बच्चे में रक्त की कमी हो। मा के शरीर में रक्त की कमी होना बहुत साधारण है। अिसका असर अुसके स्वास्थ्य पर होता है, प्रसूति के बाद बच्चे की ठीक देखभाल करने के लिअे वह असमर्थ हो जाती है। दूसरे बच्चों की देखभाल में और अपने गृहकार्यों में भी अिसके कारण अुसे दिक्कत होती है तो अिसका असर सारे परिवार पर होता है।

अिसलिअे गर्भिणी मा का आहार संतुलित हो, खासकर अुसमें केलसियम् और लोहा यथेष्ट मात्रा में मिल जाय, यह अत्यन्त आवश्यक है। सब जीवनतत्व भी अुसे भरपूर मिलने चाहिये।

कुछ विशेष रोग

गर्भिणी मातायें जब बीमार पड़ती हैं, तो अुनमें से कुछ कुछ बीमारियां अैसी हैं, जिनका असर गर्भस्थ शिशु के अूपर होना है। यह वैद्यशास्त्र का विषय है और बहुत विस्तृत। यहां हम सिर्फ अक दो अैसे रोगों के बारे में *संक्षेप में बताने का प्रयत्न करेंगे, जो हमारे* देहातों में अक्सर पाये जाते हैं। अिनको अगर शुरूमें ही पहचाना जाता और गर्भिणी मा का ही ठीक ठीक अुपचार किया जाता है, तो सैकड़ों बच्चे अंगविकलता से और रोगों से बच सकते हैं, अिस बात के महत्व का भान पहले होना जरूरी है। देहात के शिक्षक या स्वास्थ्य सेविका

खुद तो अिन रोगो का अुपचार नही कर सकेगे, लेकिन अगर वे अिनको पहचानते हैं और अुनका परिणाम जानते है, तो मा बाप को अुचित सलाह दे सकते हैं, समुचित अिलाज कराने में अुनको प्रेरित कर सकते हैं।

सिफिलिस :

अिनमें मुख्य है सिफिलिस। यह अेक सामाजिक समस्या भी है। जो स्त्री-पुरुष अिससे पीडित हैं वे सकोच के कारण समय पर डॉक्टर के पास जाकर अिलाज नही करते हैं। अगर यह रोग पुरुष को होता है तो अुससे जरूर पत्नी को भी मिल जाता है। अिसके कीटाणु मा के रक्त में से गर्भस्थ बच्चे के शरीर में प्रवेश पाते हैं और कई विकृतिया पैदा कर देते हैं। अिससे ज्यादा तर तो बच्चा पेट में ही मर जाता है। बच्चा मरा हुआ पैदा होने के और गर्भस्रावो के मुख्य कारणो में से यह अेक है। अगर वह जीवित भी पैदा होता है तो भी थोडे दिनो में ही अुसकी मृत्यु की अत्यधिक सभावना है। बच भी जाता है तो भी कोई-न-कोई अगवैकल्य—बहरापन, गूगा होना, अन्धता अित्यादि—रह जाते हैं।

अिसका अेकमात्र अुपाय है गर्भावस्था के शुरू में ही मा का अुचित अिलाज करना। दपतियो में दोनो का साथ ही अिलाज होना जरूरी है, क्योकि नहीं तो अेक से दूसरे को फिर से यह बीमारी लग जायगी। ठीक समय पर अिलाज करने से मा-बाप दोनो पूरी तरह से रोगमुक्त हो सकते हैं और अुनकी सतान भी स्वस्थ होगी। अिस खतरे का बोध और अुचित अिलाज से खुद भी और बच्चे भी पूरी तरह से स्वस्थ हो सकते है, यह ज्ञान लोगो म होने से अिस समस्या का हल हो सकता है।

गोनोरिया :

अिस तरह की दूसरी बीमारी है-गोनोरिया। लेकिन यह बीमारी मा-बाप से बच्चे को लगती नही-याने सिफिलिस के जैसा अिस रोग से पीडित मा बाप की सन्तानो में यह रोग सक्रमित नही होता है। लेकिन जन्म के समय मा की योनि से रोगाणु बच्चे की आख में प्रवेश पाता है, वहा वह आख के कोमल धातुओ (टीश्यू) पर असर करता है, बच्चा थोडे ही दिनो में अन्धा हो जाता है। यह शायद कम लोग जानते होगे कि दुनिया में अन्धता का यह भी अेक मुख्य कारण है। जन्म के अेकदम बाद बच्चे की आंखो में सिल्वर नाअिट्रेट के १ % घोल का अेक-अेक बूद डालने से बच्चा अिस खतरे से पूरी तरह से बचता है। आजकल कअी अस्पतालो म यह नियमित रूप से किया जाता है। गाव की दाअियो के प्रशिक्षण का यह अेक आवश्यक अग होना चाहिये।

कुष्ठ और क्षयरोग :

अब अैसी दो बीमारियो का जिक्र करना आवश्यक है जो हमारे देश में बहुत साधारण हैं और जिनके बारे में लोगो का आम तौर पर अैसा ख्याल है कि वह मा-बापो से बच्चे के खून में आती हैं। ये हैं क्षयरोग और कुष्ठरोग। वास्तव में ये पैतृक नही हैं, लेकिन बहुत छोटी अुम्र में अिन रोगियो के साथ रहने से बच्चे को ये रोग जल्दी लग जाते हैं। यही कारण है कि अैसे रोगियों के बच्चे अक्सर अुन रोगो के शिकार होते हैं। जन्म के तुरन्त बाद अगर बच्चे को रोगिणी मा से अलग किया जाता तो अुसे दूसरे बच्चो से कुछ ज्यादा वह रोग होने की सभावना नही है। गर्भिणी मा अगर क्षयरोग से पीडित है, तो अुस बच्चे में अुस

रोग के प्रति प्रतिरोधक शक्ति कम रहती है, अिसलिअे अुसे बीमारी जल्दी लग सकती है। बहुत दफे अैसा भी होता है कि बचपन में ही अुसे बीमारी लग गयी, लेकिन कभी कभी वे रोगाणु कुछ साल तक सक्रिय नहीं होते हैं, तो रोग के लक्षण भी प्रकट नहीं होते हैं। अक्सर किशोरावस्था पहुंचकर वह प्रकट रूप से बीमार होता है।

बच्चे के बचाव के लिअे अुत्तम तरीका यही है कि जन्म के अेकदम बाद ही अुसे रोगिणी मा से अलग किया जाय, अुसका पालन नानी, दादी, मौसी, बुआ आदि कोई करे। रोगमुक्त होने के बाद—यानी अब अुससे बच्चे को बीमारी लगने का खतरा नहीं है, अैसा डाक्टर की पूर्ण सम्मति मिलने के बाद—वह अपने बच्चे को पास रख सकती है। लेकिन साधारण परिवारों में अिस तरह बच्चे को अलग रखना—अुसकी जिम्मेदारी और कोई अुठाना संभव नहीं होता है। अैसी हालत में यही सुझाया जा सकता है कि मा के साथ अुसका शारीरिक संपर्क कम से-कम हो, रातको अुसे कतई मा के पास न सुलायें। अिससे अुसकी मानसिक संतृप्ति और सुरक्षा बोध में हानि जरूर पहुंचेगी, लेकिन बीमारी का खतरा अुससे भी अधिक गौरव का विषय है।

अगर मा को कुष्ठरोग की बीमारी हो और वह अुसके लिअे दवाई ले रही हो तो अुस दवा का कुछ हिस्सा दूध के साथ बच्चे को मिलता रहेगा। अिसलिअे अेक हदतक रोग से बचने का अुपाय वही हो जाता है। साथ-साथ जहा तक संभव हो अुसे अलग कमरे में सुलायें, अुसके कपडे, बिस्तरे अित्यादि अलग रखें और मा का अुसे गोद में अुठाना कम से कम हो, यह ख्याल रखना भी जरूरी है।

जुकाम :

जिनको जुकाम हो या आंख आयी हो, अैसे लोगों से भी बच्चे को बचाना चाहिये। जुकाम बच्चे को बहुत जल्दी लग सकता है और बहुत तकलीफ देता है, दूसरी गंभीर बीमारियों का भी कारण बन सकता है—जैसे खासी, श्वास कीटों का सूजन-न्यूमोनिया-अित्यादि। लेकिन हमारे देश में आम तौर पर अैसी साव-धानी कम लोग रखते हैं, बहुतों का यह भी विश्वास नहीं है कि बच्चे के पास बैठ कर छींकने, नाक साफ करने जुकामवाले की नाक का पानी बच्चे के मुह पर लगने अित्यादि में कोअी दोष है। यूरोप, अमेरिका अित्यादि देशों में जहा लोगों को अिसका ज्ञान है, वे खुद ही बच्चों से अलग रहते हैं; जुकाम जिनको है, वे कभी बच्चों के पास जायेंगे नहीं। रोगों के संक्रमण और अुनसे बचने के अुपायों का ज्ञान आम जनता में शिक्षा के जरिये ही पहुंचाया जा सकता है।

सांक्रमिक रोगों के प्रतिबन्धक अुपाय :

मा के शरीर में जिन सांक्रमिक रोगों के प्रति प्रतिरोधक शक्ति है, वह खून के जरिये बच्चे को भी मिल जाती है और करीब छः महीने तक कायम रहती है। अिस समय के बाद बच्चे के शरीर में ही यह प्रतिरोधक शक्ति अुत्पन्न करने के अुपाय करना चाहिये। चेचक के प्रति टीका लगाना तो हमारे देश में भी कानून से लाजिमी है। कुछ अन्य रोगों से भी प्रतिबंधक सूइयां लगाने के द्वारा बच्चे की रक्षा करना जरूरी है। अिनमें मुख्य है—हैजा, टाअिफॉअिड, डिफ्थीरिया, काली खासी और टेटनस्-धनुर्वात। अिनमें से पहली दो बीमारियों को सूअी की दवाई अब अेकसाथ मिल जाती

(शेषांश पृष्ठ ३०७ पर)

हमारे सर्वोदय सम्मेलन लोक सेवकों के लिये अपने काम का मूल्यांकन कर भावी कार्यक्रम तय करने के अवसर हैं।

पिछले ६ वर्षों में भूदान यज्ञ के रूप में जो बीज बोया गया उसका एक विशाल वृक्ष बना है, जिसमें से विभिन्न कार्यक्रमों की शाखा-प्रशाखायें निकली हैं। आंदोलन का इस प्रकार का विकास स्वाभाविक ही था। हमारे काम का आरंभ करुणा के कार्यक्रम से हुआ। छठे हिस्से की माग से उसमें न्याय भावना मिली, ग्रामदान ने भूमि संबंधी हमारी कल्पना को पूरा कर दिया। किन्तु केवल भूमि के पुनर्वितरण का कार्यक्रम अपने में पर्याप्त नहीं था, उसके साथ जनता के विकास के अन्य कार्यक्रम—जैसे कि ग्रामोद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय आदि जुड़ने की भी जरूरत थी। ग्रामस्वराज्य ने हमारे कार्यक्रम को समग्रता दी। ग्रामस्वराज्य की कल्पना के साथ ही ग्राम संरक्षण और प्रत्येक व्यक्ति के संरक्षण का विचार आया, जिसमें से शान्ति सेना की कल्पना निकली। इस प्रकार पूर्ण रूप लेनेवाले इस कार्यक्रम को व्यापक जनसम्मति देने के विचार से सर्वोदय पात्र आया। यों आज हमारे पास एक संपूर्ण क्रांति का कार्यक्रम मौजूद है।

हमारी एक कमजोरी रही कि हमने कार्यक्रम को अविछिन्न नहीं माना। फलत ज्यों ज्यों नये नये कार्यक्रम आते गये, त्यों त्यों पुराने कार्यक्रमों में ढीलापन आता गया। विचार के विकास के साथ हमारे प्रत्यक्ष कर्म का विकास नहीं हो सका। हमने जो कार्यक्रम की योजना बनायी उसमें इस चीज का ध्यान रखना चाहिये कि हमारे कार्यक्रम के अगप्रत्यग परस्पर सुसबद्ध हों।

अब जब कि हमारे पास कार्यक्रम के इतने विभिन्न पहलू उपस्थित हैं, तब यह भी ध्यान देना होगा कि हम अपनी मर्यादित शक्ति के अनुसार काम को केंद्रित करें, अन्यथा उसमें शक्ति के बिखर जाने की संभावना है।

कार्यक्रम के बारे में योजना बनाते समय एक और महत्वपूर्ण चीज का ख्याल रखना चाहिये कि हमारी योजना वैज्ञानिक हो। उसमें वास्तविक परिस्थिति का भान हो, बार-बार काम का मूल्यांकन करने की व्यवस्था हो, तथा अपनी मर्यादा का ध्यान रखते हुए कार्यक्रम के द्वारा ही उस शक्ति में वृद्धि करने की योजना हो।

इसके अलावा और एक महत्वपूर्ण चीज यह है कि हालांकि हम कार्यकर्ता अपने एक अहिंसक संगठन द्वारा इस काम को हाथ में ले रहे हैं, तथापि अंतिम क्रांति तो व्यापक जनता के विधायक पुरुषार्थ से ही होगी। अत-अब हमारा कार्यक्रम ऐसा हो कि जिसमें से कुछ हिस्सा जनता स्वयं तुरंत उठा ले और भावी कार्यक्रम भी क्रमश जनता का बनता जाय।

यह स्पष्ट है कि कोई भी कार्यक्रम प्रत्येक तफसील में भारत जैसे विशाल देश को लागू नहीं हो सकता। सर्व सेवा संघ की ओर से तो कार्यक्रम को दिशा ही दिखायी जा सकती है और प्रादेशिक तथा जिला सर्वोदय मंडलों द्वारा उसे कार्यान्वित करने की तफसीलवार योजना बनानी चाहिये।

अिस समय सघ के अधिवेशन में विभिन्न प्रातो ने अपने कार्यक्रम की योजनायें दी। अुनके आधार पर नीचे लिखा कार्यक्रम सुझाया गया है।

हमारा सारा कार्यक्रम ग्रामस्वराज्य, जिसमें नगरो में बसनेवाले, विशिष्ट समुदाय भी शामिल है–के कार्यक्रम पर अेकाग्र हो। कार्य-क्रम का जो कदम अुठाया जाय वह अिस ध्येय को मद्दे नजर रखकर अुठे। अिस चीज का भी बराबर ध्यान रहे कि ग्रामस्वराज्य की नीव तभी पडेगी जब भूमि की मालकियत गाव की हो।

ग्रामस्वराज्य में भी हमारी शक्ति अेकाग्रता से व्यापक विचार-प्रचार, सघन कार्यक्रम, कार्य-कर्ताओ के प्रशिक्षण तथा आदोलन के खर्च की व्यवस्था में लगे।

व्यापक विचार-प्रचार

हमारे काम के दो मुख्य अग है। अुसकी व्यापकता तथा अुसकी गहराओ–य दोनो अक दूसरे के पूरक है–बाधक नही। यह स्पष्ट है कि जब तक सारा सदर्भ नही बदलता तब तक काम का कोओ छुटपुट नमूना नही बन सकता, और दूसरी ओर व्यापक काम की गहराओ में जाकर किये हुअे काम से ठोसपन मिलता है।

व्यापक काम दो प्रकार के हो। अेक जनता द्वारा तथा दूसरा लोक सेवको द्वारा।

पचायती राज के नये प्रयोग के आरभ से अब गाव में सर्वोदय विचारो को कार्यान्वित करने का प्रयत्न जनता स्वय कर सकती है। अिसे कार्यान्वित करने में सबसे बडी बाधा है विषमता। अुसे दूर करने के लिअे तात्कालिक और व्यवहार्य कार्यक्रम जनता खुद अुठाये। गावो में आरभिक विषमता के कारण पचायती राज बेकार न बन जाये अिसलिअे कम से कम निम्नलिखित बाते हो

(१) गावो में कोओ भूखा न रहे।

(२) गाव में हर किसी को काम देने की योजना बने।

(३) अेक साल का गल्ला सग्रहीत करने की व्यवस्था हो।

(४) जमीन महसूल की आय गाव को मिले।

(५) ग्राम की योजना गाव द्वारा बनायी जाय। राजनैतिक विषमता गावो में प्रवेश न कर पाये, अिसलिअे,

(१) ग्राम तथा जनपद या म्युनिसिपालिटी के स्तर पर पक्ष पद्धति का चुनाव दाखिल न हो। अिसके विशेष प्रयत्न किये जाय।

(२) सारे निर्णय सर्वानुमति से या सर्व-सम्मति या दोनो की असफलता पर चिठ्ठे या अन्य किसी सर्वसम्मत तरीके से हो।

लोक सेवक व्यापक प्रचार की दृष्टि से नीचे लिखे कार्यक्रम अुठायें

(१) अखड पदयात्रा।

(२) सामूहिक पदयात्रा।

(३) साहित्य प्रचार।

पदयात्राओं में भूदान तथा सपत्तिदान मागा जाये, ग्रामस्वराज्य, ग्रामसकल्प का विचार समझाया जाय, राष्ट्र के तात्कालिक तथा स्थानीय प्रश्नो के सर्वोदय दृष्टि से जो हल हो वे भी सुझाये जाय। दाता सघ बनाये जाय तथा अुनके जरिये भूमि प्राप्ति का कार्यक्रम किया जाय। समस्त ग्रामदानी गावो से तथा भूदान किसानो (आदाताओ) से सतत सबध रखने का यत्न किया जाय। अुनमें निर्माण काम भी यथासभव किया जाय। जनता का नैतिक स्तर अुठाने के लिअे मद्यपान निषेध आदि के जनआदोलन का समर्थन किया जाय।

देशभर में प्राप्त भूमि का वितरण या वितरण के लिये अयोग्य भूमि की छटनी की जाय। भारत के सभी प्रांत अगले साल अिस काम को पूरा कराने का भरसक यत्न करें। अिस काम को पूर्ण करने के लिये रचनात्मक संस्थाओं से सहयोग लिया जाय। तथा शासन से भी आवश्यक सहायता ली जाय।

सघन कार्य :

जहां तक संभव हो कम से कम अेक लाख जनसंख्या के क्षेत्र में समग्र कार्यक्रम को सर्वांगीण दृष्टि से जनता के अभिक्रम से अमल में लाने का यत्न हो। अिसमें ग्रामदान, ग्रामोद्योग, जिनमें विज्ञान की दृष्टि हो, नई तालीम आदि का प्रयोग हो, सारे क्षेत्र में शासनमुक्ति की दृष्टि से शांतिसेना का गठन हो तथा व्यापक जनसम्मति के लिये सर्वोदय पात्र की स्थापना हो। अिस प्रयास को सफल करने के लिये रचनात्मक संस्थाओं से सहयोग लिया जाय। यह सारा काम जनाधारित हो, अिसका ध्यान रहे।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण :

अिस सारे कार्यक्रम के लिये यह जरूरी है कि हमारा सारा काम नअी तालीम की दृष्टि से चले। कार्यकर्ताओं की योग्यता का विकास हो तथा परस्पर स्नेहभाव का विकास हो। अिन कारणों में अेक ओर जहां कार्यकर्ताओं ने अनन्य निष्ठा दिखायी है, वहां दूसरी ओर हमारे में परस्पर भाओचारे की भावना की कमी भी दीख पड़ी है। अतअेव अिसकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। पूरा समय के कार्यकर्ताओं की अपेक्षा आंशिक समय देनेवाले कार्यकर्ता भी बढ़ाये जायं तथा अुनको काम देने की व्यवस्था हो।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण में हमें यह ध्यान में रखना होगा कि प्रत्यक्ष तालीम के काम से भी सारे कार्यक्रम को वेग मिले, अुसमें कार्यकर्ता बंध न जाय, कार्यक्रम द्वारा तालीम (अिन-सर्विस ट्रेनिंग) यह हमारी विशेषता बननी चाहिये। आम लोगों के शिक्षण की दृष्टि से श्रम शिविर आदि कार्यक्रमों को आयोजित कर नये नेतृत्व का निर्माण करने की कोशिश की जाय। परस्पर गुण विकास में सहायक बनना चाहिये, परस्पर के दोषों का हिस्सेदार बनना चाहिये और अेक दूसरे के योगक्षेम के सहयोगी बनना चाहिये।

आन्दोलन का खर्च :

यह जरूरी है कि आन्दोलन का काम आरंभिक कठिनाओी के कारण ही रुक न जाय। दूसरी ओर आर्थिक बहुतायत के कारण हमारी तपस्या भी कम नहीं होनी चाहिये। आर्थिक आवश्यकता पूरी करने की दृष्टि से संपत्तिदान, सर्वोदय पात्र, सूतांजलि, सूत्रदान, अन्नदान, तथा मित्रों से सहायता प्राप्त करने के लिये विशेष प्रयत्न हों। आवश्यकतानुसार चंदा भी अिकट्ठा किया जा सकता है। परंतु यह सच है कि अभी तक हमने अपने कार्यक्रम के अिस अंश पर यथावश्यक ध्यान नहीं दिया है। अगले साल केवल अिस कारण से आंदोलन में रुकावट न आये अिसकी ओर हमें लक्ष्य देना चाहिये। जिला और प्रांतीय स्तर के कार्यकर्ता अिस संबंध में विशेष रूप से सहायक हों।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण तथा आरंभिक सहायता प्राप्ति के कार्यक्रम की दृष्टि से कुछ अंतर प्रांतीय कार्यकर्ताओं से भी सहायता मिलनी चाहिये। सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति अिसके लिये विशेष योजना बना कर अुसे कार्यान्वित करे।

---

१२ वां सर्वोदय सम्मेलन

अेक कार्यकर्ता

"अिस बार सर्वोदय सम्मेलन सेवाग्राम में होगा।" "१२ वर्ष के बाद, अेक पर्व के बाद सम्मेलन सेवाग्राम में हो रहा है, अिसका अेक बडा महत्व है" ये वाक्य सुनते-सुनते आखिर सम्मेलन निष्पन्न हो गया। क्या सचमुच अुसकी निष्पत्ति अुतनी ही सफल हुअी जितनी सबने अपेक्षा की थी। सेवाग्राम में सम्मेलन हो रहा है, अिस बात का बखान जितना हो रहा था, क्या अुतनी सिद्धि सम्मेलन को प्राप्त हुअी। निष्पत्ति की सफलता या सिद्धि कितनी प्राप्त हुअी, यह सेर-छटांक में कहने की बात अगर होती तो शायद लोगों में काफी मतभेद हो जाता। सबकी तराजू और बाट अिस तरह के मापतौल के लिअे अलग ही होते हैं।

किन्तु अिसमें कोअी शक नही कि जिस तरह का सतोष और आत्मीयता हमने अिस सम्मेलन में महसूस की, अुतनी पहले कभी नही की थी। जबकि अनेक कार्यकर्ताओं के मन में थोडी-बहुत निराशा-सी छा गयी थी, कुछ को काम सूझ नही रहा था, असे समय सेवाग्राम के सर्वोदय सम्मेलन ने अुनमें और सभी में अेक नयी जान फूक दी। कुछ साथी अपने आपको अकेलासा-महसूस करने लगे थे, कुछ सोच रहे थे कि सर्वोदय विचार की भूख लोगो में कम हो गयी है। असे मित्रों ने महसूस किया कि भूख कम तो किसी हालत में नही हुअी है, बल्कि वह भूख सारे संसार में फैल गअी है, हमारे साथी केवल हिन्दुस्तान में नही बल्कि सारी दुनिया में फैले हैं। सम्मेलन की ओर से जो निवेदन प्रकाशित किया गया, अुसी में कहा गया है-"दुनिया के कुछ देशों में अहिंसक प्रतिकार के प्रत्यक्ष प्रयोग भी हुअे हैं। अिस सिलसिले में हमें अमेरिका में नीग्रो जाति द्वारा सामान्य नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिअे किये गये सत्याग्रह का तथा आणविक अस्त्रों के खिलाफ-यूरोप, अमेरिका और आफ्रिका में किये गये प्रतिकारों का विशेष स्मरण होता है। कुछ जगह लोगों के सामूहिक जीवन में सर्वोदय विचार को अपनाने के प्रयोग भी शुरू किये हैं।" अिससे सघशक्ति बढेगी नही तो होगा क्या?

२० से २६ मार्च तक सर्व सेवा संघ की बैठक में और २६ से २८ मार्च तक खुले अधिवेशन में, नौ दिन तक सहजीवन और सहचिंतन का समृद्धशाली अनुभव अिस सम्मेलन की विशेषता रही। देश के कअी मित्र कुछ दिनों से आपसी भाअीचारे की चर्चा कर रहे थे, अुसका बडे पैमाने पर यह पहला प्रयोग था। छोटी-छोटी टोलियो में बैठकर चर्चा करने की पद्धति वैसे तो पुरानी है, किन्तु सघ के लिये वह नयी थी। और जब अगले कार्यक्रम के बारे में चर्चा करने के लिअे हम लोग १०, १०, १५-१५ की टोलिया बनाकर ढाअी घटे तक बैठे, तो अेक नअी दिशा ही खुल गअी। बडी-बडी बैठकों में कुछ अिने गिने लोग ही हिस्सा लेते है, अिन छोटी-छोटी टोलियों में अधिकतर साथियो ने खुलकर अपना हिस्सा अदा किया। वह दृश्य भी कितना अुत्साहवर्धक था-२५-३० छोटी-छोटी टोलिया मडप में बैठी हुअी थी, सभी प्राणमय दीख रही थी। अेक ही समय में देख सकते थे कि अनेक लोग चर्चाओं में सक्रिय भाग ले रहे हैं। आशा है

कि हम आगे चलकर यह पद्धति और भी अधिक अिस्तेमाल कर सकेंगे ।

संघ की बैठक के समय रोज सुबह अेक घंटा श्रमदान का काम होता था, अुससे भी वातावरण जानदार बना । पहले तो सोचा था कि खुले अधिवेशन के समय यह कार्यक्रम चल नहीं सकेगा, किन्तु देखा यह कि हरेक का यही आग्रह था कि वह कार्यक्रम आखिर दिन तक चले । सैकड़ों लोगों को बिलकुल दिल्ल के साथ अेकसाथ काम करते देखना भी अेक दृश्य था ।

संघ की बैठक और सम्मेलन में वैसे तो अनेक प्रश्नोंपर चर्चा हुअी, किन्तु खास खास विषय निम्नलिखित थे,–

(१) हमारा आगे का काम ।

(२) नई तालीम के क्षेत्र में काम किस प्रकार हो ।

(३) भाषा का सवाल ।

(४) गो सेवा, प्रकाशन और निर्माण के कार्य की दिशा ।

(५) भारत–चीन संबंध ।

(६) आफ्रिका में जाति समस्या ।

अुपरोक्त सभी विषयों पर संघ ने अपने वक्तव्य, योजना और सुझाव प्रगट किये हैं ।

सफाअी शिबिर द्वारा जो दो गांवों–सेवाग्राम और वरूडा–में काम हुआ वह सराहनीय था । लगभग तीन सौ स्वयंसेवकों ने दिन-रात सेवा कार्य करके हरेक को आराम पहुंचाया । अुनका शिबिर अुत्तर बुनियादी भवन के छात्रालय में बड़े सुसयोजित ढंग से चला ।

३४ टोलियां सारे देश से पदयात्रा करती हुअी सेवाग्राम पहुंची थीं, सेवाग्राम में प्रवेश करते ही वे बापू कुटी के दर्शन करने के लिअे पहले जाती थीं । पहले दो दिनों में अुनके नारों, कीर्तन और भजनादि से तो वातावरण में रंग ही छा जाता था ।

सम्मेलन पर अिस टिप्पणी के अंत में हम यही कहेंगे कि सम्मेलन से हमारी अपेक्षा से अधिक हमें मिला । अनेक साथियों ने जो सहायता और प्रेम हमें दिया अुसके कारण हम समृद्ध महसूस करते हैं और हृदय से अुनके कृतज्ञ हैं ।

(पृष्ठ ३०२ का शेषांश)

हैं और बाकी तीनों की अेक साथ । टाअिफोइड और हैजे की सूअी हर साल या जब कभी आसपास के क्षेत्र में अिन रोगों का प्रकोप हो, तो देना चाहिये । डिफ्थीरिया, काली खांसी और धनुर्वात के लिअे संयुक्त सूइयों को अेक अेक महीना का अंतर छोड़कर तीन दफे लेना पड़ता है । अुससे जो प्रतिरोधक शक्ति मिलती है वह दस साल तक कायम रहती है । अुम्र अुम्र के बाद आम तौर पर काली खांसी और डिफ्थीरिया कम ही होता है । अिस प्रकार अगर बच्चों को अिन रोगों से बचाया जाय तो कोअी शक नहीं कि आगामी पीढ़ी का स्वास्थ्य का स्तर काफी सुधरेगा ।

देश के सब बच्चों की समय समय पर स्वास्थ्य परीक्षा की व्यवस्था हो, अुन्हें जो भी रोग या कमियां हों, समय पर पहचान कर अुनका अुचित अिलाज किया जाय, अिसका व्यापक आयोजन राष्ट्रीय पैमाने पर ही होना चाहिये । रोगनिवारण के अुपायों की भी यही बात है । समझदार माता पिताओं और शिक्षकों के द्वारा आम जनता में अिसकी आवश्यकता का बोध फैलाना अिस दिशा में पहला कदम ही है ।

(अखिल भारत सर्व सेवा सघ की वार्षिक बैठक बारहवे सर्वोदय सम्मेलन से ठीक पहले सेवाग्राम में ता. २० से २६ मार्च तक हुअी । अिस बैठक में अेक विचारणीय प्रश्न यह भी था कि हिंदुस्तानी तालीमी सघ और सर्व सेवा सघ के सगम के सन्दर्भ में और नई तालीम के विकास की दृष्टि से भी नई तालीम का भावी कार्यक्रम क्या रहे । अिस विषय की चर्चा के *निष्कर्ष यहा प्रस्तुत कर रहे हैं । अिसमे अगला लेख "हमारे काम का स्वरूप क्या रहे ?"* भी अिसी सिलसिले में दिया जा रहा है । —सपादक)

अगले साल हम क्या करे ?

सर्व सेवा सघ की बैठक में हुअी चर्चा के निष्कर्ष :

गत मअी १९५९ में पठानकोट में सर्व सेवा सघ और हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने अपने काम का और अपनी सस्थाओ का सगम करने का निश्चय किया था । अुस समय समूचे आन्दोलन के सदर्भ में नई तालीम के भावी कार्यक्रम की अेक रूपरेखा तैयार की गयी थी । सघ ने अिस कार्यक्रम को अमली रूप देने के बारे में विचार किया है और निकट भविष्य में अिसके लिअे क्या कदम अुठाये जाने चाहिये अिस पर खास तौर से सोचा है ।

नअी तालीम का विचार अेक अलग कार्यक्रम के रूप में नहीं, बल्कि अेक अैसे तत्व के रूप में किया जाना चाहिये, जिसका तकाजा है कि सर्व सेवा सघ के खादी, खेती, गो-सेवा और ग्रामोद्योग आदि सारे कार्यों का मुख्य लक्ष्य अेक ही हो मानव निर्माण । ग्राम स्वराज्य हमारा लक्ष्य है, लेकिन आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सास्कृतिक आदि सभी पहलुओ से ग्राम स्वराज्य तभी सिद्ध हो सकता है, जब अुसके लिअे परिपक्व बुद्धि के और पूरी तरह विकसित मनुष्यो का समाज यत्नशील हो । अिसलिअे सर्व सेवा सघ के आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिक कार्यक्रम मुख्यत शैक्षणिक कार्यक्रम होने चाहिये ।

अिस दृष्टि से यह आवश्यक है कि अगले वर्ष के लिअे सर्व सेवा सघ और प्रान्तीय सर्वोदय मडल अपने काम की योजना अिन मुख्य लक्ष्यो को सामने रखकर बनायें ।

१. अपने मौजूदा और नये भर्ती होनेवाले कार्यकर्ताओं के नवसस्कार के लिअे प्रशिक्षण की अैसी व्यवस्था हो, जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र में शैक्षणिक दृष्टि से काम करने के लिअे तैयार हो सकें ।

२ हर लोकसेवक की और रचनात्मक कार्य की समस्त शाखाओ में काम करनेवाले हर कार्यकर्ता भाअी-बहन की अपनी यह जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिये कि सर्वोदय विचार के प्रति आम लोगो की सहानुभूति जगाना अुसका अपना काम है । समाज के नैतिक स्तर से और राष्ट्रीय शिक्षा के गुणधर्म से सबध रखनेवाले सारे मामलो के बारे मे, फिर वे स्थानीय स्वरूप के हों या राष्ट्रीय स्वरूप के हो या अन्तर राष्ट्रीय स्वरूप के, हमें जनता में आवश्यक जागृति पैदा करने की जरूरत है । अिस सबध में हमारी दृष्टि केवल आलोचनात्मक न हो,

बल्कि जिन बुराइयों के प्रति हम अपना दुःख प्रकट करते हैं, अनके निराकरण के लिअ भावात्मक सुझाववाली हों। शिक्षा की दृष्टि से जिन बुराअियों के बहुत गंभीर परिणाम आ रहे हैं अनमें से ये कुछ हैं –

शिक्षा-संस्थाओं में हिंसा के प्रति अनुराग पैदा करने का अेक व्यापक वातावरण रहा है। और बालकों के साथ व्यवहार के मामले में अेक बड़े पैमाने पर यह माना जा रहा है कि अनमें राष्ट्रीय सेवा के लिअ आवश्यक अनुशासन तभी अत्पन्न हो सकेगा जब अनके लिअ फौजी तरीके अपनाये जायेंगे।

पाठशालाओं के प्रबंध में और अनके रोज रोज के जीवन में छोटे-छोटे अप्रामाणिक व्यवहारों का व्यापक प्रचार।

पाठशालाओं की वर्तमान परीक्षा पद्धति और निरीक्षण पद्धति के दुष्परिणाम।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की देखरेख में जो संस्थायें सेवाग्राम में अथवा दूसरे स्थानों में विकसित हुअी हैं और ग्रामदान या ग्राम स्वराज के कारण जिन क्षेत्रों में सघन काम शुरू हुआ है, अन सब का सर्वेक्षण अिस दृष्टि से किया जाय कि जिससे अनके शैक्षणिक साधनों का अधिक से अधिक अपयोग हो सके। अैसे केन्द्रों को अपनी शक्ति कृषि व अुद्योग के क्षेत्रों में सामाजिक शिक्षण के काम में अुच्च शिक्षण के क्षेत्र में अुत्तम बुनियादी का स्वरूप निर्माण करने के काम में और अनुसंधान के काम में केंद्रित करनी चाहिये। अेक अहिंसक और शोषणहीन समाज के संदर्भ में आज अिस बात की विशेष आवश्यकता है कि विज्ञान का अपयोग औजारों और कार्यपद्धति के सुधार में किया जाय।

सर्व सेवा संघ अपनी प्रबंध समिति से निवेदन करता है कि वह तुरंत ही अेक अैसी विशेष काम चलाअू समिति नियुक्त करे जो अिस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में सब की और प्रांतीय सर्वोदय मंडलों की सहायता कर सके और अिसकी आर्थिक जिम्मेदारियों पर भी विचार करे।

हमारी जनता में अेक तरफ कुछ सुसंस्कारों के बीज हैं, दूसरी ओर अज्ञान की गहरी पैठी हुई घास है। हमारी वर्तमान शिक्षा अुस अज्ञान की घास को खोद निकालने का कुछ प्रयत्न कर रही है, परंतु जिस प्रकार हमारे जैसे केवल पढ़े लिखे आदमी खेत में निंदाई करने लगें तो बाजरे और घास का भेद न जान सकने के कारण घास के साथ बाजरा भी अुखाड़ डालेंगे, वैसे ही हमारी मौजूदा शिक्षा अज्ञान रूप अंधकार के साथ सुसंस्कार के बीजों को भी खोद डालती है। नींदनेवाले को अुपयोगी वनस्पति और जंगली वनस्पति के बीच का भेद जानना चाहिये, वैसे ही हमें भी अपनी जनता के अज्ञान और अुसके सुसंस्कार दोनों को पहचानना चाहिये।

किशोरलाल मशरूवाला

हमारे आगे के काम का स्वरूप क्या हो ?

राधाकृष्ण

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का सर्व सेवा सघ के साथ सगम होने से हम सब के सामने *यह अेक मुख्य सवाल अुपस्थित हुआ है कि अब* आगे के काम का स्वरूप क्या हो। सगम का मतलब ही हमने यह माना है कि अब काम ज्यादा व्यापक और गहरा होना चाहिये, सर्व सेवा सघ की सब प्रवृत्तियाँ नई तालीम का रूप लेगी। ग्रामदानी गावो मे नवनिर्माण की या खादी काम को नया मोड देने की बात जब हम सोचते है नो यही अधिकाधिक स्पष्ट होता है कि यह सब लोक शिक्षण का ही काम है। शिक्षण से अलग होकर अकेला आर्थिक कार्यक्रम अेकागी रहेगा। नई तालीम अपने समग्र स्वरूप में केवल अेक शिक्षण पद्धति नही, बल्कि जीवन के बारे में अेक मौलिक विचार है। समाज मे मूल्य-परिवर्तन का काम आखिर शिक्षा के जरिये ही सध सकता है। अिस विचार को कार्यान्वित करने के लिअे अब अेक ठोस कार्यक्रम अपनाने का प्रश्न हमारे सामने है।

बीस बाईस सालो से नई तालीम का काम अेक विशेष दिशा में चला है। अिस अर्से में सस्थाओ के द्वारा नई तालीम पद्धति के अनुसार बच्चों से लेकर सयानो तक के शिक्षण के प्रयाग हुअे, जिसमें सामूहिक जीवन और परिवारिक भावना का विशेष महत्व रहा। अिन्ही प्रयत्नो मे से पूर्व बुनियादी, बुनियादी, अुत्तर बुनियादी, विश्वविद्यालय और प्रौढ शिक्षण-अिन विभिन्न स्तरो में शिक्षा पद्धतियो के कुछ स्वरूप विकसित हुअे। प्रत्यक्ष शिक्षा कार्य के अलावा कही-कही शिक्षण कार्य के अग के तौर पर ही ग्राम निर्माण, सफाई, आरोग्यरक्षा, खेती गोपालन अित्यादि कार्यक्रमों के द्वारा आसपास की जनता के जीवन पर भी असर डालने का *प्रयास हुआ है।*

अिसी बीच केंद्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने राष्ट्र की प्राथमिक शिक्षा की नीति के तौर पर बुनियादी तालीम को मान्यता दी। कअी राज्य सरकारो ने सारी प्राथमिक शालाओ को बुनियादी शालाओ में परिवर्तित करने की घोषणा की। अिस ओर योजनाबद्ध काम भी शुरू हुआ। जगह-जगह पर *शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय भी खोले गये।* लेकिन अिन सब के बावजूद काम की प्रगति के बारे मे न सरकार खुश है, न जनता और न हम कार्यकर्त्ता। अिस पद्धति पर लोगो का विश्वास भी न जम पाया। स्वतत्रता प्राप्ति के बारह साल के बाद भी सविधान की शर्त के अनुसार राष्ट्र के सब बच्चो को नि शु क और *अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा नही मिल पा रही है।* यहा तक की तीसरी पचवार्षिक योजना के अत तक भी करीब ७५% बालक ही-और वह भी छ स ग्यारह साल तक की अुम्र तक के ही, चौदह साल नही-शालाओ म शिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। सार्वजनिक शिक्षा के सामने अभी तक खर्च का सवाल रोड़ा अटका कर खडा हुआ है। अिसका मतलब यही हुआ कि तालीम म अुद्योग के जरिये अिस समस्या को हटाने की बापू की मौलिक कल्पना को अिस लबे अर्से के बाद भी हम कही प्रामाणिक तौर पर सिद्ध करके नही दिखा सके। अपनी शिक्षण पद्धति को शत-प्रतिशत स्वावलबी हम भले ही न बना सके, राष्ट्र की अिस समस्या के हल में बाईस साल

के हमारे काम के अनुभव से कुछ तो लाभ होना चाहिये था।

अिसी बीच भूदान-ग्रामदान आन्दोलन के साथ-साथ नई तालीम में अेक नई प्रेरणा आ गयी। देशभर की अनेक बुनियादी शालाओ ने अिस आदोलन में अुत्साहपूर्वक भाग लिया। ग्रामदान के चढते हुअे आरोहण के सदर्भ में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने १९५७ में यह निर्णय लिया कि अब हमें ग्राम-स्वराज्य की भूमिका में काम करना होगा, नई तालीम अब केवल शालाओ में सीमित नही रह सकती। गाव की समस्याओ और प्रवृत्तियो को ही केन्द्र बनाकर शाला में शिक्षा का कार्यक्रम चलाना होगा, ग्रामस्वराज्य की प्राप्ति में नई तालीम को पूरी शक्ति लगानी है। अब गाव में कोअी भूखा न रहे, बेकार न रहे, गाव की जमीन सब की जमीन हो, सबको शिक्षण मिले, यही नई तालीम का कार्यक्रम बना और अिन सब प्रवृत्तियों को शिक्षा का माध्यम बना कर चलाने का सोचा गया। यह अेक बडा क्षेत्र नई तालीम के लिअे खुल गया है। आगे के कार्यक्रम में अिस निर्माण के काम को बडे महत्व का स्थान रहेगा। गाव के कार्यकर्ताओ को अपने ही बल पर कैसे खडा किया जाय, अुनके प्रशिक्षण की व्यवस्था क्या हो, ग्राम-निर्माण के काम में गाववाले ही नेतृत्व लेकर आगे आ जाय, ग्राम सभा का लोकशिक्षण का जरिया कैसे बनाया जाय, ये सब प्रश्न आज हमारे सामने अुपस्थित हैं। जहा जहा ग्रामदानी या ग्रामस्वराज्य के क्षेत्रो में कार्यकर्ता बैठे है और अिस काम को अेकाग्रता और गहराअी से करने लगे है वहा हमारा नया काम और नया शोध आरभ हुआ। क्षेत्र-क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ विभिन्न हैं, अुनके प्रश्न भी विभिन्न हैं, अिसलिअे हम किसी अेक को नमूना नही मान सकते है। अब समय आया है कि विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्ता अेक साथ बैठ कर अपने अभी तक के अनुभवो का आदान-प्रदान करे और गहराअी के साथ सोचे कि सारे निर्माण काम को तालीम की दिशा में कैसे मोडें।

पिछले बीस सालो के प्रयत्न से देश के अलग अलग कोनो में नई तालीम की कअी सरकारी, गैर सरकारी सस्थाअें खडी हुअी है, जिनमे कुछ बहुत अच्छा काम भी हुआ। कुछ साल पहले-गाधी निधि के शुरूआत के दिनो में-अेक अैसी योजना भी बनी थी, जिसके अनुसार हर प्रदेश में पूर्व बुनियादी से लेकर अुत्तम बुनियादी तक के अेक अेक शिक्षाकेन्द्र नमूने के तौर पर चलाना था। लेकिन आज अिन सस्थाओ के सब कार्यकर्ता महसूस कर रहे हैं मानो नई तालीम की प्रगति के सामने अेक दीवार-सी खडी हो गयी हो। अुनके सामने अनेक समस्यायें है। अिनमें से कुछ तो अपनी कार्यक्षमता से सबन्धित है। कई समस्याअें सरकार की नीति और शिक्षा विभाग के नियम आदि से अुत्पन्न हुअी हैं। अिसमें कोअी शका नही कि हमें अपने काम म-चाहे वह अुद्योग हो समवायपद्धति से सिखाना हो या सामाजिक जीवन हो-कुशलता बढानी चाहिये। शैक्षणिक और वैज्ञानिक दृष्टि से काम की पद्धतियो में, सिखाने के तरीको में, औजारो में तरक्की करनी चाहिये। अिसमे काफी कमी रही है। दूसरी ओर सरकार की नीति अितनी विरोधात्मक रही है कि प्रामाणिकता और सच्चाअी के साथ काम करने में काफी दिक्कतो का सामना करना पडता है।

पाठ्यक्रम की या समीक्षा की बात हो लीजिये। अिन सब में नई तालीम की रीति व नीति पर आज के नियम आदि परिप्रेरित नहीं हुअे हैं। सरकारी मान्यता के बिना हमारी संस्थाओं में लोगों का विश्वास नहीं हो पाता। अिन संस्थाओं से निकले विद्यार्थीयों के सामने अपनी आजीविका कमाने का प्रश्न खड़ा हुआ है। अुनके लिअे आगे की शिक्षा का दरवाजा कभी दफ बंद रहता है। अिस लिअे यह शिकायत हम सुनते हैं कि कार्यकर्ताओं के बच्चे मामूली स्कूलों में पढ़ते हैं। अिस दुष्चक्र को तोड़ना पड़ेगा।

अगर हर प्रांत में अेक मजबूत नई तालीम की संस्था का साधन करना हो तो हमें अपनी हो—पाने सब से मान्य की हुअी—शालाओं को चलाना होगा और सब की मान्यता को सरकार मान्य करे, यह आग्रह करना पड़ेगा। नहीं तो हर प्रांत की सरकार के सामने हम माथा-पच्ची करते रहेंगे कि हमारी शालाओं की आजादी कायम रहे। अुनकी अपनी समीक्षा की पद्धति रहे और सरकार अुसको स्वीकार करे। और अिनमें नई शिक्षा पद्धतियों के प्रयोग करने की अिजाजत हो। नहीं तो सरकार के जो नीति नियम हैं, अुनके साथ हमें समझौता करना पड़ेगा। यह नई तालीम की प्रगति के लिअे हानि-कारक हुअे बगैर नहीं रह सकता।

आज की हमारी नई तालीम संस्थाअें अुच्च तालीम पर—खास कर अुत्तर व अुत्तम बुनियादी स्तर पर—विशेष ध्यान दें, अनुसंधान का काम करें, यह आवश्यक है। हमें अपने काम के लिअे अुपयुक्त साहित्य भी प्रकाशित करना होगा। नहीं तो देश में "बुनियादी साहित्य" की अैसी ढेर लग जायगी जो बुनियादी तालीम को आगे नहीं ले जायगी। आज अिस बात की भी विशेष आवश्यकता है कि ये सब संस्थाअें आपस में भ्रातृभाव बढ़ायें। अेक बिरादरी बना कर ही वे नई तालीम आंदोलन को सफलता-पूर्वक आगे ले जा सकेंगी, अपने काम को ठीक जाच सकेंगी और अेक संयुक्त कार्यक्रम बना सकेंगी।

आज अिन संस्थाओं को और दो दिशाओं में भी सोचना है। जिस क्षेत्र में संस्था स्थित है, वहां के आसपास की जनता के साथ अुसका घनिष्ठ संबंध बने, वह सामान्य लोगों से अलग कोअी बाह्य चीज बन कर न रहे। अुस क्षेत्र के निर्माण कार्य में, वहां की समस्याओं के हल में वह पूरा-पूरा योग दे, अुस समाज के सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास में सक्रिय भाग ले, अिसका प्रयत्न करना है। दूसरा सवाल कार्यकर्ता प्रशिक्षण का है। आज सर्वोदय तथा खादी के काम में और सरकार की विकास योजना आदि कामों में कअी तरह के प्रशिक्षण चलते हैं, जिनका अेक दूसरे के साथ बहुत कम संबंध होता है। अिसमें शक्ति का अपव्यय है, दृष्टि क्षीण और संकुचित होती है। चाहे खादी के क्षेत्र में हो या ग्रामनिर्माण के काम में हो वह सभी हमारे ही काम हैं और अुनका प्रशिक्षण नई तालीम के आधार पर होना चाहिये। और अगर हमारा काम ठोस और सच्ची बुनियाद पर होता है तो सरकारी प्रशिक्षण पर भी अुसका असर होगा कि अुसमें आवश्यक संशोधन आसानी से किया जा सकता। आज जहां जहां नई तालीम की संस्थाअें हैं, वे अगर गांव की समस्याओं का हल अपनी जिम्मेदारी समझती हैं और अिस दृष्टि से अपने काम को मोड़ लेती हैं तो प्रशिक्षण के अिस महान् कार्य में महत्वपूर्ण योग दे सकती हैं।

हमारे काम के बारे में और अेक आलोचना अक्सर यह सुनायी देती है कि नये-नये कार्यकर्ता अिस ओर आकृष्ट नही हो रहे हैं। प्रचलित स्कूल कॉलिजो से अगर हम सपर्क बढायेंगे तो नये कार्यकर्ताओ को आकर्षित कर सकते है। भूदान-ग्रामदान आदोलन के विचार से जो लोग खीचे गये है, आगे भी खीचे जायेंगे, अुनकी तालीम की व्यवस्था भी नई तालीम सस्थाओ को ही करनी चाहिये। नये लोगों को आकर्षित करना और अुन्हे समुचित प्रशिक्षण देना भी नई तालीम का ही काम है।

आखिर सवाल अुठता है कि हम सब नई तालीम आदोलन चलाने के लिअे क्या करे ? देशभर में आज अनेक लोकसेवक, सर्वोदय मित्र और शाति सैनिक हुअे है। हम सब अपने-अपने सेवा क्षेत्र में आन्दोलन की प्रगति के लिअे क्या कर सकेंगे ? पहले तो हमें खुद नई तालीम यानी अच्छी तालीम के मूल सिद्धान्तो को समझना है। और अपने सेवा क्षेत्र में जो शालायें चलती है, अुनमें अच्छी तालीम के बारे में जागृति पैदा करनी है। सरकार की नीति बदले, विभाग के नियम तैयार हो जाय, अिसके लिअे अितजार करने की आवश्यकता नही है। शिक्षको से, पालको से, विद्यार्थियो से और अधिकारियो से सपर्क स्थापित करके मौलिक विचार प्रचार की कोशिश करे। विद्यार्थियो पालको और शिक्षका से माग करे कि वह अपना धर्म अच्छी तरह पूरा कर। शिक्षका में यह भावना पैदा करनी है कि अुनका काम तभी सफल होगा और विचार तभी जड पकडेगा जब शाला के काम के साथ पालक भी पूरा-पूरा सहयोग देता है। अधिकारियो को हमें समझाना है कि वह कानून के गुलाम न बनें, जनहित को ख्याल में रखें। यह जागृति हमें पैदा करनी है। देश में कअी शिक्षण सस्थाअें खडी हुअी है, जो प्रामाणिकता से तालीम के प्रयोग करती हैं। अिन सब के साथ सपर्क रखें। अिसमें सकुचित न बने और जाल को बहुत दूरी तक फेंके। तालीम में जो भी प्रगति होगी, वह कानून के दबाव से नही होगी, अधिकारी या शासक के हुकुम से नही होगी। जनता जब समझेगी और अुसके लिअे अपनी ताकत लगायेगी तब यह काम आसानी से सध सकेगा। वह वातावरण निर्माण करना जिससे लोग सही तालीम के लिअे तैयार हो और अुसमें अपनी पूरी शक्ति लगाना यही अब हमारा कर्तव्य है।

नई तालीम के लिअे आज अेक सक्रमण का काल अुपस्थित हुआ है। सगम के बाद अपेक्षा यह रहेगी कि जैसे नई तालीम को व्यापक क्षेत्र मिला है, वैसे हम अिस काम को गहराअी तक पहुचा कर, और आगे ले जायेंगे। कुछ नमूने की शालाओ को चलाकर ही हम सन्तुष्ट नही रह सकेंगे। आज की परिस्थिति में वे शालायें तभी काम की होगी जब साथ-साथ सामाजिक मूल्या में विचार परिवर्तन भी होगा। आदोलन और शिक्षा के क्षेत्र में गहरा काम अेक साथ चलें, अेक दूसरो की रक्षा करे तभी नई तालीम की नीव पक्की रहेगी।

किसी भी देश, समाज और व्यक्ति को ऊपर उठाने में और उसका सर्वांगीण विकास करने में उसकी अपनी भाषा का जो मूल्य, महत्व और स्थान है उसके विषय में दो राय हो नहीं सकती। दुनिया के सभी समर्थ और स्वतंत्र देशों ने अपनी-अपनी भाषा के विकास और समृद्धि के लिये जो पुरुषार्थ किया है, उसका अपना एक भव्य इतिहास है। सौभाग्य से भारत में भी आज १४ ऐसी भाषायें हैं, जो सैकड़ों सालों से इस देश की जनता के जीवन को अनेक प्रकारों से समृद्ध करती आयी हैं। अंग्रेजी राज्य के जमाने में जान-बूझकर इन भाषाओं की उपेक्षा और अवगणना की गयी और अंग्रेजी को सबसे अधिक महत्व दिया गया। राज-काज में, व्यापार-व्यवसाय में शिक्षा-दीक्षा में और ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित जीवन के अन्य अनेक अंगों में अंग्रेजी का प्रभाव इतना बढ़ा कि देशी भाषाओं के लिये विकास के अवसर कम-से कम रह गये। अंग्रेजी राज्य की गुलामी का यह एक अनिवार्य परिणाम था। विवशभाव से हम इसे सहते रहे, लेकिन हमें यह ख्याल बराबर बना रहा कि बिना अपनी भाषाओं को अपनाये और सही रूप में उनका समुचित विकास किये हम अपने देश अथवा समाज की सच्ची उन्नति नहीं कर सकेंगे। इसलिये गुलामी के दिनों में भी हमने राष्ट्र-भाषा और प्रांतीय भाषाओं के विकास तथा व्यवहार का आग्रह रखा और चाहा कि जब हमारे हाथ में शासनतंत्र आयेगा यानी हम स्वतंत्र होंगे और अपने ढंग से अपना राज्य चलाने लगेंगे तब अपने देश की भाषाओं को जीवन के सब व्यवहारों में प्राथमिकता देंगे और पूरे राष्ट्र के व्यवहार के लिये एक राष्ट्र-भाषा भी देश में चलायेंगे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने सन् १९१८ में ही इसके लिये पूरे राष्ट्र का मार्गदर्शन किया था और दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार का श्रीगणेश करवाकर राष्ट्रभाषा के काम को आगे बढ़ाया था। उन्हीं के मार्गदर्शन में देश ने अपने राष्ट्रीय और प्रांतीय व्यवहार में देशी भाषाओं को अपनाना शुरू किया था और इन सबके लिये सारे देश में एक अनुकूल वातावरण बना था।

राष्ट्र का संविधान बनाते समय भी राष्ट्र के कर्णधारों ने भाषा के प्रश्न पर गंभीरता से सोचा था और यह निश्चय किया था कि प्रांतों में प्रांतीय भाषाओं का और केंद्र में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का व्यवहार किया जाना चाहिये। इसके लिये १५ वर्ष की अवधि भी निश्चित की गयी और अंग्रेजी से हटकर देशी भाषाओं पर आने के लिये राष्ट्र को एक स्पष्ट प्रेरणा दी गयी।

आशा यह थी कि सारा राष्ट्र भाषा-विषयक अपनी मूल भावना को और संविधान के इस संकल्प को ध्यान में रखकर अपना व्यवहार तत्परता से बदलेगा और प्रांतों में वहां की सरकारें और केंद्र में केंद्र की सरकार भाषा-विषयक नीतिपर दृढ़ता से अमल करेंगी। लेकिन दुर्भाग्य से स्वराज्य के १३ साल बीत जाने पर भी इस देश में अभी तक वह दिन नहीं उगा, जिसके प्रकाश में देश का सारा व्यवहार निरपवाद रूप से देश की अपनी ही

भाषाओं में होने लगे। अभी तक सारे देश के राज-काज में अूपर से नीचे तक अंग्रेजी का ही जोर बना हुआ है और वह पहले से भी अधिक बढता जा रहा है। अनुभव यह है कि अंग्रेजी की पकड ढीली होने के बदले और भूख मद पडने के बदले मजबूत और तेज होती जा रही है। अंग्रेजी के पक्ष में नअी-नअी दलीले दी जाने लगी हैं और अुसे राज-काज में तथा शिक्षा के क्षेत्र में हानिकारक क्षति से कायम रखने का प्रयत्न किया जा रहा है। आज राष्ट्र के लोक-जीवन में यह जो अेक अस्वाभाविक और अजीब हालत पैदा हो गयी है, अुसके कारण देश में कअी चिन्ताजनक प्रश्न खडे हो रहे हैं।

सब का स्पष्ट मत है कि भाषा-सम्बन्धी नीति का यह प्रश्न अेक राष्ट्रीय प्रश्न है, अिसलिअे अिसे अखिल भारतीय स्तर पर हाथ में लिया जाना चाहिये। अैसा न करने से देश के सब प्रदेशो में अिसे समान महत्व नही मिलता और अिस असमानता के कारण कअी प्रकार की कृत्रिम समस्यायें खडी होती रहती हैं। बबअी का अुदाहरण हमारे सामने है। वहा पिछले १०-१२ सालो से प्राथमिक पाठशालाओं से अंग्रेजी को हटाकर बुनियादी शिक्षा के लिअे अनुकूल वातावरण तैयार करने का स्तुत्य प्रयत्न किया गया था। लेकिन अब बम्बअी-वालो पर यह दबाव आने लगा है कि अुस प्रात के बच्चे अंग्रेजी के ज्ञान की कमी के कारण दूसरे प्रातों की तुलना में पिछड रहे हैं। अहमदाबाद के गुजरात विश्वविद्यालय ने पिछले कअी वर्षों से अुच्च शिक्षा के लिअे अपनी प्रादेशिक भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाकर अुसमें सफलता प्राप्त की है। लेकिन अब अुस पर भी दबाव यह डाला जा रहा है कि वह प्रातीय भाषा को छोडकर फिर अंग्रेजी माध्यम को अपना ले। अिन अुदाहरणो से हमें समय के अुलटे प्रवाह को पहचान लेना चाहिये। और भाषा के प्रश्न को सर्वोदय के राष्ट्रीय प्रश्नो में स्थान देना चाहिये। अिस सारी परिस्थिति को ध्यान में रखकर सघ अपने अिस विश्वास को दोहराता है कि देश के लोक-जीवन में देशी भाषाओं को अुनका अपना सहज स्थान मिले। अिसके लिअे नीचे लिखी बातें राष्ट्रीय और प्रान्तीय स्तर पर निरपवाद रूप से अविलम्ब मानी और अपनायी जानी चाहियें।

१ केंद्र में और प्रातो में राज-काज का सारा व्यवहार क्रमश राष्ट्रभाषा में चलाया जाय।

२ सरकारी नौकरीयो के लिअे अंग्रेजी का ज्ञान और विश्वविद्यालयो की अुपाधियाँ अनिवार्य न मानी जाय।

३ प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की सारी शिक्षा देश में सर्वत्र प्रातीय भाषाओं में दी जाय। अन्तरप्रान्तीय और राष्ट्रीय स्तर के व्यवहारा के लिअे राष्ट्रभाषा हिन्दी का ज्ञान सबके लिअे अनिवार्य माना जाय।

४ प्राथमिक शिक्षा के पहले सात या आठ वर्षों में मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के अलावा दूसरी कोअी विदेशी भाषा कही अनिवार्य नहीं की जाय।

५ दक्षिण भारत और अुत्तर भारत के लोक जीवन को भावनात्मक दृष्टि से अेकरस बनाने के लिअे अुत्तर भारत में दक्षिण भारत की और दक्षिण भारत में अुत्तर भारत की भाषाओं को सिखाने की व्यवस्था अनिवार्य की जाय।

(शेषाश पृष्ठ १२० पर)

जो सत्य है अुसे बार-बार दोहराने पर भी वह पुराना नही हो सकता है। आज जो प्रश्न गभीर होकर हमारे सामने खडा है, अुस पर अगर और भी कओी बार हमें कहना पडे तो हम थकेगे नही। किसी व्यक्ति की या देश की बिलकुल अपनी चीज कोओी होती होगी तो वह भाषा होती है। अगर अपनी भाषा की अवहेलना ही हम करने लगें तो फिर चारित्रिक विकास की पहली पैडी ही टूट गयी, यही कहना होगा।

आज भाषा के प्रश्न पर कओी नजरो से देखा जा सकता है। अेक तो भावुकता की दृष्टि है, जिसमें मातृभाषा के साथ अपनी भावनाओं के ख्याल को अधिक महत्व दिया जाता है। 'मेरी मातृभाषा', 'माता के समान', 'माँ के दूध के समान', अित्यादि। अिसमें कोओी शक नही कि वह पहलू अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आदमी का वह स्वधर्म है और अुसका अपना ख्याल है। अुसको अनदेखा नही किया जा सकता। दूसरी दृष्टि राष्ट्रीयता की है। किसी दूसरे राष्ट्र की भाषा को अपनी भाषा बनाकर गर्व महसूस करना शायद ही कोओी अैसा व्यक्ति कर सकेगा जिसे अपनी मिट्टी से प्रेम हो। राष्ट्रीयता भी वास्तविकता है। अुसकी भी अवहेलना नही की जा सकती। जो लोग राष्ट्रीयता के नाम पर भाषा के प्रश्न को छेडते है, अुनकी बात को भी काटा नही जा सकता। अिन दोनो असलियतो के बावजूद भी हम अधिक महत्व अेक तीसरी दृष्टि को देते है। वह है शिक्षा की दृष्टि।

क्या शिक्षक या शिक्षा शास्त्री के नाते हम यह नही समझ सकते कि व्यक्ति के विकास के बारे में यह अटल सत्य है—व्यक्ति का समग्र विकास अुसकी अपनी परम्पराओं और वातावरण के आधार पर ही हो सकता है। आपसी सबधो के प्रकटन करने के कओी माध्यम होते है। कला और साहित्य अुनमें से सबसे शक्तिशाली माध्यम हैं। अिन सबधो को सफलतापूर्वक और गहराओी के साथ आत्मसात् करना केवल अैसे माध्यम के द्वारा सिद्ध हो सकता है जिसकी बारीकियो को समझने की शक्ति व्यक्ति में हो। यह सभावना केवल अुसी माध्यम में हो सकती है जो व्यक्ति और समाज की मिट्टी और खून में से निर्मित हुआ हो। कोओी भाषा, चाहे अुसे कितनी ही अच्छी तरह सिखाया जाय, अगर वह अपनी भाषा नही है, तो कभी भी नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सबधो को स्थायी रूपसे कायम नही कर सकती। अंग्रेजी भाषा के द्वारा किसी हालत में भी आज की भारतीय समाज के आपसी सबध घनिष्ठ नही हो सकते। अंग्रेजी ही क्यो, अगर क्षमा करे तो हम यह कहने की धृष्टता करेगे कि अुडीसा के जीवन में अगर गुजराती या हिंदी को मुख्य भाषा बनाने का प्रयत्न किया जाय, तो किसी हालत में भी सामाजिक सबधो को कायम नही रखा जा सकेगा। हमारा विश्वास है कि अुस मुद्दे पर अधिक चर्चा करने की आवश्यकता नही है। जो लोग समाजशास्त्र और मनोविज्ञान से परिचित है वे अिस सत्य को समझते ही है।

अिसलिअे यह कहने की आवश्यकता नही रहनी चाहिये कि किशोर अवस्था तक किसी

हालत में भी किसी अैसी भाषा को पाठ्यक्रम में प्रवेश नही दिया जाना चाहिये जो हर मायने में अलग संस्कृति से अुत्पन्न हो। अैसी भाषा का अनावश्यक भार बालको के स्वाभाविक विकास में हानिकारक सिद्ध होगा। आज जो ढर्रा पाँचवे दर्जे से ही अंग्रेजी प्रारभ करने का चल रहा है, अुसे फौरन रोकना चाहिये। आम तौर पर कहा जाता है कि वह माग तो जनता की ही है। यह केवल जिम्मेदारी को टालना और अपना अुद्देश्य सिद्ध करने की बात ही है। आखिर "जनता" तो सरकारी कामकाज और नौकरियो को ही देखती है। जब माता-पिताओ और अभिभावको के दिलो में यह बात बैठ गयी है कि बिना अंग्रेजी के अुनका लडका सामान्य पुलिस सिपाही की नौकरी भी पाने योग्य नही रहता, तो स्वाभाविक ही है कि वह अपने बच्चे को जितनी हो सके अंग्रेजी पढाने का प्रयत्न करेगा। क्या आम "जनता" यह समझ सकती है कि परायी भाषा सिखाने से बालक का "समग्र विकास" होने में रुकावट आती है?

चाहिये तो यह था कि "शिक्षित" लोग जनता का मानस अुचित ढग से तैयार करने का प्रयत्न करते। और अुसी आधार पर शिक्षा के हर स्तर की योजना बनती। किन्तु अिसका अुलटा ही हो रहा है। आज की युनिवर्सिटियाँ, क्योंकि अपने ढर्रे को बदलना नही चाहती, अिसलिअे नीचे की तालीम को, जिसकी ठीक बुनियाद गाधी और रवीन्द्रनाथ जैसे गुरुजनो ने डाली थी, फिरसे पचास साल पीछे पटक देना चाहती हैं।

दूसरी चीज जो अुतनी ही गभीर है, वह है बुनियादी तालीम के आठ सालो के शिक्षाक्रम के दो टुकडे कर देना। बाल मनोविज्ञान और व्यावहारिकता, दोनो की दृष्टि से यह कदम गलत है। बुनियादी तालीम की अेक अवस्था आठ साल के शिक्षाक्रम के बाद ही पूरी होती है। अगर अुसे तोडा जाय तो वह बुनियादी शिक्षा नही रह जायगी। ११ वर्ष की अुम्र में जब कि बालक का व्यक्तित्व प्रस्फुटित होना प्रारभ होता है, अुसकी शिक्षा की कडी टूट जाती है। जिन बालको को आगे पढना है, वे साधारण शाला में जायेंगे यानी अुनकी जैसी तैयारी हुअी थी, अुसके विकास के लिअे कोई गुजाइश नहीं रहती। जिन बालको की पढाई वही रुक जायगी, अुनके लिअे पाचवे दर्जे तक की तालीम करीब-करीब बेकार ही साबित होगी। क्योंकि न तो वह बुनियादी तालीम के द्वारा जिन दक्षताओ को हासिल करने की बात थी, अुन्हें पूरी कर पाता है और नही ही अुसका मानस कोअी खास स्वरूप ले पाता है। यह लगभग वैसा ही हुआ जैसे किसी भवन को देखने गये, पर दरवाजे पर पहुचते ही वापस आना पडा।

अिस प्रश्न के साथ अेक और बात जुडी हुअी है। हमें वह और भी अधिक गभीर दीखता है। बुनियादी तालीम के दो हिस्से करने पर आम तौर पर सीनियर बुनियादी शिक्षा को हाईस्कूल के साथ जोड दिया जायगा। यानी अुसमें अंग्रेजी का प्रवेश स्वाभाविक ही हो जायगा। क्या यह योजना अंग्रेजी घुसाने का अेक रास्ता मानकर ही बनायी गयी है?

इन दोनों प्रश्नो के पीछे देश की चालू अुच्च शिक्षा की नीति है। जब तक युनिवर्सिटी शिक्षा का ढाचा, बुनियादी तालीम के स्वाभा-

विक विकास के आधार पर नही बनेगा, तब तक प्रारम्भिक शिक्षा के साथ युनिवर्सिटियो का यह मनोवैज्ञानिक युद्ध चलता ही रहेगा। क्या यह कहने की जरूरत है कि आज युनिवर्सिटी शिक्षा का जो स्वरूप है वह अग्रेजी हुकूमत का प्रॉडक्ट है? जब तक वह ढाचा कायम है तब तक प्रारंभिक शिक्षा का समुचित विकास सम्भव नही है। क्योकि "अुच्च शिक्षा" की माग रहेगी कि अुसमें प्रवेश पाने के लिअे अुसी के ढाचे के आधार पर बुनियादी और माध्यमिक शिक्षा की तैयारी हो। यानी प्रारम्भिक शिक्षा को हमेशा युनिवर्सिटी शिक्षा का मुह ही ताकते रहना पडेगा। होना तो यह चाहिये कि बुनियादी तालीम की बुनियाद पर माध्यमिक शिक्षा हो और बुनियादी और माध्यमिक शिक्षा के आधार पर युनिवर्सिटी शिक्षा खडी की जाय।

देश की तालीम को अगर राष्ट्र निर्माण के लिअे काम करना है तो शिक्षा जगत को कुछ मूलगामी कदम अुठाने पडेगे। सबसे पहला कदम भाषा के क्षेत्र में होगा। युनिवर्सिटियो की तालीम मातृभाषा या अन्तर्भाषा-राष्ट्रभाषा मे होनी चाहिये। ताकि जो दीवार आज शिक्षित वर्ग और सामान्य जनता के बीच खडी है वह फौरन टूट जाय। "विज्ञान के विषयो की पढाअी देशी भाषाओं में नही हो सकती," अिस बात को कहनेवालो को दो चीजें सोचनी चाहिये।

दुनिया के अनेक देशो ने कुछ वर्षों के भीतर ही अूची से अूची विज्ञान की शिक्षा को मातृभाषा में देने का कार्य किया है। क्या हम अुस काम को नही कर सकते?

दूसरी बात है विज्ञान की शिक्षा को सामान्य राष्ट्रीय जीवन तक पहुचाने की। अगर हम विज्ञान की शिक्षा या विकास करना चाहते हैं और अगर राष्ट्र में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का प्रसार करना चाहते है तो क्या यह अत्यन्त आवश्यक नही कि अुस ज्ञान का माध्यम देशी भाषा में हो-जिन भाषाओं को जनता समझ सके?

अगर ये दो बाते हमारे शिक्षा जगत की समझ में नही आती तो यही कहना पडेगा कि अुच्च शिक्षा को कुछ ही लोग यानी शिक्षा और सत्ता को कुछ ही लोग अपनी ठेकेदारी बनाये रखना चाहते हैं। अगर परिस्थिति यह है तो प्रश्न और भी गभीर है।

आशा है हम मौका रहते ही अपने कदमो को ठीक रास्ते पर डालना प्रारभ करेगे। आज *यह केवल भाषा का सवाल नही है। सवाल* शिक्षा शास्त्र का है, राष्ट्र निर्माण का है, व्यक्तियो के व्यक्तित्व के समुचित विकास का सवाल है। *अिसलिअे शीघ्रातिशीघ्र प्राथमिक* शिक्षा से लेकर युनिवर्सिटी शिक्षा तक का माध्यम देशी भाषा को बना देना होगा। बुनियादी शिक्षा को दो हिस्सो में न तोड कर आठ साल के शिक्षाक्रम को अेक इकाई मानना आवश्यक है और अुस अवस्था में अग्रेजी भाषा का प्रवेश कदापि नही किया जाना चाहिये।

सर्वोदय सम्मेलन के समय अेक निवेदन भाषा के सबध में पेश किया गया है। देश के सभी लोगो की नजर अुसपर जाय, यह हमारी प्रार्थना है।

शीघ्र ही गुजरात में अेक सम्मेलन भाषा के प्रश्न को लेकर होने जा रहा है। हम आशा करते है कि अुसकी आवाज बुलन्द होगी और देश के शुभ चिन्तको के कान तक पहुँचेगी। हमारी शुभकामनायें अुनके साथ है।

शान्ति समाचार :

केरल के चुनाव हो चुके। चुनावो के वातावरण के कारण अशान्ति फूटेगी, यह ख्याल अनेको को था। आनन्द की बात है कि सारे चुनाव शान्तिपूर्वक हो गये।

चुनाव के दो माह पहले ही आशादेवी वहाँ जाकर जम गयी थी। स्थानीय नेताओ और कार्यकर्ताओ से मिलकर वे काम करने लगी। केरल में तीन विभिन्न स्थानो पर शान्ति सैनिको के शिविरो का आयोजन हुआ। शान्ति सैनिक लोगो के बीच प्रवेश करके बातचीत करते थे। सभी राष्ट्रीय दलो के नेताओ के साथ भी अुनकी बातचीत होती थी। केरल में शान्ति सेना के काम का यह अनुभव बहुत मूल्यवान रहा। जहाँ शान्ति सैनिक लोगो में प्रवेश कर पाये वहाँ अुससे वातावरण शान्त रहने में मदद हुअी।

× × ×

आणविक शस्त्रों के परीक्षण केवल रूस, ब्रिटेन और अमेरिका नही, दूसरे भी राष्ट्र करने लगे हैं। सभी यह जताने में तत्पर है कि अुनके पास भी यह विध्वसक शक्ति मौजूद है। मानववश को शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, विज्ञान के अिन "चमत्कारो" से कितनी हानि होती है, यह सभी समझ सकते हैं। किन्तु सत्ता और राजनीति अभी तक स्वार्थ को सकुचित दृष्टि से अुत्पन्न हिंसा और विध्वस के रास्ते पर चली है। फ्रास के द्वारा किये गये विस्फोटो के खिलाफ दुनिया के कोने कोने से आवाज अुठ रही है। अिंगलैड के पादरी श्री माइकेल स्काट के नेतृत्व में शातिवादियो के अेक दल ने अहिंसात्मक प्रतिकार के अूपर आधारित अेक "डायरेक्ट अेक्शन" का कार्यक्रम प्रारभ किया है। विस्फोटो के स्थानपर जाकर कानून भग करके कई शातिवादी मित्र जेल गये हैं। फ्रास ने तिसपर भी दूसरा विस्फोट किया। अिस अमानवीय कार्य का किस प्रकार प्रतिकार किया जाय, "डायरेक्ट अेक्शन" को किस प्रकार और शक्तिशाली बनाया जाय, अिसपर विचार विनिमय करने के लिअे घाना की राजधानी "आकरा" में अेक सम्मेलन हो रहा है जिसमें ससार भर के करीब १८० प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अुनके निमत्रण के अनुसार सर्वोदय परिवार की तरफ से आशादेवी सम्मेलन में भाग लेने गयी हैं।

× × ×

अमेरिका में वर्ण भेद का प्रश्न अभी तक चला आ रहा है। नीग्रो जाति के शक्तिशाली शान्तिवादी नेता श्री मार्टिन लूथर किंग वर्णभेद के खिलाफ आजकल जिस आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, वह पूरा पूरा बापू की अहिंसात्मक प्रतिकार पद्धति के सिद्धान्तो से प्रेरित है। अुनकी मान्यता है कि हिंसा अनैतिक तो है ही, अन्ततोगत्वा अव्यवहारिक भी। आज के जमाने में भी अमेरिका जैसे "अगुआ" देश में ऐसे पिछडे हुअे विचार चलते हैं, यह अेक पहेली ही है। अिसमें कोई शक नही कि अहिंसा में अितना गहरा विश्वास रखकर चलनेवाले लोकप्रिय युवक नेता मार्टिन लूथर किंग अिस आन्दोलन को अवश्य ही सफल बना पायेंगे।

× × ×

भाषा के प्रश्न पर गुजरात में सम्मेलन

श्री जुगतराम दवे इस सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं। सेवाग्राम सर्वोदय सम्मेलन में इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अच्छी चर्चा हुई थी। गुजरात में होनेवाले इस सम्मेलन का उद्देश्य गुजरात तक ही सीमित नही है, वह अेक राष्ट्रीय प्रश्न है। ता. १०-४-६० को दुपहर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में यह सम्मेलन होगा। सारे राष्ट्र का घ्यान इस ओर खींचे इसलिअे हम अपेक्षा करते हैं कि अधिक से अधिक मित्र इसमें भाग लें।

× × ×

नई तालीम का विकास केवल शिक्षा शास्त्रियों और शिक्षकों द्वारा नहीं हो सकता। अुसके लिअे नई तालीम के विद्यार्थियों को भी अपनी शक्ति लगानी चाहिये। अगर विद्यार्थी समाज जग जाय और अपनी जिम्मेदारी महसूस करे तो यह काम बहुत अच्छी तरह से हो सकेगा। राष्ट्र को महसूस होने लगेगा कि नई तालीम आज की शिक्षा प्रणाली में क्रांति लाकर ही रहेगी, अुसे टाला नही जा सकता।

हमें खुशी है कि बंगाल के अुत्तर बुनियादी शिक्षा पाये हुअे विद्यार्थियोंने अिस शक्ति को महसूस किया है और वे अुसके लिअे अेक संगठन बनाने में सलग्न हैं।

सेवाग्राम अुत्तर बुनियादी भवन के स्नातक श्री वरेन भाई अपने कुछ मित्रों के साथ अिसका आयोजन कर रहे हैं। अुनकी प्रारंभिक बैठक पिछले ता. २९ फरवरी को बंगाल के माझिहीड़ा नामक स्थान पर हुई। अिस माह के बीच में बलरामपुर नई तालीम भवन में वे फिर से मिल रहे हैं। नई तालीम जगत् की शुभ कामनायें अुनके साथ हैं।

(पृष्ठ ३१५ का शेषांश)

६. देश की सभी भाषाओं को परस्पर अधिक निकट लाने के लिअे और अुनके व्यवहार को व्यापक और सुगम बनाने के लिअे आवश्यक सुधारों के साथ सारे देश में देवनागरी लिपि को अपनाने का निश्चय किया जाय।

७ देश की जनता से अनुरोध किया जाय कि वह अपने सारे व्यवहारों में स्वभाषा अथवा राष्ट्रभाषा को ही प्राथमिकता दे जिससे परभाषा का साम्राज्य टूट सके।

८ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की अूची से अूची शिक्षा देशवासियों को अुनकी अपनी मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा में ही मिल सके, जिसके लिअे अंग्रेजी सहित यूरोप-अमेरिका और अेशिया की सारी भाषाओं के अुत्तम ज्ञान को देशी भाषाओं में लाने का सगठित और देशव्यापी प्रयत्न किया जाय।

९. जबतक देशी भाषाओं में अूचे-से-अूचे ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध करने की स्थिति नहीं बनती है, तब तक अुच्च-शिक्षा की कामना रखनेवाले विद्यार्थियों को ८ वी कक्षा के बाद अंग्रेजी की अथवा अन्य समृद्ध विदेशी भाषाओं की विशेष शिक्षा देकर अुन्हें अिस तरह तैयार होने का मौका दिया जाय, जिससे वे अपने-अपने विषयों के विशेषज्ञ बनने के बाद अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान को देशी भाषाओं में अुतारने की योग्यता रख सकें और अिस प्रकार अपनी भाषाओं को समृद्ध करना अिनका अेक आवश्यक कर्तव्य बन जाय।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

नई तालीम

सम्पादक
देवीप्रसाद
मनमोहन

कार्यक्रम की बुनियाद : शिक्षा

धीरेन्द्र मजूमदार

क्रान्ति या राहत ?

हिंदुस्तान में कोअी आदमी किसी से मिलता है तो पूछता है कि आपकी कौन सी जाति है। यह जाति पूछने का रिवाज अिस देश में बहुत है। कार्यक्रम के बारे मे भी लोग जाति पूछा करते हैं। कहते हैं कि यह राहत का काम है-या क्राति का, किस जाति का यह कार्यक्रम है ? क्योकि अुसकी भी अेक जाति है। हमको अच्छी तरह से समझ लेने की जरूरत है कि आखिर क्राति के माने क्या है ? जो आज मौजूद है, अुससे समाधान नही है, अुसके विकल्प में हम कुछ बनाना चाहते है। समाज के लोग अिस पर से निकलकर अुस पर जाय, यह हम चाहते हैं। मैं कहना चाहता हू कि जिस कार्यक्रम में राहत नही है, अुसमें से क्राति निकल नही सकती। वह विप्लव हो सकता है, अुसमें नाश हो सकता है, जो है वह समाप्त हो सकता है। लेकिन जो बनाना है वह बन नही सकता। अिसलिअ किसी भी क्राति के काम में याने अेक स्थिति से निकलकर दूसरी स्थिति को पहुचाने वाली प्रक्रिया में मनुष्य को राहत मिलनी ही चाहिअे, ताकि वह अनुभव करे कि हा, यह जो विकल्प की ओर ले जाना चाहता है, वह हमको कुछ बेहतरीन चीज देगा। मैं कहना चाहता हू कि जिसमें राहत नही है वह काम क्रातिकारी नही है। यह हो सकता है कि जो राहत है, अुसमें क्राति नही है। लेकिन जो क्राति है अुसमें राहत नही है, यह बिलकुल गलत बात है।

क्राति कार्यक्रम में नही है, क्राति मनुष्य के दिमाग में और हृदय में होती है। जो क्रान्तिकारी मनुष्य होगा वह हरेक कार्यक्रम से क्राति निकालेगा। जितने कार्यक्रम हैं वे सब क्राति कार्य भी हो सकते हैं और गैर क्रान्तिकारी भी। जिसके विचार के अन्दर जो है वह करता है।

हिंसा का विकल्प

हम जो कहते हैं कि हमारे भावी कार्यक्रम क्या हो, तो मेरे मन में आता है कि कार्यक्रम तो पूर्ण रूप से बापू ने हमारे सामने रख दिया था। विनोबा ने अुसकी और विशद रूप से व्याख्या की और भूदान से लेकर शाति-सेना तक अुसे परिपूर्ण किया। सवाल यह है कि कार्यक्रम का स्वरूप क्या हो जिससे अुसमें से क्राति निकले। हम चाहते क्या हैं ? हम अहिंसक क्राति करना चाहते हैं। वह क्राति हो कैसे ? अब तक परिवर्तन के लिअे जो सामाजिक शक्ति रही है, वह हिंसा की शक्ति रही है, वर्ग सघर्ष की शक्ति रही है। जो चीज वाछनिय नही है, अुसका विघटन हो, अुसकी समाप्ति हो-यही

रहा है। किन्तु हमारे सामने सवाल है कि हम जो परिवर्तन करना चाहते हैं, जो कौटुम्बिक समाज बनाना चाहते हैं, वह अहिंसा के तरीके से कैसे हो? हम तीन चीजें चाहते हैं : व्यक्तिगत संपत्तिवाद का निराकरण, वर्ग-भेद का निराकरण और शासन का निराकरण। यह करने के लिअे सामाजिक शक्ति क्या है, सोशल कोर्स क्या है? हिंसात्मक वर्ग संघर्ष है, या अुसके बदले में कुछ और है? यानी सारे कार्यक्रम के अन्दर क्रांति-तत्व कहां है? अुसकी खोज करना आज हमारा सबसे बडा काम है।

हमने पांच साल तक अिस विचार का प्रचार किया। देश भरके लोगों को अिस काम के लिअे अेक आकर्षण हुआ। अेक सामाजिक शक्ति, का दर्शन हुआ। हिंसा का विकल्प शायद हो सकता है, यह हिंसा को माननें वाले भी कहने लगे हैं। लेकिन वह विकल्प क्या चीज है, खोजने को जरूरत है। हमें अेक कार्यक्रम की बात सोचनी होगी। पहले अिस कार्यक्रम को आगे बढाने के लिअे हमारी व्यूह-रचना क्या होगी, अिसकी चर्चा करेंगे। आमतौर पर देखेंगे कि दुनिया में कोअी भी काम अेकतरफा, अेकरुखा नहीं होता है। आज हम ग्रामदान को लेकर काम करते है और दूसरा ग्राम-संकल्प को। हमारी व्यूह-रचना ग्रामदान से ग्रामसंकल्प की ओर और ग्राम-संकल्प से ग्रामदान की ओर जाने की है। अुसका अेक सगठनात्मक पहलू भी है। अुसके लिअे हमने सर्व सेवा संघ का नया विधान बनाया। यानी नीचे से अुठना होगा और अूपर से नीचे भी जाना होगा। दो चीजें हमारे पास हैं—अेक लोक-सेवक की बुनियाद और दूसरा, सारी रचनात्मक सस्थायें। नीचे से जनशक्ति का निर्माण करेंगे। गंगा को ले आयेंगे जनता की ओर और गंगा को धारण करने के लिअे शिव का निर्माण करेंगे। अिस तरह काम होगा और तब अुस काम को किस तरह से क्रांति तक ले जायें, यह सोचेंगे।

कार्यक्रम

पदयात्रायें भी रहेंगी, विचार प्रचार भी रहेगा। लेकिन पदयात्रायें अब तक स्ट्रेटलाइन में चलती थी, वह आवश्यक भी था। अब पद-यात्रायें स्ट्रेटलाइन में न करके वृत्ताकार में होनी चाहिअें, क्योंकि पदयात्रायें अूपर कही गअी प्रक्रिया की पूरक होनी चाहिअे। अुत्तरप्रदेश में अखंड पदयात्रियों का अभी दस-पंद्रह दिन हुअे मुझको अेक पत्र मिला। वे लोग बडी निष्ठा से जहां जाते हैं, खूब प्रचार करते हैं। लेकिन अुसका असर टिकता नहीं। किन्तु जहां लोक-सेवक की बुनियादी अिकाई प्रेम-क्षेत्र, पांच हजार लोकसख्या का हो, जहां अूपर से संस्थाओं के काम को विकेंद्रीकरण और जनाधार की ओर जाने की अेक प्रक्रिया चलती हो, और तब अुसी क्षेत्र के चारों तरफ पदयात्राओं का सिलसिला रहे, तो अुसका असर होगा।

दूसरी बात यह है कि कार्यकर्ताओं में भी वर्ग बनता चला जा रहा है। यह पदयात्री कार्यकर्ता और यह बैठनेवाला कार्यकर्ता। मेरा कहना यह है कि वही लोग पदयात्रायें करें जो लोग बैठे हैं। बैठें भी, जायें भी, घूमें भी। अिससे वह भेद चला जायगा।

कैसा संकल्प करायें?

ग्राम स्वराज्य का संकल्प कराना चाहिअे। लोगों के सामने पूरा चित्र रखना होगा। फिर

जो कुछ आपकी आवश्यकता है वह कीजिये। जिसमें पहले पांच संकल्प आते हैं। १. कोअी आदमी भूखा नहीं रहेगा, २. कोअी आदमी बेकार नहीं रहेगा, ३. कोअी आदमी नंगा नहीं रहेगा, ४. कोअी आदमी कचहरी में नहीं जायगा। ५. पुलीस गांव में नहीं आयेगी। जब यह सकल्प लोग कर लेते हैं तो फिर आपका कार्यक्रम अिस दिशा में शुरू होता है। क्या गांव में जितनी संपत्ति है, जितनी बुद्धि है यह सब अिस में लगे? फिर यह कहना होगा कि कोअी आदमी भूखा, नंगा और बेकार नहीं है तो, कोअी आदमी अज्ञानी नहीं है, यह भी करना होगा। तो अुनको सोचना पडेगा—क्या यह संभव है कि जिनके पास ज्यादा संपत्ति है वे सारे-के-सारे अुसका अपने आप अुपभोग करें और सब लोग भूखे न रहें, कोअी बेकार न रहे। तो जहां सकल्प हम करते हैं वहां अनिवार्य रूप से, जिनके पास बुद्धि है और जिनके पास संपत्ति है, वे अपने आप को सारे गाव का ट्रस्टी मानें।

तब समानता की बात आयगी

मै अेक गांव में गया था। ग्रामदानी गांव था। मैंने पूछा कि ग्रामदान क्यों किया? तब अुन्होंने कहा कि हम सब समान हों, अिसलिअे ग्रामदान किया। "समान होगे कैसे?" "हमने अपनी जमीन को समान-समान वितरण कर लिया है, प्रति व्यक्ति के हिसाब से वितरण कर लिया है, तो हम समान हो गये।" मैंने अुनसे पूछा कि आपके गांव के पास हाईस्कूल है, आपके कितने लडके हाइस्कूल में पढते हैं। तो अुन्होंने कहा कि स्कूल में बारह लडके पढते हैं और बाकी नहीं पढते। "क्यों नहीं पढते?" "भैंस चराने जाते हैं। घास छीलने जाते हैं।" तो मैंने अुनसे पूछा कि आप लोग तो समान हुअे, आपके लडके समान कैसे रहेंगे? जो लडका हाईस्कूल में पढने जाता है और जो लडका भैंस की पीठ पर चढता है, वह दोनों समान कैसे हो जायेंगे? वे सोचने लगे। अेक ने कहा, 'सब को हाईस्कूल में भेजो"। "तो होगा?" अुसने कहा, "हमारा काम नहीं चलेगा।" मैंने कहा कि सबको हाईस्कूल से छुडा लो, तब तो समान हो जायगा? तो फिर वे घबडाने लगे कि यह कैसे होगा? सबको छुडा लेंगे तो सब मूर्ख रह जायेंगे। वह तो मूर्खों की समानता होगी। बात करते-करते विचार आया कि सब को काम में लगाओ और सबकी शिक्षा अेक साथ रखो। जो भैंस की पीठ पर है और जो आज हाइस्कूल में जाता है, वह जो विभिन्न वर्ग के मनुष्य हैं वे सब अेक जगह आवें और ग्राम सकल्प के हमारे कार्यक्रम में अैसा तत्व आना चाहिअे कि विभिन्न वर्ग के लोग अेक जगह हों। नहीं तो हमारे निर्माण कार्य में क्रांति तत्व नहीं रहेगा।

शिक्षा की प्रक्रिया

पुराने जमाने में हिंसा के संदर्भ में वर्ग संघर्ष, हिंसात्मक संघर्ष को क्रांति का तत्व माना जाता था। बाद में सत्याग्रह अुसका विकल्प निकला। लेकिन हमें अुस पर भी सोचना है। विनोबा कहते हैं कि हम स्थूल सत्याग्रह चलाते थे। अब हमको सौम्य सत्याग्रह चलाना है। सौम्यतर और सौम्यतम सत्याग्रह चलाना है। अुस बात को हमें सोचना होगा, जिससे हम कार्यक्रम का स्वरूप ठीक से निर्धारित कर सकें। सत्याग्रह हिंसक है कि अहिंसक?

दो पार्टी हैं, अेक अन्याय करनेवाली और दूसरी जिस पर अन्याय होता है। मान लें सत्याग्रह हुआ और अन्याय का निराकरण भी हो गया। सवाल आता है कि दोनों पार्टी के बीच के जो संबंध हैं अुस घटना के बाद वे कैसे रहें? सद्भावना के या दुर्भावना के कारण कोअी कतल नहीं किया, दबाव डाला। हमने *दबाव से अपना अन्याय का प्रतिकार किया।* लेकिन अुसके बाद अन्याय जिस पर हुआ था और जो अन्याय करता था, अुनकी परस्पर की आपसी भावना क्या रह गअी, अुस पर वह निर्णय करेगा। वह बतायेगा कि यह सत्याग्रह हिंसात्मक था कि अहिंसात्मक। आपस में अगर दुर्भावना हुअी तो समझो कि यह सौम्य हिंसा है। आज विज्ञान हिंसा को भी "सौम्यता" की ओर जाने के लिअे बाध्य कर रहा है। तो फिर कहना होगा कि सत्याग्रह हमारे हाथ से निकल गया। विनोबा ने कहा कि समझाकर, दबाव डालकर नहीं। अेक को समझाया तो वह मान गया, फिर दूसरे को। ठीक है, वह अेक तात्कालिक चीज है; वह सौम्य की तरफ जाय लेकिन अुतने से काम नहीं चलेगा। हमें सौम्यतर की ओर जाना होगा। फिर परसुयेशन वाला सत्याग्रह चला। समझानेवाला। दबाव (प्रेशर) के आगे परसुयेशन और अुसके आगे अेजूकेशन (शिक्षा) पर पहुंचना चाहिअे। क्योंकि आप वर्ग परिवर्तन अहिंसात्मक ढंग से चाहते हैं तो अंततोगत्वा सारे कार्यक्रम की व्यूह-रचना शिक्षा का कार्यक्रम होगा। सौम्यतर सत्याग्रह अेजूकेशन का कार्यक्रम होगा, जिसकी फलश्रुति होगी समाज परिवर्तन। यानी सब लोग अिकट्ठा आवें। जो आज नअी तालीम की बात करते हैं अुन्हें यह समझना चाहिअे कि नअी तालीम का मानें यह नहीं है कि हम किसी अेक जगह बैठ करके पूर्व बुनियादी से अुत्तम बुनियादी तक के स्कूल खोल दें। बापू ने १९३७ में बुनियादी शिक्षा हमारे सामने रखी थी। और १९४५ में अुन्होंने नअी तालीम हमारे सामने रखी। बुनियादी शिक्षा को अुन्होंने *अुपसागर कहा। फिर अुन्होंने कहा कि आपको* महासागर में जाना होगा। अर्थात् सारा समाज के अन्दर अिस सौम्यतर सत्याग्रह याने नअी तालीम को लेकर आपको जाना होगा। जो सामाजिक शक्ति बनेगी वह तालीम का काम होगा। सारी सामाजिक परिकल्पनाअें, सारा सामाजिक संगठन, सारा सामाजिक कार्यक्रम, वह शिक्षण के कार्यक्रम होंगे। बापू ने कहा था कि आपकी जितनी रचनात्मक काम की नदियां हैं अंततोगत्वा अुन्हें नअी तालीम के महासागर में विलीन होना होगा। कुछ स्कूलों की जरूरत होगी तो होंगी। लेकिन सारे गांव के संदर्भ में नई तालीम को ले जाना होगा, सारे कार्यक्रम को पूरा बटोर करके हम अगर तालीम की तरफ ले जायेंगे तो सत्याग्रह-तालीम से समाज परिवर्तन होगा और हम सौम्यतम पर पहुंचेंगे। समझाने (परसुयेशन) के बाद शिक्षा (अेजूकेशन) सौम्यतर है और सौम्यतम है स्नेह (अफेक्शन)। हमारे मन में अगर स्नेह है तो समाज को हमें समझाने (परसूयेड करने) की भी जरूरत नहीं है।

अिसलिअे अब अलग-अलग कार्यक्रम नहीं चलेगा, सारा कार्यक्रम का समन्वय करना पड़ेगा। और तालीम का कार्यक्रम बुनियाद है यह मानना पड़ेगा। तब अुसमें से क्रान्ति का तत्व, शांति की बुनियादी शक्ति निकल सकेगी।

शिक्षा, सृजनात्मकता और अहिंसा

एन्थनी वीवर*

अेक कटोरा, मट्टी या फूल ?

छोटे बच्चे के मानस की अेक कटोरे के साथ तुलना हो सकती है, जिसमें शिक्षक ज्ञान डाल देता है, ज्यादा या कम और जो वह ठीक समझता है, वैसा। यह पुराना विचार मन को अेक पात्र मानता है, जिसमें परपरा से जो चीज अुत्तम मानी जाती है, वह भर देना है, चाहे यह जबरदस्ती से ही करना पड़े।

अिसी प्रकार, बच्चे के चरित्र के बारे में भी यह कल्पना थी कि वह कोअी अलग चीज है। अैसी वस्तु जिसको शिक्षक के द्वारा या अेक विशेष प्रकार के सामूहिक अनुशासन के द्वारा रूप देना है। अच्छा रूप क्या है, अिसके बारे में भी निश्चित विचार थे। बच्चे को अिस तरह अेक साचे में ढाला ही नही जाता या वह खुद भी यह महसूस करता था कि अैसी अेकरूपता वान्छनिय है, अुससे कही विभिन्न होना शकास्पद और विरोध द्योतक होगा।

राजनीति या धर्म के अेकाधिपत्य के नीचे अैसी शिक्षा पद्धतिया आसानी से पायी जाती है। नाजि शिक्षक प्रतिज्ञा करता था–"अेडोल्फ हिटलर, हम प्रतिज्ञा करते है कि जर्मनी के नवयुवको को आपके आदर्शों के अनुसार, आपके लक्ष्यो और अुद्देश्यो को पूरा करने के लिये आपकी अिच्छा से निर्धारित दिशा में तैयार करेगे। जर्मनी की प्राथमिक शालाओ से लेकर विश्वविद्यालय तक की सारी शिक्षा व्यवस्था के द्वारा यह आप को प्रतिज्ञान है।"

शिक्षा के प्रति नेपोलियन की भी वृत्ति अैसी ही थी। यह अुनके अिस वाक्य से पता चलता है कि "अगर कुछ स्थिर सिद्धात वाला शिक्षकवर्ग नही होता तो कोअी स्थिर राज्य भी नही हो सकता।" जेसूट लोगों का यह सिद्धात सर्व विदित ही है कि बच्चे को पहले सात साल तक अगर अुनके सुपुर्द रखें तो वे अुसके मन व चरित्र को अिस तरह गढ़ेंगे कि बाद में पडने वाला कोअी प्रभाव अुसमें विशेष महत्व का नही रहेगा।

यह शायद पूरी तरह समझा नही जाता है कि राज्य के द्वारा या धर्म सस्थाओ के द्वारा चलायी जानेवाली शिक्षा व्यवस्था में जो आत्यन्तिक सत्तावाद है, अुसमें कम ज्यादा होने का ही फर्क है।

* श्री अेन्थनी वीवर शिक्षा शास्त्र के प्रोफेसर है और अिंग्लेण्ड के शान्तिवादियों में से है। वे युद्ध के अहिंसात्मक प्रतिकार के लिअे जो सस्था "डायरेक्ट अेक्शन कमेटी" के नाम से प्रसिद्ध है, अुसके सदस्य भी है।

कद्र और विश्वास :

फूल के साथ तुलना के पीछे बच्चे के अिस तरह के पालन पोषण का विचार है जिससे कि अुसका व्यक्तित्व समय पर अपने आप खिल जाय। माली का काम सबसे अुपयुक्त मिट्टी और खाद देना और कोमल पौधे को ज्यादा ठण्ड और जलती हुअी धूप से रक्षा करना ही है। अेक तरफ तो हम मानते हैं कि अेक बच्चे के विकास की सारी सभावनाओ को हम नही जान सकते हैं, अिसलिअे हम किसी विशेष रूप के ढाचे में अुसको ढालना नही चाहते हैं। दूसरा तरफ, किसी चीज की कद्र का मतलब है अुस पर विश्वास भी करना। जिसको हम पूरा-पूरा स्वीकार करते हैं, अुसको बढाने या अुससे डरने की कोई जरूरत नही है। हर अेक व्यक्ति अपने आप मे निराला ही नहीं, अुसका अपना अेक मूल्य भी है।

अहिंसा पर आधारित शिक्षा का दर्शन मानता है कि मानवो के बीच सहकार स्वाभाविक है। ईर्ष्या, स्पर्धा, लोभ और आक्रमणशीलता स्वार्थप्रवृत्त होने के कारण समूह के लिअे हानिकारक तो है ही, वे व्यक्ति के अनारोग्य के लक्षण भी हैं।

गाधीजी ने कहा था कि सत्य के लिअे प्रयत्न करने का मायना है 'हिंसा का तिरस्कार करना। क्योकि मनुष्य परम सत्य को जान नही सकता है, अिसलिअे वह दूसरे को सजा देने के काबिल नहीं है।" जैसे अपने विरोधो को गलत रास्ते से हटाना है, वैसे ही शिक्षा प्रेम, सामाजिक सबन्ध और भाव प्रकाशन की शक्ति में थोडे-से सन्तोष मानने की वृत्ति से हटाने की अेक सतत प्रक्रिया होती है। अिन मौलिक आवश्यक्ताओ की समयानुसार अुचित तरीकों से तृप्ति करना मां बाप और शिक्षक का काम होना चाहिअे। लेकिन हममें से कितने ही लोग अिस मूल आवश्यकता की पूर्ति करने के बदले बच्चे के भावी सामाजिक स्तर, अुसकी योग्यतायें, अित्यादि के बारे में चिन्ता करते रहते हैं।

जहा तक शिक्षा का सबन्ध है, क्या हममें हिम्मत है कि जो आज ठीक है अुसे करें, और भविष्य की चिन्ता भविष्य के अुपर छोड दें। व्यवहार में अिसका क्या मतलब होगा ?

प्रेम : बच्चा मां-बाप दोनो पर अैसे प्रेम के लिअे निर्भर रहता है जो कोमल और निरपेक्ष हो और जिसके कारण वे अुसके लिअे अैसे सब काम कर देते हैं जो वह खुद करने के लिअे असमर्थ है। सी अेस. लूई ने व्याख्या की है कि प्रेम में, मैत्री, स्नेह, कामवासना और करुणा का मिश्रण है। बच्चे के लिअे मा-बाप के प्रति प्रेम के अिन सब पहलुओ का अनुभव करने की जरूरत है। कितने ही लोग अपने भावनात्मक विकास में अधूरे रह गये हैं, क्योकि अुनके मां-बाप अुनके प्रेम को स्वीकार करने में अनिच्छुक या असमर्थ थे।

बच्चे का मां के साथ यह सम्बन्ध, जिसमें अुसकी सब भावनायें समा जाती हैं, आखिर खतम होने ही वाला है। और यह सब से अच्छी तरह स तब हो सकता है जब कि दोनो ने ही अुनमें पूरा-पूरा प्रवेश किया हो और अुसका पूरा-पूरा अुपभोग और आनन्द अनुभव किया हो। तभी तो बिना चिन्ता और दुःख के अुससे अलग भी हो सकते हैं। और तब अुसके बदले खेल और साथीपन का जो मजा मिलता है,

अुससे यह परिवर्तन आसान और जल्दी होता है।

सायीपन–बच्चा खुद अकेले में और दूसरे बच्चों के साथ खेलने से समझने लगता है कि वह कभी कभी मां को छोडकर भी रह सकता है, खुद कुछ परिस्थितियों का सामना कर सकता है और अपने साथियों के साथ खडा होने में अुसका सुरक्षा बोध बनता है।

भावप्रकाशन– "स्वतंत्र आत्मप्रकटन" के रूप मे खेल का स्वास्थ्यसबन्धी मूल्य हो सकता है। वह भावनाओ के निकास का जरिया होता है। लेकिन खेल का सृजनात्मक बनने के लिअे अुसे गहरी आन्तरिक अनुभूतियों पर आधारित होना पडता है, कोअी अुपयुक्त रूप लेना पडता है। सामाजिक परिस्थितिया और मानवीय सबन्धो को सुधारने के काम के, तथा नाट्य, नृत्य, शिल्प, आदि कलाओं के द्वारा यह सध सकता है। शिक्षा का काम प्रत्येक बच्चे को अपने लिअे अुपयुक्त माध्यम ढूढ कर निकालने में सहायता करना है। अेरिक गिल के शब्दों में "अपना ही सामञ्जस्य खोज निकालने और अुसे जिन्दगी में अुतारने मे"।

सभ्यता का अितिहास आदमी के भाव प्रकाशन और आत्मप्रकटन की आवश्यकताओ को दिखाने वाली अेक पोथी है। अिसमें शायद स्त्री का हिस्सा कम रहा है, क्योंकि बच्चे को जन्म देने में ही वह अेक अतुल्य सृजनात्मक काम कर लेती है। पुरुष को और कोअी रास्ता ढूढना पडता है। विध्वस वृत्ति, क्रूरता, आक्रमण शीलता, अधिकारो का दुरुपयोग–यह सब सृजनात्मकता के विपरीत रूप में दिखाअी दे सकते हैं। यह बचपन में भावनात्मक अभाव, या बाद में यौनवृत्तियो की अतृप्ति, जीवन में पराजय या अिन सब के मिश्रण के फलस्वरूप होता है।

हरबर्ट रीड अपनी पुस्तक, "शान्ति के लिअे शिक्षा" में अत्यन्त गभीरता के साथ अिस की चर्चा करते हैं कि मानवजाति को ठीक प्रकार की शिक्षा के द्वारा शान्तिप्रिय बनाना है। वह लिखते हैं, "मानव मानव के बीच अेकात्मबोध पैदा करने की प्रक्रिया का महत्व *समझना ही आज का हमारा काम है।"*

"जब फ्राअिड कहते हैं कि अनुकरण या रास्ता बन्धुत्व व सवेदना की तरफ ले जाता है तो शायद वे समझते थे या नही, किन्तु अुनका निर्देश कला के रास्ते की तरफ ही था। यह सच है कि दूसरा भी अेक रास्ता है–नेता के साथ अेकात्मबोध का, अेकाधिपत्य का रास्ता, जिसमे दूसरे लोगो के साथ सवेदना का संबन्ध नही है, सिर्फ आज्ञा का अन्ध पालन ही है। वह प्रक्रिया जिससे हम अेक आदर्श में दूसरों के साथ हिस्सेदार बनने के लिअे प्रेरित होते हैं, फ्राइड के निर्दिष्ट रास्ते से अलग नही है। अुसमें हम अपने सहजोवियो के साथ अेक रास्ते के सहयात्री बनते हैं। समान आदर्शों का अनुसरण करने से, कला के विश्वजनीन क्षेत्र में अेक दूसरे के साथ मिलने से।"

विक्टर गोलानस "द डेविल्स ध्यरतोआ" नाम की पुस्तक मे अिसी विषय की चर्चा करते हुअे कहा है–"पडोसियो का प्रेम सृजनशील सवेदना है।"

"पडोसी को मुहब्बत करना माने अुसके साथ सवेदना अनुभव करना, अुसमें *जीना*, अुसमें रहना है। वह बम गिरते समय जर्मन बच्चे के भय को खुद अनुभव करना है, खुद सूली पर खड़ा हुआ महसूस करना है। वह

दूसरे की सफलता में खुद की सफलता मानना भी है, जिसमें अीर्ष्या और द्वेष नहीं है। पृथ्वी के फूलों की तरह, जो अुनमें से कोअी-कोअी ज्यादा सुन्दर और पवित्र होने पर भी परस्पर द्वेष नहीं करते हैं, बल्कि अेक दूसरे के साथ प्रेम से रहते हैं, अेक दूसरे की पवित्रता में आनन्द अनुभव करते हैं। हम सभी अुन लोगों के साथ, जिनको हम 'नजदीक' मानते हैं, थोड़ी बहुत मात्रा में संवेदना अनुभव करते ही हैं। लेकिन दूसरों के लिअे बिना सोचे समझे, बिना भावना के, अपने हृदय किवाड़ बंद रखते हैं।

रूसो, रावर्ट अवन, ड्यूई, आदि शिक्षा-शास्त्रियों के और कअी प्रगतिशील संगठनों के दर्शन तथा कार्य के फलस्वरूप अब कअी बालवाड़ियों और छोटे बच्चों की शालाओं की व्यवस्था अैसी हुअी हैं कि बच्चे वहां जीवन के लिअे अुत्साह और स्वयं-प्रेरणा अनुभव करते हैं। अैसी स्वतंत्र शालाओं में खेल और सृजनात्मक प्रवृत्तियों के महत्व पर जो जोर दिया गया, वह अब सर्वमान्य हो रहा है। लेकिन स्वतंत्र शालाओं की अेक विशेषता है, जिसे सरकारी मान्यता मिलती हुअी नहीं दिखाअी देती है। वह है-सजा को शिक्षा में से निकाल डालना। अगर यह असामाजिक और अविनीत गुट्टे विद्यार्थियों के समुदाय में चलाया जा सकता है, जैसे कि होमर लेन, मकरनको और अुनके अनुयायियों ने करके दिखाया, तो साधारण कानून मानने वाले विद्यार्थियों के स्कूल में जरूर किया जा सकता है। शारीरिक या दूसरे प्रकार की सजा के अभाव का मतलब है अनु-शासन का और कोअी आधार ढूंढना। स्कूल के संचालन और अन्य कार्यों में विद्यार्थियों को शिक्षकों के साथ हिस्सेदार बनाना ही अिसका तरीका हो सकता है।

यह कअी प्रकार से और कअी क्षेत्रों में हो सकता है, जैसे अे अेस् नील के "सम्मरहिल" में, ज अेच सिम्पसन के "सेन स्कूलिंग" में और अन्य शिक्षा-शास्त्रियों द्वारा अन्य जगह भी बताया गया है। स्कूल की सभा कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियों के चुने हुअे प्रतिनिधियों के द्वारा संचालित होनी चाहिअे। सच्ची जिम्मेदारी दी जाने पर अिसमें विद्यार्थियों को अैसा प्रशिक्षण मिलेगा और लोगों के मानस और अुद्देश्यों के बारे में अैसी समझ होगी जो अुनके अूपर सत्ता चलाने से कभी नहीं मिल सकती।

स्वशासन

अिससे पाठक यह अर्थ न निकाले कि स्कूलों में स्वशासन और सृजनात्मक प्रवृत्तियां खूब व्यापक पैमाने पर चलाने से भी अुससे जीवन का अेक नया रास्ता अकदम खुल जायेगा। लेकिन जहां तक शिक्षा का सवाल है, ये बहुत मददगार पद्धतियाँ होंगी। ये दोनों मिल कर मानवीय सबन्धों में काफी परिवर्तन ला सकती हैं और साथ-साथ अुद्योग और व्यापार में भी अिस तरह के सहकार की ओर अगर प्रगति की जाय तो कुल मिला कर अुनका क्रान्तिकारी परिणाम होगा।

मानव व्यवहार के स्रोतों के बारे में हम जितना जानते हैं अुससे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अेक "युद्धविहीन विश्व" की कल्पना निकट भविष्य में भी कोई असभाव्य बात नहीं है। हम जानते हैं कि परिवार के घनिष्ठ सबन्धों में ही सत्तावादी या "लोकतंत्र"

की वृत्तियों की बुनियाद डाली जाती है। प्रेम पर आधारित अनुशासन और शिक्षा की नई पद्धतियां अपनायी जा सकती हैं, जिससे कि आज के बच्चे बिना सोचे समझे युद्ध की राष्ट्रीय तैयारियों में हिस्सेदार नहीं बनेंगे और अुनको वृत्तियों का युद्ध की ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों में निकास नहीं ढूढ़ना पड़ेगा।

कभी कभी कुछ लोग यह आपत्ति अुठाते हुअे सुनाओी देते हैं कि बच्चों में अिस तरह के अहिंसक व्यवहार का आग्रह करना अनावश्यक नैतिक दबाव डालना होगा। लेकिन जो लोग यह आपत्ति अुठाते हैं, वे भी तो अपने बच्चों को चोरी अित्यादि से रोकते हैं, शायद बिना यह समझे कि अुनके अिस वाक्य और व्यवहार में विरोध है।

बच्चे को जो परिस्थिति और मौके मिलते हैं, अुन पर अुसका विकास निर्भर करता है, अिसलिअे अुसके लिअे अुपयुक्त परिस्थिति चुनने की जिम्मेदारी से मा-बाप और शिक्षक छूट नहीं सकते हैं। शिक्षक का अेक काम दैनिक कार्यक्रम का अैसा संगठन करना होगा, जिससे वह अुपयोगी प्रवृत्तियों की तरफ ले जाय। संगठन नहीं करने से बच्चे को स्वतंत्र बनाना नहीं, बल्कि अुसे अच्छी चीजों से वंचित रखना होता है। बड़ों के सुझाव मानने या न मानने की स्वतंत्रता बच्चों को होनी चाहिअे-बगीचे का काम करने, किताब पढ़ने, पहनने के कपड़े के चुनाव-अित्यादि सब बातों में। अुसे अेक अहिंसक समाज में रहने का आदी होना चाहिअे।

—'पीस न्यूज' (१५-४-६०) से साभार

धर्म यानें सदाचार का ग्रन्थ और विनय यानें शिष्टाचार का ग्रन्थ। धर्म या सदाचार जो हम से अुपर हैं, हमसे नीचे हैं और हमारे जैसे हैं, अुन सब के लिअे पूज्य भाव। जो है अुन सब के लिअे पूज्य भाव। अिस ख्याल से पूज्य भाव तमाम सद्गुणों और तमाम ज्ञान का मूल आधार हैं। जिस चीज को हम आदर के साथ देखते हैं, अुसी के साथ न्याय कर सकते हैं। अिसलिअे सभ्यता या विनय महज बाहरी चीज नहीं है, बल्कि नीति की जड़ में रहने वाली चीज है। हम हर आदमी से सद्गुण और दया की आशा नहीं रख सकते, मगर सामने वाले आदमी के प्रति आदर या अुसके व्यक्तित्व की कृति की आशा सभी से रखी जा सकती है। हर आदमी को सभ्य होना ही चाहिअे, अिसका यह सबल कारण है।

महादेव भाई की डायरी से—

सेवाग्राम के काम की रूपरेखा

अण्णा सहस्रबुद्धे

२-३ साल पहले से ही 'नई तालीम के नये पर्व' की बात शुरू हो गयी थी। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने अपने दिल्ली के प्रस्ताव में यह साफ कहा था कि सघ का काम अब मात्र पूर्व बुनियादी से लेकर अुत्तम बुनियादी स्तर के केन्द्र चलाना नही रहा है, बल्कि भूदान ग्रामदान के संदर्भ में अब नई तालीम को अपना आगे का कार्यक्रम नये ढंग से सोचना और बनाना पडेगा। देश में जो चार-पांच हजार ग्रामदान हुअे हैं, अुनमें से पांच-छह क्षेत्रों में सघन तौर पर निर्माण कार्य का प्रारभ हो गया है। नई-तालीम के दावे के अनुसार अुन क्षेत्रों की मांग थी कि नवनिर्माण के कार्य में, खास तौर पर ग्रामदानी अिलाकों के नवनिर्माण के कार्य में अब नई तालीम को सामने आकर समाज के पुनःसगठन के काम को हाथ में ले लेना चाहिअे। अैसे सदर्भ में स्वाभाविक ही है कि सेवाग्राम के कार्य को अिस प्रकार सगठित किया जाय कि वह अेक तो अपने क्षेत्र को ग्राम-स्वराज्य की स्थापना की ओर अग्रसर होने के लिअे प्रेरित करे और दूसरा देश के अन्य क्षेत्रों का भी मार्गदर्शन करे।

अिस दृष्टि को सामने रखते हुअे सर्व सेवा संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का संगम हुआ और नई तालीम के पूरे काम की जिम्मेवारी सर्व सेवा संघ के अूपर आयी। विनोबाजी ने अिसी सिलसिले में कहा कि संघ का सारा काम तालीम की बुनियाद पर खडा होगा तभी वह गहराई तक पहुचेगा।

सबसे आनन्द की बात तो यह है कि सेवाग्राम की जिम्मेवारी विनोबाजी ने अपने अूपर ही ली है। अुन्होंने शुरू में ही कहा था कि सेवाग्राम का काम मुख्य तौर पर आध्यात्मिक बुनियाद वाला होना चाहिअे। और साथ-साथ कुल-का-कुल काम अद्वैत तंत्रवाला हो, यानी सेवाग्राम का काम अेक ही संगठन के द्वारा संचलित होना चाहिअे।

अिन बातों को ख्याल में रखते हुअे व सेवाग्राम के चारों तरफ के क्षेत्र की आवश्यकताओं को देखते हुअे और हम कार्यकर्त्ताओं की आपसी चर्चाओं के बाद कुछ ढांचा मोटे तौर पर बना है। पिछले माह में जब हमने अपने विचारों का विनोबाजी के सामने रखा तो अुन्होंने हमारे मार्ग दर्शन के लिअे बारह मुद्दे बताये :

१. सेवाग्राम अेक आध्यात्मिक संस्था रहेगी। यानि वहां के जीवन में क्रिया-प्रधानता न होकर वृत्ति-प्रधानता रहेगी।

२. अुसका विकास आहिस्ता-आहिस्ता होगा।

३. वर्धा जिला सेवाग्राम का प्रथम प्रकाश होगा।

४. भारत सेवाग्राम का दूसरा प्रकाश होगा।

५. दुनिया सेवाग्राम का तीसरा प्रकाश होगा।

६. किसी भी रचनात्मक कार्य का दूसरे किसी भी रचनात्मक कार्यक्रम से अलग विचार नही होगा। यानी हर कार्यक्रम का समग्र दृष्टि से विचार होगा।

७. तालीम के लिअे वाहन–

(अ) पहले से आखिर तक मराठी होगा।

(आ) अुत्तम बुनियादी के लिअे हिन्दी भी हो सकेगा।

(अि) जागतिक कार्यों के लिअे अन्य भाषाअें भी हो सकेगी।

८. आरोग्य का विचार आध्यात्मक दृष्टि से अेक बुनियादी विचार माना जायेगा। और अिसलिअे अुसमें.

(अ) प्रथम स्थान योग-विद्या और कृषि-परिश्रम का रहेगा।

(आ) अनारोग्य निवारण के लिअे प्राकृतिक अुपचार,

स्थानीय वनस्पति विशेषता से और विशेष प्रसंग में किसी भी पद्धति की अन्य निर्दोष दवाई और आवश्यकता पडने पर शल्य चिकित्सा का अन्तरभाव होगा।

९. सब धर्मों के सार भूत अंश का ग्रहण और असार भूत अंश का त्याग करने की व्यापक दृष्टि रहेगी।

१०. साअिन्स की प्रगति को कोई रोक नही रहेगी। सिर्फ वह आध्यात्म के मार्गदर्शन में रहेगी।

११. सर्व कारोबार सर्व सेवा संघ के अंतर्गत रहेगा।

१२. वहां के किसी भी कार्य के लिअे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी पैसे का अुपयोग नही होगा।

सेवाग्राम में अभी तक बुनियादी, अुत्तर बुनियादी, अुत्तम बुनियादी विद्यालय चलते आअे है। बुनियादी शाला की पहली चार कक्षाअें गांव में और आखिर की चार, नई तालीम परिवार में चलती है। हम चाहते हैं कि गाव में ही अेक संपूर्ण आठ कक्षाओ की शाला चले और अुसे समृद्ध बनाने के लिअे आवश्यक्ता के अनुसार जो कुछ करना हो, किया जाय।

अुत्तर बुनियादी विद्यालय की दृष्टि रहेगी कि अुसमें प्रवेश के लिअे प्रथमता क्षेत्रीय बालकों को दी जाय। विद्यालय का अधिकतर शिक्षण मराठी भाषा में होगा। आवश्यक हो तो २५ प्रतिशत विद्यार्थी बाहर से भी लिअे जा सकेंगे।

अुत्तम बुनियादी तक की शिक्षा के लिअे ही यहा वातावरण बने, हमें अैसी तैयारी करनी है। जिन चार-पांच विभागो को नये ढग से संगठित करना है वे अुन विषयो में अुच्च शिक्षा प्रदान कर सकेंगे, अिसी ख्याल में अुन्हें पहले हाथ में लिया जायगा।

सेवाग्राम में कुल मिलाकर लगभग ३०० अेकड जमीन है। अुस पर अगर ठीक तरह से मेहनत हो और वैज्ञानिक दृष्टि से अुसकी सम्भाल हो तो खेती की अुच्चतम शिक्षा तक के लिअे यहा अच्छे से-अच्छा अिन्तजाम हो सकता है। किन्तु आज यह जमीन, हालाकि गाव की अन्य जमीना से कही अच्छी है, अुस हालत में नही है कि वह अधिक से अधिक अुत्पन्न दे। अुसे सुधारने के लिअे अेक-सवा लाख रुपये की पूजी लगानी होगी, तभी सेवाग्राम की खेती-फैकल्टी, जो ऑपटोमम् आमदनी देने वाली और जिसके द्वारा आगे की तालीम की व्यवस्था हो सके, अैसी बन सकेगी। दो तालाब व बाध तैयार करने, बधन अित्यादी बाधाकर भूमि सुधारने, बैल जोडियाँ खरीदने, बैडा बाधने और सब कुओ को ग्रिड पद्धति से आपस में पाइप के द्वारा जोड देने अित्यादि पर करीब-करीब सत्तर हजार रुपया खर्च करना पडेगा।

यह योजना तीन साल के काम की है। हमें हरेक मद की योजना तफसील से बनानी पडेगी। काम के नकशे व ड्राइग अित्यादि जानकार अिन्जीनियरा की मदद से बनाने होगे। हमारी आशा है कि सेवाग्राम की खेती योजना जिले के लिअे अेक शिक्षा प्रदान करने वाली योजना बनेगी। अिस काम को चलाने के लिअे पच्चीस-तीस नवयुवको को लेने का सोचा है। वे छोटे-छोटे टुकडा पर टोलिया बनाकर बैठें और ३-४ साल के अन्दर खेती के किसी-न-किसी पहलू पर अितनी दक्षता प्राप्त कर ले कि अुनका लाभ अन्य लोगो को भी मिल सके। खेती के साथ-साथ अुससे सम्बन्ध रखने वाले अुद्योगो को भी वे हाथ में ले और अपने पूरे समय का अच्छे-से-अच्छा अुपयोग किस प्रकार हो सकता है, अिसके अूपर शोध की दृष्टि से काम करे।

यहा अेक मौसम में भाजी अधिक होती है और दूसरी में कम। साथ साथ प्याज आलू की तरह की भाजियो का भी प्रश्न है। हमारी खेती-फैकल्टी अैसी होनी चाहिअे कि अुन प्रश्नो का हल भी फल-सरक्षण जैसी पद्धति द्वारा कर सके और किसान को बाजार के भावो के पीछे-पीछे न चलकर अपने भाव खुद निर्धारित करे, अैसी दृष्टि और शक्ति देने वाली हो।

जिले की दृष्टि से और शिक्षा की दृष्टि से दूसरी प्रवृत्ति हागी—अच्छी वर्क शॉप का सगठन करना। अगले दस-बीस साल को विकास की दिशा ध्यान में रख कर—जो वर्धा जिले में होने वाला है—हमें अिस वर्क शॉप के द्वारा ही अुस तालीम की व्यवस्था करनी होगी। अिस तरह की कर्म-शाला यदि चलानी है तो अुसमें पूजी के अलावा व्यवस्था शक्ति का भी मुख्य सवाल रहेगा। हमारा ख्याल है कि अिस वर्क शॉप के लिअे लगभग दो लाख रुपये की पूजी पर्याप्त होगी, जिसमें से सालाना पच्चीस-तीस हजार रुपये की आमदनी भी हो सकेगी। कार्यकर्त्ताओ और शिक्षका का खर्च अिसी में से निकल सकेगा, यानी यह शिक्षा-योजना स्वावलम्बी होगी।

अिस कर्म शाला के द्वारा अेक और आयोजन करने का प्रयत्न करेगे। खेती कार्य से बचे हुअे समय में काफी लोगो को अिसमें काम मिले, अैसी योजना बनाने की हमारी अिच्छा है। अमेरिका के श्री आर्थर मॉर्गन ने अिस ओर काफी चिन्तन किया है। अिस विभाग की योजना बनाने में पत्र व्यवहार के द्वारा हम अुनकी मदद भी लेना चाहते है। अिस दिशा में विचार विमर्श करने, योजना बनाने और अुसे

कार्यान्वित करने में देशभर के जिन-जिन मित्रों से मदद मिल सकती है, अुनका सहकार भी हम लेना चाहते हैं। अगले चार-छः महीनों में पूर्व तैयारी करके हमें यह कार्य प्रारंभ कर देना है।

अिस कर्म-शाला में फिलहाल मुख्य तौर पर निम्न लिखित कामों को प्रारंभ करने की योजना है।

१. खेती के औजार बनाने का काम—

सारे जिले के लिअे नये-नये औजार बनाये जायं। जिले में अैसा संगठन तैयार किया जाय कि अिन औजारों का प्रचार हो और माग के अनुसार अिस कर्म-शाला में माल तैयार किया जाय। शाला में काम करने वाले विद्यार्थियों को चार-छह घण्टे काम करने से साथ-साथ शास्त्रीय ज्ञान दिया जाय और अुनकी सामान्य शिक्षा का भी अिन्तजाम हो।

२. बिजली के सिद्धांत, वायर मैन कोर्स—

बिजली की मोटर चलाना, दुरुस्ती करना, पम्प बैठाना अित्यादि का काम जिले में जैसे-जैसे बिजली आयेगी बढ़ता जायेगा। हमारी वर्क शॉप अिस काम को शिक्षा का हिस्सा मान कर संगठित करे और जिले भर के काम को हाथ में लेने की तैयारी भी कर सके यह योजना है।

३. मशीन मरम्मत का काम

अिस कर्म-शाला में घर में अिस्तेमाल होने वाली छोटी-छोटी मशीनों की मरम्मत का काम किया जायेगा, जैसे– (अ) स्टोव मरम्मत (आ) पेट्रोमैक्स मरम्मत (अि) साअिकल मरम्मत (अी) आयल अेन्जिन का काम (अु) अेन्जिन फिटींग का काम जिले भर में करना। (अू) बढ़ई काम, लोहार काम, फर्नीचर बनाना, मकान बनाना अित्यादि के शिक्षण का कार्य भी अिसी वर्क शॉप के द्वारा हो। बिल्डिंग कंसट्रक्शन की शिक्षा की अच्छी योजना बनाने की हमारी अिच्छा है। अुसके द्वारा जिले में विकास योजनाओं के कामों को भी हाथ में ले सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष ज्ञान मिलेगा और वे ३-४ सालों में इस योग्य हो जायगें कि कहीं भी वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

४ खादी विद्या के सरंजाम बनाने का काम भी हाथ में लेना है। किन्तु वर्धा में नालवाडी सरंजाम विभाग के रहते हुअे हमें अैसा नहीं लगता कि अुसके लिअे अेक और कर्मशाला खोली जाय। नालवाडी में ही जाकर हमारे विद्यार्थी अुसकी पूरी-पूरी शिक्षा ले, यह अुचित दीखता है। अिसके बारे में अुनके साथ विचार विमर्श करके यह तय करना है। सरंजाम में शोध कार्य तक की शिक्षा मिले अैसी योजना है।

सेवाग्राम के अुत्तम बुनियादी विभाग की तीसरी फेकल्टी कला व संगीत रहेगी। अिसमें अिन विषयों की अुच्चशिक्षा का पूरा-पूरा अिन्तजाम हो, अैसी योजना है। कला की फेकल्टी का स्थान स्वाभाविक ही मगन संग्रहालय रहना अुचित होगा।

हमारे यहां कस्तूरबा आरोग्य भवन वर्षों से काम कर रहा है, अिसलिअे और क्योंकि आरोग्य के काम का प्रथम महत्व है, यह सोचा गया है कि चौथे फेकल्टी स्वास्थ्य की रहे। विनोबाजी ने अिसके बारे में स्पष्ट तौर पर

मार्ग दर्शन कर दिया है। धीरे-धीरे हम आयुर्वेद विशारद का ३-४ वर्षो का शिक्षाक्रम भी प्रारम्भ करना चाहते है। बाद में चलकर यहा *आयुर्वेदिक दवाअिया बनाने का कारखाना* प्रारम्भ करने कि अिच्छा है। अिसकी योजना अभी विस्तार से बनानी है।

अिन प्रवृत्तियो के साथ-साथ छापखाना के बारे में भी सोचना है। नई तालीम मुद्रणालय सेवाग्राम में और ग्रामसेवा मडल का मुद्रणालय पवनार में चल रहा है। क्या यह सम्भव नही कि अुन दोनो को सम्मिलित करके अेक ही मुद्रणालय चलाया जाय। अुसकी कार्यक्षमता बढाई जाय और अुसमें ब्लाक मेकिंग, फोटोग्राफी आदी भी सिखाई जाय। अुसके साथ साथ टार्अिपिंग, शार्ट हेण्ड, फार्अिलिंग, ऑफिस कार्य की शिक्षा का अिन्तजाम भी करना होगा।

जो कुछ करना है वह आज जो सामान हमारे हाथ में है अुसी को लेकर आगे बढना है। सेवाग्राम के काम का महत्व आज केवल सेवाग्राम तक सीमित ही नही रह जाता। विनोबाजी की अपेक्षा है कि वर्धा जिला अेक सर्वोदय जिला बने। यहा पर पिछले तीस वर्षों से काम हो रहा है। इसलिअे हमारी जिम्मेवारी बडी है। जिस प्रकार विनोबाजी ने कहा कि हमारे काम का प्रथम प्रकाश वर्धा जिला हो, हमे यह सोचना चाहिअे कि वर्धा जिले की सभी रचनात्मक सस्थाअें अपने आप को किस प्रकार मोड कर अिस जिम्मेवारी को पूरी कर सकती हैं। आज समय आया है कि हम सोचे कि हमारे काम का असर अपने क्षेत्र में ग्रामस्वराज्य *का निर्माण करने के लिअे अगर नही होता है,* तो क्या हमारे काम का कोअी अुपयोग है? विनोबाजी के कहने के अनुसार हमे सोचना होगा कि चाहे सस्था अखिल भारतीय स्वरूप की हो, तो भी अुसका सीधा सम्पर्क और अुसके काम का असर अुसके चारो ओर के क्षेत्र पर पडना चाहिअे। सेवाग्राम से जो अपेक्षा विनोबाजी, वर्धा जिले के काम का केन्द्र बनने के बारे में करते हैं, वह वर्धा की सभी सस्थाओ की मदद से ही हो सकता है। जिस प्रकार हमने नालवाडी सरजाम की बात कही, जबकि अेक सपूर्ण विकसित कर्मशाला वहा तैयार है तो क्यो न वह सेवाग्राम अुत्तम बुनियादी की अेक फैकल्टी के तौर पर शिक्षा का काम करे। अगर अिस प्रकार सम्मिलित शक्ति से सोचेगे तो हमें दो बाते करनी होगी—अेक तो हर सस्था अपनी तरफ से जिले की कितनी जिम्मेदारी अुठा सकती है, यह तय करे और दूसरे, सब मिलकर जैसा कि विनोबाजी ने कहा है गाव-गाव में अैसी परिस्थिति तैयार करे कि अेक भी मुकदमा अदालत में न जाय और न वहा कोई पुलिस आवे, इसकी आवश्यकता ही रहे। इस ओर किस प्रकार अपने काम को न मोड दिया जा सकता है यह हम सोचेगें अैसी अपेक्षा है।

छात्रालय जीवन के कुछ प्रश्न

दा. प्र. पांडे

नई तालीम के पिछले अंक में हम बालको के छात्रावासीय जीवन से संबन्धित कुछ प्रश्नो की चर्चा कर चुके है, अिस अंक में बच्चो के सामाजिक जीवन से संबन्धित कुछ विचार करेगे। सुबह की सामूहिक प्रार्थना से बच्चो का सामाजिक जीवन प्रारभ होता है। सुबह सब से प्रथम शौचादि से निवृत्त होकर व्यायाम के बाद बच्चो के प्रधानमत्री विद्यार्थियो को कतार में ले जाते हैं। सामूहिक प्रार्थना के प्रारभ में दो मिनट की शाति रखी जाती है। यह है मौन प्रार्थना। सामूहिक प्रार्थना में मौन तथा वाणीमय प्रार्थना, दोनो का समावेश है। मौन प्रार्थना में बच्चो का चित्त स्थिर रहे, अिसके लिअे क्या किया जाय?

(अ) प्रार्थना भूमि का सारा वातावरण शात और गभीर हो।

(आ) बच्चे भीड करके न बैठें, खुलकर ठीक आसन पर बैठें।

(अि) मौन की अवधि दो मिनट से अधिक लबी न हो।

(अी) प्रार्थना के लिअे बैठने का ढग ठीक हो, रीढ की हड्डी सीधी हो। जब तक बच्चो के मन में अुस समय का कैसा अुपयोग करे यह बात स्पष्ट नही है, तब तक अुस समय का ठीक अुपयोग होना भी कठिन है और अुनकी मनोवृत्ति भी स्थिर होना सभव नही। क्या भगवत् नाम के जप की बात हम अुनके सामने रखें? या कोअी सत वाणी? या आराध्य देवता की मानस पूजा करने की बात अुनको समझायें? कुछ भी हो, अुस समय का चित्त की अेकाग्रता के लिअे अुपयोग हो अिसकी कुछ कल्पना बच्चो के सामने होनी चाहिअे। अिसी सिलसिले में अेक बात याद आती है। मेरा अेक बच्चा ९ साल का है। अेक दिन वह मेरे साथ ही प्रार्थना मे बैठा। वैसे तो प्रतिदिन हम लोगा के साथ आता ही है। किन्तु अुस दिन बहुत शाति से वह प्रार्थना में बैठा रहा। प्रार्थना खतम कर जब हम घर लौटे तब अुसन अपनी मा को बताया "मा आज मैं जब आखें बद कर प्रार्थना में बैठा रहा तो मुझे सारे समय अपने बैल ही दिखाअी देते रहे। मैंने अुन्हें खिलाया, पिलाया और अुनकी पीठ पर हाथ फेरा। अैसा क्यो हुआ?" अिस बालक को बचपन से ही बैलों से बहुत प्रेम है। क्या बालको की अैसी प्रवृत्तियो को ठीक रास्ते से आगे बढाकर हम अेकाग्रता की ओर अग्रसर कर सकते हैं?

मौन प्रार्थना के समय का पूरा अुपयोग करने की सावधानी हमें रखनी चाहिअे, अन्यथा वृत्ति चचल होने की सभावना है। वाणीमय

प्रार्थना के समय मुख से शब्दो का अुच्चारण होता रहे तो सारी इंद्रिया अुसी ओर कार्यप्रवृत्त होती रहती हैं और मन के चचल होनेकी कम सभावनाअें रहती हैं । इसलिअे–

(अ) वाणीमय प्रार्थना के शब्दो का कठस्थ होना जरूरी है ।

(आ) प्रार्थना के शब्दो का अर्थ ज्ञान होने से चिंतन में मदद होती है ।

(अि) प्रार्थना छन्द के साथ कही जाय ।

वाणीमय प्रार्थना में सब सुर तथा ताल अेक साथ होना अत्यन्त आवश्यक है । इनके होने से ही प्रार्थना में रग चढता है । प्रार्थना में गाये जाने वाले भजन सब मिलकर गाने से ही अच्छे लगते हैं । अिस वर्ष अधिकाश समय छोटे बालको ने भजन मडली में अधिक हिस्सा लिया । बच्चो में ताल स्वर में गाने की अभिरुचि पैदा करने की दृष्टि से प्रार्थना की पूर्व-तैयारी का अभ्यास छात्रावास प्रागण में ही करना आरभ किया ।

भोजन व्यवस्था और सामाजिक जीवन

भोजन व्यवस्था में छोटे बडो का मेल जोडना कठिन होता है । यह भी अनुभव हुआ कि बडे विद्यार्थियो की तथा छोटे विद्यार्थियो की समस्याअें अलग अलग होती हैं ।

सामूहिक रसोडे में काम की जिम्मेवारिया सब मिल कर अुठानी चाहिअे और बच्चो में मिलजुल कर काम करने की आदत बढाओ जानी चाहिअे, किन्तु प्रत्यक्ष रूप में अैसा करना कठिन हुआ । अक्सर छोटे विद्यार्थी कामो में अपनापन नहीं महसूस करते हैं । और अुनके लिअे सामाजिक रसोडे का काम अेक बोझरूप हो जाता है । अैसी परिस्थिति में क्या किया जाय ? सामूहिक रसोडे में मुख्य जिम्मेवारी हमेशा बडो की ही रहेगी । क्योंकि काम भी बडा होता है और छोटे, छोटे ही रहते हैं । छोटो को अिस अवस्था में जिम्मेवारी सभालने की शिक्षा कैसी दी जा सकेगी ? पारिवारिक भावना का विकास, सामाजिक जीवन का बोध, बडो के प्रति श्रद्धा और आदर करने का सुयोग्य अवसर तथा शिक्षा का व्यापक दृष्टिकोण, ये सारे लाभ सामूहिक रसोडे में होने पर भी छोटे बालकों के स्वतत्र विकास का दृष्टिकोण को सामने रख कर हमने बालको का रसोडा इस वर्ष अलग किया । इससे समवयस्क बच्चो को अपनी मर्यादित समाज में स्वतत्रता पूर्वक काम करने का अवसर मिला । समाज के सारे कामो की सपूर्ण जिम्मेवारी अुठाने का मौका मिलने से बालको की आदतो में तथा दृष्टिकोण में अपेक्षित बदल होने में मदद हुअी । हमने बच्चो की नियमितता का रिकार्ड रखने का भी यत्न इस वर्ष किया । हर सप्ताह सामाजिक चर्चाओ में इसका अुल्लेख होने के कारण अेक तरह का नवचैतन्य निर्माण हुआ और सामाजिक भावना की ओर बालक अग्रसर होने हुअे दीखे ।

वस्त्रस्वावलंबन के लिअे सामुदायिक सूत्रयज्ञ

सूत्रयज्ञ सामाजिक जीवन का अेक अग माना गया है और बुनियादी शाला के कार्यक्रम में अिसका महत्वपूर्ण स्थान है । स्वय काते हुअे सूत का कपडा बच्चे पहनें, अिसमें वस्त्र के लिअे स्वय निर्भरता की बात निहित है । अिसके सबध में भी छोटे बच्चो का अलग कार्य-

क्रम रखें या सामूहिक रूप से ही यह कार्यक्रम चले यह प्रश्न सामने रहा है। बृहत समाज में सतर्कता न रखी जाय तो अनियमित होने के लिअे बच्चों को अवसर मिलता ही है। गावों से आने वाले बच्चे तो अिसमें नियमित रह ही नहीं पाते थे। अिसलिअे शाला के बालकों का वस्त्र स्वावलम्बन का कार्यक्रम अलग सगठित कर या सब के साथ ही अुसको चलाये ?

अिस वर्ष हमने अनुभव किया कि शाला के सभी विद्यार्थियोंका सूत्रयज्ञ का कार्यक्रम अलग रखना अच्छा होगा। प्रतिदिन काते हुअे सूत का लेखा रखना आरंभ किया। गुंडी पूरी होते ही प्रधानमंत्री के रजिस्टर में दर्ज करने का और गुंडीयों पर चिन्ह लगाने की व्यवस्था की। सप्ताह भर के अधूरे कताई काम को पूरा करने के लिअे शनिवार का समय रखा और अुस दिन मूलोद्योग कताई ही रखा गया। प्रति सप्ताह हर विद्यार्थी की प्रगति के बारे में बाल समाज को जानकारी भी देने की व्यवस्था हुअी। वस्त्र स्वावलंबन योजना की शुरूआत करने के पहले ही प्रत्येक विद्यार्थी के सामने साल के अंत तक क्या करना है अिसका चित्र स्पष्ट था। और समय समय पर कहां तक पहुंचे अिसका सिंहावलोकन होने से काम करने का अुत्साह बढ़ता गया। अिससे अनियमित रहने वाले बालकों के लिअे नियमित होने की प्रेरणा मिली। प्रति सप्ताह काते सूत को वस्त्र स्वावलंबन मंत्री के पास जमा किया जाता है जो अुसी दिन अुसे कबीर भवन में जमा कर देते हैं। जमा किया गया सूत बुनाईघर (कबीर भवन) में बुन जाने के बाद विद्यार्थियों को अुनके काम तथा आवश्यकताओं के अनुसार वितरण करते हैं।

सूत्रयज्ञ के साथ-ही-साथ गीताई के श्लोकों के पठन का कार्यक्रम चलाया। प्रति दिन दो श्लोक याद करने का निश्चय किया। ४ महीनों की अवधि में २४० श्लोक बच्चा ने कंठस्थ कर लिअे। कोई खास प्रयास अिसके लिअे नहीं करना पड़ा। कताई तो हुअी ही, साथ-साथ गीताई का पठन भी हुआ।

खेल का सामूहिक कार्यक्रम

खेल तथा सहल आदि का सामाजिक जीवन में खास स्थान है। अधिकांश अुत्सव त्योहार और सांस्कृतिक कार्यक्रम हम सामूहिक रूप से ही मनाते हैं। अिसमें बड़ों से छोटों को प्रेरणा मिलती है और विशिष्ट संस्कार बनाने में काफी मदद मिलती है। यह सारा होने पर भी अपने समाज में खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सहलें इनका अलग और महत्व पूर्ण स्थान है। कितना भी कहिअ बच्चे अपने समान अुम्र वालों के साथ ही खेलना, आनंदप्रमोद करना तथा घूमना फिरना अधिक पसन्द करेंगे और वह स्वाभाविक ही है। समवयस्क समाज में बच्चे अपना आत्म प्रकटन भी ठीक तरह से कर पाते हैं। सवाल यह है कि अैसे कार्यक्रमों के लिअे क्या हम सामूहिकता का ही आग्रह रखें या अुम्र के अनुसार अुनका विभाजन करें? विकास की दृष्टि से क्या लाभप्रद होगा? हमारी राय में साल में कुछ कार्यक्रम सामूहिक रूप से और कुछ स्वतंत्र रूप से अलग अलग संगठित किअे जाने से दोनों के लाभ मिल सकते हैं।

छात्रालय जीवन की अपनी समस्यायें होती है। अलग अलग स्तर के समाज में समस्यायें भी अलग प्रकार की होती हैं। हमारे ग्रामीण

(शेषांश पृष्ठ १४३ पर)

बच्चे की देखभाल और शिक्षा (५)

जानकी देवी
देवी प्रसाद

शुरू के दो सालों में बच्चे के विकास की गति सब से ज्यादा तेज और निरीक्षण करने में अत्यन्त दिलचस्प होती है। अिस अर्से में वह अेक नितान्त निस्सहाय अवस्था से अपने आप अुठने बैठने चलने बोलने के काबिल हो जाता है, अपनी पेशियों के अुपयोग पर काफी नियन्त्रण पा लेता है। करीब ४ या ५ वे महीने में वह बाह्य जगत के बारे में और अुस जगत में अपनी वैयक्तिक अस्तित्व के बारे में सचेत होता है। पहले वह वस्तुओं को देखने और अुन्हें अलग अेक चीज के रूप में पहचानने लगता है। अुसका अगला कदम अुन्हें अपने हाथ में पकड़ने, अिधर अुधर घुमा कर देखने और फिर अुन्हें अपने मुह में डालने का प्रयत्न करने का होता है। अिस समय अुसके पास अैसे अेक आध खिलौने रख देना अच्छा होगा जो वह आसानी से अपनी मुट्ठी मे ले सके। अिस बात का ध्यान रखना चाहिअे कि यह खिलौना ज्यादा वजनदार न हो और अुसके रंग वगैरह मुह में चले जाने से बच्चे का नुकसान न हो। लकडी के हल्के खिलौने आम तौर पर अच्छे होते हैं।

अिसके बाद बच्चा पलटने, अुठकर बैठने और फिर कोई चीज पकड कर खड़ा होने का प्रयत्न करता है। वह हर अेक क्रिया को बार-बार दुहराने और बहुत दफे अभ्यास करने से ही सीख लेता और अुसके लिअे आवश्यक पेशियों के चलन में काबू पाता है जब तक अुसकी ये चेष्टायें अनायास ही होती हैं। अिसमें मा या जो भी कोई अुसकी देख भाल करते हों अुनका कर्तव्य अितना ही है कि अुसे ये क्रियायें निर्बाध रूप से और अपनी ही गति से करने दें। अुसे चोट न पहुचने दें और कभी-कभी अुसको थोडी-थोडी मदद करके अुसे प्रोत्साहित करें। हर अेक बच्चा अपनी ही गति से सीखता है। कोई दूसरा से थोडा पीछे हो तो अुसके मा बापों को बहुत चिंता करने का कारण नहीं है। अुसको समय के पहले–याने जब तक वह खुद तैयार नहीं होता, अुसके पहले–वे चेष्टाअें सिखाने का प्रयत्न करने से कोई लाभ नहीं, अुलटा नुकसान ही होता है। बच्चे को जो चाहिअे वह है प्रेम, सुरक्षा बोध और अनुमोदन। वह जब कोई नयी बात सीख लेता है तो अपनी मा बाप और दूसरों से अनुमोदन की अपेक्षा करता है, अेक प्रत्याशा के साथ अुनकी तरफ देखता है। अगर अुनके मुह पर अनुमोदन के रूप में अेक हसी देखता है या प्रोत्साहन के अेकआध शब्द सुनता है तो अुसे सन्तोष और आनंद का अनुभव होता है, अुत्साह मिलता है।

कई दफे देखा जाता है कि बच्चा अपनी अुम्र के अनुरूप चेष्टाअें न करता हो तो अुसके पीछे कोई मानसिक तकलीफ कारण है। अुसे प्रेमपूर्ण बर्ताव नहीं मिलता होगा, अपने में

और दुनिया में विश्वास नहीं बन पाया होगा। हमारे देश में अिस विषय में वैज्ञानिक अनुसधान का काम अभी कम ही हुआ है। लेकिन जहा भी विभिन्न परिस्थितिया के बच्चो के विकास-क्रम के बारे में शास्त्रीय निरिक्षण हुआ है, अुस विषय के तज्ञो का कहना है कि बच्चे को ज्यो ही प्रेम और प्रोत्साहन मिला, कुछ ही दिना म, अुसके विकास में स्पष्ट रूप से फर्क होता है, वह अपनी अुम्र के अनुरूप चेष्टाअें करन का प्रयत्न करता है।

लेकिन जब कोई 'पढे लिखे" मा बाप अपने बच्चे के विकास के बारे में अत्यधिक चिंतित होकर बहुत मानसिक तनाव म रहते हो तो अुसका परिणाम भी अुपेक्षा जितना ही, या अुससे भी ज्यादा नुकसानदेह होता है। अेक स्वस्थ और प्रसन्न वातावरण ही बच्चे के स्वाभाविक विकास का अुत्तम माध्यम है।

खेल

डेढ साल तक तो बच्चे के विकास की विविध चेष्टाअें ही अुसका खेल भी होता है। वह आसपास की वस्तुओ को पकडना चाहता है, अुसके लिअे हाथ बढाता है। शुरू-शुरू म अुसकी य चेष्टाअें अनिश्चित और कई दफा असफल होती हैं। धीरे धीरे वह ठीक दिशा में हाथ बढाना और चीजो को पकडना सीखता है। किसी पेटी या अलमारी से चीजें निकाल निकाल कर बाहर डालन म भी बच्चा आनन्द अनुभव करता है। वह अुसकी मा के लिअे बडा समय लगनवाला और थकाने वाला खेल हो सकता है। हमेशा बच्चे को अैसा करने देना सभव भी नही होता है। अैसे समय अुसे दूसरे किसी रुचिकर खेल में लगाने का ही प्रयत्न किया जा सकता है। जहा समय हो किसी पुरानी पेटी में कुछ कपडा के टुकडे और खिलौने अित्यादि भरकर अुसे अुन्हे बाहर निकालने अन्दर डालने का मजा अनुभव करने देना चाहिअे। आम तौर पर मा-बाप जो अैसे मौका पर शिशु को टोकन का प्रयत्न करते है, वह गलत है। शिशु के लिअे यह सब प्रवृत्तिया अुसके शिक्षण की योजना के ही अग हैं।

बच्चा सीढियो पर चढना अुतरना भी बहुत पसद करता है। अिन सब चेष्टाओ से अुसे अपनी पेशियो पर नियत्रण मिलता और बढता है। अिसलिअे गिरने के डर से अुसे रोकना नही चाहिअे। अेक आध दफे गिरन से अुसे कोई नुकसान भी नही होता है। हा, कोई गहरी चोट न लगने पावे, अिसके बारे में साव-धान रहना चाहिअे।

अिन चेष्टाओ के दरमियान हर अेक बच्चा कई दफ गिरता है। अेक आध दफे अुसे चोट भी लग जाती है। लेकिन अुससे वह घबरावे नही, यह मा की वृत्ति और वर्ताव पर बहुत निर्भर करता है। मा अगर अत्यधिक सभ्रात हो जाती है, खुद रोना पीटना शुरू करती है तो बच्चा भी बहुत घबरा जायगा। वह आगे अैसी चेष्टायें करन में हिचकिचायगा। अुससे अुसको प्रगति में भी बाधा आ सकती है। लेकिन मा अैसे मौको पर धैर्य और प्रसन्नता के साथ काम लेती है, घबराती नही, तो बच्चा भी अिन चोटो को काफी प्रसन्नता के साथ झेल लेता है। अेक दो मिनट म ही भूल जाता है। अक्सर अैसा भी होता है कि गिरने और चोट लगने पर बच्चा पहले अपनी मा की तरफ देखता है। मा के अुपर जो प्रतिक्रिया है, अुसके अनुसार बच्चे की भी हो जाती है। हमारा अैसा अनुभव है कि अगर मा बाप या दूसरे जो भी बच्चे के पास हैं घबराते नही,

हंसते रहते हैं, और बच्चे को सात्वंना देते हुअे ही अुसका ध्यान दूसरे विषयों पर आकर्षित करते हैं, तो बच्चा काफी चोट लगने पर भी कम घबरायेगा। अुसको छोटी मोटी "दुर्घटनाओं" को साहस और मजे से झेलने की आदत पड़ जायगी। यह अुसकी शिक्षा का अेक महत्व पूर्ण अंग है। जिंदगी में कभी न कभी हर अेक बच्चे को कुछ अरुचिकर अनुभव तो होंगे ही। अुन्हें प्रसन्नतापूर्वक सहन करने और अपना समतोल नहीं खोने की शिक्षा शुरू से ही अुसे मिलनी चाहिये।

बच्चे का अेक दूसरा अत्यन्त प्रिय खेल पानी के साथ होता है। वह खुद पानी में बैठने, हाथ को पानी पर पटकने और छींटे अुठाने में बड़ा मजा अनुभव करता है। जब तक जुकाम या दूसरे किसी रोग के कारण इसकी मनाही न हो, बच्चे को इस तरह का खेल खेलने देना अच्छा होता है। बच्चे को पानी के चौड़े बर्तन में बिठाना शायद सब परिवारों के लिये संभव न हो, फिर भी अुसके खेल का कुछ न कुछ इन्तजाम किया जा सकता है। अनेक घरों में मिट्टी की नान्दें होती हैं। अगर अुन्हें जमीन में गाढ़ कर शिशु को यह खेल करने का मौका दिया जाय तो अच्छा होगा।

रना।

हमारे देश में बच्चे को आम तौर पर रोज स्नान कराते ही हैं। कई क्षेत्रों में मालिश करने का भी रिवाज है। सुबह की हलकी धूप में बिठा कर अुसकी मालिश करें या तेल लगाकर थोड़ी देर अुसे धूप में खेलने दें, तो अुससे अुसे सूर्य किरणों से विटामिन डी मिल जायेगी। अुसके स्वास्थ्य के लिअे यह बहुत अच्छा होगा।

कपड़े

बच्चों को अैसे कपड़े कतई नहीं पहनाने चाहिअे जो अुसकी चेष्टाओं में बाधा दें। अुसके कपड़े जितने भी सादे और पहनाने अुतारने में आसान हों, अुतना ही अच्छा है। हमारे जैसे गर्म देशों में सिवाय जाड़े के तीन चार महीनों के, बच्चों के लिअे कुछ ज्यादा कपड़ों की जरूरत नहीं होती। तंग या जिनमें वह आराम न महसूस करे, वैसे कपड़े अुसे पहनाना ही नहीं चाहिअे। खुला बदन बच्चा सुन्दर भी दिखाई देता है, स्वस्थ भी रहता है। बच्चे को कपड़े की तभी आवश्यकता पड़ती है जब या ठन्ड हो या गरम लू चल रही हो।

नींद

बच्चा पहले तो अधिक समय सोता ही रहता है। ६ महिने में भी वह दिन में दो तीन बार सोता है। धीरे-धीरे अुसका सोने का समय कम होता है। ७,८ महीने के बाद अुसका दिन का कार्यक्रम अैसा बनाना अच्छा होगा कि वह सुबह कुछ देर सो ले और फिर दुपहर को। अेक साल के बाद शायद वह सुबह का सोना छोड़ देगा। दुपहर के भोजन के बाद अधिकतर बच्चे दो तीन घण्टे तक भी सो जाते हैं। रात के समय भी अेक निश्चित समय अुसके सोने की आदत डालना अच्छा है। हमारे देश में साधारणतया अैसा होता है कि बच्चे बड़ों के साथ ही जगे रहते हैं। जब मां सोने के लिये तैयार होती बच्चा भी तभी सोवे, यह कतई ठीक नहीं। न वह बच्चे के स्वास्थ्य के लिअे अच्छा है और न परिवार में दूसरे लोगों को कुछ फुरसत व शान्ति मिलने की दृष्टि से। सोने के समय के पहले अुसे अैसे किसी खेल अित्यादि से अुत्तेजित

करना भी अच्छा नहीं है, जिससे कि अुसका मन देर तक शान्त न हो पाये। सोने के पहले बच्चा अपनी मां या नानी, दादी से कुछ कहानी या गीत सुनना पसन्द करता है और यह अुसकी भावनात्मक संतृप्ति व समृद्धि के लिअे बहुत अच्छा होता है।

जब दांत निकलने शुरू होते हैं

बच्चे के दांत निकलने के समय कुछ तकलीफ आम तौर पर होती है। लेकिन अुसे दस्त, बुखार, अित्यादि अिस कारण से होते हैं, अैसा आज का वैद्यशास्त्र नहीं मानता। बच्चे को ये बीमारियां होती हैं तो वे और किसी कारण से होगा। और अुनका अुचित अिलाज करना ही चाहिअे। दांत निकलने के पहले बच्चे को मसूड़ों में खुजली और दर्द अकसर होता है, किसी-किसी बच्चे को अिससे बहुत तकलीफ होती है, किसी को कम। अिस तकलीफ के कारण बच्चा बेचैन होता है, ज्यादा रोता है, कभी-कभी अुसकी नींद में भी अिससे बाधा आती है। अैसे समय वह कुछ सख्त चीजें
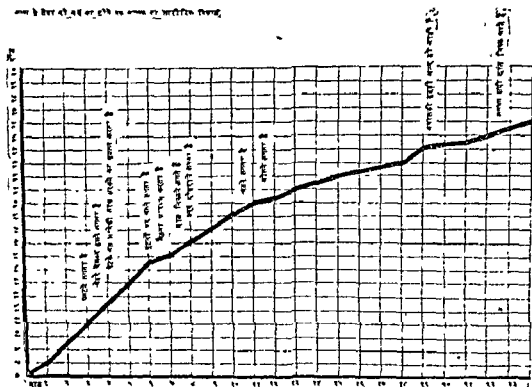
-आलेख : कस्तूरबा दवाखाना, सेवाग्राम, के बाल आरोग्य केंद्र के द्वारा सेवाग्राम के क्षेत्र के बालकों के विकास क्रम का जो निरीक्षण हुआ अुसके आधार पर बनाया हुआ ग्राफ। यह अुन बच्चों की प्रगति का आलेख है, जिनका जन्म के समय का वजन ७ पौंड के लगभग था।

चबाना चाहेगा। तब अुसे सख्त बिस्किट, कुछ सख्त सेकी हुअी रोटी वगैरह चबाने को देना अच्छा होता है। वैसे वह जो भी चीजें हाथ में आयेंगी, अुन्हें चबाने का प्रयत्न करेगा ही, अिनसे जो गन्दगी पेट में चली जाती है वही अक्सर दस्त अित्यादि का कारण होती है, न कि दात निकलना। फिर भी अुसकी पचनक्रिया में और साधारण स्वास्थ्य में अिस समय कुछ गड-बड हो सकती है। सब बच्चो को अेक ही अुम्र में दात नही निकलते हैं, किसी को जल्दी ही और किसी को देरी से दात निकलते हैं। आम तौर पर छठे सातवे महीने में नीचे सामने के दो दात आ जाते है। और फिर अूपर सामने के चार। ढाई साल की अुम्र तक अुसके पूरे २० दात निकल आते हैं। यह सारा समय अुसको अितनी तकलीफ नहीं रहती है। बीच बीच में, खास कर पीछे के दात निकलने के समय खुजली और दर्द होता रहता है।

बच्चा चीजें मुह में डालेगा और चबायेगा ही, अिसको बुरी आदत मान कर पूरी तरह से रोकने का प्रयत्न करना मा और बच्चा दोनो को तकलीफ का कारण ही बनेगा। वह अैसी कोई चीज मुह में न डाले, जिससे कि अुसको नुकसान हो, यह ख्याल रखना बिलकुल जरूरी है। बच्चा जब रेंगने और घुटनो पर चलने लायक होता है तो वह घर के कोने-कोने में पहुच सकता है। अक्सर यह सभव भी नही होता कि हमेशा अुसके अूपर किसी बडे की नजर रहे। अिसलिअे अिस समय मा को सतर्क रहना चाहिअे कि अैसी कोई नुकसान देह चीज अुसकी पहुँच में न आ जाय। बटन (जो वह निगल सकता है) सूई, छुरी, चाकू, कोई भी तेज या धारदार चीज, दिया सलाई, दवाअियाँ अित्यादि सब चीजो को अैसी अूची जगह पर रख लेना चाहिअे जहा बच्चे का हाथ नही पहुच सकेगा, अन्यथा ये भयकर विपत्ति के कारण बन सकते हैं। जब तक बच्चा ३, ४ साल तक नही होता है, अच्छी गृहिणी को घर की व्यवस्था ही अैसी करनी चाहिअे कि नजर चूकने पर भी अिस तरह की चीजें बच्चे के हाथ में न पडने पावे।

(पृष्ठ ३३८ का शेषांश)

जीवन में पारिवारिकता की भावना सत्य होती जा रही है। अुसे और व्यापक बनाकर, बालको के मानस में हम किस प्रकार अुसका स्थान बना सकते हैं, यह बडा प्रश्न है। शिक्षा पढाई-लिखाई तक ही सीमित प्रक्रिया नही है। व्यक्ति के अन्दर सामाजिकता का बोध आये और वह स्वेच्छा से समाज की सेवा करने के लिअे तत्पर रहे, यह शिक्षा का अुद्देश्य है। छात्रालय जीवन इस ओर बहुत कुछ कर सकता है।

हमारा निवेदन है कि जो साथी छात्रालय जीवन के बारे में गहराई से चिन्तन करते हैं और जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव भी है, वे अिस विषय में आपस में विचार विनिमय करें तो वह सब के लिअे अच्छा होगा।

अक्राणी में ग्राम-निर्माण का काम

ठाकुरदास बंग

अक्राणी के गिरिजन भाइयों में ग्रामदान का संदेश फैलाने के निमित्त जब मैं जुलाई १९५८ में यहां आया तब मुझे मानवता के नवीन दर्शन हुअे । इतना घना अेव समृद्ध जंगल था । कई स्थानों पर अच्छी जमीन थी । लेकिन लोग भूखे थे । साल में माह-दो-माह पहाड़ों में मिलने वाला जहरीला कद खाकर लोग जैसे-तैसे रहते थे । घर में न कोई खास बर्तन था, न अन्य वस्तुअें ही थी । लोगों के तन पर यहा की बुनी हुई अेक विशेष किस्म की लगोटी के अलावा और कुछ न था । लोग दिन रात में २०-३० बार, अपने ही घर के आंगन में बोई हुअी तमाखू पीते थे । बहने इस काम में पुरुषो से पीछे भला क्यो रहने-वाली है? और पाच सात साल के लडके-लडकिया भी मां बाप के साथ हुक्के को मुह लगाते थे । यहां के ढाई सौ देहातों में ९० शालाअें थी । लेकिन बताया गया कि तीन चौथाई शिक्षक अक्सर शालाओं में जाते नही थे । विनोबाजी इस इलाके में ८ दिन घूमे । हर पडाव पर अुनके पास शिक्षकों को अनुपस्थिति की शिकायत की गई । अैसी परिस्थितिया में यदि साक्षरता का औसत २ प्रतिशत से अूचा नही जाय तो आश्चर्य की कौनसी बात है । गांव-वालों के आपस में भयकर झगडे होते थे । जिससे झगडा करना हो, तो लोग अुसके घर शराब पीकर जाते थे । गाली, मारपीट और कई बार खून कर डालना अुनके लिअे असाधारण बात नही थी । प्रजा भोली, मेहमानों का स्वागत करने वाली और सत्यप्रिय थी । लेकिन यदि किसी पर शक आया तो अुसको मौत के घाट अुतरना मामूली बात थी । चार छः माह से अधिक साल भर में काम न होने के कारण लोग हमेशा शराब मे मस्त और आलस्य में पडे रहते थे । इसलिअे खेती अत्यन्त प्राथमिक अवस्था में थी । हल के अलावा और किसी औजार का अुन्हें पता नही था । सब काम सब आदमी थोडा-थोडा जानते थे ।

अिसलिअे ग्रामोद्योग अुन्नत नही थे । न कारीगरों का कोई वर्ग ही था । शिक्षा का नितान्त अभाव और यातायात के साधन नही के बराबर होने के कारण लोगो को, अंग्रेजों का राज्य गया और स्वराज्य आया, यह मालूम नही था । राम, कृष्ण, गाधी, नेहरू, ये नाम अुन्होने कभी सुने तक नही थे ।

लेकिन अैसे भोले लोगों में अुदारता की, बांट-बांट कर खाने की परंपरा थी । अतः अुन्हे ग्रामदान का, बांट-बांट कर खाने का विनोबाजी का सदेश जचा और अुन्होने ग्राम-स्वराज्य के रास्तेपर चलने का तय किया । इनकी समस्याओं को सुलझाना अेक तरह से

काफी आसान था और अेक माने में बहुत मुश्किल । इन लोगों को आजकल पुलिस की धमकियां, जंगल अधिकारियों की रिश्वत, बेगार और बंदर-घुडकियां ही मालूम थीं । सत्ता के बल पर काम लेना आसान था । कई स्थानों पर यहां के विकास अधिकारियों ने पैसा पानी सरीखा बहाकर कुअें खोदे थे । लेकिन इनमें से कई कुओं पर पानी पीने को लोग नहीं जाते थे । कुछ स्थानों पर खेतो के लिअे लोहे के हल पहुंचा दिये थे । लेकिन वे भी अछूते ही पडे थे । अिसलिअे सत्ता के बल पर किया हुआ काम अन्तस्तल को नहीं छूता था । देहातियों की सादी बांसफूस की झोपडियों की तुलना में हजारों रुपये खर्चकर बडे-बडे मकान ग्राम सेवकों के लिअे बनाअे गये थे । सूट-बूट में घूमने वाले ग्रामसेवक अिन मकानों में रहते थे । अिससे प्रजा स्तंभित रह जाती और चकाचौंध हो जाती थी । लेकिन अुनका हार्दिक सहयोग मिलना दुस्वार था । सब कामों के लिअे पैसा चाहिअे । बिना पैसे से कोई भी काम हो नहीं सकता, यह अधिकारियों की अेवं लोगों की धारणा हो गई थी । अिससे प्रजा भिकमंगी, मुंहताज और भयभीत हो सकती थी।

लेकिन सत्य अहिंसा के रास्ते पर चलना हो, प्रजा की अन्दरूनी शक्ति जगानी हो तो भय और लालच—दोनों रास्ते बेकार थे। न अुनसे काम होता था और अगर कुछ हो भी जाय तो वह स्थाअी नहीं होता था । जब भय और लालच ये दोनों साधन छोड दिअे, तब व्यापक शिक्षा के अलावा और क्या अस्त्र रह जाता है ? अतअेव यहां के विकास के—ग्राम-स्वराज्य के—काम को व्यापक पैमाने पर चलने वाले जीवन के अंगप्रत्यंग को स्पर्श करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रम के रूप में हमने देखा। व्यापक प्रौढ शिक्षण, यह अिसका स्वरूप रहा । इसलिये अिनके जीवन के साथ घुलमिल जाने का अेक-मात्र पथ ही हम ने अपनाया । पन्द्रह गांवों में अेक सेवक काम करे और अिन पन्द्रह गांवों में से अेक गांव को केन्द्र मान कर वहां विशेष काम हो और अन्य स्थानों पर विचार-प्रचार हो, यह सोचा गया। यहां की आबोहवा बारिश में अितनी खराब रहती थी कि ग्रामदान प्राप्ति के बाद जब हम प्रथम बार यहां आअे तो सब के सब बीमार पडे। गांव में रहने के लिअे घर न होने के कारण और यहां की भाषा न जानने के कारण निराश होकर वापिस चले थे । तबीयत सुधार कर और अधिक आंतरिक बल अिकट्ठा कर हम लोग फिर आठ दिन के लिअे यहां आये थे और सोचा था कि आठ दिनों के भीतर यहां काम होने के कोई चिन्ह न दीखे तो वापिस चले जावेंगे । अकाणी का नाम फिर कभी न लेंगे । पहले हम बडे गांवों में रहने वाले नेताओं के चक्कर में पडे थे। निराशा के अलावा कोई नतीजा नहीं निकला । हम हिम्मत कर और दुभाषियों को साथ लेकर गांव-गांव गये । लोगों की जिस काम के लिअे सहानुभूति है, लोग अिस रास्ते पर चलने को तैयार हैं, अैसा पाया । अिसीलिअे यह सारा अिलाका ग्रामदान हो जाने पर यह तय किया कि लोगों को सिखाना हो तो पहले हमें ही अुनसे काफी बातें सीखनी चाहिअे । और अुनके साथ रहने की आदत डालनी चाहिअे । अेक ही घर में आदमी और पशु साथ-साथ रहते थे, लोग घर में चाहे जहां थूकते थे । गंदगी का कोई अंत नहीं था । और रात में शराब पीकर लोग हिंसक पशुओं की भांति गर्जना

करते थे और आपस में झगड़ते रहते थे। असे घरो में रहना आसान नही था।

स्कूल बोर्ड के शिक्षक गावो में नही रहते थे। असका यह भी अेक कारण था। शुरू में सबने कहा कि गाव-गाव में हम ५०० रुपयो की अेक झोपडो कार्यकर्ताओ के लिअे बनावेंगे। लेकिन अैसा करने से लोगो के जीवन के साथ अुतना स्पर्श नही होता, जितना अुनके घरो में रहने से हो सकता है। अुनके नाम बदल कर अुन्हे हमारी सस्कृति के नाम देने के मोह का भी सवरण करना पडा। अुनके साथ रहना, मराठी गुजराती, और अैराणो बोलियो के मिश्रण से बनी हुई अेक स्थानीय बोली पावरी या भिल्ली को सीखना पहली आवश्यकता थी। अिन तीन-सौ देहातो में भी असके ६ प्रकार के रूप थे। अुनके साथ अुनके खेतो में जाकर मेहनत करना भी तय हुआ। अुनके पावरी भाषा के गीत हमने सीखे और हम अुन्हे गाने लगे। अुनके साथ समानता का बर्ताव करने लगे। आज तक अुन्हें कोई डाटता था या लालच दिखाता था। अक्राणी में काम करना अदमान की सजा है, यह समझकर अधिकारी अपना तबादला अन्य क्षेत्रो में करवा लेने के लिअे लालायित रहते थे। अुनके साथ आदमी जैसा व्यवहार किसी ने नही किया था। यह व्यवहार जब अुनके साथ करने वाले, अपना सामान अपने कधो पर लादकर चलने वाले यानी अुनसे बेगार न लेने वाले, अुनकी सेवा करने लगे, तो यह सब दर्शन अुनके लिअे अनोखा था। कई महीनो तक वे सोचते रहे कि असके पीछे कोई रहस्य या षडयत्र तो नही है। अुनको लूटने के लिअे कोई नई युक्ति तो नही खोजी गई है।

धीरे-धीरे सशय और अविश्वास के बादल हटने और अुत्सुकता से सहयोग का सूरज प्रकट होने लगा। और "हमें सिखाने के लिअे आप अपना सेवक दीजिये" "मास्तर भेजिये" अैसी माग चारो तरफ से आने लगी। लोग रात के समय प्रौढ-शिक्षा के वर्गों में आने लगे। ये प्रौढ-शिक्षा वर्ग अक्षर ज्ञान के वर्ग थे, श्रवण वर्ग थे, मनोरजन के स्थान थे। और फिर ग्रामसभा भी बन गयी। गाव के काम की योजनाओ पर यहा चर्चा होने लगी और आगे के काम का ढाचा असमें से बनने लगा। लोगो को खुद अपने पैरों पर खडे होना चाहिअे, यह मत्र बार-बार अुनके कानो तक जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि कुछ गावो में लोगो ने अपने गाव के लिअे अेक महीना श्रमदान करने का तय किया। खुटा, मव्हाण के लोगों ने अिस वर्ष प्रति परिवार अेक खेत के हिसाब से सामुदायिक श्रम द्वारा बधान बाधे और छः साल में सारे गाव के खेतो के बधान बाधने का निश्चय किया।

अमलीबारी गाव में बारह मास काम (फुल अेम्प्लायमेन्ट) का निश्चय हुआ। अुन्होने अपने गाव के सब खेतो में सामुदायिक श्रमदान की गगा बहा दी। हमारा विकास हमें करना है। यह भावना जगी और जमाना क्षेत्र के बारह गावो ने अपनी आमदनी दुगुनी करने की अेक पचवार्षिक योजना क्षेत्रसभा बना कर पालियमेंट की भाति विचार स्वीकृती दी।

भय और लालच को छोड कर शिक्षा के माध्यम से गाव-गांव में नई जागृति आ सकती है, सदियो तक अज्ञान, आलस अेव व्यसनो में सोये हुअे गाव भी अगडाअिया लेने लगते है, अुठकर चलने लगते है, अिस डेढ साल में

(शेषाश कवर पृष्ठ ३ पर)

नई तालीम को अक्राणी की चुनौती

सम्पादकीय

अेक तरफ नर्मदा और दूसरी तरफ तापती, जिन दो नदियों के बीच सुन्दर पहाड़ी पर बसे ये भील और पवारी आदिवासी, कहते हैं साल में तीन माह तक कभी-कभी जंगल में मिलने वाली जहरीली जड़ों को खाकर गुजारा करते हैं। किन्तु जब पिछले महीने में अक्राणी जा कर वहां की भूमि को देखा तो अुस बात पर बड़ा अचम्भा हुआ। अितनी अच्छी जमीन और चारों तरफ जंगल, फिर ये लोग भूखे क्यों? लोक संख्या भी थोड़ी और आदिवासी होने के नाते अुनकी आवश्यकतायें भी कम। जमीन का नौवां भाग जंगल के नीचे और अेक भाग खेती में, तिसपर भी जमीन प्रति व्यक्ति आयगी दो अेकड़। क्या देश के किसी कोने में अितनी जमीन प्रति आदमी आती है? पर लोग भूखे-नंगे। अुस जंगल में रहने वाले जानवर भी वहां के मनुष्यों से सुखी होंगे।

फिर दूसरा ख्याल आया। जरूर बाहर के लोग शोषण करते होंगे। हमारे साथी जो डेढ़ वर्ष से अिन आदिवासियों की भूक और गरीबी के साथ लड़ने के लिअे कमर कस कर लगे हुअे हैं, कहते हैं कि वह अैसी जगह है, जहां शोषण करने वाले भी कम ही पहुंचे हैं। क्यों? शायद अिसलिअे कि न तो रास्ते ही हैं वहां तक पहुंचने के लिअे, और अगर रास्ते भी हों तो शोषण करेंगे भी किस चीज का? अुनके सभी काम अितने पिछड़े हुअे हैं कि कोई नजर भी लगायगा किस वस्तु पर?

जमीन अितनी अच्छी, जंगल की अितनी संपदा और बाहर का असर भी कम, तो फिर अितनी गरीबी क्या? अिसका कारण अज्ञान है। सात दिन के अच्छे निरीक्षण में हमें केवल दो औजार दीखे। अेक तो हल और अेक लंबा-सा पाठल, जिससे वे पेड़ काटने, घर बनाने और खून करने तक के सभी काम कर लेते हैं। खेत में निराई करते हैं, हाथ से घास खींच-खींच कर। अुन्हें देखकर जापान जैसे देश की तुलना मन में आती है। वहां के लोग कितने तरह के औजार अुपयोग में लाते हैं। हर छोटी-बड़ी प्रक्रिया के लिअे अलग औजार-यह है अुनका नारा। और ये अक्राणी के वनवासी न जाने कितने हजारों सालों से अेक पाठल से ही सब कुछ कर लेते हैं। खेती अविकसित है। और जो शायद अुनका मुख्य भोजन था, यानी जंगल के जानवर, वे अेक तो जंगल कटजाने से और दूसरे अिन लोगों के द्वारा खा-खाकर खतम कर दिअे गये हैं। अिसलिअे लोग भूखे हैं।

अैसी परिस्थिति में कम्यूनिटी प्रोजेक्ट अुनकी मदद करना चाहता है। अन्य अिलाकों के मुकाबले अिस अिलाके पर अुन्होंने रुपया भी

अधिक खर्च किया है। और असुसे भी अधिक खर्च करने को योजना है। पर अिसका असर क्या होता है, यह देखें। ये योजनायें गहराई तक नही पहुच पाती। अिनके द्वारा लोक-शक्ति का निर्माण होता हुआ नही दीखता। और सबसे गम्भीर बात यह है कि जो क्रान्ति होनी चाहिअे वह तो होती ही नही, बल्कि अुसके अुल्टा काम होता है। क्रांति की अेक मूल शर्त है कि अुत्पादन के साधन समाज के हो। अिन योजनाओ के द्वारा अुत्पादन के साधन जो मदद के स्वरूप दिये जाते है, वे व्यक्तियो को मिलते है। यानी अुनके द्वारा जो अुत्पादन की वृद्धि होती है–अगर होती है तो–व्यक्तियो की होती है, समाज को नही। अुस समाज पर, जिसमें "बांट कर खाने" की परम्परा पहले से ही है, अिस मदद का असर यह होता है कि जो व्यक्ति पहले मालकियत में अितना लिप्त नही था, वह अुसमें गले गले तक डूब जाता है। और वह फिर समविभरण जैसे विचार को सुनना भी नही चाहता। यानी अेक वर्ग हीन समाज में वर्ग निर्माण हो जाते है, विषमता पैदा हो जाती है।

यह है हम लोगो के सामने परिस्थिति, जिसका मुकाबला करना है। वैसे तो सारे निर्माण कार्य में हम कह रहे है कि अुसकी बुनियाद शिक्षा हो, किन्तु अज्ञाणी की जैसी स्थिति में तो शिक्षा के रास्ते के अलावा और कोई रास्ता है ही नही। यह नई तालीम का काम है, जिसे नई तालीम के कार्यकर्ता अेक चुनौती के बतौर लेगे तो ही कुछ बन पायेगा।

जो मित्र वहा काम कर रहे है, अुनका कहना है कि जब तक कार्यकर्ता में यह दृष्टि नही होगी कि अुनका युद्ध अज्ञान के साथ है तब तक वहा सच्ची शान्ति नही हो सकेगी। तरह-तरह की टेकनिकल बातो के लिअे मार्गदर्शन करने वालो की जरूरत है। खेती सुधार, जगल के कच्चे माल से नये-नये काम करना, मकानो के सुधार अित्यादि का काम, यह सब करने के लिअे श्रद्धावान कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है। लोकशिक्षण के ये सच्चे माध्यम बिलकुल ही प्रस्तुत खडे दीखते है। करने वाले हो तो चल पडें।

बाल शिक्षण और किशोर शिक्षण का जो काम होना चाहिअे, वह विशाल पैमाने का है। अुसके लिअे अनेक शिक्षको की आवश्यकता है। हर गाव ने अपनी भूमि के पुर्नविभरण के समय जमीन का अेक हिस्सा–१०,२० अेकड का, सामूहिक खेती के लिअे रख लिया है। यह जमीन गाव के किशोर बालको के लिअे शिक्षा का अेक कारगर माध्यम हो सकती है। अुसके लिअे भी कुछ अैसे साथियो की जरूरत है कि जिनके द्वारा कम-से-कम तीन चार स्थानो पर यह काम शुरू किया जा सके।

अिस प्रकार हमारे सामने जो चुनौती अुपस्थित है, क्या हम अुसे स्वीकार करेंगे? क्या नई तालीम के कुछ कार्यकर्ता सामने आयेंगे, जो अिस तरह के स्थानो के तालीम के काम को अपने कधो पर अुठा सके। कठिन-से-कठिन जीवन बिता कर, 'सभ्य समाज' से निकल कर अिन गिरीजन मित्रो के बीच, हर तरह का खतरा अुठाकर, कमर कस कर लगने के लिअे क्या हम तैयार होगे?

आक्रा (अफ्रीका) सम्मेलन

पिछले अंक में आक्रा के सम्मेलन बारे में पाठकों को परिचित कराया गया था। हर्ष की बात है कि यह सम्मेलन, जिसमें अफ्रीका के वर्ण-भेद और फ्रान्स द्वारा सहारा में अणु विस्फोट के विरुद्ध शक्तिशाली आवाज अुठाअी गअी है, बडी सफलतापूर्वक सपन्न हो गया है। समेलन का अुद्घाटन ७-४-६० को घाना के प्रधान मन्त्री श्री नूक्रूमा ने किया। फ्रान्स के द्वारा जो अणु-परीक्षण अफ्रीका में हुआ अुसके अहिंसात्मक प्रतिकार स्वरूप पिछली दिसबर-जनवरी में श्री माअिकेल स्काट के साथ अेक टोली जिसमें अफ्रीका, अमेरिका, अिंगलेण्ड फ्रान्स और भारत के स्वयसवक शामिल थे, परीक्षा की जगह की ओर यात्रा के लिअे गयी थी, हालाकि वे स्थानविशेष तक पहुचने से पहले ही गिरफ्तार कर लिअे गअे थे, तो भी अुस प्रयास का अच्छा असर हुआ और अुसके द्वारा अनेक लोगों में अहिंसक प्रतिकार की पद्धति के प्रति श्रद्धा और जिज्ञासा पैदा हुअी।

श्री नूक्रूमा ने अिसका जिक्र करते हुअे कहा कि अगर अिस प्रकार के जत्थे अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर आयोजित किअे गअे तो अुसका नतीजा अुतना ही शक्तिशाली होगा जितना गांधीजी द्वारा चलाअे गअे अैतिहासिक नमक-सत्याग्रह का हुआ था। अुन्होंने गांधीजी का स्मरण करते हुअे आशा प्रकट की कि जिस भूमि पर गांधीजी ने पहले अहिंसात्मक प्रतिकार की पद्धति आजमाअी थी, अुसी भूमि पर-हालांकि आज भी अुस पर वर्ण-भेद के काले बादल छाअे हैं, फिर से अहिंसा की शक्ति प्रकट होगी और अफ्रीका के राष्ट्रों पर छाया यह अंधकार शीघ्र ही हट जायगा। सम्मेलन में, कअी महत्वपूर्ण सुझाव रखे गअे—

सम्मेलन अफ्रीका के सभी स्वतंत्र राष्ट्रों को आवाहन करता है कि वे सहारा अणु परीक्षण के खिलाफ अहिंसात्मक पद्धति से सक्रिय कदम अुठाने की तैयारी के लिअे बडे पैमाने पर प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करें।

अुनसे यह भी निवेदन किया जाता है कि वे सारे संसार में लोगों को यह बताने के लिअे कि अिस प्रकार के परीक्षणों से मनुष्य को कितनी हानि होती है, टोलियां भेजें। सम्मेलन ने संयुक्त राष्ट्र परिषद से अिस विषय पर अेक विशेष बैठक बुलाने का आग्रह भी प्रकट किया।

सम्मेलन अफ्रीका की सभी सेवा संस्थाओं से निवेदन करता है कि वर्ण-भेद के कारण जिन लोगों को दु:ख और कष्ट सहन करना पडता है, वे अुन्हें सब प्रकार की सहायता करें।

यह प्रश्न केवल अफ्रीका का ही नहीं है, सारा जगत अिससे भयग्रस्त है। चाहे हम सीधे अुसके खतरे में पडे हुअे न हों, तो भी क्या हमारा यह पहला फर्ज नहीं है कि देश के हर व्यक्ति को अिस विषय के बारे में शिक्षित करें और बतायें कि अगर अिस दुनिया को रहने योग्य बनाना है तो अहिंसा को-सूक्ष्मतम अहिंसा को, अपने जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति-गत जीवन में अपनाना होगा।

× × × ×

आल्डरमास्टन की यात्रा

अणु युद्ध के खिलाफ अहिंसात्म प्रतिकार करने के लिये अिंगलेण्ड में अेक कमेटी सन् १९५८ में बनी थी । वह "डायरेक्ट अेक्शन कमेटी अगेनस्ट न्यूक्लियर वार" के नाम से प्रसिद्ध है । अिस कमेटी का सबसे पहला महत्वपूर्ण कार्य १९५८ की पहली "आल्डरमास्टन यात्रा" था । आल्डरमास्टन अिंगलैण्ड का अणु युद्ध शस्त्रों का शोध केन्द्र है । वहां तक बडे जत्थों में यात्रा करके प्रवेश करने का अुद्देश्य जनता में अिस विषय के बारे में सम्चेतता पैदा करना था ।

१८ अप्रैल को अिस साल भी अणु-युद्ध के विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिअे कमेटी ने दूसरी यात्रा का सयोजन किया । आल्डरमास्टन से यात्रा प्रारम्भ हुअी । ५० मील की यात्रा करके हजारों स्वयसेवक व्हाअिट हॉल तक आये । आशा है कि अिस विराट प्रदर्शन ने सरकारों की युद्ध नीति तय करने वालों की आखें खोल दी होगी । किसने कल्पना की थी कि यात्रा के आखिरी दिन अुसमें ४०,००० से भी अधिक यात्री हो जायगे । युद्ध के खिलाफ नारे लगाते हुअे, अिश्तेहार टागे हुअे सभी के मन में यही अुमग थी-"युद्ध नही चाहिअे" ।

वहा की पुलिस ने अखबारों को बताया कि अभी तक अितनी बडी प्रदर्शन यात्रा पहले कभी भी नही हुई थी, और फिर भी वह पूर्ण शिस्त वाली और नियम-बद्ध थी । अिस प्रदर्शन से ससार को पता चल जाना चाहिअे कि अहिंसात्मक शक्ति का केवल अुदय ही नही बल्कि तेजी से विकास हो रहा है । पहले तो अिंगलैण्ड के लोग समझते थे कि यह आन्दोलन पुराने ढर्रे के लोगों के पागलपन का नमूना है । किन्तु आल्डरमास्टन के अिस प्रदर्शन ने दिखा दिया कि अिसके पीछे केवल अेक ही विचारधारा के लोग नही, बल्कि तरह-तरह के विचार क्षेत्रों और स्तरों के लोग भी शामिल है ।

आनन्द अिस बात का है कि अिस आन्दोलन में भाग लेने वालों को पूरी-पूरी आशा हो गई है कि आखिर जीत अहिंसा की ही होने वाली है ।

अहिंसा के प्रति गहरा चिन्तन

अेक तरफ तो हिंसा की शक्ति और दूसरी तरफ बढती हुअी अहिंसा । "बढती हुअी" अिसलिअे कि ससार के कोने-कोने में अुसकी शोध करने के लिअे तरह-तरह के कार्य हो रहे हैं । अमेरिका का "पीसमेकर सघ" अिसी ओर सक्रिय है, वह पिछले चार वर्षों से हर गर्मी में शिविरों का आयोजन करते हैं । 'नई तालीम' के पाठकों को याद होगा कि सितम्बर १९५९ के अक में अुनके अेक शिविर का पाठ्यक्रम दिया था । अिस वर्ष के शिविर का मुख्य विषय है :

"अहिंसा-अेक जीवन पथ ।"

शिबिरार्थी निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे-

१ हिंसा-अुसके आर्थिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप और अुनसे बचने के अुपाय ।

२ स्वतत्र, अहिंसक, मानवीय सबन्धों का विकास ।

३. पुराने समाज के बदले नये समाज का निर्माण ।

पीसमेकर समाज गाधीजी के अनुयायियों में से ही है ।

× × ×

(शेषाश कवर पृष्ठ ३ पर)

टिप्पणियां

भारतीय भाषा परिषद का अधिवेशन १७ अप्रैल को अहमदाबाद मे हुआ । असका अुद्घाटन श्री काका साहेब कालेलकर ने किया । सम्मेलन ने कई महत्व पूर्ण निर्णय लिये और साथ-साथ इस काम को अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक रूप से अुठाने के लिये क्या-क्या करना जरूरी है, यह विचार करने के लिये अेक समिति भी नियुक्त की । श्री वजु भाई शाह इस समिति के संयोजक नियुक्त हुअे ।

सम्मेलन के प्रस्ताव

१. राष्ट्रीय भाषा नीति

अखिल भारतीय दृष्टि से विचार करके समस्त भारतीय भाषाओं के और अंग्रेजी के अुपयोग के बारे मे कौन सी व्यापक नीति अपनानी चाहिये, इस पर स्पष्ट मार्गदर्शन करने के लिअे आयोजित यह परिषद् अपनी सम्मति नीचे लिखे अनुसार प्रकट करती है—

१. भारत की भाषा-संबधी नीति का मुख्य कार्यसूत्र यह है कि अंग्रेजो के शासन-काल मे जो अुनकी भाषा ने देश की राष्ट्रीय भाषाओं का स्वाभाविक स्थान ले लिया था, अब अुसे इन जगहों से हटा कर भारतीय भाषाओं को फिर अुनके सम्मानपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित करना है ।

२. मुख्यत : अैसे दो स्थान हैं । जो सबके जाने-पहचाने हैं ।

(१) शिक्षा-क्षेत्र,

(२) देश के राजकाज का क्षेत्र (जिसमे प्रशासन के अलावा न्यायालय और विधान-सभाअें भी सम्मिलित हैं ।)

३. भारतीय भाषा-नीति का मूल सूत्र यह है कि इन क्षेत्रों मे अंग्रेजी ने माध्यम के रूप में गौरव का स्थान प्राप्त करके देश को जो बे-हिसाब नुकसान पहुचाया है, अुससे अब बचना चाहिये ।

४. इस मूल भूत सिद्धांत का अनुसरण करके गांधीजी ने अेक पीढ़ी तक लोकमत तैयार किया था । राष्ट्रीय कांग्रेस ने अुसके आधार पर अपने रचनात्मक कार्यक्रम मे इसे सम्मानित स्थान दिया है । और अब भारत के संविधान में भी इसे स्थान मिला है ।

५. इसलिअे इस परिषद की राय है कि इस प्रकार जो सिद्धांत व्यापक रूप से राष्ट्र-मान्य हुआ है, अुसके अनुसार अब देश की सब सरकारों को और युनिवर्सिटियों को अपना व्यवहार बदल देना चाहिअे और जिसके लिअे नीचे लिखी राष्ट्रव्यापी नीति अपनाई जानी चाहिअे ।

(१) प्रांतीय सरकारें अपना सारा राजकाज अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं मे चलायें । संविधान मे सूचित मर्यादा के अन्दर रहकर विधानसभाओं का और हाईकोर्टों का कामकाज भी प्रादेशिक भाषाओं मे ही चले, जिसके लिअे आवश्यक कानूनी व्यवस्था की जाअे ।

(२) देश की सब युनिवर्सिटियां शिक्षा और परीक्षा का अपना काम अपनी-अपनी प्रांतीय भाषा में करने के लिअे प्रयत्नशील बनें । जिसी के साथ केन्द्रीय सरकार अैसी नीति अपनायें, जिससे अुसकी नौकरियों की परिक्षाअें प्रांतीय भाषाओं में भी दी जा सकें ।

(३) केन्द्रीय सरकार का अन्तर प्रांतीय और अखिल भारतीय व्यवहार अंग्रेजी के बदले नागरी लिपि के साथ हिन्दी मे चलना चाहिअे । संविधान द्वारा निर्धारित जिस नीति को यथा संभव शीघ्रता से कार्यान्वित करने के लिअे प्रांतीय सरकारें को अपने यहां हिन्दी प्रचार का काम सक्रिय रूप से शुरू कर देना चाहिअे ।

(४) हिन्दी-प्रचार के जिस काम के हेतु बालक को अुसको १४ साल की अुम्र तक अनिवार्य शिक्षा देने के लिअे संविधान द्वारा सूचित अवधि मे कम-से-कम अन्तिम तीन साल तक हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में सिखाने की व्यवस्था हो ।

(५) अनिवार्य शिक्षा की अुपर्युक्त वय-मर्यादा में अिस समय जो अंग्रेजी सिखाई जाती है, वह बन्द की जाअे और अुसे तीसरी भाषा के रूप में तथा अैच्छिक रीति से सिखाने का काम बालक की अनिवार्य शिक्षा की अवधि के समाप्त होने पर, अर्थात् ८ वी कक्षा से शुरू किया जाअे।

६. व्यवस्था कुछ अैसी की जा सकती है कि जो अंग्रेजी न लेना चाहें, वे संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओ में से अथवा तमिल, तेलुगु, बंगला आदि देशी अथवा विदेशी अर्वाचीन प्रांतीय भाषाओं में से कोई अेक भाषा ले सके।

७ यह परिषद् भारत की सब सरकारों से और रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओं से अनुरोध करती है कि वे अूपर बताये ढंग से सक्रिय काम करें।

सेवाग्राम में वर्धा जिला ग्राम-स्वराज्य शिविर

क्या वर्धा जिला सर्वोदय जिला नहीं हो सकता? अिस प्रश्न पर वर्धा के चिन्तनशील कार्यकर्ताओं के बीच विचार विमर्श चल रहा है। पिछले १९ अप्रैल को यहां की रचनात्मक संस्थाओं के और अन्य कार्यकर्ताओं की बैठक गांधी ज्ञान मंदिर में अण्णासाहब की अध्यक्षता में हुअी और अुन्होंने अिस प्रश्न पर गहराई से विचार विनिमय किया। तय किया गया कि जिले में अिस विचार को फैलाने के लिअे हर गांव में अेक अेक दो-दो अैसे व्यक्तियों को तैयार करना चाहिअे, जो लोगों को समझाने में सफल हों। वे ही हमारे स्थानिक कार्यकर्ता होंगे। और अिसके लिअे कई २०-२५ दिन के शिविरों का आयोजन किया गया।

पहला शिविर सेवाग्राम में पहली मई से शुरू हो रहा है। अिसमें ८० व्यक्ति भाग लेंगे और अिसका मार्गदर्शन श्री अण्णासाहब सहस्त्रबुद्धे और श्री ठाकुरदास बंग करेंगे।

× × × ×

पिछले माह दिल्ली में केन्द्रीय सलाहकार समिति की बुनियादी तालीम की स्थाई समिति की बैठक हुअी। अुसमें बुनियादी तालीम के काम के बारे में चर्चा हुअी और सुझाया गया कि देश भर में बुनियादी तालीम के काम का मार्ग दर्शन करने के लिअे अेक राष्ट्रीय कौन्सिल का निर्माण करना अुचित होगा। अुनकी यह भी राय रही कि बुनियादी तालीम के काम की बीच-बीच में समीक्षा करते रहना आवश्यक है।

अिस बैठक में श्री आर्यनायकम् और श्री राधाकृष्ण ने भाग लिया।

× × × ×

अन्नाणी और अक्कलकुआ के ग्रामदानी क्षेत्र के निर्माण कार्य का अनुभव लेने के लिअे अप्रैल में श्री देवी भाई वहां अेक हफ्ते के लिअे गये थे। अुस क्षेत्र में नई तालीम का कार्य कैसे हो सकता है, यह समझने का अुन्होंने प्रयत्न किया। अगर वहां यह काम करना है, तो अुसके लिअे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी। अिस बात का ध्यान रखते हुअे श्री देवी भाई ने अन्नाणी में नियमित तौर पर समय देने का तय किया है। नई तालीम के कार्यकर्ताओं से अुनकी प्रार्थना है कि कुछ मित्र अिस काम के लिअे ३-४ वर्ष देने के लिअे आगे आयें। जो साथी अिसके बारे में अधिक जानकारी चाहते हैं, वे अुन्हें सेवाग्राम के पते पर लिखें।

Regd No N-106

जीवन के दो बिन्दु

दो बिन्दुओं से रेखा का निश्चय होता है। जीवन का मार्ग भी तो दो बिन्दुओं से ही निश्चित होता है। हम हैं यहाँ, यह पहला बिन्दु, हमें जाना कहाँ है, यह दूसरा बिन्दु। अिन दो बिन्दुओं को तय कर लेना जीवन की दिशा तय कर लेना है। अिस दिशा पर लक्ष्य रखे बिना इधर उधर भटकते रहने से रास्ता तय नहीं हो पाता।

सारांश यह है कि गम्भीर अध्ययन का सूत्र है: "अल्पमात्रा, सातत्य, समाधि, कर्यावकाश और निश्चित दिशा।"

—विनोबा

श्री सदाशिव भट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा नई तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम में मुद्रित और प्रकाशित।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-सेवाग्राम

जून १९६०
वर्ष : ८ अंक १२

वर्ष ८ अंक १२ ★ जून १९६०

बुनियादी शिक्षक किसी भी किसान से, बुनकर से या बढ़ई से कम कुशल नहीं होंगे, बल्कि ज्यादा कुशल होंगे। किसान, बढ़ई आदियों को जो चीजें नहीं सूझती होंगी, वे अिन्हें सूझेंगी। किसान, बढ़ई आदि अपने काम में जो रफ्तार हासिल नहीं कर सकते, वह रफ्तार अिन्हें हासिल होगी और औजारों में सुधार करने की जो बात अुन्हें नहीं सूझती होगी, वह अिन्हें सूझेगी। किसान को अगर अपनी रोटी हासिल करने में आठ घंटे लगते होंगे, तो बुनियादी शिक्षक कहेगा कि यह काम चार घंटे में हो सकता है।

अितनी प्रगति अुसको करनी चाहिये। अिन दिनों मैंने जहां कहीं बुनियादी शिक्षण केन्द्र देखे हैं, वहां पर शिक्षक लोग कुछ अुद्योग जानते हैं, परतु प्रतीक जैसे जानते हैं। जैसे मछली पानी में तैरती है, खेलती है, वैसे वे शिक्षक अुद्योग में तैरते या खेलते नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण योद्धा थे, खेलनेवाले और तैरनेवाले योद्धा थे, वे मंजे हुअे और तज्ञ गोसेवक थे। अिस तरह के कर्मयोग के प्रयोग हमारे अिन विद्यालयों में चलने चाहिअे।

—विनोबा

विनोबा

सब भाषाओं के लिअे नागरी लिपि

भारत की राष्ट्रीय अेकता और पारस्परिक व्यवहार के लिअे राष्ट्रभाषा के तौर पर हिन्दी को भारतीयो ने मान्यता दी है। दक्षिण-वाले भी वैसे हिन्दी के विरोध में नही हैं। जरा मुहलत मागते हैं। पर यथासमय हिन्दी केन्द्र स्थान में अधिष्ठित होगी यह बात अुन्होने भी मानी है। मुहलत दक्षिण के लोग जितनी मागेंगे अुतनी देने का विचार भी सबो ने मान लिया है। इसलिअे अब अुस के बारे में कोई वाद नही रहा।

लेकिन जिन कारणो से "सबकी बोली" के तौर पर हिन्दी को मान्यता दी गअी, अुन्ही कारणो से नागरी को "सब की लिपि" के तौर पर मान्यता मिलनी चाहिअे। लेकिन अभी तक वैसी मान्यता नही मिली। राष्ट्र-भाषा हिन्दी नागरी में लिखी जायेगी इसम कोई दुविधा नही। लेकिन हिन्दुस्तान की अन्यान्य भाषाअें भी नागरी में लिखी जाय यह निर्णय अभी होने का बाकी है। वैसा निर्णय होने पर दूसरी भाषाओ के लिअे आज जो लिपिया चल रही हैं अुनका निषेध नही होगा, वे लिपिया भी चलेगी और नागरी भी चलेगी, इतना ही निर्णय का अर्थ होगा।

कुछ लोग यह स्थान नागरी को देने के बजाय रोमन को देने का सुझाते हैं। मैंने इस पर बहुत सोचा है और तटस्थ भाव से सोचा है। रोमन-लिपि में अनेक गुण हैं, इसमें कोई शक नही। लेकिन इसमें भी शक नही कि अुसमें अनेक दोष भी हैं। और वे दोष इतने समर्थ हैं कि अुनसे तग आकर बर्नाड शॉ ने अंग्रेजी के लिअे नअी लिपि का अविष्कार चाहा। और अुसके लिअे अपनी इस्टेट में से कुछ पैसा भी रखा। बर्नाड शॉ की माग के अनुसार जो लिपि सुझायी गयी अुसका नमूना अभी "लडन टाइम्स" में मुझे देखने को मिला। तो क्या पाया? रोमन के साथ जिसका कुछ भी साम्य नही अैसी लिपि वह थी, और अुसमें नागरी के गुण लाने की चेष्टा की गयी थी। और इधर हमारे लोग हिन्दुस्तान की भाषा के लिअे रोमन लिपि सुझाना चाहते हैं।

अिसके मानी यह नही कि नागरी परिपूर्ण लिपि है, या अुसमें सुधार की गुजाइश नही। नागरी लिपि में सुधार की जरूरत है अैसा माननेवालो में मै भी शुमार हू। और "लोक-नागरी" लिपि मेरे नाम स लोगो की थोडी बहुत अवगत भी हो गयी है। "भूदान-यज्ञ" में अेकाध कालम मैटर अुसमें प्रति सप्ताह दिया भी जाता है। लेकिन नागरी में सुधार किये बिना आज की हालत मे वह देश की भाषाओ के लिअे लागू नही हो सकती या लागू नही करनी चाहिअे, अैसा मै नही मानता। बल्कि पहिले नागरी सुधारी जाय और बाद में अुसे भारतीय भाषाओ में लागू की जाय अिस विचार में मै खतरा देखता हू। आज की

हालत में भी नागरी भारतीय भाषाओं के लिये चल सकती है और चलनी चाहिअे, अैसी मेरी राय है। और तदनुसार मैंने गीता-प्रवचन के अनेक भाषाओं के तर्जुमें नागरी-लिपि में छपवा दिये हैं। अभी दो-तीन भाषाओं के बाकी हैं, शेष सब हो गये हैं। अुनका अुपयोग करके अनेक भाषाअें आसानी से सीख सकते हैं अैसा भी अनुभव आया है।

अगर हमने नागरी को भारत भर में चलाया तो आगे जा कर अुसका भारत के बाहर भी अुपयोग होने का सभव मैंने देखा। मिसाल के तौर पर मेरी अिस पद यात्रा के दरमियान जापानी भिक्षु इमाई के पास से मुझे जापानी भाषा सीखने का मौका मिला, तो मैंने देखा कि जापानी भाषा की रचना हिन्दुस्तान की भाषाओं के समान है। यानें पहिले कर्ता, पीछे कर्म, अत में क्रियापद, यह हमारा वाक्य-विचार, और शब्दयोगी अव्यय सज्ञा के बाद में लगाने का हमारा सप्रदाय जापानी भाषा में चलता है। जापानी लोग नयी लिपि की तलाश में हैं, क्योंकि अुनकी लिपि जो चित्र-लिपि है और असंख्य चित्रों से बनती है, प्रचार के लिये अनुकूल नही पडती। अैसी हालत में अगर नागरी हमारे देश में हम चलाअें तो जापानी के लिअे भी वह चलेगी अैसा सभव है। यही बात चीनी भाषा को भी लागू है। अिस तरह नागरी एशिया के पूर्व भाग की लिपि आसानी से बन सकती है। लेकिन अुतनी व्यापक वह बने, भारत भर में वह चले तो भी हमारा बहुत कुछ काम बन जायेगा।

यहा सवाल हो सकता है कि अगर अैसे मेरे विचार हैं तो नागरी लिपि में सुधार पेश करके लोक-मानस को क्या मैंने दुविधा में नही डाला। यह आक्षेप मुझपर लागू हो सकता है यह मैं कबूल करता हू। और अिसलिअे सफाअी के वास्ते मैंने यह लेख लिखा है। लिपि सुधार का मेरा सुझाव है, आग्रह नही। लिपि-प्रचार का मेरा आग्रह है। 'आग्रह' के माने यह न समझा जाय कि वह मैं किसी पर लादना चाहूगा। लादनेवाली बात अहिंसा में आती ही नही, यह तो सब समझ सकते हैं।

विश्व भर में समत्व की भावना रखना भारत के लिअे केवल काल्पनिक आदर्श नहीं रहा, बल्कि इस समत्व को अपने विचारों व क्रियात्मक जीवन में प्रयोग में लाना भारतीय आदर्श रहा है। सतत अभ्यास, सयत जीवन और परमार्थ भावना की निरन्तर साधना द्वारा भारत ने अपनी आत्मा में अैसी अनुभूति जाग्रत कर दी कि अुसे सम्पूर्ण विश्व में अेक आध्यात्मिक स्पन्दन अनुभव होता था। पृथ्वी, पानी, आकाश, प्रकाश लेकर पत्र-पुष्प तक सभी वस्तुओं का प्रयोजन अुसके लिअे केवल प्रयोग में लाकर बाद में त्याग देने का नहीं था। पूर्णता की खोज में ये सब साधन अुसके लिअे अनिवार्य अुपकरण बन गअे थे, जिस तरह किसी राग को सपूर्ण करने के लिअे भिन्न भिन्न स्वर सहकारी बन जाते हैं। भारत की अन्तरात्मा में यह बोध स्वय जाग्रत हो चुका था कि ससार के सभी तत्वों का मनुष्य-जीवन को पूर्ण बनाने में अेकान्तिक प्रयोजन है, हमें इस सत्य के प्रति कभी अुदासीन नहीं होना चाहिअे, बल्कि इस सम्बन्ध को सजीव बनाने में प्रयत्नशील रहना चाहिअे, केवल वैज्ञानिक जिज्ञासा को शान्त करने या पार्थिव प्रयोजन की सिद्धि के लिअे नहीं, अपितु विश्व की विराट् आत्मा के साथ शान्ति और आनन्द की सह-अनुभूति प्राप्त करने के लिअे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हृदय की सूझ और नई तालीम

जुगतराम दवे

ग्रामदानी गाव देखने और गाधीनिधि के सेवक भाअियो से मिलने के लिअे में वडनगर गया था । वहा के स्थानीय कार्यकर्ता डा० द्वारकादास जोधीने मुझको वडनगर शहरको कुछ झाकी कराने की दृष्टी से अेक छोटी सी सभा बुलाओी थी। अिसमें नगरपालिका के प्रमुख दो माध्यमिक शालाओ के आचार्य और शिक्षकगण, कुछ प्राथमिक शाला के शिक्षक-भाओी-वहने, कुछ व्यापारी और अन्य नागरिक भाओी-वहने थे । ४०-५० की छोटीसी सभा थी ।

अुन दिनो में गुजरात नओी तालीम सघ की गूदी की बैठक में से सीधा ही आ रहा था, जहा गुजरात का नया राज्य अपना कारोबार गुजराती भाषा में ही चलाअे, अैसा प्रस्ताव किया गया था । अिसलिअे मैंने स्वाभाविक ही अिस प्रस्ताव के पीछे की भूमिका समझाने की कोशिश की । अिस प्रतिनिधि स्वरूप की सभा में वर्तमान सरकार की अग्रेजी शाही नीति को नापसद करने वाले विचार सुनकर मुझे सानद आश्चर्य हुआ ।

चर्चा के बीच-बीच में बुनियादी शिक्षा पर चारो ओर से ठीक तरह से प्रहार होते थे ।

'यह तो सिर्फ नाम के लिअे फलक बदल दिये हैं, भीतर शिक्षा में तो कुछ भी परिवर्तन नही हुआ है ।"

"आजकल बुनियादी तालीम का फैशन हो गया है, अिसलिअे हमारा जिला भी अिसमें आगे है, अैसा दिखाने की दृष्टी से ही शालाओ की सख्या बढा चढा दी है ।"

"कातने-बुनने का धधा हमारे बच्चो के जीवन में कभी अुपयोग में नही आनेवाला है, तो फिर अुसे अैसा पेशा सीखाने से क्या फायदा ?"

"बुनियादी शालाअें तो खोल देते हैं लेकिन तालीम पाये शिक्षक कौन भेजता है ?" "साधन सरजाम तो देते नही, फिर बुनियादी शिक्षा कैसे दी जाय ?"

"बुनियादी तालीम कैसी हो, वह तो कोओी जानता ही नही । इस तहसील में अेक अच्छा नमूना निर्माण कर अिसका सच्चा स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाना चाहिअे ।"

मैंने भाषा सबधी चर्चा बुनियादी तालीम की चर्चा में बदल दी ।

सभा चर्चा में मस्त होगई थी । नई तालीम का सर्वांग सपूर्ण चित्र मुझसे कोओी शाति से सुनने वाला नही था । बीच-बीच का समय आने पर मैं नई तालीम के मुख्य मुख्य सिद्धातो को अेक के बाद अेक अुनके सामने रखने लगा ।

"स्वतंत्र भारत में शिक्षा को घर-घर पहुचाना जरूरी था। लेकिन जनता पर कर का भार बढा कर अैसा करना योग्य न था। अिसलिअे बच्चे अुद्योग सीखें और अिसमें से जो अुत्पन्न हो, अुस से शिक्षा का खर्च निकलना चाहिअे, अैसा मार्ग राष्ट्रपिता गाधीजी ने स्वराज्य के किनारे आय हुअे अिस देश के समक्ष रखा।"

"अुद्योग के पीछे केवल शिक्षा के स्वावलबन का ही विचार हो तो हमारे जैसे लोग अुस स्वीकार नही करते। लेकिन गाधीजो ने सारे देश के शिक्षाशास्त्रियो को अिकट्ठा करके अुन लोगो को समझाया कि शिक्षा को अुद्योग और सेवा प्रवृत्तियों के अिर्दगिर्द रचा जाय तभी बच्चा का सर्वांगीण विकास हो सकेगा और बुद्धि का भी अिसी प्रकार समुचित विकास हो सकता है।"

"दुनिया के बहुत से व्यक्ति बचपन में ही विविध कार्यों की कुशलता प्राप्त कर लेते हैं। और हमारे देश की प्रजा को अैसी तालीम दी जाती है, जो अपने काम में बेकार साबित होती है। अुसमें पढे लोग न हथोडा, न कुदाल-फावडा, न बसाला-फरसी, न चरखा करघा ठीक स चला सकते हैं। अैसी बेकार प्रजा की बुद्धि कैसे विकसित हो सकगी ?"

"अुद्योग तो मजदूर भी करते है, लेकिन शिक्षक को तो अुद्योग करते करते जो ज्ञान व अनुभव मिलते है, अुन्हे ज्ञान-विज्ञान से प्रकाशित करके हो शिक्षा देनी चाहिअे। बच्चे काम करे और शिक्षक मेनेजरी करेगा, तो विद्यार्थी सिर्फ मजदूर बनेंगे, ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकेग।"

"बुनियादी शिक्षा केवल अुद्योग का शिक्षण नही है, यह तो जीवन की शिक्षा है। शिक्षक स्वय अुद्योगी, सेवानिष्ठ, पवित्र जीवन बितायें, यह खास जरूरी है। शिक्षक का जीवन बच्चो के जीवन से भिन्न होगा तो बच्चो पर नई तालीम का असर हम कभी नही पैदा कर सकेगे। घर में माता पिता नई तालीम की शिक्षा के प्रति सद्-भाव नहीं दिखायेंगे तो बच्चो का प्रेम भी अिस शिक्षा के प्रति नही प्रकट होगा। अिसलिअे बुनियादी शाला के शिक्षक को मा-बापो के जीवन में भी प्रवेश करना पडेगा। केवल शाला और स्लेट पेनसिल अित्यादि पकड कर बैठे रहने से काम नही चलेगा। बुनियादी शाला को तो ग्राम जीवन का अेक केन्द्र बनना चाहिअे।"

अिस तरह मौका देख कर मैंने बुनियादी तालीम के कुछ मुद्दो को सभा के सामने पेश किया। लेकिन बीच-बीच में दूसरी चर्चाअें भी निकलती रहती थी। अिसलिअे बुनियादी शिक्षा का सपूर्ण चित्र मैं ठीक ढग से नही रख पाया, अुदाहरण और दलीले देकर मैं अपनी बात को अुठाव नही दे सका।

हम सभा में से अुठने वाले ही थे कि अेक शिक्षक भाओ आते दीख पडे। डॉक्टर जोषी ने कहा, "आअिये आअिये, हम आपकी ही अितजार में थे। आपके शिक्षा के अनुभव सुनाअिये। कुछ आग्रह के बाद अिस भाओ ने अपनी बात शुरू की।

"गाव में जाकर मैंने देखा तो रजिस्टर में तो पूरे ७० नाम थे लेकिन रोजाना आते थे सिर्फ २०। अिनमें से भी कभी-कभी मा-बाप आकर अपने खेती काम के लिये बच्चो को ले जाते थे। मैं सोच रहा था अिस परिस्थिति में मैंसे काम करुगा और किस ढग से सख्या बढाअूगा ?

"दूसरी भी अेक बात देखी, गांव के बच्चे मवेशी चराते थे। चराते-चराते वे शाला के कम्पाअुन्ड में ले आते थे, और शाला का घास चरवा डालते थे। शाला जब बंद हो तो अिसके ओटे पर भी मवेशी चढ जाते थे। अैसी परिस्थिति में अब मैं क्या करूं? क्या अिन बच्चों को डांटने लगू? अुनके माता-पिता के पास शिकायत करूं? मैंने अैसा कुछ भी न किया। मेरे अेक साथी शिक्षक हैं। अुनसे मैंने कहा, क्या हम स्वयं बाड बना लेंगे? मुझे तो हाथ से काम करने की आदत नही थी लेकिन मेरे मित्र अुत्साही थे। वे तुरन्त लग गये, फिर तो मैंने भी अपना हाथ बटाया। हम लोगों को काम करते देखकर बच्चे भी मदद में पहुच गये। मैंने देखा, अिस काम में तो ये बच्चे हमसे कओी अकलमद थे। कुछ दिनो में बाढ़ हो गयी और मवेशियो के कारण होनेवाली दिक्कत का अिस तरह से अन्त हुआ।

"फिर हमने सोचा कि केवल पढाने लिखाने से बच्चों में रस पैदा नही हो सकता। खेल कूद शुरू करना चाहिअे। नजदीक में मैदान था, लेकिन अिसमें कूडे ककर, काटे थे। जमीन समतल न थी थोडे दिन परिश्रम करे तो सुदर मैदान तैयार हो सकता है। प्रार्थना के बाद मैंने कुछ कहने का सिलसिला शुरू किया था। वातावरण निर्माण करने में अिससे बहुत फायदा हुआ। अिस ढंग से मैदान ठीक करने का वातावरण तैयार किया। लडके अुत्साहित हो गये। घर से औजार लाने लगे, शामको हम सब मिलकर कुछ-कुछ काम करने लगते। कहां से खोदना, कहा मिट्टी डालना, अिसके निशान लगा दिये और रस्सी बाघ दी। काम पूरा होने के बाद विद्यार्थियो से अिसका गणित भी करवाते थे।

"गांव के लोग यह सब देखते थे। वे लोग आपस-आपस में चर्चा करते थे, यह कोअी नये ढंगका शिक्षक है। गांव के लोग जब शाला में आते थे तो हम अुन्हें दिखाते थे कि बच्चे काम के साथ गणित की पढाओी कैसे करते हैं।

"मैदान तैयार हो गया और खेल कूद में रंग मच गया। अब हमने कुंआ खोदने का नया काम शुरू किया। हम लोग काफी गहराओी तक पहुचे, लेकिन पानी न निकला। हम निराश हो गये, पानी की आशा छोड कर अिस काम को बन्द करने वाले थे। अितने में हममें से अेक ने कहा "अेक दिन और नसीब को अजमाअें"। अुस दिन पानी की धारा फूट निकली। हमने गांव के लोगों को इक्ट्ठा किया, नारियल आदि से जल-पूजा की और बडा अुत्सव मनाया।

"कुआ खोदने के समय अेक घटना घटी। अिस प्रसग से मेरे मन में परमात्मा के प्रति श्रद्धा पैदा हुअी। विद्यार्थी अुत्साह में आकर कुअें में अुतरकर मिट्टी खोदते थे। भीतर से मिट्टी भर दी जाती थी। बाहर वाले मित्र खीच लेते थे। अेक दिन की बात है। भरी हुअी बालटी कुंअे में गिर पडी। भीतर विद्यार्थी खोदते थे। मेरे हृदय धडकने लगा। अेक भरी हुअी बालटी अुसके पैर की अंगुली के बिलकुल पास आ गिरी थी। अगर अेक इच भी और नजदीक होती तो बच्चे का पैर कट जाता। अगर यह अकस्मात् हो गया होता तो हम लोग गांव वालों को अपना मुंह कैसे दिखाते? और हमारी शाला का क्या होता? हमनें परमेश्वर की असीम कृपा निहारी। अुसी दिन से हम शिक्षक मित्रों ने भीतर का काम खुद अुठा लिया। लडके तो बहुत ही

अुत्साह में थे, लेकिन हमने अुन्हे मना किया और बाहर के अन्य कामो में अुनको लगाया।

"नये गाव का यह मेरा सात मास का अनुभव है। लोगो का प्रेम हमें मिला। लडके अुमग से आने लगे।

"इस मेहनत का कैसा जादू हुआ ? लडको के पास जबरन काम नही कराना पडा। गाव के लोगो को भी सहायता के लिअे हम बुलाने नही गअे। वे स्वय अपने आप आकर काम में सहायता पहुचाने लगे।

"शाला के मैदान में अब तो हमने अेक छोटासा बगीचा लगाया है। अिस में गलगोटे के फूल खिले है। अपने हाथो से लगाअे अिन पौधो से फूल न तोडने का नियम विद्यार्थी आप ही पालन करते है। फूल परिपक्व होने के बाद शाला की विद्यार्थीनी बहनो को देने का अब हमने निर्णय किया है। बारी बारी से अुन को फूल मिलते है। जिनकी बारी आती है वह बाल सवार के बडे शौक से अुसमें लगाती है।

"यह सब देखकर गाववाले बहुत प्रसन्न होते है।

"अेक बात और भी हमने हाथ में ली है। वह है गाली गलौच की। बच्चो में अिसकी बुरी आदत सहज हो गअी थी। अब कभी कभी सूचना देने पर बच्चो ने अिसे बहुत कम कर दिये है। मा-बाप गाली बोलते है तो अब तो अुन्हे बच्चे ही अुपदेश देने लगते है कि अैसा नही बोलना चाहिअे।"

"आगे जाकर हमने यह भी सूचना दी कि हर अेक लडके को नहा धोकर नित्य अपने मातापिता को प्रणाम करना चाहिअे। छोटे-छोटे बच्चो को अिस तरह प्रणाम करते देख मा बाप की खुशिया नही समाती। यह सब देखकर भीतर ही भीतर कहते सुनाअी पडते है कि यह आदमी कोअी अजीब शिक्षक है।"

शिक्षक भाअी ने बहुत स्वाभाविक ढग से अपनी यह सब बाते रखी। अुनकी बातो में न कोअी शब्दो का आडम्बर था, न घबराहट थी।

अुनके बैठ जाने पर तुरन्त मैने कहा, भाअियो, अिसी का नाम हृदय की सूझ की नअी तालीम है। आप लोगो को विश्वास हो जायेगा की *शिक्षक अगर अपना हृदय अुडेलकर काम करे* तो नअी तालीम बहुत ही सरल और स्वाभाविक हो जाती है। नअी तालीम बहुत पढे लिखे पडित ही चला सकेंगे, और अिस में ज्यादा खर्च लगता है, यह हमारा वहम अिस वर्णन को सुनकर हवा हो जाता है।

मुझे जो कुछ कहना था वह सब अिस शिक्षक मित्र की बातो में बहुत स्वाभाविक ढग से आ जाता है। नअी तालीम के शिक्षक को केवल मास्टरपन छोड कर शरीरश्रम का वायुमडल निर्माण करना चाहिअे, यह मुद्दा कितने सुदर ढग से आ गया। नई तालीम के शिक्षक को मा-बाप के जीवन में रस लेकर अुनमें परिवर्तन लाने में आनन्द लेना चाहिअे। अिससे बच्चो को अुनकी ओर से प्रोत्साहन *मिल सकेगा। यह मैं समझाना चाहता था।* बहुत से लोगो को शका होती है कि अगर शिक्षक अिन सब कामो में लग गया तो फिर पढायेगा कब ? लेकिन अभी हमने जो सुना अिस से हमें विश्वास हो जाता है कि शिक्षक अपने स्वाभाविक ढग से यह सब कुछ कर सकता है। अुनके अूपर या विद्यार्थियो के अूपर कुछ बोझ नही पडता। अुलटा, अिससे

(शेषांश कवर पृष्ठ ३ पर)

सृजनात्मकता और व्यक्तित्व का विकास*

विक्टर लॉवन फेल्ड

"शिक्षा के लिअे कला की अुपयोगिता" के अर्थ के अूपर चर्चा करने के पहले यह वस्तु-स्थिति हमारे मन में स्पष्ट होने की जरूरत है कि शिक्षा ही–अुसके मानसिक, आध्यात्मिक *और भावनात्मक परिणामो के साथ–आदमी* की वृत्तियो, प्रवृत्तियो, वैज्ञानिक कृतियो और अिस ससार में सब के साथ चलने की अक्षमता या कभी सारे मानसिक व भावनात्मक अवशताओं के लिअे बहुत हद तक जिम्मेदार होती है। मनोवैज्ञानिको का कहना है कि मनुष्य के बर्ताव के लिअे दो शक्तियां जिम्मेदार होती है, अेक पैतृक तथा दूसरी परिस्थितिजन्य। तो भी हम अनेक प्रयोगो से जानते है कि अुत्तम से अुत्तम बीज भी सूखी जमीन में नही बढ सकता, जब कि नीचे किस्म का बीज अुर्वर भूमि में अच्छी देखभाल मिलने पर बढ जाता है। अिसलिअे परिस्थिति-या व्यापक अर्थ में शिक्षा ही–हमारे कर्मों के पीछे की जिम्मेदार शक्ति है। अगर हम अेक समृद्ध जिन्दगी बिता रहे है, तो शिक्षा ने ही हमें अुसके लिअे तैयार किया है। अगर हमारे अदर सहकारिता की भावना है तो शिक्षा ने ही हमारे शुरू के सालो में अिस आवश्यकता की पहचाना और अुसका बीज बोया है। हम अगर अपने ही अन्दर शान्ति का अनुभव कर रहे है तो शिक्षा ने ही अिस तथ्य को पहचाना है कि जिन्दगी में आध्यात्मिक सामजस्य की देन सब से ज्यादा महत्वपूर्ण है। और अगर हम अपने ही साथ स्वर में स्वर मिला कर नही चल सकते है तो *शिक्षा ने ही हमारे भावनात्मक विकास* की अुपेक्षा की है और हमें नई परिस्थितियो में अपने आपको अनुकूल बनाने तथा अपनी मुश्किलातों का सामना करने के नाकाबिल बनाया। अगर हम जिन्दगी की सुखसमृद्धियो और अनुभूतियो के प्रति अुदासीन है तो शिक्षा ने ही हमारे व्यक्तित्व की अुस बारीकी और आध्यात्मिक दृष्टि का विकास नही किया है जो अुन समृद्धियो का अभिनन्दन कर सकती है। अगर हम अेक स्वार्थपूर्ण जीवन बिता रहे है तो शिक्षा ने ही हमारे अदर दूसरो के साथ अेकता अनुभव करने व अुनकी जरूरतों को अपनी ही जरूरत महसूस करने का गुण नही पैदा किया। और अगर हम व्यक्ति को वश, वर्ण या विश्वासो की विभिन्नता के बावजूद अेक लोकतन्त्रात्मक समाज की सब से मूल्यवान वस्तु नही समझ पाते है तो शिक्षा ही अपने अेक मौलिक पहलू में असफल हो गअी। हालांकि पिछले कुछ वर्षों मे शिक्षा का स्वरूप विषय केन्द्रित से बदलकर बालक केन्द्रित दिशा की तरफ बहुत अग्रसर हो गया है तो भी अैसा लगता है कि हम अेक नअे

* "क्रिअेटिव अेण्ड मेन्टल ग्रोथ" पुस्तक से

युग के प्रारंभकाल में ही है।

आज की हमारी शिक्षापद्धति में सारा ध्यान कुछ सीखने की तरफ याने कुछ विशेष जानकारियाँ प्राप्त करने की तरफ ही है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि अगर अिस ज्ञान का अुपयोग स्वतंत्र मानस से नहीं किया जाता तो वह न व्यक्ति की भलाओ कर सकता है और न समाज की। हमारे अिस अेकतर्फा शिक्षा शास्त्र ने जिसका मतलब ज्ञानोपार्जन स ही है, व्यक्ति में अुन वृत्तियों के विकास की अुपेक्षा की है जो कि भावनात्मक समृद्धि के लिअे, आध्यात्मिक अनुभूतियों के लिअे तथा समाज में सहकारिता के साथ रहने की क्षमता के लिअे आवश्यक है। हमारी भावनात्मक व मानसिक अवशताअें बढ़ती ही जा रही हैं, हम राष्ट्रीयता, धर्म, वंश या वर्ण की परवाह न करके मानव प्राणियों को मानव प्राणियों के रूप में देख नहीं पाते। यह अेक गंभीर भयावह लक्षण है और जिस तथ्य का सूचक है कि शिक्षा अपने मूलभूत अुद्देश्यों को पूरा नहीं कर रही है। प्राविधिक वैज्ञानिक क्षेत्रों में हम ने जो अभूतपूर्व और चमत्कारकारी प्रगति की है, अुससे चाहे लोगों का भौतिक जीवन स्तर अूंचा अुठा हो, लेकिन अुन मूल्यों से हमारा ध्यान हट गया है, जो भावनात्मक तथा आध्यात्मिक जरूरतों की पूर्ति के लिअे आवश्यक है। बल्कि अुस प्रगति ने समाज में कुछ कृत्रिम मूल्यों की स्थापना कर दी है, जो आदमी की आन्तरिक आवश्यकताओं की अुपेक्षा करते हैं। अेक संतुलित शिक्षा व्यवस्था में मानव के समग्र व्यक्तित्व के विकास की तरफ ध्यान दिया जायगा; अुसके चिंतन, अुसके विचार, भावनाअें, परिप्रेक्षण, अिन सब का समान रूप से विकास होना चाहिअे ताकि हर अेक व्यक्ति के अंदर की सृजनात्मक शक्तियां खिल पावें। जिस आदमी को बचपन में ही कला-शिक्षा की अनुभूतियाँ प्राप्त हुओ हों, अुसके अेक गतिशील, संवेदनाशील, ग्रहणशील, सृजनात्मक व्यक्तित्व की ज्यादा संभावना है, बनिस्बत अुसके जिसने बहुत ज्ञान हासिल किया हो, लेकिन जिंदगी में अुसका कोओ अुपयोग नहीं कर पाता। यह दूसरे प्रकार का आदमी अपने आन्तरिक जीवन में समृद्धि का अनुभव नहीं करता और अपनी परिस्थितियों के साथ अुसका संबंध मुश्किल हो जाता है। क्योंकि सर्जन की प्रक्रिया में परिप्रेक्षण, विचार और भावनाअें, अिन सब पर पूरा-पूरा जोर दिया जाता है, बच्चे की बुद्धि और अुसकी भावनाओं के बीच में आवश्यक समतोल कला के द्वारा हो जाता है।

अध्यापक महापुरुषों का-सा महान आदर्श सदा अपनी आँखों के सामने रखता है, मगर नादान और बेबस बच्चे की सेवा को भी अपने जीवन का चरम लक्ष्य समझता है, और बच्चे की ओर से जब सारी दुनिया निराश हो जाती है, तो बस दो ही व्यक्ति अैसे हैं, जिनके मन में अंत तक आशा बनी रहती है—अेक अुसकी माँ और दूसरा अच्छा अध्यापक।

डा० जाकिर हुसैन

बच्चे की देखभाल और शिक्षा (६)

जानकी देवी
देवी प्रसाद

पिछले लेख में जैसे कहा जा चुका है, पहले के दो साल में बच्चे के विकास की गति सब से ज्यादा तेज होती है, जितनी कि बाद की जिन्दगी में कभी नही होगी। आमतौर पर स्वस्थ बच्चे का वजन पहले साल के अन्त में जन्म के समय से तिगुना होता है, डेढ साल तक चौगुना और दो साल पूरे होते-होते तीन चार पौंड और बढ सकते हैं। अुसकी लम्बाई भी अिस अर्से में खूब बढती है। जन्म के समय अगर २० इच हो तो दो साल के अन्त में आमतौर पर ३४ इच हो जाती है। अुसका वजन और लम्बाई सिर्फ बढती नही, शरीर के अंगो के अनुपात में भी फर्क होता है। जन्म के समय बच्चे का सिर शरीर के अनुपात में बहुत बडा रहता है, हाथ पैर की लम्बाई कम। हिसाब लगाया गया है कि आमतौर पर जन्म के समय से प्रौढावस्था पहुचने तक सिर का प्रमाण दुगुना होता है, धड की लम्बाई तिगुना, हाथो की चौगुना और पैरो की पांच गुना। पहले के दो सालो में भी सिर के अनुपात में शरीर की लम्बाई ज्यादा बढती है।
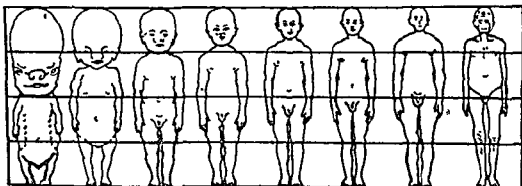
गर्भ में (२माह) गर्भ में (६माह) नव-जात २साल ६साल १२साल सयाना बूढा

बच्चो के विकास में अुचित पोषण का बहुत ज्यादा महत्व है। विभिन्न देशो के औसत भोजन, अुनके पोषण-तत्व तथा मानव-शरीर के विकास पर अुनके असर के तुलनात्मक अध्ययन से पता चला है कि समान परिस्थितियो में और करीब समान शारीरिक गठन के मां-बापो के जन्मे

बच्चो के विकास में सिर्फ आहार की विभिन्नता के कारण डेढगुने-दुगुने का फर्क होता है। खासकर हमारे देश में बालमृत्यु और बच्चों के कओी सारे रोगों का अेक मुख्य कारण पोषण की कमी या असन्तुलित भोजन है। जिससे न केवल बच्चों के बढने में बाधा आती है, कमजोर होने के कारण वे कई सारे रोगो के जल्दी शिकार हो जाते हैं और कई दफा अिसी वजह से मृत्यु के घाट भी अुतरते हैं। लेकिन अिन आत्यन्तिक विपत्तियो के पीछे केवल
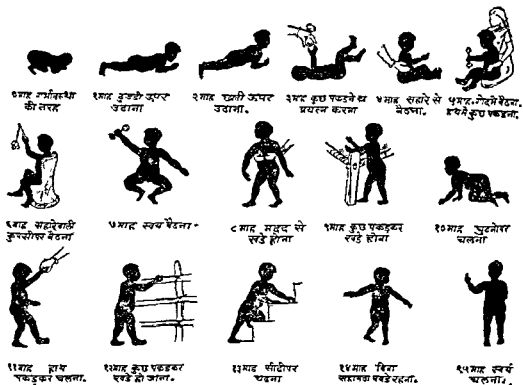
मा-बाप की अज्ञता नही, गरीबी ही मुख्य कारण है तो वह अिस लेख के विषय के बाहर है। यहा तो हम कुछ साधारण बातो की ही चर्चा करेंगे।

अेक तथ्य जो अभी तक शायद आमतौर पर पूरा पहचाना नही गया है, यह है कि भोजन का सम्बन्ध केवल शरीर के बढने से ही नहीं, बच्चे की मानसिक सतृप्ति, स्वाभावनिर्माण और दुनिया के प्रति अुसकी वृत्ति पर भी अुसका महत्वपूर्ण असर है। कुछ विशेष तत्वो की कमी होने के कारण अुसकी बुद्धि भी मन्द हो सकती है। अकारण क्रोधित या जल्दी अुत्तेजित होना, चिढचिढाना अित्यादि का भी कारण बन सकता है। परन्तु यह प्रकृति की अपार कृपा और सुन्दर व्यवस्था है कि साधारण आहार वस्तुओ में अिन तत्वो में से अधिकतर मौजूद ही रहते हैं, अिसलिअे कुल मिलाकर सब तत्व कुछ-न-कुछ परिमाण में मिल ही जाते हैं। आम तौरपर अुनके अभाव के कारण अुत्पन्न विकृतियाँ अुस हद तक प्रकट नही होती है।

फिर भी समझदारी के साथ बच्चे के भोजन की व्यवस्था बनाने से वह कभी सारे रोगों से बच सकता है–अुसके स्वस्थ विकास की ज्यादा-से ज्यादा आशा रहती है। और लोगों को अिसके बारे में ज्ञान होने से-राष्ट्र के स्वास्थ्य के अूपर अुसका महत्व पहचाने जाने से–सारे देश की खेती की योजना ही अैसी बनाओी जा सकती है कि जनता को सिर्फ पेट भरने की दृष्टि से नही, खाद्य तत्वो की दृष्टि से भी अुत्तम से अुत्तम आहार मिले।

पाच-छ महीनो तक बच्चे को मा का दूध ही पर्याप्त आहार होता है। पाच महीनो के बाद अुसे कुछ दूसरी भी चीजें देना शुरू कर देना चाहिअे। अुसे भोजन में कुछ लोहा मिले, अिसके लिअे थोडा-थोडा अनाज और भाजी देना आवश्यक है। यह सब शुरू में थोडी-थोडी मात्रा में ही देकर धीरे-धीरे बढाना जरूरी है, अिसलिअे कि अुसकी पाचन सस्था में कोओी गडबड न हो। वह धीरे-धीरे दूध के अलावा दूसरी चीजो का भी आदी हो। फलो का रस जहा अुपलब्ध हो, देना बहुत ही अच्छा होगा। अिससे अुसको जीवन-तत्व सी मिल जाअगा जो अुसके दात और ममूडो के स्वास्थ्य के लिअे जरूरी है। जैसे शरीर को कालशियम का अुपयोग करने के लिअे जीवन तत्व डी की जरूरत है वैसे ही लोहे का अुपयोग करने के लिअे जीवन-तत्व सी भी जरूरी है। शुरू में देने लायक कुछ भोजन के नमूने यहा दिअे जा रहे हैं–

१. गेहू का आटा भून कर थोडा दूध और चीनी के साथ पकाकर पतली खीर की तरह।
२ खूब नर्म चावल दही या मट्ठा और थोडा नमक के साथ अच्छी तरह से मिलाकर।
३ अच्छी तरह से अुबली हुअी भाजी (बिना रेशे वाली) या भाजी का पानी।
४. केला अच्छी तरह मसल करके।

कअी जानकार लोग बच्चे को पाच छ. महीने के बाद नियमित रूप से कॉड लीवर ऑयल देने की सलाह देते है। अिससे अुसे जीवन तत्व अे. और डी. प्रभूत मात्रा में मिलेंगे, और अुसके स्वास्थ्यरक्षा में जरूर सहायता मिलेगी। जुकाम अित्यादि रोगो के प्रति अुसकी प्रतिरोधक शक्ति भी बढेगी। लेकिन अगर दूध यथेष्ट मात्रा में मिले और टमाटर का रस, अित्यादि वनस्पति पदार्थ जिसमें जीवन तत्व अे. अच्छी मात्रा में मिलता है, बच्चो को खिलाया जाय और वह खुली हवा और सूर्य प्रकाश में खेले, जिससे अुसकी त्वचा जीवन तत्व डी. को खुद ही निर्माण कर लेती है, तो ये तत्व अुसे स्वाभाविक रूप से ही मिल जायेंगे। और अिन पौष्टिक तत्वो की दवाअियो के द्वारा पूर्ति करने के बनिस्बत आहार से और प्रकृति से ही मिलना ज्यादा अच्छा है, अिसमें कोओी शका नही। ठडे मुल्को में जहा ठड से रक्षा करने के लिअे बच्चे को ज्यादा समय बन्द कमरो में ही रखना पडता है और जहा जुकाम और अन्य श्वास-कोश सम्बन्धी रोगो का ज्यादा डर है, वहा कॉड लीवर ऑयल देना अुपयुक्त होगा। लेकिन हमारे देश के आबोहवा में यह कोओी जरूरी नही है। हा, जहा किसी बीमारी या अन्य कारणो से बच्चा अत्याधिक कमजोर हो गया हो और अुसे विशेष जरूरत हो, वहा डाक्टर की सलाह से जीवन तत्वो की पूर्ति के लिअे दवाइया दी जानी चाहिअे।

मां का दूध छुडाते समय बच्चे को कुछ तकलीफ अवश्य होती है। अेक और दो साल के बीच में दूध छुडाना आवश्यक है। मां का

दूध ही पीते रहने से बच्चा अन्य आहार जल्दी ग्रहण नहीं करता है। और अुससे ज्यादा काल तक बच्चे को दूध पिलाना मा के शरीर पर अेक बडा बोझ होता है। लेकिन बच्चे के लिअे यह अेक दु:खद प्रक्रिया होती है; क्योंकि मां के साथ अुसका अत्यन्त निकट शारीरिक सबन्ध अब छूट रहा है। अिसलिअे यह बहुत ही होशियारी के साथ करना जरूरी है ताकि बच्चे की भावनाओं पर बडा धक्का न पहुचे और अुसका स्वास्थ्य भी ठीक रहे। अुसे कोअी अभाव का बोध भी न हो। अच्छा यह होगा कि पहले, दिन में अेक दो वक्त का भोजन दूसरी कोअी चीज दी जाय। जब बच्चा अिसका आदी हो जाता है फिर और समय का भी धीरे-धीरे बदल दें। *अिसके बीच अुसे बाहर* का दूध पीने की आदत भी डालना चाहिअे। बच्चे की हड्डिया बहुत जल्दी बढ रही हैं, अिसके लिअे अुसे कॅलशियम की जरूरत है, और अुसका अुत्तम स्रोत दूध ही है।

जन्म के समय बच्चे के कपाल की हड्डिया पूरी तरह आपस में जुडी हुअी नहीं होती हैं। खासकर सिर के बीच में अेक हिस्सा रहता है, जो सामने की ओर दोनों बाजू की तीन हड्डियों के बढने से धीरे-धीरे बन्द होता है। आमतौर पर डेढ साल तक यह पूरा बन्द होना चाहिअे। बच्चे के भोजन में कॅलिशियम की कमी हो तो अिसके बन्द होने में देरी हो सकती है। अुसके दातों के लिअे भी कॅलशियम की जरूरत है।

भोजन सम्बन्धी आदतें—शुरू में तो मा को ही अपने हाथ से बच्चे को खिलाना होता है। धीरे-धीरे वह भोजन को खुद अुठाकर अपने मुह में डालना चाहेगा, तब अुसे अपने आप खाने देना चाहिअे। पहले वह भोजन अपने मुह में ठीक पहुचा नहीं पाअेगा, खूब गिराअेगा और अपने कपडे और जगह भी गन्दा कर देगा। कोअी बच्चा सफाअी के साथ खाना जल्दी सीखेगा, कोअी धीरे-धीरे। अुसे अपनी ही गति से चलने देना चाहिअे। अक्सर बच्चे को पेट भरने से मतलब नहीं होता है, वह खाने की प्रक्रिया में भी रस लेता है। अुस समय अुसके साथ जल्दबाजी नहीं करना चाहिअे। जगह की सफाअी और दूसरे काम काज के ख्याल से कभी कभी मांताअें अैसे समय सब्र खो बैठती हैं। अेक कार्य व्यस्त गृहणी के लिअे यह समस्या है ही। लेकिन साथ साथ यह याद रखना भी अच्छा होगा कि बच्चे का *पालन समय लगने वाला काम ही है।* बेसब्री करने से बच्चा अकसर और भी ज्यादा तंग करेगा, अुससे न अपना समय बचता है, न बच्चे की भलाअी होती है। अिसका यह अर्थ नहीं कि अुसे अेकआध घटे तक खाने के साथ खेल करते रहने दें, सब बातों में अेक समतोल रखना ही आवश्यक होता है। धीरे-धीरे वह समय के अन्दर और सफाअी के साथ खाना सीखे, अुसकी ठीक आदतें बन जाय अिसका ख्याल रखना चाहिअे।

कअी दफे माताओं को यह कहते हुअे भी सुनने में आता है कि मेरा बच्चा कुछ भी नहीं खाना चाहता है, वह भूखा ही रहता। पता नहीं अिसको कैसे जिन्दा रखें, अित्यादि। फिर अुसको प्यार करके बहलाकर फुसलाकर कभी कभी धमकियों से भी खिलाने का प्रयत्न शुरू होता है। लीला को तो अुसकी मा और दादी सारा घर घुमाकर, कौअे और गाय को दिखाकर और जब देखा कि अुसका मन अुधर है, तो

झट से मुंह में कुछ खाना डालकर वह अनजाने में ही निगल जाय, अैसा प्रयत्न करती है। दोनों सास-बहुओं का दिन में दो तीन घटे अुस अेक बच्ची को खिलाने के प्रयत्न में चले जाते हैं। बच्ची ने भी खूब हठ करना सीख रखा है। अुसने जान लिया है कि बडों पर विजय पाने के लिअे यह अुसके पास अुत्तम शस्त्र है।

असल में यह समस्या लीला की मा और दादी की अपनी बनाअी हुअी है। बच्चे को कब और कितनी भूख है, यह बडे निश्चित करें और अुसके अनुसार वह खाअेगा या नही, अैसी अत्यधिक चिन्ता के साथ अुसे खिलाना शुरू करे तो नतीजा यही होगा। अिसमें कोअी शका नही कि अगर लीला को अेक दिन अच्छी भूख लगन दें तो अुससे अुसका स्वास्थ्य बिलकुल नही बिगडेगा। फिर बिना बहुत चिन्ता प्रकट किअे अुसके सामने खाना रख देना चाहिअे।

रवि के बारे में यह शिकायत थी कि वह दूध नही पीता। दुपहर के तीन बजते ही अुसकी मां व्याकुल हो जाती थी कि अब अिसे दूध कैसे पिलाअें। अेक दिन किसी कारण से दूध वाला समय पर नही आया। दूध मिला तो पाच बज गअे थे। अुस दिन रवि ने बिना चू किये गये गिलास भर दूध पी लिया।

बच्चे को ठीक परिमाण में ही नहीं, खाद्य-तत्वो की दृष्टि से भी अुचित पोषण मिले, इसका ख्याल रखना तो जरुरी है। कभी कभी अुसमें समस्याअें भी आ जाती हैं। लेकिन अधिकतर तो इन समस्याओ के पीछे बडो का बर्ताव ही कारण होता है।

अंगूठा चूसना :–कअी बच्चो को अंगूठा चूसने की आदत होती है। यह आदत छुडाना अेक समस्या बन जाती है। जबरदस्ती से छुडाने का प्रयत्न करें तो अुससे और कुछ अवांछनीय परिणाम निकल सकते है। कअी दफे अिसका कोअी विशेष महत्व भी नहीं रहता है। अुसके बारे में बहुत जोर जबरदस्ती न करे तो स्वाभाविक रूप से ही बच्चा थोडे दिनो में यह छोड देगा। परन्तु कभी कभी अुसके पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। सभव है कि मां का दूध या बोतल चूसने से अुसे पूरा पूरा सन्तोप न मिला हो। और भी किसी मानसिक असतृप्ति से अिस आदत की शुरुआत हो सकती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि सुरक्षाबोध की कमी के कारण भी अैसी आदतें पड जाती है। अैसी हालत में कतअी डाटना डपटना नही, बल्कि अुसे और अधिक प्रेम और सुरक्षा का अनुभव कराना जरूरी है। फिर प्रयत्न यह करना चाहिअे कि अुसका मन कुछ रुचिकर खेलो में लग जाय जिनमें अुसके हाथों को भी कुछ न कुछ करने का मौका मिले। अगर अुसके हाथ काम में लगे हो तो वह अगूठे को मुहं में ले जाने के प्रलोभन से बच जाअेगा और अुसकी यह आदत आसानी से छूट जाअेगी।

हर अेक व्यक्तिगत बच्चे की अपनी जरूरते और समस्याअें होती ही हैं। मां-बाप को अुनका समझदारी के साथ समाधान ढूढने का प्रयत्न करना होता है और अिसमें कभी न कभी कठिनाअियां आती हैं। कभी-कभी अैसा लगता है कि बच्चा बिना कारण के रोता है, बहुत गुस्से में आ जाता है। लेकिन अिसके पीछे कोअी कारण तो होता ही है। बहुत दफे जो हमें दीखता है, असल कारण वह नही होता। मदाम मौन्टेसरी अेक अिस तरह की घटना का वर्णन करती है जहां मां-बाप बच्चे की अशांति

का कारण नहीं समझ पा रहे थे, बच्चा रो रहा था और बडी परेशानी थी। अिस समय *अुनका अेक मित्र वहां पर आया, जो परिस्थिति* को समझने में कुशल था। अुन्होंने देखा कि टेबल पर अेकाध चीजें अुनकी हमेशा की जगह से हटाअी गअी थी, कुछ अव्यवस्था थी। अुन्होने तुरंत अुन्हें ठीक किया और बच्चा अुसी समय शांत हो गया।

बच्चे के अिस तरह "अकारण" गुस्सा दिखाने के और भी कअी कारण हो सकते हैं। बहुत दफे अुसे कोअी चीज नहीं मिली, जो चाहिअे थी, तो निराशा के कारण भी क्रोध में आता है। कभी किसी चेष्टा में असफल हुआ तो अपना पराभव व्यक्त करने का माध्यम भी अुनके लिअे क्रोध ही हो सकता है। कभी कभी अुसके कपडे तंग या गीले होने से वह आराम नही महसूस करता होगा, या और भी किसी शारीरिक तकलीफ के कारण, जिसका निवारण वह खुद नही जानता है, वह अशांत हो सकता है। और जहा खूब समझकर मालूम किया कि सचमुच अैसी कोअी बात नही है, चिन्ता का कोअी कारण नही है, तो मा बाप को शात और स्थिर भाव से अपना काम करते रहना ही अच्छा होता है, फिर अुसके रोने चिल्लाने को बहुत महत्व नही देना चाहिअे। तब थोडी देर में वह अपने आप ही शात हो जाअेगा।

निषेधात्मक बातें कम-से-कम कहने का मौका रखें

बच्चा तो "शैतानी" करेगा ही, बडे बहुत दफे अुससे तग आयेंगे ही। लेकिन समझने की बात है कि बच्चे का जगत निराला है। अुसकी गलत ठीक की कल्पनाअें बडों से विभिन्न होती हैं। *अिसलिअे भी यह संघर्ष होता है।* अगर यह बात अच्छी तरह समझ ले तो बहुत अनावश्यक क्रोध से और मारपीट से बच सकते हैं। अिसकी अधिक विस्तार से चर्चा आगे करेंगे, यहा अितना ही कहना है कि शुरू से यह ख्याल रखा जाय कि बच्चे से "वह मत करो," 'यह मत करो' यह मनाअी करने की बात कम-से-कम हो। अिसमें घर की व्यवस्था का बडा महत्वपूर्ण स्थान है। अगर अैसी चीजें अिधर-अुधर रखी हों, जो बच्चा अुठा लेगा और जिनसे अुसका नुकसान हो सकता है, तो मा को अुन्हे अुठाने से मना करते ही रहना पडेगा। अैसी परिस्थिति में बच्चा कौतूहल वश या केवल आज्ञाभंग के मजे के लिअे भी अुन्हें अुठाने का प्रयत्न करेगा। तब अुससे यह कहना "बात नही मानोगे तो मारूगी" और फिर खीचना, घसीटना किया जाअे तो वह विरोध करने की वृत्ति को ही बढायेगा। अैसी और भी कअी मौके आते हैं जहां बच्चे के साथ बेकार संघर्ष करने की परिस्थिति बडों की ही निर्माण की हुअी होती है। थोडी समझदारी के साथ काम लेने से अैसे कअी प्रसगो से बच सकते हैं, जो बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य और घर का वातावरण प्रसन्न रखने के लिअे भी जरूरी है।

"बच्चे के लिअे जीना ही सीखना है। अिस दृष्टि से वह जो कुछ सीखता है वह कुछ-न-कुछ नअी बात का प्रयत्न करने के या वैसे प्रयत्न की प्रेरणा अनुभव करने के परिणाम है। अेक के बाद अेक सीखने का मौका ही जिंदगी है।"

उत्तर बुनियादी भवन में प्रत्यक्ष काम के मौके

अेक विद्यार्थी

[अुत्तर बुनियादी भवन का शिक्षाक्रम पूरा करने के समय विद्यार्थियो की समीक्षा होती है। अुस समीक्षा का मुख्य आधार अुनके तीन वर्षों का अनुभव होता है। विद्यार्थी को अपना त्रैवार्षिक अहवाल लिखना पडता है। अुसमे अध्ययन, स्वाध्याय, अुद्योग, सामाजिक कार्य, अित्यादि सभी विषयो का विस्तृत विवरण होता है। अिस वर्ष की तीसरी टोली के अेक विद्यार्थी के त्रैवार्षिक विवरण मे से अुसके प्रत्यक्ष कार्य के अहवाल को सक्षेप म प्रस्तुत कर रहे हैं। अिस विद्यार्थी ने तीन वर्ष के शिक्षाक्रम म से अेक वर्ष भूमिदान आन्दोलन म लगाया। अिस सामाजिक क्रान्ति के प्रत्यक्ष अनुभव को हमने शिक्षाक्रम का ही अग माना है। अुत्तर बुनियादी शिक्षा में अिस विद्यार्थी को अेक नया अुद्योग दिया गया था—स्वेटर आदि बुनना (निटिंग) जो अुसने ७ माह किया। तीसरे वर्ष मे अुसने अपने समय का अुपयोग कला की शिक्षा म भी किया। —सपादक]

भूदान आन्दोलन में अेक वर्ष (१९५७)

अिन तीन सालो की अवधि में मुझे प्रत्यक्ष कार्य के लिअे बहुत समय मिला। १९५७ साल के अप्रैल माह में अुत्तर बुनियादी भवन में हमारी टोली ने प्रवेश किया था। अुसी समय मे भूदान के कार्य क्षेत्र में काम करने के लिअे निकल पडा। पूरा सत्तावन साल मैंने अुसी काम लिअे अर्पण किया था।

दूसरे अिलेक्शन का समय था, और गावो में पार्टी-पार्टियो का मतभेद काफी बढा हुआ था। सारा वातावरण दूषित हो गया था। हमारे खादी के कपडे देख कर तो लोग अेकदम चिढ जाते थे। कभी कभी बहुत कुछ सुनाने में कमी नही रखते थे। हमारी अुम्र, हमारे कपडे, और हमारा वह सामान, हाथ में चर्खा, कधे पर बिस्तरा, बगल में थैला देखकर पता नही क्या-क्या सोचने लग जाते थे।

जब मैं अिस कार्य के लिअे निकल पडा तो शुरू में लगता था कि मै अपने विचारो को लोगो के सामने किस ढग से रखू? अपने विचारो को बताने की शक्ति मुझमें नही थी, अपनी भावना लोगो के सामने नही रख पाता था। लेकिन निकल पडा। मै श्री पद्माकर गुरुजी के साथ था।

मैं व्यक्तिगत चर्चा के रूप में प्रचार तथा लोगों की परिस्थिति को समझने कि कोशिश करता था। मैंने सोचा मैं यहा क्यो आया? क्या करने से लोगो का दिल हमें स्पष्ट रूप से समझ म आयेगा? अुस समय देखा कि सबसे अच्छा तरीका यह है कि गावो की बैठक जैसी होती है, पेड के नीचे या तो गाव के मैदान

में शाम के समय लोग बैठ जाते हैं, अैसी बैठक के द्वारा हम लोग भी अुनमें प्रवेश करें। मैं चाहता था कि वे लोग हमें अलग न समझें।

कुछ दिन के बाद मैं हमारी टोली के अन्य सदस्यों को न बता करके गांव की अेक साधारण बैठक में जा बैठा। लोगों ने खूब गालियां सुनाई। वे हमें राजनीतिवाले ही समझते थे। और समझते थे कि हम भी राजनैतिक पार्टियों के लोगों की तरह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिअे अुनके गांव में गये हैं।

अुन गालियों को सुनकर मैं बडा निराश हो गया और बडी चिन्ता में पड गया। मैं सोचने लगा कि अैसी हालत में हम अिन लोगों के विचारों को कैसे सुधार सकेंगे।

खूब सोचने पर मेरा दिल कहने लगा, यही है अुनके स्पष्ट विचार। अुनके वाक्य कटू क्यों न हों, वह अुनके हृदय से निकली हुअी वर्तमान परिस्थिति का अेक चित्र है। मैं समझ गया कि यही तरीका लोगों का दिल समझने के लिअे सुविधा जनक हो सकता है। सभी जगह कडवी बातें नहीं सुनी, बहुत से स्थानों में लोगों की तरफ से अच्छी बातें भी सुनने को मिली। देहातों में कई प्रकार की समस्यायें पैदा हो गयी है, जो कि आज की स्थिति में खूब भयंकर स्वरूप लिअे खडी है। गांव-गांव में द्वेष भावना बढती हुअी दिखाअी दी। अभी भी गांव में अैसे व्यक्ति हैं जो धनी व्यक्तियों से दबे रहते हैं।

वर्धा जिला सर्वोदय मंडल की ओर से हम लोगों ने अेक कला-पथक, भूदान का प्रचार करने के वास्ते स्थापित किया था। अुसके द्वारा लोगों को नाटक के रूप में भूदान आन्दोलन का अितिहास बताने, विचार धारा समझाने आदि का काम हुआ। यह अेक प्रभावशाली कार्यक्रम रहा।

गांव के अुद्योग धंधों पर शहरी वातावरण तथा मशीन युग के कारण कठोर आघात हुआ है। लोगों को मजदूरी नहीं मिलती। किसी अुद्योग धंधे का किसी को आकर्षण नहीं होता। तेल घानी का धंधा, मोची का धंधा आदि अनेक धंधे अैसे हैं जो आज की परिस्थिति में चलने मुश्किल हो गये हैं। अुनके घर में आर्थिक सवाल खडा है। अिसलिअे नौकरी के लिअे शहरों में जाना पडता है। अुनके जीवन में आनन्द का अभाव है। अैसी परिस्थिति में अुनका मन कैसे स्थिर रह सकेगा।

१९४२ के स्वातंत्र्य आंदोलन में लोगों ने बडी आशायें रखीं थी, अनेक लोग अपने बाल-बच्चों की फिक्र न करते हुअे स्वातंत्र्य युद्ध में शहीद हुअे थे। वे बातें सबको याद थीं। हमें वे कहते थे। "पिछली क्रांति में हमने भाग *लिया था, अिसलिअे कि देश आजाद होने के* बाद हम अपनी जीविका तो चला पायेंगे। लेकिन निराशा हुअी। जो साहुकार थे वे साहुकार बने रहे। समानता भी नहीं आअी और हमारे बच्चों को पेट भर खाने को भी नहीं मिलता।" लोगों के मन में बडा क्रोध भरा है। वे यहां तक कहते थे, "शांति से काम होने वाला नहीं है। आप अैसी बातें सिर्फ जमीनदारों के बचाव के लिअे ही कर रहे हैं।"

सन सत्तावन का यह अनुभव बहुत शैक्षणिक रहा। हमें लोगों से प्रेम भी खूब मिला। कभी लोगों की निद्रित करुणा जागती थी, तो किसी का रूप अुग्र स्वरूप धारण कर लेता था। मैंने कुल १०९ गांवों की प्रदक्षिणा तथा ६०७ मैल की पदयात्रा की।

कृषि उद्योग (१९५८-५९)

हमारी शिक्षा में अन्न और वस्त्र-स्वावलंबन का स्थान अति महत्वपूर्ण है। अन्न-स्वावलम्बन शिक्षाक्रम में क्यों रखा गया, यह सवाल तो खडा हो ही नहीं सकता है। जीविका चलाने के लिअे जो चीजें जरूरी होती हैं अुनका निर्माण करना तो पहला कर्त्तव्य है।

मैंने अुत्तर बुनियादी शिक्षा की अवधि में खेती काम और बुनाई काम करीब-करीब समान ही प्रमाण में किया है। दूसरी जिम्मेदारियां बीच-बीच में आती रही, जैसे गृह, सफाई, और दूध मत्री आदि। जिसके कारण कई दिन समाज सेवा के लिअे देने का अवसर प्राप्त हुआ।

माह	काम के कुल दिन	कुल समय घण्टे	आय रूपये–नये पैसे
जनवरी	२९	७४	६. ३६
फरवरी	२७	७५	१८. १२
मार्च–	सफाई मंत्री का कार्य		
अप्रेल–	मुर्गी पालन (अेक सप्ताह रसोई सहायक)-		५. ००
मई–	दूध मत्री का कार्य		
जून	२९	८७	१०. ८७
जुलाई	३०	९०	११. २५
कुल	११५	३२६	५१. ६०

सन १९५७ में मैं भूदान कार्य में था। इसलिअे १९५८ की जनवरी से ही अुद्योग का हिसाब दिया है। मैं माह मार्च में सफाई मत्री रहा और माह मई में दूध मंत्री। इस साल आय कम आने का अेक विशेष कारण यह रहा कि मुझे स्वेटर बुनने का अुद्योग मिला। सीखने व अच्छा अभ्यास करने के लिअे समय लगा। अुसमें घटों के हिसाब से नहीं काम के हिसाब से मजदूरी मिलती थी।

स्वेटर-बुनाई का काम (१९५८-५९)

माह	वस्तु	सूत खोलना समय	सूत खोलना गुंडी	सूत दुबटा करना समय	सूत दुबटा करना गुंडी	बुनाई समय	मजदूरी रूपये–नये पैसे
आगस्ट	५ स्वेटर	९	३	-	-	६०	१२. ५०
सितंबर	३ स्वेटर	२७	९	-	-	७२	७. ५०

अक्टूबर	३ स्वेटर	३२	२०	-	-	५५	७.५०
नवम्बर	१ स्वेटर	६२	२५	३०	१२	१६	२.५०
दिसम्बर	४ स्वेटर	-	-	-	-	४८	१०.००
जनवरी	१ स्वेटर	-	-	६०	२४	२०	२.५०
फरवरी	-	-	-	६२	३०	-	-
कुल	१७	१३०	७५	१५२	६६	२१४	४२.५०

इसके बाद दो माह मैंने सामाजिक काम में समय दिया, जिसके कारण अुद्योग में काम नही कर पाया।

गोपालन (१९५९-६०)

फिर मुझे गोपालन के अुद्योग में जाने का भी मौका मिला। यह बहुत अच्छा मौका था, जब मैंने पशु जीवन में इतना नजदीक का अनुभव पाया और मानव जीवन के साथ अुसके घनिष्ठ सम्बन्ध को समझा।

माह	कार्य	समय घण्टे	मजदूरी रु. नये पैसे
मई	गोशाला नायक	१३०	१६.२५
जून	गोशाला सहायक	४२	५.२५
	[पारिवारिक कार्य के कारण से १५ जून को घर जाना पड़ा था।]		
			कुल २१.५०

बुनाई काम, (१९५९-६०)

मुझे आसामी बुनाई का काम विशेष तौर पर सीखने के लिअे दिया गया। अुसमें आऌकारिक डिजाअिन आदि डालने का काम सीखा। अिस काम को मैंने खूब रुचि के साथ किया। किन्तु डिजाअिन डालने और पहला ही मौका होने के कारण अुसमें मजदूरी के तौर पर मुझे कुछ विशेष नही मिल पाया।

अगस्त १९५८ से दिसम्बर ५६ तक यह काम हुआ।

इसमें जो-जो वस्तुअें बुनी वे अिस प्रकार है—

थैले–११
बुलाअुज पीस–२
चादर–२

अिनकी मजदूरी रु. १९.९० हुई

इसमें कुल २८३॥ घण्टे समय दिया गया। आसामी बुनाई के अच्छे-अच्छे नमूनो का अध्ययन करने का मौका मिला। डिजाईन को पहले ग्राफ पर अुतारकर फिर बुनने में सुविधा होती है और पद्धति अच्छी तरह समझ में आ जाती है।

खेती कार्य :

१९५९ के जुलाई माह और १९६० के जनवरी और फरवरी माह में मुझे खेती करने का फिर से मौका मिला। जुलाई ५९ में मुख्य तौर पर जो खेती की प्रक्रियायें की, वे अिस प्रकार हैं – जमीन खोद कर तैयार करना, क्यारियाँ बनाना, पौधा लगाना, भाजी तोडना और धान लगाना।

जनवरी और फरवरी १९६० में विशेष कार्य गुलाब की बागवानी का काम सीखने का रहा। अेक घण्टा सुबह असकी सब प्रक्रियाएँ करता था। कलम लगाना, आँख बाधना, छटाई करना, फूल काटना, सिंचाई करना आदि सभी कार्य किये। अिससे मुझे बहुत बडा अनुभव मिला। गुलाब की बागवानी अितनी सूक्ष्मता चाहती है, यह मुझे पहले मालूम नही था। यह भी नही जानता था कि गुलाब की हजारो किस्में होती है।

अिस समय खेती में फसल कटाई का काम भी मुख्य रहा। जवार और गेहू की कटाई हुई। सारे समाज के साथ यह काम किया। अिन दो महीनो का हिसाब अिस प्रकार हैं –

	काम के घण्टे	मजदूरी
जूलाई १९५९	८१	१५–१९
जनवरी फरवरी ६०	१०६	१९–९६
कुल :-	१८७	३५–१५

वस्त्र स्वावलम्बन

वस्त्र स्वावलम्बन हमारी व्यक्तिगत वस्त्र पूर्ति की योजना है। पहले साल का वस्त्र स्वावलम्बन पूर्ण रूप से नही हो सका, क्योकि मैं भूदान यात्रा में था। दूसरे साल भी १२० गुडी नही कर पाया। हमने कपास ओटाई से लेकर सूत कातने तक कि सभी क्रियायें की हैं। कपडा बुनने का काम कुछ खास कारण से बीच में ही छोडना पडा। १९५७–५८ में केवल ४४ गुण्डियां ही कात पाया। यह कताई पदयात्राओ के बीच में हुई। तीन वर्षों में कुल मिलाकर २४९ गुंडी सूत हुआ। अिससे ४२ गज कपडा हुआ।

कुम्हार-काम

मुझे चित्रकला में बडी रुचि है। जो भी समय मुझे मिलता था अिसी में लगाता था। मेरे तीसरे वर्ष में दोपहर का अधिकत्तर समय कलाभवन में जाकर चित्रकला के अलग-अलग विषयों को सीखने में लगाता था। अिसमें अुद्योग के तौर पर मुझे मिट्टी का काम सीखने का मौका मिला। बरतन बनाने के अलावा फर्श के लिअे टाअिले बनाई। अन्य साथियों को मदद करता था और मिट्टी तैयार करने में लेकर भट्टी लगाने तक का काम किया।

अन्य कार्य

खास तौर पर अुत्सव के लिये सजावट करना, सभा की तैयारी करना, खास मौके पर विशेष सफाई करना यह सब काम बीच में आते ही रहते थे। अतिथि सेवा कार्य में भी बारी-बारी से विद्यार्थियों को जाना पडता है। अिन सब कार्यों में मेंने कुल मिलाकर तीन वर्षों में ३६४ घण्टे का समय दिया। अिन कार्यों में मुझे कई प्रकार की जानकारी और अनुभव मिले। जिम्मेवारी के साथ काम करना पडता है, इसलिये आत्म विश्वास भी बढा।

लोक शिक्षा का अेक प्रयोग

सुमन वग

(ग्राम स्वराज्य शिविर, सेवाग्राम)

वर्धा जिले में ग्रामस्वराज्य शिविरों का आयोजन किया जायगा और अुनमें से पहला सेवाग्राम में मई के महीने में होगा यह खबर पिछले अंक में दी थी। अिसकी विस्तृत जानकारी यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

शिविर १ मई को प्रारंभ हुआ था और २० मई को समाप्त हुआ। शिविर का अुद्घाटन श्री अण्णा सहस्रबुद्धे ने किया। अुन्होंने अुद्घाटन भाषण में शिविर का अुद्देश्य सबके सामने रखा। अुन्होंने यह भी कहा कि आज देश में जगह जगह अिस प्रकार शिविर करने हो तो हमें यह प्रयत्न करना होगा कि ये शिविर जितना तक हो सके अपने श्रमदान के द्वारा खान का खर्च निकाले। अगर यह करना है तो हमारे आज के श्रम का काम करने के ढंग से सम्भव नहीं होगा। हमें नये-नये साधनों और पद्धतियों को अपनाना होगा। साथ-साथ शरीर-श्रम के लिअे जिस अभ्यास और वृत्ति की आवश्यकता है, अुसका निर्माण करना होगा। अगर यह होता है तो चार घण्टे के श्रम से हम अपने खाने का खर्च तो आसानी से निकाल सकेंगे।

शिविर का काम अुसी दिन प्रारम्भ हुआ।

साथ प्रार्थना के बाद, शिविर का संचालन किस प्रकार होना चाहिअे, अिसकी चर्चा शिविरार्थियों के साथ हुअी और अुन्होंने अपने शिविर-जीवन को संगठित करने के लिअे सारे काम की जिम्मेवारी अपने अूपर ले ली। अलग-अलग कामों का भार शिविरार्थियों ने अेक-अेक करके स्वेच्छा से लिया। अेक प्रधान मंत्री का चुनाव किया गया और अिस प्रकार अुनका मंत्रीमंडल तैयार हुआ। लोकतंत्र के द्वारा समाज की व्यवस्था का अेक ढांचा बना और अुन्होंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। शिविरार्थियों के लिअे सामुदायिक जीवन का यह पहला अनुभव था, जिससे अुनमें से अनेक को प्रेरणा मिली। आम सभा में चर्चा करके शिविर का समय पत्रक भी तैयार किया गया जो अिस प्रकार है।

सुबह-अुठना	४ बजे
श्रमदान	५ से ८॥ बजे तक
स्नान आदि	८॥ से १०
पहला वर्ग	१० से ११
भोजन	११॥
दोपहर	२ तक विश्रांति
सूत्रयज्ञ	२ से २॥ तक
दूसरा वर्ग	२॥ से ३॥
अवकाश	३॥ से ४
तीसरा वर्ग	४ से ५
साय-भोजन	६॥
प्रार्थना	७॥

सामाजिक चर्चा,
चलचित्र या मनोरंजक कार्यक्रम ८ से ९
शयन ९॥

अुपरोक्त कार्यक्रम धीरे-धीरे अनुभवों के आधार पर बना। बीच-बीच में आवश्यकता के अनुसार इसमें परिवर्तन भी करने पडते थे। ९ मई से पहले सुबह का १० से ११ बजे वाला वर्ग नही होता था। किन्तु तब तक के अनुभव के बाद और शिबिरार्थियो के अुत्साह को देखकर ही यह रखा गया था।

शिबिर में कुल शिबिरार्थी ४६ थे। इनमें से १० जिले की कार्यकर्ता थे और बाकी किसान शिक्षक और विद्यार्थी थे।

शरीर श्रम का काम भारी होगा और वह भी गर्मी की मौसम में इस कारण अुनमें से कुछ को लौटाना पडा और कुछ बाद में बीमारी के कारण चले गये। इस प्रकार शिबिरार्थियो की सख्या ३२ रही।

स्कूल और कालेज के विद्यार्थी	१७
किसान	१६
शिक्षक	३

शरीर श्रम के समय बीच में आधा घटा नाश्ते और अवकाश के लिअे रहता था। नाश्ता शरीर श्रम के स्थान पर ले आया जाता था। सुबह की प्रार्थना भी श्रमदान के स्थान पर ही होती थी।

श्रमदान

सेवाग्राम सर्वोदय सम्मेलन के समय श्रमदान का कार्यक्रम बडी सफलता पूर्वक चला था। अुस समय अेक बाध बाधना प्रारभ किया था। अिस शिबिर के श्रमदान का कार्यक्रम वही रहा। मिट्टी अुठाकर बाध पर डालनी थी। १६ दिनों में लगातार काम चलता रहा।

काम का हिसाब

औसत हाजरी	२८
काम के कुल दिन	१६
काम के कुल घटे	५०
कुल व्यक्ति	५३३
कुल मिट्टी ढुलाई	१४४३८ घन फुट
मजदूरी का दर	रु. १–७५ न. पै. प्रति सेकडा घन फुट

कुल आमदनी रु. २५३ रुपये

तारीख ६ मअी से १४ मअी तक सुबह श्रमदान में अेक घटा योग देने के लिअे नई तालीम परिवार के लगभग १२ शिक्षक और विद्यार्थी भी जाते रहे। सेवाग्राम परिवार के साथ परिचय और सामुदायिक जीवन का कुछ अनुभव देने के लिअे तारीख १६ मअी को शिबिरार्थी नई तालीम परिवार के साथ रहने आये। दिनभर का कार्यक्रम रखा गया था। अिसके द्वारा नई तालीम के कार्य के साथ भी अुन्हें परिचय हुआ।

बौद्धिक वर्ग

शिबिर के अुद्देश्यो में अेक यह भी था कि जो शिबिरार्थी आये वे कुछ बुनियादी बातों की जानकारी कुछ न-कुछ परिमाण में हासिल कर ले। सर्वोदय विचारधारा और अुसकी पद्धति की जानकारी पाना तो आवश्यक है ही, किन्तु गाव के किसानो और अन्य लोगों को जिस तरह की सामान्य जानकारी रहनी चाहिअे, वह अिन व्यक्तियो को अवश्य मिले। हमारी अपेक्षा है कि वे आगे चलकर अपने-अपने गावों में लोकसेवा का कार्य करेगे। अिस तरह की जानकारी में अुदाहरणार्थ निम्नलिखित

वाते आती है। भूमि-सम्बधी सामान्य कानून, कर्ज सबधी सामान्य जानकारी, सरकारी विभागो में किस-किस तरह की मदद किसानो को मिल सकती है और कैसे मिल सकती है, लोक-सेवा के सिद्धान्त, शिक्षा के सिद्धान्त आदि की सामान्य जानकारी।

शिबिर में जिन-जिन विषयो पर वर्ग हुअे वे अिस प्रकार है :

विषय	शिक्षक	वर्ग संख्या
१. खेती शास्त्र	–श्री वलभीमराव मुरूरकर	५
२. भारतीय कृषी की अवनती के कारण	–श्री वनवारी लाल चौधरी	१
३. पशुओ के रोग	–श्री रामगोपाल पटेल	२
४ खेती अुद्योग	–श्री टकसाले	१
५ मिट्टी का परीक्षण	–श्री डी. अेन काले	२
६. खेती	–श्री पटवर्धन	२
७ कलम लगाना	–श्री देवीभाई	२
८. किसानो को जानने योग्य कानून	–श्री करन्दीकर	१
९ ग्रामपचायत	–श्री देवस्थल	१
१०. सहकार और समाज व्यवस्था और खेती	–श्री अण्णा सहस्र बुद्धे	९
११. नारा	–श्री बाबू कामत	१
१२ आरोग्य	–श्री डा० रानडे	१
१३ निसर्गोपचार	श्री लोक प्रकाश	१
१४ स्वास्थ्य-रक्षा	–श्री डा० मारे	१
१५. समाज-शास्त्र	–श्री प्रेमभाई	१
१६ अर्थ-शास्त्र	–श्री हतेकर	१
१७ वस्त्र विद्या	–श्री दत्तोबा दास्ताने	१
१८. गाधी-विचार	–श्री भसाली भाई	२
१९ सामूहिक जीवन और शिविर व्यवस्था	–श्री पद्माकर फरसोले और देवीभाई	३
२०. सर्वोदय विचार	–श्री बोम्बटकर	१
२१ वर्धा जिले का सर्वोदय अितिहास, भारत की गरीबी	–श्री ठाकुरदास बग	५
२२. नई तालीम	–श्री देवी भाई	३
२३ सामाजिक क्रान्ति	–श्री सुमन बग	१
	कुल वर्ग	४८

अिसके अलावा रात को कभी-कभी शैक्षणिक चलचित्र और कलापथक द्वारा नाटक आदि का कार्यक्रम भी रखा गया।

शिविर का समारोप तारीख २० को सुबह १० बजे श्री *अण्णा सहस्रबुद्धे की अध्यक्षता* में हुआ। अण्णा साहब ने कहा कि सेवाग्राम अिस प्रकार अध्ययन गोष्ठिया और शिविर करता रहेगा। सभी के लिअे अुनका दरवाजा खुला रहेगा। हम ऐसी योजना बना रहे हैं कि जिससे गाव के नागरिको को जब भी वे चाहें यहा आकर ५-७ दिन जिस विषय की अुन्हें जानकारी हासिल करनी हो, कर सके। अिस प्रकार जिले के लोगो को हम सर्वोदय जिला बनाने के लिअे प्रेरित कर सके, यह हमारी कामना है।

नई तालीम के काम को संगठित करना है।

संपादकीय

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ बाईस वर्षों से नई तालीम का काम करता आया है। सेवाग्राम में किये गये प्रयोगों के फल-स्वरूप राष्ट्रीय शिक्षा का अेक सपूर्ण ढाचा तैयार हुआ। सघ ने अपने केन्द्र या शालायें किसी अन्य जगह नही खोली। तालीम का काम वही सच्चा होता है जो स्थानीय परिस्थिति और परम्पराओ को सामने रखते हुअे निर्मित हो। अिसलिये शिक्षा-शास्त्र की दृष्टि से भी, किसी केन्द्रीय सस्था द्वारा शाखायें खोल कर नई तालीम को फैलाना ठीक नही होगा, अिस विचार से बापू ने सघ के दायरे को सीमित रखा। सेवाग्राम मे काम करना और देश के अन्य स्थानो पर सरकारी व गैर सरकारी ढग से चलने वाले बुनियादी शिक्षा के काम का मार्गदर्शन करना, यही अपेक्षा तालीमी सघ से थी। और सघ यह काम अपनी शक्ति के अनुसार श्रद्धापूर्वक करता रहा। अिसके फलस्वरूप सरकार ने बुनियादी तालीम को राष्ट्रीय शिक्षा कह कर अपनाया। देश में कई अैसे केन्द्रों की स्थापना हुअी जिनकी प्रेरणा नई तालीम थी और कार्यक्रम भी नई तालीम का ही था।

आज भी ये संस्थायें अपने काम में लगी हुअी है। किन्तु यह सभी महसूस कर रहे है कि जितनी तेजस्विता के साथ देश में काम होना चाहिअे अुतना नही हो पा रहा है। १९५१ में भूदान यज्ञ आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और अुसका असर सारे रचनात्मक कार्य पर हुआ। अेक तरफ आन्दोलन ने रचनात्मक कार्यों के लिअे अनुकूल वातावरण पैदा कर दिया। अब सभी यह महसूस कर रहे हैं कि आज जितनी अनुकूलता रचनात्मक कार्यों के लिअे है, अुतनी पिछले बारह वर्षों में नही थी। किन्तु दूसरी तरफ अिन कार्यक्रमो की तात्कालिक गति को आन्दोलन ने कुछ धीमा-सा कर दिया था। काफी कार्यकर्ता आन्दोलन के कार्य में लग गये थे। कुछ केन्द्रों के काम बन्द या कम कर दिये गअे थे। और अुनकी शक्ति भूदान-ग्रामदान यज्ञ में लग गयी थी। जिसका नतीजा आज सघन कार्य के लिअे अनुकूलता के रूप में दीखने लगा है।

नई तालीम का काम भी कुछ धीमा-सा पड गया था। पिछने नौ बर्षों के अनुभव के बाद आज यह मानना पडेगा कि अिस सक्रमण काल का असर अच्छा हुआ है। नई तालीम के अूपर नये ढंग से चिन्तन होना प्रारम्भ हुआ है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुअी है कि सर्वोदय परिवार के सभी साथी यह महसूस करने लगे है कि सारे रचनात्मक कार्य का आधार नई तालीम होना चाहिअे। कुल के-कुल रचना-

त्मक कार्य में "नये मोड" की दृष्टि ने प्रवेश कर लिया है ।

अैसे अवसर पर नई तालीम के नाम से काम करने वाले साथियों और केन्द्रों के सामने अेक नयी परिस्थिति अुपस्थित हो जाती है । अभी तक हम अलग-अलग रह कर काम करते आये हैं । अेक साथ मिलने का मौका केवल बैठकों और सम्मेलनों में ही आया करता है,। क्या अब भी काम अिसी तरह चलेगा? रचनात्मक काम पर ही नहीं बल्कि सारे आन्दोलन के अूपर अगर "नई तालीम का रंग" चढाना है, तो क्या हमारे छोटे-मोटे अलग-अलग प्रयासों से वह संभव होगा ? यह प्रश्न आज हर काम को करते समय हमारे सामने खडा होता है ।

अिसका अेक ही अुत्तर है । देश भर के नई तालीम के कार्यकर्ता और अुनके केन्द्र अपने-अपने परिवारों को व्यापक बना लें । सारा अेक परिवार हो जाय । जिस तरह ग्रामदान के पीछे अनेक परिवारों को मिला कर अेक परिवार बना लेने का सिद्धान्त है, अुसी प्रकार सारे देश का अेक नई तालीम परिवार बने । आज क्या हो रहा है ? तिरुवन्दपुरम् में बैठा हुआ कुट्टी कृष्णन् क्या कर रहा है, अिसकी खबर रामनारायण तिवारी को नहीं है और कालीपद चट्टोपाध्याय किस तरह अपने शिक्षा के प्रयोग कर रहा है, यह हरभजन चोपडा जानता भी नहीं । अिस अेकान्त साधना के गुण चाहे कुछ भी हों, किन्तु अुसका अेक बुरा असर हो रहा है । हममें से अनेक साथी सरकारी या अर्ध-सरकारी पिन्जरे में प्रवेश करते जा रहे हैं । शिक्षा जैसे मुक्त विषय को सरकारी कायदे-कानून के दबाव में रहना पडे, क्या कोई सच्चा शिक्षक इसे सहन कर सकता है ? साथ-साथ अेकान्त में पडे-पडे हमारे काम का गुणात्मक स्तर भी घटता जा रहा है ।

क्या यह नहीं होना चाहिअे कि कुट्टी कृष्णन् अपने केन्द्र के बारे में तो चिन्तन करे ही, किन्तु कालीपद, रामनारायण और हरभजन के केन्द्रों को भी अपना ही केन्द्र समझे, अुसकी जानकारी रखे और जब अुसे कोई नयी बात सूझे या समस्या के रूप में पेश आअे तो अुसकी जानकारी सबको दे, सबकी राय ले । इधर कालीपद का केन्द्र भी सबका केन्द्र हो और रामनारायण का भी । यह अगर करना है तो हमें समझ बूझ कर अुसके लिअे जुटना पडेगा । अुसके लिअे कुछ मित्रों को देश के सब केन्द्रों की परिक्रमा करते रहना पडेगा । अैसी परिस्थिति तैयार करनी होगी कि जिससे सब अेकसाथ मिलकर सोचने के लिअे तैयार हो जायं । अैसा भाईचारा तभी निर्मित होगा जब कि इसकी आवश्यकता तीव्रता के साथ सबको महसूस होगी । हमारे बीच अिस प्रकार की बात शुरू हो गअी है और आनन्द की बात है कि हमारे कुछ साथियों ने अिस काम को अुठा लेने का निर्णय भी ले लिया है । केवल माअीचारे से काम नहीं चलेगा । कुछ अधिक गहराअी में जाना होगा । काम का गुणात्मक विकास हो और दृष्टि का अैक्य भी निर्मित हो, अिसके लिअे कुछ कार्यक्रम बनाना पडेगा ।

नई तालीम की संस्थाओं से हर साल अनेक विद्यार्थी बुनियादी और अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा करके निकलते हैं । पर कोने-कोने से यह आवाज आती है, "हमारे प्रमाण पत्र को मान्यता नहीं ।" अुत्तर बुनियादी शिक्षा पूरी करने के बाद कॉलेज में जाना तो दूर रहा, डिप्लोमा वाले शिक्षाक्रमों में भी भाग नहीं ले

सकते। तेअीस साल काम करने के बाद भी क्या आज अैसी स्थिति कायम रहेगी ? हम अुसके लिअे क्या कुछ नही करेंगे ? अिन प्रश्नो पर अच्छी तरह चिन्तन करने की आवश्यकता है। अिसका हल सम्मिलित शक्ति से ही सभव दीखता है।

पिछले दिनो अेक सुझाव आया है। पुरानी शिक्षा पद्धति के अनुसार परीक्षाओ की परपरा है। नई तालीम शिक्षा में समीक्षा की पद्धति अपनायी गई है। अभी हर सस्था अपनी-अपनी समीक्षायें कर लेती है। अिस सुझाव के अनुसार समीक्षाओ को केन्द्रीय मान्यता होगी। शिक्षा-क्रम पूरा करने के बाद जो अतिम समीक्षा होती है वह अखिल भारतीय मानी जाय, खास तौर पर अुत्तर बुनियादी शिक्षा का प्रमाण पत्र भी केद्रीय हो। पद्धति और स्तर का सर्वमान्य स्वरूप पहले निर्धारित कर लिया जाय। समीक्षायें क्षेत्रीय समितियो के द्वारा स्थानिक परिस्थिति के आधार पर हो। समीक्षा के समय अिन क्षेत्रीय समितिया में केन्द्रीय समीक्षा समिति के अेक या दो सदस्य भी अुपस्थित रह सकते हैं। अैसा करने से दोनो बाते सधेंगी। शिक्षा का स्तर भी अूचा होगा और प्रमाण-पत्र का जो अखिल भारतीय स्वरूप होगा अुसकी शक्ति भी स्थानिक प्रमाण-पत्रो से कही अधिक होगी।

अगर यह सुझाव मान लिया जाय और अुसके बतौर काम भी शुरू किया जाय तो, जो प्रश्न मान्यता के बारे में अुपस्थित हैं, अुसे सुलझाने की शक्ति भी तैयार होगी। यदि ठोस ढग से काम होगा और अेक दो साल में हमारी सस्थाओ से निकले हुअे युवक युवतियो के पीछे सर्व सेवा सघ का बल भी होगा, तो शायद ही कोअी अैसी शक्ति होगी जो "प्रवेश नही" की पटिया अुन्हे बिना सकोच दिखा सकेगी। पिछले कुछ दिनो से हम जिस नई तालीम के आदोलन का जिक्र सुनते और करते आये हैं, यह कदम अुसी आदोलन का कारगर अग होगा। यह सौम्य सत्याग्रह ही है। माग करना नही, बल्कि अपनी जिम्मेदारियो को सच्चे रास्ते से निभाना सत्याग्रह है।

साथी मित्र अिसके बारे में क्या सोचते हैं ?

'जो बिना किसी पद्धति के पद्धतियुक्त या व्यवस्थित करता है, जिसे कोई भी गुरु दे नहीं सकता, फिर भी जो दिया जाता है, शिक्षण का यही अनिर्वचनीय स्वरूप है। अिसलिअे दिव्यदृष्टि सम्पन्न महात्माओं ने यही अुद्गार व्यक्त किये कि शिक्षा कैसे दी जाय, यह हम नहीं जानते—"न विजानीम" (केन अुपनिषद)। शिक्षा-पद्धति, पाठ्यक्रम, समय-पत्रक— ये सब अर्थ-शून्य शब्द हैं। अिनमें सिवा आत्मवंचना के कुछ नहीं है। जीने की क्रियाओं में ही शिक्षा मिलनी चाहिअे।

—विनोबा

शान्ति समाचार

अहिंसा की शक्ति

डाकू कौन है और कौन नहीं, असका निर्णय मैं नहीं करना चाहता।

सारा देश विनोबाजी की भिंड और मुरैना की यात्रा की खबरों से भर गया है। हर पत्र-पत्रिका में यही खबर कि बाबा डाकू समस्या का हल करने वहा गये हैं।

५ मई को आगरा में दिये गये प्रवचन में अुन्होंने कहा—

"आज सबेरे किसी ने हमसे पूछा कि क्या आप डाकुओं के क्षेत्र में जानेवाले हैं? तो हमने कहा कि जी ना, हम सज्जनों के क्षेत्र में जाने वाले हैं। डाकुओं के क्षेत्र में जाने का हमारा विचार नहीं है। हम भिंड, मुरैना के क्षेत्र में जरूर जाना चाहते हैं। लेकिन अुस क्षेत्र को सज्जनों का क्षेत्र समझते हैं। जैसे कुल हिन्दुस्तान सज्जनों का क्षेत्र है वैसे वह भी है। और डाकू कौन है कौन नहीं, असका फैसला तो ईश्वर के पास होने वाला है। यह जरूरी नहीं है कि जो डाकू माने जाते हैं वे ही डाकू होते हैं। दूसरे भी बहुत से होते हैं और मुमकिन है कि परमेश्वर की निगाह में अधिक गुनाहगार दूसरे ही साबित होंगे। हम यह कहना चाहते हैं कि हम वहा कोई मसला हल करने नहीं जा रहे हैं, बल्कि सज्जनों के अेक सेवक के नाते जा रहे हैं।"

यह है करुणा। जो हरेक को अपनी प्रतिछवि के तौर पर देखता है, अुसकी करुणा चमत्कार कर दिखा देती है। जिसके फल-स्वरूप इन डाकुओं के दल ने, जिनके पीछे सालों से पुलिस की सारी शक्ति लगी हुई थी, और कइयों के पकडने के लिअे सरकार की तरफ से हजारों रूपये का इनाम भी घोषित कर दिया गया था, बिना परिणामों की चिन्ता किअे विनोबा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। आकाशवाणी के लिअे दी गई विज्ञप्ति में अुन्होंने स्वयं कहा—

"आध्यात्मिक जीवन में अहिंसा अेक तेजस्वी शक्ति रही है। महात्मा गाधी ने इसका प्रयोग राजनीति में किया था। पिछले नौ वर्षों से इसके सिद्धान्तों का प्रयोग सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस क्षेत्र में, जिसे डाकुओं का क्षेत्र कहा जाता है, मुझे वे अनुभव हुअे हैं, जो पहले कभी नहीं हुअे थे। दिल गल गअे हैं और सारे वातावरण पर भगवान की अुपस्थिति का भान छाया हुआ है। जिन्होंने डकैती को अपना जीवन-भर का धधा मान लिया था, अैसा दीखता है कि भगवान ने अुनके हृदयों में चमत्कार कर दिया है। वे अपने पुराने तरीकों को छोड कर अेक प्रायश्चित्त के भाव में हमारे पास आये हैं।

इसके लिअे मैं केवल अुस परम् शक्ति-मान प्रभू के प्रति कृतज्ञता ही अर्पण कर सकता हू, जिसकी श्रद्धा में नम्रतापूर्वक मैं प्रेम, करुणा और सत्य के मार्ग पर चल रहा हूँ।

अहिंसा की शक्ति भी अनोखी है।

शान्ति सेना शिविर, बेलगांव

महाराष्ट्र और मैसूर राज्यों में सीमा का विवाद अुपस्थित हुआ है, अुसका रूप दिन-ब-दिन तीव्र होता जा रहा है। मैसूर राज्य की सीमा पर स्थित बेलगांव जिले के कई हिस्सों में मराठी भाषा-भाषी बहुसंख्या में हैं, जो चाहते हैं कि अुस हिस्से को महाराष्ट्र के साथ मिलाया जाय। मैसूर तथा महाराष्ट्र राज्यों की सीमा के प्रश्न को लेकर गत दो-तीन साल से बेलगांव में आन्दोलन चल रहा है। अुस सिलसिले में गत फरवरी और मार्च में वहां की जनता और पुलीस के बीच संघर्ष हुअे और पुलीस अधिकारियों ने लाठी और गोली चलायी, जिससे वातावरण प्रक्षुब्ध हुआ।

सेवाग्राम सर्वोदय सम्मेलन के समय अिन दोनों प्रदेशों के लोक सेवकों ने तय किया था कि बेलगाव में अेक शान्ति-सेना शिविर की योजना हो, जिसमें शान्ति सैनिकों की दृष्टि, नीति तथा मर्यादाओं पर विचार हो। यह शिविर पिछले महीने (अप्रैल) की १४ तारीख को प्रारम्भ हुआ अिसमें निम्नलिखित चार बातें तय हुअीं—

१. मुख्य अुद्देश्य शान्ति स्थापना का होगा जिसके लिअे बेलगाव प्रदेश के दोनों भाषा-भाषियों के बीच परस्पर सौहार्द तथा बंधुता की भावना दृढ़ हो, अैसी कोशिश की जाय। सीमा-प्रश्न आपस की बातचीत से हल हो, और जो भी आन्दोलन चलाया जाय, वह शान्तिमय मार्ग से ही चलाया जाय, अैसा वातावरण निर्माण करने की कोशिश हो।

२. कोई भी पक्ष अैसा न माने कि सीमा-प्रश्न जीवन-मरण का प्रश्न है, बल्कि दोनों पक्ष अिस बात को समझें कि मराठी और कन्नड भाषा-भाषी अेक ही भारत-माता के संतान हैं। अिस विचारधारा का प्रचार करने की जनता में कोशिश हो।

३. बेलगांव का प्रदेश किस राज्य में रहे, इसका फैसला देने का काम शान्ति-सैनिकों की मर्यादा के बाहर का काम है। अिसलिअे शान्ति-सैनिकों का काम केवल इतना ही रहेगा कि मसले का हल केवल स्नेह तथा बंधुता से हो।

४. गत फरवरी-मार्च में पुलिस की तरफ से जो अत्याचार हुअे, अुनके बारे में विधिवत जांच करना और निर्णय देना भी शान्ति-सैनिकों का काम नहीं है। लेकिन परिस्थिति को समझने और लोगों के सुख-दुख को जान लेने का काम शान्ति-सैनिकों का है।

शिविर में दोनो प्रदेशों के १०-१० शान्ति-सैनिकों ने भाग लिया। शिविर की अवधि में लोक-संपर्क और अुन देहातों की पदयात्रा की गई, जिनमें पुलिस की ओर से अत्याचार हुअे थे। बेलगाव में अेक शान्ति-सेना केन्द्र की स्थापना करना भी तय हुआ। अिस केन्द्र में दो मराठी और दो कन्नड भाषा-भाषी सैनिक रहेंगे और अुस क्षेत्र को अपना प्रेम क्षेत्र बनायेंगे।

सरहद पर शांति-चौकियों का निर्माण

चीन-भारत के मसले पर विचार विनिमय करके यह तय किया गया है कि लोक संपर्क, जनसेवा और शांति-स्थापना की दृष्टि से खादी समिति की ओर से सरहद पर कुछ खादी-केन्द्रों की स्थापना की जाय। जो कार्यकर्ता अिन केन्द्रों में बैठेंगे अुनका मुख्य कार्य लोक-संपर्क और शांति-कार्य होगा।

शान्ति-सेना मंडल की अेक बैठक में तय किया गया है कि कुछ कार्यकर्ताओं को कम से कम ५ वर्षों के लिअे सरहद की जनता की सेवा करने के लिअे भेजा जाय। अुस प्रदेश की जानकारी प्राप्त करने के लिअे विशेष व्यक्तियों को दो महीने के लिअे वहां भेजने का भी निर्णय हुआ।

श्री सुन्दरलाल बहुगुना पहले से ही टिहरी गढवाल में काम कर रहे हैं। वे तिब्बत की सरहद पर विशेष तौर पर शक्ति लगायेंगे। विनोबाजी ने अुनकी सहायता के लिअे प्रदेश के अन्य हिस्सों से कार्यकर्त्ता भेजने की सूचना दी है।

पाठशाला के विद्यार्थी द्वारा सैनिक-शिक्षा के विरुद्ध सत्याग्रह

विकार ऑफ वेकफील्ड का सुपुत्र मार्टिन हेलीकार जिस पाठशाला में पढता है, अुसका अध्यक्ष सेना का अेक बडा अफसर है। अिंगलैण्ड में सैनिक-शिक्षा अनिवार्य है, किन्तु अुन्हें अिसकी छूट दी जा सकती है जो किसी धार्मिक या सैद्धान्तिक कारण से अिसके खिलाफ हैं। अुन्हे अुसके बदले अन्य जनसेवा-कार्य करना पडता है, किन्तु यह बालक स्कूल में अपना प्रवेश तब तक स्वीकार करने के लिअे तैयार नही हुआ, जब तक अुसे स्कूल-सैनिक-टुकडी को छोड देने की मंजूरी नही मिली। वहस हफ्तों तक चलती रही। आखिर अधमने ढंग से अधिकारियों ने मंजूरी दी। वह लिखता है–

"जब सेना में अनिवार्य रूप से भरती करने का कानून लागू था, तो यह दलील पेश कीजाती थी कि छोटी अुम्र के बच्चों को सैनिक-प्रशिक्षण या अुसका विरोध करना, अिन दोनों के बीच में चुनने के लिअे बाध्य नहीं करना चाहिये। लेकिन अुन लडकों का क्या होता था जो १४ साल की अुम्र में स्कूल-सैनिक-टुकडी में ढकेल दिये जाते थे? जब मैंने अिसका विरोध किया तो मुझसे कहा गया कि मैं अभी छोटा हूं और शांतिवादी बनने लायक अुम्र का नहीं हूं। शांति के अूपर अेक छोटी अध्ययन मंडली के सामने बोलने से अेक वक्ता को रोका गया, लेकिन सैनिक पेशे के कई सारे व्याख्यान अनिवार्य रूप से रखे गये थे। अिसलिये चार साल तक अिन लडकों को शांतिवादियों की बातें सुनने नही दीं। और अिनमें से ४० प्रतिशत लडके तो पुरोहितों के थे।"

वह हर शांतिवादी माता-पिता से हार्दिक निवेदन करता है कि वे अपने बच्चों को निस्पक्ष और मुक्त शिक्षण देने की व्यवस्था करें।

शिक्षक और निःशस्त्रीकरण

अिंगलेण्ड के राष्ट्रीय शिक्षक संघ की निःशस्त्रीकरण समिति ने हाल ही में अेक सभा का आयोजन किया था। सभा ब्लेकपूल में हुई। सभा में जो विचार अलग-अलग वक्ताओं द्वारा रखे गये अुनमे से कुछ अैसे वाक्य जो हमें प्रेरणा दे सकते हैं, यहां दिये जा रहे हैं:

अेक संसद सदस्य कहते हैं–

"जिस क्षेत्र से वे चुने गये हैं, अुसके आधे घरों में स्नानागार भी नही हैं। अगर सरकार सैनिक तैयारियों पर अितना खर्च न करे तो अुस पैसे का अुपयोग कितने ही आवश्यक व भले कामों के लिअे किया जा सकता है।"

ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के विज्ञान के अेक प्रॉफेसर कहते हैं–

"दुनिया और मानव की कहानी के काल की तुलना में लिखित अितिहास का युग तो अैसा है कि मानो अभी-अभी ही प्रारम्भ हुआ हो। और वैज्ञानिक शोधों ने मानव जीवन के अूपर असर करना तो हाल ही में–पिछले ३०० वर्षों में आरम्भ किया है। अभी हमारे सामने अेक तरफ तो भयानक खतरा है और दूसरी तरफ अेक सुनहरा मौका। किन्तु मानव द्वारा विज्ञान को युद्ध के लिअे अुपयोग करने के बावजूद भी, आशा यही है कि मनुष्य की बुद्धि शुद्ध होगी और वह ईसा मसीह के रास्ते को अपनायेगा। अेक समय आयेगा कि जब अिन असीम शक्तियों का अुपयोग मनुष्य की भलाई के लिअे होगा। भोजन भरपूर होगा, सबको यथेष्ट अवकाश मिलेगा और मनुष्य को अेक-दूसरे की सेवा करने की शिक्षा मिलेगी।"

राष्ट्रीय शिक्षक सघ की कार्यकारिणी की अेक सदस्या ने कहा–

"शिक्षको के सामने बडी-से-बडी समस्याओ को हल करने की जिम्मेवारी है। शिक्षक होने के नाते हम अुन्हें अनदेखा भी नहीं कर सकते और न अुनके बारे में तटस्थ रह सकते हैं। हमारी जिम्मेवारी है कि हम बालकों को महत्वपूर्ण बातो के बारे में बतायें। आम तौर पर किशोर-अवस्था की समस्याओ के बारे में चर्चा होती है, किन्तु प्रौढो के मानस को सुलझाना और भी आवश्यक है, क्योंकि प्रौढो की मानसिक अवस्था और तनाव का असर किशोरो के मानस पर पडता है। वह अुन्हें समस्यात्मक बना देता है। बालकों और प्रौढों, दोनों का मानसिक पुनर्वसन होना आवश्यक है। आशा है कि पश्चिमी राष्ट्र शीघ्र ही युद्ध को हमेशा के लिअे त्याग देंगे।"

बरतानिया में पहला शांति कॉलेज

अिसी वर्ष अिग्लैण्ड में अेक कॉलेज खुलने जा रहा है, जिसका मुख्य अुद्देश्य शांति पर शोध करना और अुससे संबंधित विषयों का अध्ययन करना होगा। यह कॉलेज लेन्केस्टर में, "स्कूल आफ सोशल स्टडीज" में खुलेगा, और अिसका पहला सत्र सितम्बर से प्रारम्भ होगा। अपेक्षा यह है कि अिसमें १५ विद्यार्थी लिअे जा सकेंगे। ये छात्र लण्डन विश्वविद्यालय की समाज-शास्त्र को डिग्री के लिअे तैयारी करेंगे। अिन चालू डिग्रिओ के लिअे तैयारी करने का अुद्देश्य केवल यही है कि तीन वर्ष की शिक्षा पूरी करने के समय विद्यार्थी किसी काम के लिअे क्वालिफाअि करना चाहेंगे। यह व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक है। किन्तु सारे शिक्षण की दिशा शांति की ओर ही होगी।

अिसके अलावा अिस कॉलेज के द्वारा सारे देश में (बरतानिया) शांति मडलियों की स्थापना की जायगी। अभी गार्थनवाअिड आश्रम (श्री डेविड हागेट द्वारा स्थापित की गई सस्था; नई तालीम के पाठक श्री डेविड भाई से परिचित हैं और "नई तालीम" में अुनकी सस्था के अुद्देश्य भी प्रकाशित किये जा चुके हैं। अक ५ वर्ष ८ कवर–पृष्ठ ४ पर) ने दक्षिण वेल्स में अेक शांति मडली चलाने में सहयोग करना स्वीकार किया है। अिसी प्रकार अन्यान्य स्थानो पर भी जिस तरह की मडलियां बनाने का प्रयत्न किया जायेगा।

(शेषांश पृष्ठ ३८४ पर)

टिप्पणियां

आर्यनायकमजी लगभग ८ महीने के लिअे योरोप और अमेरिका की यात्रा पर गये हैं। अपने विद्यार्थी-काल में जब वे अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पढते थे, अुस समय कनाडा के प्रसिद्ध ओीसाई पादरी डाक्टर शार्मन के ईसा के अुपदेशों से संबंधित परिसंवाद में अुन्होंने भाग लिया था। अभी शार्मन की मृत्यु के बाद अुनके काम को आगे बढाने के लिअे शार्मन ट्रस्ट की स्थापना हुई है। जून के अन्त में इसी ट्रस्ट के अन्तर्गत होनेवाले परिसंवाद में भाग लेने के लिअे आर्यनायकमजी अमेरिका गअे हैं। करीब तीन महीने अमेरिका में बिताने के बाद वे इगलेंड और दो महीने योरोप के कुछ देशों में भ्रमण करेंगे। दिसम्बर के अन्त तक नायकमजी वापस भारत लौटकर आयेंगे।

× × ×

किसी भी शिक्षण-केंद्र के लिअे अत्यन्त आनन्द की बात होती है कि जब अुसमें बचपन से लेकर विश्वविद्यालय की शिक्षा पाया हुआ विद्यार्थी अुसी संस्था को अपना कार्यक्षेत्र बना लेता है। जब वह विदेश का अनुभव और वहां से नये-नये विचार लेकर लौटता है और फिर से अपने काम में लग जाता है, तो वह सबके लिअे गर्व की बात हो जाती है। भाई श्री मुक्तेश्वर ने तो अुसमें अेक और आनन्द जोड दिया। २५ मई को वधु को लेकर वे सेवाग्राम आ पहुंचे। २६ तारीख को सेवाग्राम परिवार ने १० बजे सुबह वधु का स्वागत किया। भाई मुक्तेश्वर का विवाह २८ अप्रैल को अुनके गांव में संपन्न हुआ था।

नई तालीम परिवार नव दम्पति को हार्दिक बधाई देता है और कामना करता है कि भाई मुक्तेश्वर और गौरी बहन नअी तालीम जगत् की महत्वपूर्ण सेवा करेंगे। हम आशा करते हैं कि नई पीढी के ये लोग शिक्षा में सच्ची लोकतांत्रिक परम्पराओं को मजबूत बनाकर सेवाग्राम के प्रकाश को सारे जिले और देश में फैला देंगे।

× × ×

सेवाग्राम में जो ग्राम-स्वराज्य शिविर हो रहा था वह २० मई को समाप्त हुआ। शिविर का अहवाल इसी अंक में दिया गया है। अपेक्षा तो यह थी कि शिविर में ७०-८० व्यक्ति होंगे, किन्तु अुपस्थिति अुसकी आधी ही रही। अिसका मुख्य कारण यह है कि शिविर का जितना प्रचार गांव-गांव में होना चाहिअे था, अुतना किया नहीं जा सका। किन्तु जहां तक शिविर के कार्यक्रम और अुसके गुणात्मक स्तर की बात है, वह काफी अच्छा रहा। शिविर संचालकों को बधाई।

× × ×

वार रेजिटर्स इण्टरनेशल अेक अन्तर्राष्ट्रीय सगठन है। अभी तक इसका प्रमुख कार्य योरोप में ही रहा है। युद्ध बंद हो, यह अुसका मुख्य प्रयत्न है। अभी तक अुनके सभी सम्मेलन योरोप में ही होते रहे हैं। किन्तु इस वर्ष अुन्होंने यह सम्मेलन, जो तीन साल में होता है, हिन्दुस्तान में करने का तय किया है। अधिवेशन गांधीग्राम, मदुरा में होगा।

अिस संगठन के साथ जो ३० शान्तिवादी सस्थाअें दुनिया के २२ देशों में है, अुनमें से अधिक तर के प्रतिनिधि अिस सम्मेलन में भाग लेंगे। अिसके अलावा कई व्यक्ति दुनिया के अलग-अलग देशों से भी आयेंगे। मंत्री श्री आर्लो टेटम ने अेक पत्र में कहा है कि अिस सम्मेलन के द्वारा पूर्व और पश्चिम के सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ हो सकते हैं। अिसमें वे मित्र भी भाग ले सकते हैं जो अिस संगठन के सदस्य नहीं हैं।

हमारे लिअे यह अेक अच्छा मौका है जब कि योरोप के शांति-आन्दोलन के साथ गहरा परिचय हो सकता है।

सम्मेलन २१ से २८ दिसम्बर तक होगा।

(पृष्ठ ३५९ का शेषांश)

तो अुन बच्चों को अपने जीवन में आनंद ही मिलता है।

नई तालीम का शिक्षक आस्तिक होना चाहिअे, अीश्वर की कृपा पर आस्था रखनेवाला होना चाहिअे, यह भी समझाने का मेरे मन में था। लेकिन अिस जमाने में अैसा अुपदेशात्मक विचार दर्शाने की धृष्टता मैंने नहीं की थी। लेकिन अिस शिक्षक मित्र की अेक-अेक क्रिया में श्रद्धा और आस्तिकता भरी थी, यह हमने अुनकी स्वमुख परयाणी सुन कर देखा। यह श्रद्धा होने से ही अैसे अनजान गांव में अिस ढग से वह काम कर सका।

यह शिक्षक भाओी स्वराज्य के आंदोलन से विमुख अैसे अेक रियासती प्रदेश के होने के कारण बुनियादी राष्ट्रीय हलचलो के संपर्क में बहुत नही आ सके हैं। फिर भी अपने कामो के द्वारा वे बुनियादी राष्ट्रीय प्रश्नों को अनेक बाजुओं से स्पर्श कर सके हैं, यह हम देख सकते हैं।

(पृष्ठ ३८२ का शेषांश)

अिस कॉलिज को खोलने की प्रेरणा प्रोफेसर थियोडोर लेड्स की पुस्तक "टुवर्डस अे साअिन्स ऑफ पीस" से मिली। अिस पुस्तक में शांति स्थापना की पद्धति का जिक्र किया गया है। ("नई तालीम" के अक ४-वर्ष ७ में अिस पुस्तक का परिचय दिया गया था।) अिस विषय के बारे में जो शोध होगी अुनमें स्वाभाविक ही मानस-शास्त्र, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धर्म, राजनीति और अर्थ-शास्त्र आ जाते हैं। असल कार्य तो अिस विशाल अध्ययन के द्वारा अिसमें से अत्यन्त आवश्यक और मूल्यवान विचारों को शोध निकालने का है।

अिस प्रकार के शिक्षा के प्रयोग सराहनीय है। वे स्पष्ट तौर पर दर्शाते हैं कि शान्ति-स्थापना और आध्यात्मिक विकास की ओर मनुष्य बढता जा रहा है। जो मित्र अिस कॉलेज के बारे में अधिक जानकारी चाहते हैं, वे अिस पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं–

श्री पेट्रिक डीघान, लेम्बनेट हाउस, लेकेस्टर, अिंगलैंड।

पृष्ठ ३५९ का शेषांश कृपया पृष्ठ ३८४ पर देखें ।

भूल सुधार—कृपया बच्चे की देखभाल और शिक्षा (६) वाले लेख के पृष्ठ ३६५ पर दूसरे कॉलम की चौथी पंक्ति में "तीन हड्डियों" के बदले "चार हड्डियों" पढ़ें ।

Regd. No. N-106

हे विश्व के कर्मकार ! हमारी प्रार्थना है कि तुम्हारी विश्व-शक्ति का अजस्र प्रवाह वसन्त की दक्षिणी हवा की तरह आये और समस्त मनुष्य-जीवन के खेतों को आच्छादित कर ले। अिस हवा में विविध देशों के फूलों की सुवास मिली हो। यह हवा हमारी शुष्क और निर्जीव आत्माओं में अपना मधुर रस भर दे और सद्यः जागृत शक्तियां पूर्णता की पुकार कर उठें।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

श्री. सदाशिव भट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा नई तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम में मुद्रित और प्रकाशित।